भारत-भ्रमण के चौथे खण्ड का सूचीपत्र

—❧—

भारत-भ्रमण के चौथे खण्ड का सूची पत्र।

भारत-भ्रमण के चौथे खण्ड का सूची पत्र।

भारत-भ्रमण के चौथे खण्ड का शुद्धिपत्र।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	२१	चयबासा	चाईबासा
११	१४	घीर	धीरज
३२	३	गमले लगे हैं	गमले सजे हैं
३२	११	दूर दूर	दूर दूर के
३७	२७	कनरधा	कवरदह
३७	२७	५३४०	५३४१
४१	२	६२	२६
५६	३	सेगांव	सेगांव का
५८	१७	रामचुर	रायचुर
६१	२	भीतर में	भीतर से
६१	६	गुफाओं के	गुफाओं में है
६८	२१	दक्षिण	दक्षिण के
६४	२	शाखा नई	शाखा
६४	२	मैदान ऊंचा	ऊंचा मैदान
६४	३	जङ्गल	जङ्गल के
७५	२३	जगमोहन है	जगमोहन में नहीं है
७८	७	६०	६० मील
७८	७	१४० मील	और १०० मील
८२	१२	फैरियावाद	फैरियावाग
९५	२३	वीदर को	वीदर के
१००	२	मेहरावियों से	मेहरावियों को
१०१	२१	मरम्मत में है	मरम्मत है
१०२	११	पुर्टिमल	पुर्टियल
१०२	१२	उस पर	उन पर
१०७	२६	कण्णो	कारना
११४	८	पर्लाकोमेडी	पर्लाकेमडी
११६	५	१	१ मील
१२३	२	त्र्यंबक	त्र्यंबक के
१२४	८	बत्तन	बर्त्तन
१३१	१८	पक्ष	पक
१४३	२३	स्टेशन से	स्टेशन है, स्टेशन से
१५४	१	प्रियव्रत के	प्रियव्रत को
१५७	२२	कवल	केवल
१६५	२१	पता लगाने	पता न लगने
१६८	४	वालो	वाली
१६८	५	उपवन	उपवन में
१८०	१६	चीना	चीन के बर्तन
१८३	५	पूर्व	पूर्व को
१८४	१४	चाकुक्यों	चालुक्यों
२१०	४	शतक	शतक के
२२१	१०	गोपाल	लोकपाल
२३५	१	राज्य में	राज्य में,
२३५	२	जिलों में,	ज़िलों में,
२३५	४	राज्य में	राज्य में,
२३८	३	३१३७	१३१३७
२३८	१५	११२५५	१२११५
२३९	४	मालगुजारी-मकान	मकान
२५१	२८	हस्तगिरि	हस्तीगिरि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६३	१	राज्य को	राजा को	३६५	१	चरण-चिन्ह,	चरण चिन्ह हैं,
२६५	१	द कुंवर	द कुंवार	३६५	२३	दोगवा	दोगला
२६५	१४	तरक्की हुई;	तरक्की की-हुई	३६८	५	तंवाक	तंवाकू
२६१	१६	८५६१	१५६१	३६८	१०	१८६६०	१८६६
२७०	५	चोड़ी	चौड़ी है।	३७५	१	तिरुपांकर	तिरुपांकूर
२७०	५	१०	११०	३८३	२३	१५१०७	१५१०७
२७२	८	पत्थरों के	पत्थरों को	३८१	१८	अत्तर	अत्तूर
२७८	१०	समय का	समय	३१६	२६	तमकर	तमकूर
२१३	१३	श्रीरंगम्	श्रीरंगजी	३१७	१८	हिंदपुरम्	हिंदूपुरम्
२१४	३	छोटे	छोटे छोटे	३११	२५	फल	फूल
३०१	२०	मन्दिरों के	और मन्दिरों के	४००	५०	प्रपातों को	प्रपात को
३०५	२०	आर्यनामक	आर्यनायक	४०२	२०	दोलतावाग	दौलतबाग
३०५	२२	दिलरे	दिलेर	४१४	५	लम्वा	लम्बा
३०८	२६	वानरों का	वानरों को	४१७	२७	लट	लूट
३११	२	४	१४	४२०	२०	इस्टेट	ईस्टेट
३११	२३	वलाजाह	वालाजाह	४२१	१३	चामुंड	चामुंडा
३१२	२२	मागपट्टन	नागपट्टन	४२८	२०	चातुर्य	चतुरता
३१५	४	७ कला	१७ कला	४२१	२३	भनुमरोचि	भानुमरीचि
३२८	८	पर्वत पर में	पर्वतपर	४३१	८	मठाम्नाय	मठाम्नाय
३३०	७	तीर्थ में	तीर्थों में	४३३	६	५७४०	१५७
३३३	२४	स्थान	स्थापन	४३६	२५	मोरमगांव	मोरमूगांव
३४४	१२	६०० फीट	६००	४५०	११	६ मील	दभोल
३४६	५	स्टेशन से	स्टेशन है	४५१	३	सेतारा	सतारा
३५२	२२	मलेवार	मलेवार के	४५४	१४	जिला	जिले में
३५४	८	तिरुपद्रम् में	तिरुपद्रम्	४५७	१४	मदिरों से	मंदिरों के
				४५८	२५	सांगाली	सांगलो
				४५१	१३	नामक	नमक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४६१	२	१५८१	१६८१
४६४	१०	चघानदी	चघनदी
४६६	२३	चातुर्य	चतुरता
४७१	७	पूना जिले में	पूना शहर में
४७३	८	यह	यहां
४७३	१७	फलासों	फ़ासों
४७३	२५	यूरोशियन	यूरशियन
४७५	१८	ब्राह्मणों के	ब्राह्मणों को
४७६	६	ओरटिलरी	आरटिलरी
४७७	२४	घड़ी	घुड़ोया
४८०	२१	बदकर दिया	कैद किया
४८३	१	चित्रोरगढ़	चित्तौरगढ़
४८५	१४	होनी	होने
४११	१	बिराजाते	विराजते
४११	६	के राजा ने	का राजा
४१४	१	लोनवलो में	लोनवलो से
४१५	५	दरवाजे के	दरवाजे का
४१५	६	सिंह	सिंहों
४१५	७	सेर	से
५०५	२१	देह	देह के
५०७	१२	नीचे	नीचे के
५२७	६	दुर्बल	दुर्बल
५२७	२५	पश्चिमी	पश्चिम
५२८	३	००	६००
५२८	४	मनुष्यों का	मनुष्यों को
५३७	१३	समुद्र तीर	समुद्र के तीर
५३७	१७	ऊपर के	०
५३१	१७	अफ्रिगान	अफ्रिका
५५२	२५	१६०३	१८०३
५५२	२५	१६०४	१८०४
५६६	१८	४०५१	४००५१
५७०	२४	१८११	१८८१
५७५	१०	२४५	२४७५
५८७	३	सन् १२१२	सन् १२१
५१८	२०	तिजराती	तिजारत
६०८	४	फिरिस्त	फिरिस्ता
६२७	२१	धर्ममोल	मोल
६४०	१	खोज लेने	खोज ला
६६१	५	करते के	करने के लिये
६६३	२	पढ़ता है	पड़ता है
६७५	२३	पहाड़ियों	पहाड़ियां
६७६	१८	विरारल-फाटक	निरारल-फाटक
६८२	२४	पर्वकाल	पूर्वकाल
६१३	१	किया	लिया
६१६	१	राज्यों में से	राज्यों से
६११	१६	२१७	१२११७
७१०	२	जिसमें से	जिनमें से
७११	२	एक प्रकार	एक पमार
७१४	१४	मील	मोल

भारत-भ्रमण।

चौथा खण्ड।

श्रीगणेशाय नमः।

संकर पद पाथोज नमि 'साधुचरनपरसाद'।
चौथ खंड 'भारत-भ्रमन' चरनत रहित विवाद॥

पहिला अध्याय।

(सूबे बंगाल में) आसनसोल जंक्शन, (सूबे छोटेनागपुर में) चयबासा, (मध्यदेश में) संभलपुर, रायगढ़, सारनगढ़, कुदरमाल, शवरीनारायण, बिलासपुर, रतनपुर, कवरदह, रायपुर, राजनंदगांव, खैरागढ़, भंडारा, कामटी और रामटेक।

आसनसोल।

मेरी चौथी यात्रा सन् १८९३ ईस्वी के मार्च (संवत १९५० के चैत) में आरंभ हुई। मैंने तीसरी यात्रा समाप्त करने के उपरांत कई एक दिन अपने घर रहकर चौथी यात्रा आरंभ की।

घरजपुरा से दक्षिण गंगा के दूसरे पार 'इष्टईंडियन रेलवे' का स्टेशन विहिया है, जहां मैं रेलगाड़ी में सवार होकर आसनसोल चला।

विहिया से पूर्व ४४ मील बांकीपुर जंक्शन, और १२० मील लखीसराय जंक्शन और लखीसराय जंक्शन से पूर्व-दक्षिण ६१ मील वैद्यनाथ जंक्शन और १३० मील आसनसोल जंक्शन है। मैं आसनसोल से बिलासपुर, नागपुर और भुसावल जंक्शन होकर के बंबई और मदरास हाते के तीर्थों और शहरों में गया। जिसको विहिया से रामेश्वर, बंबई, द्वारिका इत्यादि जाना हो उसको विहिया से नैनी जंक्शन और जबलपुर होकर भुसावल जाने से ३७८ मील मार्ग का बचत होगा; क्योंकि विहिया से आसनसोल होकर भुसावल ११२१ मील और नयनी होकर केवल ७४३ मील है।

सूबे बंगाल के बर्दवान जिले में कार्डलाइन पर (२३ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांश और ८७ अंश १ कला पूर्व देशांतर में) रानीगंज सबडिवीजन के अंतर्गत आसनसोल एक बस्ती है। वहां से पश्चिम कुछ दक्षिण 'बंगाल नागपुर रेलवे' नागपुर को गई है, जो सन् १८९१ ई० में खुली थी। आसन-सोल में एंजिन का बड़ा कारखाना, एक थाना और एक रोमनकथोलिक स्कूल है और उसके चारोओर कोयले की खानों का मैदान है। वहां के प्रायः सबलोग पत्थर के कोयले से रसोई बनाते हैं।

आसनसोल जंक्शन से रेलवे लाइन ३ ओर गई है।

(१) आसनसोल से पश्चिम थोड़ा दक्षिण 'बंगाल-नागपुर रेलवे' जिसके तीसरे दर्जे और डाकगाड़ी का महसूल प्रति मील २ पाई है, गई है—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

४७ पुरुलिया।
८० चण्डील।
८९ कंदरा।
९७ सीनी *।
१०७ अमडा।
११९ चक्रधरपुर।
१६६ मनारपुर।
१८२ रौरकेला।
१९० कलूंगा।

* सीनी के स्टेशन से रेलवे की नई शाखा खरगपुर होकर कलकत्ते के पास हवड़े को और खरगपुर से कटक होकर वालटेयर को गई है। सीनी से पूर्व ११

२२१ बामड़ा।
२४४ झारसुगड़ जंक्शन।
२८९ रायगढ़।
३३८ चांपा।
३४५ नैला।
३७१ बिलासपुर जंक्शन।
४३१ रायपुर †।
४८१ राजनांदगांव।
५०० डुंगरगढ़।
५८८ भंडारारोड।
६०३ तोरसा।
६१८ कामटी।
६२७ नागपुर।

झारसुगड़ जंक्शन से ३० मील दक्षिण संभलपुर।

बिलासपुर जंक्शन से पश्चिमोत्तर ६३ मील पेंड्रारोड़ और १९८ मील कटनी जंक्शन।

नागपुर से पश्चिम और ग्रेट इंडियन पेनिनसूला रेलवे पर २४४ मील भुसावल जंक्शन, ३९८ मील मनमार जंक्शन, ४८७ मील कल्यान जंक्शन और ५२० मील बंबई का विक्टोरिया स्टेशन।

(२) आसनसोल से पश्चिमोत्तर 'इष्ट-इण्डियन रेलवे' जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २½ पाई है—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

६ सीतारामपुर जंक्शन।
५१ मधुपुर जंक्शन।
६९ वैद्यनाथ जंक्शन।
१०३ गिद्धौर।
११२ जमुई।
१३० लक्खीसराय जंक्शन।
१५० मोकामा जंक्शन।
१६७ बाढ़।
१७८ बखतियारपुर।
२०० पटना।
२०६ बांकीपुर जंक्शन।

मील खरगपुर, १५१ मील उलपडिया और १७१ मील हवडा और खरगपुर से उत्तर ८ मील मेदनीपुर और दक्षिण-पश्चिम ७२ मील बालेश्वर, ११० मील भद्रक, १३० मील जाजपुर रोड, १८१ मील कटक, १९८ मील भुवनेश्वर, २१० मील खुर्दारोड, ३०२ मील ब्रह्मपुर, ४३६ मील विजयानगरम् और ४७४ मील वालटेयर जंक्शन और खुर्दारोड जंक्शन से दक्षिण १७ मील शाखीगोपाल और २८ मील जगन्नाथपुरी है।

† रायपुर से दक्षिण ४६ मील की रेलमेशाखा धमतरी कसबे को गई है।

सीतारामपुर जंक्शन से पश्चिम ५ मील बराकर और ३९ मील कटरसगढ़।

मधुपुर से २३ मील प-श्चिम दक्षिण गिरिडी।

वैद्यनाथ जंक्शन से ४ मील पूर्व दक्षिण देवगढ़ अर्थात् वैद्यनाथजी।

लक्षीसराय जंक्शन से पूर्व २५ मील जमालपुर जंक्शन, ४३ मील सुलतानगंज, ५८ मील भागलपुर, ७८ मील क-हलगांव और १०४ मील सा-हबगंज।

मोकामा जंक्शन से उत्तर ओर गंगा के बांए और २ मील मोकामाघाट, २२ मील सेमरियाघाट, और ६० मील समस्तीपुर जंक्शन।

बांकीपुर जंक्शन से प-श्चिमोत्तर ६ मील दीघाघाट; दक्षिण ओर गयाब्रेंच पर ८ मील पुनपुन, २८ मील ज-हानाबाद और ५७ मील गया; और पश्चिम कुछ द-क्षिण ६ मील दानापुर, ३० मील आरा, ४४ मील बिहि-या, ६३ मील डुमरांव, ७३ मील बक्सर, ९५ मील दि-लदारनगर जंक्शन और १३१ मील मुगलसराय जंक्शन।

(३) आसनसोल से पूर्व-दक्षिण 'इष्ट-इण्डियन रेलवे'।

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

११ रानीगंज।
१६ अंडाल जंक्शन।
५७ खाना जंक्शन।
६५ बर्दवान।
१०३ मगरा।
१०८ हुगली जंक्शन।
१११ चन्दरनगर।
११८ सेवड़ाफुली जंक्शन।
१२० श्रीरामपुर।
१३२ हवड़ा (कलकत्ते के पास)।

अंडाल जंक्शन से २४ मील पश्चिमोत्तर गउरागड़ी।

खाना जंक्शन से लुपला-इन पर १४४ मील उत्तर साहबगंज और शाहबगंजसे १०४ मील पश्चिम लक्षीस-राय जंक्शन।

हुगली जंक्शन से ५ मील पूर्व दक्षिण नइहाटी जंक्शन।

सेवड़ाफूली जंक्शन से २२ मील पश्चिम कुछ उत्तर तारकेश्वर।

चयबासा।

आसनसोल जंक्सन से पश्चिम-दक्षिण ४७ मील पुरुलिया का रेलवे

स्टेशन है, जिससे ४९ मील पश्चिम दक्षिण चण्डील और कंदरा के स्टेशनों के बीच में सुवर्णरेखा नदी पर रेलवे का पुल बना है। पुरुलिया से ६० मील (आसनसोल जंक्शन से १०७ मील) पश्चिम-दक्षिण अमड़ा का रेलवे स्टेशन है, जिससे लगभग १५ मील दक्षिण चयबासा को १ सड़क गई है। सूबे-छोटेनागपुर के (२२ अन्श, ३२ कला, ५० विकला, उत्तर-अक्षांश और ८५ अन्श ५० कला ५७ विकला पूर्व देशान्तर में) सिंहभूमि जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान-कसबा चयबासा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय चयबासा में ६००६ मनुष्य थे; अर्थात् ५१२० हिन्दू, ७७८ मुसलमान और १०८ दूसरे।

चयबासा में मामूली कचहरियाँ, जेलखाना, अंगरेजी स्कूल और खैराती अस्पताल है। वहां प्रतिवर्ष बड़े दिन के समय एक मेला होता है, लगभग २००० मनुष्य मेले में आते हैं, ३१ दिसम्बर को घोड़दौड़, नाच इत्यादि तमासा होते हैं। चयबासा कसबे से चारो ओर दिहाती सड़क निकली हैं।

सिंहभूमि जिला—यह छोटानागपुर विभाग के दक्षिण पूर्व में ३७५३ वर्गमील के क्षेत्रफल में फैलता है। इसके उत्तर लोहारडागा और मानभूमि जिला; पूर्व मेदनीपुर जिला; दक्षिण सूबेउड़ीसा और पश्चिम लोहारडागा जिला और छोटेनागपुर के देशी राज्य हैं। जिले के चारो ओर पहाड़ियां हैं। जिले के दक्षिणी सीमा पर कुछ दूर तक सुवर्णरेखा नदी और पश्चिमी सीमा पर वैतरणी नदी बहती है। देश पहाड़ी है। प्रधान नदी सुवर्णरेखा और कोयल है। जंगलों में बाघ, तेंदुए, भालू इत्यादि वन जन्तु रहते हैं और कभी २ हाथियों के छोटे झुण्ड चले आते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय सिंहभूमि जिले में ४५३७७५ मनुष्य थे; अर्थात् ४४७८१० हिंदू, २९८८ कृस्तान, २३२९ मुसलमान और ६४८ पहाड़ी कोम संथाल। इनमें ३०४४०९ पहाड़ी और जंगली कोम थे, जिनका बड़ा भाग हिंदू में लिखा गया। इनमे १८७७२३ कोल थे। हिंदू में ३८६७२ ग्वाला, २०८३९ तांती, २८८६ ब्राह्मण, २२५९ बनिया, १९४९

राजपूत, शेष में दूसरी जातियों के लोग थे। जिले में केवल चयबासा में ५००० से अधिक मनुष्य थे।

संभलपुर।

अमड़ा के रेलवे स्टेशन से १२ मील पश्चिम-दक्षिण सिंहभूमि जिले के चक्रधरपुर में रेलवे के एंजिन बदलते हैं। स्टेशन के आसपास अनेक कोठियां बनी हैं। वहां से उत्तर एक सड़क रांची को गई है। उससे आगे रेलवे के दोनों ओर अधिक पहाड़ियां देखने में आती हैं। चक्रधरपुर से ३७ मील पश्चिम-दक्षिण मनारपुर का स्टेशन है। वहां उत्तम शाल के वृक्षों से भरे हुए जंगलों से रेलवे निकलती है। उस जंगलों में बहुत पहाड़ियां होने के कारण घूम घाम कर रेलवे लाइन निकली है। एक जगह पहाड़ी फोड़ कर उसके भीतर लाइन बैठाई गई है, जिससे होकर रेलगाड़ी निकलती है, वहां के प्रायः संपूर्ण निवासी कोल हैं। मनारपुर के स्टेशन से ३४ मील पश्चिम दक्षिण कलूँगा का स्टेशन है। रौरकेला और कलूँगा के स्टेशन के बीच में ब्राह्मणी नदी पर रेल का पुल बना हुआ है। उस देश के गरीब लोग नदी के बालू धोकर कुछ सोना निकालते हैं। कलूँगा के स्टेशन से तीस चालीस मील दक्षिण ब्राह्मणीनदी के पूर्व सूबे छोटेनागपुर के एक देशी राज्य की राजधानी गांगपुर है। कलूँगा से २१ मील पश्चिम-दक्षिण गारपोस स्टेशन के आस पास के घने जंगल में बरसात के समय जंगली हाथी आते हैं। गारपोस से १० मील आगे जाने पर बामड़ा का रेलवे स्टेशन मिलता है, जिससे लगभग २५ मील दक्षिण 'मध्य' देश में एक देशी राज्य की राजधानी बामड़ा है। बामड़ा के स्टेशन से १० मील आगे बगदेही के स्टेशन तक रेलवे लाइन पहाड़ियों के दरमियान होकर जाती है। बगदेही से १३ मील और आसनसोल जंक्शन से २४४ मील पश्चिम-दक्षिण झारसुगड़ में रेलवे का जंक्शन है।

एक रेलवे शाखा झारसुगड़ से ३० मील दक्षिण संभलपुर को गई है। मध्यदेश के छत्तीसगढ़ विभाग में (२१ अन्श २७ कला १० विकला उत्तर अक्षांश और ८४ अन्श १ कला पूर्व देशान्तर में) महानदी के बांए किनारे

पर जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसवा संभलपुर है, जहांसे एक सड़क उत्तर कुछ पूर्व रांची को; दूसरी सड़क पूर्व कुछ उत्तर मेदनीपुर होकर कलकत्ते को और तीसरी सड़क दक्षिण-पूर्व कटक को गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय संभलपुर कसबे में १४५७१ मनुष्य थे; अर्थात् १२१६९ हिंदू, १२७४ मुसलमान, ९८९ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाड़ी कोम और १३९ कृस्तान।

कसबे के निकट महानदी की चौड़ाई लगभग १९० फीट है; किंतु वर्षाकाल में यह नदी १ मील चौड़ी हो जाती है। कसबे और स्टेशन के सामने नदी के किनारे के चट्टानों पर झौओं का सघन जंगल लगा है। कसबे के पश्चिमोत्तर संभलपुर का उजडा हुआ किला है; उसकी खाई की निशानी अब तक देखने में आती है और संभलाई देवी के निकट संभलाई फाटक विद्यमान है। किले के भीतर सोलहवीं शदी के बने हुए परमेश्वरी देवी, बड़ा जगन्नाथ, अनंतजी, इत्यादि देवताओं के बहुतेरे मंदिर स्थित हैं। संभलपुर में सरकारी कचहरियां, जेलखाना, जिलास्कूल, जनाना अस्पताल और दो सराय प्रधान इमारत हैं और एक बड़ा बाजार फैला हुआ है। पहिले कसबे के पश्चिमोत्तर महानदी के विस्तर में बहुत हीरे मिलते थे।

संभलपुर कसबे से लगभग ५० मील दक्षिण महानदी के दहिने मध्य देश के एक देशी राज्य की राजधानी सोनपुर है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ८६९८ मनुष्य थे। सोनपुर से पश्चिम ओर पटना राजधानी है।

संभलपुर जिला—यह जिला छतीसगढ़ विभाग के पूर्व में ४८२१ वर्गमील में फैला है। इसमें मिले हुए कालाहंडी, रायगढ़, सारनगढ़, पटना, सोनपुर, वामड़ा और रेढ़ाखोल ७ देशी राज्य ११८९७ वर्गमील में हैं। संभलपुर जिले और देशी राज्यों के उत्तर छोटानागपुर और पूर्व और दक्षिण कटक, बिलासपुर और रायपुर जिला हैं। संभलपुर जिले में होकर महानदी बहती है। नदी के पश्चिम की भूमि अच्छी तरह से जोती जाती

है। उस भाग के जंगल अधिक साफ किए गए हैं। जिले के प्रायः प्रत्येक बस्ती में एक तालाब है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय संभलपुर जिले में ६९३४९९ मनुष्य थे; अर्थात् ६३२७४७ हिंदू, ४६६६२ पहाड़ी कोमें, १०१२० कबीरपंथी, २९६६ मुसलमान, ६९२ कुम्भीपंथिया, जो केवल संभलपुर ही में हैं, २१२ सतनामी और ११० कृस्तान। जातियों के खाने में ७९०७९ गोर, ७८६२२ गांडा, ७७४५३ कॅवट, ६७१०२ कोलटा, ६५८४५ सवर, ५७३२७ गोंड़, ४०६९६ बैगा, ४०६९६ कोल, २२२५० तेली, २१८२८ ब्राह्मण, १८६४३ कुरा, १६६७२ खांद, ५६४४ राजपूत, और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे।

इतिहास—पटने के १२ वें राजा नरसिंहदेव ने अपने भाई बलरामदेव को दक्षिण का जंगली देश दे दिया। बलरामदेव संभलपुर का पहला राजा हुआ। उसने अपने आसपास के कई राजाओं से भूमि छीन कर अपना राज्य बढ़ाया। उसके बड़े पुत्र हरिनारायण देव ने, जो सन् १४९२ ई० में राजगद्दी पर बैठा, अपने दूसरे पुत्र मदनगोपाल को सोनपुर का देश दे दिया, जो अब तक उसके वंश धरों के अधिकार में है। उस समय से लगभग २०० वर्ष तक संभलपुर का बल बढ़ता गया और पटना का घटता गया। सन् १७९७ में महाराष्ट्रों ने बड़ी लड़ाई के उपरान्त संभलपुर को ले लिया और वहां के राजा जेठसिंह और उसके पुत्र को कैदी बना कर नागपुर में भेज दिया। सन् १८०८ में जेठसिंह मर गया। उसके चन्द महीनों के पीछे जेठसिंह का पुत्र राजा बनाया गया। सन् १८२७ में उसके मरने के पश्चात् उसकी विधवा मोहनकुमारी के उत्तराधिकारिणी होने पर झगड़ा आरंभ हुआ। रानी तरत से उतारी गई और संभलपुर के तीसरे राजा की रखेलिन स्त्री से जन्मा हुआ पुत्र नारायणसिंह राजा बनाया गया। सन् १८४९ में जब नारायणसिंह बिना पुत्र के मर गये तब संभलपुर अंगरेजी अधिकार में होगया। सन् १८६४ के आरम्भ में सुरेन्द्र शा बागी हुआ था, जो कैद किया गया। तबसे जिले में शांति स्थापित हुई और संभलपुर कसबे की उन्नति होने लगी।

रायगढ़।

झारसुगड़ जंक्शन से ४५ मील पश्चिम, (आसनसोल जंक्शन से २८९ मील पश्चिम-दक्षिण) रायगढ़ का रेलवे स्टेशन है। मध्य देश में (२१ अन्श ५४ कला उत्तर अक्षांश और ८३ अन्श २५ कला पूर्व देशांतर में) एक छोटे देशी राज्य की राजधानी और उस राज्य का प्रधान कसबा रायगढ़ है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ४८६० मनुष्य थे; अर्थात् ४३६१ हिंदू, ३२८ मुसलमान, १६६ आदि निवासी, ३ कबीरपंथी और २ सतनामी।

रायगढ़ का राजवंश गोंड़ जाति का है। कसबे में राजा का महल बना है और १ स्कूल है। राजा के पूर्व पुरुषे ठाकुर दरियावसिंह ने महाराष्ट्रों की सहायता की, इस लिये उनको राजा की पदवी मिली। रायगढ़ के वर्तमान राजा भूपदेव २५ वर्ष के नौजवान हैं।

रायगढ़ के राज्य के उत्तर सरगुजा और गांगपुर का राज्य; दक्षिण महानदी और संभलपुर जिला; पूर्व गांगपुर का राज्य और पश्चिम चन्द्रपुर इत्यादि है। राज्य की पहाड़ियों में लोहा का ओर होता है। राज्य का क्षेत्रफल १४८६ वर्गमील है। उससे लगभग ६६७०० रुपये मालगुजारी आती है, जिसमें से ४०० रुपया अंगरेजी सरकार को दिया जाता है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय उस राज्य में १२८९४३ मनुष्य थे।

सारँनगढ़।

रायगढ़ से दक्षिण-पश्चिम की ओर महानदी से दक्षिण मध्य देश में एक छोटे देशी राज्य की राजधानी सारनगढ़ है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ४२२० मनुष्य थे, अर्थात् ३६३८ हिंदू, ३१७ पहाड़ी कोमें, २३० मुसलमान और ३५ कबीरपंथी। राजधानी में राजा का महल, कचहरियां और एक स्कूल है।

सारनगढ़ का राजा गोंड़ है। लांजी का राजा नरेन्द्रशा सन् ९१ ई० में भंडारा गांव में था। सारनगढ़ के राजाओं के कथनानुसार नरेन्द्रशा के

पोता जगदेवशा के ५५ वें पुश्त में सारनगढ़ का वर्तमान राजा है। जगदेवशा के ४२ वें पुश्त में कल्यानशा था, जिसको राजा की पदवी मिली। राजा संग्रामसिंह, उसके बाद राजा भवानीप्रतापसिंह सारनगढ़ के राजा हुए थे, जिसके पीछे वर्तमान राजा लालजवाहिरसिंह, जो निरे बच्चे हैं, राजा बने हैं।

राज्य का क्षेत्रफल ५४० वर्गमील है। इसके उत्तर रायगढ़ का राज्य, पूर्व संभलपुर जिला; दक्षिण फुलझर और पश्चिम बिलासपुर जिला है। सन् १८८१ में राज्य में ७१२७४ मनुष्य थे। राज्य में होकर महानदी बहती है। राज्य से ४१७०० रुपया मालगुजारी आती है। पहिले यह राज्य १८ किलों में से एक था।

कुदरमाल।

रायगढ़ से ४९ मील पश्चिम (आसनसोल जंक्शन से ३३८ मील पश्चिम कुछ दक्षिण) चांपा का रेलवे स्टेशन है; जिसमें पूर्व हसदू नदी पर रेलवे का पुल बना है। रेलवे से लगभग २० मील उत्तर कोरवा के कोयले के मैदान में उस नदी के किनारों पर जंगलों में कभी कभी जंगली हाथियों के दल देख पड़ते हैं।

चांपा के रेलवे स्टेशन से १४ मील उत्तर (बिलासपुर कसबे से ३२ मील पूर्वोत्तर) कुदरमाल एक बस्ती है, जो श्रीकबीरजी के सुप्रसिद्ध शिष्य धर्मदासजी के पुत्र वचनचूड़ामणि साहब की समाधि और वंश घराने के मठ होने के कारण से प्रसिद्ध है। इस घराने का प्रधान मठ कुदरमाल से लगभग ८० मील पश्चिम कुछ उत्तर कवरदह में है।

कुदरमाल में वचन चूड़ामणि साहब का समाधि मन्दिर है। माघ की पूर्णिमा को वहां प्रसिद्ध मेला होता है, जो पूर्णिमा के पहिले से उसके पीछे तक लगभग ३ सप्ताह रहता है। यात्रीगण चूड़ामणि साहब की समाधि का दर्शन करते हैं। चतुर्दशी और पूर्णिमा को बड़ी धूम धाम से समाधि की चौका आरती होती है। कुदरमाल के महंत कवरदह के मठ के आधीन हैं। इस समय महंत विश्वनाथदास कुदरमाल के मठ के मालिक हैं।

शवरीनारायण।

चांपा के स्टेशन से ७ मील पश्चिम नैला का रेलवे स्टेशन है। नैला से १६ मील दक्षिण कुछ पूर्व और बिलासपुर कसबे से २९ मील दक्षिण-पूर्व बिलासपुर जिले में महानदी और शिवनाथनदी के संगम से लगभग १० मील पश्चिम शिवनाथ नदी के दहिने किनारे पर शवरीनारायण एक तीर्थ स्थान है, जिसको शेवरीनारायण भी लोग कहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय शवरीनारायण बस्ती में २२५० मनुष्य थे, अर्थात् २००९ हिंदू, १२७ मुसलमान, ७९ कबीरपंथी, २६ पहाड़ी जातियां और ९ दूसरे।

नदी के तीर पर महादेवजी का और उससे थोड़ी दूर पर शवरीनारायण और राम लक्ष्मण का मन्दिर है। एक लेख से ज्ञात होता है कि लगभग सन् ८४१ ई० में शवरीनारायण का मन्दिर बना। वहां फाल्गुन की शिवरात्रि को एक बड़ा मेला और विजयादसमी के समय छोटा मेला होता है। शवरी-नारायण के महंत धनी हैं।

बस्ती में तहसीली कचहरी, थाना, डाकखाना और मदरसा, ये सरकारी इमारतें पक्की बनी हैं। निवासी गोंड़ और छतीसगढ़ी अधिक हैं।

कुछ लोगों का कथन है कि श्रीरामचन्द्र बनवास के समय इसी स्थान पर शवरी से मिले थे; किंतु वाल्मीकि, अध्यात्म इत्यादि रामायणों में लिखा है कि पंपासर के समीप रामचन्द्र शवरी से मिले थे। वह स्थान शवरीनारायण से ६०० मील से अधिक दक्षिण-पश्चिम मदरास हाते के बलारी जिले के हुसपेट कसबे से कई मील दूर निजाम के राज्य में है। नासिक से, जहां सीता हरण हुआ था, लगभग ४०० मील दक्षिण-पूर्व पंपासर और ६०० मील पूर्व कुछ उत्तर शवरीनारायण है। शवरी की कथा किष्किंधा के वृत्तांत में मिलेगी।

बिलासपुर।

नैला के स्टेशन से २६ मील पश्चिम (आसनसोल से ३७१ मील

पश्चिम-दक्षिण) विलासपुर का रेल्वे स्टेशन है। मध्य देश के छत्तीसगढ़ विभाग में (२२ अंश, ५ कला उत्तर अक्षांश और ८२ अंश, १२ कला पूर्व देशान्तर में) रेलवे स्टेशन से २ मील दूर जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा विलासपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय विलासपुर कसबे में ११११२२ मनुष्य थे; अर्थात् ९४९६ हिन्दू, १४४१ मुसल्मान, १०६ कृस्तान, ७५ एनिमिस्टिक अर्थात् पहाडी और जंगली, २ जैन और २ पारसी।

कसबे के उत्तर एक छोटी नदी बहती है। आस पास आम के बहुतेरे बाग लगे हैं और कुछ दूरपर अनेक पहाडियां हैं।

विलासपुर से १९८ मील की रेल्वे लाइन पहाडी जिले और उमरिया के कोयले के मैदान होकर कटनी जंक्शन को गई है। विलासपुर से ६३ मील उत्तर पेन्ड्रारोड और पेन्ड्रारोड से १३५ मील पश्चिमोत्तर कटनी है।

पेन्ड्रारोड से लगभग ७ मील दूर रीवां के राज्य में अमरकटक के शिखर पर बहुतेरे देवमन्दिर बने हैं। उस स्थान को अमरकटक तीर्थ कहते हैं, उसी शिखर से नर्मदा नदी और सोन नदी निकली हैं। भारत भ्रमण पहिले खंड के इक्कीसवें अध्याय में अमरकटक का वृत्तान्त है।

विलासपुर जिला—इसके उत्तर रीवां का राज्य; पूर्व गढ़जात के अनेक राज्य, दक्षिण रायपुर जिला और पश्चिम मडला और बालाघाट जिला है। जिले का सदर स्थान विलासपुर कसबा है। जिले के पूर्व, पश्चिम और उत्तर पहाडियों के सिलसिले हैं। सोन और महानदी वर्षा काल में बहुत चौडी होजाती हैं, किंतु अन्य ऋतुओं में बिना नाव के लोग पार चले जाते हैं। जिले में जंगल बहुत हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय विलासपुर जिले के ७७९८ वर्गमील क्षेत्रफल में १०१७३२७ मनुष्य थे, अर्थात् ६२९६५९ हिंदू, १५७५४७ आदिनिवासी, १३३०८६ सतनामी, ८७३४८ कबीरपंथी, ९६२५ मुसलमान, ३५ कृस्तान १७ जैन और १० सिक्ख। हिन्दुओं में ९५०२० चमार, ८४५४६ अहीर, ६१३२४ तेली, ४१३२७ कूर्मी, ३४७६७ कँवट, २४५४१ मरार,

२३२२४ ब्राह्मण, १५९२८ राजपूत और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे और आदि निवासियों में १२५९२८ गोंड़, बाकी में मरिया, कुरकू इत्यादि जातियों के मनुष्य थे। बिलासपुर जिले के कसबे बिलासपुर में ७७७५, रतनपुर में ५६१५ और मुँगेली में ४७५७ मनुष्य थे।

बिलासपुर जिले के किशान इत्यादि सर्व साधारण पुरुष छोटे वस्त्र पहनते हैं और स्त्रियां लंबे वस्त्र के आधे भाग को कमर में लपेट कर ठेहुनों तक लटकाती हैं और आधे को छाती पर फैला कर दहिने कंधे पर रख लेती हैं। वहां की भाषा पहाड़ी लोगों की बोलियों से मिली हुई हिंदी का अपभ्रन्श है। उस जिले में बहुत सी जोतने योग्य भूमि विना जोती हुई पड़ी है। सन् १८८१ में जिले के ७७९८ वर्गमील क्षेत्रफल में से केवल २१२१ वर्गमील भूमि जोती जाती थी, ४१६४ वर्गमील जोतने लायक थी और १०६३ वर्गमील जोतने योग्य नहीं थी। जिले की प्रधान फसिल धान है। गेहूं, इत्यादि दूसरे अन्न, तेल के बीज, ऊख और कपास भी होते हैं। जिले में ज्वर की बीमारी अधिक होती है।

इतिहास—लगभग ३०० वर्ष हुए कि बिलास नामक एक मल्लुहेने बिलासपुर को बसाया, इस लिये कसबे का नाम बिलासपुर पड़ा। वहां बहुत दिनों तक केवल मल्लुहों की चन्द झोंपड़ियां थीं। सन् १८६१ मे बिलासपुर एक जिला नियत हुआ। सन् १८६२ में बिलासपुर कसबा जिले का सदर स्थान बना। बिलासपुर संबधी इतिहास रतनपुर के इतिहास में है।

रतनपुर।

बिलासपुर कसबे से १५ मील उत्तर कटनी शाखा के कोटा के रेलवे स्टेशन से कई मील दूरपर बिलासपुर जिले में रतनपुर एक छोटा कसबा है; जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ५६१५ मनुष्य थे; अर्थात् ४७६५ हिंदू, ५०२ मुसलमान, १४२ कबीरपंथी, ११४ आदि निवासी और ९२ सतनामी।

यह सन् १७८७ ई० तक छत्तीसगढ़ के हैहयवंशी राजाओं की राजधानी था। पुराने किले की टूटी हुई मेहराबियां और पुराने महल की टूटी फूटी

दीवारें तथा शहर के चारो ओर की खाई, जो लगभग आधी भर गई हैं, रतनपुर के पूर्वकाल के ऐश्वर्य को प्रकट करती हैं। वहां के निवासी तिजारती लोग कपड़े मसाले और लाह के कारोबार करते हैं। यहां ब्राह्मण बहुत हैं, जो उस देश के ब्राह्मणों में मुखिया समझे जाते हैं; उनमें विद्वान् बहुत हैं। कसबे के आस पास बहुतेरे मीलों तक पुराने कसबे की निशानियां मिलती हैं; उसके भीतर आम के वृक्षों के बड़े जंगल में जगह जगह बहुतेरे तालाब, मंदिर और सतियों के स्थान हैं, जिनमें से पुराने किले के निकट सबसे अधिक प्रसिद्ध सती की एक बड़ी इमारत है, जिसमें लिखा है कि यहां राजा लक्ष्मण शाही की बीस रानियां सती हुईं।

इतिहास—महाराष्ट्रों के आक्रमण के पहिले और उनके आक्रमण के समय तक बिलासपुर जिला रतनपुर के हैहयवंशी राजाओं के आधीन था। जैमिनिपुराण में लिखा है कि रतनपुर के राजा मयूरध्वज बड़े दानी और धर्मनिष्ठ थे। कृष्णभगवान ने राजा के धर्म की परीक्षा लेने के लिये ब्राह्मण बनकर उनसे उनका आधा शरीर मांगा। राजा ने अपना आधा शरीर आरा से चीरवा कर देना स्वीकार किया। अन्त में श्रीकृष्णने प्रकट होकर राजा को दर्शन दिया। १८ वीं शदी के महाराष्ट्रों के आक्रमण के समय तक, जब हैहयवंशी राज्य का अन्त होगया, वहां का कोई मनुष्य आरा को अपने काम में नहीं लाया।

रतनपुर के राजा लोग ३६ किलों पर राज्य किया, इस लिये वह देश छत्तीसगढ़ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ३६ किलों में से प्रत्येक एक ताल्लुका का सदर स्थान था। लगभग सन् ७५० ई० में रतनपुर के बीसवें राजा सूरदेव के राज्य के समय छत्तीसगढ़ दो भागों में बट गया। रतनपुर से उत्तर के आधे भाग में राजा सूरदेव और दक्षिण के आधे हिस्से में सूरदेव के छोटे भाई ब्रह्मदेव (रायपुर में रहकर) हुकूमत करने लगे। ब्रह्मदेव से ९ वें पुश्त में कोई पुरुष नहीं था, इस लिये लगभग सन् १३६० में रतनपुर राजघराने का एक छोटा पुत्र रायपुर की गद्दी पर बैठा, जिसके वंशधर महाराष्ट्रों के आक्रमण के समय तक हुकूमत करते रहे।

रतनपुर के राजा सूरदेव के पुत्र पृथ्वी देव बड़े प्रतापी, प्रजाप्रिय और पण्डित थे। उस देश के लोग उनकी बहुत कहानी कहते हैं और अमरकंटक तथा मल्हार में संस्कृत लेख हैं, जिनमें उनका प्रताप और यश का वर्णन हुआ है। १६ वीं शदी में दिल्ली के बादशाह अकबर ने रतनपुर के प्रधान कल्यानशाही को उस देश के राज्य का पूरा अधिकार और राजा की पदवी दी। कल्यानशाही के ९ वें पुश्त में राजसिंह हुए; उनके कोई पुत्र नहीं था, इस लिये एक ब्राह्मण द्वारा रानी से क्षेत्रज पुत्र उत्पन्न कराया गया। उस पुत्र का नाम विश्वनाथसिंह पड़ा, जिसका विवाह रीवां के राजा की पुत्री से हुआ। एक समय विश्वनाथसिंह अपनी स्त्री के साथ जुआ खेलते हुए उसको बार बार हराने लगे। अन्त में स्त्री को सन्देह हुआ कि मेरा पति द्यूत में छल करके जीतता है। तब उसने कुछ गुस्सा होकर परिहास के तौर पर विश्वनाथसिंह से कहा कि आप नतो ब्राह्मण हैं और न राजपूत। ऐसा सुन विश्वनाथसिंह ने ग्लानि में आकर आत्महत्या कर डाली। कुछ दिनों के पश्चात् राजसिंह घोड़े से गिर कर मर गया। तब उसका चचा सरदारसिंह राजसिंहासन पर बैठा, जो २० वर्ष राज्य करने के पश्चात् सन् १७३२ ई० में मर गया। तब उसका भाई रघुनाथसिंह, जिसकी अवस्था ६० वर्ष की थी, उसका उत्तराधिकारी बना। सन् १७४१ ई० में महाराष्ट्रों ने रघुनाथसिंह को परास्त किया। हैहयवंशी राज्य का अंत हुआ। रघुनाथसिंह, भोंसले के आधीन हूकूमत करने लगा। रघुनाथसिंह की मृत्यु होने पर सन् १७४५ में नागपुर का पहला राघोजी भोंसला ने रायपुर राजघराने के मोहनसिंह को रतनपुर की गद्दी पर बैठाया। सन् १७५८ में भीमाजी उत्तराधिकारी होकर ३० वर्ष तक राज्य किया। उसके मरने पर उसकी स्त्री अनंदीबाई लगभग सन् १८०० तक राज्य करती रही। उसके मरने पर सूबेदार बीठल दिनाकर उसका उत्तराधिकारी बना, जिसके समय के पीछे राज्य में बड़ा गड़बड़ फैला। सन् १८१८ में अंगरेज महाराज ने नागपुर के आपासाहब को गद्दी से उतार कर एक लड़का राघोजी को, जो सन् १८३० में बालिग हुआ, नागपुर के तख्त पर बैठाया, जिसके मरने पर सन् १८५४ में नागपुर

का राज्य अङ्गरेजी अधिकार में होगया। छत्तीसगढ़ एक अलग कमीश्नरी बनाया गया।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—जैमिनिपुराण—(४१ वां अध्याय) जिस समय श्रीकृष्ण और अर्जुन से रक्षित राजा युधिष्ठिर का यज्ञ-अश्व मणिपुर से खुला, उसी समय रत्ननगर (रतननगर) के राजा मयूरध्वज का यज्ञ-अश्व उसके पुत्र ताम्रध्वज की रक्षा में वहां जा पहुँचा। जब अर्जुन का घोड़ा ताम्रध्वज के घोड़े के निकट गया तब ताम्रध्वज ने उसको पकड़ लिया। उस समय दोनों ओर की सेना लड़ने लगी। (४४ वां अध्याय) बड़े युद्ध के पश्चात् ताम्रध्वज ने कृष्ण और अर्जुन दोनों को मूर्छित किया। दोनों घोड़े और ताम्रध्वज रतनपुर में आए। राजा मयूरध्वज अपने पुत्र ताम्रध्वज के मुख से यह वृत्तांत सुनकर उसकी निंदा करने लगे। उधर कृष्णचन्द्र और अर्जुन सचेत होने पर मणिपुर से प्रस्थान कर अपनी सेना सहित मयूरध्वज की राजधानी रतनपुर में आए। कृष्णभगवान ने वृद्ध ब्राह्मण का रूपधारण किया। अर्जुन उनके शिष्य बने। (४५ वां अध्याय) ब्राह्मण ने यज्ञ में दीक्षित राजा मयूरध्वज के समीप जाकर स्वस्ति वचन कहा। राजा बोले कि हे ब्राह्मण! तुम जिस लिये मेरे यज्ञ में प्राप्त हुए हो वह कहो, मुझको कुछ अदेय नहीं है; मैं तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करूंगा। ब्राह्मण ने कहा कि हे राजन्! मैं धर्मपुर से अपने पुत्र के विवाह के निमित्त तुम्हारे पुरोहित कृष्णशर्मा से कन्या याचने के लिये अपने पुत्र के साथ चला। मार्ग के घोर वन में एक सिंह ने मेरे पुत्र को पकड़ लिया। मैंने उससे प्रार्थना की कि तुम मुझको भक्षण करो, मेरे पुत्र को छोड़ दो. सिंह ने कहा कि तेरा अंग तपस्या करने और वृद्ध होने के कारण जर्जर होगया है, स्वादिष्ठ नहीं है। अगर दिव्यरस दुग्ध और नाना विधि फलों करके पुष्ट राजा मयूरध्वज के शरीर का आधा दक्षिणीय भाग तुम आन कर मुझको दो तो मैं तुम्हारे पुत्र को छोड़ दूं। तुम राजा के पास जाकर मांगो, वह अपना शरीर दे देगा। हे राजन्! तुम सिंह से मेरे पुत्र को बचाओ। (४६ वां अध्याय) राजा ने प्रसन्न चित्त से अपना शरीर दो भाग करने के लिये अपनी स्त्री और अपने पुत्र के हाथ में 'आरा'

दिया। रानी कुमुद्वती ने राजा की आज्ञा से अपने पुत्र के सहित उस आरा से राजा के मस्तक को छेदन किया। सिर के कटने के समय बड़ा हाहाकार शब्द हुआ। उस समय राजा के बाएं नेत्र से जल गिरता हुआ देख ब्राह्मण बोले कि हे राजन्! तुम रोदन करते हुए दान देते हो मैं अभाव से दिया हुआ तुम्हारा आधा अंग ग्रहण नहीं करूंगा। तब राजा ने कहा कि हे मुनि शार्दूल! इस लिये मेरे बाएं नेत्र से जल गिरा कि मेरा दहिना अङ्ग ब्राह्मण के काम में लगता है, किंतु बायां अङ्ग वृथा जायगा। ऐसा राजा का बचन सुन ब्राह्मणरूपी कृष्ण भगवान ने प्रसन्न होकर अपना सुन्दर शरीर राजा को दिखलाया और ताम्रध्वज द्वारा अर्जुन के सहित अपना मूर्छित होने का वृत्तांत उनसे कहा, तथा ३ रात्रि राजा के गृह में निवास किया। राजा मयूरध्वज अपने मित्र वर्गों के सहित युधिष्ठिर के यज्ञअश्व की रक्षा करने के लिये कृष्ण के साथ चला।

कवरदह।

बिलासपुर के रेलवे स्टेशन से ६० मील पश्चिम कुछ उत्तर (२२ अन्श १ कला उत्तर अक्षांश और ८१ अन्श १९ कला पूर्व देशांतर में) बिलासपुर जिले के अंतर्गत कवरदह एक छोटे देशी राज्य की राजधानी है। उसमें कबीरपंथी के वंश घराने का प्रधान मठ है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय कवरदह में ५६८९ मनुष्य थे; अर्थात् ४१३१ हिंदू, ४९६ मुसलमान, ४२० पहाड़ी, ३४८ कबीरपंथी, और ३३० सतनामी।

कसबे के अधिक मकान खपड़े से छाए हुए हैं, जगह जगह पक्के मकान देख पड़ते हैं। राजा का मकान दो मंजिला बना है। कसबे में रूई और लाह की सौदागरी होती है। राजा के राज्य का क्षेत्रफल ८८७ वर्गमील है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय ८६३६२ मनुष्य थे। राज्य से लग भग ६८००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमें से १६७०० रुपया अंगरेजी गवर्नमेंट को दिया जाता है।

कबीरपंथी—कवरदह कबीरपंथी बंशघराने का सर्व प्रधान स्थान है। यहां बंशघराने के प्रधान महंत रहते हैं। उनके मठ पर हिंदुस्तान के सब विभागों से बहुत कबीरपंथी यात्री आते हैं। इसके आधीन बंशघराने का दूसरा मठ कवरदह से ८० मील से अधिक पूर्व कुछ दक्षिण कुदरमाल में है।

कबीरसाहब भारतवर्ष में बहुत मख्यात हुए। उनका नाम सब लोग जानते हैं। उनका जन्म श्रीकाशीजी में और शरीर त्याग गोरखपुर जिले के मगहर बस्ती में हुआ था। उन स्थानों के वृत्तांत में उनकी कथा देखिए।

नाभाजी ने अपने भक्तमाल ग्रन्थ में, जिसको बने हुए ३०० वर्ष हुए, लिखा है कि, कबीर कानि राखी नहीं वर्णाश्रम षटदर्शनी। भक्ति विमुख जो धर्म सो अधर्म करि गांयो। योग यज्ञ व्रत दान भजन बिन तुच्छ दिखायो। हिंदू तुरक प्रमाण रमैनी सबदी शापी। पक्षपात नहीं बचन सबही के हित की भाषी। आरूढ दशा है जगत पर मुख देखी नाहि न भनी। कबीर कानि राखी नहीं वर्णाश्रम षटदर्शनी ॥ ६० ॥ अर्थ;—कबीरसाहब ने वर्णाश्रम और षट दर्शनों की मर्यादा नहीं रक्खी। उन्होंने भक्ति से विमुख धर्म को अधर्म कहा; बिना भजन के योग, यज्ञ, व्रत और दान को तुच्छ बतलाया; हिंदू और मुसलमान के प्रमाण के लिये रमैनीग्रन्थ में बहुत सी शाखी लिखी; पक्षपात रहित सबके हित का वाक्य कहा और जगत् में आरूढ दशा को प्राप्त होकर मुहदेखी बात नहीं कही।

कबीरसाहब के पीछे कबीरपंथियों के बंशघराने, सुरतगोपाली, ज्ञानी इत्यादि १२॥ पथ चले। धर्मदासजी कबीरसाहब के प्रधान शिष्य थे कबीरपंथियों के बहुतेरे ग्रन्थों में कबीरसाहब और धर्मदासजी के संवाद की कथा है। कवरदह से कई एक मंजिल दूर गढ़बांधव एक बस्ती है, जिसमें धर्मदासजी का जन्म हुआ था। यहां भी कबीरपंथी का मठ है।

कबीरसाहब के अनुरागसागर आदि ग्रंथों में लिखा है कि धर्मदासजी की प्रार्थना करने पर कबीरसाहब ने कहा था कि तुम्हारा ४२ बंश चलेगा। ग्रन्थों में ४२ बंशों के भविष्य नाम लिखे हुए हैं वह ये हैं;—१ बचनचूड़ामणिसाहब,

(धर्मदासजी के पुत्र), २ सुदर्शननाम, ३ कुलपतिनाम, ४ प्रमोदगुरुबालापीर, ५ कमलनाम, ६ अमोलनाम, ७ सुरतसनेहीनाम, ८ हकनाम, ९ पाकनाम, १० प्रकटनाम, ११ धीरजनाम, १२ उग्रनाम, १३ दयानाम, १४ गिरिधरनाम, १५ प्रकाशनाम, १६ उदितनाम, १७ मुकुंदनाम, १८ अर्द्धनाम, १९ उदयनाम, २० ज्ञानीनाम, २१ हंसमणिनाम, २२ सुकृतनाम, २३ अग्रमणिनाम, २४ रहस्यनाम, २५ गंगमणिनाम, २६ पारसनाम, २७ जाग्रतनाम, २८ गंगामणिनाम, २९ अकहनाम, ३० कंठमणिनाम, ३१ संतोषनाम, ३२ चातकनाम, ३३ धनीनाम, ३४ नेहनाम, ३५ आदिनाम, ३६ महानाम, ३७ निजनाम, ३८ साहबनाम, ३९ उद्धवनाम, ४० केतनाम, ४१ दृगमणिनाम, और ४२ विज्ञानीनाम।

इनमें ११ वंश होगए। दसवें वंश के प्रकटनामसाहब के रहते हुए उनके पुत्र ११ वां वंश धीरजनामसाहब का देहांत होगया था। प्रकटनामसाहब की मृत्यु होने पर उनके भतीजे और धीरजनामसाहब के पुत्र मुकुंदीजी से कवरदह की गद्दी पर १२ वां वंश उग्रनाम बनने के लिये अदालत होरही है। प्रकटनामसाहब का भतीजा कहता है कि मुकुंदीजी धीरजनामसाहब की विवाहिता स्त्री का पुत्र नहीं है; यह क्यों गद्दी का अधिकारी होगा। कुदरमाल का महंत विश्वनाथदास मुकुंदीजी के पक्ष पर और कवरदह वाले लोग भतीजे की ओर हैं। भतीजे की जीत हुई है।

मध्यदेश में खास करके बिलासपुर, रायपुर, और छिंदवाड़ा जिले में कबीरपंथी बहुत हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय मध्य देश में ३४७९९४ कबीरपंथी थे। वंश घरानें के कबीरपंथी साधुओं के लिये विवाह करने का निषेध नहीं है; मध्य देश के प्रायः सब कबीरपंथी विवाह करते हैं; किंतु वंश घराने के अनेक साधु आदर के लिये अपना विवाह नहीं करते।

रायपुर।

बिलासपुर से ६८ मील (आसनसोल जंक्शन से ४३९ मील) पश्चिम-दक्षिण रायपुर का रेलवे स्टेशन है। मध्यदेश के छत्तीसगढ़ विभाग में (२१ अंश १९ कला उत्तर अक्षांश और ८१ अंश ४१ कला पूर्व देशान्तर में) रेलवे

स्टेशन से एक मील दूर छत्तीसगढ़ विभाग और रायपुर जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा रायपुर है। एक सड़क नागपुर से रायपुर संभलपुर और मेदनीपुर होकर कलकत्ते को गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय फौजी छावनी के साथ रायपुर कसबे में २३७५९ मनुष्य थे; अर्थात् १९०१३ हिन्दू, ३६२३ मुसल्मान, ५२८ एनिमिस्टिक, ३०० जैन, २७२ कृस्तान, २१ यहूदी और २ पारसी। मनुष्य संख्या के अनुसार यह मध्यदेश में ६ वां शहर है।

रेलवे स्टेशन से १ मील दूर कसबे के पास ऊपीराम माड़वारी की पुरानी धर्मशाला है, जिसका भाग उजड़ गया है। धर्मशाले से दक्षिण गोल नामक चौक में छोटी छोटी दुकानों के ४ चौखूंटे बाजार हैं। गोल चौक से दक्षिण २ मील लंबी १ पक्की सड़क है, जिसके बगलों में बहुतेरे बड़े मकान और कपड़े बर्तन इत्यादि की दुकानें बनी हैं। कसबे में १७ वीं शदी का बना हुआ पत्थर का कंकाली तालाब है, जिसको महन्त कृपालगिर ने बनवाया था; उसमें अब लोग कपड़े धोते हैं। रायपुर में जल कल सर्वत्र लगी है और प्रधान सड़कों पर रात्रि में लालटेनें बलती हैं।

कसबे के चारो ओर अनेक तालाब और बहुतेरे आम इत्यादि वृक्षों के बाग हैं और उसके पास एक पुराना जर्जर किला देख पड़ता है, जिसको सन् १४६० ई० में राजा भुवनेश्वरसिंह ने बनवाया था। किले के बाहर का घेरा लगभग १ मील लंबा है। किले के पूर्व उसी समय का बना हुआ बड़ा तालाब है, जो पूर्व काल में २ वर्ग मील में फैलता था, किन्तु हाल में मरम्मत के समय वह छोटा करदिया गया था। उसके पूर्व बगल में पबलिक बाग लगाया गया है। किले के दक्षिण १ वर्गमील में फैला हुआ महाराज तालाब है। तालाब के बांध के निकट श्रीरामचन्द्र का मन्दिर खड़ा है, जिसको सन् १७७५ में रायपुर के राजा भीमाजी भोंसला ने बनवाया। कसबे से १ मील उत्तर लगभग २०० वर्ष का पुराना बूढ़ा तालाब है, जिसको एक तेली सौदागर ने बनवाया था। लगभग सन् १८५० में रायपुर के शोभाराम महाजन के खर्च से वह सुधारा गया और उसके तीन बगलों पर पत्थर की सीढ़ियां बनाई गई।

तालाब का पानी उत्तम है; इसलिये कसबे के बहुत लोग उसको लेजाते हैं। शोभाराम के पिता दीनानाथ ने लगभग सन् १८३९ ई० में तेली बांध बनवाया था, जिसके एक बगल में पत्थर का काम है। यह छोटा है, किंतु इसमें पानी बहुत रहता है। कसबे से १ मील पश्चिम राजा बरियारसिंह के समय का बना हुआ लगभग २०० वर्ष का पुराना राजा तालाब है। तालाब के एक बगल में पत्थर की सीढ़ियां बनी हैं। रायपुर के पास लगभग ६० वर्ष का बना हुआ कोको तालाब है, जिसके तीन बगलों में पानी तक सीढ़ियां और ऊपर पत्थर की दीवारें हैं। उस तालाब में गणेश चौथ के उत्सव के अन्त में गणपतिजी की मूर्तियों को लोग बिसर्जन कर देते हैं।

इनके अतिरिक्त रायपुर में कमिश्नर की कचहरी, दीवानी और फौजदारी कचहरियां, अस्पताल, एक गिर्जा, सेंट्रल जेल, इत्यादि इमारतें हैं। देशी पैदल की एक रेजीमेंट रहती है। गल्ले कपास, लाह और दूसरी पैदावार की सौदागरी बढ़ती पर है। वर्तमान कसबे से दक्षिण और पश्चिम छोटी नदी के किनारे महादेवघाट तक रायपुर का पुराना कसबा था।

रायपर जिला—छत्तीसगढ़ विभाग के दक्षिणी विभाग में रायपुर जिला है। इसके पूर्व संभलपुर जिले के छोटे छोटे देशी राज्य; पश्चिम चन्दा और बालाघाट जिला; उत्तर बिलासपुर जिला और दक्षिण बस्तर का राज्य है। जिले का क्षेत्रफल ११८८५ वर्गमील है, जिसमें से लगभग ४००० वर्गमील भूमि जोती जाती है, और लगभग ४५०० वर्गमील जोतने लायक जमीन वीरान पड़ी है। रायपुर जिले की प्रधान फसिल धान है; उसके पश्चात् गेहूं, चना, अरहर, कोदो, तिल, कपास, रेंढी, इत्यादि होती हैं। जिले की सीमा के भीतर छुइकडा, कांकर, खैरागढ़ और राजनंदगांव ये ४ देशी राज्य हैं। जिले का सदर स्थान रायपुर कसबा है। जिले के पूर्वोत्तर और दक्षिण के भाग में जंगल है। जिले में दो नदियां हैं; महानदी और शिवनाथ। शिवनाथनदी में बहुतेरी छोटी नदियां मिली हैं, जो आगे जाकर महानदी में मिलगई है। महानदी रायपुर जिले के नवगढ़ के पास से निकलकर संभलपुर, सोनपुर और कटक होकर लगभग

५३० मील बहने के पश्चात् कटक शहर से पचास साठ मील पूर्व फलसपाइंट के समीप समुद्र में मिली है । पहिले यह उत्तर तब पूर्व जाकर संभळपुर जिले में प्रवेश करने पर उससे आगे दक्षिण-पूर्व गई है। रायपुर जिले में बहुत तालाब हैं। महानदी के आस पास और जिले के दक्षिणी भाग में १२ फीट से २४ फीट तक भूमि के नीचे कूपों में पानी है। जिले की कोई कोई पहाड़ी १५०० फीट से अधिक ऊंची है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय रायपुर जिले के अङ्गरेजी राज्य में १४०५१७१ मनुष्य थे; अर्थात् ८५६४९२ हिंदू, १६५७२९ आदि निवासी, १४३१७८ कबीरपंथी, २२३४४१ सतनामी, १४९९१ मुसलमान, ८२७ क्रस्तान और ५?३ जैन । जातियों के खाने में २६१७९१ गोड़, २४८४२९ चमार, २०३५०३ तेली, १४१९८३ अहीर, ५८२९३ कुर्मी, ५०९२३ केंवट, ३५७२८ गंडा, ३५०९६ मरार, ३१६५९ पंदा, २९३३३ कवार या कनवार, २६७९६ मेहरा, २०३०७ कलार, २०२६१ ब्राह्मण, ९३९३ राजपूत और शेष में बिजवार, भुंइयां, खांद, खरवार, कोस्टी, भीमर, बनजारा, घासिया इत्यादि जातियों के लोग थे।

सतनामी और कबीरपंथी रायपुर जिले में बहुत हैं। सतनामी हिंदू हैं; वे जाति भेद नही मानते हैं । इस पंथ में चमार जाति के लोग अधिक हैं, जो अपने को रैदासी कहते हैं । रैदास चमार १५ वीं शदी में रामानंद स्वामी का १ चेला था।

रायपुर जिले के केवल दो क़सबों में सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ५००० से अधिक मनुष्य थे; अर्थात् रायपुर में २४९४८ और धमतरी में ६६४७।

इतिहास—रायपुर जिला रतनपुर के हैहयवंशी राजाओं के राज्य का एक भाग था । उस वंश के २० वें राजा सूरदेव के राज्य के समय लगभग सन् ७५० में छतीसगढ़ दो भागों में बंट गया । राजा सूरदेव उत्तरीय भाग में और उसका छोटा भाई ब्रह्मदेव रायपुर को राजधानी बना

कर दक्षीणीय भाग में राज्य करने लगा। ब्रह्मदेव के ९ पुश्त के पीछे जब रायपुर के राजवंश में कोई नहीं था, तब लगभग सन् १३६० में रतनपुर के राजा जगन्नाथसिंहदेव का पुत्र रायपुर का राजा हुआ, जिसके वंशधर महाराष्ट्रों के आने के समय तक स्वतंत्र राज्य करते रहे। सन् १४६० में राजा भुवनेश्वरसिंह ने रायपुर के किले को बनवाया। सन् १८१८ में जब रायपुर अंगरेजी अधिकार में आया, किले के उत्तर बगल में प्रधान फाटक विद्यमान था। सन् १७४१ में महाराष्ट्रों ने रतनपुर के राजा रघुनाथसिंह को परास्त किया। उसके कई एक वर्ष पीछे रायपुर का राजा अमरसिंह राजसिंहासन से उतार दिया गया। उसको निर्वाह के लिये राजिमपाटन और रायपुर परगना मिला, जिनके लिये उसको ७०० पाउंड खिराज देना पड़ता था। सन् १८२२ में अमरसिंह के पोते रघुनाथसिंह ने बिना लगान के बारगांव और उसके पड़ोस के ४ गावों को पाया। महाराष्ट्रों के आधीन होने पर रायपुर की घटती होने लगी। सन् १८१८ में अंगरेजी सरकार ने नागपुर के आपासाहब को गद्दी से उतार कर एक लड़के तीसरे राघोजी को राजा बनाया और राज्य का प्रबंध अपने हाथ में लिया, उस समय से रायपुर की उन्नति होने लगी। सन् १८३० में रायपुर का वर्तमान कसबा बसा। पुराना कसबा इससे दक्षिण और पश्चिम था। सन् १८५४ में नागपुर का राज्य अंगरेजी गवर्नमेंट के अधिकार में हो गया। अङ्गरेजी सरकार ने सन् १८५८ में बलवे करने के अपराध में रायपुर के जमीन्दार नारायणसिंह की जमीन्दारी छीन ली।

राजनंदगांव।

रायपुर से ४२ मील पश्चिम मील (आसनसोल से ४८१ मील पश्चिम थोड़ा दक्षिण) राजनंदगांव का रेलवे स्टेशन है, जिससे १४ मील पहिले अर्थात् पूर्व राजनंदगांव के राज्य की पूर्वी सीमा के पास शिवनाथ नदी पर रेलवे का पुल मिलता है। मध्य देश के रायपुर जिले में एक छोटे देशी राज्य की राजधानी राजनंदगांव है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय राजधानी में ८८९० मनुष्य थे; अर्थात् ७६७९ हिंदू, ६७७ मुसलमान, २४४ जैन, ८३ कृस्तान और ६७ एनिमिष्टिक।

रेलवे स्टेशन से राजधानी तक सुन्दर सड़क बनी है। राजधानी में राजा का महल, कचहरियां, स्कूल इत्यादि इमारतें बनी हुई हैं। रेलवे होने से राजधानी की उन्नति हुई है।

राजनंदगांव का राज्य—यह रायपुर जिले में देशी राज्य है। राज्य का क्षेत्रफल ९०५ वर्गमील है। इसमें ४ परगने हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय राज्य के १ कसबे (नंदगांव) और ५४० गांव में १६४३३९ मनुष्य थे। राज्य की प्रधान फसिल धान, गेंहू, चना, कोदो, तेल के बीज और कपास है। राज्य के क्षेत्रफल में लगभग आधी भूमि जोती जाती है, जोतने लायक बहुत भूमि पड़ी हुई है। सन् १८८३ ई० में राज्य के ८ स्कूलों में २६३ विद्यार्थी पढ़ते थे। राज्य से २२२००० रुपये मालगुजारी आती है, जिसमें से ४६००० रुपये अङ्गरेजी सरकार को 'कर' दिया जाता है।

इतिहास—सन् १७२३ ई० में नागपुर के राजा ने अपने गुरू को राजनंदगांव का राज्य दान कर दिया। सन् १७६५ और सन् १८१८ में राज्य बढ़ाया गया। राजा वैरागी हैं। महंत घासीदास ने, जिनकी मृत्यु सन् १८८३ में हुई, रेलवे स्टेशन के पास एक बड़ा डाक बंगला और अपने राज्य में अनेक तालावों को बनवाया और कई एक की मरम्मत करवा दी। इस समय महंत-घासीदास के पुत्र (२६ वर्ष की अवस्था के) महंत राजा बलरामदास बहादुर राजनदगांव के राजा हैं। राजा को ७ हाथी, १०० घोड़े और ९०० पैदल सेना रखने का अधिकार है।

खैरागढ़।

राजनंदगांव से उत्तर और रायगढ़ कसबे से ४५ मील पश्चिमोत्तर (२१ अंश, २९ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ८१ अंश, २ कला, पूर्व

देशांतर में) अंत्रा और पिपरिया नदी के संगम के समीप रायपुर जिले में एक छोटे देशी राज्य की राजधानी खैरागढ़ है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय खैरागढ़ में २८८७ मनुष्य थे; अर्थात् २६०० हिंदू, १७६ मुसलमान, ७८ कबीरपंथी, २७ आदिनिवासी, ४ जैन और २ सतनामी।

खैरागढ़ के राजा राजगोंड़ हैं। कसबे में राजा का मकान, जेलखाना, कचहरी और स्कूल बना हुआ है।

खैरागढ़ राज्य—यह राज्य छत्तीसगढ़ के राज्यों में सबसे अधिक प्रसिद्ध रायपुर जिले में है। इसका क्षेत्रफल ९४० वर्गमील है। सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय राज्य के ५१२ कसबे और गावों में १६६१३८ मनुष्य थे। राज्य में किसी किसी जगह लोहे के ओर मिलते हैं। राज्य से २१४७०० रुपया मालगुजारी आती है। खैरागढ़ और डूँगरगढ़ में अस्पताल खुले हैं और जेलखाना तथा कचहरियां इत्यादि कई एक सरकारी इमारतें बनी हैं। खैरागढ़ से २४ मील दक्षिण की ओर और राजनंदगांव के रेलवे स्टेशन से १९ मील पश्चिमोत्तर डूँगरगढ़ का रेलवे स्टेशन है। सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय डूंगरगढ़ कसबे में ८,६७५ मनुष्य थे।

इतिहास—खैरागढ़ के राजा, जो जाति के राजगोंड हैं, गढ़मंडला के राजवंश की संतान हैं। जबलपुर कसबे से लगभग ५० मील दक्षिण-पूर्व जिले का सदर स्थान मंडला एक कसबा है, जिसके ३ बगलों में नर्मदा नदी बहती है। आरंभ में खेलवा नामक एक छोटे जंगली देश पर खैरागढ़ के राजा का अधिकार हुआ; किंतु सन् १८१८ में मंडला के प्रधान और नागपुर के राजा ने उसको भूमि का एक बड़ा भाग दे दिया।

खैरागढ़ के राजा लाल फतहसिंह तख्त से उतारे जाने के पश्चात् सन् १८७४ में मर गए। राज्य अंगरेजी प्रबंध के आधीन रहा। सन् १८८३ में लाल उमरावसिंह को राज्य का अधिकार दिया गया।

भंडारा।

राजनंदगांव से १९ मील पश्चिमोत्तर डूँगरगढ़ का रेलवेस्टेशन है, जहाँ एंजिन बदलते हैं और रेलवे संबंधी बहुत से यूरोपियन लोग रहते हैं। कसबे में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ५६७५ मनुष्य थे। कसबे के निकट ४ मील के घेरे का पहाड़ी पुराना किला उजाड़ पड़ा है, जिसके हाते के भीतर १ तालाब है। डूँगरगढ़ से २३ मील पश्चिम सलेक्सा के स्टेशन तक पहाड़ियों और बांस के भारी जंगलों में होकर रेलवे लाइन निकली है। १७ मील पर दरेकसा के स्टेशन से पश्चिम पहाड़ी फोड़ कर सुरंगी मार्ग से रेलवे लाइन निकाली गई है, जिसके पास के जंगल में बहुत से बाघ रहते हैं। रेलवे बनने के समय बाघों ने बहुतेरे लोगों को मार डाला था। सलेक्सा से ९ मील आगे जाने पर आमगांव के स्टेशन के पास छत्तीसगढ़ छूट कर नागपुर विभाग मिल जाता है। आमगांव से ४३ मील पश्चिम तमसारोड् स्टेशन के पास वेणगंगा पर रेलवे का पुल है।

तमसारोड् से ११ मील और आमगांव से ५६ मील (आसनसोल जंक्शन से ५८८ मील) पश्चिम और भंडारारोड् का रेलवे स्टेशन है। नागपुर विभाग में रेलवे स्टेशन से ६ मील दक्षिण वेणगंगा नदी के पश्चिम किनारे पर जिले का सदर स्थान भंडारा एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय भंडारा कसबे में १३३४८ मनुष्य थे; अर्थात् ११५०९ हिंदू, १६९९ मुसलमान, ८९ क्रस्तान, ६३ एनिमिस्टिक और २८ जैन।

कसबे में मामूली कपडे, और बर्तन की सौदागरी होती है। कूप और बाहर के तालाबों के पानी लोग पीते हैं। सरकारी मामूली कचहरियां, जेलखाना, पुलिसस्टेशन, पबलिक लाइब्रेरी, गवर्नमेंट अस्पताल, जिला स्कूल, लड़कियों का स्कूल इत्यादि इमारतें हैं। वहां एक महाराष्ट्र राजा रहता है। एक अच्छी सड़क नागपुर से पूर्व भंडारा, रायपुर, संभलपुर और मेदनीपुर होकर कलकत्ते को गई है।

भंडारा जिला—इसके पूर्व रायपुर जिला; दक्षिण चंदा जिला; पश्चिम नागपुर जिला और उत्तर सिउनी और बालाघाट जिला है। जिले के पश्चिम का भाग वेणगंगा के किनारे तक मैदान और उत्तर और पूर्व पहाड़ियां हैं, जिनपर खास करके गोंड़ और अन्य जंगली जातियों के लोग रहते हैं। जिले के क्षेत्रफल में एक तिहाई भाग से अधिक जंगल हैं। गर्मी की ऋतुओं में वेणगंगा के अतिरिक्त किसी नदी में पानी नहीं रहता है। जिले में ५००० से अधिक झीलें और तालाब हैं, जिनमें नवगांव, सिउनी और सेरगांव इत्यादि की झीलें और बहुतेरे तालाब बहुत बड़े हैं। नवगांव झील का क्षेत्रफल ५६ वर्गमील और उसका घेरा १७ मील का है, जिसमें जगह जगह १० फीट तक गहरा पानी है। जंगलों में महुए छोड़ कर किसी वृक्ष की लकड़ियां मकान के काम के योग्य नहीं होती। लोहा के ओर बहुतेरी जगहों में मिलते हैं। इमारत के काम का पत्थर पहाड़ियों से निकलता है। बाघ इत्यादि जंगली जानवर अनेक मनुष्यों को मारते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय भंडारा जिले के क्षेत्रफल ३९२२ वर्गमील में ६८३७७९ मनुष्य थे; अर्थात् ५८९६९९ हिंदू, ७८०२१ एनिमिस्टिक अर्थात् आदिनिवासी, १३१०२ मुसलमान, २१६९ कबीरपंथी, ५७६ जैन, १५७ कृस्तान, ३८ सतनामी, १२ सिक्ख, ४ पारसी और १ बौद्ध। आदिनिवासियों में ७०६८८ गोंड़ और शेष में कूरकू कोल इत्यादि और हिन्दुओं में ११३५८९ धेद और महारा, ७९०३६ कुर्मी, ५३९९० पोनवार, ४२७९६ गोरी, ३६९५२ तेली, २९३४७ धीमर, २५१९५ कलार, २०२५८ गोंड़, ७९९४ राजपूत, ६४३५ ब्राह्मण और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे। भंडारा जिले के भंडारा कसबे में ११६५९, पौनी में ९७७३, तुमसर में ७३८८ और मोहरी में ५१४२ मनुष्य थे।

इतिहास—१७ वीं शदी में भंडारा जिला देवगढ़ के गोंड़ राजा के अधिकार में था। उस समय बहुत से पोनवार, लोधी, राजपूत, कोरी, और कुन्बी आकर उस जिले में खास करके वेणगंगा के निकटवर्ती गांवों में बसे। सन् १७३८ में पहला राघोजी भोंसला ने उस देश को जीता। उसके

पश्चात् बहुत से अग्रवाल, मारवाड़ी, महाराष्ट्र, कुन्बी और लिंगायत वहां आ बसे। नागपुर के तीसरे राघोजी भोंसले के मरने पर सन् १८५४ में भंडारा जिला अंगरेजी अधिकार में हो गया।

कामटी।

भंडारारोड़ के स्टेशन से ३० मील (आसनसोल से ६१८ मील) पश्चिम और नागपुर शहर से ९ मील पूर्वोत्तर कामटी का रेलवे स्टेशन है। मध्यदेश के नागपुर जिले में कंधान नदी के दहिने किनारे पर कामटी एक अच्छा कसबा और फौजी छावनी का मुकाम है। कामटी से थोड़ही दूर पर पेंच और कोलहार नदी कंधान में मिली हैं। कंधान नदी पर छावनी के पूर्व पत्थर का सुन्दर पुल बना है, जिसके बनाने में लगभग ९००००० रुपया खर्च पड़ा था। उसके पास १०००००० रुपये के खर्च से बना हुआ लोहे का रेलवे पुल है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कामटी कसबे और फौजी छावनी में ४३१५९ मनुष्य थे, अर्थात् २२६६० पुरुष और २०४९९ स्त्रियां। इनमें २८५२१ हिंदू, ११५४६ मुसलमान, २४१२ कृस्तान, ३२० एनिमिष्टिक, २९१ जैन, ३९ पारसी, १६ यहूदी, ११ सिक्ख और ३ बौद्ध थे। मनुष्य गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ९३ वां और मध्य प्रदेश में ४ था शहर है।

छावनी और कसबे के बीच में छावनी के दक्षिण-पूर्व परेड की फैली हुई भूमि है। कसबे में चौड़ी सड़कें बनी हैं। कई धर्मशाले, स्कूल, एक अस्पताल, हाल का बना हुआ एक उत्तम तालाब, एक अच्छी सराय और बड़ा बाजार है। मवेसी, लकड़ी, गल्ले, नमक, कपड़े और अंगरेजी वस्तुओं की बड़ी तिजारत होती है।

सन् १८२१ ई० में वहां फौजी छावनी नियत हुई। उसी समय वहां कामटी कसबा बस गया। कामटी में कंधान नदी के दहिने फौजी छावनी है, किंतु रिसाले बाएं रहती है। नदी के दहिने लगभग ४ मील लंबी छावनी की चौड़ी सड़क है। प्रथम कामटी में बहुत फौज रहती थी; किंतु अब यूरोपियन आरटिलरी की एक बैटरी और कुछ देशी सेना है। इनके अतिरिक्त कामटी में ७० मंदिर, ९ मसजिदें, २ गिरजे और लगभग ४६० कूप हैं।

रामटेक।

कामटी से १८ मील और नागपुर शहर से २४ मील पूर्वोत्तर (तोरसा के रेलवे स्टेशन से ११ मील उत्तर) २१ अंश, २४ कला, उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, २० कला, पूर्व देशांतर में नागपुर जिले के अन्तर्गत एक तहसीली का सदरस्थान रामटेक छोटा कसबा है। एक बड़ी सड़क नागपुर, शहर से कामटी और रामटेक से ४ मील पश्चिम होकर जवलपुर को गई है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय रामटेक में ७८१४ मनुष्य थे; अर्थात् ६९७८ हिंदू, ६१४ मुसलमान, १२१ पहाड़ी जातियां और १०१ जैन।

रामटेक पवित्र स्थान है और पान के लिये भारतवर्ष में प्रसिद्ध है। उसमें लगभग २०० घर तंबोली बसते हैं। उसके आसपास पान बहुत होता है। वहां से बहुत पान छिंदवाड़ा, सिउनी, जवलपुर और बंबई को भेजा जाता है। कसबे में छोटे बड़े लगभग २० देवमंदिर बने हुए हैं। कसबे के पश्चिम भाग में सरकारी आफिसे हैं। मैदान से ५०० फीट ऊंची पहाड़ी पर एक सुंदर बंगला बना है।

रामटेक के पास एक पहाड़ी है, जिसके उत्तर बगल पर एक बहुत पुराना मंदिर है, जिसके पास अनेक मंदिर बने हैं। पहाड़ी के ऊपर उसके पश्चिम किनारे के पास एक हाते के भीतर श्रीरामचन्द्रजी का प्राचीन विशाल मन्दिर है। उसके पास के छोटे मन्दिरों और दीवारों के ऊपर उसका शिखर दूर से देख पड़ता है। रामटेक के पास से पहाड़ी के शिखर तक बहुत सीढ़ियां बनी हुई हैं।

रामटेक से २ मील दूर अंबाड़ा बस्ती तक एक अच्छी सड़क गई है, जहां अंबाड़ा नामक पुराना तालाब है। तालाब के तीन बगलों में पानी तक पत्थर की सीढ़ियां बनी हैं और बगलों में महाराष्ट्रों के बनवाए हुए पंद्रह बीस देव मन्दिर बने हुए हैं। यहां कार्तिक की पूर्णिमा को एक बड़ा मेला होता है, जो ९ दिन तक रहता है। मेले में कपड़े, बर्तन, मनिहारी की चीजें इत्यादि वस्तु बिकती हैं और लगभग १००००० आदमी आते हैं।

तालाब के किनारे से पहाड़ी के ऊपर के मन्दिरोंतक ½ मील लंबी पत्थर

की सीढ़ियां गई हैं। यात्रीगण तालाब में स्नान करके सीढ़ियों द्वारा ऊपर के मंदिरों में जाकर पूजा करते हैं। पहाड़ी के शिखर के पास एक बावली के समीप एक धर्मशाला है। पहाड़ी पर पहला राघोजी भोंसला का बनवाया हुआ गढ़ है। उसके पहले चौगान में दहिने नारायण का और बाएं एक दूसरे देवता का मंदिर है। दूसरे चौगान में महाराष्ट्रों का हथियार खाना था, जिसकी दीवार की निशानी विद्यमान हैं। तीसरे चौगान में भैरव दरवाजा होकर जाना होता है। उस हिस्से की दीवार और बुर्ज अभी तक अच्छे बने हुए हैं। गोकुल दरवाजा होकर गणपति, हनूमान और रामचंद्र के मन्दिर को जाना होता है। इसी चौगान से पत्थर की दूसरी सीढ़िया नीचे रामटेक कसबे को गई हैं।

दूसरा अध्याय।

(मध्यदेश में) नागपुर, वरधा, चांदा, (वरार में) अमरावती, एलिचपुर, अकोला, वासिम, सेगांव, और खामगांव।

नागपुर।

कामटी से ९ मील पश्चिम और आसनसोल जंक्शन से ६२७ मील पश्चिम थोड़ा दक्षिण नागपुर का रेलवे स्टेशन है। मध्यदेश में (२१ अंश, ९ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, ७ कला पूर्व देशांतर में) नाग नामक छोटी नदी के किनारे पर मध्यदेश और नागपुर जिले का सदर स्थान और मध्यदेश का प्रधान शहर नागपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय फौजी छावनी के साथ नागपुर शहर में ११७०१४ मनुष्य थे; अर्थात् ६०६४० पुरुष और ५६३७४ स्त्रियां। इनमें

९४५४९ हिंदू, १६३८७ मुसलमान, ३०८७ कृस्तान, ११६३ एनिमिष्टिक, १०४१ जैन, ३१७ पारसी, २३१ बौद्ध, १३८ सिक्ख और ८१ यहूदी थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में २३ वां और मध्यदेश में पहिला शहर है।

म्युनिसिपेल्टी के भीतर खास शहर के अलावे सीतावर्डी और ताकली शहरतली है। शहर के भीतर सीतावर्डी पहाड़ी के ऊपर सीतावर्डी नामक किला है, जिसको देखने के लिये पास लेना होता है। पहाड़ी के नीचे उसके उत्तर और पश्चिम नागपुर का सिविल स्टेशन है। स्टेशन से उत्तर फौजी लाईन और बाजार है। उनसे उत्तर ताकली शहरतली है, जिसकी पहाड़ी पर उत्तम नई रेजीडेंसी बनी है; किंतु चीफकमिश्नर खास करके सतपुड़ा पहाड़ी पर पचमारी में रहते हैं। सीतावर्डी पहाड़ी के दक्षिण के बगल के नीचे सीतावर्डी शहरतली में पुरानी रेजीडेंसी है, जहां चीफ कमिश्नर रहते थे।

पहाड़ी के पूर्व नागपुर के रेलवे स्टेशन के पास पुतलीघर और राजाराम और रामचंद्र की नई धर्मशाला हैं, उसी धर्मशाले में मेरे (पिता के) रामेश्वर के पंडे के दो गुमास्ते मुझको मिल गये। उनमें से एक हमारे साथ चला और रामेश्वर तक हमारे साथ साथ गया। उस धर्मशाले के अलावे नागपुर में, कई धर्मशाले और ३ सरकारी सराय हैं। रेलवे स्टेशन से पूर्व महाराष्ट्र राजा का बनवाया हुआ बहुत बड़ा जामा तालाव और तालाव से पूर्व खास शहर है। ३ बड़ी सड़कें यूरोपियन स्टेशन से शहर को गई हैं,—एक उत्तर, दूसरी जामातालाव के दक्षिण किनारे होकर और तीसरी, जो सबसे उत्तर है, स्टेशन के उत्तर रेलवे होकर। किले से थोड़ी दूर पर एक छोटा अजायब खाना है।

रेलवे स्टेशन से २ मील दूर नागपुर की दीवानी कचहरियां हैं। शहर के पड़ोस में महाराष्ट्र राजाओं का बनवाया हुआ अंबाझीरी और तेलिंगखेरी उत्तम तालाव है। अंबाझीरी से जलकल द्वारा शहर और सिविल स्टेशन में पानी आता है। इनके अलावे नागपुर के आस पास कई छोटे तालाव हैं। शहर और शहरतलियों में बहुत बाग (अर्थात् उद्यान) हैं, जिनमें से सीतावर्डी का महाराज बाग, शहर के भीतर का तुलसीबाग, शहरतलियों में

सकरदारा, पाल्टी, सोनगांव और तेलिंगखेरीबाग प्रधान हैं। इनमें से महाराज बाग सब बागों से उत्तम है। इसमें स्थान स्थान पर फूल और पत्तों की वेल के गमले लगे हैं। एक स्थान पर छोटे हौज में जीवित हाथी के समान पत्थर का बड़ा हाथी खड़ा है। उसके मून्ड से कल का पानी सर्वदा गिरा करता है, जो हौज से नाला द्वारा निकल कर फूल की क्यारियों को सींचता है। इस बाग में एक छोटा चिड़ियाखाना (जंतुशाला) है, जिसमें अनेक बाघ, भालू, बंदर, हरिन, भेड़िया, नीलगाय, और भांतिभांति के चिड़िये पाले जाते हैं।

नागपुर में महाराष्ट्र राजाओं के समय के बहुतेरे मंदिर हैं, जिनमें से कई एक मंदिरों में नकासी का उत्तम काम बना है। शहर के दक्षिण शुक्रवारी महल्ले में भोंसले राजाओं की अनेक छत्तरियां अर्थात् समाधि मंदिर बने हुए हैं। इनके अतिरिक्त नागपुर में एक सेंट्रल जेलखाना, जिसमें लगभग १ हजार कैदी रह सकते हैं; दो गिरजे, कई एक स्कूल, मोरिस कालिज, पागलखाना, कोढ़ीखाना, गरीबखाना, एक कृषीस्कूल, जिसमें लड़कों को खेती की विद्या सिखलाई जाती है और दो कल कारखाने हैं। काले अर्थात् तेलिया पत्थर का बना हुआ नागपुर के भोंसले का उत्तम महल था, जो सन् १८६४ में जला दिया गया; अब केवल उसका नक्कारखाना है। शहर में भोंसले वंश के एक छोटे राजा हैं।

गुरुगंज स्क्वेयर और गचीपगार में सप्ताहिक बड़ा बाजार लगता है। शहर में शुक्र आदि दिनों के नाम से कई महल्ले का नाम पड़ा है। नागपुर नारंगियों के लिये प्रसिद्ध है। वहां से नारंगी हिंदुस्तान के दूरदूर प्रदेशों के अलावे विलायत में भी भेजी जाती है। नागपुर की बड़ी सौदागरी उन्नति पर है। गेंहू, गल्ला, नमक, कपड़ा, मसाला, अङ्गरेजी सामान इत्यादि चीजें दूसरे देशों से नागपुर में आती हैं और बहुत से कपड़े बनकर दूसरे देशों में जाते हैं। सवारी के लिये टमटम और एके बहुत मिलते हैं। वहां के बहुतेरे लोग सवारी के लिये हल्की सुन्दर बैलगाड़ी रखते हैं, जिसको लोग रिंगी कहते हैं। वह एक दूसरे ढंग की लंबी होती है; उसके बैल तेजी से दौड़ते हैं।

नागपुर से एक सड़क उत्तर कुछ पूर्व जबलपुर को और दूसरी सड़क पूर्व भंडारा, रायपुर, संभलपुर, क्योंझोर और मेदनीपुर होकर कलकत्ते को गई है।

नागपुर जिला—इसके पूर्व भंडारा जिला; उत्तर छिंदवाड़ा और सिउनी जिला; दक्षिण-पश्चिम वरदा जिला और दक्षिण-पूर्व चांदा जिला है। नागपुर विभाग और जिले का सदर स्थान नागपुर कसबा है। इस जिले की उत्तरी सीमा पर लगातार पहाड़ियों का जंजीरा है और दक्षिण-पश्चिम की सीमा के भीतर पहाड़ियों का बड़ा भाग है। जिले की खरकी पहाड़ी समुद्र के जल से लगभग २००० फीट ऊंची है। पहाड़ियों का तीसरा सिलसिला देश के बीच से होकर उत्तर से दक्षिण चला गया है। ये तीनों सिलसिले सतपुड़ा के हिस्से हैं। जिले के पूर्वोत्तर भाग में रामटेक नामक पवित्र पहाड़ी पर एक पुराना किला और कई एक देवमंदिर स्थित हैं। नागपुर शहर के पास एक छोटी पहाड़ी पर सीताबड़ी किला है। सन् १८८३—१८८४ में जिले के ३७८६ वर्गमील क्षेत्रफल में १९३२ वर्गमील भूमि जोती जाती थी; ७८९ वर्गमील जोतने के लायक और १०६५ वर्गमील नहीं जोतने योग्य थी। जिले की प्रधान फसिल गेंहू, कपास, ऊख और तंबाकू हैं। जिले में चोखार बहुधा हुआ करता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय नागपुर जिले के ३७८६ वर्गमील क्षेत्रफल में ६९७३५६ मनुष्य थे; अर्थात् ५९८४४१ हिंदू, ४२७५० आदि निवासी, जो प्रायः सब गोंड़ हैं; ३९७६५ मुसलमान, ७३७१ कबीरपंथी, ४८५० कृस्तान, ३६६४ जैन, ५१६ सतनामी, १७८ पारसी, ६ ब्राह्म, ५ बौद्ध, ४ यहूदी और ६ अन्य। हिंदुओं में १४५८१९ कुर्मी, ८२०६६ महारा, ५४४५१ तेली, ३७७३३ कोसटा, २७६१० माली, २१०२८ ब्राह्मण, १८८८४ मेहरा, ११२१२ राजपूत और शेष में गररी, परई इत्यादि दूसरी जातियों के लोग थे। नागपुर जिले के कसबे नागपुर में ९८२९९ (सन् १८९१ में ११७०१४), कामटी में ५०९८७ (सन् १८९१ में ४३१५९), अमरेर में १४२४७ (सन् १८९१ में १५१८०), खापा में ८४६५, रामटेक में ७८१४ और नरखेरा में ७०६१ मनुष्य थे।

इतिहास—सोलहवीं शदी में नागपुर जिला देवगढ़ के गोंड़-राज्य का एक भाग बना। देवगढ़ के राजा के छोटे भाई जतवा ने पहाड़ी पर एक

दृढ़ किला बनवाया। उसके और उसकी संतान के बनवाये हुए बहुतेरे टूटे फूटे किले नागपुर जिले में जगह जगह देख पड़ते हैं। लगभग सन् १७०० ई० में उसके ३ या ४ पुश्त पीछे के बख्त बुलंद ने देवगढ़ के राज्य को प्रतापी बनाया और राज्य को बहुत बढ़ाया। उसके बाद के राजा चांदसुलतान ने नागपुर शहर को दीवार से घेरवाया और उसको अपनी राजधानी बनाया। सन् १७३९ में चांदसुलतान की मृत्यु होने पर बख्तबुलंद के पुत्र अलीशाह बरजोरी से तख्त पर बैठ गया। तब चांदसुलतान की विधवा ने अपने पुत्र बुरहानशाह और अकबरशाह को राज्य दिलाने के लिये बरार से राघोजी भोंसले को बुलाया। अलीशाह मारा गया। चांदसुलतान के पुत्रों को राज्य मिला। राघोजी के चले जाने पर चांदसुलतान के दोनों पुत्रों में राज्य के लिये लड़ाई हुई। बुरहानशाह ने सन् १७४३ में अपनी सहायता के लिये राघोजी भोंसला को बुलाया। अकबरशाह राज्य से निकाला गया। राघोजी ने बुरहानशाह का पेंशन मुकरर करके उसको राजा की पदवी देकर राज्य को अपने अधिकार में कर लिया और नागपुर शहर को अपनी राजधानी बनाया।

सन् १७४४ में नागपुर के राघोजी भोंसला ने पूना के पेशवा से बरार से कटक तक 'कर' लेने की शनद ली और सन् १७५० में बरार, गोंडवाना और बंगाल के लिये नई शनदें हासिल कीं। उसने सन् १७५१ में बंगाल से चौथ तहसीली और सूबे उड़ीसे का दक्षिणी भाग अपने अधिकार में कर लिया। इस प्रकार उसने बाहर के देशों को जीतकर एक बड़े देश के ऊपर अपनी हुकूमत फैलाई। सन् १७५५ में पहला राघोजी की मृत्यु होने पर उसका बड़ा पुत्र जानोंजी नागपुर का राजा हुआ और छोटे पुत्र माधोजी को छतीसगढ़ और चन्दा मिला। सन् १७६५ में निजाम और पेशवा दोनों ने मिल कर जानोंजी को परास्त करके नागपुर को जलाया; किंतु उसके ४ वर्ष पीछे पेशवा ने जानोंजी भोंसले से एक सधि की, जिसके अनुसार जानोंजी की पूरी स्वाधीनता होगई। उसके ३ वर्ष पश्चात् जानोंजी मर गया। वह चन्दा के माधोजी के पुत्र अर्थात् अपने भतीजे राघोजी को गोद ले चुका था। माधोजी अपने पुत्र को गद्दी पर बैठा कर राज्य कार्य चलाने लगा। सन्

१७८८ में माधोजी के मरने पर उसका पुत्र दूसरा राघोजी राज्य का काम करने लगा। उसके राज्य के समय नागपुर का बल अधिक बढ़ गया और अंगरेजों से अधिक सरोकार हुआ। जब सन् १७५६ और १७६५ के बीच में बंगाल में अंगरेजों का अधिकार हो गया तब महाराष्ट्रों की चढ़ाई बंद हुई। सन् १७९८ के थोड़े दिन पीछे राघोजी ने सिंधिया के साथ मिल कर अंगरेजों से मुकाबिला किया। अंगरेजों ने जब असाई और अरगांव की लड़ाइयों में महाराष्ट्रों को दबाया तब देवगांव में संधि हुई, जिसके अनुसार राघोजी भोंसला ने अपने राज्य का तीसरा भाग अंगरेजों को दे दिया और नागपुर में एक रेंजीडेंट को रखना कबूल किया। सन् १८०३ में अंगरेजों ने महाराष्ट्रों को सूबे उड़ीसे से निकाल दिया। राघोजी अपने राज्य से अधिक मालगुजारी लेने लगे और पिंडारी लूट पाट करने लगे, इससे नागपुर का वर्तमान जिला पूरे तौर से बरबाद हो गया। सन् १८१६ में दूसरा राघोजी मर गया। उसका पुत्र परशूजी अन्धा लंगड़ा और निर्बल था, इस लिये राघोजी का भतीजा आपासाहब राज प्रतिनिधि बना। चंद महीनो के पश्चात् आपासाहब ने परशूजी को विष देकर मरवा डाला और आप नागपुर के राज सिंहासन पर बैठा। उसने अंगरेजों के दुश्मन पेशवा से दोस्ती की, इसलिये अंगरेजों ने कई बार नागपुर पर आक्रमण किया। प्रथम तो आपासाहब ने अंगरेजी सेना को भगा दिया; किंतु सन् १८१७ के अन्त में वह नागपुर के पास परास्त होकर भाग गया। अंगरेजों ने दूसरे राघोजी के पोते को, जो नीरा बालक था, राघोजी की पदवी देकर गद्दी पर बैठाया। अंगरेजी रेजीडेंट राज्य का प्रबंध करने लगा। सन् १७३०. में बड़े होने पर तीसरे राघोजी को राज्य का अधिकार मिला। सन् १८५३ में तीसरा राघोजी मर गया। तब अंगरेजी गवर्नमेंट ने उसके गोद लिये हुए बालक को राजा स्वीकार न करके नागपुर के राज्य को अपने राज्य में मिला लिया।

सन् १८५७ के बलवे के समय देशी सवारों ने शहर के मुसलमानों से राय करके बगावत करने की ता: १३ जून नियत की, किंतु पैदल सेना अङ्गरेजों की ओर थी, इस लिये बगावत नहीं हो सका। पीछे बागी होने

वाली फौज के हथियार छीन लिये गए और वे लोग निकाल बाहर किए गए। ता: २४ जून को इरेंगुलर रिसाले के हथियार लेलिये गए; किंतु नवंबर में उनको फिर हथियार दिए गए और वे लोग संभलपुर की ओर सरकारी काम के लिये भेजे गए।

सन् १८६१ में सागर और नर्मदा देश में नागपुर देश मिला दिया गया। तीनो मिलकर वर्तमान मध्य देश, जिसका सदर स्थान नागपुर कसवा है, नियत हुआ।

मध्यदेश—मध्य देश एक चीफ कमिश्नर के आधिन है, जो नागपुर शहर में रहते हैं। इसके पूर्व गवर्नमेंट वंगाल, दक्षिण मदरास हाता और हदरावाद का राज्य; पश्चिम बरार; पश्चिमोत्तर मालवा और उत्तर मध्यहिंद और बुन्देलखंड है। इसकी सबसे अधिक लंबाई पूर्व से पश्चिम तक लगभग ६०० मील और उत्तर से दक्षिण तक करीब ५०० मील है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मध्य देश के अंगरेजी राज्य का क्षेत्रफल ८६५०१ वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या १०७८४२९४ थी; अर्थात् ५३१७३०४ पुरुष और ५३८६१९० स्त्रियां। इनमें ८८३१४६७ हिंदू, १५९२१४९ एनिमिष्टिक अर्थात् जगली जातियां इत्यादि; २९७६०४ मुसलमान, ४८६४४ जैन, १२९७० कृस्तान, ७८१ पारसी, ३२२ बौद्ध, १७६ यहूदी, १७२ सिक्ख और ९ अन्य/ऍ। इनमें सैकड़े पीछे ६०½ हिंदी भाषा वाले,१९¾ महाराष्ट्र भाषा वाले, ९¼ गोंड़ भाषा वाले, ६¼ उड़ीया भाषा वाले, १½ उर्दू भाषा वाले और ३ अन्य भाषा बोलने वाले मनुष्य थे। मध्य देश के लोगों की बोली और चाल तथा पहराव वंगला, उड़िया, महाराष्ट्री और हिंदी की खिचड़ी है।

मध्यदेश में ४ भाग और १९ जिले इस भांति है,—(१) नागपुर किस्मत में नागपुर, भंडारा, वरधा, चांदा, बालाघाट और अपरगोदावरी, (२) नर्मदा विभाग में नरसिंहपुर, हुशंगाबाद, निमार, बेतूल और चिंदवाड़ा, (३) जबलपुर विभाग में, जबलपुर, सागर, दमोह, मंडला और सिउनी और (४) छतीसगढ़ विभाग में रायपुर, बिलासपुर और संभलपुर जिला।

मध्यदेश के अंगरेजी राज्य के शहर और कसबे, जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १०००० से अधिक मनुष्य थे;—

नं०	शहर या कसबा	जिला	जन-संख्या	नं०	शहर या कसबा	जिला	जन-संख्या
१	नागपुर	नागपुर	११७०१४	१२	हुशंगाबाद	हुशंगाबाद	१३४९९
२	जबलपुर	जबलपुर	८४४८१	१३	भंडारा	भंडारा	१३३४८
३	सागर	सागर	४४६७४	१४	सिउनी	सिउनी	११९७६
४	कामटी	नागपुर	४३१५९	१५	दमोह	दमोह	११७५३
५	बुरहानपुर	निमार	३२२५२	१६	बिलासपुर	बिलासपुर	११२२२
६	रायपुर	रायपुर	२३७५९	१७	हिंगनघाट	वरधा	१०९६४
७	चांदा	चांदा	१६१७५	१८	नरसिंहपुर	नरसिंहपुर	१०२२०
८	खंडवा	निमार	१५५८९	१९	वरोरा	चांदा	१००१८
९	अमरेर	नागपुर	१५१८०				
१०	संभलपुर	संभलपुर	१४५७१				
११	हरदा	हुशंगाबाद	१३५५६				

मध्यदेश में १५ देशी राज्य हैं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय देशी राज्यों के २९४३५ वर्गमील क्षेत्रफल में २१६०५११ मनुष्य थे; अर्थात् १०८९०११ पुरुष और १०७१५०० स्त्रियां। इनमें १६५८१५३ हिंदू, ४८९५७२ एनिमिष्टिक अर्थात् जंगली जातियों के लोग, ११८७५ मुसलमान, ५६८ जैन, ३३८ कृस्तान, ३ बौद्ध १ सिक्ख और १ अन्य था। इनमें सैकडे पीछे ४२½ उड़िया भाषा वाले, ३६ हिंदी भाषा वाले, ८½ गोंड भाषा वाले, ६½ हलावी भाषा वाले, ३ खांद भाषा वाले और ३½ अन्य भाषा वाले मनुष्य थे।

देशी राज्य के कसबे; जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ५००० से अधिक मनुष्य थे;—

नं०	कसबा	राज्य	जन-संख्या	नं०	कसबा	राज्य	जन-संख्या
१	राजनंदगांव	राजनंदगांव	८८५०	४	कवरधा	कवरधा	५३४०
२	सोनपुर	सोनपुर	८६९८	५	जगदलपुर	बस्तर	५०४४
३	डूंगरगढ़	खैरागढ़	५६७५	६	बेंका	०	५०४०

मध्यदेश के देशी राज्यों का लिस्त,—

नं०	देशी राज्य	क्षेत्रफल वर्गमील	मनुष्य-संख्या सन् १८८१	मालगुजारी रुपया	राज्य का पता
१	खैरागढ़···	१४०	१६६१३८	२१४७००	रायपुर जिले में ।
२	राजनंदगांव	१०५	१६४३३१	२२२०००	रायपुर जिले में ।
३	बस्तर ···	१३०६२	११६२४८	१४१३००	रायपुर जिले के दक्षिण और चांदा जिले के उत्तर ।
४	कालाहांडी	३७४५	२२४५४८	१०००००	पटना-राज्य के दक्षिण ।
५	पटना ···	२३११	२५७१५१	८१०००	कालाहांडी-राज्य के उत्तर और सोनपुर-राज्य के पश्चिम।
६	रायगढ़···	१४८६	१२८१४३	६६७००	सुरगुजा से दक्षिण और संभलपुर जिले से उत्तर ।
७	सोनपुर···	१०६	१७८७०१	५१५००	संभलपुर जिले के दक्षिण-और पटना-राज्य के पूर्व ।
८	यामड़ा ···	११८८	८१२८६	३७०००	संभलपुर के पूर्व ।
९	कयरदह	८८७	८६३६२	६८०००	विलासपुर जिले में ।
१०	सारनगढ़	५४०	७१२७४	४१७००	सभलपुर के पश्चिम और-रायगढ़-राज्य के दक्षिण ।
११	कांकर ···	६३१	६३६१०	२२०००	रायपुर जिले के पश्चिम और-वस्तर-राज्य के उत्तर ।
१२	लुइकडा	१७४०	३२१७१	३३०००	रायपुर जिले में सालटेकरी-पहाडी के पास ।
१३	रेहराखोल	८३३	१७७५०	३३०००	यामड़ा राज्य के दक्षिण और-संभलपुर जिले के पूर्व ।
१४	मकराई···	२१५	१९७६४	३३०००	हुसंगाबाद जिले में ।
१५	सक्टी ···	११५	२२८११	२५०००	रायगढ़ के पश्चिम, विलासपुर जिले के पूर्वी सीमा के पास
	जोड़	२८८३४	१७०१७२०		

खरागढ़, रायगढ़, सारनगढ़, मकराई और सकटी के राजा गोड़; बस्तर, कालाहांडी, पटना, सोनपुर, बामड़ा, कांकर और रेहराखोल के राजा राजपूत और राजनंदगांव तथा छुइकड़ा के राजा बैरागी हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के अनुसार मध्यदेश के अंगरेजी और देशी राज्य दोनों का क्षेत्रफल ११८९३६ वर्गमील और मनुष्य-संख्या १२९४४८०५ है। मध्यदेश में जंगल और पहाड़ियां बहुत हैं। आबादी कम है। कोयले और लोहे की खानियां बहुत स्थानों में हैं। गेंहू और कपास बहुत उत्पन्न होते हैं। महानदी, शिवनाथ, नर्मदा, वरधा, बेणगंगा, इत्यादि बहुतसी नदियां बहती हैं। सीमें पर कुछ दूर तक गोदावरी नदी बहती है। झील और तालाब बहुत हैं। क्षेत्रफल की एक तिहाई से कुछ अधिक भूमि जोती जाती है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय मध्य देश की जातियों में नीचे लिखी हुई जातियों के लोग इस भांति पढ़े हुए थे, प्रति हजार में कायस्थों में ४७५ पुरुष और १६ स्त्रियां; बनियों में ३८८ पुरुष; विधुर में ३४२ पुरुष और ४ स्त्रियां और ब्राह्मणों में ३१७ पुरुष और ७ स्त्रियां।

मध्यदेश के निवासियों में महाराष्ट्र और गोंड़ अधिक हैं। लगभग २० लाख कोल हैं। बहुतेरे लोग कबीरपंथी, सतनामी, कुंभीपंथिया, सिद्धपंथी, धामीपंथी इत्यादि मतों के अनुगामी हैं।

मध्यदेश के प्रायः सब पहाड़ी कोमों का काला चमड़ा, चिपटा नाक और मोटा ओठ होता है, जिससे वे पहचाने जाते हैं कि एरियन नहीं हैं। वे लोग खास करके भगवा पहनते हैं और माता तथा हैजे को पूजते हैं और भूत तथा प्रेतों में अधिक विश्वास रखते हैं। साधारण प्रकार से लोग विवाह बंधन पर बहुत कम खियाल रखते हैं। अविवाहिता स्त्री का पुत्र विवाहिता स्त्री के पुत्र के बराबर पिता के धन संपत्ति का भागी होता है। पहाड़ी लोगों में मरिया जाति के लोग बड़े गंवार हैं, जो तीर चलाने में बड़े प्रवीन होते हैं। मारीलोग उनसे भी अधिक गंवार हैं। वे लोग बिना पहचान के आदमी को देख कर अपने घास के झोपड़ों में भाग जाते हैं। वे अपने राजा को वर्ष में

एक वार मालगुजारी में गल्ले आदि फसिल देते हैं। राजा के कर्मचारी लोग उनकी झोपड़ियों के निकट जाकर बाजा बजाने के उपरांत आप छिप जाते हैं। तब मारीलोग नियत स्थानों पर नियत फसिल रखकर चले जाते हैं। कर्मचारी लोग उसे उठा ले जाते हैं। बहुत पहाड़ीलोग हिंदू में मिल गए हैं और हिंदू में लिखे जाते हैं। बस्तर के राज्य में काली दंतेश्वरी राज्य की रक्षक समझी जाती है। उसको पहले मनुष्य वलि दिए जाते थे; किंतु अंगरेज महाराज ने सन् १८४२ मे उस रीति को रोक दिया। उस राज्य के पूर्वी भाग में गड़वा जाति के पहाड़ीलोग होते हैं, जो खेती और मजदूरी से अपना निर्वाह करते हैं। उनकी स्त्रियां करिंग के वृक्ष की छाल से वने हुए ६ फीट लंबे और ३ फीट चौड़े कपड़े को अपने कमर के चारो तरफ लपेट कर कंधे के पास लाकर लगभग १½ फीट लंबे पट्टए से छाती पर बांधती हैं। वे कुश (घास) के बने हुये सिरोभूषण और पीतल के तार के कर्णभूषण अर्थात् वड़ा बाला, जो कंधे तक लटके रहते हैं, पहनती हैं।

मध्यदेश के बहुतेरे बैल और गाय लाल रंग की होती हैं। हल और गाड़ियों में भैंसे भी जोते जाते हैं। प्रायः सब गाड़ियों के पहिये बहुत छोटे छोटे होते हैं। रेलवे के बड़े स्टेशनों पर केले, अमरूद और नारंगी मिलती हैं।

कबीरपंथी—मध्यदेश में खास करके बिलासपुर, रायपुर और छिंदवाड़ा जिले में कबीरपंथी बहुत हैं, जो सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय मध्यदेश में ३४७९९४ थे। मध्यदेश के कबीरपंथी का प्रधान मठ बिलासपुर जिले के कवरदह में और उसके बाद कुदरमाल और गढ़ बांधव में है।

सतनामी—लगभग सन् १८३६ ई० में घासीदास नामक एक विना पढ़ा हुआ मनुष्य अपने चेलों को एक स्थान पर ६ मास में एक नियत दिन पर इकट्ठे होने को कह कर जंगल में चला गया। नियमित दिन पर उस स्थान में बहुत चमार एकत्र हुए। प्रातःकाल सन्नाटे समय में घासीदास पहाड़ी से उतरा। उसने अपने चेलों से अपना स्वर्ग जाने का वृत्तांत कह

सुनाया और घोषणा किया कि संपूर्ण मनुष्य एक समान हैं। मूर्ति पूजा करने से कुछ लाभ नहीं है। हमारे आदेश पर चलने से मनुष्यों का उद्धार होगा। हमारे घराने में उपदेशक सर्वदा हुआ करेंगे। घासीदास की मृत्यु होने पर उसका बड़ा पुत्र बालकदास उसका उत्तराधिकारी उपदेशक हुआ; किंतु सन् १८६० ई० में किसी दुश्मन ने उसको मार डाला। छतीसगढ़ के प्रायः सब चमारों ने इस नये मत को स्वीकार कर लिया है। वे लोग सतनामी कहलाते हैं, जो प्रति दिन प्रातःकाल और संध्या के समय सतनाम, सतनाम, सतनाम कहते हुए सूर्य के आगे दंडवत करते हैं अर्थात् गिरते हैं। वे लोग मांस भक्षण नहीं करते और मद्य नहीं पीते। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय मध्यदेश में ३९८४०१ सतनामी थे।

भारतवर्ष में सबसे अधिक नीच जातियों में से चमार समझे जाते हैं; किंतु भारत में जो सब काम कृषक लोग करते हैं, उन्हीं कामों को अर्थात् उन्हीं पेसे को मध्यदेश के छतीसगढ़ विभाग के चमार भी करते हैं और वे लोग अधिक मिलनसार और मजहबी हो रहे हैं। बहुतेरे गांवों में चमार मुखिया और जमीन्दार हैं।

कुंभीपंथिया—सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इनकी संख्या ९१३ थी। वे लोग मध्यदेशही में खास करके सम्भलपुर जिले में हैं। यह पंथ सन् १८६६ में सूबे उड़ीसे के अंगोल जिले और धंकेल राज्य में नियत हुआ। इस पंथ को कायम करने वाला एक आदमी था। इस पंथ वाले कहते हैं कि इस मत को नियत करने वाला स्वर्ग में रहता है। वह निराकार (अर्थात् विना शरीर का) है। उसका प्रधान चेला गोविंददास मरगया, उसके एक दूसरे चेले नरसिंहदास ने उसके स्मरणार्थ बाकी गाव में एक मंदिर बनवाया है। इस मत का एक दूसरा मदिर बाकी में हैं। इस पंथ के ३ फिरके हैं,— कुंभीपंथिया गोसांई, कनफाटिया गोसांई और आश्रिता। कुंभीपंथिया और कनफाटिया दोनों परस्पर एक साथ भोजन नहीं करते और विरक्त होते हैं और आश्रिता विवाह करते हैं और जाति का बंधन नहीं छोड़ते और वे

लोग कुंभीपंथिया और कनफाटिया को अपना गुरु समझते हैं और उनकी शिक्षा का पालन करते हैं। इस मत के लोग सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूर्य के आगे दंडवत करते हैं। सूर्यास्त होने पर कभी भोजन नहीं करते। हिंदू के देवताओं की मूर्तियों को नहीं मानते। यद्यपि वे लोग ३३ किरोड़ देवताओं को मानते हैं, किंतु उनको पूजते नहीं। वे कहते हैं कि मालिक को पूजना चाहिए; नोकरों की पूजा करने की जरूरत नहीं है। वे लोग एक ईश्वर की, जिसको वे अलख कहते हैं, उपासना करते हैं।

सिंहपंथी—सिंहजी नामक एक साधु थे, जिनके नाम से निमार और हुशंगावाद जिले में अनेक मंदिर बनाए गए हैं, जिन में सब जाति के लोग जाते हैं।

इतिहास—पूर्व समय में मध्यदेश का अधिक भाग गोंड़वाना अर्थात् गोड़ों का देश कहलाता था। एरियन लोगों के आक्रमण के समय आदि निवासी की जातियों के लोग सतपुड़ा की ऊंची भूमि पर चले गए और जूथ के जूथ दक्षिण भाग गए।

पांचवीं शदी में विदेशी जाति यवन लोग सतपुड़ा के छेट्ट पर शासन करते थे; दसवीं और तेरहवीं शदी के बीच में चन्द्रवंशी राजपूत लोग जबलपुर के चारो ओर के देश में हुकूमत करते थे, और मालवा के पमार लोग सतपुडा के दक्षिण के देश में शासन करते थे। गोड़ के चांदा-खांदान ने कदाचित् दसवीं या ग्यारहवीं शदी में राज्य किया था। छतीसगढ़ के हैहय वंशी लोग पुराने समय से थे। सन् १३९८ में सतपुड़ा-छेट्ट के खेरला के राजाओं के आधीन गोंड़वाने की संपूर्ण पहाडियां थीं। सन् १४६७ में बहमनी राजा ने उनको जीता। सोलहवीं शदी में गोंडलोग फिर बली हुए; किन्तु सन् १७४१ में महाराष्ट्रों ने उस देश पर आक्रमण किया और पीछे उसको अपने अधिकार में करलिया। अंगरेजी गवर्नमेंट ने सन् १८१८ में सागर और नर्मदा विभाग को और सन् १८५३ में शेष मध्यदेश को अपने राज्य में मिला लिया।

रेलवे—बंगाल नागपुर रेलवे और इंडियन पेनिनसुला रेलवे का जंक्शन नागपुर मे है।

(१) नागपुर से पश्चिमकी ओर ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे है, जिसके तीसरे दर्जे और डाकगाड़ी का महसूल प्रति मील २½ पाई लगता है—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

४९ वरधा जंक्शन।
८० धामनगांव।
१०८ वडनेरा जंक्शन।
१५७ आकोला।
१८० सेगांव।
१८८ जलंब जंक्शन।
२४४ भुसावल जंक्शन।
३१६ चालीसगांव।
३४२ नंदगांव।
३५८ मनमार जंक्शन।
३७४ लासलगांव।
४०४ नासिक।
४३५ इगतपुर।
४८७ कल्यान जंक्शन।
४९९ थाना।
५१४ दादर।
५१५ पेरेल जंक्शन।
५२० बंबई विक्टोरिया स्टेशन।

वरधा जंक्शन से पूर्व-दक्षिण २१ मील हिंगनघाट और ४५ मील वरोरा।

वडनेरा जंक्शन से ६ मील उत्तर अमरावती।

जलंब जंक्शन से ८ मील दक्षिण खामगांव।

भुसावल जंक्शन से पूर्वोत्तर ७७ मील खंडवा जंक्शन १८७ मील इटारसी जंक्शन, २१८ मील सोहागपुर, २८८ मील नरसिंहपुर, ३४० मील जबलपुर, ३९७ मील कटनी जंक्शन, ५०६ मील मानिकपुर जंक्शन, ५६४ मील नयनी जंक्शन और ५६८ मील इलाहाबाद शहर।

(२) नागपुर से पूर्व थोड़ा उत्तर बंगाल नागपुर रेलवे है, जिसके तीसरे दर्जे और डाकगाड़ी का महसूल प्रति मील २ पाई लगता है—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

९ कामटी।
३९ भंडारा रोड।
५० तुमसर रोड।
१२७ डूंगरगढ़।
१४६ राजनंदगांव।
१८८ रायपुर।

२५६ विलासपुर जंक्शन।
२८२ नैला।
२८९ चांपा।
३३८ रायगढ़।
३८३ झारसुगढ़ जंक्शन।
४०६ बामड़ा।
५०८ चक्रधरपुर।
५३० सीनी।
५८० पुरुलिया।
६२७ आसनसोल जंक्शन।

विलासपुर जंक्शन से पश्चिमोत्तर ६३ मील पेंड्रा-रोड और ११८ मील कटनी जंक्शन।

झारसुगढ़ जंक्शन से दक्षिण ३० मील संभलपुर।

वरधा।

नागपुर से ४९ मील पश्चिम-दक्षिण वरधा का रेल्वे जंक्शन है। वरधा मध्यदेश के नागपुर विभाग में (२० अंश, ४५ कला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ४० कला पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान एक नया छोटा कसबा है, जो सन् १८६६ में पलकवारी गांव के स्थान पर बसा।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय वरधा कसबे में ५८१६ मनुष्य थे; अर्थात् ४६३३ हिंदू, ८०७ मुसलमान, १९६ जैन, १०९ एनिमिष्टिक, ५५ कृस्तान, ८ यहूदी, ६ पारसी और २ दूसरे।

कसबे में रूई की बड़ी तिजारत होती है। बम्बई के बहुत सौदागरों के गुमास्ते रहते हैं। रूई दबाने के लिये एंजनवाली ? बड़ी कलें हैं। तिजारत उन्नति पर है। कसबे में पूर्व सरकारी कचहरियां, पुलिस लाइन, जेलखाना, पबलिक बाग इत्यादि हैं। कसबे के चारो ओर कई मीलों तक सुंदर सड़कें बनी हैं।

वरधा जिला—यह मध्यदेश के अखीर पश्चिम में त्रिभुजाकार है। इसके पूर्व नागपुर जिला; पश्चिमोत्तर चांदा जिला और पश्चिम वरदानदी, बाद बराग प्रदेश है। देश पहाड़ी है। क्षेत्रफल की आधी से अधिक भूमि जोती जाती है। ग्रीष्म ऋतुओं में जब इस जिले की पहाड़ियों की घास सूख जाती

है, तब मवेसियों के बहुतेरे झुंड मंडला और चांदा जिले के वनों में खदेर दिए जाते हैं। इस जिले में बचे देने के लिये बहुत मवेसियां पाली जाती हैं। उत्तम भैंस और बैलों के लिये यह जिला प्रसिद्ध है। बहुत कपास इस जिले से दूसरे जिलों में भेजा जाता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले के २४०१ वर्गमील क्षेत्र-फल में ३८७२२१ मनुष्य थे; अर्थात् ३२८५२३ हिन्दू, ४१९३३ एनिमिष्टिक, १४२०० मुसलमान, २३५६ जैन ९६ कृस्तान, ९२ कबीरपंथी, ८ यहूदी, ७ पारसी, और ६ दूसरे। हिंदुओं में ८०९०७ कुर्मी, ३९००३ महारा, ३७५७७ तेली, १७२०७ माली, ८५८९ ब्राह्मण, ३६९६ बनिया, ३०८१ राजपूत और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे। एनिमिष्टिकों में प्रायः सब गोंड़ हैं।

जिले में हिंगनघाट प्रधान कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १०९६४ मनुष्य थे और देवली आदि कई छोटे कसबे हैं।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि बरधा जिले के पश्चिमोत्तर का भाग विदर्भ देश के राजा भीष्मक के राज्य का एक हिस्सा था। भीष्मक की रुक्मिणी नामक पुत्री से श्रीकृष्णचन्द्र का विवाह हुआ था। उन्नीसवीं शदी के आरम्भ में पिंडारी इस देश में लूट पाट करते थे। उस समय वस्ती वालों ने उनसे बचने के लिये मट्टी के किले बनाने का काम प्रारंभ किया। बरधा जिले के प्रायः सब गावों में मट्टी के छोटे किले देखने में आते हैं। इस जिले का इतिहास नागपुर के इतिहास में शामिल है। यह जिला सन् १८६२ में नागपुर से अलग किया गया।

हिंगनघाट—बरधा जंक्शन से दक्षिण पूर्व ४५ मील की रेलवे लाइन हिंगनघाट होकर कोयले की खानों के मैदान के वरोरा में गई है। बरधा से २१ मील दक्षिण-पूर्व हिंगनघाट का स्टेशन है। बरधा जिले में प्रधान कसबा हिंगनघाट है, जहां से बहुत से कपास और रुई दूसरे जिलों में भेजी जाती है। सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय हिंगनघाट कसबे में १०९६४ मनुष्य थे; अर्थात् ९३६८ हिन्दू, १२१४ मुसलमान, २१८ जैन, १४२ एनिमिष्टिक और २२ कृस्तान।

हिंगनघाट से २४ मील दक्षिण पूर्व वरोरा का रेलवे स्टेशन है। मध्यदेश के चांदा जिले में वरोरा एक कसवा है, जिसमें कपास और रूई की बड़ी तिजारत होती है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय वरोरा कसवे में १००१८ मनुष्य थे। वरोरा के निकट कोयले की अच्छी खानियां हैं, जिनमें से प्रति वर्ष लगभग १००००० टन कोयला निकाला जाता है।

चांदा।

वरोरा के रेलवे स्टेशन से ३० मील दक्षिण पूर्व मध्यदेश के नागपुर विभाग में (१९ अंश, ५६ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, २० कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसवा चांदा है। वरोरा से एक अच्छी सड़क चांदा कसवे को गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय चांदा कसवे में १६१७५ मनुष्य थे; अर्थात् १४५९८ हिंदू, १०९९ मुसलमान, ३४४ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाड़ी, ९४ जैन और ४० कृस्तान।

चांदा कसवा ५½ मील की पत्थर की दीवार से घेरा हुआ है, जिसमें ४ फाटक और ५ खिड़कियां हैं। दीवार के भीतर कई बस्तियों के साथ चांदा कसवा और जोते हुए खेतों की भूमि है। पुराने गढ़ के भीतर जेलखाना और एक बड़ा कूप है, जिसमें जाने के लिये भूमि के भीतर एक मार्ग बना है। चांदा में अचलेश्वर, महाकाली और मुरलीधर तीनों के ३ मन्दिर, और गोंड़ राजाओं के अनेक समाधि मन्दिर, एक सराय, एक बंगला, कोतवाली (जिसके आगे बाग है,) जिला स्कूल, अस्पताल और जतपुरा फाटक के समीप विक्टोरिया बाजार है। कसवे के उत्तर सिविल स्टेशन; कसवे और सिविल स्टेशन के बीच में एक पबलिक पार्क, जिसमें सरकारी कचहरियां और देशी पैदल के एक रेजीमेंट के रहने लायक मकान हैं और सिविल स्टेशन के पश्चिम फौजी छावनी है।

चांदा में बड़ी सौदागरी होती है। खास करके एक बड़े मेले में, जो बैशाख में आरंभ हो करके लगभग २० दिन रहता है। कसवे में कपड़े, पीतल

के बर्तन, चमड़े के स्लिपर और वांस की अनेक भांति की चीजें बनती चांदा में बहुत गोंड़, जो मत और भाषा में आस पास के लोगों से भिन्न देखने में आते हैं।

चांदा जिला–इसके उत्तर वरधा, नागपुर और भंडारा जिला; पश्चिम बरधा नदी और दक्षिण-पूर्व वस्तर का राज्य और रायपुर जिला है। जिले के भीतर इसकी पश्चिमी सीमा के पास वरधा नदी के समीपवर्त्ती नीची भूमि के सिवाय जिले में सर्वत्र छोटी छोटी पहाड़ियां हैं। वानगंगा नदी इस जिले में उत्तर से दक्षिण को बहती हुई सिउनी जिले में जाकर वरधा नदी से मिली है। जिले के पूर्वी भाग में महानदी और पूर्वोत्तर इन्द्रवती नदी बहती है। जिले में बहुत झीलें, बहुत सघन जंगल और वांस का बहुत बड़ा वन है। सन १८८१ में १०७८५ वर्गमील भूमि में से केवल ११४८ वर्ग मील जोती गई थी, ३७९७ वर्गमील नहीं जोतने के लायक और ५८४० वर्गमील जोतने के लायक भूमि विना जोती हुई पड़ी थी। पहाड़ियों में लोहे का ओर बहुत है। चंद पहाड़ी नदियों के बालू में सोने के चूर्ण मिलते हैं। पूर्व समय में वैरागढ़ के निकट हीरे और लाल मिलते थे। देवल, भांडक, बिजयसनी और घुगुस में सुन्दर गुफा मंदिर; बलालपुर के पास चट्टानी मंदिर और एक किला और ढोमा के निकट झरना और गुफा देखने के लायक हैं। मध्य देश में चांदा जिले के पान के बाग अर्थात् बरेव प्रसिद्ध हैं। बड़ा मेला वैशाख मास में चांदा कसबे में और उससे छोटा मेला फागुन में भांडक में होता है।

सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय चांदा जिले में ६४९१४६ मनुष्य थे; अर्थात् ४९९३२७ हिन्दू, १३६५६४ आदि निवासी कोमें, १०९८७ मुसलमान, १०६४ कबीरपंथी, ७३७ जैन, ३८९ कृस्तान, १७३ सतनामी और ५ सिक्ख। जातियों के खाने में ९३८०६ कुर्मी, ७१४७२ महारा, ४२७२६ गावली (मवेसी चराने वाले), ३२००१ चमार, ३११२६ तेली, ६४५८ ब्राह्मण, २२२१ राजपूत और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय चांदा जिले के चांदा कसबे में १६१७५ और वरोरा में १००१८ मनुष्य थे।

इतिहास—महाराष्ट्रों के राज्य से पहिले चांदा के गोंड़ राजा यद्यपि घराय नाम के दिल्ली के बादशाह के आधीन थे; किन्तु वास्तव में चांदा का राज्य स्वाधीन था। चांदा के असभ्य निवासियों ने गोंड़ राजाओं के आधीन बहुत सभ्यता को प्राप्त किया। सन १७४९ में नागपुर के राघोजी भोंसला ने चांदा को ले लिया और उससे २ वर्ष पीछे पूरे तौर से उसको अपने अधिकार में कर लिया। गोंड़ घराने के अंतिम राजा नीलकंठ शाह कैदखाने में मर गए। सन १७७३ में नीलकंठशाह के पुत्र के आधीन गोंड़ों ने बलवा किया था; किन्तु नीलकंठशाह का पुत्र परास्त होकर कैदखाने में गया। सन १७८८ में महाराष्ट्रों ने उसको ६०० रुपया वार्षिक पेंशन नियत कर दिया। १९ वीं शदी के प्रारंभ में सन १८०२ से १८२२ तक पिंडारियों ने चांदा के आधे वासिंदों को मार डाला। सन १८५३ में नागपुर के तीसरे राघोजी भोंसले की मृत्यु होने पर अंगरेज महाराज ने नागपुर के अन्य देशों के साथ चांदा को ले लिया।

अमरावती।

वरधा जंक्शन से कई एक स्टेशनों से पश्चिम वरधा नदी पर रेलवे का पुल है। वरधा के स्टेशन से ३१ मील पश्चिम धामन गांव का रेलवे स्टेशन है, जिसके पास मध्य देश छूट कर बरार देश मिल जाता है। धामन गांव से २८ मील और वरधा जंक्शन से ५९ मील (नागपुर से १०८ मील) पश्चिम बडनेरा का रेलवे स्टेशन है, जिससे उत्तर ६ मील की एक रेलवे शाखा अमरावती कसबे को गई है। सूबे बरार के पूर्वी विभाग में जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा बरार है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय छावनी के सहित अमरावती कसबे में ३३६५५ मनुष्य थे, अर्थात् १८५९४ पुरुष और १५१६१ स्त्रियां। इनमें २६४०१ हिन्दू, ६०४७ मुसलमान, १७३ जैन, ३९७ कृस्तान, ९६ एनिमिष्टिक, ३६ पारसी, २ सिक्ख और १ यहूदी थे।

अमरावती कसबे के चारो ओर सवा दो मील लंबी और २० फीट से ६२ फीट तक ऊंची पत्थर की दृढ़ दीवार है, जिसमें ५ फाटक और ४ खिड़कियां बनी हुई हैं। निजाम सरकार ने अमरावती के धनी सौदागरों को पिंडारियों से बचाने के लिये उन्नीसवीं शदी के आरंभ में इसको बनवाया। अमरावती दो भागों में विभक्त है,—कसबा और पेट। अमरावती के संपूर्ण कूपों का जल खारा है।

अमरावती के देवमन्दिरों में ८ मन्दिर प्रसिद्ध हैं, जिनमें से एक हजार वर्ष का पुराना अंबा का मन्दिर प्रधान है। बहुत लोगों का मत है कि इसीके नाम से कसबे का नाम अमरावती पड़ा था। इनके अतिरिक्त अमरावती में कमिश्नर, और दिपोटी कमिश्नर के आफिस, कचहरियां, जेलखाना, अस्पताल, गिरजा, कबरगाह, बंगला, धर्मशाला, स्कूल, एक कंपनी देशी पैदल सेना की छावनी और बहुतेरे रूई के मिल अर्थात् कल कारखाने हैं। सन् १८७७ ई० में अमरावती कसबा और उसके पडोस में रूई के १३ मिल थे। अमरावती बहुत दिनो से रूई के लियें प्रसिद्ध है। अब बरार प्रदेश में खामगांव के बाद सब कसबों से अधिक रूई का कारोबार अमरावती में होता है और यह कसबा बरार के सपूर्ण कसबों से अधिक तिजारती और धनवान है।

अमरावती जिला—इसके उत्तर (मध्यदेश का) बेतूल जिला, पूर्व घरधा नदी; दक्षिण बासिम और बुन जिला और पश्चिम अकोला और एलिचपुर जिला है। यह जिला समुद्र के जल से लगभग ८०० फीट ऊंचा मैदान में है। जिले में कपास बहुत उत्पन्न होता है। यह जिला रूई के लिए बहुत दिनों से प्रसिद्ध है, इसमें कई एक मेले होते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय अमरावती जिले के २७५९ वर्गमील में ५७५३२८ मनुष्य थे; अर्थात् ५२७४६७ हिंदू, ४१११८ मुसलमान, ६१२७ जैन, ३६६ कृस्तान, ११९ सिक्ख, १०३ पारसी, २७ एनिमिष्टिक और १ बौद्ध। हिंदुओं में १९९७६८ कुन्बी, ७९४९२ महारा, ५७१२७ माली, १९९३६ ब्राह्मण, ११७०९ राजपूत और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय अमरावती जिले के अमरावती

कसबे में ३३६९९, करंजा में १४४३६ और मंदुरजन में १००४३ मनुष्य थे। बहनेरा, खोलापुर, तालेगांव, अर्गांगाव भी छोटे कसबे हैं।

बरार प्रदेश—बरार प्रदेश एक चीफ कमिश्नर के आधीन है जो हैदराबाद के अङ्गरेजी रेजीडेंट भी है। इसके उत्तर और पूर्व मध्यदेश; दक्षिण हैदराबाद का राज्य और पश्चिम बंबई हाते का खानदेश जिला है। इसकी लंबाई पूर्व से पश्चिम को लगभग १५० मील और औसत चौड़ाई १४४ मील है। इस प्रदेश में तापती, पूर्ना, वरधा, पेनगंगा इत्यादि नदियां बहती हैं। इसके उत्तर की सीमा पर तापती; पूर्व की सीमा पर वरधा नदी है और दक्षिण की सीमा पर पेनगंगा है। बुलडाना जिले में खारा पानी का एक दर्शनीय झील है। यह सघन वनों से हरी भरी पहाड़ियों से घेरी हुई, स्वाभाविक गोलाकार ३४५ एकड़ में, जिसका घेरा ८½ मील है, फैली हुई है। सन् १८८३ में बरार प्रदेश में ४३४४ वर्गमील क्षेत्रफल में जंगल था। बरार की घाटी के बड़े भाग में मकान के काम के योग्य वृक्ष और बांस बहुत होते हैं। इस देश की पहाड़ियों में लोहे की खान और वरधा नदी की घाटी के पास कोयले की खान है। देश की भूमि आबादी है। कपास और नील बहुत होता है।

सूबेबरार में ६ जिले हैं;—पूर्वी बरार में एलिचपुर, अमरावती और वून और पश्चिमी बरार में अकोला, बुलडाना और वासिम।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सूबेबरार के १७७१८ वर्गमील क्षेत्रफल में २८९७४९१ मनुष्य थे; अर्थात् १४९१८२६ पुरुष और १४०५६६५ स्त्रियां। इनमें २५३१७९१ हिंदू, २०७६८१ मुसलमान, १३७१०८ जंगली जातियां इत्यादि, १८९५२ जैन, १३५९ क्रस्तान, ४१२ पारसी, १७७ सिक्ख, ४ बौद्ध, और ७ अन्य थे। जिनमें सैकड़े पीछे ७९½ महाराष्ट्री भाषा वाले, ९½ हिंदी भाषा वाले, ३½ गोंड़ भाषा वाले और ७½ अन्य भाषा बोलने वाले मनुष्य थे। उस समय बरार प्रदेश की जातियों में से नीचे लिखे हुए लोग इस भांति पढ़े हुए थे,—प्रति हजार पीछे प्रभु में ७६४ पुरुष और १६० स्त्रियां; ब्राह्मणों में ६३८ पुरुष और २१ स्त्रियां; कायस्थ में ५६७ पुरुष और

१६० स्त्रियां; बनिया में ४८० पुरुष; विधुर में ३६८ पुरुष और कोमटी में ३४९ पुरुष।

बरार प्रदेश के शहर और कसबे, जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १०००० से अधिक मनुष्य थे;—

नं०	शहर या कसबा	जिला	जन-संख्या	नं०	शहर या कसबा	जिला	जन-संख्या
१	एलिचपुर	एलिच-पुर	३६२४०	७	वासिम	वासिम	१२३८९
२	अमरावती	अमरा-वती	३३६५५	८	सेगांव	अकोला	११५२२
३	अकोला	अकोला	२१४७०	९	अजांगांव	एलिच-पुर	१०५९३
४	अकोट	अकोला	१५९९५	१०	बालापुर	अकोला	१०२५०
५	खामगांव	अकोला	१५५९८	११	संदुरजन	अमरा-वती	१००४३
६	करंजा	अमरा-वती	१४४३६				

इतिहास—अनुमान से जान पड़ता है कि बरार प्रदेश पूर्व काल में कल्यान और देवगढ़ के आधीन था। सन् १३१९ में यह बराय नाम के मुसलमान हुकूमत करने वालों के आधीन हुआ। बादशाह महम्मदतुगलक के मरने पर सन् १३५१ से लगभग ५० वर्ष तक यह स्वाधीन रहा। उसके पश्चात् लगभग १३० वर्ष तक बहमनी बादशाहों के आधीन था। सन् १५२६ में बहमनी खांदान के राज्य का अंत होने पर इमादशाही बादशाहों के, जिनकी राजधानी एलिचपुर था, अधिकार में हुआ। सन् १५७२ में अहमदनगर के अधिकार में हुआ। सन् १५९६ में अकबर ने अहमदनगर से ले लिया। सन् १७२४ से बरार हैदराबाद के अधिकार में चला आता था। सन् १८५३ में अंगरेजी गवर्नमेंट ने हैदराबाद की फौज के खरच के बदले में निजाम से इसको ले लिया।

एलिचपुर।

अमरावती कसबे से ३० मील से अधिक उत्तर कुछ पश्चिम (२१ अंश,

१९ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, २९ कला, ३० विकला, पूर्व देशांतर में) सूबेबरार में जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा एलिचपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय एलिचपुर कसबे में ३६२४० मनुष्य थे; अर्थात् १८७४१ पुरुष और १७४९९ स्त्रियां। इनमें २५६३५ हिंदू, १०१६४ मुसलमान, २७९ जैन, १०८ कृस्तान, ५२ एनिमिष्टिक, ११ पारसी और १ अन्य थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह बरार प्रदेश में पहिला शहर है।

कसबे में अनेक दिलचस्प इमारतें हैं;— एक बड़े चबूतरे के ऊपर, जिसके चारो ओर ४ फाटक हैं, दुल्हा रहमान का दरगाह है, जिसको लगभग ४०० वर्ष हुए कि बहमनी खांदान के एक बादशाह ने बनवाया था। महल के पत्थर का काम उत्तम है, जिसको सलाबतखां और इसमाइलखां ने बनाया था, किंतु वह शीघ्रता से उजड़ रहा है। नवाबों के मकबरों में से कई एक सुन्दर हैं। सुलतानगढ़ी नामक एक पत्थर का सुन्दर किला है, जिसको (१०० वर्ष से अधिक हुए कि) सुलतानखां ने बनवाया था। इनके अलावे अस्पताल, पुलिस स्टेशन, और कई एक स्कूल हैं।

कसबे से लगभग २ मील दूर फौजी छावनी और सिविल स्टेशन हैं। सन् १८८२—८३ में छावनी में ७३ सवार, १२९ आदमी के साथ आरटिलरी की एक बैटरी और ७६९ पैदल थे।

एलिचपुर जिला—यह जिला सूबे बरार के उत्तरीय भाग में है। इसके पूर्व बरधा नदी और अमरावती जिला, दक्षिण और पश्चिम अमरावती और अकोला जिला और पश्चिमोत्तर तथा उत्तर निमार, हुशंगाबाद और बैतूल जिला है। इस जिले के उत्तर के भाग में, जो क्षेत्रफल के करीब आधा है, लगातार सतपुड़ा का एक भाग पहाड़ियां और घाटियां हैं, जिनको मेलघाट या गाविलगढ़ कहते हैं। जिले के दक्षिण के भाग में मैदान है, जिसमें बहुतेरी छोटी नदियां बहकर बरधा और पूर्ना नदी में गिरती हैं। जिले में आम के कुंज बहुत हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय एलिचपुर जिले का क्षेत्रफल २६२३ वर्गमील और इसकी मनुष्य-संख्या ३१२८०५ थी, जिसमें २८२००० हिंदू, ३०२९९ मुसलमान, १२८० जैन, १९७ कृस्तान, २७ सिक्ख और २ पारसी थे। हिंदुओं में ९७२८० कुन्बी, ७४२२ ब्राह्मण, ४८३० राजपूत और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय एलिचपुर जिले के एलिचपुर कसबे में ३६२४० और अजांगांव में १०५९३ मनुष्य थे।

इतिहास—कहावत से जान पड़ता है कि जैन राजा एल ने एलिचपुर को बसाया, जो वाढगांव के निकटवर्ती खानजामा नगर से आया था। सन् १५२६ में बहमनी खांदान के राज्य का अंत होने पर सूबेबरार इमादशाही बादशाह के अधिकार में हुआ, जिसकी राजधानी एलिचपुर थी। सन् १५७४ में वह अहमदनगर के राज्य में मिल गई। १८ वीं शदी के पहले भाग में पहला निजामुलमुल्क देकान में हुकूमत करने वाला हुआ, तब एलिचपुर एक सूबेदार के अधिकार में किया गया। उस समय से कसबे की घटती होने लगी। सन् १८५३ में अंगरेजी सरकार ने बरार के दूसरे जिलों के साथ एलिचपुर को निजाम से ले लिया।

अकोला।

बडनेरा जंक्शन से ४९ मील (नागपुर से १५७ मील) पश्चिम अकोला का रेलवे स्टेशन है। पश्चिमी बरार में जिले का सदर स्थान, जिले में प्रधान कसबा और बरार के जुडिसियल कमिश्नर का सदर स्थान अकोला है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय अकोला में २१४७० मनुष्य थे; अर्थात् ११८१४ पुरुष और ९६५६ स्त्रियां। इनमें १४६६० हिंदू, ६१५० मुसलमान, २५२ जैन, १८८ कृस्तान, ९८ एनिमिष्टिक, ६८ पारसी, ४९ सिक्ख, ५ बौद्ध और १ अन्य थे।

अकोला कसबे के आगे पत्थर की दीवार और इसमें ईंट का पुराना

किला है, जिससे जान पड़ता है कि यह एक समय प्रसिद्ध शहर था। कसबे के बीच में मोरना नदी है। नदी के पश्चिम किनारे पर खास अकोला कसबा और पूर्व तांजनापेट है, जिसमें कमिश्नर, और डिपोटी कमिश्नर के आफिस, कचहरियां, जेलखाना, टाउनहाल, गिरजा, खैराती अस्पताल, सराय, बारकें, कई एक स्कूल और यूरोपियन लोगों के मकान हैं। नदी के पूर्व रविवार को और पश्चिम बुधवार को बाजार लगता है।

अकोला जिला—इसके उत्तर सतपुडा पहाड़ियां, पूर्व एलिचपुर और अमरावती जिला, दक्षिण अजंता का सिलसिला, जो बासिम और बुलडाना जिले से इसको अलग करता है और पश्चिम बुलडाना और खानदेश जिला है। जिले के मध्य होकर पूर्ना नदी बहती है। गावदुमी शकल की एक पहाडी बालापुर तालुके के दक्षिण भाग में और दूसरी अकोला तालुके में है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय इस जिले के २६६० वर्गमील क्षेत्रफल में ५९२७९२ मनुष्य थे, अर्थात् ५३९०६८ हिंदू, ४९३३७ मुसलमान, ३७३६ जैन, ३८८ कृस्तान, १०८ पारसी, ९३ सिक्ख, ५९ पहाड़ी, और ३ यहूदी। हिंदुओं में २०७२५३ कुन्बी, ६६७८१ महारा ५३४२१ माली, ८६३२ ब्राह्मण, १०१२२ राजपूत और शेप में दूसरी जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय अकोला जिले के अकोला कसबे २१४७०, अकोट में १५९९९, खामगांव में १५५९८, सेगांव में १९४२२, [illegible]पुर में १०२५० और जलगांव इत्यादि कई कसबों में दसहजार से कम मनुष्य थे।

अकोट और बालापुर में बहुत गलीचे और पगडियां बनती हैं। इस जिले में ३ बड़े मेले होते हैं,—फागुन के पाटोर का मेला लगभग २० दिन, कार्तिक के सोनाला का, मेला ५ दिन और कार्तिक के अकोट का मेला १२ दिन रहता है। मेलों में दूर दूर से बहुत सौदागर आते हैं।

इतिहास—अठारहवीं सदी में अकोला कसबे के पास निजाम और महाराष्ट्रों में लड़ाई हुई थी। सन् १७९० में कसबे की दीवार के पास

भौसला के सेनापति ने गाजीखां पिंडारी को परास्त किया। निजाम के राज्य के पिछले भाग में देशी अफसरों के अत्याचार से अकोला कसबे की घटती हुई इसके बहुत से निवासी अमरावती में जा बसे। अंगरेजी अधिकार होने पर इसकी उन्नति हुई है।

वासिम।

अकोला के रेलवे स्टेशन से ५२ मील दक्षिण कुछ पूर्व (२० अंश, ६ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अन्श, ११ कला, पूर्व देशांतर में) सूबे बरार में जिले का सदर स्थान वासिम एक पुराना कसबा है। अकोला के रेलवे स्टेशन से वासिम को पक्की सड़क गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय वासिम कसबे में १२३८९ मनुष्य थे; अर्थात् ९३६३ हिंदू, २६५६ मुसलमान, ३०० जैन, और ७० कृस्तान।

कसबे के बाहर पद्मतीर्थ नामक एक तालाब है। लोग कहते हैं कि तालाब के स्थान पर पानी का छोटा कुंड था। जब उसमें स्नान करने से वासुकी नामक राजा का कुष्ठरोग छूट गया, तब उसने कुण्ड को बढ़ाकर तालाब बनवा दिया। वासिम में नागपुर के भोसले के कर्मचारी भवानीकालू का बनवाया हुआ लगभग १०० वर्ष का एक तालाब और बालाजी का सुन्दर मन्दिर है। इसके अतिरिक्त वासिम में पुलिस स्टेशन, स्कूल, अस्पताल इत्यादि सरकारी इमारत हैं। वासिम कसबे से दक्षिण २९ मील की पक्की सड़क निजाम के राज्य में हिंगोली की फौजी छावनी तक गई है।

वासिम जिला—इसके उत्तर अकोला और अमरावती जिला, पूर्व बून जिला, दक्षिण पेनगंगा नदी, बाद हैदराबाद का राज्य और पश्चिम बुलढाना जिला है। जिले की आधी से अधिक भूमि जोती जाती है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय वासिम जिले के २९५८ वर्गमील क्षेत्रफल में ३५८८८३ मनुष्य थे; अर्थात् ३३५६४७ हिंदू, १९७१५ मुसलमान, ३३६२ जैन, १०७ कृस्तान, ५१ सिक्ख और १ पारसी। हिंदुओं में १२०३१० कुन्बी, ७२३९ ब्राह्मण, १७६२ राजपूत और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे।

सेगांव।

अकोला के रेलवे स्टेशन से २३ मील (नागपुर से १८० मील) पश्चिम सेगांव रेलवे स्टेशन है। पश्चिमी बरार के अकोला जिले में सेगांव एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सेगांव में ११४०२ मनुष्य थे; अर्थात् १००८४ हिंदू, १०५२ मुसलमान, ९९ जैन, ४३ कृस्तान, ३८ पारसी और ६ सिक्ख।

सेगांव में अङ्गरेजी बंगला, पुलिस स्टेशन, स्कूल, सराय और रूई दबाने की कई एक कल हैं। सेगांव से ११ मील बालापुर है।

खामगांव।

मेगांव से ८ मील पश्चिम (नागपुर से १८८ मील) जलंब का रेलवे स्टेशन है, जिससे दक्षिण ८ मील की रेलवे शाखा खामगांव को गई है। सूबे बरार के अकोला जिले में खामगांव तिजराती कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय खामगांव में १५५९८ मनुष्य थे, अर्थात् ११९२२ हिंदू, ३२५७ मुसलमान, ३३० जैन, ५२ कृस्तान, २७ पारसी, ७ एनिमिष्टिक और ३ अन्य।

खामगांव अफीम का प्रसिद्ध स्थान है और उसमें गल्ले, विशेष करके रूई की बड़ी सौदागरी होती है। प्रति वर्ष लाखों बैल रूई अन्यत्र से खामगांव में लाई जाती है। दिसम्बर से जुलाई तक रूई का कारबार होता है। कसबे के चारो ओर छोटी पहाड़िया हैं। पूर्व ओर घेरा हुआ रूई का बाजार है। ४०० से अधिक सरकारी और साधारण लोगो के कूप हैं, जिनमें से बहुतेरे नए होगए हैं। कसबे से १½ मील दूर एक नया बहुत उत्तम तालाब बना है, इनके अलावे तहसीली, एसीस्टेंट कमिश्नर की कचहरी, सराय, बंगला, अस्पताल, पुलिस स्टेशन, कई स्कूल, रूई दबाने के धूंए की कल, अनेक बाग और यूरोपियन सौदागरों के सुन्दर मकान हैं।

तीसरा अध्याय।

(बंबई हाते में) भुसावल, (हैदराबाद के राज्य में) अजंता के गुफा मंदिर, (बंबई हाते में) धूलिया, मनमार जंक्शन, (हैदराबाद के राज्य में) इलोरा के गुफा मंदिर, रौजा, दौलताबाद, औरंगाबाद, घुश्मेश्वर, पैठन, परणोबैद्यनाथ और नागेश।

भुसावल।

जलम्ब जंक्शन से करीब ३९ मील पश्चिम-जाने पर बरार प्रदेश छूटकर बम्बई हाता मिलजाता है। उस स्थान से करीब २१ मील पश्चिम कुछ उत्तर (नागपुर से २४४ मील पश्चिम ओर) भुसावल में रेलवे का जंक्शन है। बम्बई हाते के खानदेश जिले में तापती नदी से २ मील दक्षिण (२१ अंश, १ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ४७ कला पूर्व देशांतर में) सब-डिवीजन का सदर स्थान भुसावल एक कसबा है, जो रेलवे खुलने के बाद प्रसिद्ध हुआ है। तापती पर दृढ़ और सुन्दर रेलवे का पुल बना है। भुसावल में लगभग १२०० आदमी, जिनमें से लगभग १०० यूरोपियन और यूरेशियन हैं, रेलवे के कारखाने में काम करते हैं और यूरोपियन लोग बहुत रहते हैं। रेलवे के फाटक से बाहर एक बड़ी धर्मशाला है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय भुसावल में १३१६९ मनुष्य थे; अर्थात् ९९१३ हिंदू, २२०८ मुसलमान, ९१७ कृस्तान, १८९ जैन, १८३ पारसी, ६२ यहूदी और ११ दूसरे।

रेलवे लाइन की एक ओर रेलवे सम्बन्धी इमारतें और दूसरी ओर भु-

सावल कसवा है। रेलवे के उत्तर सदराला की कचहरी, मामकात घर का आफिस, रेलवे मजिष्टर का आफिस, मातहत जेलखाना, स्कूल, टेलीग्राफ आफिस इत्यादि इमारतें हैं। जलकल द्वारा तापती नदी से पानी आता है। कई एक सुन्दर बाग लगे हैं।

भुसावल में 'ग्रेटइण्डियन पेनिनसूला रेलवे' का बड़ा जंक्शन है। यहां से २७६ मील दक्षिण पश्चिम बम्बे, ३४० मील पूर्वोत्तर जबलपुर और २४४ मील पूर्व नागपुर है। इस रेलवे के तीसरे दर्जे के पसेंजर और डाकगाड़ी का महसूल प्रति मील २½ पाई लगता है।

(१) भुसावल से दक्षिण-पश्चिम—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१९ जलगांव *

४४ पचौरा।

७२ चालीसगांव।

९८ नन्दगांव।

११५ मनमार जंक्शन।

१३० लासलगांव।

१६० नासिक।

१६३ देवलाली।

१९१ इगतपुरी।

२०१ कसारा।

२४३ कल्यान जंक्शन।

२५५ थाना।

२५९ भंडूप।

२७० दादर जंक्शन।

२७६ बम्बई विक्टोरियाटर्मिनस।

मनमार जंक्शन से दक्षिण ९५ मील अहमदनगर, १४६ मील धोंद जंक्शन।

धोंद जंक्शन से पूर्व-दक्षिण ११७ मील शोलापुर, १२६ मील होतगी जंक्शन, १८७ मील गुलबर्गा, २१० मील वाडीजंक्शन और २७७ मील रायचुर जंक्शन और धोंद से पश्चिमोत्तर ४८ मील पूना, १३४ मील कल्यान जंक्शन और १६७ मील बम्बई।

कल्यान जंक्शन से दक्षिण-पूर्व ४ मील अमरनाथ, २० मील नेरल, २९ मील करजत, ४५ मील खंडाला, ४७ मील लोन-

* जलगांव से पश्चिम कुछ उत्तर एक रेलवे लाइन सूरत को गई है।

चली, ९२ मील कारली, ६३ मील घाडगांव, ७६ मील चिंचवाड ८३ मील किरकी और ८६ मील पूना है।

दादर जंक्शन से उत्तर २६ मील वेसिनरोड,१५९ मील सूरत,१९६ मील वरौंच, २४० मील वरोदा, २६२ मील आनन्द जंक्शन और ३०२ मील अहमदाबाद जंक्शन है।

(२) भुसावल से पूर्वोत्तर की लाइन पर—
मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
३४ बुरहानपुर।
४६ चांदनी।
७७ खंडवा जंक्शन।
१४० हरदा।
१६६ सिउनी।
१८७ इटारसी जंक्शन।
२६० गडरवाडा जंक्शन।
२८८ नरसिंहपुर।
३४० जवलपुर।

खंडवा जंक्शन से अधिक उत्तर कम पश्चिम राजपूताना मालवा रेलवे पर ३७ मील मोरतक्का (मोरतक्का से ओंकारनाथ ७ मील है) ७३ मील मऊ, ८६ मील इन्दौर, ११९ मील फतेहाबाद जंक्शन (फतेहाबाद से १४ मील पूर्वोत्तर उज्जैन)१६० मील रतलाम जंक्शन,१८१ मील जावरा, २४३ मील नीमच और २७७ मील चित्तौरगढ़।

इटारसी जंक्शन से उत्तर की ओर 'इण्डियन-मिदलेंड रेलवे' पर ११मील हुशंगाबाद, ६७ मील भोपाल जंक्शन, ९० मील भिलसा, १४३ मील वीना जंक्शन,१७९ मील ललितपुर और २३८ मील झांसी जंक्शन है।

गाडरवाड़ा जंक्शन से १२ मील दक्षिण पूर्व मोपानी।

जवलपुर से पूर्वोत्तर 'इष्टइण्डियन रेलवे' पर ५७ मील कटनी जंक्शन, १६६ मील मानिकपुर जंक्शन और २२४ मील नयनी जंक्शन है।

टूट गई हैं, इससे ऊपर के मंजिल में कोई नहीं जाता। भील लुटेरे बहुत दिनों तक यहां रहते थे। उन्हो ने इसकी बड़ी हानि की।

नं० ७ विहार गुफा—इसमें एक बड़ा बरंडा है, जिसके पीछे दो कोठरियां आगे तरफ २ पेशगाह और दोनों अखीर में २ एबादत खाने हैं। वेदी में कमल पर बैठे हुए ५ मूरतों की ४ पंक्तियां और ध्यान करते हुए बुद्ध कि मूर्तियों का एक कत्तार है। दहिने तरफ इसी तरह की बुद्ध की २ मूर्तियां हैं। मन्दिर में दोनों तरफ दो दो बड़ी और एक एक छोटी और दो दो पंखे को लिये हुए मूर्तियां हैं।

नं० १० एक दगोवा—बुद्ध की मूर्ति दीवार से अलग है। छत पहलूदार है। गुफा के भीतरी चेहरे के ऊपर सन् ई० से १०० या २०० वर्ष पहिले का लाट अक्षर मे एक शिलालेख है।

नं० १६ और १७—ये इस सिलसिले के सबसे उत्तम विहार हैं। बाहरी द्वार पर २ लम्बे शिला लेख हैं। ये गुफाएं चौथी शदी के अनुमान किए जाते हैं। बड़े कमरे में लड़ाई जाहिर करते हुए रंग के उत्तम चित्र हैं। नं० १७ की गुफा १६ वीं गुफा के समान है, परन्तु यह उतना ऊंचा नहीं है और इसकी कारीगरी भी उसके समान नहीं है।

नं० २६ चैत्य गुफा—यह इस सिलसिले में सबसे नया है। इसकी संग तराशी सबसे अधिक और बारीक है। दगोवा के आगे अपना चरण नीचे किये हुए बुद्ध देव बैठे हैं। बुद्ध और उनके चेलो की मूर्तियों की संग तराशी से दीवार छिपी हुई है। जिस शकल में बौद्ध लोग निर्वाण लेने को उद्यत होते हैं, उसी शकल में गुफा के दक्षिण बाजू में २३ फीट लंबी एक बौद्ध मूर्ति है। ऊपर बहुतेरे फिरिस्ते हैं। बाहरी तरफ २ लेख हैं;— एक फाटक के बाएं बुद्ध की मूरत के नीचे और दूसरा दहिने तरफ छठवीं शदी की भाषा में।

धूलिया।

पचोरा के रेलवे स्टेशन से २८ मील (भुसावल से ७२ मील) दक्षिण-

पश्चिम चालीसगांव का रेलवे स्टेशन है। चालीसगांव से ३० मील उत्तर कुछ पश्चिम (२० अंश, ५४ कला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश, ४६ कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) बंबई हाते के मध्य विभाग के खान देश जिले में एक छोटी नदी के दक्षिण किनारे पर खानदेश जिले का सदर स्थान धूलिया एक कसबा है। *

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय धूलिया में २१८८० मनुष्य थे; अर्थात् १५९९१ हिंदू, ४९०० मुसलमान, ६५८ जैन, २३३ एनिमिष्टिक, ४९ कृस्तान, ४५ पारसी और ४ यहूदी।

धूलिया कसबा दो भागों में बंटा है,—नया और पुराना धूलिया। नया धूलिया में सड़कें अच्छी हैं और मकान अच्छे अच्छे बने हैं। नदी के ऊपर पत्थर का पुल बना है। धूलिया में सरकारी कचहेरियां, जेलखाना, टेलीग्राफ आफिस, रुई दबाने के लिये एंजिन वाला एक मिल अर्थात् कल कारखाना, २ अस्पताल और बहुतेरे स्कूल हैं। यहां अब रुई आदि वस्तुओं की बड़ी तिजारत होती है। ऊनी कपड़ा और पगड़ी बहुत तैयार होती हैं। कसबे के दक्षिण-पश्चिम फौजी लाइन है और ६ मील दूर एक ऊंची पहाड़ी के सिर पर लालिंग का पुराना किला है। धूलिया में प्रति गुरवार को साप्ताहिक बड़ा बाजार लगता है, जिसमें लगभग ५००० की वस्तु बिकती हैं। धूलिया से सड़क द्वारा ६४ मील पूर्व भुसावल है।

खानदेश जिला—इसके पूर्व सूबा बरार और मध्य देश का निमार जिला; दक्षिण सातमाला या अजंता पहाड़ी; दक्षिण पश्चिम नासिक जिला; पश्चिम बड़ोदा का राज्य और उत्तर सतपुड़ा पहाड़ी और नर्मदा नदी है। तापती नदी खानदेश जिले के अग्निकोण से प्रवेश करके जिले में पश्चिमोत्तर को बहती है, जिससे यह जिला दो भागों में विभक्त हो गया है। इनमें से दक्षिण वाले बड़े भाग में बड़े बड़े कसबे, और घनी बस्तियां हैं और उपजाऊ बड़ा मैदान है। उत्तर सतपुड़ा पहाड़ी की ओर भूमि ऊंची होती

---

* अब चालीसगांव से धूलिया तक ३५ मील की रेलवे शाखा नई खुली है।

टूट गई हैं, इससे ऊपर के मंजिल में कोई नहीं जाता। भील लुटेरे बहुत दिनों तक यहां रहते थे। उन्हों ने इसकी बडी हानि की।

नं० ७ विहार गुफा—इसमें एक बड़ा बरंडा है, जिसके पीछे दो कोठरियां आगे तरफ २ पेशगाह और दोनों अखीर में २ एवादत खाने हैं। देवढ़ी में कमल पर बैठे हुए ९ सूरतों की ४ पंक्तियां और ध्यान करते हुए बुद्ध कि मूर्तियों का एक कत्तार है। दहिने तरफ इसी तरह की बुद्ध की २ मूर्तियां हैं। मन्दिर में दोनों तरफ दो दो बड़ी और एक एक छोटी और दो दो पंखे को लिये हुए मूर्तियां हैं।

नं० १० एक दगोवा—बुद्ध की मूर्ति दीवार से अलग है। छत पहलूदार है। गुफा के भीतरी चेहरे के ऊपर सन् ई० से १०० या २०० वर्ष पहिले का लाट अक्षर मे एक शिलालेख है।

नं० १६ और १७—ये इस सिलसिले के सबसे उत्तम विहार हैं। बाहरी द्वार पर २ लम्बे शिला लेख हैं। ये गुफाएं चौथी शदी के अनुमान किए जाते हैं। बड़े कमरे में लडाई जाहिर करते हुए रंग के उत्तम चित्र हैं। नं० १७ की गुफा १६ वीं गुफा के समान है, परन्तु यह उतना ऊंचा नहीं है और इसकी कारीगरी भी उसके समान नहीं है।

नं० २६ चैत्य गुफा—यह इस सिलसिले में सबसे नया है। इसकी संग तराशी सबसे अधिक और बारीक है। दगोवा के आगे अपना चरण नीचे किये हुए बुद्ध देव बैठे हैं। बुद्ध और उनके चेलो की मूर्तियों की संग तराशी से दीवार छिपी हुई हैं। जिस शकल मे बौद्ध लोग निर्वाण लेने को उद्यत होते हैं, उसी शकल में गुफा के दक्षिण बाजू में २३ फीट लंबी एक बौद्ध मूर्ति है। ऊपर बहुतेरे फिरिस्ते हैं। बाहरी तरफ २ लेख हैं;—एक फाटक के बाएं बुद्ध की मूरत के नीचे और दूसरा दहिने तरफ छठवीं शदी की भाषा में।

धूलिया।

पचौरा के रेल्वे स्टेशन से २८ मील (भुसावल से ७२ मील) दक्षिण-

पश्चिम चालीसगांव का रेलवे स्टेशन है। चालीसगांव से ३० मील उत्तर कुछ पश्चिम (२० अंश, ५४ कला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश, ४६ कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) बंबई हाते के मध्य विभाग के खान देश जिले में एक छोटी नदी के दक्षिण किनारे पर खानदेश जिले का सदर स्थान धूलिया एक कसबा है। *

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय धूलिया में २१८८० मनुष्य थे; अर्थात् १५९९१ हिंदू, ४९०० मुसलमान, ६५८ जैन, २३३ एनिमिष्टिक, ४९ क्रस्तान, ४५ पारसी और ४ यहूदी।

धूलिया कसबा दो भागों में बंटा है,—नया और पुराना धूलिया। नया धूलिया में सड़कें अच्छी हैं और मकान अच्छे अच्छे बने हैं। नदी के ऊपर पत्थर का पुल बना है। धूलिया में सरकारी कचहेरियां, जेलखाना, टेलीग्राफ आफिस, रुई दबाने के लिये एंजिन वाला एक मिल अर्थात् कल कारखाना, २ अस्पताल और बहुतेरे स्कूल हैं। वहां अब रुई आदि वस्तुओं की बड़ी तिजारत होती है। ऊनी कपड़ा और पगड़ी बहुत तैयार होती हैं। कसबे के दक्षिण-पश्चिम फौजी लाइन है और ६ मील दूर एक ऊंची पहाड़ी के सिर पर लालिंग का पुराना किला है। धूलिया में प्रति गुरुवार को सप्ताहिक बड़ा बाजार लगता है, जिसमें लगभग ५००० की वस्तु बिकती है। धूलिया से सड़क द्वारा ६४ मील पूर्व भुसावल है।

खानदेश जिला—इसके पूर्व सूबा बरार और मध्य देश का निमार जिला; दक्षिण सातमाला या अजंता पहाड़ी; दक्षिण-पश्चिम नासिक जिला; पश्चिम बड़ोदा का राज्य और उत्तर सतपुड़ा पहाड़ी और नर्मदा नदी है। तापती नदी खानदेश जिले के अग्निकोण से प्रवेश करके जिले में पश्चिमोत्तर को बहती है, जिससे यह जिला दो भागों में विभक्त हो गया है। इनमें से दक्षिण वाले बड़े भाग में बड़े बड़े कसबे, और घनी बस्तियां हैं और उपजाऊ बड़ा मैदान है, । उत्तर, सतपुड़ा पहाड़ी की ओर भूमि ऊंची होती

---

* अब चालीसगांव से धूलिया तक ३९ मील की रेलवे शाखा नई खुली है।

(३) भुसावल से पूर्व की ओर—
मील – प्रसिद्ध स्टेशन।
५६ जलम्ब जंक्शन।
६४ सेगांव।
८७ अकोला।
१३६ बडनेरा जंक्शन।
१९५ वरधा जंक्शन।
२४४ नागपुर।

जलम्ब जंक्शन से ८ मील दक्षिण खामगांव। बडनेरा जंक्शन से ६ मील उत्तर अमरावती। वरधा जंक्शन से पूर्व-दक्षिण २१ मील हिंगनघाट और ४५ मील वरोरा है।

अजन्ता के गुफा मन्दिर।

भुसावल जंक्शन से ४५ मील पश्चिम-दक्षिण रेलवे का स्टेशन पचौरा है, जहां से ३४ मील दक्षिण (२० अंश, ३२ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अन्श, ४८ कला पूर्व देशांतर में) निजाम के राज्य में अजंता एक बस्ती है, जिससे ४ मील पश्चिमोत्तर अजन्ता की प्रसिद्ध बौद्ध गुफा हैं। रास्ता जंगल का है। पचौरा से फरदापुर तक, जहां एक मुसाफिरखाना है, बैलगाडी का मार्ग और उससे आगे ३½ मील घोड़ा का रास्ता है। वगोरा नदी कई बार पार उतरना होता है। अजन्ता से ५५ मील दक्षिण-पश्चिम औरंगाबाद है।

अजन्ता के गुफा मन्दिरों और मठों से अशोक के बाद से बौद्ध लोगों के खदेरे जाने के समय तक का बौद्ध कारीगरी के इतिहास जान पड़ते हैं; अर्थात् सन् ईस्वी से लगभग २०० वर्ष पहिले से सन् ६०० इस्वी तक के वे बने हुए हैं।

करीब २५० फीट ऊंचे पट्टान की एक दीवार में, जो आधे गोलाकार की शकल में है, पानी की एक नाली से, जिसके पीछले छोर के पास ७ कुंडों का बड़ा झरना है, ३५ फीट से १०१ फीट तक ऊपर करीब ⅓ मील पूर्व से पश्चिम को छोटे बड़े २७ गुफा फैली हुई हैं, जिनमें से २२ विहार

अर्थात् बौद्ध मठ और धर्मशाले के साथ मंदिर और ५ चैत्य अर्थात् बौद्ध मंदिर निशन पहाड़ी चट्टान में पत्थर खोद कर अर्थात् भीतर में पत्थर निकाल कर बनाए हुए हैं। इनमें से ५ बौद्ध मंदिरों की लंबाई उनकी चौड़ाई से लगभग दूनी अधिक है। जो सबसे बड़ा है वह ९४ फीट लंबा और ४१ फीट चौड़ा है। संपूर्ण विहार अर्थात् बौद्ध मठ साधारण प्रकार से चौखूंटा शकल के हैं। उनके भीतर खंभो की पंक्तियां बनी हैं। इनमें से बड़ी बड़ी गुफाओं के मध्य में एक बड़ा कमरा है। उसके आगे एक दालान, जिसके दोनों बगलों में एक एक कोठरी है; पीछे एक छोटे कमरे में तख्त पर बैठी हुई बुद्धदेव की मूर्ति और तीनों बगलों में बौद्ध संतों के रहने की छोटी कोठरियां बनी हैं। प्रायः सब गुफामंदिर रंग से चित्रित हैं। बाहर ८ शिला लेख और भीतर लगभग १६ रंग के लेख संस्कृत और मागधी भाषा में हैं। इनमे से अनेक बहुत छोटे हैं और अनेक का काम पूरा नहीं हुआ है। चंद प्रधान गुफाओं के वृत्तांत नीचे लिखे जाते हैं।

एक पगडंडी, जिससे गुफाओं के पास जाना होता है, सातवीं गुफा के पास पहुंची है, जहां से रास्ते पूर्व और पश्चिम दोनों तरफ ऊपर गुफाओं के पास गए हैं।

सबसे पूर्व नम्बर १ एक विहार गुफा है। उसका बनावट उत्तम है। उसमें बहुतेरे हाथी, घोड़े मनुष्य और शिकारी लोग पत्थर के बने हैं। उसका बीचवाला कमरा हरतरफ से ६४ फीट लंबा है, जिसमें २० पाया बने हैं। उसके पीछे की तरफ ४ और प्रत्येक बगलों में ५ छोटी कोठरियां बनी हुई हैं। एक स्थान में उपदेश करते हुए बुद्ध की मूर्ति है।

नम्बर २—यह एक विहार गुफा है। बरंडे में २ एबादतखाना हैं। बुद्ध अपने बाएं हाथ की अंगुली को दहिने हाथ की अंगुलियों से पकड़े हुए हैं। गुफों की दीवारों में राम की लड़ाई, बहुत देवता, स्त्री, पुरुष आदि की बहुत सी मूर्तियां पत्थर में बनी हैं।

नं॰ ६—यह विहार गुफा दो मंजिला होने से प्रसिद्ध है। इसकी सीढ़ियां

गई है। मध्य में और पूर्व की नीची पहाड़ियों के चंद सिलसिलों को छोड़ कर देश प्रायः बराबर है। उत्तर और पश्चिम ओर मैदान ऊंचा है। देश कठिन है। जंगल में भील बहुत बसते हैं, जो जंगल फलों को खाकर और वन की लकड़ी बेंच कर अपना निर्वाह करते हैं। बहुतेरे भील सतपुड़ा पहाड़ी के पादमूल के निकट बस्तियों में और बहुतेरे सातमाला पहाड़ी के नीचे बसते हैं। इनमें से चंद अब तिजारत करते हैं। तापती नदी का किनारा बड़ा ऊंचा है। वर्षा काल में वह बिना नाव के पार होने लायक नहीं रहती। जिले में भुसावल के पास उस पर पुल है। जिले में जंगल और जंगली जानवर बहुत हैं। अब बाघ और तेंदुए कम देखने में आते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय खानदेश जिले के ९९४४ वर्गमील क्षेत्रफल में १२३७२३१ मनुष्य थे, अर्थात् ९९८१२८ हिंदू, १७५३४९ भील, ९२२९७ मुसलमान, १००१३ जैन, ११४६ कृस्तान, १५८ पारसी, ८८ यहूदी, ४३ सिक्ख, ८ बौद्ध और १ दूसरे। हिंदुओं में ३३७८१६ कुन्बी, ८५६७४ महारा, ४९१५३ माली, ४८३०७ कोली, ४७७४३ धांगर, ४५८६९ राजपूत, ४०४५९ ब्राह्मण, २८५७९ बनजारा, २३१७८ तेली, २०१०२ सोनार और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय खानदेश जिले के क़सबे धूलिया में २१८८०, चोपडा में १५६५५, परनगांव में १५०७०, जलगांव में १४६७२, परोला में १४४७८, भुसावल में १३१६९, एरांडल में १२५५७, नसीराबाद में ११४७२, इयावल में १०८०० और शेरपुर में १०१४२ मनुष्य थे।

इतिहास—खानदेश राजपूतों के बाद अंध्रभृत्य वंश के राजाओं के अधिकार में हुआ, जिनके बाद शाहवंश के राजाओं ने इस पर हुकूमत की। उसके पश्चात् पांचवीं सदी में इस पर सालुक्य वंश का अधिकार हुआ। कई एक मालिक के आधीन होने के बाद सन् १३२३ से सन् १३७० तक यह तुगलक के अधिकार में रहा। सन् १३७० में यह अरब वालों को आधीन हो गया। उन्हीं के राज्य के समय धूलिया का किला बना। सन् १५९९ में दिल्ली के बादशाह अकबर ने अपनी भारी फौज के साथ स्वयं आकर

असीरगढ़ के किले को ले लिया और वहां के राजा बहादुरखां को ग्वालियर में भेज कर खानदेश को अपने राज्य में मिला लिया। सन् १७६० में महाराष्ट्रों ने मुसलमानों से असीरगढ़ का किला और खानदेश ले लिया। सन् १८०३ में हुलकर की लूटपाट से और उस साल के अकाल से दुःखी हो धूलिया के निवासियों ने कसबे को, जो एक छोटा गांव था, छोड़ दिया; किंतु पेशवा के आधीन के कर्मचारी बालाजी बलवंत ने दूसरे वर्ष धूलिया को फिर बसाया और धूलिया में अपना सदर स्थान बनाया।

सन् १८१८ में खानदेश पर अंगरेजी अधिकार होने पर खानदेश एक नया जिला बनाया गया। धूलिया कसबा जिले का सदर स्थान हुआ और बासिंदे सुखी हुए। तबसे कसबे की उन्नति होने लगी। सन् १८७२ की बाढ़ से धूलिया कसबे की बड़ी हानी हुई; बहुतेरे मकान गिर गए और बहुतेरे माल बह गए।

मनमार जंक्शन।

चालीसगांव के रेलवे स्टेशन से २६ मील दक्षिण-पश्चिम नंदगांव का रेलवे स्टेशन और नन्दगांव से १६ मील पश्चिम (भुसावल जंक्शन से ११४ मील दक्षिण-पश्चिम) बम्बई हाते में धोंद और मनमार स्टेट रेलवे का जंक्शन मनमार है *। उससे ४ मील दक्षिण एक किला उजाड़ पड़ा है और ७ साधारण बौद्ध गुफाएं हैं। रेलवे स्टेशन और गुफाओं के बीच में रामगुलनी नामक एक पहाड़ी है; जिसके सिरे पर ८० या ९० फीट ऊंचा चट्टान का एक स्पूर्व स्वाभाविक मीनार है। मनमार के स्टेशन से ६ मील दक्षिण अगस्त्य पहाड़ी

* एक रेलवे लाइन हाल में मनमार से पूर्व थोड़ा दक्षिण हैदराबाद को गई है। उस पर ६३ मील दौलताबाद, ७१ मील औरंगाबाद, ११० मील जालना, १८१ मील प्रभानी, १९९ मील पुरना, २१८ मील नांदेड़, २८६ मील इंदुर, ३१८ मील कामेरदी, ३७७ मील बलारम और ३८६ मील हैदराबाद का स्टेशन है।

पर अगस्त्यमुनि और रामलक्ष्मण का मन्दिर बना हुआ है। लोग कहते हैं कि इसी जगह बन वास के समय रामचन्द्र अगस्त्यजी से मिले थे।

मनमार से दक्षिण-पश्चिम ४६ मील नासिक और १६२ मील बम्बई है। द्वारिका के यात्री बम्बई में आगबोट पर चढ़ कर समुद्र के मार्ग से द्वारिका जाते हैं। मनमार से दक्षिण ९५ मील अहमदनगर और १४६ मील घोंद जंक्शन है। मदरास, बालाजी, कांची, रंगजी, मदुरा, रामेश्वर इत्यादि के जानेवाले लोग मनमार से अहमदनगर और घोंद होकर जाते हैं। मैं मनमार से लौट कर उससे १६मील पूर्व के नन्दगाव के स्टेशन में रेलगाड़ी से उतर कर इलोरा औरंगाबाद, पैठन इत्यादि स्थानों में होकर अहमदनगर में रेलगाड़ी पर चढा।

इलोरा के गुफा मन्दिर।

चालीसगांव के स्टेशन से २६ मील (भुसावल से ९८ मील) दक्षिण-पश्चिम और मनमार जंक्शन से १६ मील पूर्व बंबई हात म नन्दगाव का रेलवे स्टेशन है, जिस से दक्षिण पूर्व ५६ मील की सड़क औरंगाबाद को गई है। छोटा तांगा नव दस घंटे में औरंगाबाद पहुंच जाता है। नन्दगाव में किराये पर तागा मिलते हैं। नन्दगांव से ३६ मील देवगांव है, जिसके ४½ मील आगे औरंगाबाद की सड़क छोड़ कर, वहा से ४½ मील दूसरी सड़क द्वारा जाने पर हैदराबाद के राज्य में (२० अंश, २ कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, १३ कला पूर्व देशांतर में) इलोरा गाव मिलता है, जिसमें एक मुसलमानी दर्गाह है। इलोरा से २ मील रौजा, ७ मील दक्षिण पूर्व दौलताबाद * और १४ मील दक्षिण पूर्व औरंगाबाद है। नन्दगांव से २६ मील पीछे चालीसगांव के रेलवे स्टेशन से इलोरा करीब ४५ मील है, परन्तु वहा से गाडी की सड़क नहीं है।

---

* अब मनमार जंक्शन से दौलताबाद होकर रेलवे निकली है। मनमार से ६३ मील पूर्व-दक्षिण दौलताबाद है।

इलोरा गांव गुफामंदिरों के लिये बहुतही प्रसिद्ध है। ऐसा मनोहर और आश्चर्यजनक शिल्पविद्या का स्मारक चिन्ह, जो पहाड़ से पत्थर काट कर बनाए गए हैं, भारतवर्ष में सहसा देख नहीं पड़ता। हिंदुस्तान के चट्टानों में बने हुए गुफामन्दिर ईशा से २५०० वर्ष पहिले से ८०० वर्ष पीछे तक के हैं। सबसे प्रथम बौद्धों ने, उसके पीछे हिंदुओं ने और हिंदुओ के पश्चात् जैनों ने गुफा मंदिर बनवाये, जिनमें बौद्धों के अधिक हैं। पश्चिमी भारत में ५० से अधिक झुंडों में छोटे बड़े ९०० से अधिक गुफामंदिर हैं। इनमें बंबई हाते और इसके आसपास में बहुत हैं। इनके अलावे अप्रसिद्ध गुफा मंदिरों के झुंड उड़ीसा, सिंध, पंजाब, और बलुचीस्तान में हैं।

इलोरा गांव के पास अर्द्धचंद्राकार की शकल की पहाड़ी में उत्तर से दक्षिण १¼ मील तक गुफा मन्दिर फैले हुए हैं। अजन्ता के गुफामंदिर खड़ी पहाड़ी में बने हैं; किंतु इलोरा के गुफामंदिर पहाड़ी के ढालूए बगल में हैं, इससे प्रायः सम्पूर्ण गुफाओं के आगे आंगन बने हैं। बहुतेरों के आगे एक दीवार है और उनके भीतर जाने के लिये एक एक रास्ता बना है। आगे दीवार होने से बाहरी से गुफामंदिर नहीं देख पड़ते हैं।

यहां बौद्ध, हिंदू और जैनगुफाओं के अलग अलग सिलसिले हैं;— दक्षिण तरफ १२ बौद्ध गुफाएं, मध्य में गुफाओं के ऊपर वाले छोटे गुफाओं को छोड़ कर जो १७ से अधिक हैं, १७ हिन्दू गुफाएं और उत्तर में ५ जैन गुफाएं हैं। गुफाओं के आगे बड़े बड़े झरने और पहाड़ी की नेव पर झाड़ी और वृक्ष हैं।

बौद्ध गुफाओं में सबसे अधिक प्रसिद्ध ये हैं;— पहली धारवार गुफा, जो सबसे अधिक पुरानी है, दूसरी विश्वकर्मा की चैत्य गुफा,-जो ८५ फीट लम्बी है, तीसरी दो मंजिली गुफा और चौथी तीन तल्ले वाली गुफा। विश्वकर्मा की सभा में एक बहुत बड़ी बुद्ध की मूर्ति है, जिसको वहां के लोग विश्वकर्मा कहते हैं।

सम्पूर्ण गुफाओं में प्रधान, सबसे अधिक उत्तम कैलास नामक गुफा मंदिर है। कहा जाता है कि ८ वीं शदी में सूबेबरार के एलिचपुर के राजा यदुने,

जिसने इलोरा नगर को कायम किया, यहां कैलास आदि गुफामंदिर बनाये। यह बाहर से मालुम होता है कि मैदान में बना हुआ एक मन्दिर है। भीतर के समान इसके बाहर से भी पत्थर काटकर निकाल दिया गया है। भीतर कई गुफा मन्दिर हैं, जिनमें आठ दस फीट ऊंची बड़ी बड़ी मूर्तियां बनी हुई हैं। दीवारों में चारो तरफ जिन्दे जानवरों के समान बड़े बड़े हाथी, सिंह, घड़ियाल, हरिन, हंस और बैल चट्टान काट कर बनाए गए हैं,— पहाड़ी के ढालू बगल पर १०० फीट गहड़ा १५० फीट चौडा और २७० फीट लम्बा आंगन की शकल का खन्दक है, जिसके बीच में १६३ फीट पूर्व से पश्चिम को लंबा और १०९ फीट उत्तर से दक्षिण को चौड़ा और लगभग ९० फीट ऊंचा खास कैलास मंदिर खडा है। आंगन के आगे एक परदा छोड़ दिया गया है; जिसके बाहरी बगल पर शिव, विष्णु आदि की बहुत सी बडी बड़ी मूर्तियां, भीतरी बगल पर कोठरियां और मध्य में रास्ता है। जिसके दोनों तरफ दो कोठरियां हैं। उससे आगे जाने पर कमलों पर हाथियो के साथ लक्ष्मी की मूर्ति देख पडती है। दहिने और बाएं आगन के आगे का हिस्सा चन्द फीट नीचा है। उसके उत्तर और दक्षिण के अखीर के पास जिन्दे हाथी के समान दो बड़े हाथी खड़े हैं। फिर पूर्व जाकर चन्द सीढीयों के ऊपर चढने पर मन्दिर का एक बड़ा कमरा मिलता है जिससे आगे पुल द्वारा चौखूटा मंडप में जाना होता है; जिसमें नन्दी बैल हैं, इसमें दो दरवाजे और दो खिड़कियां हैं। खिड़कियों के सामने मंडप के दोनों तरफ ३८ फीट ऊंचे दो ध्वजास्तंभ खड़े हैं, जिनके सिरों पर पहले सिंह थे। नन्दी से आगे एक दूसरा पुल लांघने पर एक बड़ा कमरा मिलता है, जिसके दरवाजे पर दो बड़े द्वारपाल बने हैं। आखीर के कमरे में जिसमें उत्तम संगतरासी का काम है, शिवलिंग है।

एक परदे में देवताओं के ४३ झुंड हैं; जिससे पुराणों की कथा और लीला जाहिर होती है। पहली हिन्दू गुफा को रावण की खाई कहते हैं जिसमें दुर्गा, लक्ष्मी, शिव, पार्वती आदि की ऐतिहासिक कर्तव्यता की बहुत सी मूर्तियां संगतरासी से बनी हुई हैं।

हिन्दू गफाओं में दस अवतार की गुफा सब गुफाओं से पुरानी है;

कैलाश
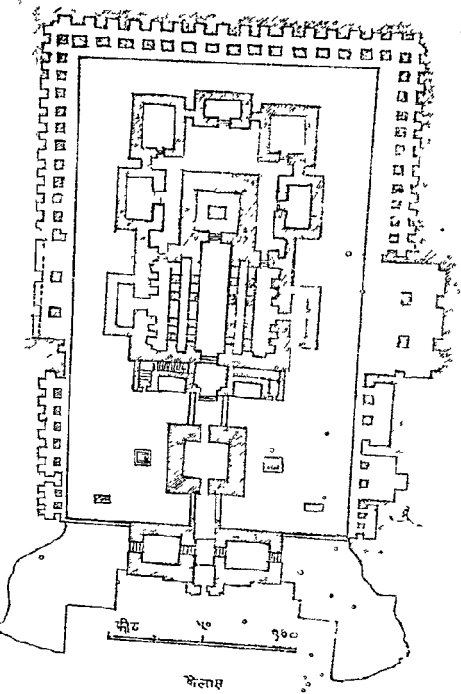
उसका बड़ा कमरा १०३ फीट लम्बा और ४५ फीट चौड़ा है; जिसके भीतर ४६ पाये बने हैं।

हिन्दू गुफा मन्दिरों से करीब १ मील (अखीर) उत्तर जैन गुफाओं को एक पगडंडी गई है; जहां जगन्नाथसभा और इन्द्रसभा बनी है। यहां चंद छोटी छोटी कोठरियां और अनेक छोटी तथा एक बड़ी जैन प्रतिमा है।

इनके अतिरिक्त यहां आदिनाथ सभा, परसुराम सभा, लंका, जनवासा, तीनलोक, इत्यादि बहुतेरे स्थान बने हुए हैं। इलोरा के संपूर्ण मंदिर एक उसी पत्थर के पहाड़ में पत्थर खोदकर बनाए गए हैं अर्थात् उसमें कोई पत्थर अथवा ईंटा नहीं जोड़े गए हैं।

रौजा।

इलोरा के गुफाओं से २ मील दूर (दौलताबाद से ६ मील पश्चिमोत्तर हैदराबाद के राज्य में २२०० आदमियों की बस्ती रौजा है; जिसके चारोतरफ औरंगजेब की बनवाई हुई पत्थर की ऊंची दीवार है। सड़क के दोनों तरफ बहुतेरे स्थानों में पुरानी तबाही हालत में मसजिदें और कबरें पाई जाती हैं।

रौजा का आब हवा खुशनुमा और मातदिल है। गरमी के महीनों में स्वास्थ्य के लिये यहां लोग आते हैं। यह दक्षिण के मुसलमानों का करबला (पवित्र स्थान) है और यहां बहुतेरे प्रसिद्ध मुसलमानों के कबरस्थान होने से यह मशहूर है। यहां औरंगजेब बादशाह, उसका लड़का आजिमशाह, हैदराबाद खान्दान के कायम करने वाला आमफजाह, उसका दूसरा लड़का नासिरजंग, पिछला निजामशाही बादशाह का मंत्री मलिकअम्बर, गोलकुंडा का कैदी राजा थानाशाह की कबरें हैं।

औरंगजेब का मकबरा—रौजा बस्ती के उत्तर और दक्षिण के फाटक के बीच में औरंगजेब का मकबरा है। पहले गुम्बजदार पेशगाह और फाटक का रास्ता मिलता है; जिसको लगभग सन् १७६० में औरंगाबाद की एक वेश्या ने बनवाया उसके भीतर चोगान अर्थात् आंगन है; जिसके चारो ओर

की इमारतों में से चन्द में मोसाफिर टिकते हैं और एक में स्कूल है। दक्षिण तरफ मध्य में एक छोटा नौवतखाना और पश्चिम तरफ एक बड़ी मसजिद है; मसजिद के उत्तर एक फाटक है, जिससे भीतर के आंगन में जाना होता है। आगन के दक्षिण-पूर्व के कोने के पास एक वृक्ष के नीचे १ फीट ऊंचे पत्थर के चबूतरे पर ८ फीट ऊंची मार्बुल की टट्टी से घेरी हुई दिल्ली के बादशाह औरंगजेब की कबर है। औरंगजेब सन् १६५८ में बादशाही तख्त पर बैठा और सन् १७०७ की फरवरी में अहमदनगर में मरगया।

दूसरी कबरें—औरंगजेब की कबर के पूर्व मार्बुल से बना हुआ एक छोटा चौखूटा घेरा है; जिसमें एक फकीर की लड़की की, औरंगजेब के दूसरे लड़के आजिमशाह की और आजिमशाह की स्त्री की कबर है। इस घेरे और औरंगजेब की कबर के बीच में सैयद जैनुद्दीन का मकबरा है, जिसके दरवाजे पर चांदी का पत्तर जड़ा है।

औरंगजेब और आजिमशाह की कबरों के सामने हैदराबाद के पहला निजाम आसिफजाह का सुन्दर मकबरा है। यहां एक चौगान के चारो तरफ बरहे और पूर्व एक नौबतखाना है और पश्चिम की इमारत में कुरान की शिक्षा होती है। इसके दरवाजे से पश्चिम के दूसरे आंगन में जाना होता है; जिसमें बहुतसी कबरे हैं। उसके पूर्वमुख की इमारत में, जिसमें चारो तरफ लाल पत्थर की जालीदार टट्टी है, आसफजाह और उसकी एक स्त्री की कबर है। वहां सैयद हजरत बरहनुद्दीन एक प्रसिद्ध फकीर की, जो सन् १३४४ ई० में रौजा में मरा था, कबर है।

दौलताबाद।

रौजा से ६ मील पूर्व-दक्षिण और औरंगाबाद से १० मील पश्चिमोत्तर हैदराबाद के राज्य में (१९ अंश, ५७ कला, उत्तर अक्षांश और ७५ अन्श, १८ कला, पूर्व देशांतर में) दौलताबाद एक पुराना कसबा है, उसको पूर्व समय में लोग देवगिरी कहते थे, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय

१२४३ मनुष्य थे *। दौलताबाद किला प्रसिद्ध है, जिसको देखने के लिए एक अफसर से इजाजत लेना होता है। दौलताबाद से ६ मील दूर घुश्मेश्वर शिव हैं।

किला— ५०० फीट ऊंची गावदुमी खड़ी पहाड़ी पर १३ वीं शदी का बना हुआ किला है, जिसके बाहरी का घेरा २¾ मील का है। किले के नीचे लगभग ३० फीट चौड़ी खाई और पूर्वतरफ फाटक है। खाई पर पत्थर का छोटा पुल बना है। तीसरे फाटक के पास ५६ फीट ऊंचा एक बुर्ज है। चौथे मेहराबी रास्ते के बाद दहिने तरफ एक पुराना हिन्दू मन्दिर देखने में आता है। एक तालाब के बगल से होकर बाएं तरफ घूमते हुए एक रास्ता एक मसजिद को गया है। उत्तर ओर २१० फीट ऊंचा एक मीनार मिलता है; जिसको मुसलमानो ने इस किले के विजय के स्मरणार्थ बनवाया। मीनार के सिरपर चढ़ने से चारोतरफ देश का सुन्दर दृश्य देखने में आता है। एक कमरे में पारसी लेख है, जिसके अनुसार यह सन् १४३५ ई० में बना था।

किले में एक तोप महम्मदहसन की बनवाई हुई २२ फीट लम्बी; जिसके मुख का व्यास ८ इंच है, दूसरी एक बैटरी पर १९½ फीट लंबी, जिसका सुराख ७ इंच है और तीसरी एक बड़ी तोप गुजराती लेख के साथ है। किले में निजाम सरकार के लगभग १०० सिपाही रहते हैं। किले के भीतर पहाड़ी के शिखर पर एकनाथ स्वामी के गुरु जगन्नाथ स्वामी का समाधि मंदिर है, जिसके दर्शन को हिंदू लोग जाते हैं। दीप के प्रकाश से लोग अंधेरे मंदिर में दर्शन करते हैं।

इतिहास—सन् १२९३ में अलाउद्दीन ने, जो पीछे दिल्ली का बादशाह हुआ, देवगिरि को जो, उस समय महाराष्ट्र की हिंदू बादशाहत की राजधानी था, ले लिया। वह१५००० पाउन्ड सोना, १७५ पाउन्ड मोती,

* मनमार जंक्शन से पूर्व ओर हैदराबाद की एक रेलवे लाइन निकली है, उसपर मनमार से ६३ मील पूर्व-दक्षिण और औरंगाबाद से ८ मील पश्चिमोत्तर दौलताबाद का रेलवे स्टेशन है।

५० पाउन्ड हीरा और २५००० पाउन्ड चांदी और आसपास के जिलों के साथ एलिचपुर को लेकर और वहां के राजा रामचन्द्र को अपने आधीन बना कर महासरा उठा कर चला गया। सन् १३०६ में रामचन्द्र बागी हुआ और कैदी बनाकर दिल्ली भेजा गया; किंतु बादशाह ने रामचन्द्र को उसका अधिकार फिर दे दिया। उसके मरने पर उसका पुत्र शंकर मुसल्मानों से बागी हुआ, तब मुसल्मान जनरल काफूर ने जाकर दौलताबाद के किले को ले लिया और राजा शंकर को मार डाला। सन् १३३८ में गयासुद्दीन तोगलक के पुत्र महम्मद तोगलक ने देवगिरि को मुसल्मानी राज्य की राजधानी बनाने की इच्छा की; वह दिल्ली के निवासियों को दिल्ली से लगभग ८०० मील दूर देवगिरि में ले गया। उसने किले को मजबूत किया और देवगिरि का नाम दौलताबाद रक्खा। दौलताबाद प्रसिद्ध हुआ। उसके कई एक वर्ष बाद गुलबर्गा का बहमनी राजा, उसके पीछे अहमदनगर के निजामशाही वंश वाले, उसकेबाद मुगल खांदान के बादशाह दौलताबाद के शासक हुए। सन् १७०७ में औरंगजेब के मरने के पीछे दौलताबाद का किला निजाम घराने के नियत करने वाले आसफजाह के हाथ में आया, जिनके वंशधरों के अधिकार में यह अब तक है।

औरंगाबाद।

दौलताबाद के किले से पूर्व दक्षिण औरंगाबाद तक ८ मील की पक्की सड़क है। इलोरा से १४ मील और नंदगांव के रेलवे स्टेशन से ५६ मील पूर्व-दक्षिण हैदराबाद के राज्य में जिले का सदर स्थान औरंगाबाद एक कसबा है, जो पहले किरकी नाम से मसहूर था*। सन् १६१० में मलिकअंबर ने इसको कायम किया। औरंगाबाद से ६८ मील दक्षिण पश्चिम अहमदनगर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय औरंगाबाद और उसकी छावनी में ३२८८७ मनुष्य थे; अर्थात् १७१८६ पुरुष और १६७०१ स्त्रियां। इनमें

* मनमार जंक्शन से हैदराबाद को रेलवे लाइन गई है; मनमार से पूर्व-दक्षिण ६२ मील दौलताबाद और ७१ मील औरंगाबाद का रेलवे स्टेशन है।

१८९०७ हिंदू, १४०४१ मुसलमान, ९११ जैन, ३१६ कृस्तान, ६० पारसी, और ९२ सिक्ख थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह हैदराबाद के राज्य में दूसरा शहर है।

कसबे के चारो ओर पक्की दीवार, जिसके कोनों पर टावर हैं, बनी हुई है, जिसके भीतर बहुतेरी इमारतों के खडहर हैं। औरंगजेब का बनवाया हुआ महल उजड़ गया है। कसबे के पास एक छोटी नदी बहती है। कसबे से पूर्व चालीस पचास छोटे बड़े मकबरे और पश्चिम फौजी छावनी है। औरंगाबाद में हैदराबाद राज्य का सदर तालुकेदार रहता है। गेंहू, कपास, बरतन इत्यादि की तिजारत होती है। औरंगाबाद जिले में कादिराबाद एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय २३३९३ मनुष्य थे।

राबियादुर्रानी का मकबरा—राबियादुर्रानी दिल्ली के बादशाह औरंगजेब की लडकी थी। यह बडा मकबरा शहर से १ मील पूर्वोत्तर पुराने कबरगाह के करीब ३०० गज दक्षिण है। इसके बड़े फाटक में पीतल का पत्तर जड़ा है। इसके किनारे पर लिखा है कि यह उमदे मकबरे का दरवाजा सन् १०८९ हिजरी (सन् १६७७ ई०) में बना। बाग में एक लंबी तंग जगह में पानी है, जिसमें फौआरे इस्तमाल होते थे। पानी के दोनों तरफ रास्ता है, मकबरे की दीवार में ६ फीट ऊंचा, पीतल जड़े हुए दरवाजे का फाटक है; जिसमें अजीब तरह की नक्काशी के फूल और सांप बने हैं। मकबरे के भीतर मार्बुल के ऊंचे चबूतरे पर ८ पहल की मार्बुल की झंझरीदार टट्टियों के भीतर राबियादुर्रानी की कबर है। निजाम सरकार ने इसकी मरम्मत में बहुत खर्च किया है। मकबरे के पश्चिम ईंटे की मसजिद है।

मसजिदें—छावनी से बेगमपुरा पुल पर जानेवाली सड़क के दहिने घूमने पर एक खूबसूरत बाग में मछलियो से भरा हुआ एक तालाब मिलता है, जिसका पानी उमड़ कर नीचे के दूसरे तालाब में गिरता है और फिर एक तंग नाले में बहता है। वहां बोलारे का बाबाशाह, जो औरंगजेब का उपदेशक था, दफन किया गया है। बाग के बाद एक बड़े तालाब के पास एक उत्तम मसजिद है; जिसकी छत के नीचे पायों के ४ कतार हैं।

मसजिद के दक्षिण-पश्चिम एक छोटे बाग में हलके रंग के मार्बुल से बना हुआ एक खूबसूरत मकबरा है।

खाम नदी के किनारे की पनचक्की से ! मील उत्तर शहर का पुराना मक्का फाटक और मक्का पुल है। फाटक की इमारत ४२ फीट ऊंची है। फाटक के भीतर मलिकअम्बर की बनवाई हुई काले पत्थर की मसजिद है।

सरकारी मकान के निकट जुमा मसजिद है। मसजिद और उसके मीनार बहुत ऊंचे नहीं हैं। मसजिद के सम्पूर्ण अगवास में अपूर्व जालीदार काम है। मलिकअम्बर ने आधी मसजिद को और औरंगजेब ने बाकी को बनवाया।

सरकारी आफिस—छावनी के दक्षिण-पूर्व औरंगजेब के गढ़ में सरकारी आफिस हैं। वहां एक सुन्दर बड़े कमरे के आगे एक सुन्दर तालाब और पीछे एक खूबसूरत बाग है; फिर उसके पीछे बारहदरी या सरकारी हौस है, जिसके आगे एक सुन्दर तालाब है। औरंगजेब के गढ़ की निशानी में अब केवल एक मेहराबी राह है। यहां एक समय हजारहां हथियार बन्द आदमियों के साथ ८३ राजा औरंगजेब बादशाह की कचहरी में हाजिर रहते थे; उस समय औरंगाबाद दक्षिण की दिल्ली था।

औरंगाबाद के गुफामन्दिर—शहर से लगभग २ मील उत्तर पहाड़ियों के बगल में गुफामन्दिर हैं। पहले और दूसरे झुंड में ९ बौद्ध गुफाएं हैं, जिनसे लगभग १ मील पूर्व तीसरे झुण्ड में ३ गुफामंदिर है; उनमें प्रधान ये हैं;— गुफा नं० १ के दरवाजे के बाएं उपदेश करते हुए बुद्ध की मूर्ति है, जिसके आसपास कई सेवकों की मूर्तियां हैं। बगल के दरवाजे के ऊपर दो पलथी मारकर बैठी हुई और तीसरी अपने गणों को उपदेश देती हुई बुद्ध की प्रतिमा है। प्रधान फाटक के दहिने बुद्ध और बाएं उन्हीके समान ३ मूरतें हैं। नीले पत्थर की ६ फीट ऊंची बुद्ध की एक मूरत बैठी हुई है।

नं० २ चैत्यगुफा अर्थात् बौद्ध मंदिर है। यह इलोरा के विश्वकर्मा की गुफा के समान अर्द्ध गोलाकार छत के साथ है।

नं० ३ विहार अर्थात् बौद्ध मठ और धर्मशाले के साथ मंदिर है। मध्य के कमरे में १२ पाए हैं। बीच में ९½ फीट ऊंची बुद्ध की प्रतिमा है, जिसके पास बहुतेरी मूर्तियां पूजा कर रही हैं। बाहरी का बरंडा बिगड़ रहा है।

नं० ४ आठ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा एक छोटा विहार है, जिसमें उपदेश करते हुए बुद्ध बैठे हैं। दीवार में चारो तरफ छोटी छोटी बुद्ध की मूर्तियां हैं।

नं० ५ अधिक ऊंचाई पर एक साधारण गुफा है।

पैठन—औरंगाबाद से लगभग ३० मील दक्षिण गोदावरी नदी के किनारे पर पैठन है, जिसका वृत्तांत आगे लिखा जायगा। यात्री लोग पैठन से पर्णी बैद्यनाथ और नागनाथ के दर्शन को जाते हैं और घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग के दक्षिण से आनेवाले यात्री पैठन होकर और उत्तर के यात्रीगण दौलताबाद होकर जाते हैं।

इतिहास—एक समय औरंगाबाद अहमदनगर राज्य के दक्षिण के बड़े भाग की राजधानी था। कसबे के क्षेत्रफल के प्रायः ⅔ भाग में शहर के खंडहर फैले हुए हैं। कसबे के २ मील पश्चिम एक बड़ी शहर तली का खंडहर देखने में आता है। एक समय वहां भारी तिजारत होती थी। निजाम की राजधानी हैदराबाद होने पर इसकी तिजारत घटने लगी।

घुश्मेश्वर।

दौलताबाद के ६ मील पश्चिमोत्तर पहाड़ी के दूसरी ओर उसके पादमूल के पास और पैठन से लगभग ३० मील उत्तर ओर औरंगाबाद के राज्य में वेरूल एक बस्ती है। पैठन से वेरूल को बैलगाड़ी का मार्ग है। वेरूल से ½ मील दूर एक छोटी नदी के किनारे पर घुश्मेश्वर का छोटा शिखरदार मंदिर पूर्व मुख का बना हुआ है। मंदिर के आगे अठपहला जगमोहन है। नदी के किनारे पर एक छोटा पक्का घाट बना है। स्थान निर्जन है। रात को मंदिर के पास कोई नहीं रहता। यात्री लोग पन्डों के मकान पर चले जाते हैं।

बेरूल वस्ती और घुश्मेश्वर शिव के मंदिर के बीच में एक तालाव के मध्य में एक बड़ा मंदिर और उसके चारो कोनों पर ४ छोटे मंदिर हैं । घुश्मेश्वर शिवलिंग महादेवजी के १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक है । यह लिंग आधा हाथ ऊंचा है। मंदिर में दिन रात दीप चलता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—शिवपुराण,—(ज्ञानसंहिता, ३८ वां अध्याय) शिवजी के १२ ज्योतिर्लिंगो में से घुश्मेश्वर लिंग शिवालय में स्थित हैं। ज्योतिर्लिंगों के पूजन करने का अधिकार चारो वर्णों का है; इनके नैवेद्य भोजन करने से सब पापों का नाश होजाता है।

(ज्ञानसंहिता, ५८.वां अध्याय) दक्षिण दिशा में देवमंज्ञक पर्वत (देवगिरि) के निकट सुधर्मा नामक ब्राह्मण रहता था । जब उसके कोई संतान नहीं हुई, तब उसने अपनी स्त्री सुदेहा के बहुत हठ करने पर घुश्मा नामक स्त्री से अपना दूसरा विवाह किया । घुश्मा अपने स्वामी की आज्ञा पाकर नित्य १०८ पार्थिव का पूजन करने लगी । वह नित्य पार्थिवों को पूज कर एक तालाव में डाल देती थी । इस भांति उसने १ लाख लिंगो का पूजन किया। थोड़े दिनों के पश्चात् शिवजी की कृपा से घुश्मा का सुंदर पुत्र जन्मा। कुछकाल के उपरान्त उस पुत्र का विवाह हुआ। सब संबंधी लोग घुश्मा की प्रशंसा करने लगे। यह देख सुदेहा अति दुःखी होकर अपनी सौत के पुत्र से ईर्षा करने लगी। एक दिन उसने उस पुत्र को सोते हुए पाकर मारडाला और जिस सरोवर में घुश्मा पार्थिवों को पूज कर फेंक देती थी, उसी में उसका शरीर डाल दिया। सवेरा होने पर ब्राह्मण के पुत्र की मृत्यु की खबर से सब लोग दुखी हुए; किंतु सुधर्मा और घुश्मा यह समाचार पाकर भी शिवपूजन को त्याग कर अपने स्थान से नहीं उठे। घुश्मा ने विज्ञान बल से मसन्नता पूर्वक पार्थिव लिंगों को लेजाकर पूर्ववत् उस सरोवर में विसर्जन किया । जब वह लौटने लगी तब सरोवर के तट पर उसका पुत्र देख पड़ा । वह अपनी माता से आ मिला । उसी समय घुश्मा की दृढ़ भक्ति और संतोष देख कर शिवजी ने ज्योति रूप होकर उसको दर्शन दिया

और उससे कहा कि तेरी सौत ने तेरे पुत्र को मारा था; मैं प्रसन्न हूं तुम बर मांगो। घुश्मा बोली कि हे स्वामी! मै यही मांगती हूं कि आप लोक की रक्षा के निमित्त यहांही स्थित होजाइये। महादेवजी ने कहा कि हे सुमध्यमे! तेरेही नाम से मेरा नाम घुश्मेश्वर होगा और यह सरोवर लिंगो का आलय है; इस लिये यह शिवालय नाम से विख्यात होगा। ऐसा कह शिवजी लिंग स्वरूप होकर पार्वती के सहित स्थित होगए। उनका नाम घुश्मेश्वर और उस तालाब का नाम शिवालय हुआ। इस लिंग का दर्शन करके मनुष्य सब पापों से छूट जाता है और शुक्लपक्ष के चन्द्रमा के समान उसके सुख की वृद्धी होती है।

पैठन।

औरंगाबाद से (जिससे ८६ मील पूर्वोत्तर नदगांव का रेलवे स्टेशन है) लगभग ३० मील उत्तर और अहमदनगर के रेलवे स्टेशन से लगभग ६० मील पूर्वोत्तर हैदराबाद-राज्य के औरंगाबाद जिले में गोदावरी नदी के बाएं किनारे पर पैठन एक पुराना नगर है, जो एक समय शक जाति के राजा शालिवाहन की राजधानी प्रतिष्ठानपुर नाम से विख्यात था। अब तक लोग इसको दक्षिण का प्रतिष्ठानपुर कहते हैं। उसी शालि वाहन के नाम से शालिवाहन शाका चलता है, जो सन् ७८ ई० और विक्रमी संवत् १३५ में आरंभ हुआ। पैठन से औरंगाबाद तक दिहाती मार्ग और अहमदनगर तक पक्की सड़क है, जिसपर तांगे चलते हैं *। पैठन से पूर्वोत्तर एक सड़क नागपुर शहर को गई है।

पुराने नगर के एक छोटे भाग में वर्तमान पैठन कसबा है। पूर्व की भूमि पर पुराने नगर की निशानियां दूर तक देख पड़ती हैं। कसबे में बहुतेरे देव मंदिर बने हुए हैं। और एकनाथ स्वामी का प्रसिद्ध समाधि मंदिर है एक

* मनमार जंक्शन से नई रेलवे हैदराबाद को गई है; उसपर मनमार से पूर्व-दक्षिण ६३मील दौलताबाद और ७१ मील औरंगाबाद का रेलवे स्टेशन है।

समय पैठन रेशमी कपड़े की दस्तकारी के लिये प्रसिद्ध था, अब भी कुछ उसका काम होता है।

परणी वैद्यनाथ।

पैठन से ३० मील से अधिक पूर्व हैदराबाद के राज्य में गोदावरी नदी के किनारे पर गंगाखेड़ एक बस्ती है, जिससे १६ मील दूर घुश्मेश्वर से लगभग ८० मील परणी गांव है। पैठन से वहां तक बैलगाड़ी का मार्ग है। परणी वैद्यनाथ से लगभग ६० मील अहमदनगर का रेलवे स्टेशन है। परणीगांव के पास छोटी पहाड़ी के ऊपर वैद्यनाथ शिव का शिखरदार विशाल मंदिर और एक धर्मशाला है। शिवलिंग आधा हाथ ऊंचा है। मंदिर में दिन रात दीप बलता है। पहाड़ी के दोनो ओर पत्थर की सीढ़ियां नीचे से ऊपर को गई हैं। एक ओर परणीगांव और दूसरी ओर एक छोटी नदी और एक पक्का कुन्ड है।

दक्षिणी लोग परणी-वैद्यनाथ ही को शिव के १२ ज्योतिर्लिंगों में का वैद्यनाथ कहते हैं; किंतु शिवपुराण के कथाओं से बिहार प्रदेश के संथाल परगने के वैद्यनाथ, जिनका वृत्तांत भारत-भ्रमण के तीसरे खंड में है, १२ ज्योतिर्लिंगों में सिद्ध होते हैं। तीसरे खंड के १८ वें अध्याय में देखिए। एक स्तोत्र में "परण्यां वैद्यनाथं च" ऐसा लिखा है, किन्तु यह नहीं जान पड़ता है कि यह श्लोक किस पुस्तक का है।

नागेश।

गंगाखेड़ से लगभग ३० मील दूर अवढा नामक बस्ती है, जिसके पास अवढानागनाथ अर्थात् नागेश का शिखरदार बड़ा मन्दिर है। गंगाखेड़ से वहां तक बैलगाड़ी का मार्ग है। नागेश शिवलिंग शिवजी के १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक हैं। मंदिर के आगे अर्थात् पश्चिम तरफ जगमोहन बना हुआ है। मंदिर और जगमोहन दोनों खाली हैं; मंदिर के भीतर एक बगल में ४सीढ़ियों के नीचे एक बहुत छोटी कोठरी में एक हाथ ऊंचा नागेश शिवलिंग है।

यात्रीगण सीढ़ी से दर्शन करते हैं। कोठरी में दिन रात दीप जलता है। मंदिर के पीछे नंदी की मूर्ति है। मंदिर के समीप एक टूटी फूटी धर्मशाला और एक कुंड है। लोग कहते हैं कि हैदराबाद के निजाम की ओर से घुश्मेश्वर, परणी वैद्यनाथ और अवढा नागनाथ ये तीनों देवताओं के भोगराग इत्यादि खर्च के लिये तीस तीस रुपये मासिक मिलता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—शिवपुराण—(ज्ञानसंहिता, ३८ वां अध्याय) शिवजी के १२ ज्योतिर्लिंगों में से नागेश लिंग दारुका वन में स्थित हैं। ज्योतिर्लिंगों के पूजन करने का अधिकार चारो वर्णों का है। इनके नैवेद्य खाने से सब पापों का विनाश होजाता है।

(ज्ञानसंहिता, ५६ वां अध्याय) चारो ओर से १६ योजन विस्तीर्ण दारुका नामक राक्षसी का वन था। श्रीपार्वतीजी के वरदान के प्रभाव से दारुका जहां जाने की इच्छा करती थी, तहां पृथ्वी, वृक्ष, महल सब सामग्री के साथ वह 'वन' जाता था। वह राक्षसी अपने पति दारुक के सहित उस स्थान में रहकर सब लोगों को भय देने लगी। जब सबलोग दुःखी हो 'और्व' ऋषि के शरण में गए; तब उन्होंने राक्षसों को शाप दिया कि यदि राक्षस लोग पृथ्वी में प्राणियों की हिंसा और यज्ञ में विघ्न करेंगे तो प्राण रहित हो जांयगे। देवता लोग यह समाचार पाकर राक्षसों से युद्ध करने का उद्योग करने लगे। तब दारुका राक्षसी ने पार्वतीजी के वर के प्रभाव से स्थल सहित अपने वन को लेजाकर पश्चिम के समुद्र में स्थित किया। अनेक प्रकार के महल उसमें बनगए। संपूर्ण राक्षस उसमें सुख से विहार करने लगे। वे लोग मुनि के शाप के भय से स्थल में नहीं जाते थे, किंतु नाव में बैठ कर जाने वाले मनुष्यों को पकड़ कर अपने नगर में लाकर किसी २ को मारडालते और किसी२ को बंधनागार में रखते थे। एक समय वहां मनुष्यों से पूर्ण बहुत सी शीघ्र नौका आईं। राक्षसों ने सब मनुष्यों को पकड़ कर अपने नगर के बंधनागार में डाल दिया। उन मनुष्यों का स्वामी वैश्य बड़ा शिव भक्त था। वह शिवजी के विना पूजन किए हुए भोजन नहीं करता था। वह अपने सब साथियो के साथ बंधनागारही में शिवजी की मानसी पूजा करने लगा।

सुप्रिय नामक वैश्य मानसिक पूजा और ध्यान से जो कुछ शिवजी को निवेदन करताथा; शिवजी उसको प्रत्यक्ष स्वीकार करते थे, परंतु वह इस बात को नहीं जानता था । इस प्रकार से ६ मास बीतने के उपरांत राक्षस के सेवकों ने वैश्य के आगे शिवजी का सुंदर रूप देख कर अपने राजा से सब वृत्तांत कह सुनाया। राक्षसराज अपने गणों के साथ जाकर वैश्य को मारने की आज्ञा दी। राक्षस गण मारने दौड़े । वैश्य भय भीत होकर बोला कि हे शंकर! हमारी रक्षा करो। ऐसी प्रार्थना सुन कर शिवजी ४ द्वार युक्त विवर से अपनें ज्योतिर्लिंग के सहित प्रकट हुए। उनके साथ सब उनका परिवार था। वैश्य ने शिवजी का पूजन किया। शिवजी ने प्रसन्न हो कर वहां के राक्षसों को नष्ट भ्रष्ट कर डाला और वैश्य को वर दिया कि इस वन में अपने धर्म के सहित चारो वर्ण के लोग सदा विद्यमान रहें गे। उसी समय दारुका राक्षसी पार्वतीजी की स्तुति करने लगी; तब पार्वतीजी ने कहा कि तुम क्या चाहती हो। राक्षसी बोली कि तुम मेरे वंश की रक्षा करो । पार्वतीजी ने उसको यह वरदान देकर शिवजी से कहा कि हेआर्य ! तुह्मारा वचन युगांतर में सत्य होगा; अभी दारुका यहां रहकर राक्षसो का राज्य करेगी। शिवजी ने पार्वती का वचन स्वीकार करके कहाकि मै इस वन में निवास करूंगा। जो पुरुष अपने वर्णाश्रम में स्थित रह कर यहां मेरा दर्शन करेगा वह चक्रवर्ती होगा । ऐसा कह कर पार्वती के सहित महादेवजी नागेश नाम से वहा स्थित होगए।

———o———
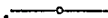
चौथा अध्याय।

(बंबई हाते में) अहमदनगर, धोंद जंक्शन, पंढर-पुर, बार्सी, शोलापुर, होतगी जंक्शन, और (हैदराबाद के राज्य में) गुलबर्गा।

अहमदनगर।

पैठन से लगभग ६० मील पश्चिम-दक्षिण और मनमार जंक्शन से ९५ मील दक्षिण अहमदनगर का रेलवे स्टेशन है। बंबई हाते के मध्य विभाग में (१९ अंश, ५ कला, उत्तर अक्षांश और ७४ अंश, ५५ कला पूर्व देशांतर में) शिवानदी के बाएं किनारे पर जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा अहमदनगर है। मनमार जंक्शन और अहमदनगर के बीच में गोदावरी नदी पर रेलवे का पुल बना है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय अहमदनगर और इसकी छावनी में ४१६८९ मनुष्य थे; अर्थात् २२०७३ पुरुष और १९६१६ स्त्रियां। इनमें ३२०२७ हिन्दू, ६३४७ मुसलमान, १८८८ कृस्तान, ११७७ जैन, १८३ पारसी, ३२ यहूदी, २३ एनिमिष्टिक और १२ दूसरे थे।

मनुष्य-संख्या के अनुसार यह बम्बई हाते,में ११ वां और भारत वर्षमें ९७ वां शहर है।

शहर दस बारह फीट ऊंची मट्टी की दीवार से घेरा हुआ है, जिसके जगह जगह के बुर्ज और फाटक उजड़ रहे हैं। शहर के अधिक मकान ईंटे से बने हुए मामूली दरजे के मुंडेरेदार हैं। निवासियों में शूद्र अधिक हैं। एक सड़क के बगलों में गल्ले की और दूसरी पर कपड़े इत्यादि की दुकानें हैं। खास करके मारवाड़ी लोग कपड़े बेचते हैं। शहर में तांबे और पीतल के बहुत बर्तन बनते हैं। इसमें दरी और गलीचे बहुत मजबूत तैय्यार होते हैं; इनके लिये अहमदनगर प्रसिद्ध है। शहर की कई एक पुरानी मसजिदें सरकारी आफिस बनी हैं; कई एक में यूरोपियन लोग रहते हैं। एक जेलखाना

के काम में आती है और एक अस्पताल बनी है। लगभग सन् १६०० ई० का बना हुआ एक मुसलमान सरीफ के महल में जज की कचहरी होती है। इनके अलावे अहमदनगर में दो तीन देवमंदिर, एक आरमेनियन चर्च, एक पारसी अग्निमंदिर, और एक हाई स्कूल है। शहर के कूपों का पानी खारा है। दूर दूर से कई प्रणालीद्वारा शहर में पानी पहुंचाया जाता है। शहर से लगभग १२ मील दूर शिवानदी का निकास स्थान है।

रेलवे स्टेशन से २½ मील पूर्वोत्तर, शहर से १ मील पूर्व गोलाकार शकल का १½ मील के घेरे में पत्थर का किला है। किले के चारो ओर चौडी खाई है। पूना की सडक की ओर किले का दरवाजा है। किले के निकट २ गिरजे और उसके दक्षिण पूर्व फौजी छावनी है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ४५८९ मनुष्य थे।

किले से २ मील दूर फैरियाबाद में नागर बादशाहों का पुराना महल है। अहमदनगर का प्रधान दृश्य शहर से ६ मील पूर्व एक ऊंची पहाडी पर चान्द बीबी का तीन मंजिला मकबरा है। जमीन के नीचे की कोठरी में दो कबर हैं, ऊपर की पहिली मंजिल बीमार खाने के काम में आती है। उसके पूर्व कुछ उत्तर एक बड़ा तालाब है।

अहमदनगर जिला—इसके पूर्वोत्तर गोदावरीनदी, जो हैदराबाद के राज्य से इसको अलग करती है, पूर्व कुछ दूर तक हैदराबाद का राज्य, दक्षिण-पूर्व और दक्षिण-पश्चिम शोलापुर और पूना जिला और पश्चिमोत्तर तथा उत्तर नासिक जिला है। पश्चिम की सीमा के एक हिस्से के पास पूर्व ओर फैली हुई सह्याद्रि की पहाडियां हैं। जिले के पश्चिमोत्तर भाग में पहाडियों की सबसे ऊंची चोटियां हैं। जिले में हरिश्चन्द्रगढ आदि नाम के कई महाराष्ट्रों के पुराने किले हैं। जिले की प्रधान नदी गोदावरी जिले के पूर्वोत्तर और उत्तर की सीमा पर लगभग ४० मील और भीमानदी दक्षणीय सीमा पर लगभग ३८ मील बहती है। इनके अतिरिक्त बहुत सी छोटी नदियां हैं। इस जिले में कोई बड़ा वन नहीं है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय अहमदनगर जिले का क्षेत्रफल

६६६६ वर्गमील था, जिसमें ७५१२२८ मनुष्य थे; अर्थात् ६८४१८४ हिंदू, ३९५९२ मुसलमान, १५४९७ जैन, ६८७६ एनिमिष्टिक, ४८२७ कृस्तान, १७९ पारसी, ६५ यहूदी और ८ सिक्ख। जातियों के खाने में ३०४८१८ कुन्वी, ६२०९१ महारा, ३९५२७ धांगड़, ३२६३९ माली, ३२५८१ ब्राह्मण, ३००७२ बनजारा, २६७५३ कोली, १९१६५ भांग, १३५२३ चमार, ३२२९ लिंगायत, २७९४ राजपूत और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे। इस जिले में महाराष्ट्र अधिक हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय अहमदनगर जिले के कसबे अहमदनगर में ४१६८९, धोलका में १६४९४ और संगमनेर में ११३६५ मनुष्य थे। पाथरडी, श्रीगोंदा, खरदा, भेंगर और सोनाई छोटे कसबे हैं।

इतिहास—सन् १४९४ ई० में अहमद निजामशाह बहरी ने अहमदनगरको बसाया। वह विजयानगर के एक ब्राह्मण का लड़का था, जो मुसलमान होगया। वह पहिले बहमनी राज्य का एक अफसर था, जिसने बहमनी खांदान के राज्य टूट जाने पर स्वाधीन हुकूमत करने वाला बन गया और अहमदनगर को अपनी राजधानी बनाया; उसीसे निजामशाही खांदान चला। उसका राज्य बरार के बड़े भाग, औरंगाबाद के सूबे और खानदेश के कई एक जिलों में और बेंकट से बेसिन तक कोकन में फैला था; उसके बाद उसका पुत्र बुरहान निजामशाह उत्तराधिकारी हुआ, जिसको सन् १५४६ में बीजापुर के राजा इब्राहिम आदिलशाह ने परास्त किया। सन् १५५३ में बुरहान निजामशाह के मरने पर उसका पुत्र हुसेननिजामशाह अहमदनगर के तख्त पर बैठा। लोग कहते हैं कि इसीने सन् १५५९ में अहमदनगर के किले को और लगभग सन् १५६२ में अहमदनगर की मट्टी की दीवार को बनवाया। सन् १५६२ में बीजापुर के राजा ने उसको अच्छी तरह से परास्त किया और कई सौ हाथी तथा बहुतेरी तोपों को उससे छीन लिया, जिनमें की पीतल की बड़ी तोप बीजानगर में विद्यमान है। सन् १५८८ में हुसेन निजामशाह को, जो दीवाना के समान हो गया था, उसके पुत्र मीरनहुसेन निजामशाह ने मार डाला। मीरनहुसेन केवल १० मास राज्य

करने के उपरांत मार डाला गया, तब उसका भतीजा इस्माइल निजामशाह तख्त पर बैठा। उसके २ वर्ष बाद इस्माइल के पिता ने इस्माइल को तख्त से उतार कर दूसरा बुरहान निजामशाह की पदवी लेकर गद्दी पर बैठा। सन् १५९४ में दूसरा बुरहानशाह की मृत्यु होने पर उसका पुत्र इब्राहिम निजामशाह उत्तराधिकारी हुआ; किंतु केवल ४ महीने राज्य करने के पश्चात् बीजापुर के राजा की लड़ाई में वह मारा गया। उसके पश्चात् उसका बच्चा पुत्र बहादुरशाह गद्दी पर बैठाया गया और उसकी कोई रिस्तेदार चांद बीबी, जो बीजापुर के राजा अली आदिलशाह की विधवा थी, राज्य का काम चलाने लगी। सन् १५९९ में बादशाह अकबर के पुत्र ने अहमदनगर को परास्त करके शहर को ले लिया। उस समय से अहमदनगर बराय नाम के दिल्ली के आधीन था; किंतु सन् १६३७ में बादशाह शाहजहां ने इसको पूरे तौर से अपने अधिकार में कर लिया। शाहजहां के पुत्र औरंगजेब सन् १७०७ की फरवरी में अहमदनगर में मर गया और औरंगाबाद जिले के रौजा में दफ्न किया गया। सन् १७५९ में पूना के पेशवा ने अहमदनगर को ले लिया। सन् १७९७ में पेशवा ने इसको दौलतराव सिंधिया को दिया। सन् १८०३ में दो दिन लड़ाई होने के उपरान्त अंगरेजी फौज ने अहमदनगर के किले को ले लिया। किले में अबतक उस समय का दरार देख पड़ता है। कुछ दिनों के पीछे अंगरेजी सरकार ने पेशवा को अहमदनगर दे दिया; किंतु सन् १८१७ में पूना की संधि के अनुसार यह किला फिर अंगरेज महाराज को मिल गया। पीछे अहमदनगर एक जिले का सदर स्थान बनाया गया।

धोंद जंक्शन।

अहमदनगर से ५१ मील और मनमार जंक्शन से १४६ मील दक्षिण धोंद में रेलवे का जंक्शन है। स्टेशन के पास छोटा धर्मशाला है। स्टेशन से १ मील भीमा नदी के पास गाटोन नामक एक बड़ी बस्ती है, जिसमें बीठलनाथ का बड़ा मन्दिर दूरही से देख पड़ता है।

धोंद जंक्शन से 'ग्रेट इन्डियन पेनिनिसुला रेलवे' की लाइन तीन तरफ गई है, जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २½ पाई लगता है।

(१) धोंद से पूर्व दक्षिण —

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१८ डिकसल।

५७ केम।

६८ वार्सीरोड।

९७ मोहल।

११७ शोलापुर।

१२६ होतगी जंक्शन।

१८७ गुलवर्गा।

२०४ शाहाबाद।

२१० वाड़ी जक्शन।

२७७ रायपुर।

(२) धोंद से पश्चिमोत्तर—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

४८ पूना।

१३४ कल्यान जंक्शन।

१६७ बम्बई।

पूना से दक्षिण सदर्न मरहटा रेलवे पर ७७ मील सितारारोड, ८३ मील कोरेगांव, १३० मील कोल्हापुर, २४९ मील बेलगांव और २७८ मील लोंडा जंक्शन।

लोंडा जक्शन से पूर्व कुछ दक्षिण ४३ मील धारवाड़, ५६ मील हुबली जंक्शन और ९२ मील गदग जंक्शन।

(३) धोंद से उत्तर—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

५१ अहमदनगर।

१४६ मनमार जंक्शन।

पंढरपुर।

धोंद जंक्शन से दक्षिण-पूर्व १८ मील डिकसल का स्टेशन, २० मील भीमा नदी पर रेल का पुल और ६८ मील वार्सीरोड नामक रेलवे का स्टेशन है। स्टेशन से ३० मील दक्षिण (१७ अंश, ४० कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अन्श, २२ कला, ५० विकला पूर्व देशांतर में) बंबई हाते के दक्षिणी विभाग के शोलापुर जिले में भीमानदी के दक्षिण अर्थात् उसके दहिने किनारे पर पंढरपुर सबडिवीजन का प्रधान कसबा और बंबई हाते के यात्रा के प्रधान स्थानों में से एक पंढरपुर है। वार्सीरोड के स्टेशन से

पंढरपुर तक पक्की सड़क बनी है। उस सड़क से घोड़े की डाकगाड़ी, बहुतेरे तांगे और बैलगाड़ियां पंढरपुर जाती हैं। बार्सीरोड के स्टेशन से २९ मील दक्षिण-पूर्व मोहल का रेलवे स्टेशन है; जहां से २४ मील दक्षिण-पश्चिम पंढरपुर तक कची सड़क गई है। मोहल से २० मील दक्षिण पूर्व शोलापुर का रेलवे स्टेशन है, जिससे ३८ मील पश्चिम पंढरपुर को एक सड़क गई है। २० मील तक घोड़े गाड़ी की डांक चलती है, उससे आगे बैलगाड़ी की सड़क है। भीमानदी के उत्तर किनारे से पंढरपुर कसबे का सुन्दर दृश्य दृष्टि गोचर होता है। यात्रीगण नौकाओं द्वारा नदी पार हो कर पंढरपुर पहुंचते हैं। भीमा नदी, जिसको भीमरथी भी कहते हैं, बंबई हाते और हैदराबाद के राज्य में दक्षिण-पूर्व को बहती हुई अपने निकास स्थान से लगभग ५०० मील बहने के पश्चात् कृष्णा के रेलवे स्टेशन से दक्षिण कृष्णा नदी में जा मिली है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पंढरपुर कसबे में १९९९४ मनुष्य थे; अर्थात् १८३१६ हिंदू, १०२६ मुसलमान, ६११ जैन और १ कृस्तान।

पंढरपुर कसबे का एक भाग, जिसमें विट्ठलनाथजी का मंदिर है, पांढरीक-क्षेत्र करके प्रसिद्ध है। विट्ठलनाथ को लोग विठोबा भी कहते हैं। वर्तमान मंदिर सन् ८० ई० का बना हुआ है, इसकी लंबाई पूर्व से पश्चिम तक ३५० फीट और चौड़ाई उत्तरसे दक्षिण तक १७० फीट है। प्रधान मंदिर ४० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा है। बाएं चांदी के पत्तर से मढ़ा हुआ एक स्तंभ है, जिसको यात्रीगण अंकमाल करते हैं। ८ फीट लंबी और इतनीही चौड़ी कोठरी में पांडुवर्ण विट्ठलनाथ पूर्व मुख से विराजते हैं। यात्रीगण भीमा नदी में स्नान करके विट्ठलनाथ का दर्शन करते हैं। वहां चन्द्रभागा तीर्थ, सोम तीर्थ आदि अनेक पवित्र स्थान हैं। बहुतेरे देवमंदिर और पत्थर के ११ घाट बने हैं। बहुतेरे दो मंजिले तीन मंजिले मकान देखने में आते हैं। विष्णुपद और नारद की रेती पर अनेक मंदिर बने हुये हैं। एक अस्पताल है। राम बाग में लक्ष्मीनारायण और कोदंडराम स्वामी का मंदिर है।

पंढरपुर में नित्य यात्री जाते हैं। प्रतिवर्ष यहां तीन मेले होते हैं।

आषाढ़ के मेले में १००००० से १५०००० तक; कार्तिक के मेले में ४०००० से ५०००० तक और चैतवाले मेले में २००00 से ३०००० तक यात्री जाते हैं और प्रत्येक महीने के शुक्लपक्ष की एकादशी के दिन ५००० से १०००० तक यात्री पंढरपुर में एकत्र होते हैं । मेलों के समय प्रत्येक यात्री से चार आना (टिकट) लिया जाता है । सन् १८८२ ई० में म्युनिस्पल्टी को तीनों मेलों से ४० हजार रुपये से अधिक आमदनी हुई थी । पंढरपुर में थोड़ी तिजारत होती है । वहां से चावल, मकई, नस, दाल, छड़ी इत्यादि वस्तुएं दूसरे स्थानों म जाती हैं।

विठ्ठलनाथ विष्णु के अवतार समझे जाते हैं। कथा ऐसी है कि पंडलीक नामक एक ब्राह्मण अपने पिता माता को छोड़ कर काशी जाता था। वह पंढरपुर में एक ब्राह्मण के घर में ठहर गया । पंढरपुर का ब्राह्मण अपने पिता माता का भक्त था, इस लिये गंगा, यमुना और सरस्वती उसके घर कौड़ी का काम करती थीं । यह देख कर ब्राह्मणयात्री अपनी यात्रा को छोड़ कर अपने पिता माता की सेवा करने लगा।

एक दिन श्री कृष्ण भगवान अपनी स्त्री रुक्मिणी को खोजते हुए, जो घर से रुष्ट होकर वहां आई थीं, पंढरपुर में आए । भगवान ने देखा कि पंडलीक ब्राह्मण अपने माता पिता का चरण धो रहा है और मेरे आने पर भी चरण धोने के काम से निवृत्त नहीं होता है; तब उन्होने उसकी ऐसी पिता माता में दृढ़ भक्ति देख कर प्रसन्न हो उससे कहा कि हे विप्र ! तुम इच्छित वर मांगो । पंडलीक ने कहा कि तुम जैसे हो उसी प्रकार सर्वदा स्थित रहो। उसने एक पाषाण दिया, जिस पर कृष्ण भगवान स्थित हुए, जो विठ्ठल और विठोबा नाम से विख्यात होगए।

ऐसा प्रसिद्ध है कि विष्णुस्वामी संप्रदाय के नामदेवजी का जन्म पंढरपुर में हुआ था। एक वामदेव नामक जाति का छीपी पंढरपुर में रहता था, उसकी पुत्री बाल विधवा होगई, तब वामदेव ने उससे कहा कि तुम भगवान की सेवा करो, वह सब मनोरथ पूरा करते हैं। पुत्री पिता के वचन का विश्वास कर बड़ी निष्ठा भक्ति से भगवान की पूजा करने लगी। जब वह युवा हुई,

तब उसको पुत्र की कामना हुई। भगवान के प्रभाव से उसके गर्भ रहगया, जिससे नामदेव का जन्म हुआ। बालपनहीं से नामदेवजी की भगवान में प्रीति हुई। वह अपने नाना वामदेव को भगवान की मूर्ति का पूजन करता हुआ देखकर उनसे कहता था कि मुझको भगवान की पूजा करने दो। एक दिन वामदेव, नामदेव को भगवान की पूजा का काम सौंप कर किसी गांव में चला गया। नामदेव संध्या के समय कटोरे में दूध और मिश्री भगवान के आगे लेगया और हाथ जोड़ कर बोला कि हे महाराज! यह दूध है आप पान कीजिए। वह जानता था कि जैसे लड़के दूध पिया करते हैं वैसेही भगवान भी पीते हैं। जब भगवान ने दूध नहीं पिया, तब लड़का नामदेव निरास होकर रोते रोते बिना भोजन किए हुए पड़ा रहा। तीसरे दिन उसने सोचा कि आज हमारे नाना आवेंगे, हमको पूजा करने की रीति नहीं आती है, इससे वह हमको पूजा के काम से अलग कर देंगे। ऐसा विचार फिर दूध लेजाकर वह भगवान से पीने को कहने लगा, जब उस दिन भी भगवान ने दूध नहीं पिया, तब नामदेव छूरी निकाल कर अपना गला काटने लगा। भगवान ने उसका दृढ़ विश्वास देखकर एक हाथ से उसका हाथ पकड़लिया और दूसरे हाथ से कटोरे का दूध पीलिया। जब कटोरे में थोड़ा दूध रहा, तब नामदेव ने कहा कि मैं ३ दिन का भूखा हूँ कुछ भी तो छोड़ो, तब भगवान ने हंस कर उसको प्रसाद दिया।

पंढरपुर में रांकाजी, जो जंगल से लकड़ी लाकर बेंचता था, परमभक्त हुआ था। उसकी बांका नामक स्त्री उससे भी अधिक भगवतभक्त थी। एक दिन भगवान ने नामदेवजी के साथ वन में जाकर, जिस मार्ग से रांका और बांका लकड़ी को जाती थे, उसमें मुहर की थैली डालदी, परंतु दोनों में से किसी ने मुहर को नहीं लिया। तब भगवान और नामदेवजी ने लकड़ी बटोर कर इकट्ठा करदी। रांका और बांका ने दूसरे की बटोरी हुई जान कर लकड़ी नहीं उठाई। वे लोग खाली हाथ घर चले आए और कहने लगे कि मुहर देखने के अशकुन से आज लकड़ी नहीं मिली, जो हम लोग मुहरों को उठाते तो, न जाने क्या होता। जब भगवान ने बटोरी हुई लकड़ी रांकाजी के

पर पहुंचा दिया, तब उन्होंने भगवत का भेजा हुआ प्रसाद जानकर अंगीकार किया। उसके पीछे भगवान ने उन भक्तों को दर्शन देकर कृतार्थ किया।

बार्सी।

बार्सी रोड के रेलवे स्टेशन से लगभग २१ मील पूर्व शोलापुर के जिले में (१८ अंश, १३ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ४४ कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) सबडिवीजन का प्रधान कसबा बार्सी है *।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बार्सी में २०५६९ मनुष्य थे; अर्थात् १७७७० हिंदू, २२५१ मुसलमान, ५०० जैन, ३० कृस्तान और १८ पारसी।

बार्सी में बड़ी तिजारत होती है। रूई, तीसी और तेल खास करके यहां से बंबई में भेजे जाते हैं। यहां सदराला की कचहरी, पुलिस स्टेशन अस्पताल और पोष्टआफिस है।

शोलापुर।

बार्सी रोड के रेलवे स्टेशन से ४९ मील (धोंद जंक्शन से ११७ मील) दक्षिण-पूर्व (१७ अंश, ४० कला, १८ विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ५६ कला, १८ विकला पूर्व देशांतर में) सोलापुर का रेलवे स्टेशन है। बंबई हाते के दक्षिणीय विभाग में महाराष्ट्र देश के अन्तर्गत जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा शोलापुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय शोलापुर कसबे में ६१९१५ मनुष्य थे, अर्थात् ३१७३४ पुरुष और ३०१८१ स्त्रियां। इनमें ४५३५६ हिंदू, १४५६२ मुसलमान, १०५१ जैन, ७७६ कृस्तान, १६८ पारसी और २ यहूदी थे, मनुष्य संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ५७ वां और बंबई हाते के अंगरेजी राज्य में ७ वां शहर है।

रेलवे स्टेशन के समीप एक छोटी धर्मशाला और स्टेशन से १ मील दूर

* बार्सीरोड से बार्सी कसबे तक २२ मील की रेलवे शाखा बनगई है।

शहर का फाटक है। शोलापुर शहर पहिले २१ मील लंबी दीवार से घेरा हुआ था। यहां की म्युनिसिपल्टी ने लगभग सन् १८७२ में पूर्व की संपूर्ण दीवार और दक्षिण-पश्चिम तथा उत्तर की दीवारों के भाग को गिरवा दिया, बाकी दीवार की ऊंचाई ८ फीट से १० फीट तक और चौड़ाई ४ फीट से ६ फीट तक है।

समुद्र के जल से १८०० फीट ऊपर एक बड़े मैदान में शोलापुर कसबा है। कसबे के अधिक मकान मट्टी के हैं। पत्थर और ईंटों के मकान मुडेरादार हैं। सन् १८७९ और १८८१ के बीच में जल कल बनी। जलकल द्वारा पानी कसबे में सर्वत्र पहुंचाया जाता है। कसबे में कई देवमन्दिर, एक हाईस्कूल एक लड़कियों का स्कूल है।

कसबे से दक्षिण झील के मध्य में सिद्धेश्वर का मंदिर है, उसके दक्षिण-पूर्व के किनारे पर म्युनिस्पल बाग लगा है, उससे लगभग १ हजार गज दक्षिण-पूर्व कलक्टर साहब का आफिस और बंगला है, जिससे दक्षिण-पश्चिम पुरानी छावनी के अफसरों के बंगले फैले हैं, जिनसे पश्चिम दो गिरजे हैं। पुरानी छावनी का बड़ा भाग अब सिविल स्टेशन के काम में आता है। सदर बाजार से लगभग १ मील दक्षिण-पूर्व देशी पैदल फौज की लाइन है, जिससे दक्षिण, अफसरों के बंगले बने हुए हैं।

शोलापुर तिजारत में मशहूर हुआ है। इसमें रेशम और कपड़े की दस्तकारी के काम में ९ हजार से अधिक आदमी लगे हैं। इनको कातने और बिनने के लिये एक धुंए की मिल नियत हुई है, उस कारखाने में कई सौ आदमी काम करते हैं।

रेलवे स्टेशन से १ मील से अधिक उत्तर कसबे के दक्षिण-पश्चिम की दीवार के निकट २३० गज लंबा और १७८ गज चौड़ा शोलापुर का पुराना किला है, जिसकी दीवारों में जगह जगह २३ टावर बने हुए हैं। किले के पूर्व-बगल में सिद्धेश्वर की झील और ३ बगलों में १०० फीट से १६० फीट तक चौड़ी और १९ फीट से ३० फीट तक गहरी खाई है। किले की दीवारों

में गोले और गोलियां छोड़ने के लिये बहुतेरे सुराख बने हैं । किले के पहिले फाटक के पास सन् १८१० का शिला लेख पारसी अक्षर में है ।

कसबे से लगभग ३ मील उत्तर, ६ मील लंबी एक झील है; जिसको म्युनिसिपल्टी ने सन् १८८१ में २ लाख २५ हजार रुपये के खर्च से बनवाया। यह झील बांध बना करके बनाई गई है, इसका बांध १½ मील लंबा है। इससे ३ नहरें निकाल कर आसपास के देश के खेत पटाए जाते हैं। झील के पानी की सबसे अधिक गहराई २० गज है, इससे जलकल द्वारा सम्पूर्ण कसबे में पानी जाता है।

शोलापुर कसबे से ३८ मील पश्चिम प्रसिद्ध तीर्थस्थान पंढरपुर है। २० मील तक घोड़े गाड़ी की डांक जाती है, उससे आगे बैलगाड़ी की कच्ची सड़क है।

शोलापुर जिला—इसके उत्तर अहमदनगर जिला; पूर्व हैदराबाद का राज्य और एक छोटा देशी राज्य; दक्षिण बीजापुर जिला और कई छोटे देशी राज्य और पश्चिम सितारा, पूना और अहमदनगर जिला और कई छोटे देशी राज्य हैं । शोलापुर जिले के कई एक गांव जिले की सीमा से बाहर हैं । जिले में नीची पहाड़ियां और नीची ऊंची भूमि बहुत हैं। सन् १८८१ में ३४१३ वर्ग मील भूमि जोती गई थी । जिले की प्रधान नदी भीमा है। इसके अलावे अनेक छोटी नदियां जिले में बहती हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय शोलापुर जिले का क्षेत्रफल ४५२१ वर्गमील था और इसमें ५८२४८७ मनुष्य थे; अर्थात् ५३०१२१ हिंदू, ४३९६७ मुसलमान, ७५१४ जैन, ६२५ कृस्तान, १५७ पारसी, ९४ यहूदी, ८ सिक्ख और १ बौद्ध । हिंदुओं में १७८९०८ कुन्बी, ५७७०५ धांगर, ४४००१ महारा, २७०५९ ब्राह्मण, २३८९८ माली, २१५०९ लिंगायत, १९२३३ मांग, ११३८१ चमार, २९३८ राजपूत और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे। इस जिले में महाराष्ट्र लोग बहुत हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय शोलापुर जिले के कसबे शोलापुर में ६१९१५, वार्सी में २०६६९ और पंढरपुर में १९९९४ मनुष्य थे। इस जिले में करकंब, करमाला और संगोला बड़ी बस्ती हैं।

इतिहास—सायद सन् ई० के ९० वर्ष पहिले से ३०० वर्ष तक शोलापुर जिला पैठन के शातकर्णियां अंध्रभृत्य वश के राज्य का एक भाग था। पड़ोस के जिले बीजापुर, अहमदनगर और पूना के समान शोलापुर जिला भी सन् ५५० से ७६० ई० तक चालुक्यों के, सन् ९७३ तक राष्ट्रकूटों के, सन् ११८४ तक पश्चिमी चालुक्यो के और लगभग १३०० ई० तक देवगिरि के यादवो के अधिकार में था। सन् १३१८ में दिल्ली का गवर्नर देवगिरि में रह कर महाराष्ट्र देश में हुकूमत करने लगा। सन् १३३८ में महम्मद तुगलक ने देवगिरि का नाम दौलताबाद रक्खा। सन् १३४६ में दिल्ली के बादशाह के अफसरो ने लूट पाट करके उस देश को बरबाद किया, तब दक्षिण के सरदारो ने एक अफगान सिपाही हसन को अगहर बना कर दिल्ली वालों को परास्त करके डेकान अर्थात् दक्षिण को स्वाधीन बनाया। तभीसे बहमनी खांदान का राज्य नियत हुआ। हसन ने अपने रक्षक एक ब्राह्मण के स्मरणार्थ जो मुसलमान हो गया था, उस खांदान का नाम बहमनी रक्खा और शोलापुर में किला बनवाया, जो अब तक विद्यमान है, किंतु किले के भीतरी की दीवार १६ वीं और १७ वीं शदी की बनी हुई है। सन् १४८९ में बीजापुर के गवर्नर ने बहमनी वश के राजा को परास्त करके शोलापुर को अपने आधीन कर लिया; तबसे लगभग २०० वर्ष तक शोलापुर कभी बीजापुर के और कभी अहमदनगर के अधिकार में चला आया। सन् १६८६ में दिल्ली के बादशाह औरंगजेब ने बीजापुर के राजा को परास्त करके शोलापुर को ले लिया। अठारहवीं शदी में मुगलो के राज्य की घटती के समय महाराष्ट्रो ने शोलापुर को अपने आधीन कर लिया। सन् १८१८ में अंगरेज महाराज ने बंबई हाते के दूसरे जिलो के साथ पेशवा से शोलापुर ले लिया। प्रथम यह पूना जिले के साथ था, किंतु सन् १८३८ में एक अलग जिला बनाया गया।

होतगी जंक्शन।

शोलापुर से ९ मील और धोंद जंक्शन से १२६ मील दक्षिण-पूर्व होतगी जंक्शन है। होतगी सन् १३४७ से १४४२ तक डेकान की राजधानी थी। होतगी से रेलवे लाइन तीन तरफ गई है।

(१) होतगी से दक्षिण-पूर्व रायचुर तक 'ग्रेट इन्डियन पेनिनसुला' रेलवे और रायचुर से दक्षिण-पूर्व मदरास रेलवे है।

मील प्रसिद्ध स्टेशन।
६१ गुलबर्गा।
८४ वाडी जंक्शन।
१३९ कृष्णा।
१४५ रायचुर छावनी।
१५१ रायचुर कसबा।
१६८ तुंगभद्रा नदी।
१९४ अदोनी।
२२६ गुंटकल जंक्शन।
२४४ गूटी।
३४० कड़ापा।
४१८ रेनिगुंटा जंक्शन।
४५१ आरकोनम् जंक्शन।
४७६ तिवल्लोर।
५०२ मंदरास।

वाडी जंक्शन से निजाम स्टेट रेलवे पर पूर्व ११५ मील हैदराबाद, १२१ मील सिकंदराबाद, २०८ वारंगल और वारंगल से दक्षिण-पूर्व १२६ मील वेजवाड़ा है।

गुन्टकल जंक्शन से दक्षिण ६३ मील धरमवरम् जंक्शन और १७४ मील बगलोर शहर है। (वहां से ९ लाइन निकली हैं; गुंटकल में देखो)

(२) पश्चिमोत्तर ग्रेट इन्डियन पेनिनसुला रेलवे;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
९ शोलापुर।
२९ मोहल।
५८ वार्सी रोड।
१२६ धोंद जंक्शन।

(३) होतगी से दक्षिण सदर्न मरहटा रेलवे, जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २१ पाई है;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
५८ बीजापुर।

१३१ बादामी।

१७३ गदग जंक्शन।

गदग से पूर्व कुछ दक्षिण ११ मील हरपालपुर, ८२ मील हुसपेट, ६८ मील गादिगनूर, ९१ मील पलारी छावनी और ९३ मील पलारी शहर और १२३ मील गुंटकल जंक्शन।

गदग से पश्चिम ३६ मील हुबली जंक्शन, ४८ मील धारवाड, ९२ मील लोंडा जंक्शन, १०७ मील कैसलरक और १५८ मील पोर्चुगीजों के राज्य में गोवा के पास मरमागोवा बंदरगाह।

लोंडा जंक्शन से उत्तर ३३ मील बेलगांव, ६९ मील गोकाकरोड, ११८ मील मिराज जंक्शन, २०० मील सितारारोड, २०९ मील बाथर और २७८ मील पूना जंक्शन।

गुलबर्गा।

होतगी जंक्शन से कई मील आगे जाने पर हैदराबाद का राज्य मिलता है। होतगी से ६१ मील दक्षिण पूर्व गुलबर्गा का रेलवे स्टेशन है। हैदराबाद के राज्य में जिले का सदर स्थान गुलबर्गा एक पुराना कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय गुलबर्गा में २८३०० मनुष्य थे, अर्थात् १४७४७ पुरुष और १३५५३ स्त्रियां। इनमें १५२११ हिन्दू, १२६६८ मुसल्मान, १७५ कृस्तान, २४१ जैन और ५ पारसी थे। मनुष्य संख्या के अनुसार यह निजाम के राज्य में तीसरा शहर है।

निजाम सरकार के बहुतेरे आफिस और अफसरों के लिये इमारतें रेलवे स्टेशन से कसबे तक फैली हुई हैं। पुराना किला पीछे की जमीन पर है, जिसमें जगह जगह बहुतेरे गुम्बज देख पड़ते हैं। एक खूबसूरत फाटक से कमरे में प्रवेश करना होता है, जिसमें सब दिशाओं में नई इमारतें देख पड़ती हैं। और ३७० फीट लम्बा और ६० फीट चौड़ा एक बाजार है, जिसमें ६१ महराबियों का एक कचार है। गुलबर्गा का जेलखाना बहुत सुन्दर है।

किले की बहुतेरी पुरानी इमारतें बाहर की दीवारें और अनेक फाटक अति हीन दशा में हैं। गढ़ या बालाहिसार को कम नुकशानी पहुँची है। इसके सिरे पर २० जोड़े लोहे की कड़ियां लगी हुई २६ फीट लम्बी एक पुरानी तोप पड़ी है। पुराने किले में फिरोजशाह के राज्य के समय की बनी, हुई २१६ फीट लम्बी और १७६ फीट चौड़ी जुमामसजिद है। इसमें पश्चिम के अतिरिक्त तीन तरफ मेहराबियां बनी हुई हैं। मसजिद की सम्पूर्ण जगह एकही छत के नीचे है। इतनी बड़ी मसजिद हिन्दुस्तान में दूसरी नहीं है। यह हिन्दुस्तान में पठानों के सबसे उत्तम पुरानी मसजिदों में से एक है।

शहर के पूर्व के महल्ले में पुराने मकबरे हैं। वहां बड़े बड़े मोरब्बे गुम्बजदार मकबरों में १४ वीं सदी के अखीर में राज्य करने वाले मुसलमान गाड़े गये हैं। उसी जगहों में तालुकदार की कचहरी, गुलबर्गा का खजाना और अनेक जुडिसियल आफिस हैं।

इनसे थोड़े फासिले पर सन् १६४० की बनी हुई चीस्ती खान्दान के प्रसिद्ध मुसलमान फकीर बन्दानेवाज की, जो सन् १४१३ में गुलबर्गा में आया था, दरगाह है। इस स्थान को इस प्रदेश के मुसलमान बहुत आदर करते हैं। सच्चे इतकाद करने वालों के सिवा कोई आदमी दरगाह के भीतर नहीं जाने पाता है। इसके पास औरंगजेब की बनवाई हुई सराय, मसजिद और मदरसा है। इसके सिवा गुलबर्गा में रुकनुद्दीन और शिराजुद्दीन का दरगाह और चोर गुम्बज नामक मकबरा है।

इतिहास—बहमनी खांदान के मुसलमान बादशाहों ने जिस (खांदान) का राज्य सन् १३४७ ई० में आरंभ हुआ था, प्रथम गुलबर्गा में रह कर राज्य कियाथा। पीछे उनकी राजधानी बीदर हुआ। उस खांदान के अंतिम बादशाह को सन् १५१२ में कुतबशाही खांदान के बादशाह ने बीदर को तख्त से उतार दिया। सन् १६३५ तक गुलबर्गा डेकान के गवर्नमेंट का सदर स्थान था; उसके बाद बीदर सदर मुकाम हुआ।

पांचवां अध्याय।

(हैदराबाद के राज्य में) वाडो जंक्शन, हैदरा-वाद, वोदर, नांदेड़ और वारंगल।

वाडीजंक्शन।

गुलबर्गा से २३ मील (होतगी जङ्क्शन से ८४ मील) दक्षिण पूर्व हैदराबाद के राज्य में 'ग्रेट इंडियन पेनिनसूला और निजाम स्टेट रेलवे' का जंक्शन वाडी में है। उससे पूर्व निजाम स्टेट रेलवे पर ११५ मील हैदराबाद, १२१ मील सिकंदराबाद और २०८ मील वारंगल और वारंगल से दक्षिण पूर्व १२६ मील वेजवाडा है।

रायचुर, अदोनी, गुटकल जङ्क्शन, गूटी, कडापा, रेनीगुन्टा जंक्शन, आरकोनम् जङ्क्शन मद्रास शहर, तथा वालाजी, कान्ची, चिदम्बरम्, कुम्भकोनम्, तंजौर, श्रीरंगजी, मदुरा, रामेश्वर, तुती कोरिन इत्यादि स्थानों में जाने वालों को वाडी जंक्शन से दक्षिण पूर्व की ग्रेट इंडियन और मद्रास रेलवे से जाना चाहिए। मैं, वाडी से पूर्व हैदराबाद की ओर चला।

हैदराबाद।

वाडी जंक्शन से ११५ मील पूर्व कुछ उत्तर हैदराबाद का रेलवे स्टेशन है। हैदराबाद के राज्य के तैलङ्गदेश में (१७ अंश, २१ कला, ४८ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ३० कला, १० विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र के जल से लगभग १७०० फीट ऊपर मूसी नदी के दक्षिण किनारे पर हैदराबाद के राज्य की राजधानी और उस राज्य का प्रधान शहर हैदराबाद है। एक अच्छी सडक हैदराबाद शहर से दक्षिण कुछ पूर्व मद्रास शहर को गई है, जिसमें कटक से आने वाली समुद्र के पास की सडक आकर मिली है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय हैदराबाद शहर और उसकी छावनी में ४१५०३९ मनुष्य थे; अर्थात् २१६३२४ पुरुष और १९८७१९ स्त्रियां। इनमें २२६८४० हिंदू, १७२८६१ मुसलमान, १३८२९ कृस्तान, ६६९ सिक्ख, ६१६ पारसी, २०३ जैन और २१ यहूदी थे। इनमें से शहरतलियों को छोड़ कर खास शहरमें ३१२३९० मनुष्य थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में चौथा शहर है।

शहर का क्षेत्रफल २ वर्गमील है; इसके चारो ओर ६ मील लंबी दीवार बनी हुई है। शहर के चारो ओर जंगल और पहाड़ियों का मनोहर दृश्य देखने में आता है। पश्चिमोत्तर की दीवार में पूर्व चादरफाटक; उससे पश्चिम क्रम से दिल्लीफाटक, चंपाफाटक, चारमहलफाटक और पुरानापुलफाटक, पश्चिम-दक्षिण की दीवार में दुधनीफाटक, फतहफाटक, और अलीआबादफाटक; दक्षिण की दीवार में गौलीपुरफाटक और गाजीवंदफाटक और पूर्व की दीवार में मीरजुमलाफाटक, याकूबपुरफाटक और दाऊदपुरफाटक हैं। शहर के पास मूसीनदी की चौड़ाई लगभग ४०० गज से ५०० गजतक है।

हैदराबाद में निजाम का महल, अंगरेजी रेजीडेंसी और अनेक मसजिदें शहर की प्रधान इमारतें हैं।

रेलवे स्टेशन से उत्तर एक उत्तम पबलिक बाग में २ सायवान और एक जंतुशाला है। बाग के उत्तरीय भाग में 'नौबत पहाड़' नामक एक काला चट्टान है। बाग के पास निजाम की सैफाबाद की फौजी छावनी है। शहर के पड़ोस में बहुतेरे उत्तम बागों में बंगले और मकान बने हुए हैं। निजाम के मंत्री का बाग ऊंची दीवारों से घेरा हुआ बहुत मनोहर है; इसके मध्य में मार्बुल के तख्तों से बना हुआ एक हौज है। सीतारामबाग में वरदराज, सीताराम और श्रीरामानुजस्वामी का मंदिर है। इसके अलावे हैदराबाद में बहुतेरे हिंदू मंदिर बने हैं। शहरसे पूर्व घोड़दौड़ का मैदान है, जिसमें प्रति वर्ष अकतूबर में ५ दिनों तक घोड़दौड़ होता है।

हैदराबाद शहर में अति उत्तम इमारत बहुत नहीं हैं; किन्तु बाजार बहुत मनोरम है। उसमें भारतवर्ष के प्रत्येक विभागों के लोगों की भीड़ रहती है

और अरब, योखारा, पारस इत्यादि दूसरे देशों के मुसलमान और अन्य मत के लोग भी बहुत देखने में आते हैं। शहर में कालीन, घोड़े के साज के लिये मखमल, सूत मिले हुए रेशम के असबाब और लाल मट्टी के बर्तन बहुत तैयार होते हैं। शहर के कई मील दक्षिण के बड़े तालाव से शहर में पानी आता है। शहर की प्रधान सड़कों पर रात में लालटेनों की रोशनी होती है। हैदराबाद-सरकार की ओर से एक टकशाल और करेंसीनोट जारी है। शहर से ७ मील पश्चिम गोलकुंडा का पुराना किला है।

मूसीनदी पर पश्चिमोत्तर तीन पुल हैं;—सबसे पूर्व सन् १८३१ का बना हुआ ओलिफंट पुल; उससे पश्चिम अफजल पुल और उसके बाद पुराना पुल। अफजल पुल लांघ करके रेजीडेंसी स्कूल और सीटी अस्पताल के पास जाना होता है। उस अस्पताल से लगी हुई ४ ऊंचे मीनारों के साथ अफजल मसजिद और सड़क के दूसरी तरफ औरतों का अस्पताल है। एक चौड़ी सड़क, पुल लांघ कर अफजल फाटक से शहर होकर गई है। चन्द सौ गज दूर उसके पास मृत सर सालारजंग बहादुर जी० सी० एस० आई का, जो राज्य के इन्तजाम में बड़ा नामवर था, बारहदरी नामक महल है। वहां एक कमरे में पहले के रेजीडेंट लोगों और दूसरे प्रसिद्ध आदमियों की तस्वीरें टगी हैं। इसके आगे फौआरों के साथ पानी का एक हौज है। सीलीखाने में भांति भांति के पुराने हथियार और बख्तरो के अजीव नमूने देखने में आते हैं।

अफजल पुल से करीब ½ मील पूर्व शहर के प्रायः मध्य में, जहां शहर की ४ प्रधान सड़कें मिलती हैं, १०० फीट लंबी और इतनीही चौड़ी और १८६ फीट ऊंची सन् १५९१ की बनी हुई चार मीनार नामक इमारत है; जिसमें ४ मीनार बने हैं। उसके ऊपर के कई एक मंजिलों में कमरे हैं।

चारमीनार के थोड़ा पूर्व शहर की मसजिदों में प्रधान जामामसजिद है, जिसको मक्का मसजिद भी लोग कहते हैं। यह मक्का की मसजिद के ढांचे की बनी हुई है। इसका विस्तार ३६० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा है। भीतर एकही पत्थर के बहुत ऊंचे ऊंचे खंभे लगे हैं। जमीन, पत्थर के तख्तों से पाटी हुई है। ऊपर ४ ऊंचे मीनार हैं। आंगन के एक बगल पर खास

मसजिद है। मुसलमानी तिहवारों के समय आठ दस हजार मुसलमान एबादत के लिये वहां एकत्र होते हैं।

निजाम का महल—यह चारमीनार के पश्चिम बगल पर है। महल बहुत सुन्दर नहीं है परंतु इसका विस्तार बहुत बड़ा है। चौंक से निजाम के महल को जाने पर एक फाटक से बड़े चौगान में जाना होता है, जिसके दक्षिण-पश्चिम कोने के पास एक गली है, जो एक दूसरे चौगान को गई है, जिसमें करीब २००० सवार, नौकर, इत्यादि रहते हैं। उसके दक्षिण-पश्चिम के कोने से एक रास्ता तीसरे चौगान (चौंक) को गया है, जहां साधारण तरह से एक या दो हजार नौकर देखने में आते हैं। महल की इमारतें हर बगल में तेहरान के शाह के महलके मानिन्द खुबसूरत हैं। कहा जाता है कि महल की इमारतों में ७००० आदमी रहते हैं।

मुहर्रम के समय लंगर के उत्सव में निजाम की ३०००० फौज जलसा में निकलती है। कहाजाता है कि हैदराबाद के बसाने वाले बादशाह कुतुबशाह महम्मद कुली के स्मरणार्थ यह उत्सव होता है। महल से २०० गज दूर बगल की सड़क के पास वह मकान है, जिसमें प्रसिद्ध मिनिष्टर चन्दूलाल मरे थे। यह नीचा लेकिन बहुत उमदा मकान है।

चौक और शहर के पश्चिम की दीवार के बाद समसुल उमरा का बनवाया हुआ बारहदरी नामक बड़ा महल है। इसके सिर पर चढ़ने से शहर का उत्तम दृश्य देखने में आता है। वहांसे पश्चिम ओर गोलकुन्डा का किला और उसके पास बादशाहों के मकबरे और दक्षिण ओर जहान्नुमा का महल और अमीर कबीर की बनवाई हुई एक मसजिद देख पड़ती है।

अलीआबाद फाटक के बाहर एक बहुत लम्बा बाजार है, जिसमें साफ मकान बने हुए हैं। उसके बाद एक आंगन है, जिसमें हजारहा फौजी पैदल और सवार रहते हैं। उसके अखीर के पास कालीन बिछा हुआ सीढ़ीघर है, जिसकी सीढ़ियां मेहमानों के रहने वाले कमरे में गई हैं। महल, साज और सामानों से भरा हुआ है।

मीर आलम तालाब—शहर के दक्षिण की दीवार से २ मील दूर ७ मील के घेरे में मीर आलम तालाब है। ११२० गज लंबी २१ मेहराबियों से तालाब की पुस्ता बन्दी है, जो फ्रेंच इनजिनियर द्वारा बनाई गई थी। उसके बनाने में ८०००० पाउन्ड अर्थात् ८ लाख रुपया खरच पड़ा। उस तालाब में कई आगबोट रहते हैं। तालाब से ३०० गज दूर एक बंगला और उसके अखीर पश्चिम ८० फीट ऊंची एक पहाड़ी है, जिसके सिरे पर अच्छी बनावट का मदब्बत अली का दरगाह है।

रेजीडेंसी—शहर से लगभग १ मील पश्चिमोत्तर चादरघाट नामक शहरतली में अङ्गरेजी रेजीडेंसी है, जिसके चारो ओर १२००० वासिन्दो का बाजार है। रेजीडेंसी के चारो ओर पक्की दीवार है, जो सन् १८०३—१८०८ में बनी और सन् १८५७ के आक्रमण के पीछे मजबूत की गई। रेजीडेंसी और निजाम के महल के बीच में ८ मेहराबियों का पत्थर का सुन्दर पुल बना है। रेजीडेंसी के उत्तर का अगवास, नदी से और शहर से घेरा पड़ता है। रेजीडेंसी में दो फाटक हैं। सीढ़ी घर की प्रत्येक सीढ़ियां एकही ग्रेनाइट पत्थर की बनी हुई हैं। रेजीडेंसी के पास रेजीडेंस का एक खानगी मकान है।

सिकन्दराबाद—हैदराबाद शहर से ६ मील उत्तर कुछ पूर्व सिकन्दराबाद का रेलवे स्टेशन है। सिकन्दराबाद हिन्दुस्तान में बहुत बड़ी अङ्गरेजी फौजी छावनी है। यह १९ वर्गमील क्षेत्रफल में फैली हुई है। एक सड़क हैदराबाद से सिकन्दराबाद को गई है, जिसके किनारों पर बहुतेरे देशी धनी और निजाम की कचहरी के अफसरों के बहुतेरे बिले (दिहाती बंगले) बने हैं। सड़क के पश्चिम हुसेन सागर तालाब है। सिकन्दराबाद में बहुत बड़ी परेड की जमीन है। उसके उत्तर बगल पर बहुतेरे अफसरों के मकान, खुबसूरत रेलवे स्टेशन और एक बड़ा गिरजा है। परेड ग्राउंड के दक्षिण बगल पर कबरगाह और परेड की जमीन के पास मट्टी का एक किला है।

लिमलगिरि—सिकन्दराबाद के ३ मील पूर्वोत्तर लिमलगिरि के पास ७ फीट ऊंची दीवार और ७ फीट गहरी खाई से घेरा हुआ एक लस्करगाह है, जिसके कई बुर्जों पर तोप चढ़ाई हुई हैं।

बुलारम—सिकन्दराबाद से ६ मील और हैदराबाद शहर से ११ मील उत्तर ओर हैदराबाद कंटिनजेंट फौज की छावनी बुलारम है। वहां निजाम की फौजें रहती हैं।

गोलकुंडा—हैदराबाद से ७ मील पश्चिम हैदराबाद के राज्य में उजड़ा हुआ पुराना शहर गोलकुंडा है। वहां एक किला है, जिसको वारंगल के राजा ने बनवाया था। पीछे सन् १३६४ ई० में वारंगल के राजा ने गुलबर्गा के बाहमनी बादशाह को वह किला दे दिया। सन् १५१२ में कुतुबशाही खांदान के बादशाह ने बहमनी वंश के बादशाह से किले को छीन लिया; सन् १६८८ में मुगल बादशाह औरंगजेब ने कुतुबशाही खान्दान के बादशाह को कैद करके गोलकुंडा को ले लिया। कुतुबशाही राज्य का अन्त होगया।

किले के पत्थर का घेरा ३ मील से अधिक लंबा है। उसमें ८७ बुर्ज बने हुए हैं, जिनमें से कई एक पर पुरानी कुतुबशाही तोपों में से कई तोप अब तक रक्खी हैं। दीवार के बाहर की चारो तरफ की खाई बहुतेरी जगहों में भर गई है। उस किले में निजाम का खजाना और राज्य के कैदी रहते हैं और निजामसागर नामक तालाब तथा पुराने महलों के खंडहर हैं।

पहाड़ी के सिरे पर किले की दीवारों के भीतर बालाहिसार अर्थात् बादशाही महल का खंडहर है. जिसकी ऊंचाई मैदान से करीब ५०० फीट है। एक बाग होकर बालाहिसार के फाटक पर जो अभी मरम्मत में है, पहुंचना होता है। उस पहाड़ी के सिरे पर बादशाह का महल था, जिसकी कई मेहराबियां अब तक खड़ी हैं। किसी किसी को किला देखने के लिये पास मिल जाता है।

किले से ६०० गज पूर्वोत्तर एक मैदान में कुतुबशाही बादशाहों के मकबरे हैं, उनमें से बहुतेरे खराब हालत में विद्यमान हैं; उनके नाम ये हैं,— पहिला कुतुबशाही वंश को नियत करने वाला सुलतान कुली कुतुब, जो सन्

९५० हिजरी (१५४३ ई०) में मरा; दूसरा जमसिद कुली कुतुब, जो सन् १५५० ई० में मरा; चौथा इब्राहिम कुली कुतुब शाह, जो सन् ९८८ हिजरी (१५८० ई०) में मरा; पांचवां महम्मद कुली कुतुबशाह, जिसने हैदराबाद को बसाया और सन १०३५ हिजरी (१६२५ ई०) में मरा; और छठवां सुल्तान अबदुलकुतुब शाह, जो सन १०८३ हिजरी (१६७२ ई०) में मरा । महम्मद कुली कुतुबशाह का मकबरा सब मकबरों से बड़ा १६८ फीट ऊंचा है। कुतुब शाही वंश का पिछला बादशाह आबुलहसन को औरंगजेब ने जन्म भर कैद रहने के लिये दौलताबाद के किले में भेज दिया; वहां सन १७०१ में वह मर गया। कुतुबशाहियों में वही एक यहां नहीं गाड़ा गया।

पूर्व समय में गोलकुण्डा हीरे के लिये प्रसिद्ध था। खास करके निजाम राज्य के दक्षिण पश्चिम की सीमा के पास के पुर्टियल से हीरा आते थे और गोलकुण्डे में काटकर दुरुस्त किये जाते थे और उस पर पालिस होती थी।

हैदराबाद का राज्य—इसको निजाम राज्य भी कहते हैं। यह राज्य भारतवर्ष के देशी राज्यों में सबसे बहुत बड़ा ८२६९८ वर्गमील में फैला है। इसकी सबसे अधिक लंबाई पूर्व दक्षिण से पश्चिमोत्तर तक लगभग ४७५ मील और सबसे अधिक चौड़ाई पश्चिम दक्षिण से पूर्वोत्तर तक ४०० मील है। इसके उत्तर बरार; पूर्वोत्तर और पूर्व मध्यदेश, दक्षिण-पूर्व और दक्षिण मदरास हाता और पश्चिम तथा पश्चिमोत्तर बम्बई हाता है। इस राज्य के पश्चिमी भाग में अङ्गरेजी राज्य के कई छोटे टुकड़े हैं। राज्य के उत्तरीय विभाग में मेहदक, इन्दुर, वारंगल और सिरपुर तंदूर जिला; पश्चिमोत्तर विभाग में औरंगाबाद, बीढ और प्रभानी जिला; पश्चिमी विभाग में बीदर, नंदेड और नालदुर्ग जिला, दक्षिणीय विभाग में रायचुर, लिंगसागर, शोरापुर और गुलबर्गा जिला और पूर्वी विभाग में कामेट, नलगोंडा और नागर करनूल जिला है। इन जिलों के अतिरिक्त राजधानी हैदराबाद का जिला अलग है। निजाम को हैदराबाद के राज्य से लगभग ३ करोड रुपये की आमदनी है।

हैदराबाद के राज्य के चंद हिस्सों में पहाडियां और अन्य विभागों में जगह जगह समतल और जगह जगह नीची ऊंची भूमि है। मैदान ऊपजाऊ

है। जगह जगह ऊसर भूमि भी देखने में आती है। राज्य की औसत ऊंचाई समुद्र के जल से १२५० फीट है। कई एक पहाड़ी चोटियां २५०० फीट ऊंची हैं। राज्य की पहाड़ियों में बालाघाट सिलसिला, जो पूर्वसे पश्चिम को गया है; सवियाद्री सिलसिला, जो इन्दुर जिले से बरार तक और बरार से बंबई हाते के खान देश जिले तक गया है और सहयाद्री सिलसिला, जो निजाम राज्य के भीतर लगभग २५० मील है, जिसमें से १०० मील अजंताघाट सिलसिला कहलाता है, प्रधान हैं।

पेनगंगा और बरधा नदी के संगम के निकट, बरधा नदी की घाटी में कोयले की खानियों के मैदान हैं। उसीके आस पास लोहा और कंकड़ की भी खानियां हैं। वाडी जंक्शन के समीप शाहाबाद में पत्थर की उत्तम खान है, जिससे मार्बुल के समान चिकना भूरे और काले रंग के पत्थर निकलते हैं, जो हैदराबाद शहर और दूसरे स्थानों में इमारत बनाने के लिये भेजे जाते हैं। इसके अलावे दूसरी भी पत्थर की कई खानियां हैं। पूर्व समय में हीरे की अनेक खानियां थीं।

इस राज्य की प्रधान नदी गोदावरी है, जो नासिक के पास त्र्यम्बक से निकल कर इस राज्य के मध्य होकर दक्षिण-पूर्व बहने के उपरांत बंगाल की खाड़ी में गिरती है। उसके बाद कृष्णा और तुंगभद्रा है। ये तीनों नदियां राज्य के भीतर और राज्य की सीमा पर बहती हैं। तुंगभद्रा कृष्णा में मिल गई है। इनके अलावे निजाम राज्य में बहुतेरी छोटी नदियां और छोटे बड़े लगभग १८००० जलाशय हैं।

धान, गेंहू आदि सब प्रकार के गल्ले, तेल के बीज, नील, ऊख, कपास बहुत उत्पन्न होते हैं। खरबूजा, ककड़ी, आदि विविध प्रकार के फल बहुत होते हैं। मुरई, कन, अदरक, हलदी, आलू, इत्यादि भी होते हैं। वनों में रेशम वाले कीड़े सर्वत्र हैं। मधु जंगलों से बहुत निकाला जाता है। गोंद भी बहुत होता है। अनेक प्रकार के गल्ले, चावल, रुई, तेल के बीज, देशी कपड़ा, धातु के बर्तन, चमड़ा इत्यादि सामान हैदराबाद के राज्य से दूसरे स्थानों में भेजे जाते हैं और गल्ले, लकड़ी, यूरोपियन चीजें, इत्यादि वस्तु दूसरे स्थानों

से वहां आती हैं। पूर्वी और पश्चिमी किनारे से निमक आता है। इस राज्य के कसबे बीदर में बीदर के काम के धातु के उत्तम वर्त्तन, औरंगाबाद, गुलबर्गा और अन्य कसबों में कपड़े पर सोने का सुन्दर काम और दौलताबाद के किले के निकट कागजपुर ग्राम में अनेक प्रकार के उत्तम कागज बनते हैं।

सन् १८९१की मनुष्य-गणना के समय हैदराबाद राज्य के ८२६९८वर्गमील में ११५३७०४० मनुष्य थे, अर्थात् ५८७३१२९ पुरुष और ५६६३९११ स्त्रियां। इनमें १०३१५२४९ हिन्दू, ११३८६६६ मुसल्मान, २९१३० जंगली जातियां इत्यादि, २७८४५ जैन, २०४२९ क्रस्तान, ४६३७ सिक्ख, १०५८ पारसी और २६ यहूदी थे। इनमें से सैकड़े पीछे ४३ ½ तेलगू अर्थात् तैलंगी भाषा वाले, ३० ½ महाराष्ट्री भाषा वाले, १० ½ कनड़ी अर्थात् करनाटकी भाषा वाले, १० ½ उर्दू भाषा वाले और ३ ½ अन्य भाषा बोलने वाले मनुष्य थे। पढ़े हुए लोगों में प्रत्येक हजार में ५६९ ब्राह्मण, ५ ब्राह्मणी; ४३८ कायस्थ; १५१ विदुर और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे। राज्य के पूर्व-दक्षिण के बड़े भाग में तैलंगी भाषा दक्षिण पश्चिम के भाग में कृष्णानदी के आस पास कनाड़ी अर्थात् करनाटकी भाषा और पश्चिम तथा उत्तर के भाग में महाराष्ट्री भाषा सर्व साधारण लोगों में प्रचलित है। पश्चिमी भाग में महाराष्ट्र लोग अधिक हैं। राजधानी और सरकारी कामों में खास कर मुसलमान लोग बहुत हैं। इस राज्य में शिक्षा की तरक्की हुई है। एक शिक्षा का डाइरेक्टर, निजाम कालिज, ओरिएण्टल कालिज, मेडिकल स्कूल इत्यादि नियत हुए हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय हैदराबाद राज्य के ९८४५५९४ मनुष्यों में ९२५९२९ मुसलमान थे, अर्थात् ४८४१५५ सेख, ८९९०९ सैयद, ६१४३७ पठान, १५४२३ मुगल और २७५००५ दूसरे मुसलमान। इनके अतिरिक्त दूसरी जातियों में १६५८६६५ कुन्बी, ८०६६५३ महारो, ४८२०३९ धांगड़, ५४७३१२ चमार, ३९२१८४ वनिया, ३६९६३६ महाराष्ट्र, ३२७३३८ तेलिंगा, ३१९७३२ मांग, २५९१४७ ब्राह्मण, २१३९६६ कोली, २१२६०८ गावली, १९४२८४ कोमटी(सौदागर), १३९५१३ गोंड, ११९१६१ वाडर, १०२२१३

महली, ९७६३६ लिंगायत, ९२१३६ भोई, ९०८३९ कुम्भार, ८६७६९ सोनार, ८९२०४ लवनी, ८६८०६ माली, ७९१४२ कोस्ती, ६७५६४ तेली, ५६१२८ लोहार, ५४८३३ बेडदार, ४९८४३ राजपूत और शेष में गौंडी, दर्जी, गोसांई, बनजारा, भील, कोया इत्यादि जातियों के लोग थे।

हैदराबाद राज्य के शहर और कसबे, जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय १०००० से अधिक मनुष्य थे;—

नं० शहर,कसबे	जिलेवा-तालुक।	मनुष्य-संख्या
१ हैदराबाद	हैदराबाद	४१५०३९
२ औरंगाबाद	औरंगाबाद	३३८८७
३ गुलबर्गा	गुलबर्गा	२८२००
४ कादिराबाद	औरंगाबाद	२३३५३
५ रायचुर	रायचुर	२३१७४
६ बीढ	बीढ	१८९९४
७ गाहवाल	रायचुर	१४६७२
८ मोमीनाबाद	बीढ	१३९२३
९ नांदेड़	नांदेड़	१३१०५
१० कल्यानी	बीदर	१३०२६
११ हिंगोली	प्रभानी	११९६६
१२ नारांपेट	महबूबनगर	११८८८
१३ वारंगल	वारंगल	११४८४
१४ इन्दुर	इन्दुर	११४८२
१५ वसमथ	प्रभानी	११३६१
१६ बीदर	बीदर	११३१९
१७ निर्मल	इन्दुर	१०९३२
१८ मनथट	प्रभानी	१०९१२
१९ गारासर	नालदुर्ग	१०५११
२० प्रभानी	प्रभानी	१०१०२

सिकंदराबाद, बलारम्, दौलताबाद, इलोरा और असाई भी हैदराबाद के राज्य में प्रसिद्ध नगर हैं।

हैदराबाद के राज्य में साधारण तरह से प्रत्येक गांवों के निकट लगभग ५० गज लंबा और इतनाही चौड़ा पक्का अथवा मट्टी का एक एक क़िला है। पहाड़ियों और जंगलों के रहने वाले गोंड़ बड़े असभ्य हैं। उनमें से अधिक गुफाओं और वृक्षों के खोखलों में रहते हैं। वे लोग शिकार से अपना उदर

पालन करते हैं; किंतु जब सिकार नहीं मिलता, तब कीड़े मकूड़े और जंगली जड़ अथवा फल खाकर अपना निर्वाह करते हैं।

इतिहास—सुलतान कुली कुतुबशाह के, जिसने गोलकुंडा का राजवंश नियत किया था, पांचवें पुस्त में महम्मद कुली कुतुबशाह था; उसीने सन् १५८९ ई० में कई एक कारणों से गोलकुन्डा को छोड़ कर उससे ७ मील दूर मूसीनदी के किनारे पर एक शहर बसाकर उसको अपनी राजधानी बनाया और अपनी प्रिय स्त्री भागमती के नाम से उसका नाम भागनगर रक्खा; किंतु उस स्त्री के मरजाने पर उसने शहर का नाम हैदराबाद रख दिया। उसके पश्चात् उसने अपने राज्य को कृष्णानदी के दक्षिण फैलाया, उड़ीसे के राजा को परास्त किया और वह उत्तरीय सरकार के बड़े भाग को अपने अधिकार में लाया। सन् १६२५ में महम्मद कुली कुतुबशाह मरगया। हैदराबाद में इसके राज्य के समय के बने हुए महल, इलाहीमहल का बाग, मुहमदीबाग, नौबतघाट का महल, चारमीनार, और मक्का मसजिद, जिसको जामामसजिद भी कहते हैं, विद्यमान हैं। महम्मदकुली बड़ा उदार और दानी था। उसके मरने पर उसका पुत्र सुलतान अबदुल्कुतबशाह उत्तराधिकारी हुआ। मुगल बादशाह शाहजहां ने, जिसका राज्य सन् १६२७ से १६५८ तक था; बीजापुर और गोलकुन्डा को अपने आधीन करने के लिये अपने पुत्र औरंगजेब को भेजा। औरंगजेब ने विश्वासघात करके हैदराबाद को लेलिया और अबदुल कुतबशाह को अपने आधीन बनाकर छोड़ दिया। सन् १६७२ में अबदुल कुतबशाह के मरने पर उसका दामाद आबूहुसन उत्तराधिकारी हुआ। उसने मधुनापंत नामक एक महाराष्ट्र ब्राह्मण को अपना प्रधान मंत्री बनाया। सन् १६७६ में मंत्री ने महाराष्ट्र प्रधान शिवाजी को बुलाया। शिवाजी ने अपनी भारी सेना के साथ करनाटक जाते समय हैदराबाद में आकर आबूहसन से एक संधि की। सन् १६८० में शिवाजी की मृत्यु होने पर आबूहसन ने उनके पुत्र संभाजी से भी मेल किया। सन् १६८८ में खांजहां और उसके पीछे उसकी सहायता के लिये, औरंगजेब का पुत्र मोअजिम गोलकुंडा पर आक्रमण करने के लिये दिल्ली से भेजा गया। गोलकुन्डे की सेना के

कमांडर ने दगा कर के मुगलों की सेना को हैदराबाद में घुसा दिया। मधुनापंत मारागया। हैदराबाद लूटा गया। आबूहसन गोलकुन्डा के किले में जा छिपा। पीछे उसने मुगलों से संधि की। सन् १६८७ में औरंगजेब ने गोलकुन्डा पर आक्रमण किया। आबूहसन ७ मास तक गोलकुन्डा के किले को बचाकर पीछे छल द्वारा परास्त हुआ और कैदी बनाकर दौलतावाद भेजा गया। औरंगजेब बीजापुर और गोलकुन्डा के सब राज्यों पर अपना अधिकार कर लिया। आबूहसन सन् १७०१ में दौलतावाद में मरगया।

टर्कोमैन के खांदान का आसफजाह, मुगल बादशाह औरंगजेब का जेनरल था। उसीसे हैदराबाद का वर्तमान निजाम खांदान नियत हुआ। दिल्ली के बादशाह फर्रुखशियर ने, सन् १७१३ में आसफजाह को निजामुल मुल्क की पदवी देकर डेकान अर्थात् दक्षिण का सूबेदार बनाया। वही पदवी उसके वंश मे अब तक चली आती है। सन् १७२२ में आसफजाह दिल्ली का वजीर बनाया गया; किन्तु सन् १७२३ में वह वजीर के काम से इस्तीफा देकर दक्षिण चला गया। सन् १७२४ में वह हैदराबाद के गवर्नर मुबारिज खां को, जो दिल्ली की तरफ से था, परास्त करके हैदराबाद में रहने लगा और एक स्वाधीन राज्य कायम करने वाला हुआ। सन् १७४८ में निजामुले मुल्क अर्थात् आसफजाह मरगया। उस समय उसका फैला हुआ स्वाधीन राज्य मजबूत हो चुका था। हैदराबाद उसकी राजधानी था। आसफजाह के मरने पर उसके दूसरे पुत्र नासिरजंग और पोता मुजफ्फरजंग ने गद्दी के लिये झगड़ा किया। अंगरेज, नासिरजंग की ओर और फरासीसी, मुजफ्फरजंग की तरफ थे। अन्त में नासिरजंग ने मुजफ्फरजंग को कैद करलिया; किन्तु थोड़ेही दिनों के बाद नासिरजंग अपने खास आदमियों द्वारा मारागया और मुजफ्फरजंग सूबेदार बनाया गया; परन्तु शीघ्रही वह मरगया; तब फरासीसियों ने मुजफ्फरजंग के बचा पुत्र को छोड़ कर नासिरजंग के भाई सलावतजंग को दक्षिण का हुकूमत करने-वाला चुना। थोड़ेही दिनों के बाद फरासिसियों ने अंगरेजों से डरकर सलावतजंग की सहायता करनी छोड़ दी। तब सलावतजंग निर्बल होगया। सन् १७६१ में सलावतजंग के छोटे भाई

निजामतअली ने सलावतजंग को तख्त से उतार दिया और २ वर्ष के पीछे उसको मारडाला।

सन् १७६६ में निजामतअली से अंगरेजों की एक संधि हुई, जिसके अनुसार मैसूर के हैदरअली पर चढ़ाई करने के समय अंगरेजों ने अपनी फौज से निजामतअली की सहायता की; किन्तु निजामतअली का मनोरथ सफल नहीं हुआ, उसको हैदरअली के पास सुलह का दरखास्त करना पड़ा। सन् १७९९ में श्रीरंगपट्टन के टीपूसुल्तान के परास्त होने पर टीपू के राज्य का एक भाग निजाम को मिलगया; क्योंकि वह अंगरेजों के मददगार थे। सन् १८०० ई० की संधि में निजाम ने समय पड़ने पर अंगरेजों को ६००० पैदल, ९०००-घोड़सवार और हर प्रकार की सहायता देने को कबूल किया। सन् १८५३ की संधि में निजाम को ५००० पैदल, २००० घोड़सवार और ४ मैदान की तोपें (पहले के सैनिक बलसे अधिक) बढ़ाने का अधिकार हुआ। अंगरेजी सरकार ने इसका खर्च देना स्वीकार किया। निजाम ने ५० लाख रुपये वार्षिक आमदनी के जिले अंगरेजी सरकार को दे दिए।

सन् १८५७ के बलवे के समय निजाम ने अङ्गरेजों की सहायता की। सन् १८६० की संधि में अङ्गरेज महाराज ने निजाम के राज्य को बढ़ाया और कर्जा का ५० लाख रुपया माफ कर दिया। उससे सन् १८५३ की संधि के मतलब के लिये बरार देश के ३२ लाख रुपये आमदनी के जिलों को लिया। अङ्गरेजी प्रबंध से बरार की मालगुजारी बहुत बढ़ गई है। सन् १८८२-१८८३ में उसकी मालगुजारी लगभग ८५ लाख रुपया होगई थी।

हैदराबाद के वर्तमान निजाम हिज हाईनेस मीर सर महबूबअलीखां बहादुर आसफजाह जी० सी० एस० आई० सन् १८६६ में पैदा हुए, जो अपने बाप के मरने के समय केवल ३ वर्ष के थे। मृत सर सालारजंग और अमीर समसुलउमरा उनके लड़कपन में राज्यका काम करते थे। सर सालारजंग बड़ी चातुरी से राज्य का प्रबंध किया; किन्तु सन् १८८३ में वह हैजे से मरगये। सन् १८८४ में भारतवर्ष के गवर्नर जनरल और वाइसराय लार्ड रिपन ने वर्तमान निजाम को राज तिलक दिया। मृत प्राइम मिनिष्टर नवाब सर आसमानजाह बहादुर

के० सी० आई० ई० निजाम के रिस्तेदार थे, जिनके पीछे इकबालुद्दौला विकरूल उमरा बहादुर उनके कायम मुकाम हुए।

हैदराबाद के निजाम को २१ मैदान की और ६५४ अन्य तोपें; ५५१ गोलंदाज; १४००० सवार और १२७७५ पैदल सेना रखने का अधिकार है। इनको अङ्गरेजी सरकार की ओर से २१ तोपों की सलामी मिलती है।

बीदर।

हैदराबाद शहर से ७८ मील पश्चिमोत्तर (१७ अन्श, ५३ कला, उत्तर अक्षांश और ७७ अन्श, ३४ कला पूर्व देशांतर) में हैदराबाद के राज्य के अन्तर्गत जिले का सदर स्थान बीदर एक पुराना कसबा है। यही बीदर पूर्व समय में विदर्भदेश में सुप्रसिद्ध राजा नल के श्वसुर और दमयंती के पिता विदर्भराज राजाभीम की विदर्भनगरी था।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बीदर में ११३१५ मनुष्य थे; अर्थात् ५७४५ मुसलमान, ५४७५ हिन्दू, ८२ जैन, ९ कृस्तान और ४ सिक्ख।

बीदर में बहमनी बादशाहों के विविध महल, मसजिदें और अन्य इमारतें टूट फूट गई हैं; किन्तु बची हुई इमारतें, जिनमें मदरसा और मसजिद अधिक प्रसिद्ध है, वहां के पहिले के ऐश्वर्य को जनाती हैं। कसबे का शहर पनाह, जिसका दौरा ६ मील होगा, टूट फूट गया है। उसकी पुश्तों में से एक पर २१ फीट लम्बी एक पुरानी तोप पड़ी है। कसबे में १०० फीट ऊंचा एक मीनार है और पश्चिमोत्तर के मैदान में बहुतेरे मकबरे खड़े हैं।

बीदरी धातु के बर्तन के लिए बीदर कसबा प्रसिद्ध है। वहां इस धातु की उत्पत्ति हुई, इस लिए इसका नाम बीदर पड़ा। सीसा, तांबा और रांगा इन तीनों को गलाकर एक प्रकार का धातु तैयार करते हैं; उसका थाल, फर्शी, रेकाबी, चारपाई के पावे, इत्यादि चीजें बनाकर उन पर विविध प्रकार के फूल खोदकर उनमें रूपा और सोना या केवल रूपा, अथवा सोना का मुलम्मा किया जाता है। काली धातु की चीजों पर सफेद और पीले फूल बहुत अच्छे लगते हैं। बीदर जिले में कल्यानी सबसे बड़ा कसबा है। सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय उसमें १३०२६ मनुष्य थे।

संक्षिप्त प्राचीन कथा-(महाभारत—आरण्य पर्व-५३ वां अध्याय) निषध देश में वीरसेन राजा के दो पुत्र उत्पन्न हुये। जिनमे ज्येष्ठ का सुप्रसिद्ध राजा नल और कनिष्ठ का पुष्कर नाम था।

राजा नल द्यूत विद्या और अश्व विद्या में परम निपुण थे।

तथा विदर्भनगरी में अति पराक्रमी राजा भीम नामक था। एक समय महर्षि दमनक राजा के समीप आये उन्हें राजाने निष्पुत्र होने के कारण अत्यन्त प्रसन्न किया। महर्षि प्रसन्न होकर एक कन्या और ३ पुत्र होने का वर दिया। जब राजा के एक कन्या और तीन पुत्र हुये, तब उनमे कन्या का दमयन्ती और पुत्रों का दम, दान्त, दमन, नाम रक्खा।

दमयन्ती अत्यन्त रूपवती होने के कारण लोक में प्रसिद्ध हुई। लोग दमयन्ती की नलके समीप और नल की दमयन्ती के समीप प्रशंसा करने लगे। नल और दमयन्ती की प्रीति परस्पर विना देखही बढ गई। निदान यहां तक कि राजा नल विरह से व्याकुल हो नगर के समीप के वन मे चले गये। वहां सुवर्णवर्ण के बहुत से हंस देखकर छल से एक को पकड लिया। तब दूसरा हंस आकाश से मनुष्य वाणी बोला कि हे राजन्! यदि हस को आप न मारो गे और छोड दोगे तो दमयन्ती के पास जाकर तुह्मारा ऐसा वर्णन हमलोग करेंगे कि जिसमे वह तुम्हें छोड दूसरे को नही चाहे गी। इस बात को सुनकर नल ने उस हस को छोड दिया। तदनन्तर सब हंस विदर्भनगर में जाकर जहां दमयन्ती थी, वहीं आकाश से उतर पडे।

उन्हें देख सखीगण और दमयन्ती एकर हंसको पकडने चली। पर जैसेर पकडने को आगे बढती थीं वैसेर हंसभी आगे बढे जाते थे। उनमें जिस हंस को खास दमयन्ती पकडती थी, वह हंस मनुष्यवाणी मे राजा नल की प्रशसा करने लगा और कहा कि तेरे रूप के योग्य तीनो लोक में राजा नल के समान दूसरा नही है; इसलिये उन्हीको तूं अपना पति बना। हंस के ऐसे कहने पर दमयन्ती ने कहा कि आप राजा से भी जाकर इसी तरह कहिये।

(५४वां अध्याय) दमयन्ती को हंसी समय से नल के विरह मे विकल देख कर सखी जनों ने यत्न पूर्व राजा भीम से कुछ कहा। भीम ने कन्या की

युवावस्था विचार कर स्वयंवर रचा। सब राजागण स्वयंवर में आने लगे। उसी समय नारदऋषि के मुख से दमयन्ती का रूप और बड़ा भारी स्वयंवर सुनकर इन्द्र, वरुण, यम, अग्नि भी दमयन्ती के लिये चले । मार्ग में अति रूपवान् राजा नल को स्वयंवर में जाते देखकर निरास हो विमान रोका और नल से कहा कि हे राजन् ! आप सत्यव्रत हैं, इसलिये मेरी सहायता के लिये दूत बनिये ।

(५५ वां अध्याय) तब राजा नल ने दूतत्व अंगीकार करके उन लोगों का नाम पूछा और कहा कि किसका और क्या काम है ।

तदनन्तर देवतों ने अपना इन्द्र, वरुण, यम, अग्नि, नाम बतला कर कहा कि दूत बनकर दमयन्ती के पास जाकर यह कहना होगा कि आपको इन्द्र, वरुण, अग्नि, यम, चाहते हैं, उनमें से एक किसी को अपना पति बनाओ । ऐसा सुनकर नम्र हो नल ने कहा कि हमारा और आप का एकही उद्देश्य होने से हमें दूत बनाना उचित नहीं है और मैं अपने हृदय से उसे अपनी स्त्री बनाकर दूसरे के पास जाने की अनुमति कैसे दूंगा ।

तब देवतों ने कहा कि हम लोगों ने तुम्हें परम सत्यवादी सुना है और तुम प्रतिज्ञा करचुके हो, इसलिए तुम्हें अवश्य दूत बनना होगा । ऐसा सुनकर नल ने कहा कि द्वारपालों से रक्षित अन्तःपुर में मेरा किस प्रकार प्रवेश होगा। तब इन्द्र के अन्तर्द्धान विद्या देने पर दमयन्ती के समीप पहुंचकर उसके पूछने पर नल ने कहा कि मैं नल हूँ—और इन्द्र, वरुण, यम, अग्नि देवता तुम्हारी इच्छा करते हैं। मैं दूत बनकर उनके प्रभाव से अलक्ष्य होकर यहां आया हूं । अब जैसा चाहो वैसा करो ।

(५६वां अध्याय) ऐसा सुन देवतों को नमस्कार करके दमयन्ती ने कहा कि मैं सिवाय आपके कदापि दूसरे को नहीं वरूंगी और आप उनके दूत बनकर आए हैं, इसलिए आप उनलोगों के साथ स्वयंवर में आइये; पर मैं तो आपही को जयमाल दूंगी । ऐसा सुन,नल ने देवतों के पास आकर यथार्थ वृत्तान्त कह सुनाया ।

(५७ वां अध्याय) तदनन्तर नल और चारों देवता स्वयंवर में एका-

कार बनकर जा बैठे। दमयन्ती स्वयंवर में एकाकार पांचों नलों को देख परम विस्मित होकर जब देवतों के चिन्ह किसी में न पाये, तब दीन हो ध्यानकर देवतो की प्रार्थना की कि मैं हंस के वचन से अपना पति राजा नल को वना चुकी हूं; इसलिए मेरे पातिव्रत्यधर्म की आप लोग रक्षा कीजिए। ऐसी प्रार्थना जानकर देवतों ने अपना२ चिन्ह धारण कर लिया। तब दमयन्ती परम आनन्द से राजा नलही के गले में जयमाल देदिया। यह देख सब लोग दमयन्ती और नल की प्रशंसा करने लगे।

दमयन्ती के पिता ने नल के साथ दमयन्ती का विवाह कर विदा किया।

राजा नल के दमयन्ती को साथ ले आने पर अपनी राजधानी में इन्द्रसेन नामक पुत्र और इन्द्रसेना नामक कन्या उत्पन्न हुई।

इतिहास—बहमनी खांदान के बादशाहों ने, जिसका राज्य सन् १३४७ से प्रारम्भ हुआ; क्रम से गुलबर्गा, वारंगल और बीदर में रहकर राज्य किया। सन् १५१२ में गोलकुण्डा के कुतबशाही खांदान के बादशाह ने बहमनी खांदान के अन्तिम बादशाह से गोलकुण्डा का किला छीन लिया। बहमनी खांदान के पश्चात् बरीदशाही खांदान के बादशाह, जो सन् १४९८ में कायम हुई थी सन् १६०९ के पीछे तक बीदर में स्वाधीन राज्य करते रहे। सन् १६५७ ई० में मुगल बादशाह औरंगजेब ने बीदर का किला लेलिया। अब वह हैदराबाद के निजाम के अधिकार में है।

नांदेड़।

बीदर कसबे से लगभग ९० मील उत्तर हैदराबाद के राज्य में गोदावरी नदी के बाएं एक नहर के निकट जिले का सदर-स्थान नांदेड़ एक कसबा है। इसमें निजाम सरकार की कचहरियां बनी हुई हैं। *

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय नांदेड़ में १३१०८ मनुष्य थे; अर्थात्

* मनमाड़ जंकशन से पूर्व दक्षिण हैदराबाद तक नई रेलवे लाइन निकली है। उसके पास मनमाड़ से २१८ मील पूर्व दक्षिण और हैदराबाद से १६८ मील (पूर्णा कसबे से १८ मील) पश्चिमोत्तर नांदेड़ का रेलवे स्टेशन है।

७३०४ हिंदू, ५०६८ मुसलमान, ६५९ सिक्ख ६७ जैन और ७ पारसी। मनुष्य गणना के अनुसार यह हैदराबाद के राज्य में ९ वां शहर है।

नांदेड़ में सिक्ख लोगों के दसवां गुरु श्रीगोविंदसिंहजी की संगति है। गुरुगोविंदसिंह ने सन् १६६६ ई० में बिहार के पटने शहर में जन्म लिया और सन् १७०८ में इसी नांदेड़ के समीप मुसलमानों से लड़कर परलोक को प्रस्थान किया। इनका संक्षिप्त जीवनचरित्र भारत-भ्रमण के दूसरे खण्ड के अमृतसर म और तीसरे खंड के पटने के वृत्तांत में है।

वारंगल।

सिकंदराबाद के रेलवे स्टेशन से ८७ मील पूर्वोत्तर वारंगल का रेलवे स्टेशन है। हैदराबाद के राज्य में जिले का सदर स्थान वारंगल एक पुराना कसबा है, जिसमें चालुक्य कारीगरी की इमारतों में से ४ दिलचस्प कीर्तिस्तंभ अब तक हीन दशा में विद्यमान हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय करीमाबाद और मतवारा शहरसली के साथ वारंगल में ११४८४ मनुष्य थे; अर्थात् ८३५४ हिन्दू, २७६२ मुसलमान, २५२ सिक्ख, १०४ कृस्तान और १२ पारसी।

इतिहास—वारंगल तेलीगाना के हिन्दू राज्य की, जिसको नरपति अन्ध्र ने नियत किया था, पुरानी राजधानी था। सन् १३०३ ई० में अलाऊद्दीन ने वारंगल पर आक्रमण किया; किन्तु निरास होकर उसको लौट-जाना पड़ा। सन् १३०९ में उसका कर्मचारी मलिक काफूर ने बहुत दिनों तक घेरा देने के पीछे वारंगल को लेलिया। वहां का राजा 'कर' देने को कबूल किया। गयासुद्दीन तुगलक के राज्य के समय जब फरासीसियों ने वारंगल पर आक्रमण किया, तब मुसलमानों ने वारंगल को फिर लेलिया; किन्तु गयासुद्दीन के पुत्र महम्मदआदिल तुगलक के राज्य (सन् १३२५-१३५१) के समय हिन्दुओं ने वारंगल को फिर प्राप्त किया। सोलहवीं शदी के आरंभ में बहमनी खांदान के बादशाह ने वारंगल को लेलिया और वारंगल

के राजा के पुत्र को कैदी बनाकर मारडाला। सन् १५१२ और १५४३ के बीच में कुतबशाही खांदान के बादशाहों ने गोलकुन्डा राजधानी और बंचे हुए राज्य को लेलिया।

छठवां अध्याय।

(मदरास हाते में) वेजवाड़ा, मछलीपट्टम्, एलौर, राजमहेंद्री, धवलेश्वरम्, कोकनाडा, पीठापुरम्, अनकापल्ली, विजगापट्टम्, विजयानगरम्, चिकाकोल, पर्लाकीमेंडो और ब्रह्मपुर।

वेजवाड़ा।

वारंगल से १२६ मील दक्षिण थोड़ा पूर्व वेजवाड़ा का रेलवे स्टेशन है। वहां निजाम स्टेट रेलवे, सदर्न मरहठा रेलवे और ईष्टकोष्ट रेलवे का जंक्शन और मदरास, तथा हैदराबाद और कलकत्ते की पुरानी सड़कों का मेल है।

मदरास हाते के तैलंगदेश के कृष्णा जिले में (१६ अंश, ३० कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश, ३९ कला, पूर्व देशांतर में कृष्णानदी के बाएं किनारे पर वेजवाड़ा एक प्रसिद्ध तिजारती कसबा है; जिसको कुछ लोग विजयेश्वर और दक्षिण काशी कहते हैं। वेजवाड़े से ४५ मील दक्षिण कृष्णानदी का मुहाना है। नहर की सौदागरी और सिंचाव के कामों का यह प्रधान केन्द्र है। वहां से मंदरास, एलौर, मसुलीपट्टम्, कोकनेडा और राजमहेन्द्री को नहरें गई हैं। वेजवाड़ा में सन् १७६० का बना हुआ एक उजड़ा हुआ किला और उसके पास चट्टान काट कर बने हुए बौद्ध और हिन्दुओं के बहुत से पुराने गुफा मन्दिर हैं। वेजवाड़े के आस पास बहुत पुराने रिमेन्स हैं। इनके अतिरिक्त, वेजवाड़ा में मुनसफी कचहरी, अस्पताल, स्कूल, बंगला, लाइब्रेरी और जेलखाना और अन्य भी अनेक सरकारी आफिस हैं। वेजवाड़ा के पास एक पहाड़ी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बेजवाड़े में २०७४१ मनुष्य थे, अर्थात् १८२२३ हिन्दू, २१७७ मुसलमान, ३३७ कृस्तान, २ जैन और २ पारसी।

बौद्ध गुफाएं—पहाड़ी के उत्तरीय रिज के पूर्व के छोर के पास अनेक बौद्ध गुफा और छोटी कोठरियां हैं। कसबे से एक मील पश्चिम कृष्णानदी के दक्षिण के रिज पर अंडावल्ली का गुफा मन्दिर है। एक दूसरे स्थान पर ७७ फीट भीतर को लंबी ३० फीट दहिने बाएं चौड़ी और ४५ फीट ऊंची, चट्टान काट कर गुफा बनाई हुई है।

हिन्दू गुफाएं—बड़ी पहाड़ी के जिसके कदम के पास बेजवाड़ा बसा है, पूर्व बगल में उसके पादमूल के पास बेजवाडा कसबे के पूर्वोत्तर छोटे गुफामंदिर में विनायक की मूर्ति है। उसके आगे कई एक छोटी कोठरियां और एक बड़ा मंडप है, जिसमें चट्टान के खंभे बने हुए हैं।

बेजवाड़े से १½ मील पश्चिम कृष्णानदी के दहिने किनारे पर सीतानगरम् के पश्चिम अंडावल्ली गांव के निकट गुफा मंदिर है। एक में अनंतस्वामी अर्थात् विष्णु भगवान् हैं और एक में, जिसकी छत चट्टान के खंभों पर है, सीताहरण, रामद्वारा सीता का खोज और रावणवध की लीला देख पड़ती है।

बेजवाड़ा से ३ रेलवे की लाइन ३ तरफ गई हैं; जिनके तीसरे दरजे का महसूल प्रति मील २ पाई लगता है।

(१) बेजवाड़ा से पूर्वोत्तर 'इष्टकोष्ट (पूर्वी किनारा) रेलवे',—
मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
३७ एलोर।
४९ भीमाडोल।
९८ राजमहेन्द्री।
१३० सामलकोटा जंक्शन।
१३७ पीठापुरम्।
२०१ अनकापल्ली।
२२२ वालटेर जंक्शन।
२६० विजयानगरम्।
३०३ चिकाकोलरोड।
३३२ नवापाड़ा।
३७९ इच्छापुर।
३९४ ब्रह्मपुर।
४०८ छत्तरपुर।
४२४ रंभा।
४८६ खुरदा रोड।

४९८ भुवनेश्वर।
५०८ कटक रोड (शहर से ६ मील)।
सामलकोटा जंक्शन से ७ मील कोकानाडा और ९ कोकानाडा बन्दर।
वाल्टेर जंक्शन से २ मील दक्षिण-पूर्व विजिगापट्टम्।

(२) बेजवाड़ा से दक्षिण-पश्चिम 'सदर्न मरहठा रेलवे';—
मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
७ मंगलगिरि।
२० गतुर।
७१ विनुकुंडा।
१८९ नंद्याल।
२३६ करनूल रोड।
२७९ गुंटकल जंक्शन।

(३) बेजवाड़ा से पश्चिमोत्तर 'निजाम स्टेट रेलवे'—
मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
१२६ वारंगल।
२१३ सिकंदराबाद।
२१९ हैदराबाद।
३३४ वाडी जंक्शन।

(४) *

मछलीपट्टम्।

बेजवाड़ा से नहर द्वारा लगभग ५० मील पूर्व दक्षिण (१६ अन्श ९ कला ८ विकला उत्तर अक्षांश और ८१ अन्श ११ कला ३८ विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र के किनारे पर मदरास हाते के तैलंग देश के कृष्णा जिले में प्रधान कसबा और प्रधान बंदरगाह तथा कृष्णा जिले का सदर स्थान मछलीपट्टम् एक कसबा है, जिसको मसुलीपटम् मछलीबंदर तथा केवल बंदर नाम भी लोग कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय मछलीपट्टम् में ३८८०९ मनुष्य थे; अर्थात् १८६०१ पुरुष और २०२०८ स्त्रियां। इनमें ३३५४४ हिंदू, ४६१८ मुसल्मान, ६४४ क्रस्तान, २ जैन और १ पारसी थे।

* बेजवाड़ा से दक्षिण मदरास रेलवे पर ३ मील कृष्णा नहर, ८६ मील अंगोल, १५८ मील नेलोर, १८२ मील गुडुर, और २६७ मील मदरास शहर है।

मछलीपट्टम् में जज और कलक्टर का आफिस, जेलखाना, सरकारी कचहरियां, अस्पताल और कई एक स्कूल हैं। किले में कई एक गिरजे हैं। किले के वारक अर्थात् सैनिक गृह और हथियारखाना हीन दशा में खड़े हैं, क्योंकि सन् १८६९ ई० में वहां से सरकारी सेना दूसरी जगह हटा दी गई; कसबे में अच्छी सडके और ईटे के मकान बने हुए हैं। किले से लगभग २ मील पश्चिमोत्तर यूरोपियन लोगों की कोठियां बनी हुई हैं।

सन् १८८२—१८८३ ई० म, बंदरगाह में १०८३२८० रुपये का माल आया और १६२८१५० रुपये का माल बंदरगाह से यूरप इत्यादि देशो में गया। बडे जहाज किनारे से ५ मील के बाहर लंगर पर ठहरते हैं।

मछलीपट्टम् में कपडे बिनने वाले और छापने वाले बहुत लोग हैं, किन्तु कल कारखाने होने से उनका काम घटता जाता है। अबतक वहा की छींट दूसरे देशो में भेजी जाती है। वहा पादड़ी लोगो की बड़ी उन्नति है, बहुत लोग कृस्तान होते जाते हैं। कसबे की दशा हीन है। सन् १८६४ में समुद्र की तुफानी लहर से सम्पूर्ण कसबा बहगया और ३०००० प्राणी मरगए। सन् १८७९ की रात में ऐसेही तुफान से बहुतेरे सोए हुए लोग डूब मरे।

कृष्णा जिला—यह जिला मदरास हाते में बंगाले की खाड़ी अर्थात् पूर्वी किनारे के पास कृष्णा नदी के मुहाने के दोनो ओर है। कृष्णानदी के नाम से इस जिले का यह नाम पड़ा है। इसके पूर्व बंगाल की खाढी; दक्षिण नैलोर जिला, पश्चिम हैदराबाद का राज्य और करनूल जिला और उत्तर गोदावरी जिला है। जिले में चंद नीची पहाड़िया हैं। उनमें की सबसे ऊंची पहाडी समुद्र के जल से केवल १८७५ फीट ऊंची है। जिले में कृष्णा प्रधान नदी है, जिससे यह जिला मसुलीपट्टम् और गंटूर दो भागो में बटगया है। कृष्णा के पूर्व मसुलीपट्टम् और पश्चिम गंटूर का भाग है। कृष्णा में सर्वदा नाव चलती है। इसके अलावे पांच सात छोटी नदिया हैं। जिले की पूर्वी सीमा पर कोलर झील जिसकी लंबाई २१ मील और चौडाई १५ मील है, आषाढ से फागुन तक नाव चलने के लायक रहता है। उसमे जगह जगह टापू हैं। (गोदावरी जिले में देखिये) जिले में लोहे और तांबे की अनेक

खानियां हैं; जिनमें से एक समय बहुत से धातु निकाले जाते थे। हैदराबाद के राज्य की सीमा के पास के ५ गांवों में हीरे की खान है; किन्तु बहुत कम हीरे निकलते हैं। पूर्व काल में इस जिले की खानों में असंख्य लोग काम करते थे और इस जिले में रक्तमणि और छोटे लाल भी निकलते थे। लोग कहते हैं कि इसी जिले की खानों से सुप्रसिद्ध कोहनूर और रीजेंट हीरा निकला था। जिले के भीतर अब बहुत थोड़ा जंगल है। जिले में तैलंगी भाषा प्रचलित है। साधारण प्रकार से इस जिले के लोग गरीब हैं।

कृष्णा जिले के एक ताल्लुक में एक पहाड़ी के सिर पर; जो समुद्र के जल से १५८७ फीट और मैदान से ६०० फीट ऊंचा है, कटपाकुंडा एक प्रसिद्ध गांव है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय २५०४ मनुष्य थे। उस गांव में एक शिवमन्दिर के पास फाल्गुन की शिवरात्रि के समय एक मेला होता है, जो फाल्गुन सुदी २ तक रहता है। मेले में ५० हजार से अधिक मनुष्य आते हैं और लकड़ी की बड़ी तिजारत होती है। नीचे से पहाड़ी के सिर तक पत्थर की सीढ़िया बनी हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय कृष्णा जिले के ८४७१ वर्ग मील में १५४८४८० मनुष्य थे; अर्थात् १४२५०१३ हिन्दू, ८७१६१ मुसलमान, ३६१९४ कृस्तान, ८ जैन और १०४ दूसरे। हिन्दुओं में ५२२६९६ वेलाला, २०१५७८ गड़ेरिया, ९४८९३ ब्राह्मण, ६९८५४ सेटी (व्यापार करने वाले), ४७१९९ थैकोला, ४४२७६ धनान (कपड़ा धोने वाले), ३४५२८ कमार, ३०६४३ साना, २४४५९ वनियां (मनुग के किसिम की एक जाति विसेप), १८६०६ सतानी, १६५५७ अंबातन (क्षौर कर्म करने वाले), १६३६३ कुम्बन (मट्टी के बर्तन बनाने वाले), ११५५९ राजपूत और बाकी में मछुहा, कनाकन इत्यादि जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कृष्णा जिले के कसबे मछलीपट्टम् में ३८८०९, गंतूर में २३३२९, विजवाड़ा में २०७४१, चिरला में १०५८१ और मंगलगिरि, चेल्लापल्ली, गुण्डापल्ली, बन्तूर इत्यादि छोटे कसबों में इनसे कम मनुष्य थे।

इतिहास–कृष्णा जिले के जंगलीलोग अति पूर्व काल में शिकार से अपना निर्वाह करते थे। सन् ईस्वी के कुछ पहिले से कुछ पीछे तक कृष्णा-नदी के किनारों पर बौद्धमत के लोग बसते थे। तीसरी शदी में ब्राह्मणमत के लोग आए। सातवीं शदी में कल्यानीपुर के चालुक्य वंश के राजा ने वेंजी के राजा को जीता। चालुक्य राजाओं के बाद दक्षिण से चोला वंश के राजा आए। उसके बाद धरनीकोड़ा के जैन राजा ने कृष्णा जिले पर हुकूमत की। उसके पीछे कुंडावर के रेड्डी वंश के राजा ने उड़ीसा के राजा के साथ उस देश के राज्य को बांटा। सन् १३२८ से सन् १४२४ ई० तक रेड्डी वंश के राजाओं ने राज्य किया। उनके बाद उड़ीसा के गजपति राजा आए और गजपति वंश के पीछे विजयानगर के राजा का राज्य कायम हुआ। १४ वीं शदी में मछलीपट्टम् का बंदरगाह नियत हुआ। सन् १५८० में मुसलमानों ने कुंडावीर के किले को हिन्दुओं से जीतकर कृष्णा जिले पर अपना अधिकार किया।

सत्तहवीं शदी के आरम्भ में यूरोपियन सौदागरों ने गोलकुंडा राज्य के आधीन मछलीपट्टम् में अपनी कोठियां कायम कीं। सन् १६११ में अंगरेजों ने वहां अपनी कोठी नियत की। सन् १६२८ में ४ वर्ष के लिये वे लोग निकाल बाहर किए गये, किन्तु गोलकुण्डा के बादशाह से फरमान पाकर वे लोग फिर मछलीपट्टम् में आए। सन् १६११ के पहिलेही से मछलीपट्टम् में डच लोगों की कोठी कायम हो चुकी थी। सन् १६६९ में फरासीसी वहां आए। सन् १६८६ में डच लोगों ने मछलीपट्टम् पर अपना स्वाधीन अधिकार कर लिया। सन् १६८९ में मुगल बादशाह औरंगजेब के जनरल जुलफकारखां, ने डचवालों से मछलीपट्टम् छीन लिया और कृष्णा जिले को मुगल राज्य में मिला दिया। सन् १६९० में अंगरेजों ने औरंगजेब की आज्ञापत्र से मछलीपट्टम् की सौदागरी का पूरा अधिकार पाया। सन् १७०७ से अङ्गरेजी अधिकार होने के पहिले तक कृष्णा जिले देकान के सूबे का एक भाग था। सन् १७५० में निजाम ने चारो तरफ के देश के साथ मछलीपट्टम् को फरासीसियों को दे दिया। फरासीसियों की सहायता से मुजफ्फरजंग हैदराबाद के तख्त पर बैठे। सन्

१७५३ में अंगरेज लोग मछलीपट्टम् से निकाल दिए गए । सन् १७५९ में बंगाल के अंगरेजो ने अपनी सेना भेजकर मछलीपट्टम् पर अधिकार कर लिया । सलावतजंग डर कर अंगरेजों से संधि करके कृष्णा जिले का बडा भाग उनको दे दिया। सन् १७६६ में दिल्ली के बादशाह के सनद द्वारा अंगरेजों को ५ उत्तरी सरकार मिले। सन् १८२३ में सपूर्ण कृष्णा जिले पर अंगरेजी अधिकार होगया। सन् १८५९ में गंतूर और मछलीपट्टम् दो जिलों के मेल से कृष्णा जिला बना। गंतूर के एक छोटे भाग और राजमहेंद्री जिले को गोदावरी जिला बनाया गया । पुराणो के लेख से मछलीपट्टम् और राजमहेंद्री के आस पास के देश, कलिंग देश में जान पड़ते हैं।

एलौर।

बेजवाडा जंक्शन से ३७ मील पूर्वोत्तर एलौर का रेलवे स्टेशन है। मद्रास हाते के गोदावरी जिले में (१६ अन्श, ४२ कला, ३५ विकला उत्तर अक्षांश और ८१ अन्श, ९ कला, ५ विकला पूर्व देशांतर में) एक छोटी नदी और नहर के पास एक तालुका का सदर स्थान एलौर कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय एलौर में २९३८२ मनुष्य थे, अर्थात् १४२८७ पुरुष और १५०९५ स्त्रियां। इनमें २४८९८ हिन्दू, ४०४७ मुसल्मान और ४३७ कृस्तान थे।

एलौर में मातहत मजिष्टर की कचहरी, पुलिस का स्टेशन स्कूल पोष्टआफिस और कई गिरजे हैं। वहा ऊनी कालीन अच्छे तैयार होते हैं। कसबे के समीप पुराने किले की निशानिया विद्यमान हैं। नए बारकों में अब सरकारी आफिसों का काम होता है। एलौर में गरमी बहुत पडती है। उससे कई मील दक्षिण २१ मील लम्बा और १९ मील चौडा कोलर झील है।

इतिहास—पूर्व समय में एलौर उत्तरी सरकार की राजधानी था, इस कारण से यह इतिहासों में प्रसिद्ध है। पहिले यह वेंजी के राज्य का हिस्सा था। सन् १४८० में यह मुसल्मानों के अधिकार में था। बिजयानगर के राज्य की बढ़ती के समय यह फिर हिन्दुओं के आधीन हुआ था,

किन्तु सोलहवीं शदी के आरंभ में गोलकुन्डा के कुतबशाह ने इसको छीन लिया। उसके पश्चात् यह क्रम से दक्षी राजाओं, फरासीसियों और अङ्गरेजों के अधिकार में हुआ।

राजमहेंद्री।

एलौर के रेलवे स्टेशन से ६१ मील (बेजवाड़ा से ९८ मील) पूर्वोत्तर राजमहेंद्री का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते के गोदावरी जिले में (१७ अन्श उत्तर अक्षांश और ८१ अन्श, ४८ कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र से ३० मील पश्चिमोत्तर गोदावरीनदी के बाएं किनारे पर राजमहेंद्री प्रसिद्ध कसबा है। इसको शास्त्र में कलिंग देश के अन्तर्गत लिखा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय राजमहेंद्री में २८३९७ मनुष्य थे; अर्थात् १३९३४ पुरुष और १४४६३ स्त्रियां। इनमें २६१८८ हिन्दू, १७९३ मुसलमान, ४१३ कृस्तान और ३ जैन थे।

राजमहेंद्री के निकट गोदावरीनदी पर ५६ स्तंभ लगे हुए एक बड़ा पुल बना हुआ है। राजमहेंद्री सुन्दर बना हुआ कसबा है। कसबे में १ मिउजियम अर्थात् अजायबखाना, एक कालिज, १ पबलिकबाग, अस्पताल, २ गिरजा, कई एक स्कूल, जिलाजज, मातहत मजिष्ट्र और मुनसफ की कचहरियां, और २ जेलखाने हैं। इनमें से बड़े जेलखाने में लगभग १००० कैदी रह सकते हैं। जिले के प्रत्येक प्रसिद्ध स्थानों पर राजमहेंद्री से सड़क अथवा नहर गई है। जज की कोठी और कचहरियों के मकान एक ऊंची भूमि पर बने हैं। पुराने शहर पनाह का कुछ भाग अबतक विद्यमान है। कसबे के उत्तर और पूर्वोत्तर यूरोपियन लोग रहते हैं। राजमहेंद्री के पास गोदावरी की चौड़ाई लगभग ३ मील है। राजमहेंद्री से ४ मील दक्षिण धवलेश्वरम् कसबा है।

उड़ीसे के राजा महेंद्रदेव ने राजमहेंद्री को बसाकर अपनी राजधानी बनाई। यह राजा सन् ईस्वी के पहिले १०३७ और ८२२ के बीच में था, बहुत समय के बाद यह वेंगी राजाओं का बैठक हुआ। सन् १४७१ में मुसलमानों ने राजमहेंद्री को अपने अधिकार में कर लिया। सन् १५१२ में कृष्ण-

राय ने मुसलमानों से छीन कर इसको उड़ीसे में फिर मिलादिया। सन् १५७२ में डेकान के रफातखां के आधीन मुसलमानों ने इसको जीत लिया। बाद १५० वर्ष तक राजमहेंद्री में लड़ाई होती रही। उसके पश्चात यह गोलकुन्डा के बादशाह के आधीन हुआ। सन् १७५३ में यह फरासीसियों को मिला। सन् १७५४ से १७५७ तक यह बूसी का सदर स्थान था। सन् १७५८ में फरासीसी खदेरे गए। अन्त में अङ्गरेजों ने इसको लेलिया।

गोदावरी जिला—इसके उत्तर मध्यदेश के बस्तर का देशी राज्य और मदरास हाते का विजिगापट्टम् जिला; पूर्वोत्तर विजिगापट्टम् जिला, पूर्व और दक्षिण बंगाल की खाड़ी, दक्षिण-पश्चिम कृष्णा जिला और पश्चिम हैदराबाद का राज्य है। गोदावरी के मुहाने के पास गोदावरी के दोनों ओर यह जिला फैला है। जिले में खास करके इसके उत्तरी भाग में (अधिक) स्थान स्थान में गावदुमी पहाड़ियां हैं, जिन पर सघन जंगल लगे हैं। कई पहाडियों के जंगल अगम हैं। जिले के जंगलों में बांस, साबुन के फल, मधुमक्खियों का मोम इत्यादि पैदावार होते हैं और बाघ, तेंदुए, भेडिया, सूअर इत्यादि बनैले जंतु रहते हैं।

जिले की गोदावरी और सरारी इन दो नदियों में सर्वदा नाव चलती हैं। सरारी नदी गोदावरी में मिल गई है। राजमहेन्द्री से ४ मील दक्षिण धवलेश्वरम् कसबे के निकट और समुद्र से ३० मील उत्तर ओर गोदावरी नदी की दो प्रधान शाखा होगई हैं, जिनके बीच में अमलापुर ताल्लुक है। इनमें से एक मुहाने के पास नरसापुर कसबा और दूसरे के निकट फरासीसियों के अधिकार में अनाम बस्ती है। गोदावरी के ७ पवित्र धाराओं में से अन्तिम धारा नरसापुर के निकट अन्तरवेदी स्थान में है, वशिष्ठ धारा वहां समुद्र में मिली है। यात्रीलोग सातो धाराओं में स्नान करते हैं। अन्तरवेदी में कल्याणम् का तिहवार होता है, जो ९ दिन रहता है। उसमें लगभग २० हजार यात्री आते हैं। गोदावरी नदी ७ धाराओं से, जो सातो पवित्र समझी जाती हैं, समुद्र में मिली है। इनके नाम ये हैं;—तुल्यभागा, अत्रेया, गौतमी, वृद्ध-गौतमी, भरद्वाजा, कौशिका और वशिष्ठा। गोदावरी नदी बम्बई हाते के

नासिक के पास के त्र्यंबक से निकल कर ९०० मील दक्षिण-पूर्व बहने के उपरांत यहां गोदावरी जिले में समुद्र से मिली है। (इसकी कथा त्र्यंबक वृत्तान्त में देखो)। जिले के पश्चिमी भाग में एलौर कसबे से दक्षिण कोलर झील २१ मील लम्बी और १४ मील चौड़ी है। उसमें जगह जगह टापू और मछुओं के गांव देखने में आते हैं। बहुतेरे टापुओं में खेती होती है। झील में जल पक्षी और मछलियां बहुत हैं। यह झील कभी कभी १०० वर्ग मील से अधिक फैल जाती है। सूखी ऋतुओं में उसका विस्तार बहुत कम होजाता है; बहुतेरे भागों में केवल कीच रह जाता है। वह झील कृष्णा और गोदावरी इन दोनों जिलों में फैली हुई है। चन्द छोटी नदियों का पानी उसमें आता है। नदियों की मट्टी से झील का विस्तार धीरे धीरे घट रहा है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय गोदावरी जिले का क्षेत्र फल (एजेंसी देश के साथ, जिसका क्षेत्र फल ८२० वर्गमील है) ७३४५ वर्ग मील था, जिसमें १७९१५१२ मनुष्य थे; अर्थात् १७४८७३४ हिन्दू, ३८७९८ मुसलमान, ३८९३ क्रस्तान, १७ जैन और ७० दूसरे। हिन्दुओं में ५३५८५४ वेलाला, ४२३२१८ परिया, १६१२६८ साना (ताड़ी बेंचने वाली जाति), ८९४०२ ब्राह्मण, ७१७७६ कैकोला (बीनने वाली जाति), ६६१५१ इडैगा (भेड चराने वाली जाति), ५६४२४ वनियां (जाति विशेष, मजदूरी पेसे करने वाले), ४६६६१ सत्ली, ४५६३१ वनान (कपड़ा धोने वाले), ४३१७१ सेटी (सौदागर), ३५६७८ कमार, १९०११ अम्बातन (क्षौर कर्म करने वाले), और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय गोदावरी जिले के कसबे कोकानादा में ४०५५३, एलौर में ३९३८२, राजमहेंद्री में २८३९७, पीठापुरम् में १३७३१, पेडापुरम् में १३६५८, सामलकोट में १३४०९ और धवलेश्वरम् में १०४९२ मनुष्य थे। इनके अलावे इस जिले में अमलापुर, नरसापुर पल्लाकुडु, कपिलेश्वरपुरम्, कोरिंगा इत्यादि बहुत से छोटे कसबे हैं।

भद्राचलम्—राजमहेंद्री कसबे से लगभग १०४ मील और डुमागुडिम से १५ मील दूर गोदावरी के किनारे पर गोदावरी जिले के भद्राचलम्

तालुका का प्रधान कसवा भद्राचलम् है, जिसमें सन् १८८१ में १९०१ मनुष्य थे। गोदावरी के किनारे पर ४०० वर्ष का बना हुआ रामचन्द्र का मन्दिर है। वह पीछे समय समय पर बढ़ाया गया था। मन्दिर ऊंची दीवार से घेरा हुआ है। उसके दोनों बगलों में बीस पचीस छोटे मन्दिर हैं। गोदावरी से मन्दिर तक सीढ़ियां बनी हैं। मन्दिर के पास सालाना मेला होता है। मन्दिर के देवताओं के बहुमूल्य भूषण हैं। निजाम प्रतिवर्ष मन्दिर के खर्च के लिये १३००० रुपये देते हैं। भद्राचलम् से २० मील दूर परणेशला पुराना स्थान है। वहां चैत में मेला होता है। मेले में कपड़ा, बर्तन, मसाला इत्यादि वस्तु बिकती है। वहां सरकारी कचहरी, जेल, पुलिस और स्कूल है।

इतिहास—गोदावरी जिला पूर्व समय में द्रविड़ देश का अन्ध्र विभाग था। उस जिले में कई एक सौ वर्ष तक चालुक्य, नरपति और रेड्डी वंश के राजा और पहाड़ी लोग लड़ते रहे। मुसलमानों ने लगभग १५० वर्ष लड़ाई होने के पश्चात् सन् १४७१—१४७७ के बीच में हिन्दू राजाओं को अपने आधीन बनाया। सन् १५१६ में विजयानगर के राजा कृष्णराय ने देश को लूटा और कुछ दिनों के लिये वहां फिर हिन्दू राज्य नियत किया। छोटे छोटे हिन्दू राजाओं ने कुछ दिनो तक स्वतंत्र होकर राज्य किया, किन्तु फिर संपूर्ण देश मुसलमानों के अधिकार में होगया। सन् १६८७ में औरंगजेब ने कुतबशाही खांदान के बादशाह से इस जिले को लेलिया। यह निजाम आसफजाह के गवर्नर के आधीन हुआ। सन् १७१८ में आसफजाह के मरने के समय से अंगरेज और फरासीसियों में लड़ाई आरंभ हुई। सन् १७६५ में अंगरेजों ने दिल्ली के बादशाह से सनद पाकर उत्तरी सरकार पर अपना अधिकार जमाया। सन् १८०२—१८०३ में दायमी बन्दोबस्त हुआ। सन् १८५९ में सीमा ठीक किई गई। गंटूर, राजमहेन्द्री और मछलीपट्टम्, तीनो जिलों से कृष्णा और गोदावरी दो जिले बनाए गए।

धवलेश्वरम्।

राजमहेन्द्री से ४ मील दक्षिण मदरास हाते के गोदावरी जिले के राजमहेंद्री

ताल्लुक में गोदावरी नदी के किनारे पर धवलेश्वरम् एक कसबा और अति मनोरम स्थान है। उससे लगभग ३० मील दक्षिण समुद्र है। धवलेश्वरम् के निकट से गोदावरी नदी की दो बड़ी शाखा होगई है, जिनमें से एक के मुहाने के पास गोदावरी जिले का नरसापुर कसबा और दूसरे के पास फरासीसियों के अधिकार में अनाम बस्ती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय धवलेश्वरम् में १०४९२ मनुष्य थे; अर्थात् १००१५ हिन्दू, ३१६ मुसलमान और १६१ कृस्तान।

धवलेश्वरम् में जिले का एञ्जिनियरिंग महकमा है। आस पास की पहाड़ियों पर यूरोपियन लोगों की पुरानी कोठियां हीन दशा में विद्यमान हैं। खानों से मकान बनने के काम का अच्छा पत्थर निकलता है। खानों का काम उन्नति पर है। धवलेश्वरम् से एक ३२ मील की नहर कोकानाडा को और अन्य भी कई नहर समुद्र के किनारे तक गई हैं।

जिस जगह गोदावरी नदी की दो बड़ी शाखा होगई हैं, वहां १२ फीट ऊंचा और १६५० गज लम्बा, जो पिचिका टापू तक फैला है, एक बड़ा बांध बना हुआ है। उसका काम सन् १८४७ में आरम्भ हुआ; उसके बनने में १५१७०७० रुपया खर्च पड़ा।

कोकानाडा।

राजमहेंद्री से ३२ मील (बेजावाड़ा से १३० मील) पूर्वोत्तर सामलकोटा जंक्शन का रेलवे स्टेशन है। सामलकोटा से दक्षिण-पूर्व ९ मील की रेलवे शाखा समुद्र के किनारे पर कोकानाडा को गई है। कोकानाडा मदरास हाते के गोदावरी जिले में प्रधान कसबा और बंदरगाह है, जिससे ५४५ मील पूर्वोत्तर कलकत्ता और ३१५ मील दक्षिण कुछ पश्चिम मदरास शहर है। कोकानाडा और सामलकोटा के बीच में नहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कोकानाडा में ४०५५३ मनुष्य थे; अर्थात् २०३२८ पुरुष और २०२२५ स्त्रियां। इनमें ३७९५१ हिंदू, १६९० मुसलमान, ९०७ कृस्तान, ५ बौद्ध, ४ पारसी, ४ जैन और २ यहूदी थे।

कोकानाडा गोदावरी जिले का सदर स्थान है। इसमें मजिष्टर और उनके आधीन हाकिमों की कचहरियां, स्कूल, अस्पताल, जेलखाना इत्यादि सरकारी इमारतें बनी हैं। सामुद्रिक माल रखने के लिये कष्टम हौस हैं। सैकड़ों यूरोपियन सौदागर रहते हैं। जिले के जज की कचहरी राजमहेंद्री में है। कोकानाडा और जगन्नाथपुर के बीच में,जो दोनों एक म्युनिसिपल्टी में सामिल हैं, एक लोहे का पुल बना है। समुद्र के ज्वार होने पर लोग पुल द्वारा कोकानाडा से जगन्नाथपुर जाते हैं।

गोदावरी और कृष्णा जिले की रुई,तेल के बीजे और चावल कोकानाडा से जहाजों द्वारा यूरुप में भेजे जाते हैं। लोहा, तांबा, शोरा इत्यादि चीजें दूसरे स्थानों से कोकानाडा में आती हैं।

पीठापुरम्।

सामलकोटा के रेलवे जंक्शन से ७ मील (बेजवाड़ा से १३७ मील) पूर्वोत्तर पीठापुरम् का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते के गोदावरी जिले के पीठापुरम् तालुक में पीठापुरम् एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पीठापुरम् में १३७३१ मनुष्यथे; अर्थात् १२६४३ हिंदू, १०६९ मुसलमान, १८ बौद्ध और १ कृस्तान।

पीठापुरम् में पादगया तीर्थ, कचहरी, स्कूल, पोष्टआफिस और एक जमीदार राजा हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय राजा के राज्य का क्षेत्रफल ३७१ वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या १८४०१८ थी। राजा वेलमा जाति के हैं। लोग कहते हैं कि राजा के पुरुषे अवध से आए थे। सन् १६४७ में वहां इनकी मिलकियत कायम हुई। राज्य से ८११००० रुपये की आमदनी है, जिसमें से २४९००० रुपया सरकार को पेसकस दिया जाता है। वर्तमान राजा का नाम राजा राजाराव गंगाधररामराव है।

अनकापल्ली।

पीठापुरम् से ६४ मील (बेजवाड़ा जंक्शन से २०१ मील) पूर्वोत्तर अन-

कापल्ली का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते के विजगापटम् जिले में सारदा-नदी के पास अनकापल्ली तालुक का सदर स्थान अनकापल्ली कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय अनका पल्ली में १७०१० मनुष्य थे, अर्थात् १६७३७ हिंदू, २५६ मुसलमान और १७ कृस्तान।

अनकापल्ली कसबे में सरकारी कचहरी, जेलखाना, स्कूल, अस्पताल इत्यादि इमारतें बनी हैं। कसबा उन्नति पर है। एक सड़क कसबे से समुद्र के किनारे तक गई है। अनकापल्ली के आसपास विजयानगर के राजा की जमींदारी है।

विजिगापट्टम्।

अनकापल्ली से २१ मील (बेजवाड़ा से २२२ मील) पूर्वोत्तर वालटेयर का रेलवे स्टेशन है, जिससे दक्षिण-पूर्व २ मील की रेलवे शाखा विजगापट्टम् को गई है। मदरास हाते में (१७ अंश, ४१ कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ८३ अंश, २० कला, १० विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र के किनारे पर जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा विजिगापट्टम् है, जिसको विशाखपट्टनम् अर्थात् कार्तिकेय का नगर भी कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय विजिगापट्टम् में ३४४८७ मनुष्य थे; अर्थात् १६७०२ पुरुष और १७७८५ स्त्रियां। इनमें ३०९६६ हिंदू, २२३६ मुसलमान, १२७२ कृस्तान, ९ जैन, ३ पारसी और १ बौद्ध थे।

विजिगापट्टम् में जिले के जज, मजिष्ट्र, सब मजिष्ट्र, की कचहरियां, जेलखाना, गिरजा, कई एक स्कूल, अस्पताल, मिशन, २ अतीमखाना, १ गरीबखाना, १ कोढ़ीखाना, और छोटी फौजी छावनी है। सड़कों पर रात में लालटेनों की रोशनी होती है। कसबे के पश्चिम एक बड़ा दलदल और दक्षिण ओर कसबे और समुद्र के बीच में एक छोटी नदी है, जिसमें दो घाट बने हुए हैं। किले के भीतर अंगरेजी पैदल सेना के लिए बारके अर्थात् सैनिकगृह और हथियारखाना बने हुए हैं। किले के भीतर सेसन की कचहरी होती है और दूसरे अनेक सरकारी इमारतें और एक गिरजा है।

कसबे के निकट छोटा बन्दरगाह है। सन् १८८३-१८८४ में लगभग ७४०००० रुपये के माल बंदरगाह में आए और २२१८००० रुपये के माल वहां से दूसरे देशों में गए। खास करके छोटी छोटी चीजें और अनेक भांति के धातु इंगलैंड से आते हैं और गल्ले, चीनी इत्यादि वस्तु विजिगापट्टम् से दूसरे स्थानों में जाती है। कसबे में हाथीदांत, भैंस और हरन के सींग, चंदन की लकड़ी और चांदी की सुन्दर चीजें तैयार होती हैं। और बक्स, डेस्क इत्यादि कई प्रकार की चीजें बहुत उत्तम बनती हैं।

विजिगापट्टम् जिला—इसके उत्तर गंजाम जिला और मध्यदेश; पूर्व गंजाम जिला और बंगाल की खाड़ी, दक्षिण बंगल की खाड़ी और गोदावरी जिला और पश्चिम मध्यदेश है। यह जिला सुंदर पहाड़ी देश है, किंतु इसका अधिक भाग रोग वर्द्धक है। पूर्वी घाट पहाड़ियों का सिल सिला जिले में पूर्वोत्तर से दक्षिण-पश्चिम गया है, जिससे जिला दो भागों में बंट जाता है। इनमें से बड़ा हिस्सा पहाड़ी देश और छोटा हिस्सा समतल है। जिले में समुद्र से ५००० फीट से अधिक ऊंची कोई पहाड़ी नहीं है। बंगाल की खाड़ी के निकट की भूमि उपजाऊ है। विजिगापट्टम् कसबे से १८ मील पूर्वोत्तर इसी जिले में समुद्र के किनारे पर ८७०४ मनुष्यों की बस्ती बिमलीपट्टन् एक बंदरगाह है, जहां कलकत्ते और ब्रह्मा के कई आगबोट लगते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय जयपुर और विजयानगरम् की जमीन्दारियों के साथ विजिगापट्टम् जिले का क्षेत्रफल लगभग १७३८० वर्गमील और उसकी मनुष्य संख्या १७९०४६८ और जिले की एजेंसी की, जिसके भीतर खास करके असभ्य जातियों के लोग बसते हैं, मनुष्य-संख्या ६९४६७३ दोनों मिल कर २४८५१४१ थी। इनमें २४६०४७४ हिन्दू, जिनमें जंगली असभ्य लोग भी शामिल हैं, २०४०३ मुसलमान ३४१० कृस्तान, ६७५ बौद्ध, २० जैन और १५९ अन्य थे। हिंदुओं में ८९१५९८ वेलाला (जो खास करके खेती करते हैं) २४१११७ परिया, १२२१९८ इडैगा (भेड़ पालते हैं), ८८४९० फैकोला (बीनाई का काम करते हैं), ७३३९८ कमालर (कारीगर),

७०३४१ साना (ताड़ी का काम करते हैं), ६७९६४ ब्राह्मण, ६७४३७ धनान (कपड़ा धोते हैं), ३४९०० सतानी, ३३४०० सेटी (व्यापार करते हैं), २९२६६ अंबातन (हजाम), २१४२३ क्षत्री, १६९९६ मछुहा, १५८६८ कनाकन (लिखने का काम करते हैं) १५०५९ कुमवन (मट्टी के बर्तन बनाते हैं), १४४८९ बनिया (जाति विशेष) और बाकी में दूसरी जातियों के लोग थे। आदिनिवासी जातियों में खास करके गोंड, गदवा, खांद इत्यादि थे । जिले के एजेंसी के आधीन खास कर आदि निवासी असभ्य लोग बसते हैं; उसकी मनुष्य-गणना ३ या ४ महीनों में एक दूसरी रीति से की गई थी।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बिजिगापट्टम् जिले के कसबे बिजिगापट्टम् में ३४४८७, विजयानगरम् में ३०८८१, अनकापल्ली में १७०१०, बोबिली में १४४६८, सालूर में १२९१७, पालकोंडा में १०३६७ और पार्वतीपुर में १००५३ मनुष्य थे। इनके अलावे इस जिले में बिमलीपट्टम् और कासिमकोटा भी छोटे कसबे हैं।

जयपुर का राज्य—बिजिगापट्टम् जिले के पश्चिमी भाग में जयपुर का जमींदारी राज्य है । उसका क्षेत्रफल ९३३७ वर्गमील है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ६१२००० मनुष्य थे । राजा को १६००० रुपया पेशकस अंगरेजी सरकार को देन पड़ता है । राज्य में बहुत पहाड़ियां हैं, किन्तु ९००० फीट से अधिक ऊंची कोई नहीं है । बहुत भाग पहाड़ी जाति खांद लोगों के अधिकार में है, जो लोग पहिले समय में पृथ्वी को मनुष्यवलि देते थे । सन् १८४९ में इस काम को रोकने के लिए अंगरेज सरकार की ओर से खास एजेंट नियत किया गया । राजधानी जयपुर में राजा का महल और कई एक देवमन्दिर सुन्दर बने हुए हैं; अन्य प्रायः सब मट्टी की झोपड़ियां हैं । वहां के वर्तमान राजा महाराज रामचन्द्रदेव जाति के क्षत्रिय हैं ।

बोबिली राज्य—बिजिगापट्टम् जिले में विजयानगरम् के उत्तर बोबिली का जमींदार राज्य है। यह राज्य मदरास हाते के बहुत पुराने राज्यों में से एक है । इसका क्षेत्र फल ९२० वर्गमील है, जिसमें सन् १८८१ की म-

नुष्य-गणना के समय १६८१७८ मनुष्य थे । राजा को राज्य से लगभग ३७५००० रुपया मालगुजारी आती है। बोबिली राजधानी में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १४४६८ मनुष्य थे; अर्थात् १४०७५ हिन्दू, ३३१ मुसलमान और ६० कृस्तान । वहां के वर्त्तमान नरेश राजा व्यंकटेश्वरावळ पंथी रंगाराव वेलमा जाति के हैं ।

विजिगापट्टम् का इतिहास–विजिगापट्टम् का वर्तमान जिला हिन्दू इतिहास के आरम्भ में कलिंग राज्य का एक भाग था । पीछे उसको चालुक्य वंश के पूर्वी शाख के प्रधान ने जीता । वह कभी कभी उड़ीसा के गजपति वंश के राजाओं के और कभी कभी तेलिंगाना के राजाओं के आधीन होता था। चौदहवीं शदी के मध्य भाग में अन्ध्र वंश के राजा कुलोटगा-चोला ने विजिगापट्टम् कसबे को बसाया । पीछे वह जिला आस पास के देश के साथ बहमनी वंश के राजा को मिला; किन्तु उड़ीसे के राजा ने उस देश को फिर लेलिया । पीछे कुतुबशाही खांदान के इब्राहिम ने उत्तर चिकाकोल तक संपूर्ण देश को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया । सत्रहवीं शदी के मध्य में इष्टइण्डियन कम्पनी ने विजिगापट्टम् में अपनी कोठी कायम की। सन् १६८७ में मुगल बादशाह औरंगजेब ने गोलकुंडा को जीता; तबसे उत्तरी सरकार, जिसमें विजिगापट्टम् जिला है, बराय नाम के दिल्ली की बादशाहत का एक भाग बना। सन् १६८९ में मुगलों ने इष्टइण्डियन कम्पनी की कोठी को छीन करके कोठी वालों को मार डाला; किन्तु दूसरे वर्ष वह कोठी फिर उसको मिलगई और शीघ्रही वहां किलाबंदी बनाई गई ।

मुगलों के निर्बल होने पर उत्तरी सरकार हैदराबाद के निजाम के अधिकार में आया। पहिला निजाम को मृत्यु होने पर गद्दी के लिए झगड़ा हुआ। फरासीसियों ने सलावतजंग की सहायता की, इस लिये उसने उनको मुसतफा नगर, एलोर, राजमहेन्द्री और चिकाकोल नामक चारो सरकारों को दे दिया। सन् १७५३ में फरासीसियों ने चारो सरकारों के लिए फरमान हासिल किया। सन् १७५९ में अंगरेजों ने गोदावरी जिले में फरासीसियों को परास्त करके उनसे मछलीपट्टम् का किला छीन लिया; तब निजाम ने

इष्टइण्डियन कम्पनी को मछलीपट्टम् के चारो ओर का देश दे दिया। सन् १७६५ में कम्पनी को शाही फरमान द्वारा सब उत्तरी सरकार मिल गए। सन् १७६८ में निजाम के साथ कम्पनी की एक सन्धि हुई, जिसके अनुसार निजाम ने भी उत्तरी सरकारों को कम्पनी को देदिया। इस तरह से दूसरे देशों के साथ विजिगापट्टम् अंगरेजों के अधिकार में होगया। पीछे कई बार बगावत हुई; किन्तु बढ़ने नहीं पाई।

विजयानगरम्।

वालटेयर जंक्शन से ३८ मील और विजिगापट्टम् कसबे से ४० मील (बेजवाड़ा से २६० मील) पूर्वोत्तर विजयानगरम् का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते के विजिगापट्टम् जिले में (१८ अन्श, ६ कला, ४९ विकला उत्तर अक्षांश और ८३ अन्श, २७ कला, २० विकला पूर्व देशांतर में) विजयानगरम् एक कसबा है, जिसको कुछ लोग ईजानगर कहते हैं। विजयानगरम् के महाराज की राजधानी होने से यह अधिक प्रसिद्ध है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय विजयानगरम् में ३०८८१ मनुष्य थे; अर्थात् १४८८२ पुरुष और १५९९९ स्त्रियां। इनमें २८७४२ हिन्दू, १८२० मुसलमान, २१५ कृस्तान, ३ पारसी और १ अन्य थे।

विजयानगरम् एक सुन्दर कसबा है। इसमें एक सुन्दर बाजार, महाराज का दिया हुआ एक टौनहाल, एक बड़ा स्कूल और कई सरकारी इमारते हैं और एसिस्टेंट कलक्टर रहते हैं। किले के भीतर महाराज का विशाल महेल और अन्य मकान बने हुए हैं। किले से १ मील दूर ऊंची भूमि पर अंगरेजी फौजी छावनी है, जिसमें देशी पल्टन की एक रेजीमेन्ट रहती है। किले और छावनी के मध्य में सड़क के पास एक बड़ा तालाब है, जिसमें सर्वदा पानी रहता है।

महाराज की जमींदारी—यह विजिगापट्टम् जिले में भारतवर्ष की पुरानी और फैली हुई जमींदारियों में से एक है। सन् १८८१ की मनुष्य ग

णना के समय इसके लगभग ३००० वर्गमील के क्षेत्रफल में १२५२ गांव, १८५९०४ मकान और ८४४१६८ निवासी थे। महाराज अंगरेजी गवर्नमेन्ट को ४९६६८० रुपया पेशकस अर्थात् जमींदारी का लगान देते हैं।

इतिहास—सन् ५९१ ई० में माधववर्मा नामक एक क्षत्रिय ने कृष्णा नदी की घाटी में राजपूतों का नया देश बसाया, जिसके वंश में विजयानगरम् के वर्त्तमान महाराज हैं। गोलकुण्डा के राज्य के समय उस वंश के लोग गोलकुण्डा की कचहरी के प्रसिद्ध सरदार थे। सन् १६५२ में उस वंश के पशुपति माधववर्मा विजिगापट्टम् में आकर रहने लगे। बाद पशुपति वंश वाले उत्तरी सरकारों में सबसे अधिक बलवान हुए। लगभग सन् १७१० में पशुपति माधववर्मा के मरने पर उनके पुत्र पद्दा विजयरामराज उत्तराधिकारी हुए। उन्हीने सन् १७१२ में पोटनूर को छोड़ कर अपनी नई राजधानी बसाई और उस का नाम अपने नाम के अनुसार विजयानगरम् रक्खा। उन्हीने विजयानगरम् में किला बनाया और अपने अधिकार को बढ़ाया। सन् १७५७ में उन्होंने फरासीसियों की सहायता से अपने वंश के शत्रु बोबिली के जमींदार को मार डाला; किन्तु दो रात के पीछे उस जमींदार के २ नोकरों ने उनको प्राण रहित कर दिया। उसके बाद पद्दा विजयरामराज के उत्तराधिकारी आनन्दराज और आनन्दराज के उत्तराधिकारी उनके दत्तक पुत्र विजयरामराज, जो निरे बच्चे थे, हुए। विजयरामराज के वैमात्रिक भाई सीतारामराज राज्य का काम करने लगे। उन्होंने सन् १७६१ में पर्लाखेमडी के राज्य पर आक्रमण करके राजा की फौज को चीकाकोल में परास्त करके एक बड़े देश को प्राप्त किया और राजमहेंद्री की लड़ाई में भी उनकी जीत हुई। उस समय जयपुर, पालकुण्डा और आस पास के अन्य बहुत जमीन्दारों ने पशुपति वंश के राजा को अपना सरदार स्वीकार किया। अंगरेजों ने भी अपनी सेना से उनकी सहायता की थी। पीछे सीतारामराज का बल बढ़ा हुआ देखकर इष्टइन्डिया कम्पनी को अपने राज्य का भय हुआ, इसलिये सीताराम कुछ दिन के लिये अलग कर दिये गए। सन् १७९० में वह वापस आये थे; किन्तु सन् १७९३ में फिर मदरास रहने के लिये भेजे गये। युवा होने पर राजा विजय-

रामराज अपने मन में मरना कबूल करके अंगरेजों के साथ लड़ने को तैयार हुए। सन् १७९४ की जून में अंगरेजी सेना ने पद्मनाभ में थोड़ीसी लड़ाई के बाद उनको परास्त किया। राजा और बहुतेरे प्रधान मारे गये। राजा के शिशु पुत्र नारायणबाबू पहाड़ी जमीदारों की रक्षा में चले गये। पीछे नारायणबाबू और पहाड़ी प्रधान लोग अंगरेजों के आधीन हुए। विजयानगरम् के चन्द हिस्से निकाल लिए गए। राजा के राज्य का ६००००० रुपया पेशकस नियत हुआ; किन्तु सन् १८०२ में दायमी बंदोबस्त होने के समय अंगरेजी गवर्नमेन्ट ने विजयानगरम् के राज्य का पेशकस५लाख रुपया कर दिया। उस समय राज्य में ११५७ गांव थे। सन् १८४५ में नारायणबाबू बहुत करजदार होकर और अपनी मिलकियत का प्रबंध अंगरेजी गवर्नमेंट के हाथ में छोड़कर काशीजी में मरगए। विजयराम गजपतिराज उनके उत्तराधिकारी हुए। पशुपति घराने के राजाओं को गवर्नमेंट से मिर्जा और मनिया सुल्तान की पदवी और १९ तोपों की सलामी मिलती थी; परन्तु सन् १८४८ में पदवी घटा दी गई और सलामी १९ के स्थान पर १३ तोपों की कीगई, जो अब तक मिलती है। १८५२ में राजा विजयराम गजपतिराज को राज्य का अधिकार मिला। उस समय उनकी मिलकियत अच्छी हालत में होगई थी। सन् १८६४ में राजा को हिज हाईनेस महाराजा की और उसके पश्चात् के० सी० एस० आई० की पदवी मिली। सन् १६७७ में उनको १३ तोपों की सलामी मिलने का अधिकार हुआ। महाराज बड़े बुद्धिमान और दानी थे। उन्होंने अनेक सड़क, पुल और अस्पताल बनवाए और विजयानगरम् कसबे की अनेक उन्नति की। उन्होंने खैरात और सर्व साधारण लोगों के हित के कामों में खास करके काशीजी और अपने राज्य में लगभग १० लाख रुपया खर्च किया। मदरास, कलकत्ता और लंडन में भी उनकी उदारता का स्मारक चिन्ह है। सन् १८७८ में महाराज विजयराम गजपतिराज की मृत्यु होने पर उनके पुत्र विजयानगर के वर्तमान नरेश आनरेल हिज हाईनेस महाराजा सर पशुपति आनंद गजपतिराज के०सी०आई० ई०, जिनका जन्म सन् १८५० ई० में हुआ था, उनके उत्तराधिकारी हुए। सन् १८८४ में वह मदरास के लेजिस लेटिव कौंसल के मेंबर बनाए गए।

चिकाकोल।

विजयानगरम् से ४३ मील (बेजवाड़ा से ३०३ मील) पूर्वोत्तर चिकाकोल रोड का रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से कई मील पूर्व मदरास हाते के गंजाम जिले में (१८ अंश, १७ कला, २५ विकला उत्तर अक्षांश और ८३ अन्श, ५६ कला, २५ विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र से ४ मील दूर चिकाकोल ताल्लुक का सदर स्थान चिकाकोल कसबा है। कसबे के पास एक छोटीनदी पर पुल बना हुआ है। कटक से मदरास जानेवाली बडी सड़क कसबे होकर गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय चिकाकोल में १८०४१ मनुष्य थे, अर्थात् १७३१५ हिन्दू, ८३६ मुसलमान, ७७ कृस्तान, ३ बौद्ध और १० दूसरे।

चिकाकोल में जेलखाना स्कूल, अस्पताल, सरकारी कचहरियां और अनेक मसजिद हैं, जिनम से सन् १६४१ की बनी हुई गोलकुन्डा के बादशाह के फौजदार शेरमहम्मद खा की मसजिद प्रसिद्ध है। कसबे से उत्तर पुराने किले की खाई के भीतर ऊपर लिखी हुई सरकारी इमारतों में से बहुतेरी इमारतें हैं। सन् १८८१ में कसबे के निवासियो में से सैकडे पीछे २० आदमी सौदागर और ८ मनुष्य कपडे इत्यादि के बीनने वाले थे।

कुछ दिनो के लिये चिकाकोल जिले का सदर स्थान था। सन् १८६६ में अकाल से कसबे की बडी हानी हुई। सन् १८७६ में एक बाढ़ से पुल की ६ मेहराबियां और कसबे के बहुतेरे मकान और माल बहगए।

पर्लाखेमडी।

चिकाकोल रोड से २९ मील (बेजवाडे से ३३२ मील) पूर्वोत्तर नवा पाडा का रेल्वे स्टेशन है। स्टेशन से लगभग २५ मील पश्चिमोत्तर मदरास हाते के गंजाम जिले में (१८ अंश, ४६ कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ८४ अंश, ८ कला पूर्व देशांतर में) एक जमींदारी का प्रधान कसबा पर्लाखेमडी है।*

* नवापाडा से २५ मील की रेलवे शाखा पर्लाखेमडी कसबे को गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय उस कसबे में १६३९० मनुष्य थे; अर्थात् १५९२४ हिंदू, ३१० मुसलमान, १०७ एनिमिष्टिक, ३७ कृस्तान और १२ अन्य।

पर्लाखेमडी नाम दो गावों के नाम से बना है। कसबे के जमीदार के, महल के बनाने में ४ लाख रुपये खर्च पड़े हैं।

ब्रह्मपुर।

पर्लाखेमडी रोड के स्टेशन से ७९ मील (बेजवाडा में ३९४ मील) पूर्वोत्तर ब्रह्मपुर का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते में (१९, अन्श, १८ कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ८४अन्श, ४७ कला,५०विकला पूर्व देशातर में) गंजाम जिले का सदर स्थान और फौजी स्टेशन ब्रह्मपुर एक सुंदर कसबा है। कटक से मदरास जाने वाली बडी सड़क ब्रह्मपुर होकर गई है। ब्रह्मपुर से १८ मील पूर्वोत्तर गंजाम कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय ब्रह्मपुर कसबे और इसकी फौजी-छावनी में २५६५३ मनुष्य थे; अर्थात् १२३९७ पुरुष और १३२५६ स्त्रियां। इनमें २३७६४ हिंदू, १३६४ मुसलमान, ४८८कृस्तान, और ३७ एनिमिष्टिक थे।

ब्रह्मपुर में जज, मजिष्टर आदि हाकिमो की कचहरियां, फौजी छावनी, जिला जेल,कालिज, अस्पताल, अनेक देवमन्दिर और २ गिरजे हैं। चीनी की सौदागरी बहुत होती है। वहां का विनाहुआ रेशमी कपड़ा बहुत अच्छा होता है। वहां मदरास बंक की एक शाखा खुली है। कसबे से दूर पश्चिम और उत्तर पहाडियां हैं। कसबा का पवन पानी रोगनाशक है। ब्रह्मपुर से पूर्व ९ मील गंजाम जिले का प्रधान बंदरगाह गोपालपुर और पूर्वोत्तर रेलवे पर १४ मील छत्तरपुर, ३० मील रंभा, ९२ मील खुरदारोड, १०४ मील भुवनेश्वर और ११४ मील कटक रोड का स्टेशन है।

ब्रह्मपुर में शिवमतावलवी लिंगायत लोग बहुत देख पड़ते है। उनमें स्त्री पुरुष सबके गले में चांदी का एक शिवलिंग लटका रहता है। उनमें से कोई कोई लिंग को रूमाल में लपेटकर अपने गले में अथवा वाम भुजा पर बांधते हैं।

वे लोग सर्वदा भस्म धारण करते हैं। लिंगायत मनुष्य के देहांत होने पर उसके गुरु मृतक के गले में शिव के नाम की चिट्ठी बांध देते हैं । चिट्ठी में लिखा रहता है कि हे शिव ! इस अपने भक्त को स्थान दो इत्यादि ।

गंजाम जिला—मदरास हाते के पूर्वोत्तर की सीमा के पास गंजाम जिला है । इसके उत्तर उड़ीसा के दसपल्ला, बोद इत्यादि मालगुजार राज्य; पूर्व पुरी जिला और बंगाल की खाड़ी; पश्चिम मध्य देश का पटना और कालाहंडी का राज्य और दक्षिण मदरास हाते का बिजगापट्टम् जिला है।

गंजाम जिले का क्षेत्रफल ८३११ वर्ग मील है; जिसमें से ५२०५ वर्ग मील में एजेंसी या पहाड़ी देश है । जिले में १६ बड़ी और ३९ छोटी छोटी जमींदारियां हैं । पहाड़ियां बहुत हैं, जिनमें से बहुतेरियों पर सघन जंगल लगे हुए हैं । जगह जगह घाटी और उपजाऊ मैदान हैं। समुद्र के किनारे पर लोना पानी की झीलों का एक जंजीरा है। बहुतेरी नदियां, जिनमें ऋषिकुल्या, वमसा धारा और लंगुलिया प्रधान हैं; बहती हैं। जंगलों में मधु बहुत होता है । चरागाह की जमीन फैली हुई है । पहाड़ियों में बनैले जंतु बहुत रहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय गंजाम जिले में १७४९६०४ मनुष्य थे; अर्थात् १७४११७४ हिन्दू, केवल ६०७३ मुसलमान, १५५१ कृस्तान, २७० बौद्ध और ५३६ अन्य । इनमें से २४१३०२ मनुष्य पहाड़ी देशों में और बाकी लोग मैदानों में थे । जातियों के खाने में ४६१९९६, वेलाला, १९८१७९ परिया, १२७८६९ ब्राह्मण, ५६६६७ इडैगा, ४४९७० कुंभार, ४४४६७ साना, ५२०१२ बनिया (जाति विशेष), ४१८६६ संदवा, ४०४६२ बनान, ३८१०४ कैकोला, ३०६८३ मेटी, २९६७० सतानी, २९६६९ कनाकन, २५२०६ अंबातन, १५६६० कुसवन, ४१४३ क्षत्रिय और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे । गंजाम जिले के मैदानों के लोग तैलंगी और उड़िया भाषा और पहाड़ी कामों के लोग खांद और शवर भाषा बोलते हैं । आदि निवासीयों में खास करके खांद और शवर हैं; किंतु ये प्रायः सबलोग अब हिन्दू पन पर चलते हैं और हिंदुओं में गिने गए हैं । जिले के मनुष्यों में

७७७८५८ उड़ियाभाषा वाले और वाकी में ६९२०३१ तैलंगीभाषा बोलने वाले थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय गंजाम जिले के कसबे ब्रह्मपुर में २५६५३, चिकाकोल में १८२४१ और पर्लाखेमदी में १३३९० और सन् १८८१ में रघुनाथपुरम् में ७६३४, इच्छापुर में५५२८,गंजाम में ५०३७, कलिंगापट्टम् में ४४६५, मंदासा में ४६७१, नरसनापेट में ४२३०; वरुआ में ४२९८ और शेष में ४००० से कम मनुष्य थे।

गंजाम कसबा, जो सन् १८१५ ई० तक जिले का सदर स्थान था; समुद्र के समीप ऋषिकुल्यानदी के मुहाने के पास है। ऋषिकुल्यानदी के दक्षिण एक पुराना किला खड़ा है। गंजाम के पास कभी कभी यूरोपियन आग-बोट आते हैं। चावल वहांसे दूसरे देशों में भेजा जाता है। सरकार वहां नमक तैयार करती है।

इतिहास—पूर्व काल में गंजाम दक्षिणी कलिंगाराज्य का एक भाग था। बहुत दिनों तक का इतिहास मालुम नहीं है। सन् १६४१ में कुतुबशाही राज्य के बादशाह ने शेरमहम्मदखां को उस देश पर हुकूमत करने के लिये फौजदार बनाकर चिकाकोल में भेजा। वर्त्तमान गंजाम जिला मुसलमानों के आधीन चिकाकोल सरकार का एक भाग बना। गंजाम के निकट ऋषिकुल्या नदी के दक्षिण का देश काशीबूगा तक इच्छापुर नामक देश करके प्रसिद्ध था। सन् १७५३ में निजाम सलाबतजंग ने फरासीसियों को उत्तरी सरकारों को देदिया। सन् १७५९ में अंगरेजों ने मसुलीपट्टम् को लेलिया। जब उत्तरी सरकार अङ्गरेजों के आधीन होगए, तब फरासीसियों ने गंजाम और उत्तर की अपनी कोठियों को छोड़ दिया। सन् १७६६ में मुगल बादशाह ने अपने फरमान द्वारा उत्तरी सरकारों को अङ्गरेजों को देदिया। सन १७६८ में गंजाम अंगरेजी रेजीडेंट के आधीन हुआ और वहां एक अंगरेजी कोठी नियत की गई। सन् १७०२ तक इच्छापुर देश का प्रबंध रेजीडेंट, कौंसिल और कलक्टर द्वारा होता था। उसी सन् में पुंडीनदी के दक्षिण के चिका-कोल तक के देश का (वर्त्तमान) गंजाम जिला बनाया गया। सन् १८३६

में अंगरेज सरकार को जान पड़ा कि खांद लोग मनुष्य बलि देते हैं, तो उन्होंने उनको परास्त करके उस असभ्य रीति को रोक दिया। सन् १८६६ में खांद लोगों ने बलवा किया था; किन्तु बहुत सहज में वे दबाए गए। उस समय से देश में कोई बलवा नहीं हुआ है।
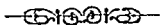
सातवां अध्याय।

(मदरास हाते में) पनानृसिंह, गुंटूर, मल्लिकार्जुन, करनूल, गुंटकल जंक्शन बल्लारी, कुमारस्वामी, होसपेट और-किष्किन्धा।

पनानृसिंह।

बेजवाड़े से ७ मील दक्षिण-पश्चिम मंगलगिरि का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते के कृष्णा जिले में मंगलगिरि एक छोटा कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ५६१७ मनुष्य थे। कसबे में ११ खन के विशालगोपुर से सुशोभित लक्ष्मीनृसिंह का मन्दिर है, जिसके सामने सुन्दर चित्रों से भूषित नृसिंहजी का काष्ठमय रथ रक्खा हुआ है।

मंगलगिरि पहाड़ी पर एक मन्दिर के कोने में पनानृसिंह की मूर्ति पश्चिम-मुख से विराजमान है। उसके पासही सामने लक्ष्मीजी की मूर्ति है। मन्दिर में सर्वदा दीप जलता है। शिखर के ऊपरी भाग में लक्ष्मीजी का स्थान है, जिसके आस पास बालाजी, रंगनाथ आदि देवमूर्तियां स्थापित हैं। इसी पहाड़ी पर हनूमानजी की एक मूर्ति है। नृसिंहजी के मुख में पना अर्थात् गुड़ अथवा सक्कर का सर्वत पिलाया जाता है, इसी कारण से उनको लोग पनानृसिंह और गुड़ोदकपान नृसिंह कहते हैं। यात्रीगण उनके मुख में गुड़ वा

सक्कर का सर्वत वते हैं । वहां के पुजारी रामानुज संप्रदाय के वैष्णव हैं। उस देश में जगह जगह नृसिंहजी की मूर्ति है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—नृसिंहपुराण—(४४ वां अध्याय) नृसिंह भगवान सब लोगों के हित के लिये श्रीशैल के शिखर पर देवताओं से पूजित होकर विख्यात हुए, और अपने भक्तों के हित के लिये उसी स्थान पर स्थित होगए।

गुंटूर।

मंगलगिरि के रेलवेस्टेशन से १३ मील (बेजवाड़े से २० मील) दक्षिण पश्चिम गुंटूर का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते के कृष्णा जिले में (१६ अंश, १७ कला, ४२ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अन्श, २९ कला, पूर्व देशांतर में) तालुक का सदर स्थान और प्रधान कसबा गुंटूर है, जिसके पास होकर बडी सडक कटक से मदरास शहर को गई है। बेजवाड़ा के पास कृष्णानदी को पार उतरना होता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय गुंटूर में २३३६९ मनुष्य थे; अर्थात् १७२८३ हिन्दू, ५४७४ मुसलमान, ५९२ कृस्तान, ८ जैन और २ दूसरे।

कसबा २ भागों में विभक्त है;—एक नया और दूसरा पुराना गुंटूर; उत्तर और पश्चिम ओर जिले के मातहत कलक्टर और अन्य अफसरों की कचहरियां और कोठियां बनी हुई हैं। हाल में कसबे की बडी तरक्की हुई है। यहां गल्ले और रूई की बडी तिजारत होती है। और मदरासबैंक की एक शाखा भी है। गुंटूर की कब्रगाह में फरासीसियों के राज्य के समय के बहुत लोगो की कबरें हैं।

इतिहास—गुंटूर मुसलमानों के राज्य के समय एक सरकार की राजधानी थी। सन् १७५२ में हैदराबाद के निजाम ने इसको फरासीसियों को देदिया। सन् १७७६ में जब उत्तरी सरकार अंगरेजों को दिया गया, तब गुंटूर अलग निकाल लिया गया, क्योंकि यह जिंदगीभर के लिये सलाबतजंग का जागीर था। सन् १७७८ में अंगरेजों ने गुंटूर पर लगान कायम

किया था, किन्तु सन् १७८० में छोड़ दिया गया। सन् १७८८ में यह फिर अंगरेजों के अधिकार में आगया।

मल्लिकार्जुन।

गुंटूर के रेलवे स्टेशन से ८१ मील (बेजवाड़ा जंक्शन से ७१ मील) दक्षिण-पश्चिम विनुकुंडा का रेलवे स्टेशन है, जिससे ३ मंजिल उत्तर कुछ पश्चिम मल्लिकार्जुन है। मार्ग पहाड़ी और जंगली है। एक मंजिल तक बैल और घोड़े जा सकते हैं, उसमे आगे पहाड़ी पगडंडी है। मल्लिकार्जुन जाने का दूसरा मार्ग नंद्याल के रेलवे स्टेशन से है। विनुकुंडा से ११८ मील (बेजवाड़ा जंक्शन से १८९ मील) दक्षिण पश्चिम और गुंटकल जंक्शन से ९० मील पूर्वोत्तर मदरास हाते के कर्नूल जिले में तालुका का सदर स्थान नंद्याल कसबा है; जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १०७३७ मनुष्य थे। कसबे मे नव दस शिव मन्दिर बने हुए हैं। नंद्याल से पूर्वोत्तर ३६ मील तक बैलगाड़ी का और उससे आगे लगभग २४ मील मल्लिकार्जुन तक पगडंडी मार्ग है। पूरब के यात्री विनुकुन्डा के रेलवे स्टेशन से और पश्चिम वाले यात्री नंद्याल के स्टेशन से उतरकर मल्लिकार्जुन के दर्शन को जाते हैं। दोनों मार्ग में पहाड़ियां और भयंकर जंगल मिलता है। वन जंतुओं के भय से बहुत से यात्री एकत्र होकर मार्ग में चलते हैं। पर्व के दिनों में विशेष करके फाल्गुन की शिवरात्रि के समय यहां यात्री लोग जाते हैं।

श्रीशैल नामक पर्वत के ऊपर मदरास हाते के कृष्णा जिले में कृष्णा नदी के किनारे पर महादेवजी के १२ ज्योतिर्लिङ्गों में से एक मल्लिकार्जुन शिव का विशाल मन्दिर बना हुआ है। मन्दिर के चारो ओर सुन्दर गोपुर हैं। भ्रमराम्बा अर्थात् श्रीपार्वतीजी का मन्दिर अलग बना है। उस स्थान पर कई एक धर्मशाले और छोटे बड़े बहुत से देवमन्दिर हैं। मन्दिर के निकट कृष्णा नदी का करारा बहुत ऊंचा है। कृष्णा की धारा बहुत नीचे बहती है, इसी कारण से इसको लोग पातालगंगा कहते हैं। पर्वत पर पहाड़ी लोगों की झोपड़िया देखने मे आती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(वनपर्व, ८५ वां अध्याय) श्रीपर्वत पर जाकर नदी में स्नान करके शिवजी की पूजा करने से अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है । वहां पार्वतीजी के सहित शिवजी और देवताओं के साथ ब्रह्माजी निवास करते हैं । जो मनुष्य वहां के देवह्रद तीर्थ में स्नान करता है, उसको अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है और परम सिद्धि प्राप्त होती है।

लिंगपुराण—(९२ वां अध्याय) जो मनुष्य संन्यास ग्रहण करके श्रीशैल पर्वत पर निवास करता है, उसको दूसरे जन्म में पाशुपत योग प्राप्त होता है। काशी जी के समान वहां भी प्राण त्याग करने से प्राणी की मुक्ति हो जाती है।

गरुड़पुराण—(पूर्वार्द्ध, ८१ वां अध्याय) भारत वर्ष में श्रीशैल एक उत्तम तीर्थ हैं ।

पद्मपुराण—(उत्तर खंड, १९ वां अध्याय) श्रीशैल का माहात्म्य सुनने से मनुष्य बालहत्यादि पापों से छूट जाता है । तपस्वी ऋषियों से सेवित श्रीशैल पर्वत पर अनेक तालाव और देवताओं के मन्दिर बने हुए हैं । वहां मल्लिकार्जुन शिव सर्वदा स्थित रहते हैं । पर्वत के कंगूरे के दर्शन मात्र से मनुष्यों की मुक्ति होती है । दक्षिण दिशा में उत्तम श्रीशैल पर्वत विद्यमान है । वहां के पातालगंगा में स्नान करने से मनुष्य का संपूर्ण पाप छूट जाता है। श्रीशैल के शिखर के दर्शन करने से, काशीजी में मृत्यु होने से, और केदार के जल पीने से फिर जन्म नहीं होता है; अर्थात् मोक्ष होजाता है। वहां स्वर्ग के समान सुखदाई सिद्धपुर नामक सुन्दर नगर है ।

सौरपुराण—(६९ वां अध्याय) श्रीपर्वत पर चारो ओर सिद्ध और मुनि देख पड़ते हैं। मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग में महेश्वर सर्वदा निवास करते हैं, जिनके दर्शन करने से मनुष्य जीवन्मुक्त होजाता है । वहां मृत्यु होने से मनुष्य, पशु, कीट, पतंग, सब प्राणी शिव लोक में चले जाते हैं ।

शिवपुराण—(ज्ञानसंहिता, ३५ वां अध्याय) कार्तिकेय और गणेश दोनों कुमार पहिले विवाह करने के लिये विवाद करने लगे। तब उनके माता पिता (पार्वती और शिव) उनसे बोले कि तुम दोनों में से जो संपूर्ण

पृथ्वी की प्रदक्षिणा करके पहिले लौट आवेगा, उसी का विवाह प्रथम होगा। यह सुन कर कार्तिकेय पृथ्वी परिक्रमा करने के लिये शीघ्रही वहां से चले गए। गणेशजी शोचने लगे कि मेरा स्थूल शरीर है; मैं किस भांति पृथ्वी की परिक्रमा करूं। पीछे उन्होने शोच विचार करके महादेवजी और पार्वतीजी को आसन पर बैठाने के उपरान्त उनकी पूजा करके उनकी ७ प्रदक्षिणा की। उसके पश्चात् वह उनसे बोले कि तुम लोग अब शीघ्र हमारा विवाह कर दो। माता पिता ने कहा कि तुम पृथ्वी की परिक्रमा करके कार्तिकेय से पहिले आवो, तब तुम्हारा विवाह होगा। तब गणेशजी क्रोध करके बोले कि तुम लोग ऐसा क्यों कहते हो, क्या तुम लोगों की परिक्रमा करने से पृथ्वी की परिक्रमा नहीं हुई। वेद शास्त्र में लिखा है कि माता पिता के पूजन करके उनकी परिक्रमा करने से पृथ्वी परिक्रमा का फल मिलता है; क्या वह बात सत्य नहीं है। तुम लोग शीघ्र मेरा विवाह कर दो, नहीं तो कहो कि वेद शास्त्र सब असत्य हैं। गणेशजी की ऐसी बातें सुन कर पार्वतीजी और शिवजी विस्मित हुए। (३६ वां अध्याय) उन्हों ने गणेशजी की चतुरता देख कर उनको बहुत सराहा और बड़े सामान से विश्वरूप की कन्या सिद्धि और बुद्धि से उनका विवाह कर दिया। कुछ दिनों के उपरान्त सिद्धि से क्षेम और बुद्धि से लाभ नामक पुत्र उत्पन्न हुए। बहुत दिनों के पश्चात् कार्तिकेयजी पृथ्वी की परिक्रमा करके आए। नारदजी मार्गही में कैलास पर्वत पर जाकर उनसे कहा कि देखो तुम्हारे माता पिता ने तुमको पर्य्यटन के बहाने से बाहर निकाल कर दो स्त्रियों से गणेश का व्याह कर दिया। उनके दो पुत्र भी हो गए हैं। ऐसे काम करने वाले माता पिता का मुख देखना उचित नहीं है। कार्तिकेय महा क्रोधित हो शिवजी तथा पार्वतीजी को प्रणाम करके क्रौंच पर्वत पर चले गए। शिवजी के निवारण करने पर भी उन्होंने रहना स्वीकार नहीं किया। उसी दिन से तीनों लोक में उनका नाम कुमार करके प्रसिद्ध हुआ। शिवजी कार्तिकेय के विरह से दुःखी होकर पार्वतीजी के सहित उनके पास गए। शिवजी को देख कर कार्तिकेय ने उस स्थान से दूसरे स्थान में जाने की इच्छा की; किन्तु देवताओं की

प्रार्थना करने से वह उस स्थान से १२ कोश दूर जाकर रहने लगे। सब पार्वतीजी के सहित शिवजी अपने एक अंश से ज्योतिर्लिंग होकर उसी स्थान में स्थित होगए और मल्लिकार्जुन नाम से जगत में प्रसिद्ध हुए। वहां अब तक पार्वती के सहित उनका दर्शन होता है। प्रति अमावास्या को शिवजी और प्रति पूर्णिमासी को पार्वतीजी स्वयं स्कंद के स्थान पर जाती हैं।

(३८ वां अध्याय) शिवजी के १२ ज्योतिर्लिंग हैं, जिनमें से मल्लिकार्जुन श्रीशैल पर्वत पर विराजते हैं। ज्योतिर्लिंगों की पूजा करने का अधिकार चारो वर्णों का है। इनके नैवेद्य भोजन करने से संपूर्ण पापों का नाश हो जाता है। नीच जातियों में उत्पन्न मनुष्य भी ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने से दूसरे जन्म में शास्त्रज्ञ ब्राह्मण होते हैं और उस जन्म के पश्चात् उनकी मुक्ति हो जाती है।

अग्निपुराण—(११४ वां अध्याय) श्रीपर्वत्त अर्थात् श्रीशैल पवित्र स्थान है। पूर्व काल में उस स्थान पर पार्वतीजी ने लक्ष्मीजी का रूप धारण करके तपस्या की, तब विष्णु भगवान ने उनको वर दिया कि तुमको ब्रह्मज्ञान लाभ होगा और अबसे यह पर्वत तुम्हारे नाम से (श्रीशैल) विख्यात होगा। इस स्थान पर जो मनुष्य दान, तपस्या, और श्राद्ध करेगा, उन सब का फल अक्षय होगा। यहां मृत्यु होने से प्राणी को शिवलोक मिलेगा। ऐसा वर देकर विष्णु चले गए। हिरण्यकशिपु श्रीशैल पर तपस्या करके जगत विजयी हुआ। देवताओं ने वहां तप करके परम सिद्धि लाभ की।

करनूल।

नंद्याल के रेलवे स्टेशन से ४७ मील पश्चिम (बेजवाड़ा जंक्शन से २३६ मील पश्चिम कुछ दक्षिण) और गुंटकल जंक्शन से ४३ मील पूर्व करनूल रोड रेलवे स्टेशन से (सड़क द्वारा) ३३ मील उत्तर (१५ अंश, ४९ कला, ५८ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ५ कला, २९ विकला पूर्व देशांतर में) मदरास हाते के तैलंग देश में तुंगभद्रा और हिंद्री नदी के संगम के पास चट्टानी भूमि पर जिले का सदर स्थान करनूल एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय करनूल कसबे में २४३७६ मनुष्य थे, अर्थात् १२६३१ मुसलमान,११४०९ हिन्दू, ७८४ कृस्तान, ३१ जैन और १ दूसरे।

करनूल कसबे में जिला जज, कलक्टर, मजिष्ट्र की और अन्य सरकारी कचहरियां बनी हुई हैं। करनूल का पुराना किला, सन् १८६२ में तोड दिया गया, किंतु उसके ४ पाए और ३ फाटक अब तक खड़े हैं। सन् १८७१ तक किले में अगरेजी फौज रहती थी। किले में करनूल का पहिला सूबेदार अबदुल नवाब का सुंदर मकबरा, कई एक मसजिदें और विजयानगरम् के महाराजा का बनवाया हुआ एक नया सरोवर है। नवाब के खांदान के चन्द लोग अब तक किले के मकान में रहते है।

करनूल जिला—इसके उत्तर तुंगभद्रा और कृष्णानदी, जो हैदराबाद के राज्य से इसको अलग करती है और कृष्णा जिला, पूर्व नेलोर और कृष्णा जिला, दक्षिण कडापा और बलारी जिला और पश्चिम बलारी जिला है। जिले का सदर स्थान करनूल कसबा है। पहाडियो के २ सिलसिले उत्तरसे दक्षिणको जिले के मध्य में समानान्तर रेखा में फैलते हैं। इससे जिला ३ भागों में बट जाता है। कोई पहाडी ३२०० फीट से अधिक ऊंची नहीं है। मध्य भाग की फैली हुई चिपटी घाटी समुद्र के जल से ७०० तथा ८०० फीट ऊंची है। जिले के पश्चिमी भाग में करनूल कसबा है। जिले की प्रधान नदी तुंगभद्रा और कृष्णा है। जिले में लगभग १९० मील नहर है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय करनूल जिले का क्षेत्रफल एक छोटे राज्य के साथ ७७८८ वर्गमील और मनुष्य संख्या ७०९३०५ थी। इनमें ६१९९९२ हिन्दू, ८१८२७ मुसलमान, ११४६४ कृस्तान, ६ जैन और १६ दूसरे थे। हिन्दुओं में १९२०८६ बेल्लाला या कापू (खेतिहर), ९९९६९, परिया, ७१९११ इडैअर, ६६७०५ मंबडवन (यह मछरी और शिकार तथा पालकी ढोकर अपना निर्वाह करते हैं), ३१०६४ चेटी, १९६२९ धनान, १८८४३ ब्राह्मण, १७१२२ कैकोला, १०८५९ अंबातन, १०५९३ सानां, ९९०८ कुमबन, ९८१५ कमार, २८९८ क्षत्रिय और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे। जगली लोग पहाडियों पर रहते हैं। वे खेती करना नहीं

चाहते; किन्तु गांव वाले लोग कभी कभी उनसे खेतों की रखवाली कराते हैं। ये लोग जंगली तेहवारों के समय यात्रियों से फीस लेते हैं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय करनूल जिले के करनूल कसबे में २४३७६ और नंद्याल में १०७३७ मनुष्य थे।

इतिहास— करनूल जिला वारंगल के पुराने राज्य का एक भाग था। पीछे वह विजयानगरम् के राज्य का हिस्सा बना। राजा अच्युतदेव के राज्य के समय करनूल का किला बनाया गया। बीजापुर, गोलकुन्डा और अहमदनगर के (तीनों) राजाओं ने तालीकोट की लड़ाई में विजयानगरम् के राजा को परास्त किया। उसके बाद सन् १५६४ में करनूल जिला बीजापुर राज्य का एक भाग बना। सन् १६९१ में मुगल बादशाह औरंगजेब ने बीजापुर पर विजय प्राप्त करके खिजिरखां नामक एक पठान को करनूल का अधिकार देदिया। बहुत दिनों तक वह उसके वंश धरों के अधिकार में था। सन् १८०० में कड़ापा और बलारी जिले के साथ करनूल जिला अंगरेजी गवर्नमेंट के अधिकार में आया। सन् १८५८ में करनूल एक जिला बनवाया गया। कड़ापा और बलारी जिले का भाग करनूल में जोड़ा गया।

गुण्टकल जंक्शन।

गुंटकल जंक्शन से रेलवे लाइन ५ ओर गई है;—पश्चिम कुछ उत्तर बल्लारी होकर गोवा को; पश्चिमोत्तर बंबई को; पूर्वोत्तर बेजवाड़ा होकर कटक को, दक्षिण-पूर्व मदरास शहर को और दक्षिण धर्मवरम् को।

(१) गुंटकल जंक्शन से पश्चिम कुछ उत्तर "सदर्न मरहटा रेलवे", जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २ पाई लगता है;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३० बल्लारी।

३२ बल्लारी छावनी।

५९ गादिगनूर।

७१ होसपेट।

११२ हरपालपुर।

१२३ गदग जंक्शन।

१५९ हुबली जंक्शन।

१७१ धारवाड़।

२१५ लोंडा जंक्शन।

२३० कैसिलरक्।
२३३ पोर्चुगीज फ्रण्टियर।
२८१ मरमागोवा बंदरगाह।

गदग जंक्शन से उत्तर ४२ मील बादामी, ९० मील कलगेरी, ११९ मील बीजापुर और १७३ मील होतगी जंक्शन।

हुबली जंक्शन से दक्षिण पूर्व ८१ मील हरिहर, १७८ मील- बनावर, १८८ मील आर्सीकेरा, २४८ मील तमकूर और २८८ मील बंगलोर शहर।

लोंडा जंक्शन से उत्तर ३३ मील बेलगांव, ६९ मील गोकाक रोड, ११८ मील मीराज जंक्शन, २०० मील सितारा रोड, २०९ मील वाथर और २७८ मील पूना।

(२) गुंटकल जंक्शन से पश्चिमोत्तर रायचुर तक " मदरास रेलवे " उससे आगे ' ग्रेट इंडियन पेनिनसूला रेलवे";—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
३२ अदोंनी।
५८ तुंगभद्रा।
७५ रायचुर।
९१ कृष्णा।
१४२ वाडी जंक्शन।
१६९ गुलबर्गा।
२२६ होतगी जंक्शन।

(आगे के स्टेशन होतगी में देखो)।

वाडी जंक्शन से पूर्व ११५ मील हैदराबाद और २०८ मील वारंगल।

(३) गुंटकल जंक्शन से पूर्व कुछ उत्तर " सदर्न मरहटा रेलवे ", जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २ पाई है;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
४३ करनूल रोड।
९० नंद्याल।
२०८ विनुकुण्डा।
२५९ गुण्टूर।
२७२ मंगलगिरि।
२७९ बेजवाडा जंक्शन।

(आगे के स्टेशन बेजवाडा में देखो)।

(४) गुंटकल जंक्शन से दक्षिण-पूर्व " मदरास रेलवे ";—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
१८ गूटी।

४८ ताड़पत्री ।
११४ कड़पा ।
१९२ रेणुगुण्टा जंक्शन ।
२३३ आरकोनम् जंक्शन ।
२५० तिरुवल्लूर ।
२७६ मदरास शहर ।

रेणुगुन्टा जंक्शन से पूर्वोत्तर १४ मील कालहस्ती, ३० मील वेंकटगिरि और ६२ मील नेल्लूर और रेणुगुन्टा से पश्चिम ६ मील तिरुपदी और १३ मील चन्द्रगिरि।

आरकोनम् जंक्शन से दक्षिण-पूर्व १८ मील कांची और ४० मील चेंगलपट्ट जंक्शन और चेंगलपट्ट से दक्षिण कुछ पश्चिम ६४ मील विलीपुरम् जंक्शन।

(५) गुंटकल जंक्शन से दक्षिण "सदर्न मरहट्टा रेलवे", जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २ पाई है;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।
६३ धर्मवरम् जंक्शन ।
११२ हिन्दूपुरम् ।
१७४ बंगलोर शहर ।

धर्मवरम् जंक्शन से दक्षिण-पूर्व सौथ इन्डियन रेलवे पर ४२ मील कादिरी, और १४२ मील पकाला जंक्शन; पकाला से पूर्वोत्तर १९ मील चंद्रगिरि, २६ मील तिरुपदी और ३२ मील रेणुगुण्टा जंक्शन और पकाला से दक्षिण-पूर्व ३९ मील कटपदी जंक्शन ४५ मील वेलूर और १३८ मील विलापुरम् जंक्शन ।

बल्लारी ।

गुण्टकल जंक्शन से ३० मील पश्चिम बल्लारी का रेलवे स्टेशन है। छावनी का स्टेशन उससे २ मील पश्चिम है। मदरास हाते में (१५ अंश, ८ कला, ५१ विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, ५७ कला, १५ विकला पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा बल्लारी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय छावनी के साथ बल्लारी कसबे में ५९४६७ मनुष्य थे; अर्थात् ३०२४४ पुरुष और २९२२३ स्त्रियां । इनमें ३७२१७ हिन्दू, १७६९२ मुसलमान, ४३१४ कृस्तान, २३९ जैन और ५ पारसी थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ६१ वां और मदरास हाते में ६ वा शहर है।

शहर के रेलवे स्टेशन के पास रानीसेत्र नामक धर्मशाला है । कसबा किले की पहाड़ी के पादमूल के पास बसा है । उसमें कई एक रुई के मिल अर्थात् कल कारखाने बने हैं । कसबे म एक मकार का पैसा चलता है, जो एक आने में ३ होता है । फौजी छावनी के दक्षिण-पश्चिम के भाग में एन० आई० रेजीमेंट की लाइने हैं। १½ मील पूर्वोत्तर अगरेजी पैदल के वारक बने हैं। छावनी में मामूली तरह से अगरेजी पैदल की एक रेजीमेंट, आरटिलरी की एक वैटरी, देशी पैदल की एक रेजीमेंट और देशी सवार की एक रेजीमेंट रहती है। उत्तर बगल म अनेक सरकारी आफिस, कई एक गिरजा, अस्पताल और स्कूल हैं।

किले के सामने उसके ४ मील के भीतर नोकदार एक ऊंची पहाड़ी है, जिसको लोग तावा का पहाड कहते हैं । उसकी ऊंचाई पास के मैदान से लगभग १६०० फीट और समुद्र के जल से २८०० फीट है । मैसूर के हैदरअली के राज्य के समय उस खान से तांवा निकाला जाता था, किन्तु उसका खर्च नफे से बढ़ जाता था, इस कारण से खान का काम बन्द कर दिया गया । लोहा का ओर भी उसमें बहुत मिलता है, जिसमें से कुछ चुंबक का तासीर रखता है।

बल्लारी का पवन पानी सूखा होने के कारण यह स्वास्थ्य कर स्थान है, किन्तु यहा गरमी बहुत पड़ती है और सालाना औसत वर्षा केवल १६ इंच होता है । बाग कम होते हैं; क्योंकि बड़े मुसकिल से वृक्ष तैयार होते हैं ।

किला—बल्लारी कसबे के पास बिना पौधे की पहाड़ी के ऊपर, जो पास के मैदान से ४५० फीट ऊंची है, लगभग २ मील के घेरे में किला फैला

है। नीचे और ऊपर किले की २ लाइने हैं । ऊपर की लाइन में, जिसका सिरोभाग चिपटा है, एक पुराना गढ़ है । फौजी कैदियों के रहने के लिये किले के भीतर बहुतसी छोटी छोटी कोठरियां बनी हुई हैं । वर्षा के पानी रखने के लिये कई एक तालाब और हौज चट्टान खोदकर बनाए गए हैं। इनके अलावे किले में ६ बुर्ज, मीठे पानी से भरे हुए अनेक गहरे खाते और एक पुराना शिवमन्दिर है, जिसके निकट ३६ फीट ऊंचा पत्थर का एक स्तंभ है, जिसमें हनूमान और अन्य देवताओं की मूरत बनी है।

नीचे के किले के, जिसको सन् १७९२ में हैदरअली के पुत्र टीपू सुलतान ने बनवाया था, बगलों में दीवार और छोटे छोटे बुर्ज हैं । यह किला पहाड़ी की नेव के पास है । पहाड़ी के दक्षिण-पश्चिम के कदम के पास तोपखाना है । किले के दक्षिण ३ मील घेरे का एक तालाब है, जिसमें धारा का पानी आता है; किन्तु प्रति वर्ष वह समय समय में सूख जाता है । किले में थोड़े से फौजी सिपाही रहते हैं।

वल्लारी जिला—इसके उत्तर और पश्चिमोत्तर तुंगभद्रा नदी, जो हैदराबाद के राज्य से इस जिले को अलग करती है, पूर्व करनूल जिला, दक्षिण मईसूर राज्य का चितलदुर्ग जिला और पश्चिम तुङ्गभद्रानदी है, जो वंबई हाते के धारवाड़ जिले से वल्लारी, को जुदा करती है। वल्लारी जिले के भीतर १६४ वर्गमील क्षेत्रफल में संडूर का देशी राज्य है, जिसमें सन् १८८१ में १०५३२ मनुष्य थे । जिले में वृक्ष बहुत कम हैं । जिला मैदान है । जमीन से नमक और सोरा बहुत बनाया जाता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय संडूर के राज्य के साथ वल्लारी जिले का क्षेत्रफल ५९०४ वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या ७२६८०७ थी; अर्थात् ६६२०७२ हिन्दू, ५९७६७ मुसलमान, ४१४० क्रस्तान, ६२० जैन और २०८ अन्य । इनमें से हिन्दुओं में १२४९०६ संबडवन (मछुहा), ९९८९३ बेलाला, ९७९५५ इडैयन, ८८५३० परिया, ४६८९१ सतानी, २८६६८ बैकालर, २२५५९ कंभाइन, १५३७५ ब्राह्मण, १३८३८ बनान, ११२६० मेटी, ६२९० सानान, ६१९१ कुसवन, ६१८९ अंबटन, २६२२ क्षत्रिय

और बाकी में दूसरी जातियों के लोग थे। हिंदुओं में शैव और वैष्णव दोनों प्रायः बराबर हैं; थोड़े लिंगायत भी हैं। वल्लारी जिले के पश्चिम भाग के तालुकों के लोग कनडी अर्थात् कर्नाटकी भाषा और पूर्वभाग के तालुकों के लोग कनड़ी और तेलुगु अर्थात् तेलङ्गी दोनों भाषा बोलते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय वल्लारी जिले के कसबे वल्लारी में ५९४६७, अदोंनी में २६२४३, होसपेट में १२८७८, कांपती में १०५२९ और रायदुर्ग में १०३८३ मनुष्य थे।

इतिहास—विजयानगरम् राज्य के आधीन के एक राजा ने वल्लारी के किले को बनवाया। उसने विजयानगरम् को वार्षिक खेराज देकर वल्लारी को अपने आधीन रक्खा था। तालीकोट में विजयानगरम् के राजा के परास्त होने पर वल्लारी मुसलमानों के अधिकार में हुई; किन्तु वल्लारी के राजा ने अपनी आधी स्वाधीनता को कायम रक्खा था। सन् १६५० में वल्लारी के राजा ने विजयानगरम् के राजा के वशधरों को परास्त किया। पीछे वह जिला हैदराबाद के निजाम के आधीन हुआ। उसके पश्चात् मैसूर के हैदरअली ने किले की पहाड़ी के नीचे निजाम की सेना को परास्त करके किले को छीन लिया। सन् १७९२ में वह किला सन्धी द्वारा निजाम को फिर मिला। सन् १८०० में निजाम ने अंगरेजी गवर्नमेन्ट को किला दे दिया। वल्लारी अंगरेजी अधिकार में होगई। सन् १८०७ में कडापा और वल्लारी अलग अलग जिला बनाया गया।

कुमार स्वामी।

वल्लारी के रेलवे स्टेशन से ७५ मील (गुंटकल जंक्शन से ९५ मील) पश्चिम हास्पिटनुर का रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से १६ मील दूर पहाड़ी के ऊपर कुमारस्वामी का मन्दिर है। १० मील तक बैलगाड़ी जाती है, उससे आगे ५ मील पहाड़ी मार्ग है। प्रति वर्ष कार्तिक की पूर्णिमा को वहां दर्शन का बड़ा मेला होता है। मलमास के समय उससे भी अधिक यात्री वहां जाते

हैं। कुमारस्वामी का नाम स्वामिकार्तिक, कार्तिकेय, स्कद, सेनानी, षड्मुख, गुह इत्यादि हैं। द्राविडियन लोग उनको सुब्रह्मण्य कहते हैं।

कुमारस्वामी अर्थात् कार्तिकेय महादेवजी के पुत्र हैं। इनके जन्म की कथा अनेक प्रकार की है;—महाभारत वनपर्व के २२५ वें अध्याय, शल्यपर्व ४४ वें अध्याय, और अनुशासन पर्व के ८५ वें अध्याय में; वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड के ३६ वें सर्ग में; मत्स्यपुराण के १५७ वें अध्याय में; पद्मपुराण स्वर्गखण्ड के १४ वें अध्याय में, लिङ्गपुराण के ७१ वें अध्याय में और शिवपुराण ज्ञानसंहिता के १९ वें अध्याय में देखिए।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—शिवपुराण—(ज्ञानसंहिता, ३५ वां अध्याय) कार्तिकेय और गणेश, शिवजी के दोनों कुमार अपना विवाह प्रथम करने के लिए विवाद करने लगे। तब उनके माता पिता उनसे बोले कि तुम दोनों में से जो संपूर्ण पृथ्वी की परिक्रमा करके प्रथम लौट आवेगा, उसीका विवाह पहिले होगा। ऐसा सुन कार्तिकेय पृथ्वी की परिक्रमा करने के लिए शीघ्रही वहांसे चले गए। गणेशजी शोचने लगे कि मेरा स्थूल शरीर है, मैं किस भांति पृथ्वी परिक्रमा करूंगा। पीछे उन्होंने शोचकर महादेवजी और पार्वतीजी का पूजन करके उनकी ७ प्रदक्षिणा करदी और वह उनसे बोले कि तुम लोग अब शीघ्र हमारा ब्याह कर दो। पार्वतीजी और शिवजी बोले कि तुम पृथ्वी की परिक्रमा करके स्कन्द से पहिले आवो, तब तुम्हारा विवाह पहिले होगा। तब तो गणेशजी क्रोध करके बोले कि तुम लोग ऐसा क्यों कहते हो, क्या तुम लोगों की परिक्रमा करने से पृथ्वी की परिक्रमा नहीं हुई। वेद शास्त्र में लिखा है कि माता पिता का पूजन करके उनकी परिक्रमा करने से पृथ्वी परिक्रमा करने का फल मिलता है; क्या वह बात सत्य नहीं है। तुम लोग शीघ्रही हमारा विवाह कर दो,-नहीं तो कहो कि वेद शास्त्र सब असत्य है। गणेशजी की ऐसी बातें सुनकर पार्वतीजी और शिवजी परम विस्मय को प्राप्त हुए। (३६ वां अध्याय) उन्होंने गणेशजी की चतुरता देखकर उनको बहुत सराहा और विश्वरूप की कन्या सिद्धि और बुद्धि से उनका ब्याह कर दिया। कुछ दिनों के पश्चात् सिद्धि से क्षेम और बुद्धि से लाभ नामक पुत्र

उत्पन्न हुए। बहुत दिनों के उपरांत कार्तिकेय पृथ्वी परिक्रमा करके आए। नारद जी ने मार्गही में कैलास पर्वत पर जाकर उनसे कहा कि देखो तुम्हारे माता पिता ने तुमको बाहर भेज कर दो स्त्रियों से गणेश का विवाह कर दिया। उनके दो पुत्र भी होगए। ऐसे माता पिता का मुख देखना पुत्रको उचित नहीं है। ऐसा सुन कार्तिकेय महा क्रोधित होकर माता पिता को प्रणाम करके क्रौंच पर्वत पर चले गए। उसी दिन से उनका नाम कुमार प्रसिद्ध हुआ। शिवजी उनके विरह में दुःखी होकर पार्वतीजी के सहित क्रौंच पर्वत पर कार्तिकेय के पास गए। उनको देख कर कार्तिकेय ने उस स्थान से अन्यत्र जाने की इच्छा की; किंतु देवताओं की प्रार्थना करने पर उन्होंने उस स्थान से १२ कोस दूर जाकर निवास किया। तब शिवजी ने ज्योतिर्लिंग होकर उसी स्थान पर निवास किया, जो मल्लिकार्जुन नाम से प्रसिद्ध है। प्रति अमावास्या को शिवजी और पूर्णिमा को पार्वतीजी स्वयं कार्तिकेय अर्थात् कुमारस्वामी के स्थान पर जाती हैं। कार्तिक की पूर्णिमा के दिन देवता, ऋषि, तपस्वी सब लोग क्रौंच पर्वत पर जाकर कुमार का दर्शन करते हैं। जो मनुष्य कार्तिकी पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र में कुमार का दर्शन करता है, उसके सब पाप छूट जाता है और वह मनोवाञ्छित फल पाता है।

कूर्मपुराण—(उपरि भाग ३६ वां अध्याय) स्वामी नामक तीर्थ तीनों लोक में विख्यात है। वहां स्कन्दजी देवताओं से पूजित होकर निवास करते हैं। वहां कुमार धारा में स्नान कर के पितरादिकों के तर्पण करने से स्कन्द के निकट वास होता है।

याज्ञवल्क्य स्मृति—(प्रथम अध्याय) स्वामिकार्तिक, महागणपति और सूर्य का सर्वदा पूजन करने से और इनको तिलक लगाने से सिद्धि प्राप्त होती है।

महाभारत—(आदि पर्व, १३८ वां अध्याय) कार्तिकेय अग्नि के पुत्र, कृत्तिका के पुत्र, रुद्र के पुत्र और गंगा के पुत्र करके प्रसिद्ध होते हैं।

(वन पर्व—२२९ वां अध्याय) पंचमी तिथिको कार्तिकेय लक्ष्मीवान हुए इसीसे उस तिथि का नाम श्रीपंचमी है। षष्ठी के दिन कार्तिकेय का विवाह हुआ, इसीसे षष्ठी को महातिथि कहा है।

कूर्मपुराण—(ब्राह्मीसंहिता—उत्तरार्ध—३६ वां अध्याय) स्वामी तीर्थ नामक एक महा तीर्थ है। उस स्थान में स्कन्द नित्य रहते हैं। वहां कुमार-धारा में स्नान और देवतर्पण तथा स्कन्द की पूजा करने से मनुष्य मरने पर कार्तिकेय सहित आनन्द करता है।

भविष्यपुराण—(४१ वां अध्याय) भाद्रपद मास की षष्ठी कार्तिकेय को अति प्रिय है। उस दिन के स्नान, दान आदि कर्म का फल अक्षय होता है। उस तिथि में दक्षिण दिशा में प्रसिद्ध स्वामिकार्तिक का दर्शन करने से ब्रह्म-हत्यादि पाप छूट जाते हैं। जो राजा कार्तिकेय का पूजन करके युद्ध में जाता है वह अवश्य शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। षष्ठी के दिन व्रत करके कार्तिकेय का पूजन कर रात्रि को भोजन करने से कार्तिकेय के लोक में निवास होता है। जो पुरुष तीन वार दक्षिण देश में जाकर कार्तिकेय का दर्शन और भक्ति से पूजन करता है, वह शिवलोक में वसता है।

वाराहपुराण—(२५ वां अध्याय) स्कन्दजी का जन्म षष्ठी तिथि को हुआ, इसलिये षष्ठी उनको बहुत प्रिय है। इस तिथि को फलाहार करके स्कन्दजी की पूजा करने से धन, पुत्र आदि ऐश्वर्य्य प्राप्त होते हैं।

दूसरा शिवपुराण—(चौथा खंड-तीसरा अध्याय) इन्द्र ने स्कन्द के उपद्रव करने पर उनकी दहिनी कांख में वज्र मारा, जिससे साध्य नामक गण और फिर बांई कांख में वज्र मारा, जिसमे विसाध्य नामक गण उत्पन्न हुए।

(चौथा अध्याय) स्कन्द का जन्म कार्तिक की षष्ठी को हुआ।

(२८ वां अध्याय) प्रति मास की पूर्णिमा को सब देवता और मुनि जाकर स्कन्द के दर्शन करके कृतार्थ होते हैं और शिवजी वहां जाते हैं।

श्रीमद्भागवत-(दशम स्कन्ध-७९ वां अध्याय) बलदेवजी पंपासर और भीम-रथी में स्नान करने के उपरान्त स्कन्द का दर्शन करके श्रीशैल पर्वत पर पहुंचे।

देवीभागवत—(नवम स्कन्ध ४६ वां अध्याय) षष्ठीदेवी स्कन्द की भार्य्या है। यह प्रकृति के षष्ठांश से उत्पन्न है, इसलिये इसको षष्ठी कहते हैं। यह बालकों की अधिष्ठात्री और बालक देने वाली है। यह देवी बालकों को आयुष देती है और उनकी सदा रक्षा करती हैं।

स्वायंभुव मनु के पुत्र राजा प्रियव्रत के पुत्र नहीं होता था; तब कश्यप मुनि ने राजा से पुत्रेष्टी यज्ञ कराया । यज्ञचरु के खाने से मालिनी रानी के गर्भ रहा। देवताओं के १२ वर्ष के उपरान्त रानी का सुन्दर पुत्र जन्मा; पर वह प्राण रहित था। तब राजा मृतक पुत्र को ले श्मशान भूमि पर जाकर रोदन करने लगे । उस समय कृपामयी षष्ठी देवी विमान में बैठ वहां आईं । राजा ने बालक को भूमि पर धर भगवती की अच्छे प्रकार से पूजा करके उनसे पूछा कि आप कौन हैं । भगवती बोली कि हे राजेन्द्र ? मैं ब्रह्मा की मानसी कन्या हूँ। देवसेना मेरा नाम है । मुझको ब्रह्माजी ने उत्पन्न करके स्कन्दजी को देदिया। मैं अपुत्र पुरुषों को पुत्र, स्त्री रहित पुरुषों को स्त्री और दरिद्रों को धन देती हूँ। इसके अनन्तर षष्ठी देवी ने बालक को हाथ में लेकर अपने महा ज्ञान से उसको जिला दिया । इसके पश्चात् वह स्वर्ग को चली गई । राजा पुत्र को ले अपने गृह आये और प्रतिमास की शुक्ला षष्ठी को यत्न से षष्ठी देवी की पूजा कराने लगे । किसी के बालक होने पर सौरी के गृह में छठे दिन वा इक्कीसवें दिन वह षष्ठी देवी की पूजा कराते थे, इसके अतिरिक्त बालको के शुभ कामों में और अन्नप्राशनादि कार्यों में भी राजा षष्ठी की पूजा कराते थे । षष्ठी की पूजा शालग्राम शिला में वा कलश में, वा बरगद की जड़ में अथवा भीति में पुतली उरेह करके करनी चाहिये (यहां षष्ठीस्तोत्र भी है)।

छूट १५० पृष्ठ के २३ वें पंक्ति का—५ गोपुरों को लांघ ने पर स्वामिकार्तिक के निज मंदिर का बड़ा चौगान मिलता है, जिसके बगल में एक बड़ा गोपुर और भीतर स्वामिकार्तिक का निज मन्दिर है, जिसके आस पास परम्म् सुब्रह्मण्य आदि देवताओं के ४ मन्दिर हैं।

होसपेट।

गादिगनूर स्टेशन से १६ मील (गुंटकल जंक्शन से ७१ मील) पश्चिम कुछ उत्तर होसपेट का रेलवे स्टेशन है । मदरास हाते के (१५ अंश, १५

विरूपाक्ष शिव के मंदिर का नक्शा
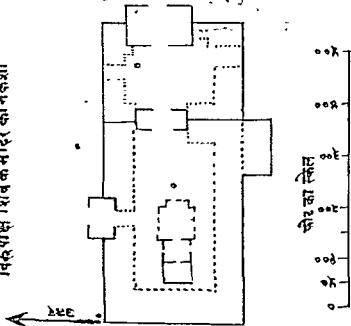
कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, २६ कला, पूर्व देशांतर में) बल्लारी जिले में होसपेट एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय होसपेट में १२८७८ मनुष्य थे; अर्थात् १०९७३ हिन्दू, १८११ मुसलमान, ७३ कृस्तान और २१ जैन।

होसपेट हेड एसिस्टन्ट कलक्टर का सदर स्थान है। वहां तहसीलदार, और मातहत मजिष्ट्रेट की कचहरी, स्कूल, अस्पताल, बंगला और एक सुंदर मंदिर है। होसपेट से ७ मील पूर्व किष्किंधा में विरूपाक्ष शिव का मंदिर है।

किष्किन्धा और विजयानगर।

होसपेट से ७ मील पूर्व और हाथी गांव के पास, जो मदरास हाते के होसपेट ताल्लुक में करीब ७०० मनुष्यों की एक बस्ती है, विरूपाक्ष शिव के मंदिर तक बैलगाडी की सडक है। मैं एक रुपये में गाड़ी किराया कर उस- पर सवार हो मन्दिर में पहुंचा। होसपेट से २ मील आगे रेलवे सड़क लांघने पर अंजनी पहाडी के ऊपर का मन्दिर देख पडा।

विरूपाक्ष शिव के मन्दिर के आगे मोदियों की दुकानें हैं। मन्दिर के पूर्व वाले चौगान के मकानों में यात्री टिकते हैं। मन्दिर के पुजारी यात्रियों को पंडों के समान तीर्थ दर्शन कराते हैं।

विरूपाक्षशिव का मन्दिर—मन्दिर का प्रधान दरवाजा पूर्व है। उसका पत्थर का गोपुर १०९ फीट लम्बा, ८९ फीट चौडा और करीब १७० फीट ऊंचा है। शिखर के ऊपर का कुछ हिस्सा टूट गया है। गोपुर बाहर से ११ मंजिला जान पडता है, क्योंकि नीचे से ऊपर तक एक के ऊपर दूसरे ११ दरवाजे बने हैं; परन्तु भीतर से वह तीन या चार मंजिल का है। उसके बीच के मंजिल में कई एक छोटी देवमूर्तियां देखने में आती हैं।

गोपुर के पश्चिम बड़ा चौगान है। इसके चारों बगलों पर बडे बडे मण्डप और मकान बने हैं, जिनमें यात्री टिकते हैं। चौगान के पश्चिम बगल के

छोटे गोपुर के दक्षिण बगल में गणेशजी और उत्तर ओर देवी जी हैं और चौगान के उत्तर हिस्से में एक कूप है । इसकी बाहरी की दीवार पूर्व से पश्चिम को करीब १९९ फीट और उत्तर से दक्षिण तक लगभग २२५ फीट लम्बी है।

इस चौगान के पश्चिम बगल के छोटे गोपुर से पश्चिम वाले बड़े चौगान में जाना होता है, जिसके चारो बगलों पर दोहरे तेहरे बरण्डे और मकान बने हैं, जिनमें जगह जगह पार्वती आदि कई देव देवियों की मूर्तियां हैं और उत्तर बगल पर ऊंचा गोपुर है, जिसमें नीचे से ऊपर तक एकके ऊपर दूसरे ७ दरवाजे बने हुए हैं । इस चौगान के बाहर की दीवार उत्तरसे दक्षिण करीब २२५ फीट और पूर्वसे पश्चिम लगभग ३७५ फीट लम्बी है, जिसके भीतर यूरोपियन आदि अन्यधर्मी लोग नहीं जाने पाते।

चौगान के पश्चिम हिस्से में विरूपाक्ष शिव का मन्दिर है । खास मन्दिर में सोनहरा कलश लगा हुआ है, जिसके पूर्व एक कमरा और कमरे के पूर्व एक बड़ा मण्डप है । मन्दिर में अन्धेरे रहने के कारण दिन में भी दीप जलाया जाता है। समय समय पर पूजा के समय मन्दिर खुलता है । जागीर की आमदनी से मन्दिर का खर्च चलता है। पूजा के समय बाजा बजाने वाले नौकर हैं । खास पूजा के समय शिव लिंग पर शृङ्गार मूर्ति रक्खी जाती है। मंडप के पूर्व सोना का मोलम्मा किया हुआ एक ऊंचा स्तंभ खड़ा है।

मन्दिर से उत्तर पुरइन से भरा हुआ एक तालाब और समीपही दक्षिण हेमकूट नामक पहाड़ी है, जिसके ऊपर छोटे छोटे १२ देव मन्दिर बने हैं। मन्दिर के प्रधान दरवाजे से १ मील पूर्व बड़े नन्दी के पास मतंग पहाड़ी के पादमूल तक चौड़ी सड़क गई है, जहां चैतकी पूर्णिमा को विरूपाक्ष शिव की भोगमूर्ति का रथ जाता है । उस दिन यात्रियों की भारी भीड़ होती है । पहाड़ी के ऊपर एक मन्दिर है।

चक्र तीर्थ—विरूपाक्ष के मन्दिर से १ मील से अधिक पूर्व कुछ उत्तर माल्यवक पहाड़ी को चक्कर लगा कर पहाड़ियों के बीच में तुंगभद्रा नदी बहती है । यहां उसकी चौड़ाई लगभग १०० गज है । उसको चक्रतीर्थ कहते

है। उसके उत्तर ऋष्यमूक पर्वत और दक्षिण बगल पर रामचन्द्र का एक छोटा मन्दिर है, जिसमें रामचन्द्र आदि की मूर्तियां स्थित हैं। मन्दिर के पास सूर्य्य, सुग्रीव, रंगजी, आदि कई देवता हैं। यात्रीलोग चक्रतीर्थ में स्नान करके राममन्दिर में मेवे और फल भेंट देते हैं। वहां ऋष्यमूक पहाड़ी के तीन बगलों में तुंगभद्रा नदी बहती है, जो मैसूर राज्य के पर्वत से निकल कर करीब ४०० मील पूर्वोत्तर बहने के उपरान्त कर्नूल के नीचे कृष्णा नदी में मिल गई है।

चक्रतीर्थ के उत्तर ऋष्यमूक के पूर्व सीतासरोवर नामक एक निर्मल जल का कुण्ड है। उसके पास एक छोटी स्वभाविक गुफा और दक्षिणकाशी, सीता अभरण, राम लक्ष्मण के चरण चिन्ह इत्यादि स्थान हैं।

चक्रतीर्थ से कुछ दूर पूर्व एक बड़ा मन्दिर है, जिसमें पूर्वोत्तर की पहाड़ी पर अनेक शिव मन्दिर और पहाड़ी के पूर्वोत्तर विटोबा का एक मन्दिर है।

स्फटिक शिला—विरूपाक्ष के मन्दिर से लगभग ४ मील पूर्वोत्तर माल्यवान पहाड़ी है, जिसके एक भाग का नाम प्रवर्षण गिरि है। उसी पर श्रीरामचन्द्र और लक्ष्मण ने वनवास के समय वर्षा काल बिताया था। उसीके बगल पर चक्रतीर्थ से पूर्व ओर स्फटिकशिला एक स्थान है, जहां गुहा में श्रीरामचन्द्रजी, लक्ष्मणजी, सुग्रीव और हनूमान की मूर्ति बनी हुई है। उसके आस पास अनेक मन्दिर और मंडप बने हैं। एक बड़ा और एक छोटा गोपुर है। रथयात्रा के लिए बड़ा रथ रक्खा है। सदावर्त लगा है।

कृष्ण का मन्दिर—विरूपाक्ष के मन्दिर के दक्षिण की पहाड़ी के बाद कृष्ण का बड़ा मन्दिर है। रास्ता बहुत घुमाव का है। पहले शिव का एक पुराना मन्दिर मिलता है, जहा केवल नन्दी है। उसके बाद पश्चिम एक घेरेके भीतर नरसिंह की बहुत बड़ी मूर्ति बैठी है, जिसके ऊपर शेष का छत्र है। शेष के सिर तक मूर्ति की ऊंचाई २२½ फीट है। फाटक के बाहर एक खड़े पत्थर के दोनों बगलों पर कनड़ी अक्षर का शिला लेख है। घेरे के चंद गज दूर एक छोटे मन्दिर में बड़े अरघे पर बड़ा शिव लिंग है, जिसके पास कृष्ण का बड़ा मन्दिर पत्थर की दीवार से घेरा हुआ है। प्रधान आंगन की

दिशा में किष्किन्धा नामक कंदरे के निकट जाकर बन्दरनाथ मयन्द, और द्विविद से युद्ध किया।

वाल्मीकि रामायण—(अरण्य काण्ड—६७ वां सर्ग) रामचन्द्र से जटायु ने कहा कि रावण सीता को लेगया है, तब वह सीता को ढूँढते हुए वन में चले। (७२ वां सर्ग) उनको भयंकर वन में कबन्ध राक्षस मिला। जब उन्होंने उस राक्षस को जला दिया, तब वह दिव्यरूप हो बोला कि हे राघव! सुग्रीव नाम वानर, जो अपने भाई बालीद्वारा घर से निकाला गया है, ऋष्यमूक पर्वत पर निवास करता है। वह सीता के खोज में तुम्हारी सहायता करेगा। तुम जाकर शीघ्र सुग्रीव को अपना मित्र करो। वह इस समय सहायता चाहता है। (७३ वां सर्ग) वन और पर्वतों में भ्रमण करते हुए तुम पंपासरोवर पर पहुँचो गे। उसके पास महर्षि मतंग अपने शिष्यों के सहित रहते थे। ऋषि लोग तो चले गये, परन्तु उनकी सेवा करने वाली तपस्विनी शवरी अब तक उस आश्रम में देख पड़ती है। वह तुमको देखकर स्वर्गलोक को चली जायगी। तुम पंपा के पश्चिम तीर पर उस गुप्त स्थान को, जो मतंगवन करके प्रसिद्ध है, देखना। ऋष्यमूक पर्वत पर शिला से आच्छादित एक बड़ी भारी गुहा है। उसमें प्रवेश करना बड़ा कठिन है। उस गुहा के पूर्व द्वार पर एक बड़ा भारी सरोवर है। उसी गुहा में वानरों के साथ सुग्रीव निवास करता है और कभी कभी शृङ्ग पर भी जा बैठता है।

(७४ वां सर्ग) राम और लक्ष्मण ने कबन्ध के वचन के अनुसार वन में चलते चलते एक पर्वत के निकट निवास किया और वहांसे चलकर पंपा के पश्चिम शवरी के रमणीय आश्रम को देखा। सिद्धा शवरी रामचन्द्र और लक्ष्मण को देख उठकर उनके चरणों पर गिर पड़ी, उसके पश्चात् उसने दोनों भाइयों का अतिथि सत्कार किया। तापसी शवरी, जो सिद्ध गणों की मान्य थी, बोली कि हे रामचन्द्र! अब मैं तुम्हारे प्रसाद से अच्छे लोक को प्राप्त करूंगी। जब तुम चित्रकूट में आए तब मुनि लोग, जिनकी मैं सेवा करती थी, दिव्य विमानों पर चढ़कर स्वर्ग को चले गए। मैंने तुम्हारे लिए पंपा वन के नाना वन्य पदार्थों को इकट्ठा कर रक्खा है। रामचन्द्र ने शवरी का ऐसा वचन

इतिहास—बलाला वंश के राज्य की घटती के समय लगभग सन् १३३६ ई० में बुका और हरिहर ने, जो वारंगल से खदेरे गए थे, हांपी नगर को बसाया; जिनके वंश वाले सन् १५६४ की तिलीकोट की लड़ाई तक वहां थे; बाद आनागंदी, वेलूर और चन्द्रगिरि में एक शदी तक थे। बीजापुर और गोलकुण्डा के मुसलमान बादशाहों ने विजयानगर राज्य को ले लिया। विजयानगर के हिन्दू राजाओं ने अपनी राजधानी हांपी में और उसके आस पास बहुत से महल और मन्दिर बनवाए।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(वनपर्व—२७९ वां और २८०वां अध्याय) कबन्ध राक्षस ने रामचन्द्र से कहा कि लंकावासी रावण सीता को लेगया है। तुम सुग्रीव के पास जाओ। वह तुम्हारी सहायता करेगा। ऋष्य मूक पर्वत के तट पर पंपा नामक तड़ाग है। उस पर्वत पर ४ मंत्रियों के सहित बाली के भाई सुग्रीव निवास करते हैं। इतना सुन रामचन्द्र वहांसे चले और पम्पासर पर पहुँचे। उन्होंने वहांसे आगे जाकर ऋष्यमूक पर्वत पर ५ बन्दरों को बैठे हुए देखा। तब सुग्रीव ने अपने बुद्धिमान मंत्री को राम के पास भेजा। वह मंत्री राम और लक्ष्मण को सुग्रीव के पास लेगया। राम ने सुग्रीव के साथ मित्रता की। तब सुग्रीव ने राम को सीता का वस्त्र देखाया, जो सीता ने जातीबार गिरा दिया था। राम ने सुग्रीव का अभिषेक अपने हाथ से किया। राम ने बाली के मारने की और सुग्रीव ने सीता के लाने की प्रतिज्ञा की। फिर वे लोग युद्ध की इच्छा करके किष्किन्धा गये। सुग्रीव बड़े वेग से गर्जा। बाली तारा के वचनों का निरादर करके माल्यवान पर्वत के नीचे खड़ा हुआ। बाली और सुग्रीव युद्ध करने लगे। जब उन दोनों के रूप में भेद कुछ न दिखाई दिया, तब हनुमान ने सुग्रीव को एक माला पहना दी। जब राम ने सुग्रीव के गले में चिन्ह देखा, तब धनुष पर बाण चढ़ाकर बाली को पृथ्वी में गिरादिया। बाली के मरने के पश्चात् सुग्रीव ने तारा के समेत सब राज्य प्राप्त किया। राम माल्यावान पर्वत के ऊपर वर्षा ऋतु भर रहे।

(सभा पर्व ३१ वां अध्याय) राजा युधिष्ठिर के भ्राता सहदेव ने दक्षिण

दिशा में किष्किन्धा नामक कंदरे के निकट जाकर बन्दरनाथ मयन्द, और द्विविद से युद्ध किया।

वाल्मीकि रामायण—(अरण्य काण्ड—६७ वां सर्ग) रामचन्द्र से जटायु ने कहा कि रावण सीता को लेगया है, तब वह सीता को ढूँढ़ते हुए बन में चले। (७२ वां सर्ग) उनको भयंकर बन में कबन्ध राक्षस मिला। जब उन्होंने उस राक्षस को जला दिया, तब वह दिव्यरूप हो बोला कि हे राघव! सुग्रीव नाम वानर, जो अपने भाई बालीद्वारा घर से निकाला गया है, ऋष्यमूक पर्वत पर निवास करता है। वह सीता के खोज में तुम्हारी सहायता करेगा। तुम जाकर शीघ्र सुग्रीव को अपना मित्र करो। वह इस समय सहायता चाहता है। (७३ वां सर्ग) बन और पर्वतों में भ्रमण करते हुए तुम पंपासरोवर पर पहुँचोगे। उसके पास महर्षि मतंग अपने शिष्यों के सहित रहते थे। ऋषि लोग तो चले गये; परन्तु उनकी सेवा करने वाली तपस्विनी शवरी अब तक उस आश्रम में देख पड़ती है। वह तुमको देखकर स्वर्गलोक को चली जायगी। तुम पंपा के पश्चिम तीर पर उस गुप्त स्थान को, जो मतंगवन करके प्रसिद्ध है, देखना। ऋष्यमूक पर्वत पर शिला से आच्छादित एक बड़ी भारी गुहा है। उसमें प्रवेश करना बड़ा कठिन है। उस गुहा के पूर्व द्वार पर एक बड़ा भारी सरोवर है। उसी गुहा में वानरों के साथ सुग्रीव निवास करता है और कभी कभी शृङ्ग पर भी जा बैठता है।

(७४ वां सर्ग) राम और लक्ष्मण ने कबन्ध के वचन के अनुसार बन में चलते चलते एक पर्वत के निकट निवास किया और वहांसे चलकर पंपा के पश्चिम शवरी के रमणीय आश्रम को देखा। सिद्धा शवरी रामचन्द्र और लक्ष्मण को देख उठकर उनके चरणों पर गिर पड़ी, उसके पश्चात् उसने दोनों भाइयों का अतिथि सत्कार किया। तापसी शवरी, जो सिद्ध गणों की मान्य थी, बोली कि हे रामचन्द्र! अब मैं तुम्हारे प्रसाद से अच्छे लोक को प्राप्त करूंगी। जब तुम चित्रकूट में आए तब मुनि लोग, जिनकी मैं सेवा करती थी, दिव्य विमानों पर चढ़कर स्वर्ग को चले गए। मैंने तुम्हारे लिए पंपा बन के नाना वन्य पदार्थों को इकट्ठा कर रक्खा है। रामचन्द्र ने शवरी का ऐसा वचन

मुन उसके दिए पदार्थों को अंगीकार किया। इसके अनन्तर जटा धारिणी और कृष्ण मृगचर्म को धारण करने वाली शवरी अग्नि में कूद पड़ी और अग्नि के तुल्य रूप हो फिर उसमें से निकली। ब्रह्मलोक में जहां मतंग आदि महात्मागण विहार करते थे, शवरी जापहुंची। (७८ वां सर्ग) उसके पश्चात् रामचन्द्र लक्ष्मण से बोले कि मैंने मुनियों के सप्तसागर तीर्थ में पितृ तर्पण किया, अब हमलोग पंपा सरोवर के तीर पर चले; जहां ऋष्यमूक पर्वत भी पासही देख पड़ेगा, जिसपर सुग्रीव निवास करता है। ऐसा कह दोनों भाई पंपा के तीर पर आए।

(किष्किन्धा काण्ड—पहले सर्ग से पांचवें सर्ग तक) रामचन्द्र लक्ष्मण के सहित आगे चले। सुग्रीव ने, जो ऋष्यमूक पर निवास करता था, इन दोनों को देख त्रास युक्त हो हनुमान को भेजा। हनुमान ऋष्यमूक पर्वत से कूद कर राम लक्ष्मण के पास आया और अनेक बातें करके दोनों भाइयों को पीठ पर चढ़ाकर ऋष्यमूक पर होकर मलय पर्वत पर सुग्रीव के पास पहुंचा। वहां रामचन्द्र ने सुग्रीव का हाथ पकड़ा। दोनों मित्रों ने अग्नि की प्रदक्षिणा करके दृढ़ मित्रता की।

(६ वां सर्ग) सुग्रीव बोले, हे रामचन्द्र! एक दिन मैंने देखा कि एक स्त्री को एक राक्षस हरे लिये जाता था। वह राम और लक्ष्मण ऐसा पुकार रही थी। उसने हम पांच वानरों को इस पर्वत पर देख अपने वस्त्र और सुन्दर सुन्दर आभूषणों को ऊपर से गिरा दिया। रामचन्द्र के मांगने पर सुग्रीव ने पर्वत की कन्दरा से उन वस्तुओ को लाकर राम के समीप रखदिया, जिनको दोनों भाइयों ने पहचाना।

(११ वां सर्ग) सुग्रीव कहने लगा कि हे रामचन्द्र! एक समय भैंसे का रूप दुन्दुभी असुर किष्किन्धा के द्वार पर आकर गर्जने लगा। वाली ने दुन्दुभी के दोनों सींगो को पकड़ उसको दूर झोंक दिया। जब वह मरगया तब वाली ने उसको अपने दोनों भुजों से उठाकर फेंक दिया। वह एक योजन पर मतंग ऋषि के आश्रम पर जा गिरा। मुनीश्वर ने अपने तपो बल से वानर का कर्म जानकर शाप दिया कि जिसने इस मृतक को मेरे आश्रम में

फेका है वह यदि अबसे इस आश्रम में प्रवेश करेगा तो मरजायगा। उस शाप से बाली ऋष्यमूक पर्वत की ओर आंख उठाकर देख भी नहीं सकता है। देखिये दुन्दुभी के हड्डियों का समूह पासही में देख पड़ता है और ये सात साखू के वृक्ष हैं, इनमें से एक एक को बाली अपने पराक्रम से हिलाकर विना पत्ते का कर सकता है; आप उसको कैसे मार सकेंगे। रामचन्द्र ने खेलवाड़ की नाई पैर के अंगूठे से दुन्दुभी के सूखे शरीर को उठाकर दस योजन दूर फेंक दिया। (१२ वां सर्ग) और एक बाण साखू के वृक्ष की तरफ चलाया। वह बाण सातों वृक्षों को और पर्वत को फोड़ कर रामचन्द्र के तर्कस में आ घुसा। तब सुग्रीव बोले कि हे प्रभो! तुम बाणों से सम्पूर्ण देवताओं को मार सकते हो, बाली क्या पदार्थ है। उसके अनन्तर रामचन्द्र, सुग्रीव आदि सब उठे और शीघ्रता से किष्किन्धा में पहुंचकर वृक्ष के आड़ में खड़े हुए। तब सुग्रीव बड़े वेग से गर्जा, जिसको सुन बाली अत्यन्त क्रोध युक्त हो लपक के आया। दोनों भाईयों का घोर युद्ध होने लगा। हाथ में धनुष लिये रामचंद्र देखने लगे। परन्तु कौन सुग्रीव और कौन बाली है, यह भेद उनको न समुझ पड़ा, इस लिये उन्हों ने अपने बाण को नहीं छोड़ा। इतने में सुग्रीव बाली से हार कर ऋष्यमूक पर भाग गया। तब रामचन्द्र लक्ष्मण और हनूमान को साथ ले सुग्रीव के पास गये। राम की आज्ञा से लक्ष्मण ने पुष्पित गजपुष्पा को उखाड़ सुग्रीव के गले में माला के समान पहना दिया। (१४ वां सर्ग) रामचन्द्र सुग्रीव आदि के साथ किष्किन्धा में जाकर वृक्षों के आड़ में ठहरे। सुग्रीव ने उच्चस्वर से युद्ध के लिये बाली को ललकारा। (१६ वां सर्ग) तारा के वचन का निरादर कर बाली अपने नगर से बाहर निकल सुग्रीव से लड़ने लगा। जब रामचन्द्र ने देखा कि सुग्रीव क्षीण पराक्रम होगया; तब बाली की छाती में बाण मारा, जिससे वह भूमि पर गिर पड़ा। (२१ वां सर्ग) बाली ने राम से अनेक बातें करके अपने प्राणों को छोड़ दिया। (२९ वां सर्ग) लक्ष्मण के सहित श्रीरामचन्द्र ने सुग्रीव, तारा और अंगद को समाश्वासन दिया। सुग्रीव और अंगद ने बाली के शरीर को पालकी पर चढ़ाया। बानरों ने नदी के तीर पर चिता बनाई। तब

अङ्गद और सुग्रीव वाली को चिता पर स्थापन किया और विधि पूर्वक चिता में अग्नि देकर उलटी प्रदक्षिणा दी। इसके अनन्तर रामचन्द्र ने, जो सुग्रीवही के समान शोक युक्त होगये थे, उसको सम्पूर्ण प्रेत क्रिया करवाया।

(२६ वां सर्ग) उसके पश्चात् रामचन्द्र सुग्रीव से बोले कि यह वर्षा ऋतु का पहिला महीना श्रावण है; उद्योग का समय नहीं है। जब कार्तिक लगे तब तुम रावण के वध का उद्योग करना। उसके पश्चात् सुग्रीव ने किष्किन्धा में प्रवेश किया। वहां उनका अभिषेक हुआ। सुग्रीव ने अङ्गद को यौव राज्य के आसन पर अभिषेक कराया।

(२७ वां सर्ग) रामचन्द्र लक्ष्मण के सहित प्रस्रवण गिरि पर आये। दोनों भाइयों ने उस पर्वत के शृङ्ग पर एक बड़ी लम्बी चौड़ी कन्दरा देखकर वहां निवास किया। रामचन्द्र लक्ष्मण से बोले कि देखो इस गुहा के अग्र भाग में यह पूर्व वाहनी नदी शोभा दे रही है। यहां से किष्किन्धा दूर भी नहीं है। देखो यहां से गीत और बाजों का घोष और गर्जते हुए वानरों का शब्द सुन पड़ता है। (२८ वां सर्ग) उसके उपरान्त माल्यवान पर्वत पर निवास करते हुए रामचन्द्र ने लक्ष्मण से वर्षा ऋतु की शोभा वर्णन की।

(३० वां सर्ग) शरद काल के लगतेही रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा कि देखो सुग्रीव सीता को खोजने के लिये समय का नियम करके भी चेत नहीं करता। वर्षा काल* के चारो महीने बीत गये। तुम किष्किन्धा में जाकर मेरे क्रोध का रूप उससे कह सुनाओ। (३१ वां सर्ग) लक्ष्मण ने प्रस्रवण से चलकर पर्वत की संधि में बसी हुई सेनाओं से पूर्ण दुर्गम किष्किन्धा पुरी को देखा, जिसके बाहर भयंकर वानर घूम रहे थे। श्रेष्ठ वानरों ने सुग्रीव के घर जाकर लक्ष्मण का क्रोध पूर्वक आगमन कह सुनाया; परन्तु सुग्रीव ने, जो तारा के साथ कामाशक्त होरहे थे, उनके वचनों की ओर ध्यान नहीं दिया। उस समय सचिवों की आज्ञा पाकर बड़े बड़े वानर हाथों में वृक्षों को लिये हुए खड़े होगये। सम्पूर्ण किष्किन्धा वानरों से भर गई। उस काल में अंगद,

---

* वर्षा काल के आषाढ़ श्रावण, भाद्र, आश्विन ये ४ महीने होते हैं, किन्तु वर्षाऋतु श्रावण, भाद्र, दोही महीनों की नियत है।

प्रज्वलित कालाग्नि के सदृश लक्ष्मण को देख कर अत्यन्त त्रसित हो लक्ष्मण के पास गया। लक्ष्मण ने अङ्गद को सुग्रीव के पास भेजा; परन्तु सुग्रीव निद्रा से ऐसे प्रमत्त थे कि अगद के वचन को कुछ भी न सुन और न समझ सके। तब वानर लोग लक्ष्मण को क्रुद्ध देख उच्चस्वर से किलकिला शब्द करने लगे, जिससे सुग्रीव की निद्रा खुल गई। (३३ वां सर्ग) लक्ष्मण ने अंगद से सन्देश पाकर किष्किन्धा गुहा में पहुंच कर वहां पुष्पित वन, राजमार्ग और विशाल विशाल अनेक खन वाले गृह देखे। सुग्रीव, चाप के शब्द से लक्ष्मण का आगमन जान कर त्रास युक्त हो अपने आसन से विचलित हुए। उन्होंने तारा को लक्ष्मण के पास भेजा। तारा लक्ष्मण का प्रबोध करके उनको सुग्रीव के पास लाई। (३६ वां सर्ग) सुग्रीव की प्रार्थना से लक्ष्मण प्रसन्न हुए। (३७ वां सर्ग) सुग्रीव की आज्ञा से हनूमान ने सब वानरों को सब दिशाओं में भेजा। उन्होने शीघ्र जाकर समुद्रों, पर्वतो, वनों और सरोवरों के रहने वाले वानरों को राजा की आज्ञा कह सुनाई। प्रधान वानर पृथ्वी के सब वानरों को सन्देश दे शीघ्र सुग्रीव के पास उपस्थित होकर बोले कि सब वानर आ पहुँचे हैं। (३८ वां सर्ग) तब सुग्रीव लक्ष्मण के सहित सुवर्ण की पालकी पर चढ़ रामचन्द्र के निवास स्थान पर पहुँचे और रामचन्द्र के समीप हाथ जोड कर खड़े होगये। (३९ वां सर्ग) श्री रामचन्द्र सुग्रीव से बात कर रहे थे कि इतने में असंख्य वानरों से सम्पूर्ण भूमि आच्छादित होगई। (४० वें सर्ग से ४७ वां सर्ग तक) सुग्रीव ने सीता के पता लगाने के लिये लाखों वानरों को चारो दिशाओं मे भेजा। पूर्व, उत्तर और पश्चिम इन तीन दिशाओं से वानरों ने लौट कर सीता के पता लगाने का समाचार कपिराज से कह सुनाया।

(सुन्दर काण्ड—६९ वां सर्ग) दक्षिण के जाने वाले हनूमान आदि वानरों ने प्रस्त्रवण पर्वत पर आकर सीता का समाचार रामचन्द्र से कहा और सीता का दिई हुई मणि उनको दिया।

(युद्ध काण्ड—४ था सर्ग) श्रीरामचन्द्र ने प्रस्त्रवण पर्वत से दक्षिण दिशा में प्रस्थान किया। उनके पीछे बड़ी भारी वानरी सेना सुग्रीव से अभिरक्षित होकर चली।

(उत्तर काण्ड, ४० वां और ४१ वां सर्ग) अगस्त्यजी श्रीरामचन्द्र से हनूमान के जन्म की कथा कहने लगे कि हे रघुसत्तम! सुमेरु पर्वत पर वानरों का राजा केसरी रहता था; उसकी स्त्री का नाम अंजना था। वायु ने अंजना में हनूमान को उत्पन्न किया। जब अंजना फलों के लाने के लिये वन में गई, तब हनूमान क्षुधा से पीड़ित हो रोदन करने लगे। उसी समय सूर्योदय हुआ। बालक ने उड़हुल के पुष्प के समान बिंब निकलते सूर्य में देखा। तब उसने जाना कि यह कोई फल है। उस समय वह सूर्य को पकड़ने की इच्छा से चढ़कर मध्य आकाश में पहुंचा। वायु अपने पुत्र के स्नेह से सूर्य के दाह के भय से उसको शीतलता देता हुआ उसके पीछे पीछे चला जाता था। सूर्य ने ऐसा बिचार कर कि यह आगे बहुत कार्यों को करेगा, उसको भस्म नहीं किया, उसी दिन सूर्य ग्रहण था। जब हनूमान ने जाकर सूर्य को पकड़ लिया तब राहु डरकर वहां से हट गया। उसने इन्द्रलोक में जाकर यह वृत्तान्त इंद्र से कह सुनाया। इन्द्र हाथी पर चढ़ कर सूर्य के पास पहुंचे। राहु इन्द्र से पहिलेही वहां पहुंच गया। हनूमान ने राहु को भी एक फल जान कर सूर्य को छोड़ उसीको पकड़ने के लिए दौड़े। राहु भाग कर इन्द्र के शरण में गया। उस समय हनूमान ऐरावत हाथी को बहुत बड़ा फल जान कर उसकी ओर दौड़े। इन्द्र ने उस बालक को आते देखकर साधारण क्रोध पूर्वक धीरे से उनको वज्र मारा। हनूमान वज्र की चोट से पर्वत पर गिर पड़े और इनकी बांई ठुड्डी भग्न होगई। तब वायु महा क्रोध कर प्रजाओं के अन्तर्गत के अपने प्रचार को रोक हनूमान को गोद में ले गुहा में जाकर चुप चाप बैठ रहा। वायु के प्रकोप से सबका श्वास रुक गया और संपूर्ण कर्म बंद होगए। तब सब प्रजाओं की पुकार सुन कर ब्रह्माजी ने देवताओं के सहित वायु के पास जाकर हनूमान के शरीर पर हाथ फेरा, जिससे वह बालक जी गया। तब वायु प्रसन्न हो सब प्राणियों में संचार करने लगा। ब्रह्मा की आज्ञा से सब देवताओं ने बालक को वर दिए। इंद्र ने कहा कि मेरे वज्र से इस बालक की ठुड्डी टेढ़ी होगई है, इस लिए आज से इसका नाम हनूमान होगा। जब ब्रह्मा आदि सब देवता चले गए, तब वायु अंजना के पास हनूमान को रखकर

चला गया। उसके पश्चात् हनूमान महाबल से गर्वित हो ऋषियों के आश्रम में जाकर उपद्रव करने लगे। तब भृगु और अंगिरा के वंश वाले महर्षियों ने उनको शाप दिया कि जिस बल के भरोसे तुम हमको बाधा देते हो वह बल तुमको बहुत काल पर स्मरण होगा और जब तुमको कोई स्मरण करावेगा तब तुम्हारा बल बढ़ेगा। किष्किन्धा के ऋक्षराजा के मरने पर बाली राजा और सुग्रीव युवराज हुआ। बाल्यावस्थाही से सुग्रीव से हनूमान की भारी मित्रता थी। हनूमान ने सूर्य के पास जाकर उनसे व्याकरण पढ़ा। (यह कथा दूसरे शिवपुराण—७ वें खण्ड के ३९ वें अध्याय से ४३ वें अध्याय तक है)।

ब्रह्मांडपुराण—(अध्यात्मरामायण-अरण्यकांड, १० वां अध्याय) कबंध राक्षस ने कहा कि हे रामचन्द्र! सन्मुखवर्त्ती आश्रम में शबरी नाम्नी तापसी निवास करती है। तुम उसके पास जाओ, वह सीता की सब कथा तुमसे कहेगी। रामचंद्र लक्ष्मण के सहित उस वन को परित्याग करके शबरी के आश्रम में गए। उन्होंने शबरी से पूछा कि हे तापसी! सीता कहां है। उसने कहा कि हे भगवन्! रावण सीता को लङ्का में लेगया है। यहां से थोड़ी दूर पंपा सरोवर के निकट ऋष्यमूक पर्वत है, जिस पर ४ मन्त्रियों के सहित सुग्रीव बानर निवास करता है। तुम वहां जाकर उससे मित्रता करो। वह तुम्हारा समस्त कार्य पूर्ण करेगा। ऐसा कह शबरी ने अग्नि में प्रवेश करके मुक्ति लाभ की।

(किष्किन्धाकांड प्रथम अध्याय) रामचन्द्र पंपा सरोवर के समीप गए। वह सरोवर एक कोश-विस्तिर्ण था। राम और लक्ष्मण वहांसे चलकर ऋष्यमूक के निकट पहुंचे। सुग्रीव ४ बानरों के सहित उस पर्वत के शिखर पर रहता था। उसने दोनों भाइयो को देख भयभीत होकर हनूमान को उनके पास भेजा। हनूमान दोनों भाइयों को अपने कन्धों पर चढ़ाकर सुग्रीव के निकट ले आए। सुग्रीव ने जानकी के सब भूषण, जिनको उसने गिराया था, रामचन्द्र को दिए। सुग्रीव ने प्रतिज्ञा की कि मैं रावण को मार कर जानकी का उद्धार करूंगा। अग्नि की साक्षीकर दोनों मित्र बने। सुग्रीव ने

दुंदुभी दानव का पर्वताकार मस्तक रामचन्द्र को दिखलाया। रामचन्द्र उस को अपने अंगूठे से १० योजन दूर फेंक दिया। फिर सुग्रीव ने ताल के ७ वृक्षों को दिखलाया, जिनको राघव ने एकही बाण से भेदन कर दिया। तब सुग्रीव को निश्चय और विश्वास हुआ कि यह बाली को मारेंगे। (२रा अध्याय) रामचन्द्र की आज्ञा से सुग्रीव किष्किन्धा के उपवन जाकर गर्जा। तब बाली आकर उससे लड़ने लगा। रामचन्द्र ने दोनों वानरों का एकही रूप देखकर सुग्रीव बध की शंका से बाली को नहीं मारा। सुग्रीव बाली से परास्त होकर भाग गया। तब लक्ष्मण ने उसके गले में पुष्प-माला पहना दी। सुग्रीव ने फिर जाकर बाली को ललकारा। बाली तारा के वचन का निरादर करके आकर फिर सुग्रीव से लड़ने लगा। रामचन्द्र ने वृक्ष के ओट में बैठ कर बाली के हृदय में बाण मारा। बाली ने शरीर छोड़कर परमपद प्राप्त किया। (३) सुग्रीव ने शास्त्र के अनुसार बाली का प्रेत कर्म किया। लक्ष्मण ने राम की आज्ञानुसार किष्किंधा में जाकर सुग्रीव का अभिषेक करवाया। बाली का पुत्र अंगद युवराज बनाया गया। रामचन्द्र लक्ष्मण के सहित प्रवर्षण पर्वत के अति विस्तृत उच्च शिखर पर गए और वहां सरोवर के निकट एक गुहा में निवास करने लगे। (४) सुग्रीव की आज्ञा से हनुमान ने सातो द्वीपों के वानरों को बुलाने के लिये १० सहस्र वानर भेजे। (५) कुछ दिनों के पश्चात् रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा कि देखो शरद् काल उपस्थित हुआ; परंतु सुग्रीव सीता के खोजने का उद्योग नहीं करता है। तुम जाकर उसको ले आवो। लक्ष्मण किष्किन्धा में जाकर सुग्रीव को ले आए। (६) सुग्रीव ने दूसरे दिशाओं में विविध वानरगणों को भेज कर दक्षिण दिशा में अंगद, जाम्बवान, हनुमान, नल, सुषेण, शरभ, मयंद, और द्विविद को भेजा।

(उत्तरकाण्ड—तीसरा अध्याय) सुमेरु के शृंग पर ब्रह्मा की सभा है। एक समय जब ब्रह्मा ने योगावलंबन किया था, तब उनके दोनों नेत्रों से अश्रु गिरे। जब उन्होंने उसको हाथ से पोछ कर भूमि में गिरादिया, तब उससे एक महा वानर उत्पन्न होगया। वह ब्रह्मा कि आज्ञा से वहां निवास करने लगा। उसका नाम ऋक्षरज पड़ा। एक समय वह वानर उस पर्वत

के एक सरोवर में जल पीने के लिये गया और उसके जल में अपना प्रतिबिम्ब देख उसको वानर जान कर जल में कूद पड़ा। वह जल से बाहर निकलने पर सुन्दर स्त्री बनगया। इन्द्र ब्रह्मा की पूजा कर जब अपने गृह को जाने लगा, तब मार्ग में सुन्दर स्त्री को देख कामातुर होगया। उसका अमोघ वीर्य उस स्त्री के केश पर गिर कर भूमि में पड़गया, जिससे इन्द्र के तुल्य पराक्रमी वाली उत्पन्न हुआ। इन्द्र वाली को सुवर्ण माला देकर अपने गृह चलागया। उसी समय सूर्य भी उस स्त्री को देखकर कामवस होगया। उसने अपने अमोघ वीर्य को कन्या के ग्रीवा देश में निक्षेप किया, जिससे उसी क्षण महाकाय सुग्रीव वानर उत्पन्न हुआ। सूर्य उसकी सहायता के लिये हनूमान को सौंप कर अपने स्थान को चलागया। वह स्त्री दोनों पुत्रों को लेकर किसी स्थान पर सोगई। प्रातःकाल होने पर उसने अपने को पूर्ववत् वानर देखा। ऋक्षरजा वानर अपने दोनों पुत्रों को लेकर ब्रह्मा के समीप गया। इसके अनन्तर ब्रह्मा ने एक देवदूत से कहा कि तुम ऋक्षरजा के सहित विश्वकर्मा निर्मित किष्किन्धा नगरी में जाओ और वहां उसको सिंहासन पर अभिषिक्त करके वानरों का राजा बनावो। सातो द्वीप के वानर इसके वशवर्ती होंगे। जब रामचन्द्र का अवतार होगा तब संपूर्ण वानर उनकी सहायता करेंगे। देवदूत ने किष्किन्धा में जाकर ब्रह्मा के कथनानुसार ऋक्षरजा को वानरों का राजा बनाया। तबसे किष्किन्धा वानरों का आश्रय-स्थान हुआ। (यह कथा वाल्मीकि रामायण—उत्तर कांण्ड के ४३ वें सर्ग में है)।

पद्मपुराण—(पातालखण्ड, ३६ वां अध्याय) हनूमान ने पूस बदी सप्तमी को लंका से लौट कर रामचन्द्र से सीता का संदेशा कहा और उनको सीता का चूड़ामणि दिया। अष्टमी तिथि उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र विजय मुहूर्त में मध्याह्न समय प्रस्रवण गिरि से रामचन्द्र का प्रस्थान हुआ।

वामनपुराण—(१२ वां अध्याय) सरोवरों में पंपासर श्रेष्ठ है।

भक्तमाल—लगभग ३०० वर्ष हुए नाभाजी ने भक्तमाल नामक ग्रन्थ बनाया (भक्तमाल में लिखा है कि जयपुर के महाराज मानसिंह नाभाजी के

मठ पर गए थे)। सम्वत् १७६९ में प्रियादास ने भक्तमाल का टीका रचा। टीका के २७ अङ्क से ३३ तक इस भांति शवरी की कथा है;—शवरी वन में रहती थी। वह नित्यही रात्रि के शेष में चुपकेसे मतंगऋषि के आश्रम में लकड़ी के बोझे रख देती थी और ककड़ों को बहार कर मार्ग साफ कर देती थी। ऐसा देख ऋषि ने अपने शिष्यों को आज्ञा दी कि कौन श्रद्धावान मनुष्य ऐसा काम करता है, तुम लोग उसको पकड़ो। शिष्यलोग रात्रि में सावधान से पहरा देकर शवरी को पकड़ कर ऋषि के पास लाए। वह कापने लगी। दयालु मतंग ऋषि ने उसको बड़े स्नेह से अपने आश्रम में वास कराया और उसका नाम श्रवणा रक्खा। ऐसा देख उस वन के सब ऋषियों ने क्रोध करके मतंगऋषि को पंक्ति से बाहर कर दिया। कुछ दिनों के पीछे महर्षि शवरी को रामचन्द्र के दर्शन करने की आज्ञा देकर परम धाम को चले गए। गुरू के वियोग से शवरी के हृदय में दारुण शोक उत्पन्न हुआ; किन्तु श्रीरामचन्द्र के दर्शन की आशा से वह जीवन धारण करती थी। ऋषियों के स्नान के पहिलेही वह मार्ग को बहार कर साफ कर देती थी। यह देख वे लोग अप्रसन्न होते थे और उसके स्पर्श होने पर उस पर क्रोध करते थे। जब ऋषि लोग स्नान करने जाते थे तब शवरी वहांसे भाग जाती थी। उस समय स्नान का जल रुधिर होगया और उसमें कीड़े पड़गये। तब भी अभागे ऋषियों ने उसका कारण नहीं समझा। शवरी वन से बैर लाकर चीख चीख के मीठे बैरों को राम के लिये यत्न से रखती थी और बाट जोहती थी कि कब श्रीरामचन्द्र आकर इन बैरों को खायंगे। कुछ दिनों के पीछे श्रीरामचन्द्र पूछते पूछते उसके स्थान में आकर कहने लगे कि भगवती शवरी कहां है। शवरी ने आकर के दूरही से उनको प्रणाम किया। रघुनंदन ने शीघ्रता से उसको उठाया और उसके दिए हुए फलों को बहुत प्रशंसा करके भोजन किया। ऋषि लोग विचार करते थे कि श्रीरामचन्द्र यहां आवेंगे तो हम लोग बिगड़े हुए जल के सुधार का उपाय उनसे पूछेंगे। इतने में उन्होंने सुना कि वह शवरी के आश्रम में आगए हैं। तब उन्होंने अभिमान को परित्याग करके वहां

जाकर श्रीरामचन्द्र से जल बिगडने का कारण पूछा । रामचन्द्र ने कहा कि शवरी के चरण का स्पर्श करने से (अर्थात् जब शवरी उसमें अपना चरण डालेगी तब) जल स्वच्छ हो जायगा ।

आठवां अध्याय ।

(बंबई हाते में) लकुंडी, गदग जंक्शन, वादामी, और बीजापुर ।

लकुण्डी ।

होसपेट से ४१ मील (गुंटकल जंक्शन से ११२ मील) पश्चिमोत्तर हरपालपुर का रेलवे स्टेशन है । स्टेशन से करीब ४ मील दूर और गदग जंक्शन से करीब ८ मील दक्षिण पूर्व बम्बई हाते में लकुण्डी एक वस्ती है । एक समय इसका नाम लोकीकुण्डी था । यहां बहुत पुराने मन्दिर हैं ।

वस्ती के पश्चिम के दरवाजे के पास एक अच्छा मन्दिर है, जिससे चन्द गज दूर एक दूसरा मन्दिर है । काशी विश्वनाथ के मन्दिर में संगतराशी का उत्तम काम है । सब बातों के मिलाने से यह मन्दिर लकुण्डी में देखने लायक है, परंतु अब बहुत जर्जर होगया है । पश्चिम ओर सड़क के बगल पर एक तालाब के उत्तर नन्दीश्वर शिव का मन्दिर है । उससे २०० गज दक्षिण उस तालाब के पूर्व बगल पर वासव का मन्दिर है । वस्ती के भीतर मल्लिकार्जुन शिव का मंदिर है । उससे २०० गज पश्चिम ईश्वर का बहुत पुराना मन्दिर है, जिसकी छत गिर गई है । लगभग १०० गज का एक तंग रास्ता बावली के पास गया है । वहां पत्थर की बावली है । उसके तीन तरफ पानी तक सीढ़ियां हैं । पहली सीढ़ी के दोनो बगलों में एक एक हाथी है । उससे लगभग २०० गज दूर टावर के पश्चिम बगल पर मणि केशव (कृष्ण) का मन्दिर है । मन्दिर के पास एक सुन्दर पत्थर का छोटा तालाब है, जिसमें

छठवीं शदी के बने हुए हिन्दुओं के ३ गुफा मन्दिर और जैनों का एक गुफा मन्दिर हैं, जिनके कारण बादामी प्रसिद्ध है।

हिन्दुओं की गुफाएं—पहली गुफा भूमि से लगभग ३० फीट ऊपर है; इसका मुख पश्चिम ओर है। इसके आगे ६ स्तंभ बने हैं, जिनमें से दक्षिण वाले २ स्तंभ बिजली से टूट गये हैं; उसके स्थान पर अब लकड़ी के स्तंभ लगे हैं। गुफा के बाएं एक द्वारपाल और एक नन्दी है। द्वारपाल के सामने ५ फीट ऊंची १८ भुजावाली शिव की मूर्ति है। वहां गणपति और बाजेवाले गण भी बने हैं। अगवास के बाद (पूर्व) निकास का मकान है, जिसमें बाएं चतुर्भुजी विष्णु; दहिने एक पार्षद के साथ लक्ष्मीजी और चबूतरे पर शिव, पार्वती और नन्दी; पिछली दीवार में महिषासुर को मारती हुई ४ भुजावाली महेश्वरी, दहिन की दीवार में गणपति और बाएं की दीवार में स्कन्द हैं। निकास के बाद दो स्तभों के साथ एक कमरा है। भीतर स्तंभों के २ कतार हैं।

पहला गुफा मन्दिर से दूसरे गुफा मन्दिर को सीढ़ी गई है। अगवास में उत्तर मुख की ४ मेहरावी हैं। उसके आगे दो द्वारपाल और एक स्त्री है। बरंडे के पूर्व बगल म सूरतों का एक दल और भगवान वामनजी की बहुत बड़ी और वाराह भगवान की साधारण मूर्ति है। वामनजी एक चरण पृथ्वी पर और दूसरा आकाश में रक्खे हुए हैं। आगे गरुड़ पर चढ़े हुए चतुर्भुज विष्णु हैं। दीवार के सिर के पास शेषशायी विष्णु की मूर्ति बनी है। बरंड से एक दरवाजा द्वारा कमरे में प्रवेश करना होता है। कमरे की छत के नीचे ८ स्तभ हैं। उसके भीतर मनुष्य, हाथी, इत्यादि की बहुतेरी मूर्तियां बनी हैं।

दूसरी सीढ़ी के सिर के पास तीसरी गुफा के आगे एक चबूतरा है। यह गुफा यहां के सब गुफाओं में उत्तम है। इसका अगवास उत्तरसे दक्षिण तक ७२ फीट है, जिसमें १२½ फीट ऊंचे ८ स्तंभ बने हैं। १२ सीढ़ियां गुफे को गई हैं। यहां पत्थर निकाल कर अनेक गण, पुरुष, स्त्री, अर्द्धनारीश्वर शिव, शिव और पार्वती की मूर्ति बनी हुई हैं। बरंडे के पश्चिम अखीर में ११ फीट ऊंची नृसिंह की मूर्ति है। दक्षिण की दीवार म इतनीही ऊंचाई के

शिव हैं। पूर्व अखीर के पास शेष के फणि के नीचे नारायण हैं। इस सूरत के बाएं वाराह जी और दहिने कनड़ी अक्षर में एक शिला लेख है। भीतर का कमरा उत्तरसे दक्षिण तक ३८ फीट लम्बा; पूर्वसे पश्चिम तक ३५ फीट चौड़ा और १६ ½ फीट ऊंचा है। गुफा के बाएं चट्टान पर एक शिला लेख है। एक लेख में शाका ५०० (सन् ५७८ ईस्वी) लिखा है।

जैनगुफा—तीसरी गुफा के पूर्व ७ फीट ऊंची दीवार है, जो जैन गुफा को तीनों हिन्दू गुफाओं से जुदा करती है। दीवार के बाद चबूतरा या आंगन है। गुफा के आगे चट्टान काट कर बनी हुई चौड़ी ओरियानी है। अगवास में मेहराबदार ६ स्तंभ बने हैं। भीतर के बरंडे के बाएं एक जैन देवता और दहिने बुद्ध की मूर्ति है और आगे ४ स्तंभ खड़े हैं। इस बरंडे में मूर्तियों की ४ पंक्तियां और बरंडे के मध्य में बुद्ध देव हैं। उससे आगे आदितम् अर्थात् निज मन्दिर में बुद्ध की मूर्ति है। बरंडे से सीढ़ियां किले के दरवाजे को गई हैं।

झील के सिर के पास चट्टान के एक हिस्से के गिर जाने से पांचवीं गुफा बन गयी ह। एक सूराख द्वारा रेंग कर आदमी भीतर जाता है। चट्टान के सन्मुख एक बड़ी और एक छोटी जैन मूर्ति हैं। इससे थोड़ा पश्चिमोत्तर चट्टान के सन्मुख एक छोटा स्थान बना है, जिसपर देवताओं से घेरे हुए विष्णु और शेषजी हैं। पश्चिमोत्तर और उत्तर बहुत से दूसरे स्थान हैं।

पार्वती का मन्दिर—बादामी से करीब २ मील दूर मलपर्वा नदी और बादामी के बीच रास्ते के बनशंकर गांव में पार्वतीजी का मन्दिर है। पहिले पत्थर का एक छोटा सायवान मिलता है, जिससे २०० गज दूर ३६४ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा एक तालाब है, जिसके पश्चिम बगल पर स्तंभो के ४ कतारों के साथ एक सायबान और पूर्व बगल पर पानी तक पत्थर की सीढ़ियों का घाट है। तालाब में मछलियां बहुत हैं। तालाब के पास बहुत से बड़े बड़े बन्दर रहते हैं, और २६ फीट ऊंचा एक रथ रखा है, जिसके बड़ी पहियों का व्यास ७ फीट है। सायबान के पश्चिम बगल पर पार्वती का मन्दिर है। यहां एक ऊंचे बुर्ज पर कई कतारों में दीप रखने की

पानी में निकले हुए कई पुस्ते बने हैं । मन्दिर के दरवाजे के दोनों बगलों में चार चार काले स्तंभ हैं । बाहरी की दीवार का हिस्सा गिर रहा है ।

गदग ।

हरपालपुर से ११ मील और गुंटकल जंक्शन से १२३ मील पश्चिम कुछ उत्तर गदग में रेलवे का जंक्शन है । वहांसे रेलवे लाइन ३ तरफ गई हैं,— उत्तर होतगी जंक्शन को, पश्चिम हुबली और लोंडा जंक्शन होकर मोरमुगा बंदर को और पूर्व कुछ दक्षिण गुंटकल जंक्शन को । बंबई हाते में दक्षिणी विभाग के धारवाड़ जिले में (१५ अंश, २४ कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ४० कला, पूर्व देशांतर में) सबडिवीजन का सदर स्थान गदग एक कसबा है ।

कसबे के दक्षिण-पश्चिम कोने के पास कारवार कम्पनी की रुईकी कोठी है । उसके पास गवर्नमेन्ट के टेलीग्राफ आफिस और ममलतदार की कचहरी है । गदग में सिविल स्टेशन के मामूली आफिस हैं । यहां रुई और रेशम की बड़ी तिजारत होती है और सप्ताहिक बाजार लगता है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय गदग कसबे में २३८९९ मनुष्य थे; अर्थात् १८३६१ हिंदू, ४८०६ मुसलमान, ५९६ कृस्तान, ११७ जैन और १९ पारसी ।

त्रिकूटेश्वर का मन्दिर—कसबे के दक्षिण के महल्ले में त्रिकूटेश्वर का मन्दिर है । मन्दिर के पास ९ शिला लेख हैं, जिनमें से एक का सन् १०६२ ई० के मोताबिक होता है । प्रधान मन्दिर का पहला दरवाजा जगमोहन से ३६ फीट दूर है । एक कमरे होकर मन्दिर में जाना होता है । वहां दीवार में मूरतों के २ कतार हैं, जिनमें से नीचे वाले कतार में १५६ और ऊपर वाले में १०४ मूर्तियां बनी हुई हैं । पूर्व ओर ४ स्तभों के बीच में नन्दी है । मन्दिर के प्रधान हिस्से के पीछे पश्चिम की तरफ इमारत फैली है । हाते के दहिने के हिस्से में सरस्वती का मन्दिर है,जिसके जगमोहन में १८ सतून और ६ समूनची लगी हैं । चारो तरफ पुंजारी और दर्शकों के रहने के लिये म-

कान हैं। पश्चिम एक दूसरा दरवाजा पेशगाह के साथ है। घेरे के भीतर पत्थर का एक उत्तम कूप है, जिसकी सीढ़ियां पानी तक गई हैं। उस जगह बहुतेरे शिला लेख हैं, जिनमें से एक में शाका ७९० (८६८ ई०) लिखा है।

दूसरे मन्दिर—कसबे के पश्चिमोत्तर के कोने में एक वैष्णव मन्दिर है। उसके दरवाजे पर ९० फीट ऊंचा चौमंजिला गोपुर बना हुआ है, जिसके प्रत्येक बगल में १६ कतारों में मूर्तियां बनी हैं। गोपुर होकर एक हाते में जाना होता है, जिसमें निहायत साधारण मन्दिर और एक कूप है।

उस मन्दिर से ३०० गज दक्षिण-पश्चिम कारी बेव का पत्थर का मंदिर है, जिसमें ३० गज दक्षिण एक छोटा जैन मन्दिर है।

वादामी।

गदग जंक्शन से ४२ मील उत्तर वादामी का रेलवे स्टेशन है। बम्बई हाते के बीजापुर जिले में सबडिवीजन का सदर स्थान वादामी एक गांव है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय ३०६० मनुष्य थे। गांव के पूर्वोत्तर वादामी का किला और ऊंची भूमि पर चंद सुंदर मंदिर हैं। दक्षिण एक दूसरा चट्टानी किला एक पहाड़ी का मुकुट बना है, जिसके आगे के बगल में ४ गुफा मन्दिर हैं। ४०० फीट ऊंची दो पहाड़ियों के बीच की तंग जगह में वादामी की वस्ती है, जिसके पास एक उत्तम तालाब है। दोनों किले बहुत पुराने कदाचित् अंगरेजी सन् के शुरू के समय के हैं।

निचिले किले के फाटक का मुख दक्षिण-पश्चिम है। उससे प्रवेश करने पर थोड़ेही आगे बाएं तरफ हनूमान का मन्दिर मिलता है, जहांसे १२० फीट ऊपर पत्थर का बना हुआ महादेव का मन्दिर है। मन्दिर से ९० फीट ऊपर एक ऊंचा चट्टान है, जिसके किनारों के चारो तरफ ऊपर वाले किले की दीवार का हिस्सा है। यह किला अब छोड़ दिया गया है। उसमें केवल १० फीट लम्बी एक लोहे की तोप और दो तीन मंदिर हैं।

दक्षिणवाली पहाड़ी के, जिसके ऊपर एक किला है, पश्चिम बगल में

जगह बनी है। मन्दिर के पास साफ पानी का १५ फीट चौड़ा एक सुन्दर नाला है, जो बड़े बड़े दरख्तों के जंगल और झाड़ियों मे होकर बहता है।

मलपर्वा के किनारे के मन्दिर—बादामी से ८ मील दक्षिण-पश्चिम मलपर्वा नदी के बाएं किनारे पर सातवीं या आठवीं सदी के बने हुए द्राविडियन कारीगरी के नमूने के हिन्दुओं और जैनों के कई एक मन्दिर हैं। इनके सिवाय बस्ती में बहुतेरे मन्दिर हैं। पापनाथ का मंदिर उत्तरी हिंदुस्तान के मंदिर के ढांचे का ९० फीट लम्बा, ४० फीट चौड़ा है। मंदिर में १६ स्तंभ और भीतरी के कमरे में ४ स्तंभ है। मंदिर के आगे जगमोहन बना हुआ है।

गुफा—बादामी के ५ मील पूर्वोत्तर ऐवल्ली के पास एक जैन गुफा और एक हिन्दू गुफा है।

इतिहास—सन् १७८६ में बादामी टीपू सुलतान के अधिकार में थी। उस समय निजाम अली और पेशवा माधवराव की फौजों ने उसपर आक्रमण किया। अंतमें बादामी के किले की सेना परास्त होगई। सन् १८१८ में अंगरेजों ने किले को लेलिया। बादामी के पहिले का इतिहास बीजापुर के इतिहास में लिखा गया है।

बीजापुर।

बादामी के रेलवे स्टेशन से ७३ मील (गदगजंक्शन से ११५ मील) उत्तर और होतगी जंक्शन से ५८ मील दक्षिण बीजापुर का रेलवे स्टेशन है। बंबई हाते के दक्षिणी विभाग में (१६ अंश, ४९ कला, ४९ विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अन्श, ४६ कला, ८ विकला पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान बीजापुर एक पुराना नगर है, जिसका नाम पहिले विजयपुर था।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय बीजापुर कसबे में १६७५९ मनुष्य थे; अर्थात् १२०७५ हिंदू ४५०९ मुसलमान, १०० जैन, ५० क्रस्तान, १८ पारसी और ७ यहूदी।

रेलवे स्टेशन से पश्चिम प्रायः गोलाकार चक्कर में बीजापुर कसबा है,

जिसके बगलों में पत्थर की दृढ़ दीवार, जिसकी परिधि लगभग ६ मील के घेरे की है, बनी हुई है। कोट में स्थान स्थान पर सुन्दर पाये बने हैं। नगर के चारो ओर ७ फाटक हैं;—पश्चिमोत्तर शाहपुर फाटक; उसके दक्षिण कसबे के पश्चिम जोहरपुर फाटक; उससे २०० गज दक्षिण मक्का फाटक, जो स्कूल बनने के कारण अब बंद रहता है; दक्षिण की दीवार के मध्य में फतह फाटक, कसबे के पूर्व बगल में अलीपुर फाटक; उससे उत्तर रेलवे स्टेशन के पास बादशाहपुर फाटक और कसबे के उत्तर की दीवार के मध्य में बाहमनी फाटक।

नगर की दीवार के भीतर ही किला है। बादशाही समय में नगर ही किला था और जिसको किला कहते हैं वह बादशाह का गढ़ था। नगर के भीतर का किला, जिसके चारो ओर दृढ़ दीवार है, पूर्वसे पश्चिम तक लगभग १९०० फीट लंबा और उत्तरसे दक्षिण तक १६९० फीट चौड़ा है। इसका नाम अर्क किला है। अब अच्छी अच्छी इमारतें इसीमें देख पड़ती हैं। बीजापुर में वहांके मुसलमान बादशाहों की अनेक प्रकार की कारीगरी से बनी हुई बहुतसी इमारतें अब तक विद्यमान हैं और बहुत सी टूट फूट कर उजाड़ हो रही है। वहां अनगिनत मसजिदें मकबरें और कबरें हैं। इमारतों के देखने से बीजापुर के बादशाही समय के ऐश्वर्य और विभव का अनुभव होता है। वहां की प्रधान इमारतों को अच्छी तरह से देखने में दो दिन से कम नहीं लगेगा। किले के बगलों में और उसके मध्य में उत्तरसे दक्षिण तक चौड़ी खाई बनी हुई है। किले के भीतर आनंद महल, गंगन महल, चीनमहल, सतमहलामहल, ग्रेनरी, मक्का मसजिद, पुरानी मसजिद, इत्यादि इमारतें बनी हुई हैं और गिरजा इत्यादि कई एक अंगरेजों की बनवाई हुई इमारतें हैं। किले के पश्चिमोत्तर पोष्टआफिस के पश्चिम बुखारा मसजिद है। एक सड़क बीजापुर नगर की पूर्वी दीवार के बादशाहपुर फाटक के पास से सीधी पश्चिम किले के उत्तर के किनारे के निकट होकर सिरजा बुर्ज को और दूसरी अलीपुर फाटक से पश्चिम किले के दक्षिण के किनारे के पास होकर गई है।

गोल गुंबज—नगर के पूर्वकी दीवार के भीतर रेलवे स्टेशन के पास बीजापुर के ७ वें बादशाह महम्मद आदिलशाह का उत्तम मकबरा है, जो गोल गुम्बज कहलाता है। इतना बड़ा गुम्बज किसी देश में नहीं है। ,२ फीट ऊंचे और ६०० फीट लम्बे तथा इतनेही चौड़े चबूतरे पर मकबरा है। उसके आगे का फाटक एक तरफ से ८८ फीट और दूसरी तरफ से ९४ फीट लम्बा है। मकबरे के बाहर का प्रत्येक बगल १९६ फीट लंबा है और उसके प्रत्येक कोने के पास एक सात मंजिला मीनार है। मकबरे के मध्य के बड़े गुम्बज का व्यास १२४ फीट है और प्रत्येक बगल के मध्य में एक चौड़ी और ऊंची मेहराबी है। मीनारों के भीतर चक्कर दार सीढ़ियां बनी हुई हैं। मीनारों के सिरोभाग पर चढ़ने से चारो ओर दूर दूर की वस्तु देख पड़ती हैं। मकबरे के मध्य के गुंबज के नीचे का बड़ा कमरा हर तरफ से १३५ फीट लंबा और भीतर से १७५ फीट और बाहरी १९८ फीट ऊंचा है।

गुम्बज के नीचे के बड़े कमरे के मध्य में महम्मद आदिल शाह की, पूर्व बगल पर उसकी छोटी स्त्री और आठवां बादशाह दूसरा अली आदिलशाह के लड़के की और पश्चिम एक नाचने वाली लड़की तथा महम्मद आदिलशाह के सबसे बड़ी स्त्री और एक लड़की की कबरें हैं। दक्षिण के द्वार के पास एक पत्थर पर फारसी अक्षरों में लिखा हुआ है कि सुलतान महम्मद आदिलशाह का देहांत सन् १०७० हिजरी (सन् १६५९ ई०) में हुआ। मकबरे से पश्चिम चबूतरे के किनारे पर एक मसजिद है, जिसमें अब मोसाफिर टिकते हैं।

जुमामसजिद—गोल गुम्बज से ½ मील से अधिक दक्षिण-पश्चिम अलीपुर फाटक से किले के दक्षिण जाने वाली सड़क के पास हिन्दुस्तान के उत्तम मसजिदों में से एक जुमा मसजिद है। दक्षिण हिन्दुस्तान में उसकी जोड़ की कोई मसजिद नहीं है। उत्तर बगल के एक फाटक से चौखूटे आंगन में प्रवेश किया जाता है, जिसके पूर्वकी दीवार तैयार नहीं है। उसके पश्चिम बगल में खास मसजिद और उत्तर और दक्षिण बगलों पर ३१ फीट चौड़ा मेहराबदार दालान है। आंगन के मध्य में फौवारे का सूखा हुआ हौज है। मसजिद का काम पहला अली आदिलशाह ने आरंभ किया

और उसके सब उत्तराधिकारियों द्वारा उसका काम जारी रहा; परन्तु पूरे तौर से मसजिद तैयार नहीं हुई। खास मसजिद की लम्बाई में ९ और चौड़ाई में ५ खम्भे हैं। वह बहुत से मोरब्बे स्थानों में बंटी हुई है। प्रत्येक मोरब्बा स्थानों के ऊपर एक चिपटा गुम्बज़ बना हुआ है। मध्य की जगह, जिसपर बड़ा गुम्बज है, ७० फीट लम्बी और इतनीही चौड़ी है, जो मोरब्बे स्थानों के १२ गुना होती है। मसजिद के फर्श पर हजारों जा निमाज अर्थात् निमाज पढ़ने की क्यारियां बनाई हुई हैं। मेहराबों पर फारसी और खोदे हुए हैं। मसजिद से चौथाई मील से अधिक पश्चिम मेहतर महल है।

असरी शरीफ का महल—भीतरी के गढ़ अर्थात् क़िले के पूर्व की दीवार के मध्य के पास उसकी खाई के बाहर तथा मेहतर महल से उत्तर असरी शरीफ का महल एक भारी इमारत है। ३६ फीट चौड़ा उसका पेशगाह है, जिसके पूर्व बगल पर ६० फीट ऊंचे टीक लकड़ी के ४ स्तंभ लगे हैं। पेशगाह के भीतर की छत चौखूटे लकड़ी से बनी है और सुन्दर तरह से रंगी हुई है। पेशगाह के पश्चिम बगल पर कई दो मंजिले कमरे हैं। ऊपर के ८१ फीट लंबे और २७ फीट चौड़े कमरे में नीचे से सीढ़ियां गई हैं। कमरे के भीतर की छत और दीवारों में मोलम्मा हुआ है और उसके किवाड़ों पर हाथीदांत के जड़ाव का सुन्दर काम है। कमरे के उत्तर एक दूसरे कमरे में महम्मद साहब के मूछों के दो बाल रक्खे हुए हैं। वर्ष में केवल एक बार वह कमरा खुलता है। दक्षिण के दो कमरे खूबसूरती से रंगे हुए हैं। संपूर्ण कमरे मरहठों की आज्ञा से बद शकल किए गए थे और किवाड़ों में जड़े हुए हाथीदांत के काम उजाड़ लिए गए थे। इस इमारत को करीब सन् १६४६ में महम्मद आदिल शाह ने इनसाफ की कचहरी के लिये बनाया; इस लिये इसका नाम असरी शरीफ महल पड़ा। इसके आगे २५० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा एक तालाब है।

पुरानी मसजिद—क़िले के भीतर के फाटक के पश्चिमोत्तर पुरानी मसजिद है, जो पहले जैन मन्दिर थी। उसका दो मंजिला मंडप मसजिद का पेशगाह बना है। भीतरी का दरवाजा मुसल्मानों का बनवाया है। खास

मसजिद हिन्दू या जैनों के स्तंभों से बनी है। मसजिद के मध्य के कत्तार के उत्तर बगल के पास नकाशी दार एक काला स्तंभ पर कनड़ी अक्षर में शिला लेख है और अन्य कई स्तंभों पर चारो तरफ कई एक संस्कृत में और चन्द कनड़ी अक्षर में शिला लेख हैं। एक लेख सन् १३२०ई० के मोताबिक होता है।

आनन्द महल—यह किले के मध्य में गंगन महल से पूर्व है। यहां महल की स्त्रियां रहती थीं। इसको सन् १५८९ में दूसरा इब्राहिम आदिल-शाह ने बनवाया; लेकिन इसके अगवाम का काम पूरा नहीं हुआ। इसमें एक उत्तम बड़ा कमरा है, जिसमें अब ऐसिस्टेंट कलक्टर रहता है।

दूसरी पुरानी मसजिद—गगन महल के उत्तर जैन मन्दिर के पत्थरों से बनाई हुई पुरानी मसजिद है। इसकी लंबाई में १० और चौड़ाई में ७ खंभों की पंक्तियां हैं।

सतमहला महल—किले के भीतर उसके पश्चिम के किनारे के पास पांच मंजिला टावर है, जो पहिले सात मंजिला था। उसके सिरे पर चढ़ने से सम्पूर्ण नगर देखा जा सकता था।

चीनमहल—ग्रेनरी के दक्षिण के किनारे के पास १९८ फीट लंबा एक उत्तम हाल अर्थात् बड़ा कमरा है। टूटे हुए चीना यहां मिलते हैं, इसी कारण से उसका नाम चीनमहल पड़ा है। उसीमें अब जज, मजीष्ट्र और कलक्टर की कचहरियां लगती हैं।

मक्का मसजिद—ग्रेनरी मकान के आगे सड़क के मध्यमें एक छोटा मागयान है। वहांसे १८० फीट लम्बा एक पुल द्वारा किले के मध्य की खाई लांघी जाती है, जिसकी औसत चौड़ाई १५० फीट है। किले के भीतर उस खाई के फाटक से पूर्वोत्तर मक्का मसजिद है। खास मसजिद की लम्बाई में ५ और चौड़ाई में ५ दर अर्थात् खाने हैं। मसजिद के ऊपर एक गुम्बज है। यह एक छोटी सी सुन्दर मसजिद है। लोग कहते हैं कि चौदहवीं सदी के आरंभ में, जब बीजापुर हिंदू राजा के अधिकार में था, एक पीर ने इस मसजिद को बनवाया।

दूसरा अली आदिलशाह का मकबरा—इसको अलीरोजा भी कहते हैं। यह एक अध बना मकबरा है। किले के उत्तर १५ फीट ऊंचे और २१५ फीट लम्बे और इतनेही चौड़े चबूतरे पर एक स्केयर के प्रत्येक बगलों पर सात सात बड़ी मेहराबियां हैं। घेरे के मध्यमें ७८ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा रौजा है। बादशाह के मरने के सबब से इसका काम जो रुक न जाता और असली खाहिश के मुताबिक मकबरा बनता तो यह बीजापुर के दूसरी सब इमारतों से उमदगी और कद में बढ़ जाता। यह मकबरा तय्यार होता तो इसके ऊपर एक गुम्बज बनता। स्केयर के समीपही दक्षिण पश्चिम बोखारा मसजिद है, जिसमें अब पोष्टआफिस का काम होता है।

इब्राहिम रौजा—नगर के पश्चिम के मक्का फाटक से ४०० गज पश्चिम एक मजबूत दीवार से घेरा हुआ एक ऊंचे चबूतरे पर बीजापुर के दूसरा इब्राहिम आदिलशाह का रौजा है, जिसमें इब्राहिम आदिलशाह, उसकी स्त्री ताज सुलताना और उसके खान्दान के दूसरे चार आदमियों की कबरें हैं। रौजे के पश्चिम एक मसजिद और रौजे तथा मसजिद के बीच में एक हौज और एक फौआरा है। रौजे के चारो तरफ सात सात मेहराबियों के बरंडे हैं। भीतर की छत कोरान के बैतों के साथ नक्काशी की हुई है। अरबी जुमिलों के झंझरी दार काम के साथ खिड़कियां बनी हैं। पत्थर के तख्तों में काटे हुए प्रति अक्षरों के बीच की जगह से रोशनी आती है। इमारत के बाहर दोहरी मेहराबियों के कत्तारों में खुबसूरत कारनिस है। रौजे के प्रत्येक कोने के पास एक चौमंजिला बड़ा मीनार और उनके बीच बीच में ८ छोटे मीनार हैं। रौजे का प्रधान कमरा ४० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा है, जिसके ऊपर गुम्बज में दूसरा कमरा है, जिसमें जाने के लिये दीवार की मोटाई में तंग सीढ़ियां बनी हुई हैं। उत्तर के दरवाजे के ऊपर पारसी में शिला लेख है, जिसके अखीर के सतर में इब्राहिम आदिल-शाह की मृत्यु का समय सन् १०३६ हिजरी (१६२६ ई०) लिखा है। दक्षिण के दरवाजे के ऊपर एक दूसरे लेख में बादशाह की प्रशंसा है। उसका हिजरी

सन् १६३३ ई० के मुताबिक होता है । उसी दरवाजे के ऊपर के फारसी लेख से जाहिर होता है कि मलिक सन्दाल द्वारा यह रौजा तय्यार हुआ और इसके बनवाने में डेढ़ लाख नव सौ हुन्न अर्थात् ७०००० पाउंड खर्च पड़ा।

सिंहबुर्ज—नगर के पश्चिमोत्तर के शाहपुर फाटक से ९०० गज दक्षिण उसके पश्चिम की दीवार और सिरजाबुर्ज के पास सिंहबुर्ज है । उसमें दो सिंहों के सिर बनने के कारण वह सिंहबुर्ज कहलाता है । बुर्ज की सीढ़ियों पर चढ़ने पर दहिने बगल में एक लेख मिलता है, जिससे जान पड़ता है कि यह बुर्ज सन् १६७१ में ९ महीनों में तय्यार हुआ । इसके ऊपर मालक मैदान नामक एक बड़ी तोप है, जिसके मुख के दोनों तरफ हाथी को निगलता हुआ भूत का मुख बना है । तोप की लंबाई १४ फीट; घेरा १३½ फीट और सुराख का व्यास २ फीट ४ इंच है । इस तोप को महम्मद रूमीखां ने बनवाया था । तोप के मुख के पास लिखा है कि खोदा के पैगम्बर के खान्दान का दास आबुलगजी निजामशाह, सन् ९५६ हिजरी । वहां यह भी लिखा है कि काफिरों को जीतने वाला और मजहब को बचाने वाला बादशाह आलमगीर ने अपने राज्य के ३० वां वर्ष सन् १०९७ हिजरी (१६८६ ई०) में बीजापुर को जीता और शाहों के राज्य को अपने राज्य में मिला लिया, तथा कामयाबी देखला कर मालक मैदान को ले लिया ।

ऊपरीबुर्ज वा हैदरबुर्ज—सिरजा बुर्ज के करीब १५० गज पूर्वोत्तर नगर के भीतर ६१ फीट ऊंचा हैदर बुर्ज है, जिसके बाहर से ऊपर को सीढ़ियां गई हैं । ऊपर के रास्ते पर एक शिला लेख है, जिसमें सन् १५८३ ई० के मुताबिक का हिजरी सन् देख पड़ता है । बुर्ज के ऊपर लोहे की पट्टी से इकट्ठा बांधी हुई २ तोपें रक्खी हुई हैं, जिनमें की बड़ी तोप, जो ३० फीट लंबी है, लम्चछड़ी कहलाती है । उसके मुख के पास का व्यास २ फीट ५ इंच, पीछे का व्यास ३ फीट और मुख की सुराख

का व्यास १२ इंच है। दूसरी तोप १९ फीट १० इंच लंबी है। उसके मुख के पास का व्यास १ फुट और पीछे का व्यास १½ फीट है। इनके सिवाय कई एक दूसरी बड़ी तोपें बीजापुर के आस पास पड़ी हैं।

ताजबावली—बीजापुर में कई तालाव हैं, जिनमें नगर के पश्चिम के मक्का फाटक से १०० गज पूर्वताज बावली प्रधान है। उसके अगवास के पूर्वकी बाजू कुछ तबाह है और कुछ कनड़ी भाषा के स्कूल के काम में आता है और पश्चिम की बाजू म्युनिसपल आफिस बना है। ताज बावली पानी के किनारे के पास २३० फीट लंबी और इतनीही चौड़ी है। उसमें कुछ झरने से और कुछ नाले से पानी आता है। सूखे मौसिमों में उसमें करीब ३० फीट गहरा पानी रहता है। बावली में बहुत सी मछलिया हैं।

इनके अलावे बीजापुर में सिकंदर आदिलशाह का मकबरा, औरंगजेब की एक बेगम का मकबरा, मोतीगुंबज, बारह पावे की गुंबज, मेहतर महल्ल इत्यादि बहुत सी पुरानी इमारतें हैं।

बीजापुर ज़िला—बंबई हाते के दक्षिणी विभाग में बीजापुर जिला है। इसके उत्तर भीमानदी बाद शोलापुर जिला और अकलकोट का राज्य; पूर्व और पूर्व-दक्षिण हैदराबाद का राज्य; दक्षिण मलपर्वा नदी बाद धारवाड़ जिला और रामदुर्ग देशीराज्य और पश्चिम मधोल, जमखंडी और जाठ राज्य है। जिले में भीमा, कृष्णा, घटपर्वा, मलपर्वा आदि नदियां बहती हैं। खेतों को पटाने के लिये ४५० से अधिक बांध और ६००० से अधिक कूप हैं। पहाड़ियों से लोहा, स्लेट, तेलिया पत्थर और अन्य पत्थर निकाले जाते हैं। जंगल नहीं हैं।

ऐसा प्रसिद्ध है कि यह जिला दंडकारण्य के अंतर्गत है। इसमें दंडकारण्य के ७ ऋषियों के ७ आश्रम के स्थान हैं—(१) बादामी में एवल्ली, (२) इन्डी में धुलखेड, (३) बादामी, (४) बगल कोट, (५) कालाटगी में गलगली, (६) सीदगी में दिपगी और (७) बादामी में महाकूता।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय बीजापुर जिले का क्षेत्रफल ५७५७ वर्गमील और इसकी मनुष्य-संख्या ६३८४९३ थी, अर्थात् ५६८०२६ हिन्दू,

६७०६६ मुसलमान, २६७९ जैन, ६२५ कृस्तान, २६ पारसी और १ बौद्ध। हिंदुओं में ९४७८६ धांगड़, ५६८६५ पंचमशाली, ४४४३३ मांग और घेद, ३६९९२ तेली, २९०५५ रेडी, २६६३१ जंगम, २१२६२ बिराध, २०३७४ ब्राह्मण, १६९९२ कुन्वी, १०१८७ कोली, ८०१० कोस्ती, और शेष में भंडारी, राजपूत, लिंगायत इत्यादि जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बीजापुर जिले के कसबे बगल कोट में १८०३४, बीजापुर में १६७५९, कुलादगी में १५४८१ और इलकाल में ११२१६ मनुष्य थे।

इतिहास—सन् ईस्वी की दूसरी शदी में बीजापुर जिले के अंतरगत बादामी, इण्डी और कलकेरी ये ३ प्रसिद्ध स्थान थे, जिनमें सबसे पुराना स्थान बादामी पल्लव वंश के राजाओं की राजधानी थी, जिनका बनवाया किला वहां अबतक देखने में आता है। छठवीं शदी के मध्य भाग में चालुक्य वंश के राजा पुलिकेसी ने पल्लव वंश के राजा से बादामी को लेलिया। लगभग सन् ७६० में राष्ट्रकूता वंश के राजा ने चालुक्यों से जिला लेलिया, जिसके वंशधरों से सन् ९७३ ई० म पश्चिम के चालुक्यों ने उसको छीन लिया। उसके पश्चात् यह जिला क्रम से कलचुरी और हुसलाबल्लाल के अधिकार में गया। सन् ११९० म देवगिरि के यादव वंश के राजा ने इसपर अपना अधिकार जमाया। सन् १२९४ में, जब यादव वंश के राजाओं ने बीजापुर को छोड़कर अपना सदर स्थान देवगिरि को बनाया था, दिल्ली के अलाउद्दीन ने यादव वंश के नवें राजा रामचन्द्र को परास्त करके देवगिरि को लूटा, रामचन्द्र का सब धन लेलिया और उसको अपने आधीन बनाया।

बीजापुर के आदिलशाही खांदान को कायम करने वाला युसफ आदिल शाह एक तुर्क था। उसकी माता ने उसके बचपन में उसके जान की रक्षा की। बीदर के बादशाह ने बड़ा होने पर उसको खरीद कर अपना अंगरक्षक बनाया। उसकी शीघ्रही तरक्की हुई। १५ वीं शदी के अन्त मे पहिले बीदर और गुल्बर्गा के बाहमनी खांदान निर्बल होगई। उस समय युसफ आदिलशाह नहीं होता तो हिन्दूलोग दक्षिणी हिन्दुस्तान में अपने प्रथम

का अधिकार मुसलमानों से छीन लेते। सन् १४८९ में युसफ आदिलशाह स्वाधीन बन गया। उसने बीजापुर को अपनी राजधानी बनाया; बीजापुर के बड़े गढ़ को बनवाया; अपने राज्य को समुद्र के किनारे तक फैलाया और पोर्चुगीजों से गोआ छीन लिया। वह बीजापुर के किले का काम अधूरा छोड़ कर मरगया; किन्तु इब्राहिम आदिल शाह ने उसको तैयार किया। सन् १५१० में उसके मरने पर उसका पुत्र इस्माइल आदिलशाह राजगद्दी पर बैठा, जिसने कामयाबी के साथ राज्य किया। सन् १५३४ में इस्माइल की मृत्यु होने पर मवलू आदिलशाह को राजगद्दी मिली; किन्तु केवल ६ मास राज्य करने के पश्चात् वह गद्दी से उतार दिया गया और अंधा बनाया गया। तब उसका छोटा भाई इब्राहिम आदिलशाह राज्याधिकारी हुआ। सन् १५५७ में इब्राहिम के मरने पर उसका पुत्र अली आदिलशाह उसका उत्तराधिकारी हुआ, जिसने बीजापुर की दीवार, जामा मसजिद, अनेक जलाशय और कई एक अन्य कामों को बनवाया और अहमदनगर तथा गोलकुण्डा के बादशाहों के साथ मिल कर सन् १५६५ में तालीकोट के बड़े संग्राम में विजयानगर के हिन्दू राजा रामराजा को परास्त किया। राजा मारा गया। उसकी राजधानी मुसलमानों ने लेली। सन् १५८० में अली आदिलशाह का देहांत होने पर उसका भतीजा, जो निरा बच्चा था, इब्राहिम आदिलशाह तख्त पर बैठा। मृत बादशाह की विधवा चांदबीबी, जो राज्य कार्य में चतुर थी, राज्य का काम करने लगी। सयाना होने पर इब्राहिम ने होशियारी से राज्य किया। सन् १६२६ में दूसरा इब्राहिम का मृत्यु होने पर महम्मद आदिलशाह बीजापुर का बादशाह बना। उसके राज्य के समय महाराष्ट्र प्रधान शिवाजी के पिता शाहजी बीजापुर राज्य का एक अफसर हुआ था और शिवाजी ने सन् १६४६ और १६४८ के बीच में बीजापुर राज्य के कई एक किले को छीन लिया। थोड़ही दिन बाद शिवाजी ने कोकन के बड़े भाग पर अपना अधिकार कर लिया। सन् १६५९ में महम्मद आदिलशाह के मरने पर उसका पुत्र अली आदिलशाह उत्तराधिकारी बना। उसके राज्य के समय बीजापुर राज्य हीन दशा में था। सन्

१६७२ में उसकी मृत्यु होने पर उसका बचा पुत्र शिकंदर आदिलशाह, बीजापुर का ९ वां बादशाह बना।

सन् १६८६ में मुगल बादशाह औरंगजेब ने बीजापुर को लेलिया। बीजापुर का अन्तिम बादशाह शिकंदर आदिलशाह चांदी की जंजीर में बांध कर उसके पास लाया गया। मुगलों के राज्य की घटती के समय बीजापुर और उसके आस पास के देश महाराष्ट्रों के आधीन हुए। सन् १८१८ में अंगरेजी सरकार ने बीजापुर को पेशवा से लेकर सितारा के राजा को दिया; किन्तु सन् १८४८ में सितारा के राजा के निःसंतान मरने पर उसका राज्य बंबई हाते के अंगरेजी राज्य में मिला लिया गया। अंगरेजी गवर्नमेंट बीजापुर की प्रधान इमारतों और स्मारक वस्तुओं की यथासाध्य मरम्मत करती है। बीजापुर कलादगी जिले में था; किन्तु सन् १८८५ में जिले का सदर स्थान बनाया गया और जिले का नाम बीजापुर जिला पड़ा। बादामी से पश्चिमोत्तर की ओर घटपर्वा नदी के दहिने किनारे पर कलादगी कसबा है।

नवां अध्याय।

(हैदराबाद के राज्य में) रायचुर, (मदरास हाते में) अदोंनी, गूटी, ताड़पत्री, कड़पा, रेणुगुंटा जंक्शन, कालहस्ती, वेंकटगिरि, और नेल्लूर।

रायचुर।

बीजापुर के रेलवे स्टेशन से ५८ मील उत्तर सदर्न मरहठा और ग्रेट इंडियन पेनिनसूला रेलवे का जंक्शन होतगी में है। होतगी से ८४ मील दक्षिण-पूर्व वाड़ी जंक्शन तक का वृत्तांत भारत-भ्रमण के इसी खंड के ४ थे अध्याय में लिखा है। मैं वाड़ी जंक्शन से हैदराबाद, बेजवाड़ा, गुंटकल जंक्शन, बल्लारी, होसपेट, गदग जंक्शन, बीजापुर, होतगी जंक्शन इत्यादि

स्थानों में चक्कर देकर फिर वाडी जंक्शन पर पहुंचा और वाडी से दक्षिण-पूर्व की लाइन से आगे चला।

वाडी जंक्शन से ५१ मील (होतगी जंक्शन से १३५ मील) दक्षिण-पूर्व हैदरावाद के राज्य में कृष्णानदी के बाएं अर्थात् उत्तर किनारे के पास कृष्णा नामक रेलवे स्टेशन है। स्टेशन के निकट मारवाडी धर्मशाला और स्टेशन से ½ मील दूर कृष्णा के समीप एक दूसरी धर्मशाला है। दोनों में सदावर्त जारी है। बहुतेरे यात्री उस स्टेशन पर उतर कर कृष्णा में स्नान करते हैं। कृष्णा नदी पर ३८५४ फीट लंबा रेल का पुल बना हुआ है। उस स्थान पर सूखी ऋतुओं में कृष्णा नदी बहुत चौड़ी नहीं रहती है।

कृष्णा के स्टेशन से १० मील और वाडी जंक्शन से ६१ मील (होतगी जंक्शन से १४५ मील) दक्षिण-पूर्व रायचुर की छावनी का रेलवे स्टेशन और उससे ६ मील दक्षिण-पश्चिम रायचुर कसबे का रेलवे स्टेशन है। उस जगह ग्रेट इन्डियन पेनिनसूला रेलवे मदरास रेलवे से मिल गई है। हैदरावाद के राज्य के (१६ अंश, १२ कला उत्तर अक्षांश और ७७ अन्श, ३४ कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान रायचुर एक पुराना कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय रायचुर कसबे और उसकी छावनी में २३१७४ मनुष्य थे; अर्थात् १६८९२ हिंदू, ५८२१ मुसलमान, ३०४ कृस्तान, १२० जैन, ३३ पारसी औ ४ सिक्ख। मनुष्य-गणना के अनुसार यह हैदरावाद के राज्य में ५ वां शहर है।

रेलवे स्टेशन से १ मील से अधिक दूर रायचुर एक सुन्दर कसबा है। इसमें अच्छी सड़कें बनी हैं। यह मट्टी के बर्तन और स्लिपर (जूता) के लिये प्रसिद्ध है। रायचुर जिले में गाड़वाल छावनी बड़ा कसबा है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय उसमें १६६७२ मनुष्य थे।

किला—रायचुर कसबे से पश्चिम रेलवे स्टेशन से १½ मील दूर रायचुर का सुन्दर किला है। उत्तर के फाटक के बगलों में कई एक टावर और फाटक से करीब ५० गज बाहर पत्थर का एक हाथी है। दूसरे फाटक

का नाम कसबा दरवाजा है, जिसके बाहर एक टिउनल का दरवाजा है, जिसमें होकर किले की फौज फाटक के पास आई और पीछे जमीन के भीतर के रास्ते से किले में चली गई। किले के पश्चिम सिकन्दरिया फाटक के पास पुराना महल है, जो अब जेलखाना बनाया गया है । मैदान से २९० फीट ऊपर गढ़ है । बाएं दरगाह की छोटी कोठरियों का एक कतार और पूर्व अखीर में पत्थर का एक सायबान है, जिसके पूर्व एक मसजिद है।

इतिहास—रायचुर सन् १३५७ में बहमनी राजाओं के राज्य का एक हिस्सा बना। पीछे यह बीजापुर के राज्य में सामिल हुआ । सन् १४७८ में ख्वाजा जेहन गवन ने इस पर हुकूमत किया। जब बीजापुर स्वाधीन बादशाहत हुआ था, तब रायचुर इसकी दक्षिणी राजधानी था।

अर्दोनी।

रायचुर से १७ मील दक्षिण निजाम के राज्य और मद्रास हाते के अंगरेजी राज्य की सीमा पर तुंगभद्रा नदी है। नदी पर रेलवे पुल बना है। नदी के पास तुंग भद्रा नामक स्टेशन है।

तुंगभद्रा स्टेशन से २६ मील (रायचुर से ४३ मील) दक्षिण अर्दोनी का रेलवे स्टेशन है। मद्रास हाते के बल्लारी जिले में तालुक का सदर स्थान अर्दोनी एक कसबा है।

कसबे में तहसीलदार और डिपटीकलक्टर की कचहरी का मकान और एक अस्पताल है; कपड़े कालीन और रेशमी वस्त्र इत्यादि चीजें बनती हैं और रुई की बड़ी तिजारत होती है। अर्दोनी से अच्छी सड़कें गुटी, बल्लारी, करनूल आदि कसबों को गई हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय अर्दोनी में २६२४३ मनुष्य थे; अर्थात् १६३६९ हिंदू, ९७५४ मुसलमान, ७० कृस्तान, और ५० जैन।

कसबे के चारों ५ पहाड़ियों पर अर्दोनी के किले हीन दशा में विद्यमान हैं, जिनमें से सबसे प्रसिद्ध बारा किला और तालीबन्दा है। दोनों मैदान

से ८०० फीट ऊपर हैं । आधे रास्ते में चट्टान पर स्वच्छ पानी का एक उत्तम तालाब है। तालीवन्दा के सिर पर एक वट का पेड़ अकेले खड़ा है, जो चारो ओर बहुत दूर से देख पड़ता है।

इतिहास—लोग कहते हैं कि लगभग ३००० वर्ष हुए कि बीदर के राजा भीमसिंह के राज्य के समय चन्द्रसेन ने अर्दोनी को कायम किया। पीछे यह बीजयानगर के अधिकार मे हुई। सन् १५६४ में तालीकोट के संग्राम में विजयानगर के राजा के परास्त होने पर बीजापुर के सुलतान ने एक ऐबिसिनियन मलिक रहमान खां को यहांका गवर्नर बनाया। ३९ वर्ष रहने के पीछे वह यहांहीं मर गया। तालीवंदा पहाड़ी पर अब तक उसकी कबर है। उसका गोद लिया हुआ लड़का सीदी मसाउद खां उसकी जगह पर कायम हुआ, जिसने निचले किले और जुमामसजिद को बनवाया। सन् १६९० में औरंगजेब के जनरल ने सख्त रोकावट के पीछे अर्दोनी को ले लिया। बाद यह निजाम के हाथ में आई। सलावतजंग ने इसको जागीर में अपने छोटे भाई बसालतजंग को दे दिया, जिसने इसको अपनी राजधानी बनाई। वह सन् १७८२ में मरा और अर्दोनी में दफन किया गया। उसके मसजिद और मकबरा उसकी और उसकी माता के कबरस्तान पर बनाये गये। सन् १७८६ मे एक महीने के महासरे के पीछे टीपू सुलतान ने अर्दोनी के किले को ले लिया। उसने किला बन्दियों को ढाह दिया और तोप, आदि युद्ध की वस्तुओं को यहासे गूटी में ले गया। सन् १७९२ में अर्दोनी निजाम को मिली। सन् १७९९ में निजाम ने इसके बदले में दूसरी जगहों को लेकर इसको अगरेजो को दे दिया।

गूटी।

अर्दोनी से ३२ मील दक्षिण-पूर्व मदरास हाते में रेलवे का बड़ा केंद्र गुंटकल है, जिसका वृत्तांत भारत-भ्रमण के इसी खंड के ७ वें अध्याय में लिखा है। गुंटकल जंक्शन से १८ मील दक्षिण पूर्व गूटी का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते के बल्लारी जिले में डिवीजन का, सदर स्थान गूटी एक छोटा

कसबा है। रेलवे स्टेशन के निकट बाजार, एक धर्मशाला और एक छोटी नदी है। सूखे मोसिमों म नदी में बहुत छोटी धारा रह जाती है। गूटी म मजीष्ट्रर दिपटी कलक्टर और मुनसफ् की कचहरियां, एक छोटा जेलखाना, मक़बरा और सर थामस मद्रो के य्यादगार का कूप है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय गूटी में ५३७३ मनुष्य थे, अर्थात् ३७४९ हिंदू, १५८७ मुसलमान और ३७ कृस्तान।

स्टेशन से २ मील दक्षिण समुद्र के सतह से २१०० फीट और मैदान से ९९० फ्रीट ऊपर पहाड़ी के सिरोभाग पर गूटी का अभेद्य पुराना किला है। पहाड़ी के ऊपर कई एक कूप और जलाशय तथा इमारतें विद्यमान हैं। किले के एक थाये पर एक छोटी इमारत है, जिसको मुरारीराव का बैठक लोग कहते हैं।

गूटी से ३२ मील दक्षिण अनतपुर एक कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ४९०७ मनुष्य थे। कसबे के पड़ोस में एक बड़ा तालाव है, जो सन् १३६४ में एक नदी पर बांध बना कर बनाया गया।

इतिहास—गूटी का किला सोलहवीं शदी में बना। प्रथम इस पर विजयानगर के राजवंश के आधीन एक मनुष्य का अधिकार था। पीछे मुगल राज्य का प्रसिद्ध जनरल मीर जुमला ने इसको जीता। उसके पश्चात् कड़पा और सवनूर के पठानों ने गूटी पर अपना अधिकार जमाया, जिनसे सन् १७१४ में गोरीपुर के खादान के माहाराष्ट्रों ने गूटी को छीन लिया। किला मुरारीराव का गढ़ बना। सन् १७७६ में ९ महीने के घेरा देने के बाद जब किले का पानी चुक गया तब हैदरअली ने इसको जीता। सन् १७९९ में अंगरेजी सरकार ने हैदरअली के पुत्र टीपू को परास्त करके किला ले लिया।

ताड़पत्री।

गूटी से ३० मील (गुंटकल से ४८ मील) दक्षिण पूर्व गूटी का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते के अनन्तपुर जिले में प्रधान कसबा ताड़पत्री है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय ताड़पत्री में १०२८३ मनुष्य थे, अर्थात् ६७७२ हिन्दू, ३४८३ मुसलमान, २१ कृस्तान, ५ जैन और २ दूसरे।

करीब सन् १४८५ में विजयानगर के राजाओं के राज्य के समय ताड़पत्री कसबा बसाया गया। उसमें अच्छे अच्छे मंदिर बनाए गए। नदी के किनारे पर एक सुन्दर मन्दिर है, जिसका काम पूरा नहीं हुआ था।

कड़पा।

ताड़पत्री से ६६ मील (गुंटकल जंक्शन से ११४ मील) दक्षिण-पूर्व कड़पा का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते के (१४ अंश, २८ कला, ४९ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ५१ कला, ४७ विकला पूर्व देशांतर में) पनार नदी से ६ मील दक्षिण पश्चिम जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा कड़पा है, जिसको अनेक लोग कड़ापा और द्राविड़ीलोग कड़प्पै कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कड़पा कसबे में १७३७९ मनुष्य थे, अर्थात् ९४२१ हिन्दू, ७५७४ मुसलमान, ३६२ कृस्तान और २१ सिक्ख।

देशी कसबा मैला है। कसबे के मकान ऊंचे ऊंचे नहीं हैं। कसबे से पूर्व शृंग वेलकुण्ड एक पवित्र वस्तु है। कड़पा में जिला जज, कलक्टर इत्यादि हाकिमों की कचहरियां, जेलखाना, अस्पताल और स्कूल है। नील और रुई कड़पा कसबे से दूसरे स्थानों में भेजी जाती है। कसबे के तीन ओर विना पौधे की पहाड़ियां हैं; इस कारण से वहां गरमी अधिक पड़ती है। वहां औसत वार्षिक वर्षा २७ इंच होती है। कसबे के पास के एक गांव को लोग पुराना कड़पा कहते हैं।

सन् १८९१ ई० के निवर्षण के समय कड़पा के कलक्टर ने एक कल द्वारा वहां वर्षा बरसाई थी। पहाड़ी के ऊपर से तोप द्वारा डिनामाइट बारूद का धुँआ आकाश में भरा गया, जिससे वर्षा हुई। इसी भांति की परिक्षा अजमेर में पहाड़ी के ऊपर से और मुजफ्फरपुर में मचान बांध कर की गई। पीछे यह निश्चय किया गया कि जहां पहाड़ी नहीं है, वहां इस यत्न से वर्षा नहीं होगी,

तथा वर्षा बरसाने में लाभ से अधिक खर्च पड़ जायगा और जहां वर्षा बरसने के तत्त्व एकत्र न होंगे वहां वृष्टि नहीं हो सकेगी।

कड़पा जिला—इसके उत्तर करनूल जिला; पूर्व नेल्लूर जिला; दक्षिण उत्तरी आरकाट जिला और पश्चिम बल्लारी जिला है। पालकुंडा और शेषाचलम् पहाड़ियों का सिलसिला, जिसकी औसत ऊंचाई लगभग १५०० फीट है, कड़पा जिले को दो भागों में बांटता है। जिले में पनार, पापाग्नि, चित्रवती इत्यादि नदियां बहती हैं और जंगल बहुत है। खानों से सीसा, तांबा, लोहा का ओर, स्लेट और पत्थर निकलते हैं। कड़पा कसबे से लगभग ७ मील दूर पनारनदी के दहिने किनारे चिनूर के आस पास कुछ सोना मिलता है। कड़पा घाटी की भूमि उपजाऊ है। ऊख बहुत अच्छी होती है। जिले में करीब ७५ मील नहर है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय कड़पा जिले के ८७४५ वर्गमील क्षेत्रफल में ११२१०३८ मनुष्य थे; अर्थात् १०१७२११ हिंदू, ९७७४९ मुसलमान, ६०६७ कृस्तान और ११ अन्य। हिंदुओं में ४४०५२० वेल्लाल (जो खेती करते हैं, इनको उत्तरी भारत के लोग वल्लाला भी कहते हैं,) १४७७३३ परिया, जिनको दक्षिण के लोग परयन कहते हैं; ८६०९३ इडैगा, जिसका शुद्ध नाम इडैयन है, (भेड़ चराने वाले); ९२१६८ कैकोला, जिसका शुद्ध नाम कैक्कलर है, (बिनाई के काम करने वाले), ३५२५६ सेंबड़वन् (मछुआ), ३४२६१ चेटी (व्यापार करने वाले), २८०४७ वनान (कपड़ा धोने वाले), २४२३६ ब्राह्मण, १६६५० क्षत्रिय, १४७०५ अंबटन (नाई), १३६३८ कंभाड़न (कारीगर), १३५१७ सतानी (दोगला), १०१३९ कुशवन (कुंभार), ७४३८ सानान (ताड़ी के काम करने वाले), और बाकी में दूसरी जातियों के लोग थे। ब्राह्मणों में अधिक लोग शैव और क्षत्रियों में अधिक लोग वैष्णव हैं। कई एक जाति के लोग, जिनकी संख्या जिले में कम है, एक स्थान पर सदा नहीं बसते हैं। वे लोग जंगली पैदावार से अपना निर्वाह करते हैं। कड़पा जिले में कड़पा सबसे बड़ा कसबा, और बढ़वेल, मदनापल्ली इत्यादि कई छोटे कसबे हैं। इस जिले में कनड़ी और तैलंगी भाषा प्रचलित है।

कड़पा जिले के अथिरला स्थान में एक नदी के किनारे पर एक पवित्र तालाव और मंदिर है। उस देश के लोग कहते हैं कि परशुरामजी इसी पवित्र तालाव में स्नान करके मातृहत्या के दोष से विमुक्त हुए थे। फाल्गुन की शिवरात्रि के समय ३ दिनों तक वहां का तेहवार होता है। हजारों यात्री आकर उस तालाव में स्नान करते हैं।

इतिहास—पहिले कड़पा जिला विजयानगर के हिंदू राजाओं के अधिकार में था। सन् १५६४ में कई मुसलमान, वादशाहों ने मिलकर विजयानगर के राजा को तालीकोट में परास्त किया। उसके पीछे गोलकुंडा के आधीन के कई मुसलमानों ने कड़पा जिले को वांट लिया। लगभग सन् १५७० में कड़पा के फौजी लेफ्टिनेंट एक पठान ने किले को बनवाया। सत्रहवीं शदी के मध्य भाग में शिवाजी ने कड़पा को लूटा। अठारहवीं शदी के आरंभ में अब्दुलनवीखां नामक पठान ने निजाम की आधीनता को छोड़ कर कड़पा का स्वाधीन नवाव बन कर उसको अपनी राजधानी बनाया। लगभग सन् १७३२ में तीसरे नवाव के समय महाराष्ट्रों के बल की बढ़ती और उस खादान की घटती हुई। सन् १७६९ में कड़पा के नवाव ने मैसूर के हैदरअली को "राज्य कर" आदाय किया। जब नवाव ने निजाम के साथ मेल किया तब हैदरअली ने आक्रमण करके नवाव से किले को ले लिया। सन् १७९२ की संधी में टीपू सुलतान ने कड़पा जिला निजाम को दे दिया। सन् १८०० में निजाम ने कड़पा जिला अंगरेजों को दिया। सन् १८१७ में कड़पा कसवा जिले का सदर स्थान बनाया गया। सन् १८६८ तक कड़पा कसबे में फौज रहती थी।

रेणुगुंटा जंक्शन।

कड़पा से २५ मील दक्षिण पूर्व वाहुदा नदी पर रेलवे का पुल है। सूखे दिनों में नदी में पानी नहीं रहता, लेकिन थोडेही वालू हटा देने से भूमि में पानी मिल जाता है। महाभारत शान्ति पर्व के २३ वें अध्याय में लिखा है कि लिखित ऋषि ने अपने बड़े भ्रातः के उपदेश से वाहुदा नदी में स्नान

करके ज्योंही तर्पण करने की इच्छा की त्योंही अंगुलियों से युक्त उनके दोनों हाथ (जो गिर गये थे) प्रकट हो गये।

कड़पा से ७८ मील (गुंटकल से १९२ मील) दक्षिण-पूर्व मदरास हाते में रेणुगुंटा का रेलवे जंक्शन है। रेलवे स्टेशन के पास एक धर्मशाला बनी हुई है। रेणुगुंटा से रेलवे लाइन चार तरफ गई है। मदरास और कांची इत्यादि के जाने वाले लोग दक्षिण पूर्व के रेलवे से जाते हैं। मैं पूर्वोत्तर की लाइन से पहिले कालहस्ती, वेंकटगिरि इत्यादि स्थानों में गया।

रेणुगुंटा जंक्शन से रेलवे लाइन ४ तरफ गई है।

(१) रेणुगुंटा से पूर्वोत्तर साउथ इण्डियन रेलवे, जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २ पाई है।

मील	प्रसिद्ध स्टेशन।
२४	कालहस्ती।
३०	वेंकटगिरि।
६२	नेल्लूर (मदरास रेलवे पर)।

(२) रेणुगुंटा से दक्षिण की ओर "साउथ इण्डियन रेलवे"

मील	प्रसिद्ध स्टेशन।
६	तिरुपदी (पूर्व)।
७	तिरुपदी (पश्चिम)।
१३	चन्द्रगिरि।
३२	पकाला जंक्शन।
५०	चित्तौर।
७१	कटपदी जंक्शन।
७७	वेलूर।
१२८	तिरुवन्नामलई।
१७०	विलीपुरम् जंक्शन।

पकाला जंक्शन से पश्चिमोत्तर १४२ मील धरमावरम् और २०५ मील गुंटकल जंक्शन।

कटपदी जंक्शन से पूर्व कुछ उत्तर मदरास, रेलवे पर १५ मील आरकाट ३८ मील आरकोनम् जंक्शन, ५५ मील तिरुवलूर और ८१ मील मदरास और दक्षिण पश्चिम १५ मील कुडिआतम, ३२ मील अम्बूर, ५१ मील जालार पेट जंक्शन, १०६ मील सेलम, १६३ मील ईरोड जंक्शन, २२१ मील पोदे-

यनूर जंक्शन, २५५ मील पालघाट और ३३३ मील कलीकोट। जालार पेट जंक्शन से पश्चिमोत्तर ८७ मील बंगलोर। ईरोद जंक्शन से पूर्व दक्षिण सौथ इण्डियन रेलवे पर ८५ मील त्रिचनापल्ली फोर्ट और ८८ मील त्रिचनापल्ली जंक्शन। पोडैयनूर जंक्शन से उत्तर मदरास रेलवे पर ४ मील कोयम्बुतूर, और २६ मील मेट्टुपालयम् (उत्तक मंड के पास)।

विल्ली पुरम् जंक्शन से पूर्व साउथ इण्डियन रेलवे पर २४ मील पांडीचरी, उत्तर चिंगलपट होकर ९८ मील मदरास और दक्षिण थोड़ा पश्चिम कुंभकोनम् और तंजोर होकर १५१ मील त्रिचनापल्ली जंक्शन है।

(३) रेणुगुंटा से दक्षिण पूर्व मदरास रेलवे, जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २½ पाई है;—

मील	प्रसिद्ध स्टेशन।
११	तिरुतानी।
४१	आरकोनम् जंक्शन।
५८	तिरुवल्लूर।
८४	मदरास।

आरकोनम् जंक्शन से दक्षिण पूर्व १८ मील कांचीपुरी और ४० मील चेंगलपट्ट जंक्शन और चेंगलपट्ट से ६४ मील दक्षिण कुछ पश्चिम विल्लीपुरम् जंक्शन।

(४) रेणुगुंटा से पश्चिमोत्तर मदरास रेलवे,—

मील	प्रसिद्ध स्टेशन।
७८	कड़पा।
१४४	ताड़पत्री।
१७४	गूटी।
१९२	गुंटकल जंक्शन। (आगे गुंटकल में देखो)

कालहस्ती।

रेणुगुंटा जंक्शन से १४ मील पूर्वोत्तर कालहस्ती का रेलवे स्टेशन है

मद्रास हाते के (१३ अन्श, ४५ कला, २ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अन्श, ४४ कला, २९ विकला पूर्व देशांतर में) उत्तरी अर्काट जिले में स्वर्ण मुखी नदी के दहिने किनारे पर (सडक द्वारा तिपती से १६ मील पूर्वोत्तर) कालहस्ती, एक कसबा और तीर्थ स्थान है, जिसको द्राविड़ के बहुतलोग कालाश्री कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कालहस्ती में ११७५४ मनुष्य थे; अर्थात् १०१५९ हिन्दू, १५०४ मुसल्मान, और ९१ क्रूस्तान।

कालहस्ती में मध्य मजीपुर और एक जमींदार राजा रहते हैं; बड़ा बाजार है। तीर्थ स्थान होने से वहां बहुत यात्री जाते हैं। वहां गल्ले की सौदागरी होती है। फाल्गुन की शिवरात्रि के समय वहां मेला होता है, जो लगभग १० दिनों तक रहता है।

राजा—कालहस्ती के राजा वेलमा जाति के हैं। इनकी जमींदारी उत्तरी अर्काट और नेल्लूर जिले में है। कहाजाता है, कि विजयानगर के राजा ने १५ वीं शदी में इनके पुरुषे को यह मिल्कियत दी। वह लडाई के मैदान में ५००० सिपाही लासकते थे। सन् १७९२ में यह जमींदारी अंगरेजी सरकार के अधिकार में हुई। राजा १२०००० रुपया पेसकस अर्थात् 'राजकर' अंगरेजी गवर्नमेंट को देते हैं। उनको राज्य से वार्षिक चार पांच लाख रुपये मालगुजारी आती है। सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय राज्य का क्षेत्रफल १०२७ वर्गमील और उसकी मनुष्य संख्या ११८०२० थी। राज्य की लगभग आधी भूमि जोती जाती है और उजाड जंगलों से जलावन की लकड़ी मदरास शहर में भेजी जाती है।

कालहस्तीश्वर—द्रविड देश में ५ तत्वों से ५ लिंग प्रख्यात हैं,-(१) शिवकांची में एकाम्रेश्वर पृथ्वी लिंग, (२) त्रिचनापल्ली जिले के श्रीरंगम् के निकट का जंबुकेश्वर जल लिंग, दक्षिणी अर्काट जिले के तिरुवन्नामलई कसबे के पास के अरुणाचल पर अग्निलिंग, कालहस्ती में कालहस्तीश्वर वायुलिंग और चिदंबर में नटेश आकाश लिंग। ऐसा प्रसिद्ध है कि काल अर्थात् सर्प और हस्ती ने वहां तप करके महादेवजी से वर मांगा था कि तुम हम-

लोगों के नाम से प्रसिद्ध होओ। उन्हीं दोनों के नाम से शिवजी का नाम कालहस्तीश्वर हुआ। वहां शिवलिंग पर सर्प के फण और हस्ती के दो दांत के चिन्ह हैं। लिंग के नीचे भूमि पर लिंग की पूजा होती है।

दक्षिण की पहाड़ी के पादमूल के निकट कालहस्तीश्वर का विशाल मंदिर पत्थर से बना हुआ है। बड़े आंगन में उसके पूर्वोत्तर पार्वतीजी का मंदिर है। मंदिर के चारो द्वारों पर चित्रों से भूषित ४ विशाल गोपुर बने हुए हैं। मंदिर की दीवारों में तैलंगी आदि अक्षरों में बहुत से शिला लेख हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदोपपुराणीय शिवभक्तविलास—(२४ वां अध्याय) एक समय नील और कणिश दो व्याध धनुष बाण लिए हुए सुवर्णमुखरी नदी के तट पर घूमते थे। नील ने कणिश से पूछा कि इस पर्वत पर कैसा शब्द सुन पड़ता है। तब कणिश ने कहा कि इस पर्वत के ऊपर कोई दिव्य देवता है, जिसके पूजने के लिये देवता लोग आते हैं; उसी स्थान के गान का शब्द सुन पड़ता है। उसके उपरांत दोनों व्याधों ने पर्वत के ऊपर जाकर एक बिल्व के वृक्ष के नीचे शांतवैर वाले हजारों सर्पों को और उसके पश्चात् अपने पीछे फूत्कार करता हुआ सर्प से भूषित शिवलिंग को देखा, जिसके एक बार दर्शन करने से संपूर्ण पाप छूट जाते हैं। वहां बिल का रहने वाला सर्प अपने मणि के तेज से प्रकाश करता था और अपना केंचुल शिव को पहिनाता था। ऐसे अकाल मृत्यु को हरने वाले कालहस्तीश्वर को देखकर वे प्रसन्न हुए। नील ने कणिश से कहा कि हमलोग वनवासियों के यह कुल देवता हैं। हम कुछ दिनों में इनको अपना मित्र बना लेंगे। ऐसा कह उसने बहुत से मृगों को मार कर अग्नि में पकाया और मांस की परीक्षा करके अपने मुख में जल, माथे पर फूल और हाथ में मांस लेकर वह शिव के पास पहुँचा। (२५ वां अध्याय) उसने महादेव के ऊपर का पुष्पादि उतार कर अपने मुख के जल की धारा से शिव को स्नान कराया; फूल शिव पर चढ़ाया और मांस के दोनाओं को उनके आगे रक्खा। ऐसा कर उसने कहा कि हे महादेव! सुस्वादु मांसों को खाकर मेरे ऊपर कृपा करो; जब तक तुम नहीं भोजन करोगे तब तक मैं कुछ न खाऊंगा। शिवजी ने उसका चढ़ाया

हुआ मांस ग्रहण किया। रात्रि हो जाने पर नील ने सर्प के मुख का मणि लेकर शिव को दीप दिखाया। सबेरा होने पर वह शिकार के लिये वन में चला गया। पुजारी ब्राह्मण ने आकर जब शिवलिंग के ऊपर मांस को देखा; तब रोता हुआ भूमि पर गिरपड़ा और चिल्लाता हुआ व्याधों को गाली देने लगा। इसके उपरांत वह शिवलिंग को पोंछ कर नित्य के समान पूजा करके अपने घर चला गया। उसके पश्चात् व्याध ने आकर पूर्ववत् शिवको मांस भोजन कराके बचा हुआ मांस आप भोजन किया। इसी भांति पूजन करते हुये उसको एक मास बीतगया। ब्राह्मण पुजारी नित्य आकर शिवलिंग को धोता था और दुःखी हुआ करता था। नील के पिता नाग ने अपने पुत्र को वनदेवता से पकड़ा गया हुआ जान कर उसको घर लेजाने का अनेक उद्योग किया; किन्तु जब वह नहीं गया तब निरास होकर अपने घर चला गया। महादेव को पूजन करने वाले लोग उस व्याध से द्वेष करने लगे; तब महादेव ने स्वप्न में उस पुजारी से कहा कि हे ब्राह्मण! यह शबर हमारा परम भक्त है। जो उससे द्रोह करेगा वह हमारा द्वेषी होगा। यदि व्याध की भक्ति देखना है तो तुम एक बार यहां की झाड़ी में छिप कर देखो। दूसरे दिन पुजारी शिवलिंग के निकट के वट वृक्ष की शाखा में छिपकर बैठ रहा। दोपहर के समय व्याध बहुतसा मांस और अपने मुख में सुवर्णमुखरी नदी का जल लेकर वहां आया। उसने अपने पैर के अग्रभाग से शिव के ऊपर का फूल टार कर अपने मुख के जल से शिव को स्नान कराया; अपने मस्तक का फूल उनपर चढ़ाया और मांस उनको अर्पण किया। उसने जब देखा कि महादेव नित्य के समान भोजन नहीं करते हैं, क्योंकि इनके बाएं नेत्र से रुधिर गिरता है; तब हाहाकार करके मूर्छा को प्राप्त हुआ। उसके पश्चात् उसने विसल्यकर्णी का रस लेकर शिव की आंख में लगाया और अनेक औषधि की। जब रोग दूर न हुआ तब उसने अपने बाण से अपनी आंख को निकालकर महादेव की आंख में लगा दिया। जब महादेव की आंख बन-गई तब वह प्रसन्न होकर फिर उनके खाने के लिये मांस लाया। उस समय उसने देखा कि शिव की दहिनी आंख से भी रुधिर गिर रहा है, तब वह

कहने लगा कि हे महादेव ! तुम्हारी आंख में रोग नहीं है; तुम हमारी भक्ति की परीक्षा करते हो; ऐसा कह वह अपनी दूसरी आंख निकालने लगा; तब शीघ्र महादेवजी प्रकट होगए। उनकी कृपा से नील व्याध त्रिनेत्र (शिव) होगया। शिवजी कैलास में चले गए।

शिवपुराण—(विद्येश्वर संहिता, १० वां अध्याय) प्राणीगण ब्रह्मलोक से च्युत होने पर महा पवित्र सुवर्णमुखी नदी के समीप जन्म लेते हैं। धन राशि के बृहस्पति और सूर्य होने पर सुवर्णमुखी में स्नान करने से शिवलोक मिलता है।

वेंकटगिरि।

कालहस्ती से १६ मील (रेणुगुंटा जंक्शन से ३० मील) पूर्वोत्तर वेंकटगिरि का रेलवे स्टेशन है। नेल्लूर जिले के दक्षिण भाग में ताल्लुक का सदर स्थान वेंकटगिरि नामक एक छोटा कसवा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय वेंकटगिरि कसबे में ७९८९ मनुष्य थे; अर्थात् ६६१६ हिंदू, ११४९ मुसलमान और २४ कृस्तान।

वेंकटगिरि में एक जमीन्दार राजा का महल और डिपोटी तहसीलदार की कचहरी है। कसबे से लगभग ४ मील उत्तर वेंकटगिरि किले में महल आदि उत्तम इमारत बनी हुई हैं।

देवमन्दिर—यहां विशेष दर्शनीय स्थान काशी पेठ में काशी विश्वेश्वर का मन्दिर है। यहां के राजा के पितामह काशी से इस शिव लिंग को ले आये और काशी विशालाक्षी, अन्नपूर्णा, कालभैरव, सिद्धि विनायक, आदि देवताओं समेत काशी विश्वनाथ की स्थापना की। इसकी पूजा अर्चा बड़ी तय्यारी से होती है। नित्य रुद्र गणिका वहां आरती लेकर नृत्य और गान करती है। विश्वनाथ लिंग के स्थापित होने पर यहां काशी पेठ बसी। मन्दिर के पास कैवल्यनदी नामक नाला है। इनके अतिरिक्त यहां रामचन्द्र, हनूमान, वेंगलराज स्वामी, वरदराज, आदि के मन्दिर हैं। राजा के महल के पास के बाजार में ग्रामशक्ति, पोलेर अम्मा है, जिसको लोग बहुत बलिदान देते हैं।

राजा—वेंकटगिरि में वेलमा जाति के एक जमीन्दार राजा हैं। वर्तमान राजा सर गोपाल कृष्ण बहादुर के. सी. आई. ई. की उमर ३४ वर्ष की है, जो इस राजवंश के कायम करने वाले के सत्ताइसवें पुश्त में अपने को कहते हैं। सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय उस राजा की जमींन्दारी का क्षेत्रफल २११७ वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या ३०८६९ थी।

नेल्लूर।

वेंकटगिरि के रेलवे स्टेशन से ३२ मील (रेणुगुंटा जंक्शन से ६२ मील) पूर्वोत्तर नेल्लूर का रेलवे स्टेशन है। मद्रास हाते में (१४ अंश, २६ कला, ३८ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश, १ कला, २७ विकला पूर्व देशान्तर में) पनार नदी के दहिने किनारे पर उसके मुहाने से ८ मील दूर जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा नेल्लूर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय नेल्लूर कसबे में २९३३६ मनुष्य थे; अर्थात् १४३१० पुरुष और १५०२६ स्त्रियां। इनमें २२५५३ हिंदू, ५६०८ मुसलमान, १००२ कृस्तान ८ जैन और १६५ अन्य थे।

नेल्लूर की चंद सड़कें अच्छी हैं, जिनके बगलों में धनी निवासियों के मकान बने हुए हैं। कसबे के दक्षिण एक बड़े तालाब के निकट यूरोपियन लोगों की कोठियां बनी हैं। तालाब के दूसरे बगल पर एक पहाड़ी है, जिसके ऊपर नरसिंहजी का मंदिर बना हुआ है। पुराने किले में कलक्टर का आफिस और उसके सामने प्रथम के धारक (अर्थात् सैनिकगृह) में पुलिस का आफिस है। उनके अलावे वहां एक गरीबखाना, एक गिरजा, एक पुराना बड़ा कबरगाह, एक अस्पताल, एक लड़कियों का स्कूल और बहुत से लड़कों के स्कूल हैं। एक नहर और बेजवाडा वाली बड़ी सड़क नेल्लूर कसबे होकर वहांसे दक्षिण ओर मद्रास शहर को गई है।

नेल्लूर कसबे से १० मील पश्चिम बचीरेड्डीपालयम् लगभग ५००० आदमियों की बस्ती है, जहां मकान और मंदिरों के काम के लिये पत्थर के स्तंभ आदि सरजाम बनते हैं। वहां कोदंडराम स्वामी अर्थात् श्रीरामचन्द्रजी

का मंदिर है, जहां प्रतिवर्ष चैत्र में मेला होता है। मेले में आठ दस हजार मनुष्य आते हैं। नेल्लूर के सौदागर आकर वहां बड़ी सौदागरी करते हैं। नेल्लूर जिले में दूसरा मेला कनाली तालुक के पिलचंटा गांव में प्रति वर्ष होता है। लगभग ५००० यात्री आकर वेंकटेशस्वामी का दर्शन करते हैं। नेल्लूर जिले के भीमावरम् गांव के पास एक पहाड़ी पर नृसिंहजी का पुराना मंदिर है, जिसको अगस्त्य मलई मुनि का नियत किया लोग कहते हैं। पहाड़ी पर गुफा मंदिर है, जिसका दरवाजा पत्थर की एक बड़ी प्रतिमा से बंद है। वहां प्रति वर्ष चैत्र में मेला होता है।

नेल्लूर जिला—सन् १८०१ में यह जिला अंगरेजी गवर्नमेंट के अधिकार में हो गया। इसके पूर्व बंगाल की खाड़ी; दक्षिण उत्तरी आर्काट और चेंगलपट्ट जिला; पश्चिम ओर पहाड़ियां, जो कर्नूल और कड़पा जिले से इसको अलग करती हैं और उत्तर कृष्णा जिला है। नेल्लूर जिले की भूमि बहुत उपजाऊ नहीं है। लगभग आधी भूमि जोती जाती है। जिले के अधिक क्षेत्रफल में पहाड़ी भूमि और घना जंगल है। पश्चिम की सीमा के पास सूखी अर्थात् बिना जंगल की पहाड़ियां हैं। कोई पहाड़ी ३२०० फीट से अधिक ऊंची नहीं है। वनों में बनैले जंतु कम हैं। पनार, सुवर्णमुखी आदि नदियां बहती हैं। नेल्लूर जिले में अच्छी मवेसियां होती हैं, उनके कारण से यह जिला प्रसिद्ध है। आस पास के जिलों के लोग उस जिले से मवेसियों को ले जाते हैं। वहांके उत्तम बैल का दाम ७० रुपये से २०० रुपये तक होता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय नेल्लूर जिले का क्षेत्रफल ८७३९ वर्गमील और इसकी मनुष्य-संख्या १२२०२३६ थी, अर्थात् ११३८०३१ हिन्दू, ६१३४५ मुसलमान, २०७९४ कृस्तान और ६७ अन्य। इनमें से हिंदुओं में ४१८०४९ वेलाल, जिसका शुद्ध नाम वल्लाल है, १०३०१६ इडैया, जिसका शुद्ध नाम इडैयन है; उस जाति के लोग भेड़ पालते हैं। ५८०२८ सेटी (सौदागरी करने वाले), ५६९६५ ब्राह्मण, ३३०७० वनान (कपड़ा धोने वाले), २७८९८ कैकोला याने कैकलर (कपड़ा बिनने वाले), २१४३९

कंभालर (कारीगर), २०२२८ सँबड़वन (मछुहा), १७७०८ सनानी, १५२६७ सनान और शेष में कुशवन, अंबटन, छत्री, कनकन इत्यादि जातियों के लोग थे। जंगली जातियों में अनाडी अधिक थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय नेल्लूर जिले के कसबे नेल्लूर में २९३३६, और अंगोल में १०८६० मनुष्य थे। इनके अलावे वेंकटगिरि इत्यादि कई छोटे कसबे हैं। नेल्लूर कसबे से ७२ मील उत्तर अंगोल है। नेल्लूर जिले में तेलुगू अर्थात् तैलंगी भाषा प्रचलित है।

—:o:—

दसवां अध्याय।

(मदरास हाते में) तिरुपदी, बालाजी, चंद्रगिरि, वेलूर, आरकाट, आरकोनम् जंक्शन, तिरुवलूर और भूतपुरी।

तिरुपदी।

रेणुगुंटा जंक्शन से ६ मील पश्चिम तिरुपदी का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते के उत्तरी आरकाट जिले में (१३ अंश, ३८ कला, उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, २७ कला, ५० विकला पूर्व देशांतर में) तिरुपदी एक कसबा है, जिसको उत्तरी भारत के बहुत लोग तिपदी कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय तिरुपदी में १४२४२ मनुष्य थे; अर्थात् १३५०७ हिन्दू, ६६९ मुसलमान, ७४ कृस्तान, ९ जैन और १ अन्य।

कसबे से लगभग १ मील दक्षिण सुवर्णमुखी नदी बहती है। तिरुमला पहाड़ी के पादमूल के पास नीचे की तिरुपदी और पहाड़ी के ऊपर, ऊपर की तिरुपदी, जहां बालाजी का प्रसिद्ध मंदिर है, बसी है। नीचे की तिरुपदी में बालाजी के यात्रियों की भीड़ रहती है। वहां धर्मशालाएं बनी हैं और बाजार में खाने पीने की सब वस्तु मिलती है। तिरुपदी में कई देवताओं के

मंदिर बने हुए हैं, जिनमें गोबिंदराज का मन्दिर प्रधान है। रामानुज-स्वामी के संप्रदाय की पुस्तक प्रपन्नामृत के ५१ वें अध्याय में लिखा है कि श्रीरामानुजस्वामी ने वेंकटाचल के पास गोबिन्दराज को स्थापित किया। गोबिन्दराज भुजंग पर शयन किए हुए विष्णु की मूर्ति हैं। गोविंदराज के मन्दिर के पास श्रीभट्टनाथ दिव्य सूरि की कन्या गादावेदी का मन्दिर है, जिसको रामानुजस्वामी ने स्थापित करवाया था। नदी के किनारे के पुराने मंदिर के २ गोपुरों की दीवारों में सुन्दर संगतरासी का काम है।

बालाजी।

तिरुमला पहाड़ी की ७ चोटियां प्रधान हैं। सातवीं चोटी शेषाचल पर जिसको वेंकटाचल और वेंकट रमनाचलम् भी कहते हैं, दक्षिण भारत के उत्तम मन्दिरों में से एक, मख्यात बालाजी का पुराना मन्दिर है। वेंकटाचल की चोटी समुद्र के जल से लगभग २८०० फीट ऊंची है। उस पर जंगल नहीं है।

तिरुपदी से ६ मील श्रीबालाजी का मन्दिर है; किन्तु कसबे से लगभग १ मील दूर पर चढ़ाई के बाहर का फाटक मिल जाता है। रास्ता पहाड़ी है। चढ़ाई कड़ी है। तिरुपदी में डेढ़ दो रुपये में सवारी के लिए डोली और चार आने में मजदूर मिलता है।

जूता पहनकर पहाड़ के ऊपर कोई नहीं जाता है। यात्रीगण पहाड़ी के नीचे तिरुपदी की धर्मशाले में अपना कुछ असबाब और जूता छोड़ जाते हैं। पहले मन्दिर वाली पहाड़ी पर कोई यूरोपियन नहीं चढ़ा था। सन् १८७० ई० में महन्त के रोकावट के दरखास्त करने पर भी एक मोजरिम के तलासने के लिये पुलिस सुपरिन्टेंडेंट ऊपर चला गया था। बड़े गोपुर के पास तक यूरोपियन आदि अन्यधर्मी मनुष्य जासकते हैं; उससे आगे नहीं जाने पाते। चढ़ाई के रास्ते में पहाड़ी के ऊपर कई जगह टिकने या विश्राम करने के लिए जगह बनी हैं, जहां केला, नेंबू, चना इत्यादि खाने की वस्तु और पानी मिलता है और स्थान स्थान पर पानी के कुण्ड हैं।

गोपुर के पास से सीढ़ियां प्रारंभ होती हैं। बालाजी का मन्दिर पत्थर के तीन दीवारों से घेरा हुआ है, जिनके बगलों पर सुन्दर गोपुर बने हुए हैं। मध्य में गुम्बजदार मन्दिर है। मन्दिर का हाता ४१० फीट लम्बा और २६० फीट चौड़ा है। कई वेदी के भीतर लगभग ७ फीट ऊंची, शंख चक्र, गदा और पद्म धारण किए हुई बालाजी की पाषाणमय चतुर्भुज मूर्ति पूर्व मुख से खड़ी है। बालाजी को दक्षिणी भारत के लोग वेङ्कटेश, वेंकटाचलपती आदि नामों से पुकारते हैं, किन्तु उत्तरी भारत के अधिक लोग इनको बालाजी कहते हैं। इनकी झांकी अतिमनोहर है। मन्दिर के चारों तरफ मकान बने हैं और आस पास वाराहजी आदि देवताओं के अनेक मन्दिर हैं।

यहां राजसी कारखाना है। भोग राग का खर्च बेहिसाब है। चौकठ किवाड़ों में चांदी सोने जड़े गये हैं। प्रति वर्ष दशहरे के दिन बड़े धूमधाम से रथयात्रा होती है। बड़े तिहवारों के समय हजारों यात्री बालाजी के मन्दिर के पास एकत्रित होते हैं। नित्यही वङ्कटेशगिरि पर यात्री चढ़ते हैं। प्रति वर्ष लगभग १२६००० यात्री श्रीवेङ्कटेश भगवान का दर्शन करते हैं।

मन्दिर के पास १०० गज लम्बा और ५० गज चौड़ा स्वामिपुष्करणी नामक एक सरोवर है, जिसके चारों तरफ पत्थर पाट कर सीढ़ियां बनाई हुई हैं। यात्री लोग उसीमें स्नान करके बालाजी का दर्शन करते हैं। सरोवर के पास "सहस्र स्तंभ" मण्डपम् है। और श्रीवाराहस्वामी पूर्व मुख से विराजमान हैं।

बदरीनारायण के समान यहां भी प्रसाद में छूत नहीं है। यहां यात्रियों की तरफ से अटका भी चढ़ाया जाता है। कितनी स्त्रियां पुत्रादि होने के लिये बालाजी की मानता करती हैं। जगमोहन के पास बहुत से नाई रहते हैं। बहुत लोग वहां अपने लड़कों का मुण्डन कराते हैं।

मन्दिर के पास हुण्डी नाम से प्रसिद्ध एक तरह के हौज के समान एक पात्र बना है, जिसका मुख ऊपर से बन्द है। रुपया, पैसा गहना, चान्दी, सोना, धान्य, मसाला केसर, फल, इत्यादि वस्तु जो जिसके मनमें आता है वह उस हुण्डी में डाल देता है, जिनको नियत समय पर मन्दिर के अधिकारी

श्रीविङ्कटेश्वरो विजयतेतमाम् ।

खेमराज श्रीकृष्णदासके "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणालय-मुम्बईमें छापागया.

चढ़ नहीं सकते। शुक, भृगु, प्रह्लाद, अंबरीष आदि महर्षि और राजर्षिगण पर्वत, को विष्णु का अंश समझ कर उसके ऊपर नहीं चढ़े; उन्होंने उसके निकट तप किया था। पर्वत के ऊपर स्वामिपुष्करणी के पश्चिम किनारे पर पृथ्वी को अंक में लिए हुए शूकर भगवान स्थित हैं।

गरुड़ ने वैकुण्ठ से वेंकटाचल को लाकर द्रविड़ देश में सुवर्णमुखरी नदी के तट पर रक्खा और भगवान् की क्रीड़ावापी स्वामिपुष्करणी को भी लाकर उस पर स्थापित किया। वेंकटगिरि पर लक्ष्मीदेवी, पृथ्वीदेवी और नीलादेवी के सहित विष्णु भगवान् विराजने लगे।

विष्णु भगवान् वैवस्वत मन्वंतर के प्रथम सतयुग में वायु के तप से प्रसन्न होकर गंगा से २०० योजन दक्षिण, (द्राविड़ देश के) पूर्व के समुद्र से ५ योजन पश्चिम वेंकटगिरि के ऊपर स्वामिपुष्करणी के तट पर सूर्यमण्डल के तुल्य विमान (मन्दिर) में लक्ष्मी और देवताओं के सहित जा विराजे। वह कल्प के अंत तक उस विमान में निवास करेंगे। भगवान की आज्ञा से शेषजी ने पर्वतरूप अर्थात् वेंकटगिरि बनकर पृथ्वी पर निवास किया।

रामानुजस्वामी के उपदेश से वेंकटाचल के राजा यादव ने वेंकटेश के प्राचीन मन्दिर को सुधरवाया और उसके चारो ओर मन्दिर के अधिदेवता वाराह, नृसिंह, वैकुण्ठनाथ इत्यादि को स्थापित करवाया। राजा ने उस स्थान पर शेषाशन, गरुड़, द्वारपाल आदि बनवा दिये और पद्मावती की स्थापना करवा दी। पीछे वेंकटगिरि पर रामानुजस्वामी की प्रतिमा भी प्रतिष्ठित हुई।

चंद्रगिरि।

तिरुपदी के रेलवे स्टेशन से ७ मील (रेणुगुंटा जंक्शन से १३ मील) दक्षिण-पश्चिम चन्द्रगिरि का रेलवे स्टेशन है। उत्तरी आरकाट जिले में चन्द्रगिरि एक छोटा कसबा है जिसमें सन् १८८१ में ४१९३ मनुष्य थे।

सन् १५६४ में तिलीकोट में परास्त होने के बाद विजयानगर के राज वंश का एक राजा चन्द्रगिरि में रहने लगा। सन् १६३९ में चन्द्रगिरि के राजा ने इष्ट इंण्डियन कम्पनी को ज़मीन का एक टुकड़ा दिया, जिस पर मद-

रास के "फोर्टसेंटजर्ज" (किला) बनाया गया। जिस महल में बैठ कर राजा ने कम्पनी को भूमि दी। वह किले में अब तक विद्यमान है। सरकार ने उस-को मरम्मत से रक्खा है। उसमें अफसर लोग ठहरते हैं। महल के पीछे एक पहाड़ी है।

वेलूर।

चंद्रगिरि से ६४ मील (रेणुगुंटा जंक्शन से ७७ मील) और कटपड़ी जंक्शन से ६ मील दक्षिण वेलूर का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते में (१२ अंश, ५५ कला, १७ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अन्श, १० कला, १७ विकला पूर्व देशांतर में) पलार नदी के किनारे पर उत्तरी आरकाट जिले में प्रधान कसबा वेलूर है। उसमें एक बड़ा मंदिर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय छावनी के साथ वेलूर में ४४९२५ मनुष्य थे; अर्थात् २१२८५ पुरुष और २३६४० स्त्रियां। इनमें ३१२२८ हिंदू, १२२२० मुसलमान, १४७४ कृस्तान और ३ जैन थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ८९ वां और मदरास हाते के अङ्गरेजी राज्य में १२ वां नगर है।

वेलूर में सेंटजन का गिरजा है, जिसके चारो तरफ के मकानों में श्रीरंगपट्टनम् के टीपू सुलतान के वंश के लोग सन् १८०२ ई० से रहते थे। उसके पास एक तालाब है, जो सन् १८७७ के अकाल के समय ६० हजार रुपये के खर्च से बना। वेलूर का किला २०० फीट चौड़ी एक गहरी खाई से घेरा हुआ है; उसमें बहुतसी दिलचस्प इमारतें हैं। उसके भीतर देशी पैदल की एक रेजीमेंट रहती है। किले से ½ मील पश्चिम टीपू सुलतान के वंश वालों का कबरगाह है। वेलूर के आस पास कई पहाड़ी किले हैं। सिंगलदुर्ग नामक किले से लगभग २ मील दूर पुलिस की लाइन और सेंट्रलजेल है। जेल में कपड़े और कालीन तैयार होते हैं। इनके अलावे वेलूर में सबकलक्टर इत्यादि हाकिमों की कचहरियां, अस्पताल, स्कूल, चंदासाहब की सुन्दर मसजिद और जलंधरेश्वर शिव का बड़ा मंदिर है।

निकाल लेते हैं । बहुतेरे व्यापारी या दूसरे लोग अपने घर में बालाजी के निमित्त रुपये पैसे निकालते हैं, जिसको कानगी कहते हैं। मन्दिर की वार्षिक आमदनी लगभग २ लाख रुपया है; खर्च भी भारी है।

सन् १८४३ ई० तक मन्दिर की आमदनी खर्च का प्रबन्ध अंगरेजी सरकार करती थी; पीछे महन्त के स्वाधीन कर दिया गया । कई वर्ष हुए तिरुपदी के प्रधान बासिन्दों ने वाइसराय के पास दरखास्त दिया कि मन्दिर का खजाना महन्त द्वारा बरबाद हो रहा है । मुकदमा कायम होने पर वहांके महन्त को दण्ड मिला था। कालहस्ती के पास के रहने वाले टोंडिमा चक्रवर्त्ती एक कमेटी की राय से बालाजी की पूजा और खर्च का प्रबन्ध करते हैं।

यहां टिकने के लिये धर्मशाले हैं । बाजार में खाने पीने की सब चीजें मिलती हैं। बालाजी की उत्तम उत्तम तस्वीर बिकती हैं । एक अस्पताल और रामानुजस्वामी की संप्रदाय की एक गद्दी है। स्थान स्थान पर पहाड़ी के ऊपर २६ झरने हैं ।

बालाजी से ३ मील दूर पहाड़ी की ऊंची नीची चढ़ाई उतराई के बाद पापनाशिनी गंगा मिलती है। दो पहाड़ियों के बीच में बहती हुई, धारा दूर से आई है और वहां पहाड़ी पर ऊपर से नीचे गिरती है। यात्री लोग वहां स्नान करते हैं। बालाजी की तरफ लौटते हुए रास्ते में आकाश गंगा की धारा मिलती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—श्रीमद्भागवत—(दशम स्कन्द ७९ वां अध्याय) बलदेवजी श्रीशैल पर्वत से चलने के पश्चात् द्रविड़ देश में परम पवित्र श्रीवेंकट पर्वत का दर्शन करके कांची पुरी में गए।

श्रीवेंकटाचल इतिहासमाला नामक ७ स्तवक अर्थात् अध्याय की संस्कृत पुस्तक है, जिसको रामानुजस्वामी जी के शिष्य अनंताचार्य ने, जिनका जन्म शाका ९७५ (सन् १०५३ ई०) में था, बनाया था । आचार्यजी ने उस पुस्तक में वेंकटेशजी का प्राचीन वृत्तांत लिखा है, जिसका सारांश नीचे है;—सुवर्णमुखरी के तीर पर वेंकटाचल नामक पर्वत है, जिसके ऊपर सिद्ध और मुनिगण तप करते हैं। इस पर चांडाल, यवन आदि वेद से बाह्य लोग

चढ़ नहीं सकते। शुक्र, भृगु, प्रह्लाद, अंबरीष आदि महर्षि और राजर्षिगण पर्वत, को विष्णु का अंश समझ कर उसके ऊपर नहीं चढ़े; उन्होंने उसके निकट तप किया था। पर्वत के ऊपर स्वामिपुष्करणी के पश्चिम किनारे पर पृथ्वी को अंक में लिए हुए शूकर भगवान स्थित हैं।

गरुड़ ने वैकुण्ठ से वंकटाचल को लाकर द्रविड़ देश में सुवर्णमुखरी नदी के तट पर रक्खा और भगवान् की क्रीड़ावापी स्वामिपुष्करणी को भी लाकर उस पर स्थापित किया। वेंकटगिरि पर लक्ष्मीदेवी, पृथ्वीदेवी और नीलादेवी के सहित विष्णु भगवान् विराजने लगे।

विष्णु भगवान् वैवस्वत मन्वतर के प्रथम सतयुग में वायु के तप से प्रसन्न होकर गंगा से २०० योजन दक्षिण, (द्राविड़ देश के) पूर्व के समुद्र से ५ योजन पश्चिम वेंकटगिरि के ऊपर स्वामिपुष्करणी के तट पर सूर्यमण्डल के तुल्य विमान (मन्दिर) में लक्ष्मी और देवताओं के सहित जा विराजे। वह कल्प के अंत तक उस विमान में निवास करेंगे। भगवान की आज्ञा से शेषजी ने पर्वतरूप अर्थात् वेंकटगिरि बनकर पृथ्वी पर निवास किया।

रामानुजस्वामी के उपदेश से वेंकटाचल के राजा यादव ने वेंकटेश के प्राचीन मन्दिर को सुधरवाया और उसके चारो ओर मन्दिर के अधिदेवता वाराह, नृसिंह, वैकुण्ठनाथ इत्यादि को स्थापित करवाया। राजा ने उस स्थान पर शेषाशन, गरुड़, द्वारपाल आदि बनवा दिये और पद्मावती की स्थापना करवा दी। पीछे वंकटगिरि पर रामानुजस्वामी की प्रतिमा भी प्रतिष्ठित हुई।

चंद्रगिरि।

तिरुपदी के रेलवे स्टेशन से ७ मील (रेणुगुंटा जंक्शन से १३ मील) दक्षिण-पश्चिम चन्द्रगिरि का रेलवे स्टेशन है। उत्तरी आरकाट जिले में चन्द्रगिरि एक छोटा कसबा है जिसमें सन् १८८१ में ४१९३ मनुष्य थे।

सन् १५६४ में तिलीकोट में परास्त होने के बाद विजयानगर के राज वंश का एक राजा चन्द्रगिरि में रहने लगा। सन् १६३९ में चन्द्रगिरि के राजा ने इष्ट इण्डियन कम्पनी को जमीन का एक टुकड़ा दिया, जिस पर मद-

रास के "फोर्टसेंटजर्ज" (किला) बनाया गया। जिस महल में बैठ कर राजा ने कम्पनी को भूमि दी। वह किले में अब तक विद्यमान है। सरकार ने उस-को मरम्मत मे रक्खा है। उसमें अफसर लोग ठहरते हैं। महल के पीछे एक पहाड़ी है।

वेलूर।

चंद्रगिरि से ६४ मील (रेणुगुंटा जंक्शन से ७७ मील) और कटपदी जंक्शन से ६ मील दक्षिण वेलूर का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते में (१२ अंश, ५५ कला, १७ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अन्श, १० कला, १७ विकला पूर्व देशांतर में) पलार नदी के किनारे पर उत्तरी आरकाट जिले में प्रधान कसबा वेलूर है। उसमें एक बड़ा मंदिर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय छावनी के साथ वेलूर में ४४९२५ मनुष्य थे; अर्थात् २१२८५ पुरुष और २३६४० स्त्रियां। इनमें ३१२२८ हिंदू, १२२२० मुसलमान, १४७४ कृस्तान और ३ जैन थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ८९ वां और मदरास हाते के अङ्गरेजी राज्य में १२ वां नगर है।

वेलूर में सेंटजन का गिरजा है, जिसके चारो तरफ के मकानों में श्रीरंगपट्टनम् के टीपू सुलतान के वंश के लोग सन् १८०२ ई० से रहते थे। उसके पास एक तालाब है, जो सन् १८७७ के अकाल के समय ६० हजार रुपये के खर्च से बना। वेलूर का किला २०० फीट चौड़ी एक गहरी खाई से घेरा हुआ है; उसमें बहुतसी दिलचस्प इमारतें हैं। उसके भीतर देशी पैदल की एक रेजीमेंट रहती है। किले से ½ मील पश्चिम टीपू सुलतान के बंश वालों का कबरगाह है। वेलूर के आस पास कई पहाड़ी किले हैं। सिंगरदुर्ग नामक किले से लगभग २ मील दूर पुलिस की लाइन और सेंट्रलजेल है। जेल में कपड़े और कालीन तैयार होते हैं। इनके अलावे वेलूर में सबकलक्टर इत्यादि हाकिमों की कचहरियां, अस्पताल, स्कूल, चंदासाहब की सुन्दर मसजिद और जलंधरेश्वर शिव का बड़ा मंदिर है।

वेलूर में सुगंध फूलों के बाग बहुत हैं। नित्य वहांसे रेल द्वारा फूलों की बहुत सी गठरियां मदरास शहर को भेजी जाती हैं।

जलंधरेश्वर शिव का मन्दिर—यह भारत वर्ष के बड़े मंदिरों में से एक है। इसके सात मंजिला गोपुर लगभग १०० फीट ऊंचा है। दरवाजा बहुत सुन्दर है, जिसके पास नील रंग के पत्थर के दो द्वारपाल खड़े हैं। गोपुर से मंदिर के घेरे में प्रवेश करने पर बाएं तरफ पत्थर का कल्याण मंडपम् मिलता है, जिसमें नफीस कारीगरी का सुन्दर काम बना हुआ है। पेशगाह के भीतर की छत में उत्तम नक्काशी का काम और खंभों में भिन्न भिन्न तरह की नक्काशी है। मंडपम् के सामने एक कूप है। घेरे के चारो बगलों में दीवार के पास दालान, जिनमें नक्काशीदार ९१ खंभे लगे हैं, और घेरे के चारो कोनों पर चार मंडपम् हैं। गोपुर के सामने पत्थर की इमारत है; अब उसमें ऐसा अन्धिकार रहता है कि बिना मसाल या दीप के कुछ नहीं देख पड़ता। वहां के लोग कहते हैं कि सन् १३५० ई० में पेशगाह बना था।

तिरुवन्नामलई—वेलूर से ५१ मील दक्षिण तिरुवन्नामलई का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते के दक्षिणी आरकाट जिले में तालुक का सदर स्थान तिरुवन्नामलई एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय १२०६८ मनुष्य थे। कसबे से दक्षिण ओर पहली पहाड़ी पर सुब्रह्मण्य अर्थात् महादेवजी के पुत्र स्कंदजी का सुन्दर मंदिर है। वहां देवता के भोग राग में बहुत रुपया खर्च होता है। कार्तिक की पूर्णिमा को वहां मेला होता है; उस समय वहां बहुत से यात्री जाते हैं।

वेलूर का इतिहास—उस देश की कहावत से जान पड़ता है कि १३ वीं सदी के अन्त के भाग में भद्राचलम् के राजा ने वेलूर के किले को बनवाया; लगभग सन् १५०० में यह किला विजयानगर के राजा नरसिंह को मिला। १७ वीं सदी के मध्य भाग में बीजापुर के सुल्तान ने वेलूर को अपने अधिकार में कर लिया। सन् १६७६ में महाराष्ट्रों ने साढ़े चार महीने के महासरे के बाद वेलूर को ले लिया। सन् १७०८ में मुसल्मानों

ने महाराष्ट्रों को निकाल कर किले पर अपना अधिकार जमाया। सन् १७६० के चंद वर्ष पीछे अङ्गरेजों ने वेलूर पर अपना अधिकार कर लिया। श्रीरंगपट्टन् की लड़ाई में टीपू सुलतान के परास्त होने पर उसके वंश के लोग वेलूर में रक्खे गए। सन् १८०६ में जब वेलूर के सिपाहियों ने बगावत करके वहां के यूरोपियनों को मार डाला तब मैसूर के लोग बंगाल में भेज दिए गए।

उत्तरी आरकाट जिला—इसके उत्तर कड़पा और नेल्लूर जिला; पूर्व चेंगलपट्ट जिला; दक्षिण सेलम और दक्षिणी आरकाट जिला और पश्चिम मैसूर का राज्य है। उत्तरी आरकाट जिले का सदर स्थान वेलूर से २७ मील उत्तर रेलवे स्टेशन के पास चित्तूर कसबा है। जिले के उत्तरीय और पश्चिमीय भाग में पहाड़ियां हैं। चंद पहाड़ियों में तांबा और लोहे के ओरें बहुत मिलते हैं और मकान बनाने लायक पत्थर बहुत हैं। जिले की प्रधान नदी पनार है। जंगलों और पहाड़ियों में कई जाति के पहाड़ी लोग रहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय उत्तरी आरकाट जिले का क्षेत्रफल ७२५६ वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या १८१७८१४ थी, अर्थात् १७१७५९५ हिंदू, ८२४३८ मुसलमान, १००१८ कृस्तान, ७७६१ बौद्ध और २ अन्य थे। हिंदुओं में ५०७९२८ वेल्लाल (खेती करते हैं), ३१६०२९ परिया, २६७७१०' वनिया (जाति विशेष मजदूरी पेशे वाले), १२४४८७ इडैयन (भेड़ चराते हैं), ५६७११ कैकोलर (कपड़ा बिनते हैं), ४९२९५ ब्राह्मण, ४७०३० कंभाड़न, २९३९८ चेटी (सौदागरी करने वाले), २७६०९ बनान (कपड़ा धोते हैं), २६०४५ सतानी (दोगसला), २५९७६ सेंबड़वन (मछुहा), २४२०८ साना (साड़ी बनाते हैं), २३५६३ उली, २०१९७ अंबटन (हजाम), १९८१५ कनक्कन (लिखने का काम करते हैं), १५५७७ कुशवन (मट्टी का बर्त्तन बनाते हैं), और शेष १३५९३७ में अन्य जातियों के लोग थे। उत्तरी आरकाट जिले में तामिल और तेलुगू अर्थात् तैलंगी भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय उत्तरी आरकाट जिले के कसबे वेलूर में ४४९२५, कुडीआतम् में १८७४७, तिरुपदी में १४२४२, कालहस्ती में ११७५४, आरकाट में १०९२८, अंबूर में १०५८६ और तिरपती में १०४८५ मनुष्य थे। पुंगानूर और चित्तूर इनसे छोटे कसबे हैं। चन्द्रगिरि, रानीपट, आरक्गोनम् इत्यादि बड़ी बस्तियां हैं।

उत्तरी आरकाट जिले के वेलूर तालुक में मदरास से वेलूर होकर बंगलोर जाने वाली सड़क के पास मदरास शहर से ९७ मील दूर पुलिकुण्डा एक बस्ती है। उसके समीप एक ऊंची पहाड़ी के पादमूल के पास पलार नदी के दहिने आदिरंगम् नामक पवित्र स्थान में प्रति वर्ष मेला होता है। वहां सुन्दर मंदिर बना हुआ है।

उत्तरी आरकाट जिले का इतिहास—पल्लव वंश के राजाओं का प्रधान किला पुरलूर में था। कांजीवरम् उनके राज्य का सबमें अधिक प्रसिद्ध कसबा हुआ। सातवीं शदी में पल्लव वंश के राजाओं का बल बढ़ा हुआ था। आठवीं या नवीं शदी में चोल वंश के राजाओं ने पल्लव वंश के राजाओं को निर्बल कर दिया। उनकी राजधानी कांजीवरम् अर्थात् काञ्चीपुर हुआ, जिनका राज्य एक समय गोदावरी नदी तक फैला था। तेलिंगाना और विजयानगर के राजा के साथ कई बार लड़ाई होने पर चोला वंश के राजा का बल घट गया। सत्तरहवीं शदी के मध्य में महाराष्ट्र लोग आए। सन् १६९८ में औरंगजेब के जनरल जुल्फकारखां ने जींजी का किला लेलिया और दाउदखां को आरकाट का, जिस जिले में जींजी थी, गवर्नर बनाया। सन् १७१२ में सआदतुल्लाखां ने, जो दिल्ली की फौज का कमाण्डर था, नवाब के खिताब पाकर आरकाट कसबे को अपनी राजधानी बनाया। उसके मरने पर दोस्तअली उसका उत्तराधिकारी हुआ। सन् १७४० में मोगलों की महाराष्ट्री सेना ने जिले में उपद्रव मचाया। दोस्तअली मारागया। उसके पश्चात् सन् १७४२ में दोस्तअली के उत्तराधिकारी सब्दरअली को और सन् १७४४ में सब्दरअली के उत्तराधिकारी सैयदमहम्मद को दुश्मनों ने मारडाला। सन् १७५१ में अंगरेजों ने बड़ी बहादुरी से लड़कर

आरकाट के किले को मुसलमानों से छीनलिया । सन् १७५८ में वह किला फरासीसियों के अधिकार में होगया । सन् १७६० में अंगरेजी सरकार ने फरासीसियों से किले को छीन कर अपने मित्र नवाब महमदअली को दिया। सन् १७८० में श्रीरङ्गपट्टनम् के हैदरअली ने आरकाट पर अपना अधिकार करलिया और किले वंदी को मजबूत किया; किन्तु उसके पुत्र टीपू ने सन् १७८३ में उसको छोड़ दिया और दो बगलों की दीवारों को तोड़वा दिया। टीपू के परास्त होने के पीछे सन् १८०३ में कर्नाटक के नवाब के अन्य राज्यों के साथ आरकाट अंगरेजों के अधिकार में होगया ।

आरकाट ।

कटपढी जंक्शन से १५ मील दक्षिण-पश्चिम रेलवे स्टेशन के पास उत्तरी आरकाट जिले में कुडीआतम् एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १८७४७ मनुष्य थे ।

कटपढी जंक्शन से १५ मील पूर्वोत्तर और आरकोनम् जंक्शन से २३ मील पश्चिम-दक्षिण मदरास रेलवे पर आरकाट का रेलवे स्टेशन है, जिससे ५ मील दक्षिण पलार नदी के दहिने किनारे पर (१२ अंश, ५५ कला, २३ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, २४ कला, १४ विकला पूर्व देशांतर में) उत्तरी आरकाट जिले के आरकाट तालूक का सदर स्थान आरकाट एक कसबा है। वह एक समय करनाटक के नवाब की राजधानी था । रानी पेटसिविल स्टेशन और यूरोपियनों के रहने की जगह रेलवे से ३ मील दूर है । द्राविडियन लोग आरकाट को आरकाड़ कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय आरकाट कसबे में १०९२८ मनुष्य थे; अर्थात् ९०७७ हिंदू, १७५७ मुसलमान, ९२ कृस्तान और २ जैन ।

अब आरकाट का महल उजड़ गया है । वहांके किले की निशानी मात्र रह गई है। कसबे के पास पहुंच कर नदी के किनारे किनारे जाने पर ½ मील के बाद दिल्ली फाटक मिलता है । केवल यही बिना नुकसानी का रहगया

है, जिसके देखने से खियाल में लेआना संभव है कि कैसी किला बन्दी थी। खाई के बहुत हिस्सों में अब धान बोया जाता है। ताल्लुकदार की कचहरी के पूर्व एक चौड़ी खाई लांघना होता है, जो गढ़ को घेरती है। अब उसमें वृक्ष जमगये हैं। वहां २ छोटे हौज हैं; जिनके पास एकही घेरे में नवाब सआदतुल्लाखां का मकबरा और जुमामसजिद है। मकबरे के दरवाजे के ऊपर के लेख से जान पड़ता है कि सन् १७३३ में नवाब मरा। इनके अलावे आरकाट में मातहत मजीष्टर की कचहरी, मातहत जेलखाना, गवर्नमेंट स्कूल, बहुत से दरगाह, बहुतेरी कबरें और चोला राजाओं के बनवाये हुए कई मन्दिर हैं। जुमामसजिद के पश्चिम एक टीले पर कर्नाटक के नवाबों का तबाह महल है, जिसके पास एक झील है। आरकाट का इतिहास वेल्लूर के इतिहास में देखिए।

आरकोनम् जंक्शन।

आरकाट से २३ मील पूर्वोत्तर और रेणुगुंटा जंक्शन से ४१ मील दक्षिण-पूर्व, उत्तरी आरकाट जिले के आरकोनम् बस्ती में रेलवे का जंक्शन है। जहां से रेलवे लाइन ४ तरफ गई है। आरकोनम् बस्ती में सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ३२२० मनुष्य थे।

जिनको मदरास देखने की जरूरत नहीं है, वे आरकोनम् से काञ्चीपुर, चेंगलपट्ट जंक्शन, चिदंबरम्, कुंभकोणम्, तंजोर जंक्शन, तिरुचनापल्ली जंक्शन और मदुरा होकर रामेश्वर, तुतीकुड़ी इत्यादि नगरों में जाते हैं। आरकोनम् से तिरुचनापल्ली जाने के लिये रेलवे के ३ मार्ग हैं;—आरकोनम् से काञ्चीपुरी, चेंगलपट्ट, विलीपुरम्, मायावरम् और तंजोर होकर २६४ मील, कटपड़ी जंक्शन, विलीपुरम् जंक्शन, मायावरम् जंक्शन और तंजोर जंक्शन होकर २८७ मील और कटपड़ी जंक्शन, जालारपेट जंक्शन और ईरोड जंक्शन होकर २८९ मील तिरुचनापल्ली जंक्शन है।

आरकोनम् से ८ मील पश्चिमोत्तर तिरुत्तनी का रेलवे स्टेशन है। तिरुत्तनी बस्ती में स्कंदजी का मन्दिर है, जहां बहुत से यात्री आते हैं और प्रति महीने में तेहवार होता है।

तिरुवल्लूर।

आरकोनम् जंक्शन से १७ मील (रेणुगुंटा जंक्शन से ५८ मील) पूर्व और मदरास शहर से २६ मील पश्चिम तिरुवलूर का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते के चेंगलपट्ट जिले में (१३ अन्श, ८ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश, और ७९ अंश, ५७ कला, २० विकला पूर्व देशांतर में) तालुक का सदर स्थान तिरुवलूर एक छोटा कसवा है, जिसमें मदरास हाते के सबसे बड़े मंदिरों में से एक मंदिर है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय तिरुवलूर में ७६५ मकान और ४९२१ मनुष्य थे; अर्थात् ४४६५ हिन्दू, ४४५ मुसलमान और ११ कृस्तान।

तिरुवलूर में मुनसफ् की कचहरी, पुलिस स्टेशन, पोष्ट आफिस और टेलीग्राफ आफिस है।

वरदराज का मन्दिर—तीन कोट (अर्थात् घेरे) के भीतर वरदराज का निज मन्दिर है। पहिले घेरे की लम्बाई १९० फीट और चौड़ाई १९५ फीट; दूसरे की लंबाई ४७० फीट और चौड़ाई भी ४७० फीट और तीसरे की लंबाई ९४० फीट और चौड़ाई ७०० फीट है। पहिले घेरे के चारो बगलों में दालान और मध्य में वरदराज का, जिनको श्रीवीरराघवास्वामी भी लोग कहते हैं, मंदिर है। कई देवढ़ी के भीतर वरदराज की विशाल मूर्ति भुजंग पर शयन करती है। उस मन्दिर के बगल में शिवजी का मन्दिर है। उस मन्दिर में भी कई देवढ़ी के भीतर शिव है। दोनों मन्दिरों के आगे जगमोहन है। घेरे के आगे की दीवार में एक गोपुर है। दूसरे कोट के भीतर, जो पीछे का बना हुआ है, बहुत से छोटे स्थान और दालान और बगलो पर पहिले घेरे के गोपुर से ऊंचे दो गोपुर हैं और तीसरे घेरे के भीतर जो पीछे का बना है, ६६८ खंभाओं का एक मंडपम् तथा कई एक मन्दिर तथा स्थान और बगलों पर ५ गोपुर हैं, जिनमें आगे और पीछे के २ बहुत बड़े हैं। मन्दिर के घेरे के फाटक के ऊपर की इमारत को गोपुर कहते हैं। द्राविड़ी मन्दिरों में वे बहुत बनते हैं। उनकी ऊंचाई बड़े बड़े मन्दिरों के

समान होती हैं। वे ११ खन तक बने हैं। मन्दिर के पास एक तालाब है, जिसमें उत्सवों के समय भोग मूर्तियों को लोग जलक्रेली कराते हैं।

प्रति अमावास्या को तिरुवलूर के आस पास के यात्री वहां देवदर्शन के लिये जाते हैं, उत्सवों के समय वहां यात्रियों की बडी भीड होती है।

भूतपुरी।

तिरुवलूर के रेलवे स्टेशन से १२ मील दक्षिण श्रीरामानुज स्वामीजी का जन्म स्थान भूतपुरी एक बस्ती है। भूतपुरी में अनन्तसरोवर नामक तालाब के पास रामानुज स्वामीजी का बडा मन्दिर बना हुआ है। रामानुजस्वामी दक्षिण मुख से विराजमान हैं। वहां केशव भगवान का मन्दिर बना है। इनके अतिरिक्त वहां अनेक स्थान और बडे बडे स्तंभ लगे हुए कई मंडपम् बने हुए हैं।

उत्सवों के समय बहुत से यात्री विशेष करके रामानुजीय संप्रदाय के आचारी लोग भूतपुरी में जाते हैं।

भूतपुरी माहात्म्य, जिसमें लिखा है कि यह स्कन्दपुराण का है, ४ अध्याय की संस्कृत पुस्तक है। उसमें लिखा है कि सूर्यवंशी राजा मान्धाता के पौत्र और राजा युवनाश्व के पुत्र हरित थे। युवनाश्व हरित को राज्य सौंप कर तप करने के लिये वन में चले गए। एक समय राजा हरित शिकार के लिए वन में गए। उन्होंने वहां सिंह से एक गऊ को बचाने के अर्थ से सिंह के ऊपर अपना बाण छोड़ा, किन्तु वह बाण उस गऊ को लग गया, जिससे वह तत्कालही मर गई। राजा ने अपने घर आकर वशिष्ठजी से पूछा कि इस पाप से किस भांति मेरा छुटकार होगा। महर्षि ने कहा कि हे राजन्! तुम भूतपुरी में जाकर अनंतसरोवर में स्नान करके तप करोगे, तब इस पाप से छूट जाओगे। वेंकट-गिरि से ३ योजन दक्षिण ७ योजन लंबा और इतनाही चौड़ा सत्यव्रत नामक तीर्थ है, जिसके भीतर अनेक तीर्थ स्थान और कांची नगरी है। कांची से २ योजन पूर्वोत्तर विदेह वन है। उसके कुछ पश्चिम अरुणारण्य और अरण्यारण्य के दक्षिण भूतपुरी नगरी है, जिसमें निर्मल जल से पूर्ण अनंतसर नामक ता-

लाव सुशोभित है । भूतपुरी की उत्पत्ति की कथा मैं तुमसे कहता हूं ;—
सृष्टि के आरम्भ में, जब रुद्र भगवान् अपने सर्वांग में भस्म लगाए हुए और
जटा फटकारे हुए नृत्य करने लगे, तब उनके साथ के भूतगण परस्पर हँसने
लगे। रुद्र भगवान ने उनकी ऐसी ढिठाई देखकर उनको शाप दिया कि तुम
लोग अब हम से अलग रहोगे । भूतगणों ने ब्रह्मा के पास जाकर उनसे सब
वृत्तांत कह सुनाया । तब ब्रह्मा ने कहा कि भारतवर्ष में वेंकटगिरि से दक्षिण
सत्यव्रत तीर्थ है। तुम लोग वहां जाकर केशव भगवान् की आराधना करो।
जब भूतगणों ने उस तीर्थ में जाकर सहस्र वर्ष तक केशव भगवान् का ध्यान
किया तब विमान पर चढ़े हुए भगवान् ने उनको दर्शन दिया । उनके साथ
में अनंत अर्थात् शेष आदि बहुत देवता थे । भूतगणों ने उनसे विनय किया
कि हे भगवन् ! आप ऐसा उद्योग करें कि जिससे हम लोग फिर रुद्र भगवान्
के गण बने। तब विष्णु भगवान् ने महादेव का ध्यान किया । महादेवजी
वहां प्रकट हुए। विष्णु ने उनसे कहा कि हे शंकर ! इस तीर्थ में निवास
करने से भूतगणों का पाप छूट गया; अब तुम दया करके इनको अपना गण
बना लो। महादेवजी ने विष्णु का वचन स्वीकार किया । उसके पश्चात्
विष्णु की आज्ञा से अनंत ने उस स्थान में एक सरोवर बनाया। भूतगणों ने
उस सरोवर में स्नान करके शिव की प्रदक्षिणा की। शिव ने उनको अपना गण
बना लिया। उसके पश्चात् महादेवजी ने विष्णु से कहा कि तुम वर्तमान काल के
स्वारोचिष मन्वन्तर तक इस स्थान में निवास करो। उस समय भूतगणों ने के-
शव अर्थात् विष्णु के उत्सव करने के लिये उस स्थान में ३ योजन लम्बी और
इतनीही चौड़ी एक पुरी बनाई, जिसमें देवताओं, राजाओं और अन्य मनुष्यों
के रहने योग्य बड़े बड़े गृह और प्राकार थे। वैशाख सुदी द्वादशी के हस्त न-
क्षत्र में रुद्र के सहित भूतगणों ने वहां विष्णु का बड़ा उत्सव किया। भूतगणों
ने देवताओं के चले जाने पर उस नगरी में ब्राह्मण आदि चारों वर्णों को ब-
साया। विष्णु ने कहा कि जो मनुष्य इस तिथि में यहां के अनंतसर में स्नान
करके मेरा पूजन करेगा उसको हम संपूर्ण वांछित फल देंगे। महादेवजी भूत-
गणों के सहित वहां से अपने स्थान को चले गए । भूतों ने उस पुरी का नि-

र्माण किया इसी कारण से उसका भूतपुरी नाम पड़ा। राजा हरित महर्षि व- शिष्ठ के मुख से इस कथा को सुन अपना राज्य का भार उनको सौंप कर भूत- पुरी में गए। उन्होंने वहां पुराने नगर के विविध मकान, मन्दिर, तालाव और प्राकारों का खंडहर देखा और अनंतसरोवर में स्नान करके तप आरंभ किया। एक सौ वर्ष तपस्या करने के उपरांत वहां विष्णु प्रकट हुए। उन्होंने कहा कि हे राजन्! हमारे दर्शन करने से तुम्हारा गोवध का पाप छूट गया। तुम इसी शरीर से अब ब्राह्मण हो जाओगे। तुम्हारेही वंश में हमारा अंश शेषजी (अर्थात् रामानुजस्वामी) अवतार लेंगे। तुम्हारे वंश वालों को मनो वांछित देने के लिए वैवस्वत मन्वंतर के अंत तक हम यहां निवास करेंगे। भूतगणों ने स्वारोचिष मन्वंतर में इस पुरी को बनाया था। उस मन्वंतर के अंत में यह पुरी उजड़ गई। तुम इस नगरी को पूर्ववत् बना दो और अनंतसर के पूर्व किनारे पर हमारा स्थान बनाओ। आज चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी है; आजही उत्सव आरंभ करके पूर्णिमा के दिन तुम हमारा स्थापना कर दो और तुम अपने पुत्र और पौत्र के सहित इसी पुरी में निवास करो। राजा हरित ने विष्णु की आज्ञानुसार भूतपुरी को पूर्ववत् बना दिया और उत्तम मन्दिर बनाकर उसमें विमान के साथ विष्णु का स्थापन कर दिया। उस दिन से प्रति वर्ष वहां उत्सव होने लगा। कुछ काल के पश्चात् राजा हरित काल धर्म को प्राप्त हुए। उनके वंश के ब्राह्मण अब तक भूतपुरी में केशव भगवान् की पूजा करते हैं। वैशाख सुदी द्वादशी और चतुर्थी के मृग- शिरा नक्षत्र में तथा चैत्र सुदी सप्तमी और पूर्णिमा को अनंतसरोवर में स्नान करने से अनेक फल लाभ होते हैं।

श्रीरामानुजस्वामी की संप्रदाय की (११७ अध्याय की) प्रपन्नामृत नामक पुस्तक है, उसमें लिखा है कि दक्षिण देश के पूर्व के समुद्र के तट से १२ कोस दूर तुंडीर देश में भूतपुरी नामक सुन्दर नगरी है। उसमें हारित गोत्र *

---

* भूतपुरी माहात्म्य में लिखा है कि विष्णु ने सूर्यवंशी राजा युवनाश्व के पुत्र राजा हरित को वर दिया कि तुम इसी शरीर से ब्राह्मण हो जाओगे। तुम्हारेही वंश में हमारे अंश शेषजी (रामानुज स्वामी) जन्म लेंगे।

के केशव नामक एक ब्राह्मण रहते थे। उनकी स्त्री का नाम कान्तिमती था। चैत्र सुदी ५ को, जब मेषराशि पर सूर्य थे, गुरुवार को आर्द्रा नक्षत्र में मध्याह्न के समय कान्तिमती के गर्भ से शेषजी के अंश श्रीरामानुजजी का जन्म हुआ। पिता ने आठवें वर्ष में उनको विद्यारंभ कराया और १६ वर्ष की अवस्था में रक्षकांवा नामक कन्या से उनका विवाह करदिया। कुछ काल के पीछे केशवजी का देहांत होगया। तब रामानुज स्वामीजी अपनी माता और पत्नी के साथ भूतपुरी को छोड़कर कांचीपुरी में चले गए और वहां यादवप्रकाश नामक प्रसिद्ध पण्डित से विद्या पढ़ने लगे। उसी समय कांचीपुर के राजा की कन्या को ब्रह्मपिशाच की बाधा हुई। तब राजा ने पिशाच को दूर करने के लिये यादव पंडित को बुलाया। यादवजी, रामानुज आदिक अपने शिष्यों के सहित वहां गए। उनके अनेक यत्न करने पर पिशाच नहीं हटा, तब रामानुजस्वामी ने कन्या को अपना चरण छुला कर उसकी पिशाच बाधा दूर करदी। राजा ने प्रसन्न होकर रामानुजस्वामी को बहुत द्रव्य दिया और उनका बड़ा सत्कार किया। यह देख कर यादव पंडित अपना अपमान समझा। स्वामी का मौसेरा भाई गोविंदार्य कांचीपुर में आकर स्वामी के सहित विद्या पढ़ने लगा। रंगपुर अर्थात् श्रीरंगम् में यामुनाचार्य नामक एक त्रिदंडी सन्यासी थे। उन्होंने अपने शिष्यों के मुख से रामानुजजी की प्रशंसा सुन कर उनको शिष्य करने की इच्छा की और कांची में आकर उनको देख उनकी बड़ी प्रशंसा की। एक दिन स्वामीजी अपने गुरु यादव पंडित की सेवा कर रहे थे; उस समय यादव ने श्रुति के एक शब्द का कुछ अशुद्ध अर्थ किया; तब स्वामी ने उनको छोड़ा। उस समय यादव उनसे शास्त्रार्थ करने लगे, किन्तु परास्त होगए। तब उन्होंने क्रोध करके रामानुजजी को निकाल दिया। तब वे कांचीपुर के हस्तगिरि पर चले गए। रंगपुर के यामुनाचार्य ने अपने शिष्य पूर्णाचार्य को स्वामी को बुलाने के लिये वहां भेजा। रामानुजजी यामुनाचार्य से मिलने के लिय रंगपुर चले। यामुनाचार्य स्वामी का आगमन सुन कर आगे से उनको लेने चले; किन्तु कावेरी नदी के किनारे के निकट पहुंचने पर उनका देहांत होगया। स्वामीजी ने शीघ्रता

से उनके पास पहुंच कर देखा कि आचार्य शरीर छोड़कर अपनी ३ अंगुली उठाये हुए हैं। उसका आशय यह था कि (१) बोधायन मतानुसार ब्रह्म-सूत्रादि का भाष्य बनाओ, (२) दिल्ली के बादशाह से श्रीराम की मूर्ति का उद्धार करो और (३) दिग्विजय करके विशिष्टाद्वैत मत का प्रचार करो। स्वामी ने प्रतिज्ञा की कि मैं तुम्हारी इच्छा पूर्ण करूंगा। उसके अनन्तर स्वामीजी कांचीपुरी में आए। कुछ समय के पश्चात् उन्होंने कांचीपूर्ण के उपदेशानुसार रंगपुर में जाकर पूर्णाचार्य से वैष्णवों के पंच संस्कार (उर्द्धपुंड्र, मुद्रा, माला, मंत्र और विचार) से दीक्षित होकर विद्या पढ़ी। कुछ काल के पीछे कूप से जल भरने के समय पूर्णाचार्य की स्त्री और रामानुजस्वामी की पत्नी से कुछ कलह होगई। रक्षकांबा के झगड़ालू स्वभाव से पहिलेही से स्वामी का मन उसकी ओर से खींच गया था। उस समय उन्होंने उससे उदास होकर उसको नैहर भेज दिया और अपने धन, गृह आदि संपत्ति को छोड़ कर लिंगंड सन्यास ग्रहण किया। कांचीपूर्ण ने प्रसन्न होकर उनको 'यतिराज' की पदवी दी। एक समय यादव पंडित ने स्वामी का कलेवर शंख चक्र से चिह्नित देख कर बड़ा आक्षेप किया। उस समय श्रीरामानुजजी के विद्यार्थी कूरेश ने शास्त्रार्थ में अपने मत का स्थापन करके यादव को परास्त किया। तब यादव पंडित ने ज्ञान पाकर गृहस्थाश्रम परित्याग कर रामानुज मत को ग्रहण किया। उस समय से उनका नाम गोविन्ददास पड़ा, जिन्होंने 'यतिधर्म समुच्चय' नामक ग्रन्थ बनाया। कुछ समय के पीछे यामुनाचार्य के पुत्र वररंगस्वामी ने रामानुजस्वामी को लाकर रंगनाथजी को समर्पण करदिया। स्वामी ने अपने संप्रदाय के मालाधार नामक पंडित से शठकोपाचार्य कृत सहस्रगीतिका का व्याख्यान सुना। उसके पश्चात् रामानुज स्वामी देशाटन को निकले और वेंकटगिरि होते हुए उत्तर को चले। वह दिल्ली, बदरिकाश्रम इत्यादि स्थानों में होकर अष्टसहस्र नामक गांव में आए। उन्होंने वहां वरदाचार्य और यज्ञेश नामक अपने दो शिष्यों को मठाधिपति नियुक्त किया और हस्तिगिरि में पूर्णाचार्यादि से मिलने के पश्चात् कानिल तीर्थ में जाकर उस देश के राजा विट्ठलदेव को अपना शिष्य

बनाया । राजाने तोंडीरमंडल आदि अनेक गांव उनको दिए । वहांसे वह रंगनगर लौट आए । रामानुजस्वामी ने वेदान्त सूत्र पर श्रीभाष्य, वेदांतदीप, वेदांतसार और वेदांतसंग्रह और गीताभाष्यादि बहुत से ग्रन्थ बनाए । उसके पीछे उन्होंने बहुत से शिष्यों के साथ चोलमंडल, पाण्ड्यमंडल, कुरुंग इत्यादि देशों में जाकर वैष्णव धर्म का प्रचार किया और कुरुंग देश के राजा को दीक्षित करके केरल देश अर्थात् मलेवार के पंडितों को जीता । वहांसे वह क्रम से द्वारिका, मथुरा, काशी, अयोध्या, बदरिकाश्रम, नैमिषारण्य, वृन्दावन आदि तीर्थों में होकर फिर द्वारिका आए और वहांसे पुरुषोत्तम क्षेत्र में पहुंचकर बौद्धों को परास्त करके वहां रामानुजमठ में रहने लगे । पीछे वह वहांसे वेंकटगिरि आए । चोलदेश के क्रिमिकंठ नामक राजा ने, जो शैव था, शास्त्रार्थ के लिये स्वामी को बुलाया । वह कुछ दिनों तक मार्ग के भक्तनगर में रह गए । उन्होंने स्वप्न से जानकर शाका १०१२ (सन् १०९० ईस्वी) में पौष शुक्ल चौदस को पुनर्वसु नक्षत्र में यादवाचल की छिपी हुई भगवन्मूर्ति को निकाला और उसकी वहां प्रतिष्ठा करदी । अन्त समय में रामानुजस्वामी ने अपने शिष्यों से कहा कि अब चार दिन में मैं परम धाम को जाऊंगा । ऐसा सुन शिष्यगण व्याकुल हो पृथ्वी में गिर गए और अपने शरीर त्याग करने का विचार करने लगे । तब स्वामीजी ने उनको शपथ धराया कि तुम लोग हमारे वचन का निरादर करके हमारे वियोग से शरीर परित्याग करोगे, सो तुमको पाप लगेगा । तब शिष्यों ने कहा कि हम लोग जिस प्रकार से तुम्हारे वियोग से शरीर धारण करें, उसका उद्योग आप करें । ऐसा सुन स्वामीजी ने अपने विग्रह का निर्माण किया और भूतपुरी में केशव भगवान के निकट उसकी स्थापना करवा दी । रामानुजस्वामी के अनेक विग्रह देश देशांतर में स्थापित हुए । जिनमें भूतपुरी, यादवगिरि और रंगस्थल ये तीन स्थान की प्रतिमा मुख्य हैं, इनमे भूतपुरी की विग्रह सर्व प्रधान है । चैत्रमास के आर्द्रा नक्षत्र में उसके अभिषेक कराने से मनुष्य को विष्णुलोक मिलता है । उसके पश्चात् माघ सुदी दसमी शनिवार को मध्याह्न के समय में श्रीरा-

लिये बाहर गए थे, भीड़ देख कर आम्र वृक्ष के नीचे बैठगए । नाभाजी ने अग्रदास को आए हुए देखकर उनको साष्टांग प्रणाम किया । इस लेख से जान पड़ता है कि अग्रदासजी और नाभाजी सोलहवीं शदी के अन्त मे थे, क्योंकि आंबेर के राजा मानसिंह मुगल बादशाह अकबर के सूबेदार थे; जिन्होंने सन् १५९० ईस्वी में मथुरा जिले के वृन्दावन में गोविन्ददेवजी का मन्दिर बनवाया।

रामानुज संप्रदाय के लोग आचारी कहे जाते हैं। इनका मत विशिष्टाद्वैत अर्थात् माया विशिष्ट ब्रह्म और उपास्य देव साकार ब्रह्म नारायण हैं। ये लोग अपनी भुजाओं पर तप्त शंख चक्र की छाप लेते हैं और ललाट पर चौड़े ऊर्ध्वपुन्ड्र चढ़ाते हैं, जिसके मध्य में पीत वर्ण की श्री और उसके दोनों तरफ शुक्लवर्ण की मोटी लकीरें रहती हैं । आचारी लोग द्राविड़ देश की रीत्यनुसार पर्दे के भीतर भोजन करते हैं । इस मत की दो शाखा अर्थात् बड़गल और तिङ्गल बहुत प्रसिद्ध हैं, पीछे रामानन्द इत्यादि इसकी अनेक शाखा हुई। इस मत के लोग भारतवर्ष के सब प्रान्तों मे देख पड़ते हैं; किन्तु मदरास हाते के तैलंग, कर्नाटक, मलेवार आदि अंगरेजी राज्यों में तथा मैसूर और तिरुवांकूर आदि देशी राज्यों में ये लोग बहुत हैं । उन देशों में स्थान स्थान पर मन्दिर और मकानो के बाहर रामानुज संप्रदाय के तिलक लिखे हुए अथवा खोदे हुए देख पड़ते है। उनके दोनों ओर शंख चक्र का चिन्ह भी रहता है। द्रविड़ में आचारी लोगों की ८ गद्दी हैं,—उनमें से तोताद्री, मेलकोटा और घ्नागी अर्थात् वेंकटाचल, ये ३ गद्दी विरक्त आचारी की और विष्णुकांची, श्रीरंगम् इत्यादि की ५ गद्दी गृहस्थ आचारी की हैं। संपूर्ण गद्दियो मे तोताद्री की गद्दी मुख्य है, जिसको लोग मूल गद्दी कहते हैं ।

द्रविड़ देश में शैव और आचारी वैष्णवों का परस्पर द्वेष चला आता है। शैव लोग विष्णु का नहीं, किन्तु आचारी के मत और उनके तिलक तथा छाप की निन्दा करते हैं; परन्तु आचारी लोग शिव और शैव दोनों से द्वेष रखते हैं । उनमें से बहुतेरे लोग बदरिकाश्रम में जाकर केदारनाथ को छोड़ देते हैं; रामेश्वरपुरी में जाकर रामेश्वर शिव का दर्शन नहीं करते, समुद्र में

स्नान और रामझरोखे में राम का दर्शन करके चले आते हैं; तथा काशीजी में जाकर मणिकर्णिका में स्नान करके बिना विश्वनाथ के दर्शन किए हुए अपने घर लौट जाते हैं। इस संप्रदाय में बहुत लोग संस्कृत के पढ़ने वाले हैं। शैव लोग आचारी लोगों के तिलक छाप के अप्रामाणिक कहते हैं; किन्तु पद्मपुराण में, इसकी प्रमाणें देखे पड़ती हैं, जो नीचे लिखी हुई प्राचीन कथा से ज्ञात होंगी।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—पद्मपुराण—(भूमिखंड, ७६ वां अध्याय) राजा ययाति की आज्ञा से संपूर्ण भूमण्डल के सब मनुष्य भागवत होकर विष्णु के ध्यान में परायण हुए। सबके मन्दिर, पताकाओं और शंख, चक्र तथा गदाओं से युक्त हुए। ब्राह्मण आदिक संपूर्ण वर्ण के लोग शंख चक्र तथा बाणादिकों से अंकित होगए, तथा पद्मादिकों से भी चिह्नित होकर प्रकाशित होने लगे। सबके गृहों के द्वारों पर शंख, पद्म इत्यादि के चिन्ह विद्यमान हुए। नारियों ने अपने अपने गृह के द्वारों पर शंखादिकों के चिन्ह बना दिए। (स्वर्गखंड ७० वा अध्याय) शालग्राम और चक्रांकित ब्राह्मण के समीप श्राद्ध करने का उत्तम स्थान है।

(पातालखंड, ७९ वां अध्याय) चंडाल भी उर्ध्वरेखा से युक्त उर्ध्वपुंड अपने ललाट पर देने से निःसंदेह शुद्धात्मा होजाता है, और पूजा करने के योग्य होता है।

(उत्तरखंड, ७८ वां अध्याय) गंडकीनदी के पास, जहां शालग्राम शिला उत्पन्न होते हैं, नारायण नित्य स्थित रहते हैं। जो मनुष्य शंख और चक्र का चिह्न धारण करके उनके समीप निवास करता है, वह मरने पर चतुर्भुज होकर विष्णुलोक में चला जाता है। प्रति वर्ष के आषाढ़ मास में शिवजी वहां जाकर निवास करते हैं। श्रेष्ठ ब्राह्मणों को उचित है कि आषाढ़मास में वहां जाकर शंख चक्रादिकों के चिन्हों को धारण करें। उनको बांए हाथ में शंख और दहिने हाथ में चक्र का चिन्ह धारण करना चाहिए; इससे उनकी मुक्ति होती है।

(२२५ वां अध्याय) शिवजी ने पार्वतीजी से कहा कि विष्णुजी की १६ प्रकार की भक्ति है,—(१) शंख चक्र का चिन्ह धारण करना, (२) उर्ध्व-

मानुज स्वामीजी ने १२० वर्ष की अवस्था में रंगपुरी में अपना शरीर छोड़कर विष्णुलोक को प्रस्थान किया।

दान पत्रादिकों से और दक्षिण के राजाओं के घर के लेखों से निश्चय होता है कि सन ईस्वी के ११ वें शतक प्रथमचरण के किसी सन में रामानुजस्वामी का जन्म हुआ था और १२ वीं शदी में वह थे। रामानुजस्वामी के शिष्य अनंताचार्य की बनाई हुई श्रीवेंकटाचल इतिहासमाला नामक संस्कृत की पुस्तक है। उसके प्रथम स्तवक में लिखा है कि रामानुजस्वामी ने शाका ९३९ (सन १०१७ ई०) में तुन्डीर मंडल के भूतपुरी में जन्म लिया। पीछे वह रंगनगर में निवास करने लगे। प्रपन्नामृत में लिखा है कि १२० वर्ष की अवस्था में उनका देहांत हुआ; इस लेख से सन् ११३७ ई० में उनका देहांत होना सिद्ध होता है।

रामानुजस्वामी ने विष्णु के एक ईश्वर होने का उपदेश दिया और वैष्णव मत के बहुत से ग्रन्थ बनाए। उनके पश्चात् दाशरथी, पूर्णाचार्य, गोविंदाचार्य, और कुरुक ये ४ मतशाखाप्रवर्त्तक हुए।

रामानुजीय संप्रदाय के प्रथम आचार्य शठकोपाचार्य थे; जिनका जन्म पाण्ड्य देश में ताम्रपर्णी नदी के किनारे के कुरगा नगरी में हुआ था। उनके पिता का नाम कारी और माता का नाम नाथनायकी था। इस संप्रदाय में रामानुजस्वामी से पहिले नाथार्य, पंकजाक्ष, राममिश्र, यामुनाचार्य, गोष्ठिपूर्ण, महापूर्ण (अर्थात् पूर्णाचार्य), मालाधारगुरु, श्रीशैलपूर्ण, वररंग और कांचीपूर्ण ये १० आचार्य हुए, जिनको पूर्वाचार्य कहते हैं। उनके अतिरिक्त इस संप्रदाय में कासार, भूत, महत्, भक्तिसार, शठारि, कुलशेखर, विष्णुचित्, भक्तांघ्रिरेणु, मुनिवाह और चतुष्कविंद्र ये १० सूरि हुए। इनमें भट्टनाथ की कन्या गोदादेवी और रामानुजस्वामी को मिलाकर १२ दिव्य सूरि कहे जाते हैं। कोई कोई गोदादेवी को छोड़कर मधुर कवि को मिलाकर १२ दिव्य सूरि कहते हैं। उर्द्ध लिखित १० पूर्वाचार्य और १२ सूरियों ने अपने अपने नाम के ग्रन्थ बनाये और जगत् में अपने-धर्म का विस्तार किया।

लगभग ३०० वर्ष हुए कि भक्तमाल को नाभाजी ने बनाया था। उसके ३६ वें ३७ वें और ३८ वें छप्पै में लिखा है कि श्रीरामनुजजी की पद्धति का प्रताप पृथ्वी पर अमृत के समान फैला। रामानुजस्वामी के पीछे उनकी गद्दी पर देवाचार्य, देवाचार्य के पश्चात् हरियानंद, हरियानंद के बाद राघवानंद और राघवानंद के पीछे रामानंद हुए। रामानंदजी ने संसार सागर के तरने के लिये पुल बांध दिया। उनके अनंतानंद, कबीरजी, सुखानंद, सुरेश्वरानंद, पद्मावत, नरहरी, पीपा (राजा), भावानंद, रैदास (चमार), धना (जाट), सेन (हजाम), और एक दूसरा (ये १२) प्रसिद्ध शिष्य थे। अनंतानंद के चरण का स्पर्श करके योगानंद, गयेश, कर्मचंद, अल्ह, पयहारी, रामदास, श्रीरंग इत्यादि लोग गोपाल के समान होगए। उनके गुण की, महिमा की भारी अवधि हुई इत्यादि।

रामानंदजी ने चौदहवीं शदी में श्रीसंप्रदाय का अपना दूसरा पंथ चलाया, जिस मत के लोग रामानंदी वैष्णव कहलाते हैं और सब जाति के (वैरागी) लोग एकही पंक्ति में भोजन करते हैं। उनके मत में हिंदू जाति के सब लोग ईश्वर के भजन करने को एक समान अधिकारी हैं। रामानंदजी के शिष्यों में कबीरजी से कबीरपंथी मत नियत हुआ, जिसमें कबीरजी के पश्चात् सुरतगोपाली, तकसरी, मूलपंथी, योगीपंथी, जीवपंथी, नामकबीर, ग्यानीपंथी, दयनपंथी, समपंथी, वंशघराना, नारायण पंथी, कमालपंथी इत्यादि १३ पंथ हुए। कमालपंथी को आधा पंथ कहने से १२॥ पंथ होते हैं।

रामानंदजी के पश्चात् अनंतानंद, कृष्णदास, किल्हदास, अग्रदास, नारायणदास (अर्थात् भक्तमाल के बनाने वाले नाभाजी) और गोविंदास आदि जयपुर राज्य के रामगढ़ और गलिता गद्दी में हुए थे। भक्तमाल के ४२ वें, छप्पै में लिखा है कि अग्रदास का ऐसा मत है कि सर्वदा हरि भजन करना उचित है। उसके तिलक में, जिसको संवत् १७६९ में प्रियादास ने बनाया था, लिखा है कि महाराज मानसिंह अग्रदास के दर्शन के लिये उनकी कुटी (अर्थात् गलिता गद्दी) में आए। अग्रदास, जो पत्तों को फेकने के

पुंड्रों का धारण, (३) उसके मन्त्रों का परिग्रह, (४) अर्चन, (५) जप, (६) ध्यान, (७) नाम का स्मरण, (८) कीर्त्तन, (९) श्रवण, (१०) वंदन, (११) चरण सेवन, (१२) विष्णु के चरण के जल की सेवा, (१३) उनका प्रसाद भोजन, (१४) उनके भक्तों की सेवा, (१५) द्वादसी व्रत करना और (१६ वीं) तुलसी वृक्ष का लगाना। ब्राह्मणों को उचित है कि अपनी भुजाओं पर अग्नि में तपा कर शंख और चक्र का चिन्ह धारण करें। वे लोग चक्र वा शंख चक्र अथवा शंखादिक पांचो आयुध धारण करके ब्राह्मण क कर्म का विधि पूर्वक आरंभ करें। ऐसा करने से उनको विष्णु का परम पद मिलता है तथा मोक्ष प्राप्त होता है। चक्र से चिह्नित भुजा वाले ब्राह्मों को गऊ पृथ्वी और सोना आदिक वस्तु दान देना उचित है। ब्राह्मणों को तपे हुए शंख चक्र और स्त्रियों तथा शूद्रों को सुगंधित चंदन से शंख चक्र अपनी भुजाओं पर धारण करना चाहिए। वर्ण से बाह्य भी वैष्णव त्रिभुवन को पवित्र करता है। ब्राह्मण बांई भुजा मे शंख और दहिनी में चक्र धारण करें। इस भांति महोपनिषद तथा साम और यजुर्वेद में चक्र आदि धारण का विधान कहा है। जिनके कंठ में तुलसी और रुद्राक्ष की माला, भुजाओं पर शंख चक्र का चिह्न और ललाट पर उर्ध्वपुंड्र रहता है वे लोक को पवित्र करते हैं। वैष्णवों को उचित है कि अपनी स्त्री, पुत्र, नौकर पशु आदिकों को भी शंख-चक्रादिकों के चिह्न से चिह्नित करा दें।

(२२९ वां अध्याय) उर्ध्वपुंड्र के मध्य में लक्ष्मीजी के सहित जनार्दन भगवान बैठे रहते हैं; इस कारण से जिसके शरीर में उर्ध्वपुंड्र रहता है, उसका शरीर भगवान का निर्मल मन्दिर है। उर्ध्वपुंड्र धारण करने वाले को देखकर मनुष्य सब पापों से छूट जाते हैं। ब्राह्मणो का तिलक उर्ध्वपुंड्र, क्षत्रियों का पट्टाकार और वैश्यों तथा शूद्रों का त्रिपुंड्र है। क्षत्रिय आदिक वैष्णव भी उर्ध्वपुंड्र धारण कर सकते हैं; किन्तु ब्राह्मणों को त्रिपुंड्र धारण करना नहीं चाहिए।

ग्यारहवां अध्याय।

(मदरास हाते में) मदरास और महाबलीपुर के गुफामन्दिर।

मदरास।

तिरुवलूर से २६ मील (आरकोनम् जंक्शन से ४३ मील) पूर्व और बम्बई से रेलवे द्वारा ७९४ मील दक्षिण पूर्व मदरास शहर का रेलवे स्टेशन है। समुद्र के मार्ग से मदरास शहर से ७३० मील पूर्वोत्तर कलकत्ता है। रेलवे के रास्ते से मदरास शहर से गुंटकल जंक्शन, रायचुर जंक्शन, मनमार जंक्शन, भुसावल जंक्शन, नागपुर जंक्शन, आसनसोल जंक्शन और हवड़ा होकर २१९३ मील कलकत्ता शहर है; किन्तु गुंटकल जंक्शन, बेजवाड़ा जंक्शन, कटक, खड्गपुर जंक्शन, उलबड़िया और हवड़ा होकर केवल १३११ मील दूर है *।

मदरास शहर से रेलवे लाइन २ तरफ गई है।

(१) मदरास शहर से दक्षिण कुछ पश्चिम "सौथ इन्डियन रेलवे," जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २ पाई लगता है;—

मील	प्रसिद्ध स्टेशन।
५	सैदापेट।
३४	चेंगलपट्ट जंक्शन।
७५	टिंडीवरम्।
९८	विलीपुरम् जंक्शन।
११०	पनरूटी।
१२६	कडलूर नया।
१२७	कड्लूर पुराना।
१४४	पोर्टोनोवे।
१५१	चिदंबरम्।

* हाल की एक नई लाइन निकल जाने से अब मदरास शहर से कलकत्ता केवल १०२३ मील पड़ता है,—मदरास से मुर्वोपार नेल्लूर और चांगोल होकर २५० मील बेजवाड़ा जंक्शन, ७७० मील कटक और १०२३ मील कलकत्ते के पास हवड़ा का रेलवे स्टेशन है।

१६१ सियाली।
१७४ मायावरम् जंक्शन।

चेंगलपट्ट जंक्शन से पश्चिमोत्तर २२ मील कांचीपुर और ४० मील आरकोनम् जंक्शन।

विलीपुरम् जंक्शन से रेलवे के स्टेशनों का फासिला विलीपुरम् के वृत्तांत में देखिए।

(२) मदरास शहर से पश्चिमोत्तर 'मदरास रेलवे," जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २½ पाई लगता है,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
२६ तिरुवलूर।
४३ आरकोनम् जंक्शन।
५१ तिरुतानी।
८४ रेणुगुन्टा जंक्शन।
१६२ कड़पा।
२२८ ताड़पत्री।
२५८ गुटी।
२७६ गुण्टकल जंक्शन।
३०८ अदोनी।
३३४ तुंगभद्रा।
३५१ रायचुर।

आरकोनम् जंक्शन से पूर्व-दक्षिण १८ मील कांचीपुर और ४० मील चेंगलपट्ट जंक्शन।

रेणुगुन्टा जंक्शन और गुंटकल जंक्शन से रेलवे के स्टेशनों का फासिला उनके वृत्तांत में देखिए।

(३) *

मदरास शहर से उत्तर ओर एक नहर गोदावरी जिले को और दक्षिण ओर दूसरी नहर दक्षिणी आरकाट जिले को गई है। मदरास शहर से पूर्वोत्तर एक सड़क अंगोल, बेजवाड़ा, राजमहेंद्री, विजयानगरम्, ब्रह्मपुर, गंजाम, कटक, भद्रक, बलेश्वर, मेदनीपुर होकर कलकत्ते को, दूसरी सड़क दक्षिण-पश्चिम विलीपुरम्, तिरुचनापल्ली, मदुरा और मनियाची होकर कन्याकुमारी

* मदरास रेलवे की एक लाइन मदरास शहर से उत्तर बेजवाड़ा जंक्शन में जा मिली है,—उस पर मदरास से ८५ मील गुडूर, १०६ मील नेल्लूर, १८२ मील अंगोल और २६७ मील बेजवाड़ा जंक्शन है।

को और तीसरी सड़क पश्चिम ओर कटपड़ी जंक्शन और जालारपेट जंक्शन के पास से होकर बंगलोर शहर को गई है।

पूर्वीघाट अर्थात् कारोमंडल के किनारे पर (१३ अंश, ४ कला ६ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश, १७ कला, २२ विकला पूर्व देशांतर में) मदरास, हाते की राजधानी और उस हाते में प्रधान शहर मदरास है, जिसको द्रविडियन लोग चेनापट्टनम् कहते हैं। वह शहर अपनी शहर तलियों अर्थात् उपपुरों के सहित समुद्र के किनारे पर एक म्युनिसिपल्टी के भीतर ९ मील लंबा और लगभग ३½ मील चौड़ा २७ वर्गमील के क्षेत्रफल में फैला हुआ है, जिसके भीतर खास शहर के अलावे १४ गांव भी हैं। क्षेत्रफल के भीतर किले, देशी कसबे और शहरतलियों के आसपास जोती हुई भूमि भी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय किले के साथ मदरास शहर में ४५२५१८ मनुष्य थे; अर्थात् २२५८१७ पुरुष और २२६७०१ स्त्रियां। इनमें ३५८९९८ हिन्दू, ५३१८४ मुसलमान, ३९७४२ क्रुस्तान, २८१ जैन, १२९ बौद्ध, ४५ पारसी, ४ यहूदी और १३५ अन्य थे। मनुष्य गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में तीसरा और मदरास हाते में पहिला शहर है।

मदरास शहर के समय के मुताबिक भारतवर्ष की संपूर्ण रेलवे की घड़ियां रहती हैं। जब मदरास शहर की लोकल घड़ी में ६ बजता है; उस समय कलकत्ते में ६ बज के ३३ मिनट; इलाहाबाद में ६ बज के ७ मिनट, आगरा में ५ बज के ५० मिनट, दिल्ली में ५ बज के ४७ मिनट; और बम्बई में ५ बज के ३० मिनट, रहता है; अर्थात् मदरास शहर के सूर्योदय से ३३ मिनट पहिले कलकत्ता में ७ मिनट पहिले इलाहाबाद में १० मिनट पीछे आगरा में, १३ मिनट पीछे दिल्ली में और ३० मिनट पीछे बंबई में सूर्योदय होता है।

यद्यपि मदरास शहर देखने में बहुत सुन्दर नहीं है और उसमें अत्युत्तम सड़कें नहीं बनी हैं, तथापि उत्तम कारीगरी की बहुतसी इमारतें और ऐतिहासिक दिलचस्पी की बहुतसी जगहें हैं। दूर से किले, सौदागरों के अनेक आफिसों, चंद मीनारों, और सरकारी आफिसों के सुन्दर दृश्य दृष्टि गोचर होते हैं।

शहर में छोटी बड़ी चार पांच धर्मशाले हैं, जिनमें से एक सौथइन्डियन रेलवे के स्टेशन से शहर में जाने वाली सड़क के पास और दूसरी स्टेशन से २ मील दूर शहर के भीतर मारवाड़ी धर्मशाला है।

मदरास के बंदरगाह के पास तथा उससे दक्षिण कष्टमहौस, टेलीग्राफ-आफिस, बंक, कमसरियट का स्तबल, मदरास मेल आफिस, पोष्टआफिस, हाईकोर्ट तथा कारोबार के अन्य मकान समुद्र के किनारे पर फैलेहुए हैं, उनके पश्चिम देशी लोगों की घनी बस्ती है, जिसमें एक बड़ी सड़क के बगलों में बड़ीबड़ी दुकानें, मदरासबंक और कई गिरजे हैं। देशी बस्ती से दक्षिण समुद्र के किनारे पर लगभग २ मील लंबे और १ मील चौड़े मैदान में किला, कूउम नदी का टापू,परेड की भूमि, गवर्नमेंट हाउस और कई एक दूसरी सुन्दर इमारतें हैं। उस भाग के दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण तिरुवलेश्वरम् पेट, पुदुपाक, रायपेटम् कृष्णप्पेट इत्यादि महल्ले हैं। उस भाग के पश्चिम पुदूपेट और एक दूसरे महल्ले में खासकर यूरोपियन लोग बसते हैं। इनके अलावे अन्य कई महल्लों और शहरतलियों में बहुत से यूरोपियन बसे हुए हैं। मदरास की प्रधान सड़क मांउटरोड है, जो किले से दक्षिण-पश्चिम सेंटथमस मांउट तक चली गई है। उसके बगलों में सुन्दर वृक्ष लगे हुए हैं; परंतु उसके किनारों पर अच्छे मकान बहुत नहीं हैं। इसके अलावे केथेडूलरोड, जो मांउटरोड को काटता हुआ निकला है, और मउब्रेरोड भी अच्छी सड़क है। कूउम नामक एक छोटी नदी किले से आधा मील दक्षिण, म्युनिसिपल्टी के हद के भीतर समुद्र में गिरती है, जिससे बना हुआ टापू के दक्षिण-पश्चिम मदरास के गवर्नर की कोठी, जिसका दरवाजा मांउटरोड के पास है, खड़ी है। किले से मांउटरोड को जाने वाली सड़क के मध्य में नदी के टापू के भीतर सरटीमनरो की धातु की प्रतिमा बनी हुई है, जो चंदे के९०००० रुपये के खर्च से सन् १८३९ में तैयार हुई। किले से पश्चिमोत्तर खास शहर के पश्चिम एक बड़े क्षेत्रफल में कई एक बड़े तालाब, दो पार्क और अनेक बागान हैं, जहां टहलने के लिये बहुत लोग जाते हैं। उससे दक्षिण टाउन हाल है। सौथइन्डियन रेलवे के स्टेशन से आधा मील से अधिक पश्चिम "इसपरटंक" नामक टेढ़ा तालाब है।

मदरास की इमारतों में हाईकोर्ट, गवर्नर की कोठी, कैथेड्रल, मेमोरियल-हाल, सिनेट हाउस, कालिज, सेंट्रल रेलवे का स्टेशन, टेलीग्राफआफिस, पोष्ट-आफिस, अजायबखाना, अबजरवेटरी, बड़ी लाईब्रेरी, अनेक अस्पताल, अधिक खियाल के लायक हैं। किले से २ मील दक्षिण-पश्चिम मदरास कबै बड़ी इमारत है। मदरास की लाइब्रेरियों में से रायल एसियाटिक सोसाइटी' की शाखा और 'लिटरेरी सोसाइटी' में लगभग १७००० किताब रक्खी हैं।

सन् १८०८ का कायम हुआ एक गरीबखाना है, जिसका निर्वाह साधारण चंदे और सरकार के खर्च से होता है; उसमें गरीब, निर्बल तथा अनाथ लोगों को भोजन और वस्त्र मिलता है और लगभग ४०० पुरुष और स्त्रियों के रहने का स्थान बना हुआ है। मदरास में साधारण लोगों के लिये एक उत्तम अस्पताल है; जिसमें रोगियों के लिये ३०० से अधिक चारपाइयां रक्खी हुई हैं।

सन् १८८२-१८८३ में मदरास के ९ कालिजों में ७८७ विद्यार्थी; ३ कालिजों में जो पेसे सिखलाने के लिये हैं, २१७ विद्यार्थी; १४ अंगरेजी हाई-स्कूल में १२६३ विद्यार्थी, ९५ अंगरेजी के मिडिल स्कूल में ३४६१ विद्यार्थी थे। इनके अलावे देशी भाषा के बहुत से मिडिल स्कूल थे।

खास शहर के उत्तर भाग में दिवानी का जेलखाना, रोमनकथेलिक चर्च, शिल्पकारी का स्कूल, कई अन्य स्कूल और अस्पताल हैं।

किले से पश्चिम जनरल अस्पताल और मेडिकल कालिज है। कूम नदी से बना हुआ टापू के पश्चिम नेपियरपार्क, एक गिरजा और स्कूल और दक्षिण ओर समुद्र के पास सेनेटहाउस, इंजिनियरिंग कालिज, प्रेसीडेंसी कालिज, हिंदुओं का श्मशान, पुलिस इन्सपेक्टर जनरल का आफिस, सेंटटोम का चर्च और यतीमखाना है।

मदरास में बड़ी फौजीछावनी है जिसमें ३००० से अधिक सैनिक लोग, जिनमें लगभग ११०० यूरोपियन हैं, रहते हैं। बहुत से गिरजे हैं। जलकल सर्वत्र लगी है। सड़कों पर रात्रि में लालटेनों की रोशनी होती है। सवारी के लिये तांगे, घोड़े गाड़ी और बैलगाड़ी मिलती हैं।

खास शहर के, जिसमें देशी लोगों की घनी बस्ती है, पूर्व बंदरगाह

में ४० फीट चौड़ा एक पुश्ता बना है, जो किनारे से पानी के भीतर १ हजार फीट लम्बा है। उस पर जहाज के मुसाफिर उतरते हैं। सब देशों के जहाज बंदरगाह में आते हैं और सब देशों में जाने के लिए बंदरगाह से खुलते हैं। गल्ला, रुई, काफी, नील, तेलहन, रंग, चीनी, चमडा, सींग इत्यादि वस्तु मदरास से दूसरे देशों में भेजी जाती है और लोहा इत्यादि धातु खुर्दा चीजें और यूरोपियन कारीगरी की विविध भांति की चीजें दूसरे देशों से मदरास में आती हैं।

उस देश की रीति के अनुसार मदरास शहर के पायखानों में पर्दे नहीं हैं। बड़े पायखानों के बाहर बींडी बिकती है। उस देश के लोग मलत्याग करते समय बींडी पीते हैं और जोर सोर से परस्पर बातें करते हैं उत्तरी भारतवर्ष के स्त्रियों के समान वे लोग मलत्याग के समय परस्पर लज्जा नहीं करते। अत्रिस्मृति के ३१९ वें और ३२० वें श्लोक में लिखा है कि मलत्याग-ने लघुशंका करने और होम करने के समय मौन धारण करना उचित है।

नई हाईकोर्ट—खास शहर के दक्षिण पोष्टआफिस और पोष्ट आफिस से दक्षिण समुद्र के किनारे से कई सौ गज पश्चिम १ लाख वर्ग फीट भूमि पर नई हाईकोर्ट बनी है। दूर से उसकी दो मंजिली तीन मंजिली इमारतों के सुनहरे कलशों के साथ बीसहां गुंबजों का मनोहर दृश्य देखने में आता है। उसके भीतर की लकड़ी की नकाशी और रंगों की आरास्तगी देखने लायक है। उसमें जज लोगों के ४ इजलास हैं। सन् १८८८ में हाईकोर्ट का काम आरंभ हुआ और सन् १८९२ में इमारत तैयार होकर उसमें कचहरियों का काम होने लगा।

किला—हाईकोर्ट से दक्षिण "फोर्टसेंटजर्ज" नामक किला है। किले के आगे अर्थात् पूर्व ओर समुद्र के किनारे पर चौड़ी सड़क बनी हुई है। किले के पूर्व का अगवास सीधा है, लेकिन पश्चिम का अगवास अर्द्धचन्द्राकार बना हुआ है। किले की दीवार के पास जगह जगह तोपों के बुर्ज हैं। किले के बाहर गहरी खाई और भीतर बहुत से फौजी आफिस, यूरोपियन बारक अर्थात् सैनिक गृह, तोपखाना, चंद गवर्नमेन्ट आफिस और सेंटमेरी का चर्च है,

जो सन् १६७८ से १६८० तक बना था । उसमें कई एक अंगरेजी अफसर दफन किए गए हैं। किले के भीतर की प्रायः सब इमारत दो और तीन मंजिल की हैं । किला आम लोगों के लिए खुला रहता है । किले के बुर्ज से समुद्र और जहाजों का उत्तम दृश्य दृष्टिगोचर होता है । किले से १ मील पश्चिम जेलखाना है ।

गवर्नमेंट हाउस–किले से करीब १ मील दक्षिण पश्चिम गवर्नमेन्ट हाउस है । इसका प्रधान दरवाजा उत्तर है । पत्थर की चौड़ी सीढ़ियों द्वारा उसके निकट पहुंचना होता है। श्रीरंगपट्टनम् के फतेह की यादगार में इसका हाल (बड़ा कमरा) बना । भीतर चारो तरफ की दीवारों में टीपूसुलतान, महारानी विक्टोरिया, बहुतेरे वाइसराय, बहुतेरे लार्ड और बहुतेरे सरीफ अंगरेज अफसरों की तस्वीरें हैं । दूसरे कमरों में अनेक सरीफ अंगरेज और हिन्दुस्तान के बहुतेरे नवाबों की तस्वीरें देखने में आती हैं ।

अजायबखाना–अजायबखाने का अंगरेजी नाम मिउजियम, पारसी नाम अजायबखाना और हिंदी नाम जादोघर है । किले से करीब २ मील पश्चिम कुछ दक्षिण पंथियन रोड के पास दो मंजिला अजायबखाना है, जो ६॥ बजे सुबह से ५ बजे शाम तक खुला रहता है । साल में करीब ४ लाख आदमी इसको देखते हैं ।

सन् १८४६ में इसकी चीजों के बटोर का काम आरंभ हुआ । प्रथम इसके असबाब कालेज हाल में रक्खे गए थे, किन्तु सन् १८५७ में वर्तमान मकानों में लाए गये; तबसे इसमें रखने के असबाबों के बटोर का काम जारी है । अब इस मिउजियम में उत्तम नमूना का जमाव होगया है । जो अब तक विना जाने हुए जानवर थे, उनमें से बहुतेरे तलास करके इसमें रक्खे गए हैं, जिससे यह मिउजियम मसहूर हुआ है ।

इसमें तरह तरह के जल थल के मरे हुए जानवर अर्थात् मछली, घड़ियाल, शंख, घोंघे, सीप, पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि; सामुद्रिक चीज अर्थात् फेन, जलकी लकड़ी, लतर आदि, जंगल की किसिम किसिम की लकड़ियां, देश देश के गहने, कपड़, वर्तन, पत्थर और पीतल की मूर्तियां, बाजा, ममा-

ला, रेशम, नकली फल, और खानिक चीजों के नमूने हैं। एक मगर की हड्डी ४८ फीट लम्बी है। एक लोहे का बखतर (सनाह) है। एक जगह सोने चांदी और तांबे के सैकड़ों तरह के हजारों सिक्के रक्खे हुए हैं। एक जगह तंजोर के भांति भांति के बहुत से हथियार, हाथी दांत की बनी हुई तंजोर के राजा की सभा और तंजोर के बड़े शिव मन्दिर का नमूना है। अजायबखाने में बहुतेरी ऐसी चीजें हैं, जिनको देखने से अंगरेजी तथा हिन्दुस्तानी कारीगरी और तरीकों तथा देश की पुरानी वस्तुओं का भली भांति परिज्ञान होता है। अजायबखाने से लगा हुआ एक पढ़ने का कमरा और एक साधारण लोगों का पुस्तकालय है, जिसमें विविध प्रकार की किताबों के लगभग ८००० जिल्दें रक्खी हुई हैं।

वोटैनिकल गार्डन—(पौधा सम्बन्धी बाग) यह कैथेड्रल के पास २२ एकड़ जमीन पर बहुत सुंदर तरीके में लगाया गया है। इसमें भांति भांति के दुर्लभ वृक्ष और झार लगे हैं; दो सुन्दर छोटे तालाब हैं और एक लाईब्रेरी बनी हुई है। डाक्टर राइट के उद्योग से सन् १८३६ में यह बाग कायम हुआ।

रानी बाग—यह सेंट्रल रेलवे स्टेशन के पास ११६ एकड़ भूमि पर है। इसके भीतर की कुल सड़क ५½ मील लम्बी है। इसमें बनाये हुए बहुतेरी झील, एक पबलिक हम्माम, गेंद खेलने की जगह, बाजा बजाने का स्थान और एक चिड़िया खाना (पशुशाला) है। एक घेरे के भीतर पशुशाला में अनेक चीत, गैंडे, भालू आदि जंगली जानवर हैं। उनके देखने वाले को आध आना महसूल देना पड़ता है। घेरे के बाहर के बाग में पशु पक्षियों के देखने में कुछ नहीं देने पड़ता है। बाग के दक्षिण के किनारे पर सड़क के पास विक्टोरिया टाउन हाल है, जो सन् १८८३ से १८८८ तक चंदे के खर्च से बनकर तैयार हुआ।

अब जर वेटरी—मिउजियम से करीब १ मील पश्चिम छोटी खानगी अब जर वेटरी है, जिसका काम सन् १७८७ में आरंभ और सन् १७९३ में स-

प्राप्त हुआ। उसमे उत्तम यंत्र हैं। वह बहुतेरे शरीफ आदमियों के चार्ज में रक्खी गई है।

चर्च—मदरास में १० १२ चर्च हैं, जिनमें से एक "सौथ इण्डियन रेलवे" के स्टेशन के सामने है, जो सन् १८१८ से १८२० तक २०००10 रुपये के खर्च से बनकर तैयार हुआ था। उसका मीनार १६६ फीट ऊंचा है।

जनरल हस्पिटल—(याने आम अस्पताल) यह सेंट्रल रेलवे स्टेशन के सामने है। उसमें २८० बिस्तर हैं और यूरोपियन तथा हिन्दुस्तानी रोगी रहते हैं।

गवर्नर की दिहाती कोठी—यह गवर्नमेंट हाउस से करीब ८ मील दूर गिंडी के पास एक उत्तम इमारत है, जिसके दक्षिण ८१ एकड़ में फूलों का सुन्दर बाग लगा है।

पहाडियो की ऊंचाई ८००० फीट से भी अधिक है, अर्थात् नीलगिरिकी एक चोटी समुद्र के जल से ८७६० फीट, और आनामलइ पहाडी की एक चोटी ८८६० फीट ऊंची है । मद्रास हाते की नदियो म गोदावरी, कृष्णा और कावेरी ये तीन नदिया प्रधान हैं, जो पश्चिमी घाट से निकल कर पूर्वी घाट के बंगाले की खाडी में गिरती हैं । इनके अतिरिक्त मद्रास हाते में पिनाकिनी, पनार, वैगा, वेल्लर, ताम्रपर्णी, तुंगभद्रा, इत्यादि नदिया बहती है । देश में ७० प्रकार के साप हैं; किन्तु उनम से केवल १३ प्रकार के सर्प विषधर होते हैं ।

मद्रास हाते के अंगरेजी राज्य म २२ जिले हैं;—गंजाम, विजगापट्टन, गोदावरी, कृष्णा, करनूल बल्लारी, अनतपुर, कडपा, नेल्लूर, चंगलपट्ट, मद्रास, उत्तरी आरकाट, दक्षिणी आरकाट, तंजोर, तिरुचनापल्ली मदुरा तिरुनल वेली, सेलम, कोयम्बुतूर, नीलगिरि, मलेबार और दक्षिणी किनारा जिला ।

मद्रास हाते के अंगरेजी राज्य में सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय ३५६३०४४० मनुष्य थे, अर्थात् १७६१० ३९५ पुरुष और १८०१००४५ स्त्रियां । इनम ३१९९८३०९ हिंदू, २२५०३८६ मुसलमान ८६५०२८ कृस्तान, ४७०८०८ एनिमिष्टिक अर्थात् जंगली जातियो के लोग, २७४२५ जैन १०३६ बौद्ध, २४६ पारसी, १२८ सिक्ख ४० यहूदी, १४५०३ जिनका कोई मजहब नही लिखागया था और २९ छोटे छोटे मजहब वाले थे, जिनमें सैकडे पीछे ३९ ½ तामिल भाषा बोलने वाले, ३८ ½ तेलगी भाषा वाले, ७ ½ मलेयालम् भाषा वाले, ४ कनडी अर्थात् करनाटकी भाषावाले, ३½ उडिया भाषा वाले, २½ उर्दू भाषा वाले, १½ तुलु भाषा वाले, और ३½ इनसे अन्य भाषा वाले मनुष्य थे ।

द्राविड देश में तामिल, जिसको द्रविड भी कहते हैं, तेलुगू (अर्थात् तैलगी) मलेयालम् कनडी और तुलु ये ५ भाषा प्रचलित है । तामिल भाषा बोलने वाले लोग करनाटक में अर्थात् पूर्वी किनारे के पास के मद्रास शहर से कन्याकुमारी तक उत्तर से दक्षिण, उत्तरी आरकाट दक्षिणी आरकाट, चंगलपट्ट तंजोर, तिरुचनापल्ली, मदुरा तिरुनलवेली इत्यादि जिलो म और तिरुवा

कूर के राज्य में तेलुगू बोलने वाले, पूर्वी किनारे के समीप मद्रास शहर से उत्तर के नेल्लूर, करनूल, कृष्णा, गोदावरी, विजगापट्टन आदि जिलों में, मलेयालम् बोलने वाले खास करके मलेवार जिले में और दक्षिणी किनारा जिले तथा तिरुवांकूर और कोचीन के राज्य में कनड़ी बोलने वाले खास करके मैसूर के राज्य में और उसके आसपास के अंगरेजी जिलों में तथा दक्षिणी किनारा जिले में (कड़पा, अनंतपुर, बल्लारी जिले में कनड़ी और तेलुगू दोनों हैं) और तुलु बोलने वाले लोग दक्षिण किनारा जिले के एक भाग में बसते हैं। उड़ियाबोलने वाले लोग गंजाम जिले के उत्तरीय भाग में हैं। इनके अलावे द्राविड़ में खासकर पहाड़ी कोमो में कोडागू अर्थात् कुर्गी, कोटा, इत्यादि भाषा प्रचलित है। (भारतभ्रमण के पहिले खंड मे भारतवर्षीय संक्षिप्त विवरण के २७ वें पृष्ठ में देखिए)।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय मैसूर राज्य को छोड़ करके मद्रास हाते में नीचे लिखी हुई जातियों के लोग इस भांति पड़े हुए थे;—प्रति हजार में ७८६ यूरेशियन पुरुष, ७२० यूरेशियन स्त्रियां; ७२२ ब्राह्मण, ३७ ब्राह्मणी; ६५८ कणक्कन पुरुष, २१ कणक्कन जाति की स्तियां; ६०५ कोमटी पुरुष,९ कोमटी जाति की स्त्रियां; ५८७ करनाम पुरुष, १२ करनाम जाति की स्त्रियां; ४९० नायर पुरुष, १२५ नायर जाति की स्त्रियां २१८ देशी कृस्तान, ७६ देशी कृस्तानों की स्त्रियां इत्यादि।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मद्रास हाते में खेती करने वाली जातियों के ७७६७४६७ मनुष्य थे; इनमें ऊचे दरजे की जातियों में तैलंग देश में वेलमा, तामिल बोलने वालों के जिलों में वेल्लाल, मलेवार में नायर इत्यादि अधिक हैं। नायर लोग मद्रास हाते में ३३७३२० और कुर्ग में ९०७ थे। भेड़ी रखने वाले जाति के लोग, जिनको तामिल में इडैयन् और तेलिगु में गोला कहते हैं; १५८०००० थे; ये लोग बल्लारी और करनूल जिले में अधिक हैं; उनमें से बहुतेरे अपना भेड़ रखने का पेशा छोड़ दिए हैं। सौदागरी करने वाली जातियों के लोग ६४००४७ थे,जिनमें ३६५७१५ सेटी और कोमटी थे। इनके अलावे ९२८५२० ब्राह्मण, १९३५९० क्षत्रिय और शेष में

अन्य सब जातियों के लोग थे । उस (मनुष्य-गणना के) समय मदरास हाते में १५३९९६८६ शैव मत के लोग, १०४९४४०८ वैष्णव और ६४५८० लिंगायत थे । इनके अतिरिक्त लिंगायत लोग ४७०२६९ मैसूर के राज्य में और ३६९००४ वंबई हाते में थे। लिंगायत लोग शैव होते हैं । वे जाति भेद नहीं मानते, स्त्रियों का बहुत सन्मान रखते हैं । मैसूर के पश्चिम वे लोग बहुत हैं, जो इनका खास तिजारत का स्थान है । इसके अलावे ये लोग मदरास हाते और वंबई हाते के दक्षिण के जिलो में अपना कारोबार करते हैं। भारतवर्ष के दूसरे भागों के अपेक्षा मदरास हाते में कृस्तान बहुत हैं।

मदरास हाते के अंगरेजी राज्य के शहर और कसबे, जिनमें सन् १८९१ की जन-संख्या के समय १०००० से अधिक मनुष्य थे;—

नं०	नाम शहर	नाम जिले	जन-संख्या
१	मदरास	मदरास	४५२५१८
२	तिरुचनापल्ली	तिरुचनापल्ली	९०६०९
३	मदुरा	मदुरा	८७४२८
४	सेलम	सेलम	६७७१०
५	कालीकोट	मलेबार	६६०७८
६	बल्लारी	बल्लारी	५९४६७
७	नागपट्टनम्	तंजौर	५९२२१
८	तंजौर	तंजौर	५४३९०
९	कुंभकोणम्	तंजौर	५४३०७
१०	कडालूर	दक्षिणी अर्काट	४७३५५
११	कोयम्बुतूर	कोयम्बुतूर	४६३८३
१२	वेलूर	उत्तरी आर्काट	४४९२५
१३	कांजीवरम्	चेंगलपट्ट	४२५४८
१४	मंगलूर	दक्षिणी-किनारा	४०९२२
१५	कार्कनाडा	गोदावरी	४००५३
१६	पालघाट	मलेबार	३९४८१
१७	मछलीपट्टन	कृष्णा	३८८०९
१८	विजिगापट्टन	विजिगापट्टन	३४४८७
१९	विजयानगरम्	विजिगापट्टनम्	३०८८१
२०	एलौर	गोदावरी	२९३८२
२१	नेल्लूर	नेल्लूर	२९३३६
२२	राजमहेंद्री	गोदावरी	२८३९७
२३	कनानूर	मलबार	२७४१८
२५	तल्लीचेरी	मलेबार	२७१९६

नं०	नाम शहर	नाम जिले	जन-संख्या
२५	अदोंनी	बल्लारी	२६२४३
२६	ब्रह्मपुर	गंजाम	२५६५३
२७	तुतुकुडी	तिरुनलवेली	२५१०७
२८	तिरुनल-वेली	तिरुनलवेली	२४७६८
२९	करनूल	करनूल	२४३७६
३०	मायावरम्	तंजौर	२३७६५
३१	गुंटूर	कृष्णा	२३३५९
३२	श्रीरंगम्	त्रिचनापल्ली	२१६३२
३३	श्रीवल्ली-पुतूर	तिरुनलवेली	२१४४८
३४	वेजवाड़ा	कृष्णा	२०७४१
३५	मनारगुडी	तंजौर	२०३९५
३६	दींडीगल	मदुरा	२०२०३
३७	कुडीआ-तम	उत्तरी आ-र्काट	१८७४७
३८	पालम-कोटा	तिरुनल-वेली	१८६८६
३९	चिदंबरम्	दक्षिणी-आर्काट	१८६४०
४०	चिकाकोल	गंजाम	१८२४१
४१	कोचीन	मलेबार	१७६०१
४२	कड़पा	कड़पा	१७३७९
४३	अनका-पल्ली	विजिगाप-ट्टनम्	१७०१०
४४	पलनी	मदुरा	१६९४०
४५	तिरुपतूर	सेलम	१६४९९
४६	पर्लाकिमडी	गंजाम	१६३५०
४७	पेरियाकुलम्	मदुरा	१६३६३
४८	कुम्भकोणर-नपट्टनम्	तिरुनल-वेली	१५९२४
४९	वाणियम-वाड़ी	सेलम	१५८३८
५०	उतकमंड	नीलगिर	१५०५३
५१	पोरयार	तंजौर	१४४६८
५२	बोबिली	विजिगा पट्टन	१४४६८
५३	तिरुपदी	उत्तरी आ-रकाट	१४२५२
५४	विरुदुपट्टी	तिरुनलवेली	१४०७५
५५	पोर्टोनोवो	दक्षिणी आ-रकाट	१४०६१
५६	विलवनूर	तिरुनलवेली	१३९५१
५७	पीठापुरम्	गोदावरी	१३७३१
५८	पेद्दापुरम्	गोदावरी	१३६५८
५९	रामनाद	मदुरा	१३६१९
६०	वेदारण्यम्	तंजौर	१३४३८
६१	समरला-कोटा	गोदावरी	१३४०९
६२	मैदापंग-लम्	सेलम	१३३५४
६३	राजापाल-यम्	तिरुनलवेली	१३३०१

नं०	नाम शहर	नाम जिले	जन-संख्या
६४	सेंट्थ मस-मांउट	चंगलपट्ट	३१३७
६५	तिरुवालूर	तंजोर	१२९३४
६६	साळूर	विजिगापट्टन	१२९१७
६७	होसपेट	बल्लारी	१२८७८
६८	तेन्काशी	तिरुनलवेली	१२८६१
६९	अरुप्पुकोटई	मदुरा	१२६७३
७०	क्लिकराय	मदुरा	१२३९३
७१	ईरोड	कोयम्बुतूर	१२३३०
७२	शिवकाशी	तिरुनलवेली	१२१८४
७३	तिरुवन्नामलई	दक्षिणी-आर्कांट	११२५५
७४	कालहस्ती	उत्तरी-आर्कांट	११७५४
७५	कायरपटनम्	तिरुनलवेली	११४६८
७६	कलडैकुरुची	तिरुनलवेली	११०९६
७७	आर्कांट	उत्तरी आर्कांट	१०९२८
७८	आंगोल	नेल्लूर	१०८६०
७९	करूर	कोयम्बुतूर	१०७५०
८०	अधिरामपट्टनम्	तंजोर	१०७४८
८१	नंद्याल	करनूल	१०७३७
८२	अम्बूर	उत्तरी आर्कांट	१०५८६
८३	चिरला	कृष्णा	१०५८१
८४	रासिपुर	सेलम	१०५३९
८५	काम्पती	बल्लारी	१०५२९
८६	धवलेश्वरम्	गोदावरी	१०४९२
८७	वालाजी	उत्तरी आर्कांट	१०४८५
८८	रायदुर्ग	बल्लारी	१०३८२
८९	पालकोंडा	विजिगापट्टन	१०३६७
९०	ताड़पत्री	अनंतपुर	१०२८३
९१	पार्वतीपुर	विजिगापट्टन	१००५३
९२	परमकुडी	मदुरा	१०००,

मदरास हाते में (मैसूर राज्य को छोड़ कर) ५ देशी राज्य हैं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इन राज्यों के ९६०९ वर्गमील क्षेत्रफल में ३७००६२२ मनुष्य थे; अर्थात् १८५२०७६ पुरुष और १८४८६४६ स्त्रियां। इनमें २७५०२११ हिन्दू, ७१४६५१ कृस्तान, २२५४७८ मुसलमान १२६७ यहूदी, १० जैन, १ पारसी, और ४ अन्य थे, जिनमें सैकड़े पीछे ७३½ मलेयाल-

लम भाषा बोलने वाले, २३ तामिल भाषा वाले, ११ तेलुगू अर्थात् तैलंगी भाषा वाले और २ दूसरे भाषा बोलने वाले मनुष्य थे।

मद्रास हाते के गवर्नमेन्ट के आधीन के ५ देशी राज्यों का लिज;—

नम्बर	देशी राज्य	क्षेत्रफल वर्गमील	कसबा गांव	मालगुजारी मकान	मनुष्य-संख्या सन् १८८१	मालगुजारी रु०
१	तिरुवांकूर	६७३०	३७११	५२४१५०	२४०११५८	६६०००००
२	कोचीन	१३६१	६५५	१२५२१७	६००२७८	१६०००००
३	पुदुकोटा	११०१	५१७	७४०८४	३०२१२७	५७५०००
४	बंगनापल्ली	२५३	६५	८७३५	३०७५४	
५	संडूर	१६४	२३	२६८६	१०५३२	
	जोड़	९६०९	५०५८	७३५७५२	३३४४८४१	

मद्रास गवर्नमेन्ट के आधीन के देशी राज्यों के कसबे, जिनमें सन्१८९१ की मनुष्य गणना के समय १० हजार से अधिक मनुष्य थे, नीचे हैं;—तिरुवांकूर राज्य के तिरुवनंदम् में २७८८७, अलोपी में २२७६८, कीलन में १५३७५ और नागर कोयल में ११६८७;कोचीन राज्य के मतन चेरंर में १७२५४ और तिरुचुर में १२९४५ और पुदुकोटा राज्य के पुदुकोटा में १६६८५।

महाभारत में चोल, पांड्य, माहिषक, केरल, कालगिरीय, अंध्र, कलिंग, विदर्भ इत्यादि दक्षिण के देशों का नाम लिखा है। चोल देश में तंजोर, कुंभकोणम् आदि; पांड्य देश में मदुरा इत्यादि; माहिषक देश में मैसूर, बंगलोर, श्रीरंगपट्टनम् आदि; केरल देश में मलेवार; कालगिरीय देश में नीलगिरि आदि; अंध्र देश में गोदावरी जिला और उसके दक्षिण के जिले; कलिंग देश में विजिगापट्टम् जिला और उसमे उत्तर के जिले तथा उड़ीसा देश और मध्य देश का कुछ हिस्सा; और विदर्भ देश में बीदर के आस पास के देश हैं; किन्तु इन देशों की ठीक सीमा कोई नियत नहीं है।

द्राविड़ी लोग पंजाब, राजपुताना, पश्चिमोत्तर, बंगाल, आदि नर्मदा के उत्तर के प्रदेशों को हिन्दुस्तान और इनके निवासियों को हिन्दुस्तानी कहते हैं। उनमें प्रायः सब लोग काले और सांवरे होते हैं। वहां वालों के मुख्य वस्त्र साफा, छोटी पगड़ी, अंगरखा, कोट और धोती हैं। बड़े जाति के हाकिम, अमले और वकील भी प्रायः इसी ठाठ से रहते हैं। कोई कोई रंगीन वस्त्र रूमाल सिरपर बांधता है। बहुतेरे लोग लंगोट के ऊपर ५ हाथ की टोरिया वस्त्र कमर पर लपेटते हैं। ओडियों के समान द्राविड़ के बहुतेरे लोग बड़े घरे का शिखा रखते हैं और अपना मूछ मुड़वाते हैं। मलेबार के लोग ललाट से ऊपर शिखा रखकर उसको आगे की ओर लट काए रहते हैं। स्थान स्थान पर रामानुज संप्रदाय वाले (आचारी) बहुत देख पड़ते हैं। द्राविड़ी लोग के जूते चपौरे होते हैं, जिन में अंगूठे घुसाने के लिये चमड़े की नथुनी रहती है। गर्म मुल्क होने के कारण वहां के लोगों में रूई दार कपड़े पहनने और चारपाई रखने की चाल बहुत कम है। साधारण लोग बिना बिस्तर की भूमि पर बैठते हैं। सर्व साधारण का भोजन भाजी और उसिना चावल का भात है। उत्तम वर्ण के लोग नीच वर्णों की दृष्टि बचा करके एकान्त में भोजन करते हैं। धनी गरीब सब लोग पान खाते हैं। दूसरे देशों के स्त्रियों के समान पुरुष, पुरुष से लज्जा नहीं मानता। पायखानों में भीतर पर्दे नहीं हैं। वहां के बहुतेरे लोग पायखानों में परस्पर बातचीत करते हैं। समुद्र के समीप के देशों में हाथी पाव की बिमारी होती है।

मदरास हाते में काफी (कहवा) और तमाकू बहुत उत्पन्न होते हैं। कुछ कुछ चाय भी होता है। नमक तैयार किया जाता है। ज्वार बाजरे की फसिल बहुत होती है। धान, अरहर, तिल, बर्रे भी उत्पन्न होते हैं। ताड़, नारियल, इमली, खजूर, बबूर के वृक्ष बहुत हैं। मदरास प्रांत में मूंगफली बहुत उत्पन्न होती है; करीब लाख एकड़ भूमि पर इसकी खेती हुआ करती है। नागफनी, सीज और केतकी जगह जगह रेलवे के बगलों में घेरे की जगह लगाई गई है। बहुतेरे छाता पानी भरने के डोल और अनेक मकानों के छप्पर ताड़ के पत्तों से और अनेक मकानों के छप्पर नारियल के पत्तों से बनाए जाते हैं।

द्राविड़ के बहुतेरे देवमन्दिर दूसरे देशों के मन्दिरों से बहुत बड़े हैं। बहुत मन्दिरों में बड़े बड़े गोपुर और बड़े बड़े मंडप बने हैं। वहांके मन्दिरों में देवताओं का दरशन अलग से होता है। पूजा पुजारी द्वारा चढ़ाई जाती है। देवताओं के निजमन्दिर को आदितम या विमान कहते हैं और जिस सरोवर में बेड़े पर चढ़ाकर देवता घुमाए जाते हैं, उसको तेप्पकुलम् कहते हैं। शिवमन्दिरों की दीवारों और छतों पर नन्दी की अनेक मूर्ति रहती हैं। पत्थर की दीवारों और खंभों के ऊपर गच का काम भी होता है। प्रायः सब तीर्थस्थान और शहरों में धर्मशाले और सदावर्त हैं। किसी किसी जगह ब्राह्मणों के टिकने के लिये खास धर्मशाला बनी हैं। प्रायः सम्पूर्ण तीर्थों में शिव और विष्णु दोनों देवताओं के मन्दिर बने हैं। पद्मपुराण, स्वर्गखण्ड के ८ वें अध्याय में लिखा है कि ब्रह्माजी ने शिव और विष्णु से कहा कि पृथ्वी पर जितने तीर्थ हैं, उन सबोंमें आप दोनों की समान पूजा होगी, बिना आप दोनों के निवास किये किसी तीर्थ की पवित्रता न समझी जायगी।

आटा और घी प्रसिद्ध जगहों पर मिलता है। शहरों और बड़े स्टेशनों पर महंगी मिठाई, केले और नारंगी भी मिलती हैं। कच्ची रसोई का सामान सर्वत्र मिलता है। तरकारी बहुत प्रकार की बिकती हैं। मदरास हाते के दक्षिणीय भाग में प्रसिद्ध जगहों पर बिना समय के आम और कटहल के फल बिकते हैं। कई जगहों में केवल २४ रुपये भर का सेर बाजार में चलता है।

मदरास हाते में गर्मी बहुत पड़ती है। पूर्वके जिलों में गर्मी की ऋतुओं के अपेक्षा जाड़े में वृष्टि अधिक होती है। मदरास में औसत सालाना ५० इंच वर्षा होती है, जिसमें से लगभग आधा पानी केवल नवंबर महीने में गिरता है। यद्यपि अगहन, पूस और माघ में जाड़ा पड़ता है; किन्तु वास्तव में मदरास के मैदानों में प्रायः जाड़ा नहीं है। समुद्र का ज्वार तीन चार फीट से अधिक ऊंचा नहीं होता। समुद्र के किनारों पर बार बार तूफान आया करता है। कोई बंदरगाह तूफानों से सर्वदा जहाजों को नहीं बचा सकता है।

ऊपर लिखे हुए तामिल आदि द्राविड़ी भाषावों को आर्यावर्त अर्थात् नर्मदा के उत्तर के पंजाव, पश्चिमोत्तर, बंगाल इत्यादि के लोग कुछ नहीं समझ सकते हैं; किंतु जगह जगह विशेष करके तीर्थ स्थानों और बड़े बड़े शहरों में द्रविडियन दुभाषिया मिल जाते हैं। जिन तीर्थों अथवा शहरों में आर्यावर्त्त के बहुत यात्री जाते हैं, वहां के पंडों और दुकानदारों में से अनेक लोग कुछ हिंदी समझते हैं। उर्दू के समान वहांके मुसलमानों की एक तुलुक्कु भाषा है; उस भाषा को जानने वाले मुसलमान लोग कुछ हिन्दी बोल सकते हैं। यात्रियों के काम की चीजों के तैलंगी और तामिल भाषा के नाम नीचे हैं—

हिंदी	तैलंगी	तामिल	हिंदी	तैलंगी	तामिल
चावल	बियम	अर्सी	गोंड़ा	पिडिलो	परंटे
दाल	पपू	पपू	धर्मशाला	क्षेत्रम्	क्षत्रम्
आटा	पिंडी	माऊ	मकान	इलो	उंडू
गेंहू	गोदम	गोदमे	कोठरी	इलो	उंडू
नमक	ऊपू		पायखाना	पेलों	कशुस
घी	नइए		चटाई	चापा	पाई
दही	पेरगू	तएर	लोटा	टमलेर	चंबू
दूध	पालू	पाल	थारी	तट्ठू	
मक्खन	वेना	वेने	कपड़ा	बट्ठलो	तुनी
गुड़	वेलर्	बेलम्	कंबल	कमडी	कम्ली
चीनी	सकरा	चक्के	गाड़ी	बंडी	वडी
तेल	नुना	एने	जूता	जोड़ो	चर्पो
इमली	चिंतपंड	पुली	खड़ाऊं		पादकोरडो
मिर्चा	मिरपकाय	मलगा	पुस्तक	पुस्तकम्	बुको
नारियल	तेंकाई	तंगा	दीप	दीपम्	
कपूर	कपूरम्		धोती	धोती	धोती
तंबाकू	पोगाको	पोगले	ऊपल	पंचरडी	ओटके
पानी	निल्लो	तन्नी	शिलवट		अर्मा
कुंभा	बाई	बंनरो	आग	नीपो	निपो
लकड़ी	कट्टलो	वेरगु			

तामिल भाषा में १ को ओन्, २ को रंड, ३ को मुंड, ४ को नाळ, ५ को अंचू, ६ को आर, ७ को एंडू, ८ को एटू, ९ को ओवत्र और १० को पत्तू कहते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–महाभारत—(सभापर्व ५१ वां अध्याय) चोळनाथ और पांड्यनाथ ने राजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय इंद्रप्रस्थ में आकर मलयगिरि के चंदनरस के घड़े राजा को दिए। (भीष्म पर्व, ४७ वां अध्याय) कुरुक्षेत्र के संग्राम के दूसरे दिन राजा युधिष्ठिर की ओर क्रौंचारुण व्यूह बनाया गया, जिसमें तंगन, परतंगन, चोळ, पांड्य आदि देशों के वीरगण व्यूह के पक्ष स्थान में स्थित हुए। (५३ वां अध्याय) कौरवों की ओर के गरुड़ व्यूह के दहिने पार्श्व में कलिंग आदि देशों के योद्धागण खड़े हुए। (द्रोणपर्व, १९ वां अध्याय) बारहवें दिन के संग्राम में कौरवों ने गरुड़ व्यूह रचा, जिसमें व्यूह के ग्रीवा के स्थान पर कलिंग और सिंहल आदि देशों के योद्धागण स्थित हुए। (१५३ वां अध्याय) भीमसेन ने कलिंग देश के राजा के पुत्र को मार डाला। (कर्णपर्व, २० वां अध्याय) पांड्य देश का राजा मलयध्वज कौरव दल के असंख्य योद्धाओं को मारकर अश्वत्थामा के हाथ से मारा गया। (अश्वमेधपर्व, ८३ वां अध्याय) राजा युधिष्ठिर के विजय होने के पश्चात् यज्ञ का सामान हुआ। अर्जुन की रक्षा में यज्ञ-अश्व छोड़ा गया। अर्जुन देश देश के राजाओं को परास्त करते हुए दक्षिण के समुद्र की ओर गए। उन्होंने उस तरफ के द्राविड़, अंध्र, माहिषक, (मैसूर वाले), कालगिरीय (नीलगिरि वाले), आदि वीरों को संग्राम में परास्त करके सुराष्ट्र की ओर गमन किया।

आदि ब्रह्मपुराण—(१३ वां अध्याय) राजा मंवर्त के पुत्र दुष्मन्त हुए। राजा ययाति के शाप से तुर्वसु का वंश पौरव वंश में मिल गया। दुष्मंत के पुत्र कुरुत्थाम; करुत्थाम के पुत्र अथाक्रीड़ और अथाक्रीड़ के ४ पुत्र हुए; अर्थात् पांड्य, केरल, कोल और चोल, जिनके नाम से पांड्य, केरल अर्थात् मलेबार, कोल और चोल देश विख्यात हुए। (३६ वां अध्याय) भारतवर्ष के दक्षिणीय भाग में कुमार, बासक, महाराष्ट्र, माहिषक, कलिंग, आभीर, पुलिंद, मिलेष, वैदर्भ, दंडक, कौलक, कुन्तल आदि देश हैं।

वामनपुराण—(१३ वां अध्याय) भारतवर्ष के दक्षिण के भाग में चोल, मुपिकाध, महाराष्ट्र, कलिंग, आमीर, शवर, नल, अंध्र इत्यादि देश हैं ।

मत्स्यपुराण—(११३ वां अध्याय) भारतवर्ष के दक्षिणीय भाग में पांड्य, केरल, चोल, नवराष्ट्र, कलिंग, कारुष, शबर, पुलिंद, विंध्य, वेदर्भ, दंडक इत्यादि देश हैं ।

गरुड़पुराण—(पूर्वार्द्ध, ५५ वां अध्याय) भारतवर्ष के दक्षिण के भाग में अंध्र देश हैं ।

इतिहास—किसी किसी के मत से मदरसा शब्द से मदरास नाम हुआ है। द्रविडियन लोग मदरास शहर को चेनापट्टनम् कहते हैं । शहर के कायम होने के समय उस देश के नायक (अर्थात् राजा) के भाई का नाम चेनापप्पा था, जिसके नाम से शहर का नाम चेनापट्टनम् हुआ । जान पड़ता है कि प्रायः उसी समय से लोग इसको मदरास नाम भी कहते हैं।

मदरास हाता पहिले छोटे छोटे बहुत से देशी राज्यों में विभक्त था, जिनके वंशधरों के राज्य थोड़ेही दिनों में समाप्त हो जाते थे । मदरास हाते के दक्षिणीय भाग में पांड्य चोला और चेरा ये ३ बादशाह राज्य करते थे। सिरिया के बादशाह सेल्युकस का वकील मेगस्थनीज सन् ईस्वी के आरंभ से ३०६ वर्ष पहिले हिंदुस्तान में (चन्द्रगुप्त के दरबार में) आया था । उसके लिखने के अनुसार उस समय पांड्य, कलिंग और अंध्र ये तीन वंशों के राजाओं के राज्य थे । पांड्य वंश के राजा दक्षिण के भाग में, और कलिंग तथा अंध्र देश के राजा वर्त्तमान मदरास हाते के उत्तरीय भाग में राज्य करते थे; इनमें से कलिंग वंशवाले समुद्र के किनारे के आसपास और अंध्र वंश के राजा किनारे से दूर थे। ऐसा जान पड़ता है कि सन् ईस्वी के आरंभ से लगभग २५० वर्ष पहिले राजा अशोक के राज्य के समय चोला और केरल अर्थात् चेरा वंश के राजा भी राज्य करते थे। सन् ईस्वी के आरंभ से ५०० वर्ष पहिले भी पांड्य, चोला और चेरा वंश के राजाओं के राज्य विद्यमान थे । लगभग सन् ईस्वी की छठवीं सदी में पल्लव वंश के राजा ने अपना दृढ़ राज्य नियत किया, जिसकी राजधानी मदरास के पास थी; परंतु शीघ्रही

उस बंश के कई आदमियों ने अपने अपने राज्य अलग अलग कर लिये। वे लोग पूर्वी किनारे के पास ऊड़ीसे तक हुकूमत करते थे। कलिंग और अंध्र वंश के राजाओं ने पल्लव बंश के राजाओं की आधीनता स्वीकार की, उसके पश्चात् पश्चिम के चालुक्य वंश के राजा ने चोला और पल्लव बंश के राजाओं से, संग्राम किया; किंतु सर्वदा के लिये उनका मनोरथ पूर्ण नहीं हुआ। सातवीं शदी में चालुक्य वंश के राजा ने पल्लव वंश के राजा को जीता। वे लोग पूर्वी चालुक्य वंश के नाम से बहुत काल तक राज्य करते रहे। ११ वीं शदी में पल्लव वंश वालों ने चालुक्य वंशवालों को कांचीपुरी के दक्षिण परास्त किया। दक्षिण के पल्लव वंश वाले फिर बलवान हुए। चालुक्य लोग निकाले गए। ११ वीं शदी में चोला वंश के राजा बहुत प्रसिद्ध हुए। उन्हों-ने कुछ दिनों के लिये सिलोन अर्थात् लंका के बादशाह, गंगावंश के राजा और दक्षिण के पांड्य वंश के राजा को जीता और पल्लव वंश के तथा पूर्वी चालुक्यों के राज्य को उड़ीसे की सीमा तक अपने राज्य में मिला लिया।

चालुक्यों का फैला हुआ राज्य धीरे धीरे अनेक टुकड़ों में बंट गया। १३ वीं शदी के अंत में कई एक राजाओं ने चोला वंश के राजा से मदरास हाते के उत्तरीय भाग को छीन लिया। पांड्य देश का अधिकार भी उनके हाथ से निकल गया। हैसलावल्लाल वंश के राजा ने चोला वंश के राजा को मैसूर और गंगावंश के देश से निकाल बाहर किया। १४ वीं शदी के आरंभ तक पांड्य बंश के राजा दक्षिण में बलवान थे। चोला वंश के राजा के अधिकार में तंजोर और मदरास था।

१४ वीं शदी के आरंभ में दिल्ली के खिलजी खांदान के बादशाह अलाउद्दीन और उसका जनरल मलिक काफूर ने डेकान (दक्षिण) को जीता। उन्होंने हैसलावल्लाल के राज्य का बिनाश किया; मदुरा के पांड्य वंश का नाश करके कन्याकुमारी तक के देशों का विध्वंश कर दिया; तथा पूर्वी किनारे के मधानों को जीता।

द्राविड़ देश के पांड्य, चोला और चेरा इन ३ राजाओं में पांड्य राज्य सबसे सभ्य था। उस बंश में क्रम से ११६ राजा हुए, उनकी राजधानी मदुरा

थी। चोला वंश के राजाओं की राजधानी पहिले कांबेकोनम् अर्थात् कुंभकोणम् और पीछे तंजोर था; उस वंश में क्रम से ६६ राजा हुए। चेरा राज्य की राजधानी मैसूर राज्य का तालकद शहर था, जो अब कावेरी के बालू में ढंक गया है; उस वंश के ५० राजाओं ने राज्य किया था। पांड्य, चोला और चेरा वंश वालों का किसी तरह से थोड़ा बहुत राज्य सोलहवीं शदी तक था।

मुसलमानी फौजों के चले जाने पर विजयानगर का राज्य आरंभ हुआ। लगभग सन् १३३६ में तुंगभद्रा नदी के पास हांपी, विजयानगर के हिंदू राजा की राजधानी बनी। उनका राज्य धीरे धीरे पूर्वी किनारा से पश्चिमी किनारा तक फैला। उन्होंने दक्षिणी भारत के प्रथम के राजाओं का विनाश करके उनके संपूर्ण देशों पर हुकूमत की। सन् १५६४ में बीजापुर, गोलकुण्डा आदि के ४ मुसलमान बादशाहों ने मिल कर विजयानगर के हिंदू राजा को परास्त किया। सोलहवीं और सत्रहवीं शदी में नायक वंश वालों ने मदूरा के राज्य की हुकूमत की।

सत्रहवीं शदी में बादशाह औरंगजेब ने बराय नाम के अपने राज्य को दक्षिण में कन्याकुमारी तक फैलाया था, परंतु वास्तव में दक्षिण के अनेक राजा लोग सर्वदा उसके आधीन नहीं रहते थे। शिवाजी के परिवार का एक राजा तंजोर के मैदान में हुकूमत करता था। उसके बाद करनाटक के नवाब, जिसकी राजधानी आरकाट थी, और हैदराबाद के निजाम स्वतंत्र हुए।

सन् १४९८ में पोर्चुगल राज्य के वासकोडिगामा ने कलीकोट के कनारे पर अपने जहाज का लंगर डाला। सन् १६०० ई० तक पोर्चुगीज लोग हिंदुस्तान में खास करके पश्चिमी किनारे के पास तिजारत करते रहे। सत्रहवीं शदी के आरम्भ में हालेंड वाले और उनके तुरंतही बाद अंगरेज लोग दक्षिणी हिंद में आए। अंगरेजों ने पहिले सन् १६११ में पूर्वी किनारे के मछलीपट्टन में और उसके पीछे सन् १६१६ में कलीकोट और कननूर में अपनी कोठी कायम की। सन् १६८३ में तलीचेरी, जो सूरत की कोठी की शाखा थी, पश्चिमी किनारे पर अंगरेजी तिजारत की प्रधान स्थान हुई, जो सन् १७०८

में सर्वदा के लिये अंगरेजों को मिल गई। अंत में पोर्चुगीज लोग गोवा को और हालेंड वाले एक टापू को चले गए।

सन् १६३९ के मार्च में इष्टइन्डियन कंपनी ने चन्द्रगिरि के राजा श्रीरंगरायल से, जो विजयानगर राज वंश के थे, उस भूमि को पाया, जिसपर वर्तमान मदरास शहर है। उस कंपिनी ने शीघ्रही वहां "फोर्टसेंटजर्ज" नामक किले बनाने का काम आरंभ किया। पहिले एक दीवार के भीतर, जिसमें ४०० गज लंबी और १०० गज चौड़ी भूमि थी, एक कोठी और अन्य इमारतें थीं। सन् १६४३ में उसका काम बढ़ाया गया और हिफाजत के लिये वहां १०० सैनिक रक्खे गए। सन् १६७० और १६८० के बीच में किला बढ़ाया गया। कोठी बनने के पीछे उसके बगलों में धीरे धीरे देशी लोग बसने लगे। सन् १६७२ में फरासीसियों ने उस जगह को, जहां पांडीचरी है, खरीदा। उसके २ वर्ष के पीछे वहां फरासीसी आबादी कायम हुई। सन् १७०२ में मुगल बादशाह औरंगजेब के जनरल दाउदखां ने चन्द सप्ताह तक मदरास शहर पर घेरा डाला; किंतु पीछे विफल मनोरथ होकर वह लौट गया। सन् १७२३ में किले के भीतर टकशाल घर बनाया गया। सन् १७४१ में महाराष्ट्र लोग भी मदरास के किले पर आक्रमण करके लौट गये। सन् १७४३ में वह किला फिर बढ़ाया गया और मजबूत किया गया। उस समय मदरास शहर दक्षिणी भारत में सब शहरों से बड़ा होगया था। सन् १७४६ में फरासीसियों ने अंगरेजों से मदरास का किला छीन लिया। उसी सन् के अकतूबर में एक भयंकर तूफान आया, जिससे मदरास के समुद्र में १२०० मनुष्यों के साथ ३ जहाज डूब गए और दूसरे २ जहाज भीतर चले गए। उनके अलावे २० जहाजों में से, जो उस समय मदरास में थे, एक भी नहीं बचा। फरासीसियों ने दो वर्ष के पीछे एक संधि होने पर अंगरेजों को मदरास लौटा दिया; तब अङ्गरेजों ने फिर किले को बढ़ाया और उसको दृढ़ किया। सन् १७५८ में फरासीसियों ने शहर पर अपना अधिकार करके किले पर घेरा डाला। उस समय किले का काम पूरा नहीं हुआ था; परन्तु वह हिफाजत करने लायक होगया था। दो मास तक उनका घेरा रहा, किंतु

अङ्गरेजी बहर के पहुंचने पर उन्होंने अपना घेरा उठा लिया। महासरे के बाद किले का काम फिर जारी हुआ। सन् १७८७ में किला पूरे तौर से तैयार होगया, जैसा अब विद्यमान है। सन् १७६० में अंगरेजों ने फरासीसी अफसर लैली को परास्त किया।

सन् १७६९ में मुगल बादशाह औरंगजेब ने इष्टइन्डिया कम्पनी को उत्तरी सरकारों को, जिसमें गंजाम्, विजगापट्टन्, गोदावरी और कृष्णा जिले हैं, दिया, जिसपर सन् १८८३ में अंगरेज सरकार का पूरा अधिकार होगया।

सन् १७६९ में मदरास की दीवार के पास अङ्गरेज हैदरअली के साथ लड़े। वह लड़ाई संधि होजाने से खतम हुई। दूसरी लड़ाई में कभी अंगरेज लोग कभी हैदरअली का विजय हुआ। सन् १७८२ में हैदरअली मरगया। सन् १७९१ की तीसरी लड़ाई में अंगरेजों ने हैदरअली के पुत्र टीपू से बंगलोर का किला छीन लिया; किन्तु दूसरे वर्ष टीपू ने अंगरेजों से संधि करके अपनी राजधानी को बचाया। उस समय अंगरेजों को बारमहाल, जो अब सालेम जिले का एक भाग है, मालाबार, डिंडीगल और पलनी, जो मदुरा जिले के तालुक हैं, और कुंगुड़ी, जो उत्तरी आरकाट जिले का तालुक है, मिल गए। सन् १७९९ में अंगरेजों ने टीपूसुलतान के साथ चौथी लड़ाई आरंभ की। उस लड़ाई में सुलतान मारागया; श्रीरंगपट्टनम् (राजधानी) अंगरेजों के अधिकार में होगया; कोयम्बुतूर, नीलगिरि, सालेम जिले का शेष भाग, और दक्षिण किनारा जिले का हिस्सा अंगरेजों को मिला। उन्नीसवीं शदी के शुरू से मदरास में कोई लड़ाई नहीं हुई, किन्तु कई बार बगावतें हुईं, जो सहज में दबादी गईं। सन १८०० में हैदराबाद के निजाम ने अनंतपुर, बल्लारी, करनूल और कड़पा इन जिलों को अंगरेजों को देदिया। उसके दूसरे वर्ष करनाटक के नवाब का देश, जो पूर्वी किनारे के पास नेल्लूर से तिरनल्वेल्ली तक फैला था, अंगरेजी सरकार के अधिकार में होगया। करनाटक का अन्तिम नवाब, जो सन् १८५५ में मरा, बराय नाम का नवाब था। सन् १८११ के तूफान के समय मदरास में २ जहाज डूब गए और ९० अपने लंगड़ों के पास नीचे चले गए। सन् १८१९ में करनूल के नवाब गद्दी से

उतार दिए गए; उनका राज्य अंगरेजी राज्य में मिल गया। सन् १८७२ में एक बड़ा तुफान आया, जिससे मदरास में ९ यूरोपियन जहाज और २० देशी जहाज डूबगए। उसके बाद सन् १८८१ में भी एक बड़ा तुफान आया था, जिससे बंदरगाह को बड़ी हानि हुई थी।

मैसूर के राज्य को, जो टीपूसुलतान के परास्त होने पर मैसूर के हिंदू राजा को फिर मिला था, सन् १८३१ में अंगरेज महाराज ने अपने प्रबंध में करलिया था; किंतु सन् १८८१ में वह राज्य वहां के राजा को लौटा दिया गया। मदरास के गवर्नमेंट के आधीन मदरास हाते में तिरवांकूर, कोचीन, पुदुकोटा, बगनापल्ली और संदूर ये ५ देशी राज्य हैं।

महावलीपुर के गुफा मन्दिर।

मदरास शहर से करीब ३५ मील दक्षिण चेंगलपट्ट के जिले में महावलीपुर के गुफा मन्दिर हैं। मदरास से ६ मील दूर बकिंघम नहर के पास गिंडी पुल तक घोड़ा गाड़ी की सड़क है; उससे आगे नहर की डोंगी द्वारा बारह चौदह घंटे में आदमी वहां पहुंच जाता है।

बलिपीठम् नामक एक छोटे गांव के सामने नाव से उतरना चाहिए। नहर से पूर्व, नहर और समुद्र के बीच में बहुत से चट्टानी गुफा मन्दिर और चट्टान काटकर बनी हुई मूर्तियां हैं, जिनके होने के कारण महावलीपुर प्रसिद्ध हुआ है। वहां के संपूर्ण मंदिर तथा मूर्तियां उन्हीं जगहों के पत्थर में पत्थर काट करके बनाई गईं थीं। इनके बनने का सन् निश्चय नहीं है, किन्तु वे बहुत पुरानी हैं। बलिपीठम् से करीब १½ मील उत्तर सलुवन कुपन नामक गांव, जहां आश्चर्य व्याघ्र गुफा है और दक्षिण महावलीपुर नामक बड़ा गांव है। नहर और समुद्र के बीच में १½ मील का फासिला है। सलुवन कुपन के १ मील दक्षिण से उसके ४ मील दक्षिण तक महावलीपुर के गुफा मन्दिर फैले हुए हैं।

बलिपीठम् के सामने उतर कर सीधे रास्ते से ½ मील जाने पर एक चट्टी मिलती है, जहां पत्थर काट कर लंगूर के कद के बन्दरों का एक झुंड बना है।

समुद्र की तरफ जाने पर २०० गज आगे बांई तरफ एक धर्मशाला मिलती है। इससे करीब ३० गज दूर दुर्गादेवी की एक मूर्ति है, जिसके बाए ४ और दहिने ३ स्त्रियों की मूर्तियां हैं। उस स्थान से १० गज दूर ४½ फीट ऊंचा आश्चर्य नक्काशी से बना हुआ नीलवर्ण का शिवलिंग है। इससे ९ गज दूर एक नन्दी है। उस स्थान से आगे जाने पर बालू पर दहिने बहुत सी झोंपड़ियां और बांए मछुहों का एक गांव मिलता है। इसी तरह १½ मील जाने पर समुद्र के किनारे का मन्दिर मिल जाता है।

यह पहले महाबली चक्रवर्ती का मन्दिर था, और पीछे शिव मन्दिर हुआ। एक टूटे हुए हाते के भीतर मन्दिर है। मन्दिर के पास जगमोहन बना हुआ है। दरवाजे के सामने चट्टान काट करके शिव और पार्वती की मूर्ति बनी हुई है। पूर्वकी दीवार के मध्य हिस्से में एक अष्टभुजी मूरत है। भीतर के हिस्से में एक गिरा हुआ लिंगम् (शिवलिंग) है। मन्दिर १७ फीट ऊंचा, ९ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है। मन्दिर का दरवाजा समुद्र के किनारे पर पानी से करीब १० फीट ऊपर है, जिसके आगे दहिनी तरफ ७५ फीट दूर समुद्र के भीतर एक चट्टान पर १८ फीट ऊंचा पत्थर का टूटा हुआ ध्वजास्तंभ है, जो पहिले इससे दूना ऊंचा होगा। स्तंभ के पास पहुंचना कठिन है। मन्दिर के पश्चिम बगल के पास एक देवढ़ी में करीब ११ फीट लम्बी विष्णु की मूरत है।

किनारे के मन्दिर से लगभग ६०० गज पश्चिम विष्णु का एक सादा मंडपम् है, जिसके १२ गज दक्षिण एक सुन्दर तालाब है, जिसके चारो तरफ पानी तक पत्थर की सीढ़ियां बनी हुई हैं। तालाब के मध्य में एक छोटा मंडपम् और उसके पास ब्राह्मणों की एक बस्ती तथा बहुतेरे वृक्ष हैं।

उस स्थान से पश्चिमोत्तर बलिपीठम् गांव से ½ मील दक्षिण बाराहस्वामी का मंडपम् है, जिसके आगे ४ स्तंभ लगे हैं। मंडपम् के दोनों बगलों में द्वारपाल बनाए गये हैं और मध्य में हिरण्याक्ष दैत्य के ऊपर अपने दहिने चरण को रक्खे हुए बाराहजी खड़े हैं। सामने की दीवार में बामन भगवान की

बहुत बड़ी मूर्ति पत्थर काट कर बनाई हुई है, उनका एक चरण नीचे और दूसरा ऊपर है। दोनों चरणों के पास पूजने वाले बने हुए हैं। दहिने की दीवार में एक स्त्री की बड़ी मूर्ति है, जिसके दहिने व्याघ्र और बाएं घड़ियाल बने हैं और बाएं की दीवार में लक्ष्मी बैठी हैं, जिनके ऊपर सूंडों से पानी गिराते हुए हाथी बने हैं। इनके अतिरिक्त उस मण्डपम् में विष्णु और दूसरे देवताओं की कई सूरत बनी हैं। वाराह स्वामी के मंडपम् से करीब ३० गज उत्तर गणेशजी का गुफा मन्दिर है।

उस स्थान से दक्षिण-पूर्व को फिरने पर काट करके बनाया हुआ ३७ फीट ऊंचा एक चट्टान मिलता है, जिसको लोग अर्जुन का*तप स्थानकहते हैं। देखने वाले के दहिने के कमरे में १३½ फीट ऊंचे हाथी के ऊपर पुरुष, स्त्री; और वानरों की ५७मूर्तियां और ६½फीट ऊंचे हाथी के नीचे हाथी के ३ बच्चे हैं। बाएं के कमरे में ६२ मूर्तियां हैं, जिनमें अर्जुन सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। वह अपने हाथ को अपने सिर के ऊपर रक्खे हुए बाये चरण की एक अंगुली पर खड़े हैं। उनका शरीर बहुत दुबला है। अर्जुन के नीचे उसी प्रकार से खड़े हुए लम्बे कान वाले एक राक्षस की मूर्ति है, उसके दहिने शिव की बड़ी मूर्ति है।

उस चट्टान से लगा हुआ देखने वाले के बांए ४९ फीट लंबा और ४० फीट चौड़ा एक गुफा मन्दिर है। उसके भीतर के स्तंभों के ऊपर के भाग में सुन्दर नकाशीदार तीन तीन सिंह बने हैं। उसी दिशा में ४८ फीट लम्बा और २९ फीट चौड़ा एक दूसरा गुफा मन्दिर है, जिसके भीतर बहुत से स्तंभ बनाए गये हैं; पीछे की दीवार में गोप, गोपियों और गौओं का झुण्ड बना है; दहिने गोवर्द्धन पहाड़ी को अपने बाएं हाथ पर थांभे हुए कृष्ण खड़े हैं और मध्य में एक पुरुष गाय दुहता है, जिसके साथ में एक बछड़ा है।

उससे करीब १५ गज दूर विष्णु का एक बड़ा मंदिर है, जिसमें ब्राह्मण लोग पूजा करते हैं। वह मन्दिर पीछे से आगे तक १६५ फीट लम्बा है। उसका गोपुर करीब ४४ फीट ऊंचा है। मन्दिर के पास हीन दशा में एक

---

* जिसको महाभारत में इन्द्रकील पर्वत और वहां की किरात से अर्जुन के तपस्या की कथा भी लिखी हुई है।

छोटा मन्दिर और उसके आगे विष्णु की एक मूर्ति है। उससे पूर्व थोड़ी चढ़ाई पर रमणजी का मन्दिर मिलता है, जिसके अगवास में ४ स्तंभ बने हुए हैं। उस जगह पुराना संस्कृत अक्षर में एक शिला लेख है।

उससे १½ मील दूर समुद्र की तरफ मन्दिरों का एक झुण्ड है, जिसको लोग विमान कहते हैं। सड़क बालूदार है। पहिले पत्थर में बने हुए एक सिंह और एक हाथी मिलता है। वहां द्रौपदी, अर्जुन, भीम और धर्मराज के मन्दिर हैं।

पौन मील पश्चिमोत्तर एक चट्टान पर दुर्गा का मन्दिर है; जिसके ५६ फीट ऊपर एक छोटा मन्दिर है, जहां चढ़ना कठिन है। नीचे के मन्दिर में महिषासुर को मारती हुई, सिंह पर चढ़ी हुई दुर्गाजी और विष्णु की मूर्ति है।

बारहवां अध्याय।

(मदरास हाते में) चेंगलपट्ट, पक्षीतीर्थ, कांची, जिंजी का किला, विलोपुरम् जंक्शन, पांडोचरी, कड़ालूर, चिदंबरम, मायावरम् और नागपट्टनम्।

चेंगलपट्ट।

मदरास शहर के रेलवे स्टेशन से ३४ मील दक्षिण पश्चिम और आरकोनम् जंक्शन से ४० मील (कांजीवरम् से २२ मील) दक्षिण पूर्व चेंगलपट्ट का रेलवे जंक्शन है। मदरास हाते के (१२ अंश, ४२ कला, १ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश, १ कला, १३ विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र के किनारे के निकट चेंगलपट्ट जिले के चेंगलपट्ट तालुक का सदर स्थान चेंगलपट्ट कसबा है, जिसको द्राविड़ियन लोग सेंगलपट्ट कहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय चेंगलपट्ट में ५६१७ मनुष्य थे; अर्थात् ५२८६ हिंदू, २३५ मुसलमान, ९५ कृस्तान और १ दूसरा।

चेंगलपट्ट के किले के एक भाग में होकर रेलवे निकली है और उसके भीतर-ही मुनसफी आदि सरकारी कचहरियां तथा मुजरिम लड़कों का चरित्र सुधारने के लिये एक सरकारी कैदखाना है। इनके अलावे चेंगलपट्ट में क्षतम् अर्थात् धर्मशाला, बंगला, अस्पताल इत्यादि इमारतें हैं। किले के एक बगल में दोहरी किलाबंदी और तीन बगलों में एक झील और दलदल है।

चेंगलपट्ट जिला—इसके उत्तर नेल्लूर जिला; पूर्व बंगाल की खाड़ी; दक्षिण ओर दक्षिणआरकाट जिला और पश्चिम ओर उत्तरआरकाट जिला है। साधारण प्रकार से इस जिले की भूमि समतल है। बहुतेरे स्थानों में समुद्र के निकट की भूमि समुद्र के जल से नीची है। भीतर की ओर के मैदानों में जगह जगह नारियर और इमली के वृक्षों के कुंजों में बस्तियां देख पड़ती हैं। पत्थरीली और ऊसर जमीन पर खजूर के वृक्ष और कटैली झाड़ियां लगी हुई हैं। जिले के पश्चिमोत्तर के कोने के पास पहाड़ी सिलसिला है, जिसकी सबसे ऊंची चोटी समुद्र के जल से लगभग २५०० फीट ऊंची है। अनेक नदियां हैं; किंतु सर्वदा नाव चलने लायक कोई नहीं है। जिले की झीलों में पलीकाट झील प्रधान है, उसकी सबसे अधिक लंबाई ३५ मील; चौड़ाई तीन मील से ११ मील तक; तथा सबसे अधिक गहराई १६ फीट तक है। मदरास हाते के दूसरे भागों के अपेक्षा चेंगलपट्ट जिले में सांप अधिक हैं। यह जिला मदरास हाते के स्वास्थ कर जिलों में से एक है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय चेंगलपट्ट जिले के २८४२ वर्ग-मील क्षेत्रफल में ९८१३८१ मनुष्य थे; अर्थात् ९३९३१४ हिंदू, २५०३४ मुसल्मान, १६७७४ कृस्तान, २२९ जैन तथा बौद्ध और ३० अन्य। हिन्दुओं में शैव और वैष्णव दोनों प्रायः बराबर थे। कृस्तानों में केवल २८५७ यूरोपियन और यूरेशियन थे; बाकी सब देशी कृस्तान थे। हिंदुओं में २४३५९७ परिया, जिसको परयन् भी कहते हैं, १९०८७६ वनिया (जाति विशेष), १८१३१६ वेल्लाल, ५६२७१ इडैयन (भेंड़हर), ३५६६२ पैकलर

(कपड़ा बिनने वाले), ३२०२६ ब्राह्मण, २१८०५ कंमाइन (कारीगर), १८२९० सानान, १६८२५ सेट्टी (सौदागर), १६०२७ सेंबड़वन (मछुहा), १५०५९ कणकन (लिखने वाले) और बाकी में सतानी, वनान, अम्बटन, कुसवन इत्यादि जातियों के लोग थे । इनमें क्षत्रिय केवल ६४३५ थे।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय चेंगलपट्ट जिले के कसबे कांजीवरम् अर्थात् कांची में ४२५४८ और सेंटथमसमाउंट नामक फौजी छावनी में ११३३७ मनुष्य थे । इनके अलावे जिले में तिरुवत्तपुर, तिरुवलूर, चेंगलपट्ट, और सैदापेट छोटे कसबे हैं । मद्रास शहर के रेलवे स्टेशन से ९ मील दक्षिण चेंगलपट्ट जिले का सदर स्थान सैदापेट का रेलवे स्टेशन है । चेंगलपट्ट जिले में तामिल भाषा प्रचलित है।

इतिहास—चेंगलपट्ट जिला विजयानगर के राज्य का एक भाग था। सोलहवीं शदी के अन्त में विजयानगर के एक राजा ने चंगलपट्ट के किले को बनाया । लगभग सन् १६४४ में गोलकुंडा के बादशाह ने किले पर अपना अधिकार जमाया । उसके बाद आरकाट के नवाब ने किले को लेलिया। सन् १७५१ में किला चन्दासाहब के अधिकार में हुआ था, किन्तु पीछे नवाब ने इसको फिर लेलिया । सन् १७६० में आरकाट के नवाब महम्मदअली ने "इष्टइन्डियन कम्पनी" को २० वर्ष के लिये इस जिले को टीका दिया। प्रथम इस जिले की भूमि कई जिलों में बंटी थी; किन्तु सन् १७९३ में एक जिले में कायम हुई । सन् १८०१ में आस पास की भूमि इसमें जोड़ी गई ।

पक्षीतीर्थ ।

चेंगलपट्ट के रेलवे स्टेशन से ९ मील दूर एक पहाड़ी के ऊपर पक्षीतीर्थ है। स्टेशन से उस पहाड़ी के पादमूल तक बैलगाड़ी की सड़क है । स्टेशन के पास सवारी के लिये बहुत सी गाड़ी तैयार रहती हैं । चेंगलपट्ट होकर दक्षिण जाने वाले यात्रियों में से बहुत लोग पक्षीतीर्थ जाते हैं । पहाड़ी के नीचे धर्मशाला बनी हुई है । सबेरे से यात्रीलोग उस पहाड़ी पर एकत्र

होते हैं। पंडे लोग पक्षियों के खाने के लिये भोजन* तैयार करते हैं। नियमित समय मध्याह्न काल में (पाली हुई) दो सफेद चील्ह (कभी कभी एकही) वहां आकर भोजन करके चली जाती है। यात्रीगण उनका दर्शन करते हैं। सफेद चील्ह को क्षेमकरी और कोई २ दोनों को लक्ष्मीनारायण भी कहते हैं उनका दर्शन मंगल सूचक है।

कांची।

चेंगलपट्ट जंक्शन से २२ मील पश्चिमोत्तर और आरकोनम् जंक्शन से १८ मील दक्षिण-पूर्व "सौथ इंडियन रलवे" पर कांचीवरम् अर्थात् कांची का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते के चेंगलपट्ट जिले में (१२ अन्श, ४९ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अन्शं, ४५ कला पूर्व देशांतर में) कांचीवरम् ताल्लुक का सदर स्थान कांचीवरम् कसबा है। यह मदरास हाते में एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान और पवित्र सप्तपुरियों में से एक पुरी है। कांचीवरम् से पूर्वोत्तर मदरास शहर सडक द्वारा ४६ मील और रेलवे द्वारा चेंगलपट्ट जंक्शन होकर ५६ मील तथा आरकोनम् जंक्शन होकर ६१ मील है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कांचीवरम् में ४२५४८ मनुष्य थे, अर्थात् २०६१५ पुरुष और २१९३३ स्त्रियां। इनमें ४१०९२ हिंदू, १३१२ मुसलमान, ७६ कृस्तान, ६८ जैन और १ अन्य थे। मनुष्य संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ९८ वां और मदरास हाते के अंगरेजी राज्य में १३ वां शहर है।

रेलवे लाइन से पश्चिम कांचीवरम् कसबा है। रेलवे के स्टेशन से १½ मील दूर बड़ा कांचीवरम् अर्थात् शिवकांची और शिवकांची से लगभग २ मील दक्षिण-पूर्व तथा रेलवे स्टेशन से लगभग २ मील दूर छोटा कांचीवरम् अर्थात् विष्णुकांची है। दोनो कांची के बीच में सड़क के बगलों में प्रायः लगातार मकान हैं। कांची में मामूली कचहरियां, जेलखाना, अस्पताल, स्कूल इत्यादि सरकारी इमारतें बनी हुई हैं। यहां तामिल और कुछ तैलंगी भाषा प्रचलित

* भोजन एक को खीर और दूसरे को घी दिया जाता है।

है। शिवकांची में शैव लोग और विष्णुकांची में रामानुज संप्रदाय के वैष्णव रहते हैं।

शिवकांची—शिवकांची में एकाम्रेश्वर शिव का बड़ा मंदिर है। मंदिर के २ बड़े घेरे हैं, जिनमें से पश्चिम के घेरे के मध्य भाग में शिव का निज मंदिर है। उस गुंबजदार छोटे मंदिर के तीन देवढ़ी के भीतर एकाम्रेश्वर शिवलिंग हैं। द्राविड़ के पांच लिंगों में से यह पृथ्वी लिंग हैं। (श्रीरंगम् के पास जंबुकेश्वर जललिंग, दक्षिणी आरकाट जिले के तिरुवन्नामलई के पास के अरुणाचल नामक पहाड़ी पर अग्निलिंग, कालहस्ती में कालहस्तीश्वर वायुलिंग और चिदंबरम् में नटेश आकाशलिंग हैं)। एकाम्रेश्वर पर जल नहीं चढ़ाया जाता। वहां के पंडे यात्रियों से दक्षिणा पाने पर उनकी तरफ से शिव के ऊपर फूल और बेलपत्र चढ़ाते हैं। यात्री लोग दरवाजे के बाहर से शिव का दर्शन करते हैं। नियमित समय पर मंदिर के आगे लड़कियां नृत्य करती हैं। मंदिर के पीछे आम्र का एक पुराना वृक्ष है, जिसके नीचे के चबूतरे पर एक छोटे पत्थर में "तपस्या कामाक्षी" की प्रतिमा खोदी हुई है; उसके पास एक मंदिर में कामाक्षी की ताम्रमयी उत्सव मूर्ति है। निज मंदिर के पास "सहस्र स्तंभ मंडपम्" नामक विशाल मंडप है, जिसमें २७ स्तंभों के २० पंक्तियों में ५४० स्तंभ लगे हैं। मंडप की मरम्मत हो रही है।

निज मन्दिर से पश्चिम-दक्षिण और घेरे के पश्चिम की दीवार के समीप एक छोटे मन्दिर में शिव की उत्सव मूर्ति धातुविग्रह है, जिसका सिंहासन, छत, मुकुट आदि सामान सुनहले बने हुए हैं। उत्सवों के समय इस प्रतिमा की यात्रा होती है। जगमोहन में ६४ योगिनियां खड़ी हैं। उस मन्दिर से थोड़ी दूर एक मन्दिर में बहुमूल्य वस्त्र भूषणों से सुसज्जित पार्वती की मूर्ति है। पश्चिम वाले गोपुर के पास पंक्ती से १०८ शिव लिंग हैं। पश्चिम वाले घेरे के पूर्व वाले गोपुर के निकट चिदंबर शिव और नन्दी की सुनहरी विशाल मूर्ति है। इनके अतिरिक्त उस घेरे में नवग्रह आदि के बहुतेरे मन्दिर और दीवार के नीचे बहुतेरे शिवलिंग तथा उसके ऊपर पंक्ति में बहुत से नंदी बैल हैं। दक्षिण की दीवार में एक बड़ा गोपुर है।

उस घेरे के पूर्व उसमें लगा हुआ दूसरा घेरा है, जिसके पश्चिमोत्तर के भाग में तेप्पकुलम् नामक सरोवर है, जिसमें एक सुन्दर नाव रहती है। जेठ मास के प्रधान उत्सव में शिव और पार्वती की उत्सव मूर्तियां इसी पर चढ़ के जलक्रीडा करती हैं। उस समय वहां बड़ा मेला होता है, जिसमें लगभग ५० हजार यात्री आते हैं। घेरे के दक्षिण के बगल पर १० मंजिल का १८८ फीट ऊंचा एक विशाल गोपुर है। वह बाहर की नेव के पास करीब १०० फीट लम्बा और ८० फीट चौड़ा है। उसके शिखर पर पंक्ती से ११ कलस बने हुए हैं। उसके फाटक का चौकठ करीब ३५ फीट ऊंचा है, जिसमे ऊपर चारो तरफ पत्थर खोदकर नीचे से ऊपर तक मूर्तियां बनी हुई हैं। उसके सिरे पर चढ़ने से चारो तरफ का देश देख पड़ता है। द्रविडियन मन्दिरों के घेरे के फाटकों के ऊपर बड़े बड़े मन्दिरों के समान मूँडाकार इमारत बनाई जाती हैं; इनको गोपुर कहते हैं। उनमें ग्यारह, नव, सात या इनसे कम मंजिलें होती हैं। ऐसाही गोपुर कांचीवरम् में हैं।

घेरे के बाहर बड़े गोपुर के सामने दक्षिण लगभग ७५ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा एक उत्तम मंडपम् है। उसके चारो बगलों में १२ और मध्य में ४ नकाशीदार बड़े बड़े स्तंभ लगे हैं। उनकी नकाशी में निकाल कर मूर्तियां बनाई हुई हैं। मंडपम् के पास काष्ठ का ऊंचा रथ रक्खा है, जिसके नीचे का भाग सुन्दर चित्रों से भूषित और ऊपर का शिखर नारियल के पत्तों से छाया हुआ है। रथयात्रा के समय अचल देवताओं की प्रतिनिधि चल मूर्तियां उस रथ पर बैठाकर घुमाई जाती हैं।

शिवकांची में सर्वतीर्थ नामक एक बड़ा सरोवर है, उसके चारो बगलों में पानी तक सीढ़ियां; मध्य में एक छोटा मन्दिर और चारोतरफ जगह जगह शिवलिंग और छोटे छोटे मन्दिर हैं। यात्रीलोग सर्वतीर्थ में स्नान करके शिव का दर्शन करते हैं। अनेक यात्री सरोवर के किनारे पर पितरों का तर्पण और पिंडदान करते हैं। इसके अतिरिक्त शिवकांची में कई एक धर्मशाले और कई सदावर्त हैं। बस्ती के पूर्व देवी का मन्दिर और बस्ती से २½ मील दक्षिण पनार नदी है।

है। शिवकांची में शैव लोग और विष्णुकांची मे रामानुज संप्रदाय के वैष्णव रहते हैं।

शिवकांची—शिवकांची में एकाम्रेश्वर शिव का बड़ा मंदिर है। मंदिर के २ बड़े घेरे हैं, जिनमें से पश्चिम के घेरे के मध्य भाग में शिव का निज मंदिर है। उस गुंबजदार छोटे मंदिर के तीन देवढ़ी के भीतर एकाम्रेश्वर शिवलिंग हैं। द्राविड के पांच लिंगों में से यह पृथ्वी लिंग हैं। (श्रीरंगम् के पास जम्बुकेश्वर जललिंग, दक्षिणी आरकाट जिले के तिरुवन्नामलई के पास के अरुणाचल नामक पहाडी पर अग्निलिंग, कालहस्ती में कालहस्तीश्वर वायुलिंग और चिदंबरम् में नटेश आकाशलिंग हैं)। एकाम्रेश्वर पर जल नहीं चढ़ाया जाता। वहा के पण्डे यात्रियो से दक्षिणा पाने पर उनकी तरफ से शिव के ऊपर फूल और बेलपत्र चढाते हैं। यात्री लोग दरवाजे के बाहर से शिव का दर्शन करते हैं। नियमित समय पर मंदिर के आगे लडकियां नृत्य करती हैं। मंदिर के पीछे आम्र का एक पुराना वृक्ष है, जिसके नीचे के चबूतरे पर एक छोटे पत्थर में "तपस्या कामाक्षी" की प्रतिमा खोदी हुई है; उसके पास एक मंदिर में कामाक्षी की ताम्रमयी उत्सव मूर्ति है। निज मंदिर के पास "सहस्र स्तंभ मंडपम्" नामक विशाल मंडप है, जिसमें २७ स्तंभों के २० पंक्तियों में ५४० स्तंभ लगे हैं। मंडप की मरम्मत हो रही है।

निज मन्दिर से पश्चिम दक्षिण और घेरे के पश्चिम की दीवार के समीप एक छोटे मन्दिर में शिव की उत्सव मूर्ति धातुविग्रह है, जिसका सिंहासन, छत्र, मुकुट आदि सामान सुनहरे बने हुए हैं। उत्सवों के समय इस प्रतिमा की यात्रा होती है। जगमोहन में ६४ योगिनियां खड़ी हैं। उस मन्दिर से थोड़ी दूर एक मन्दिर में बहुमूल्य वस्त्र भूषणों से सुसज्जित पार्वती की मूर्ति है। पश्चिम वाले गोपुर के पास पंक्ती से १०८ शिव लिंग हैं। पश्चिम वाले घेरे के पूर्व वाले गोपुर के निकट चित्रर शिव और नन्दी की सुनहरी विशाल मूर्ति है। इनके अतिरिक्त उस घेरे में नवग्रह आदि के बहुतेरे मन्दिर और दीवार के नीचे बहुतेरे शिवलिंग तथा उसके ऊपर पंक्ति से बहुत से नंदी बैल हैं। दक्षिण की दीवार में एक बड़ा गोपुर है।

उस घेरे के पूर्व उसमें लगा हुआ दूसरा घेरा है, जिसके पश्चिमोत्तर के भाग में तेप्पकुलम् नामक सरोवर है, जिसमें एक सुन्दर नाव रहती है। जेठ मास के प्रधान उत्सव में शिव और पार्वती की उत्सव मूर्तियां इसी पर चढ़ के जलक्रीडा करती हैं। उस समय वहां बड़ा मेला होता है, जिसमें लगभग ५० हजार यात्री आते हैं। घेरे के दक्षिण के बगल पर १० मंजिल का १८८ फीट ऊंचा एक विशाल गोपुर है। वह बाहर की नेव के पास करीब १०० फीट लम्बा और ८० फीट चौड़ा है। उसके शिखर पर पंक्ती से ११ कलस बने हुए हैं। उसके फाटक का चौकठ करीब ३५ फीट ऊंचा है, जिसमे ऊपर चारो तरफ पत्थर खोदकर नीचे से ऊपर तक मूर्तियां बनी हुई हैं। उसके सिरे पर चढ़ने से चारो तरफ का देश देख पड़ता है। द्रविडियन मन्दिरों के घेरे के फाटको के ऊपर बड़े बड़े मन्दिरों के समान गुँडाकार इमारत बनाई जाती हैं; उनको गोपुर कहते हैं। उनमें ग्यारह, नव, सात या इनसे कम मंजिलें होती हैं। ऐसाही गोपुर कांचीवरम् में हैं।

घेरे के बाहर बड़े गोपुर के सामने दक्षिण लगभग ७५ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा एक उत्तम मंडपम् है। उसके चारो बगलों में १२ और मध्य में ४ नकाशोदार बड़े बड़े स्तम लगे हैं। उनकी नकाशी में निकाल कर मूर्तियां बनाई हुई हैं। मंडपम् के पास काष्ठ का ऊंचा रथ रक्खा है, जिसके नीचे का भाग सुन्दर चित्रों से भूषित और ऊपर का शिखर नारियल के पत्तों से छाया हुआ है। रथयात्रा के समय अचल देवताओं की प्रतिनिधि चल मूर्तियां उस रथ पर बैठाकर घुमाई जाती हैं।

शिवकांची में सर्वतीर्थ नामक एक बड़ा सरोवर है, उसके चारो बगलों में पानी तक सीढ़ियां; मध्य में एक छोटा मन्दिर और चारोतरफ जगह जगह शिवलिंग और छोटे छोटे मन्दिर हैं। यात्रीलोग सर्वतीर्थ में स्नान करके शिव का दर्शन करते हैं। अनेक यात्री सरोवर के किनारे पर पितरों का तर्पण और पिंडदान करते हैं। इसके, अतिरिक्त शिवकांची में कई एक धर्मशाले और कई सदावर्त हैं। बस्ती के पूर्व देवी का मन्दिर और बस्ती से २½ मील दक्षिण पनार नदी है।

विष्णु कांची—शिव कांची से २ मील दक्षिण-पूर्व और रेलवे स्टेशन से २ मील दूर विष्णुकांची है। विष्णुकांची में *वरदराज विष्णु का विशाल मन्दिर पत्थर का बना हुआ है। वहां रामानुजीय संप्रदाय के प्रतिवाद भयं-कर की गद्दी है और पुजारी, पंडे सब लोग आचारी हैं। श्रीरामानुजस्वामी कुछ समय तक कांचीपुरी में रहे थे (१० वें अध्याय में भूतपुरी की कथा में देखिए)।

वरदराज के मंदिर का घेरा लगभग ११०० फीट लंबा और ७०० फीट चौड़ा है, जिसके भीतर की भूमि २८ बीघे से कुछ अधिक होती है। घेरे के बाहर की दीवार लगभग २० फीट ऊंची है। घेरे के पूर्व बगल में ११ खन का और पश्चिम बगल में ९ खन का गोपुर देख पड़ता है, किन्तु गोपुरों के भीतर इनसे बहुत कम तह हैं। पूर्व वाला गोपुर, जो विष्णुकांची के सब गोपुरों से बडा है, नेव के पास लगभग १०० फीट लंबा और ६० फीट चौड़ा है। फाटकों के ऊपर गोपुरों के चारो बगलों पर नीचे से ऊपर तक पत्थर खोद कर असंख्य मूर्तियां तथा कारीगरी की वस्तुएं बनाई हुई हैं। हाते की दीवारों पर तामिल अक्षरों में शिला लेख हैं, जिनको लोग इमारत बनाने वालों के निशानें कहते हैं। पश्चिम वाले गोपुर से बाहर एक सुंदर रथ रक्खा है, जिसपर वैशाख के उत्सव के समय भगवान की प्रतिनिधि चल मूर्ति बैठाकर घुमाई जाती है।

(१) पश्चिम के गोपुर के फाटक के दोनों बगलों में तामिल अक्षरों में संस्कृत लेख है, जिसको लोग ग्रन्थी कहते हैं। उस फाटक से प्रवेश करने पर फाटक के पास बांई ओर नीला पत्थर से बना हुआ उत्तम मंडपम् देख पड़ता है, जो कांचीपुरी में उत्तम बनावट का काम है। मंडपम् चारो ओर से खुला हुआ है। उसमें १२ स्तंभों के ८ कतारों में ९६ पायादार स्तंभ बने हुए हैं, जिनके नीचे के भागों में पूरे कद के बहुत से अपूर्व घोड़े और परदार घोड़े, जिन पर सवार बैठ हैं, सिंह, शार्दूल, बाज, मनुष्य इत्यादि पत्थर में

* विष्णु कांची के रहने वाले सुप्रसिद्ध मारध्वाज ब्राह्मणकों के पण्डितराज जगन्नाथ के प्रतिवादी अप्पय्य दीक्षित ने वरदराज स्तवराज बनाया है।

विष्णु कांची के मंदिर का नकशा
उत्तर
मंडप
कोटतीर्थ
पोखरा
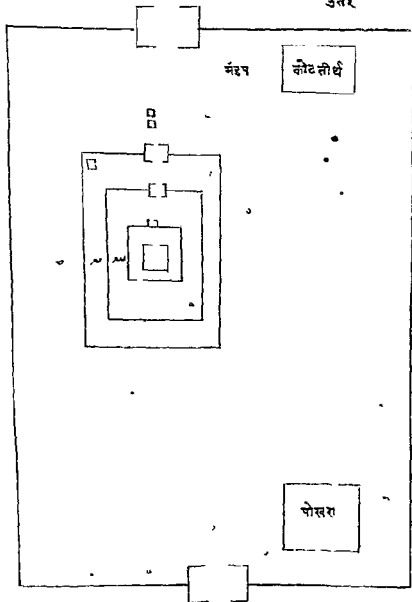
निकाल करके बने हुए हैं। मंडप के मध्य में पत्थर का सिंहासन है, जिस पर गर्मी के उत्सव के समय भगवान की चल मूर्ति बैठाई जाती है.। उस मंडप के उत्तर एक छोटा मंडप और कोटितीर्थ नामक एक उत्तम सरोवर है, जिसके चारों बगलों में नीचे तक पत्थर की सीढ़ियां और मध्य में एक छोटा मंडप बना हुआ है। यात्रीगण सरोवर में स्नान करते हैं। पश्चिम वाले गोपुर के सामने पूर्व वरदराज के निज मन्दिर के घेरे का गोपुर; पूर्व के गोपुर के भीतर उसके पश्चिमोत्तर एक बडा सरोवर है और बड़े घेरे के भीतर जगह जगह मकान, मण्डवम् तथा तार खजूर के वृक्ष हैं।

(२) भीतर का दूसरा घेरा पूर्व से पश्चिमको लगभग ३७५ फीट लंबा और उत्तरसे दक्षिणको २५० फीट चौड़ा है। उसके पश्चिमकी दीवार में एक छोटा गोपुर है, जिसके सामने बाहर एक बुर्ज (जिसपर उत्सवों के समय सैंकडो दीप जलाये जाते हैं) और सुनहरा गरुड़ स्तंभ खड़ा है। उस घेरे के भीतर चारो ओर मकान; दक्षिण पश्चिम के कोने के पास लक्ष्मीजी का मन्दिर और पश्चिमोत्तर के कोने के पास भगवान के बाहनों के मकान हैं, जिनमें हनुमान, हस्ती, घोड़ा, गरुड़, नन्दी, मयूर, व्याघ्र, सिंह, और शरभ की प्रतिमाएं रक्खी हुई हैं। इनमे से कई वाहनों पर चांदी तथा सोने का मुलम्मा है। शरभ कौन जानवर है, यह बात बहुतलोग नहीं जानते हैं। लिंग-पुराण के ९८ वें अध्याय में लिखा है कि शरभ सिंहों का स्वामी है, और ९६ वां अध्याय में है कि वीरभद्र ने शरभ का रूप धारण किया उसका आधा शरीर मृग का और आधा पक्षी का और बडे बडे पंख, तीखी चोंच और ४ पाद थे; वैशाख मास के आरंभ से एकादशी तक भगवान की प्रतिनिधिरूप उत्सवमूर्ति प्रति दिन एक एक वाहन के सिंहासन पर बैठ कर इधर उधर निकलती है। उस समय विष्णुकांची में यात्रियों की बडी भीड़ होती है।

(३) तीसरे घेरे के पश्चिम की दीवार में फाटक है, जिसके सामने पूर्व वरद-राज के निज मन्दिर के चबूतरे में लगा हुआ योगनृसिंह का छोटा मन्दिर है। उस घेरे के चारों बगलों में मकान, दक्षिणपूर्व के कोने के पास भगवान का पाकशाला, पूर्वोत्तर एक कूप, उत्तर तरफ असबाब रखने का गृह और मध्य में हस्तगिरि नामक ऊंचे चबूतरे पर वरदराज का मन्दिर है।

एकसौ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा हस्तगिरि नामक चबूतरा है, जिस पर चढ़ने के लिये दक्षिण-पूर्व के कोने के पास २४ सीढ़ियां बनी हुई हैं। चबूतरे के ऊपर उसके पूर्व के किनारे के पास वरदराज का विमान अर्थात् निज मन्दिर पूर्व मुख से खड़ा है। चारोतरफ मन्दिर के आगे जगमोहन और चारो ओर छत के नीचे परिक्रमा की जगह है। परिक्रमा में विमान के पूर्वोत्तर पत्थर का एक सिंहासन है।

विमान के तीन ड्योढ़ी के भीतर ४ हाथ से अधिक ऊंची वरदराज भगवान की श्यामल चतुर्भुज मूर्ति खड़ी है। भगवान के गले में बहुमूल्य अनेक सुवर्ण भूषण और चमकीले शालग्रामों की माला; सिर पर सुनहरे मुकुट और अब-मे वेश कीमती भूषण वस्त्र लगे हैं। उनके समीप की उत्सव मूर्तियां भी बहुमूल्य भूषण वस्त्रों से सज्जित हैं। नियत समय पर दूसरी ड्योढ़ी से यात्रियों को दर्शन मिलता है। वहां का पुजारी एक रुपया पाने पर यात्री की तरफ से भगवान को पुष्प और तुलसीपत्र चढ़ाकर उनकी आरती करदेता है। जो नहीं रुपया देता है वह दर्शन करके चला जाता है।

विष्णुकांची के मन्दिर के खजाने में वहां के देवताओं के बहुमूल्य भूषण रक्खे हुए हैं। उनमें सोने के ८ कुंडा और किरीटन में बहुतेरे पन्ना, हीरा और लाल जड़े हुए हैं, जिनमें से प्रत्येक का दाम ५००० से १०००० रुपये तक लगा है। लक्ष्मी के बाल बांधने के लिये डेढ़ इञ्च चौड़ा रत्न जड़ा हुआ नागमेन नामक एक सिरबंद अर्थात् पट्टी; लाल मोती और पन्ने से बने हुए अनेक प्रकार के हार, और बहुत सी गले में पहनने की सोने की सिकरी हैं। प्रत्येक का दाम ८०० से १००० रुपये तक कहा जाता है। एक आचारी का दिया हुआ ७००० रुपये का मकर कंठा है। रत्न जड़े हुए सोने के पायताबे और एक मकर कंठा अर्थात् गले का भूषण ८६०० रुपये का है। लोग कहते हैं कि इसको लार्ड क्लाइव ने दिया था। इनके अतिरिक्त और भी कई बहुमूल्य भूषण हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(कर्णपर्व, १२ वां अध्याय) कांची के क्षत्रियगण कुरुक्षेत्र के संग्राम में पांडवो की ओर होकर कौरवों की सेना से युद्ध करने लगे।

वामनपुराण—(१२ वां अध्याय) नगरों में श्रेष्ठ कांचीनगर और पुरियों में श्रेष्ठ द्वारिकापुरी है।

देवीभागवत—(सातवां स्कंध, ३८ वां अध्याय) कांचीपुर में भीमादेवी और विमलादेवी का स्थान है।

श्रीमद्भागवत—(दशमस्कंध, ७९ वां अध्याय) बलदेवजी श्रीशैल और वेंकटेश पर्वत का दर्शन करके कांचीपुरी में गए।

गरुड़पुराण—(पूर्वार्द्ध, ८१ वां अध्याय) कांचीपुरी एक उत्तम स्थान है। (प्रेतकल्प २७ वां अध्याय) अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवंतिका और द्वारिका ये ७ पुरियां मोक्ष देने वाली हैं।

पद्मपुराण—(स्वर्गखंड, ५७ वां अध्याय) विराटपुरुष के सात धातु से सातो पुरियां हैं। (सृष्टिखंड, १४ वां अध्याय) महादेवजी सब प्रदेशों में पर्यटन करते हुए कांचीपुरी में गए। (पातालखंड, १७ वें अध्याय से २२ वें अध्याय तक) लोक में प्रसिद्ध कांची नामक पुरी है। उसमें रत्नग्रीव नामक राजा राज्य करता था। वह अपने पुत्र को राज्य देकर पुरुषोत्तमजी के दर्शन को चला और गंगासागर संगम के निकट नीलपर्वत पर पुरुषोत्तमजी का दर्शन करके विमान में बैठ वैकुण्ठ को चला गया।

शिवभक्तविलास—(दूसरा अध्याय) दक्षिण देश में ब्रह्मा, विष्णु और मुनियों को सिद्धि देनें वाली कांची नामक नगरी है, जहां जगत् के उत्पन्न करने वाली कामाक्षी देवी विराजती हैं। वहां एकाम्र वृक्ष के नीचे तप करने पर शिव भगवान् का दर्शन होता है और मुनि लोग कामाक्षीनाथ महादेव की आराधना करके शीघ्रही तप की सिद्धि प्राप्त करते हैं। (५० वां अध्याय) हरदत्त ब्राह्मण ने कांचीपुर में जाकर एकाम्र वृक्ष के मूल में स्थित देवी की स्तुति की।

इतिहास—चीन का रहने वाला हायनशांग सन् ६२९ से ६४५ ईस्वी तक हिंदुस्तान में रहा था; उसने लिखा है कि कांचीवरम् बौद्धों के आधीन द्राविड़ की राजधानी एक प्रसिद्ध नगर है। पल्लव वंश के राजाओं के राज्य का प्रसिद्ध कसबा कांचीवरम् हुआ था। उनका प्रधान किला पुरलूर में था।

७ वीं शदी में पल्लव वंश के राजाओं का प्रताप बड़ा चढ़ा था। ८ वीं अथवा ९ वीं शदी में चोला वंश के राजाओं ने पल्लव वंश के राजाओं को निर्बल कर दिया और कांचीपुरी को अपनी राजधानी बनाया। १४ वीं शदी में यह विजयानगर के राजा के अधिकार में हुआ। १६ वीं शदी के आरम्भ में विजयानगर के राजा कृष्णराय ने कांचीवरम् के दो बड़े मन्दिरों को, जो द्राविड़ के सबसे बड़े मन्दिरों में से हैं, बनवाया और दक्षिणीय भारत के बड़े मन्दिरों में से अनेक को सुधरवाया तथा बढ़ाया। ऐसा प्रसिद्ध है कि कांचीवरम्, चिदंबरम् और श्रीरंगम् के बड़े गोपुरों को इन्होंने बनवाया था। पीछे उनके वंश के लोगों ने वहां के छोटे मन्दिरों को बनवाया। सन् १६४४ में विजयानगर के राज्य की घटती के समय कांचीवरम् गोलकुण्डा के मुसलमान बादशाह के अधिकार में था। पीछे एक समय यह आरकाट राज्य के आधीन हुआ था। सन् १७५१ में इस्टइण्डियन कंपनी के गवर्नर लार्ड क्लाइव ने आरकाट से लौटती समय फरासीसियों से कांचीवरम् को छीन लिया।

जिंजी का किला।

चेंगलपट्ट जंक्शन से कई मील दक्षिण पनार नदी पर रेलवे पुल और ४१ मील दक्षिण पश्चिम टिंडीवरम् का रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से १८ मील पश्चिम मदरास हाते के दक्षिणी आरकाट जिले में जिंजी का प्रसिद्ध पहाड़ी किला है।

किले में मजबूती के साथ किलाबन्दी कीहुई ३ पहाड़ियां हैं, जिनमें सबसे अधिक ऊंची और प्रसिद्ध राजगिरि नामक पहाड़ी है। यह आस पास की भूमि से पांच छः सौ फीट ऊंची होगी। किले के भीतर उत्तम इमारतों के कई एक खंडहर हैं, जिनमें से कल्यान महल में मोरब्बा आंगन के बगलों में सुन्दर कमरे बने हुए हैं। यह गवर्नर की स्त्रियों के रहने के लिये बना था। मध्य में आठ मंजिला टावर है। राजगिरि के ऊपर एक बड़ी तोप पड़ी है, जिसकी नकाशी में ७५६० सूरतें बनी हुई हैं।

इतिहास—पन्द्रहवीं शदी के अंत में, जब विजयानगर का प्रताप चमका था, तब यह किला उसके अधिकार में था। सन् १५६४ में डेकान के

मुसलमान बादशाहों ने विजयानगर के राज्य को परास्त करके किले को ले लिया।

सन् १६७७ में यह किला शिवाजी के हाथ में आया और २१ वर्ष तक मरहटों के अधिकार में रहा। सन् १६९८ में ओरंगजेब ने किले को ले लिया। सन् १७५० में फरासीसियों ने रात में अकस्मात् आक्रमण करके किले को ले लिया और ११ वर्ष तक यह उनके आधीन रहा। अंत में किला अंगरेजी गवर्नमेन्ट के अधिकार में होगया।

विलीपुरम् जंक्शन।

टिंडीवरम् के स्टेशन से २३ मील दक्षिण पश्चिम विलीपुरम् का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते के दक्षिणी आरकाट जिले में विलीपुरम् एक कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय ८२४१ मनुष्य थे। विली-पुरम् जंक्शन से रेलवे लाइन ४ तरफ गई हैं;—

(१) विलीपुरम् जंक्शन से उत्तर "साउथ इंडियन रेलवे," जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २ पाई है,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

४२ तिरुवन्नामलई।

९३ वेलूर।

९९ कटपदी जंक्शन।

१३८ पाला जंक्शन।

१५७ चन्द्रगिरि।

१६४ तिरुपदी।

१७० रेणुगुंटा जंक्शन।

(२) पूर्व सौथ इन्डियन रेलवे पर १० मील वंदुमगलम् और २४ मील पांडीचरी।

(३) विलीपुरम् से दक्षिण की ओर सौथ इन्डियन रेलवे,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१७ पनरूटी।

२७ कडलूर नया।

२९ कडलूर पुराना।

४६ पोर्टो नोवे।

५३ चिदंबरम्।

६३ सियाली।

६८ स्वर्णकोइल।

७६ मायावरम् जंक्शन।

९५ कुंभकोणम्।

१२० तंजोर जंक्शन।

मायावरम् जंक्शन से दक्षिण २३ मील तिरवा-

लूर जंक्शन और ८३मील मुट्टूपेट्टे। तिरुवालूर से पूर्व १८ मील नागपट्टनम् और पश्चिम ३८ मील तंजोर जंक्शन और ६६ मील तिरुचनापल्ली जंक्शन।

(४) विलीपुरम् जंक्शन से पूर्वोत्तर सौथ इन्डियन रेल्वे,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

२३ टिंडीवरम्।

६४ चेंगलपट्ट जंक्शन।

९३ सैदापेट।

९८ मद्रास शहर।

चेंगलपट्ट जंक्शन से पश्चिमोत्तर २२ मील कांची और ४० मील आरकोनम् जंक्शन है।

पांडीचरी।

विलीपुरम् जंक्शन से २४ मील पूर्व पांडीचरी का रेलवे स्टेशन है। फरासीसियों के हिन्दुस्तान के राज्य की राजधानी पांडीचरी एक शहर है, जिसको पट्टुचारी भी कहते हैं।

गोरा की वस्ती, जिसमें अच्छी अच्छी इमारतें हैं, समुद्र के पास है। नहर की एक तरफ गोरा वस्ती और दूसरी तरफ देशी बस्ती है। उत्तर बगल के पास समुद्र से ३०० गज से कम फासिले पर गवर्नमेंट हाउस एक खूबसूरत इमारत है। पांडीचरी में एक लाइटहाउस है, जिसकी रोशनी समुद्र से ८९ फीट की ऊंचाई पर होती है। हाईकोर्ट एक खूबसूरत इमारत है। अस्पताल के उत्तर मीशनरीयो का चर्च; फिर उसके उत्तर ४५० विद्यार्थिया का स्कूल है। कैदखाने में साधारण प्रकार से ३३० कैदी रहते हैं। उसके सामने घड़ी का टावर है। पबलिक बाग भी देखने लायक है। इनके अलावे पांडीचरी में नया बाजार, बारक,टाउन हाल, एक कालिज,एक लाइब्रेरी और २ देव मन्दिर हैं। जहाजो से उतरने के स्थान के पास एसप्लानेड में फरासीसियों के गवर्नर डूप्ले की सुन्दर प्रतिमा खड़ी है।

फरासीसियों का राज्य—फरासीसियो के हिन्दुस्तान के राज्य का क्षेत्रफल १७८ वर्गमील है। जिसमें सन १८९१ में २८४५६८ मनुष्य थे। पांडीचरी के हाकिम के अधीन पांडीचरी के सिवाय मद्रास हाते के

तंजोर जिले में ट्रंकूदर के दक्षिण कारीकाल; गोदावरी जिले में अनाम और मलेवार जिले में माही और बंगाल हाते के हुगली जिले में चन्दरनगर है।

खास पांडीचरी राज्य का क्षेत्रफल ११५ वर्गमील है, जिसमें ९३बड़े और १४१ छोटे गांव बसे हुए हैं, जिनमें सन् १८८२ में १४१००० मनुष्य थे। पांडीचरी राज्य के बगलों में दक्षिणी आरकाट जिले का कड़ालूर तालुक है। पांडीचरी का गवर्नर १६००) रुपये, एटरनी जनरल २००) रुपये और ४ सिनियर जज चार चार सौ रुपये मासिक तनखाह पाते हैं। सन् १८८३ में फरासीसी सरकार को पांडीचरी राज्य से लगभग ५७५००० रुपया मालगुजारी मिली थी।

इतिहास—सन् १६७२ ई० में फरांसीसियों ने हिन्दुस्तान में अपने आने के ७१ वर्ष पीछे विजयानगर के राजा से पांडीचरी एक छोटा गांव खरीदा। सन् १६७४ में कसबा कायम हुआ। सन् १६९३ में हालेंड वालों ने पांडीचरी को छीन लिया था; किन्तु सन् १६९७ में एक सुलह नामे के मोताबिक तरकी हुई, किला बन्दियों के साथ उसने फरासीसियों को वापस दिया। सन् १७४८ में अंगरेजी अफसर ने ६००० फौज के साथ इस पर महासरा किया; लेकिन ४१ दिनों के पीछे १०६५ यूरोपियनों के मारे जाने पर उसने अपना घेरा उठा लिया।

सन् १७६० की जुलाई के आरंभ में अंगरेजी अफसर कर्नल कूट ने२००० यूरोपियन और ६००० देशी सेनाओं के साथ पांडीचरी का महासरा किया और ता० ९ सितम्बर को अंगरेजी मदद पहुंचने पर सरहदी झाडी और किले बन्दी के ४ हिस्सों में से २ को लेलिया। ता० २७ नवम्बर को फरांसीसियो का अफसर मिष्टर लैली ने रसद और गल्ले की कमती देख कर शहर के निवासियों को, जो १४००थे; निकाल दिया। इन्होंने अंगरेजों द्वारा खदेरे जाने पर फिर किले में प्रवेश करने की कोशिश की, किन्तु फरासीसियों ने बन्दूक की गोली से मारकर उनको जाने नहीं दिया। वे लोग ८ दिनों तक दोनों फौजों की लाइनों के बीच में भटकते फिरे, अन्त में अगरेजों ने उनको बाहर जाने का हुक्म दे दिया। सिलोन और मदरास से अंगरेजो के लड़ाई के

अनेक जहाज आ जाने पर फरांसीसियों को छुटकारा होने की आशा जाती रही । तारीख १६ दिसंबर को, जब उनके पास केवल २ दिन के भोजन की सामग्री थी, फरांसीसी लोग परास्त हुए । सन् १७६३ में अंगरजों ने फरांसीसियों को पांडीचरी छोड़ दी।

सन् १७७८ के ९ अगस्त को अंगरेजी अफसर सर हेक्टर मनरो ने १०५०० फौज के साथ, जिनमें १५०० यूरोपियन थे, पांडीचरी पर फिर महासरा किया । सख्त रुकावट के बाद अकतूबर के बीच में पांडीचरी के फरांसीसियों की हार हुई । सन् १७८३ में वह फिर फरासीसियों को दी गई। सन् १७९३ के २३ अगस्त को अंगरेजों ने पांडीचरी को लेलिया; किन्तु सन् १८०२ के सुलहनामे से वह असली मालिक को फिर लौटा दी गई। सन् १८०३ में अंगरेजी सरकार ने फरासीसियों से पांडीचरी को छीन कर अपने आरकाट के राज्य में मिला लिया; उससे वार्षिक ४९०००० रुपया वसूल होने लगा। पीछे एक संधि होने पर अंगरेजों ने सन् १८१७ में फरांसीसियों क पांडीचरी लौटा दी, तब से वह उनके अधिकार में चली आती है।

कड़ालूर ।

विलीपुरम् जंक्शन से दक्षिण-पूर्व २७ मील नया कड़ालूर और २९ मील पुराना कडालूर का रेलवे स्टेशन है । मदरास हाते के दक्षिणी आरकाट जिले में पांडीचरी कसबे से १६ मील दक्षिण समुद्र के किनारे पर कडालूर तालुक में दक्षिणी आरकाट जिले का सदर स्थान कड़ालूर एक कसबा है, जिसको द्रविड़ियन लोग कडलूर कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कडालूर में ४७३५५ मनुष्य थे, अर्थात् २३१९७ पुरुष और २४१५८ स्त्रियां । इनमें ४३३८९ हिन्दू, २१०४ मुसलमान, १७८५ क्रस्तान और ७७ जैन थे । मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ८० वां और मदरास हाते में १० वां शहर है।

कडालूर में जिले की सदर कचहरियां, जेलखाना इत्यादि सरकारी इमारतें हैं । कड़ालूर का पुराना कसबा जिसमें देशी लोग बसते हैं, यूरोपियन

लोगों की बस्ती अर्थात् नया कड़ालूर से २ मील दक्षिण नीची भूमि पर है, जिसमें बहुत से सुन्दर मकान बने हुए हैं । उसमें जेलखाना, गिरजा, रेलवे का कारखाना बारक (अब खाली पड़ा है,) तथा समुद्र संबंधी बहुत से तिजारती आफिस हैं । यूरोपियन लोगों की बस्ती ऊंची जमीन पर, बसी है । वहां बड़े मैदान में जगह जगह सरकारी आफिस बने हुए हैं और सड़कों के बगलों में वृक्ष लगे हैं । कड़ालूर के पास एक नदी के बाएं किनारे पर 'सेंट डेविड' का किला उजाड़ पड़ा है । किले की खाई प्रायः भर गई है; बहुतेरे स्थानों में किले की दीवार गिर गई है । नया कड़ालूर के स्टेशन से उतरकर किले को देखना चाहिए । कड़ालूर में तेल, चीनी और नील तैयार होते हैं; इनकी वहां बड़ी सौदागरी होती है । नदी के मुहाने के पास मट्टी पड़ जाने के कारण केवल देशी नाव कसबे के पास तक आती है ।

दक्षिणी आरकाट जिला—इसके उत्तर चेंगलपट्ट और "उत्तर आरकाट" जिला, पूर्व बंगाल की खाड़ी; दक्षिण तिरुचनापल्ली और तंजोर जिला और पश्चिम सेलम जिला है । दक्षिणी आरकाट जिले की सीमा के भीतर फरांसीसियों के पांडीचरी का राज्य है । जिले में नाव चलने लायक ३ छोटी नदियां हैं । जिले के जंगलों में कुछ कुछ हाथी, बाघ और भालू तथा बहुत से तेंदुए, सूअर इत्यादि बनैले जंतु हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय दक्षिणी आरकाट जिले के ४८७३ वर्गमील क्षेत्रफल में १८१४७३८ मनुष्य थे; अर्थात् १७२१६१४ हिंदू, ४८२८९ मुसलमान; ३९५७१ कृस्तान, ५२६१ जैन और बौद्ध और ३ अन्य । हिन्दुओं में ५९२३८० वनिया (जाति विशेष मजदूरी पेशे वाले), ४२७७४५ परिया (परयन्), २४५०४४ वल्लाल (खेतिहर), ९९८०९ इडैयन, ४४४१९ कैकलर (कपड़ा बिनने वाले), ४१६६९ कंमाइन (कारीगर), ३४५५५ ब्राह्मण, ३२७१४ चेटी (सौदागर), २०००५ वनान (धोबी), १९२१७ अम्बाटन (नाई), १९१७९ सेंबड्वन (मछुहा), १५०५९ सानान (मदक), १३११८ सतानी, ११३४२ कुसवन (कुंभार), १०४३४ कणकान (लिखने वाले), ३५४२ क्षत्रिय और बाकी में अन्य जातियों के लोग थे । हिन्दुओं में सैकड़े

पीछे ५३ शैव, ४५ वैष्णव और २ अन्य मत के लोग थे। दक्षिणी आरकाट जिले के ब्राह्मण जमीदारी और सरकारी नोकरी करते हैं। चेटी जाति के लोगों में बहुत धनी हैं, कोरवा जाति के लोग, जो चोरी के पेशा करते हैं, सूअरों के झुंड के साथ घूमा फिरा करते हैं और दौरी बनाते हैं। पहाड़ी देशों में मलयाली, इरुला और विलियर जाति बसते हैं। इस जिले में तामिल भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय दक्षिणी आरकाट जिले के कसबे कड़ालूर में ४७३५५, चिदंबरम् में १८६४०, पोर्टोनोवे में १४०६१ और तिरुवन्नामलई में १२१५५ मनुष्य थे। इनके अतिरिक्त पनरुटी, विलीपुरम्, वृद्धाचलम् आदि कई कसबे हैं।

पुराना कड़ालूर के रेलवे स्टेशन से १७ मील दक्षिण पोर्टोनोवे का रेलवे स्टेशन है। समुद्र के किनारे पर एक नदी के मुहाने के पास पोर्टोनोवे एक बंदरगाह का कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय १४०६१ मनुष्य थे। कसबे में चटाई बहुत बनती हैं और बंदरगाह द्वारा सौदागरी होती है।

तिरुवन्नामलई कसबे के पास तिरुवन्नामलई नामक पहाड़ी है, जिसको अरुणाचलम् भी कहते हैं। उसी पहाड़ी के नाम से कसबे का नाम तिरुवन्नामलई पड़ा है। उसी पहाड़ी के ऊपर द्रविड़ देश के ५ प्रसिद्ध शिव लिंगों में से अग्निलिंग का मंदिर है।

इतिहास—सन् १६८३ में इस्ट इण्डियन कंपनी ने जींजी के खां से इजाजत लेकर कड़ालूर में अपनी कोठी बनाई और उसके दूसरे साल बंदरगाह और किला बनाने के लिये भूमि का ठीका लिया। सन् १६८७ में कंपनी ने महाराष्ट्रों से "फोर्टसेंट डेविड" की भूमि और उसके पड़ोस की बस्तियों को खरीदा। कोठी बनाने के १० वर्ष के भीतर, जब सौदागरी की बड़ी तरक्की हुई कंपनी ने अपनी रक्षा के लिये कड़ालूर में सेंटडेविड नामक किला बनवाया और अपनी कोठियों को फैलाया। मदरास शहर के निर्बल होने पर हाते का सदर स्थान कड़ालूर बना था। सन् १७५२ में फिर मदरास शहर सदर स्थान हुआ। सन् १७५८ में फरांसीसियों ने अंगरेजों से
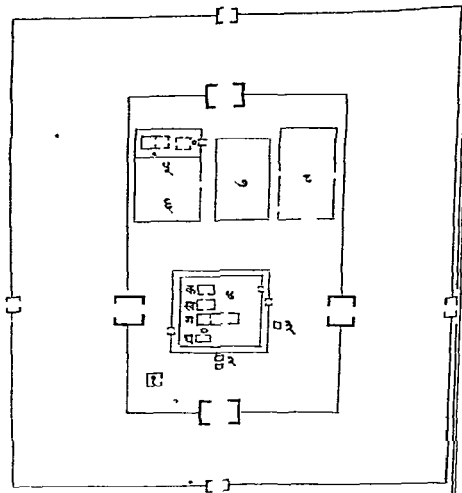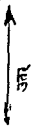
नटेश के मंदिर का नकशा
उत्तर
५
६
७
८
क
ख
ग
घ
४
३
२
१
फीट का स्केल
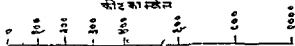
कड़ालूर को छीन कर वहां के किले का विनाश करदिया । सन् १७६० में कड़ालूर फिर अंगरेजों के अधिकार में हुआ । सन् १७८२ में टीपू सुलतान और फरासीसियों ने कड़ालूर पर अपना अधिकार करलिया । और आक्रमणों के रोकने के लिये किले को दुरस्त करवाया । सन् १७८९ में अंगरेजों ने एक लड़ाई में फरासीसियों को परास्त करके कड़ालूर और किले को छीन लिया । सन् १८०१ में जब करनाटक अंगरेजों के अधिकार में होगया; तब दक्षिणी आरकाट एक जिला बनाया गया ।

चिदंबरम् ।

पुराने कड़ालूर के रेलवे स्टेशन से २४ मील, विलीपुरम् जंक्शन से ५३ मील और मदरास शहर से १५१ मील दक्षिण चिदंबरम् का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते के दक्षिणी आरकाट जिले में (११ अंश, २४ कला, ९ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, ४४ कला, ७ विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र के पूर्वी किनारे से ७ मील पश्चिम चिदंबरम् तालुक का सदर मुकाम तथा एक पवित्र स्थान चिदंबरम् है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय चिदंबरम् कसबे में १८६४० मनुष्य थे; अर्थात् ९०७९ पुरुष और ८५६१ स्त्रियां । इनमें १७४२२ हिन्दू, ११०२ मुसलमान, १०७ क्रस्तान और ९ जैन थे ।

रेलवे स्टेशन से १ मील दूर चिदंबरम् कसबा है । कसबे में सरकारी कचहरियां, पोष्टआफिस, मोदियों की दुकाने और अनेक धर्मशाले हैं । रेलवे की ओर एक छोटी नदी बहती है । निवासियों में से चौथाई लोग से अधिक कपड़े और रेशमी वस्त्र बीनने का काम करते हैं । दिसंबर में एक बड़ा मेला होता है;जिसमें ५००००से६००००तक यात्री तथा सौदागर आते हैं।

नटेश शिव का मन्दिर—चिदंबरम् कसबे के उत्तर ९९ बीघे भूमि पर नटेश शिव का मन्दिर है । ३० फीट ऊंची २ दीवारों के घेरे के भीतर नटेश के निज मन्दिर का घेरा, पार्वती का मन्दिर, शिव गंगा नामक सरोवर और अनेक मंडप तथा मन्दिर हैं । बाहर की दीवार के भीतर की

भूमि की लंबाई उत्तर से दक्षिण तक करीब १८०० फीट और चौड़ाई पूर्व से पश्चिम तक १५०० फीट है। बाहर की दीवार में चारो दिशाओं में एक एक छोटे गोपुर हैं।

भीतर वाली दीवार के अन्तर की भूमि लगभग १२०० फीट लंबी और ७२८ फीट चौड़ी उस घेरे के चारो बगलों पर करीब २१० फीट लंबे ७८ फीट चौड़े और १२२ फीट ऊंचे एक एक नव मंजिले गोपुर हैं। चारो गोपुर प्रतिमाओं से पूर्ण और चित्रों से चित्रित हैं। उनके नीचे ४० फीट ऊंचे ५ फीट मोटे ताम्बे के पत्तर जड़े हुए पत्थर के चौकठ लगे हैं। दीवार के भीतर चारो तरफ दो मंजिले मकान और दालान और मध्य में नटेश के निज मन्दिर का घेरा और शिव गंगा सरोवर तथा बहुत से मन्दिर मण्डप हैं, जिनका वृत्तान्त नीचे लिखा जाता है; नीचे के नंबर के अङ्कों को नकशे से मिला कर देखिए। उस घेरे के भीतर जूता पहन कर कोई नहीं जाता है।

(१) दक्षिण के बड़े गोपुर से प्रवेश करना होता है। बांए तरफ दक्षिण-पश्चिम के कोने के पास एक मन्दिर में गणेशजी की मूर्ति है।

(२) गोपुर के सामने उत्तर एक छोटे मन्दिर में बड़ा नन्दी है, जिसके पास एक अन्य देवता का स्थान है।

(३) कोई वाहन है।

(४) शिव का खास मन्दिर भी दो दीवारों से घेरा हुआ है। उस घेरे के बाहर की दीवार के भीतर करीब ३३० फीट लम्बी और इतनीही चौड़ी भूमि है। घेरे के चारो ओर की दीवार के ऊपर लगभग १०० नन्दी बैल और दीवार के भीतर के चारो बगलों के ओसारों पर भी बहुत से नन्दी हैं। घेरे के पूर्व और पश्चिम एक एक दरवाजा है। उस घेरे के अन्दर की दीवार के भीतर चारो बगलों पर ओसारे और कई एक मन्दिर और मण्डप, पूर्व ओर एक द्वार; दक्षिण-पश्चिम कोने में पार्वती का एक मन्दिर, दक्षिण बगल के मध्य में नाटयेश्वर की एक मूर्ति और मध्य भाग में नटेश का प्रधान मन्दिर, मण्डप और अन्य अनेक मन्दिर हैं।

(क) नटेश शिव के निज-मन्दिर की दीवार पर चान्दी का और गुम्बज

पर सोना का मुलम्मा है । दो देवढ़ी के भीतर नृत्य करते हुए नटेश शिव खड़े हैं। शिव के पास में कई देव मूर्तियां हैं । वहां के देवतों के शृङ्गार मनोहर हैं । मन्दिर का पुजारी यात्रियों से दक्षिणा लेकर उनको पहिली देवढ़ी के भीतर लेजाकर दर्शन कराता है । जो दक्षिणा नहीं देता, वह मन्दिर के बाहर से दर्शन करता है।

(ख) सुंदर मण्डप के साथ एक मन्दिर है, जिसका गुम्बज बिना मुलम्मे के ताम्बे के पत्तरों से छाया हुआ है।

(ग) मन्दिर में तीन देवढ़ी के भीतर सोनहुले भूषण और कौस्तुभ मणिमाल पहने हुए श्यामल स्वरूप मनुष्य से अधिक लंबे गोविन्दराज भगवान भुजंग पर शयन किए हुये हैं। इनके पायताबे, दस्ताने और मुकुट सुवर्ण के हैं। भगवान के पास लक्ष्मी आदि कई देव मूर्तियां सुशोभित हैं । मन्दिर के आगे दूर तक मंडप है।

(घ) एक मन्दिर है, जिसके आगे एक बड़ा स्तम्भ खड़ा है। स्तम्भ पर नीचे से ऊपर तक सोना का मुलम्मा किया हुआ है।

(५) पार्वती का मन्दिर शिवगंगा सरोवर के पश्चिम है । घेरे के पश्चिम हिस्से में तीन देवढ़ी के भीतर पार्वतीजी खड़ी हैं । इनके पायताबे: दस्ताने और मुकुट सुनहरे हैं । मन्दिर का जगमोहन विचित्र है, जिसके आगे पूर्व के दरवाजे तक उत्तम मंडप बना हुआ है। मंडप और दरवाजे के बीच में सोने का मुलम्मा किया हुआ एक बड़ा स्तंभ है। आंगन के चारो बगलों पर दीवारों के पास दो मंजिले दालान हैं।

(६) पार्वती के मन्दिर से लगा हुआ उसके दक्षिण सुब्रह्मण्य(कार्तिकेय)का मन्दिर है, जिसके घेरे के भीतर ३०५ फीट लम्बी और २५० फीट चौड़ी भूमि है। आंगन के आगे ४ स्तंभों का पेसगाह है, जिसके बाहर एक मयूर और दो हाथी की प्रतिमा बनी हुई हैं।

(७) पार्वती के मन्दिर के पूर्व और उत्तर के बड़े गोपुर के सामने दक्षिण ३१५ फीट लंबा और १७५ फीट चौड़ा शिवगंगा तथा हेमपुष्करणी नामक पक्का तालाब है, जिसके चारो तरफ पानी तक सीढियां हैं और चारो बगलों पर दालान बने हुए हैं।

(८) तालाब के पूर्व ३४० फीट लम्बा और १९० फीट चौड़ा पुराना मंडप है, जिसको सहस्रस्तम्भमंडपम् कहते हैं; लेकिन इसमें ९८४ पायों से अधिक नहीं हैं। मंडप के चारो बगलों में दीवार है; भीतर अंधियारे में चमगादुर बहुत रहते हैं।

ऊपर कहे हुए आठ नम्बरों के अतिरिक्त उस घेरे में जगह जगह अनेक पुराने मन्दिर और मंडप हैं, जिनमें से कई मरम्मत होरहे हैं! वहां ४ कूप हैं, जिनमें से एक अपूर्व बनावट का है। बड़े बड़े पत्थरों के बीच में से नाक के समान गोलाकार पत्थर निकाल करके उन्ही पत्थरों के नीचे से ऊपर तक एक के ऊपर दूसरा ऐसाही साज कर कूप बनाया गया है। उस मंदिर में ४० फीट ऊंचे बहुतेरे पत्थर लगे हैं और हजारहां स्तंभ, जिनमें जोड़ नहीं है, २६ फीट से अधिक ऊंचे है। वहाँ बहुत से क्षत्रम् हैं;उनमें जो सबसे बड़ा है, उसमें आठ नव सौ आदमी रह सकते है।

मन्दिर के अधिकारी दिक्षतर ब्राह्मण करीब २५० हैं,जिनमें से २० दिन तक २० आदमी मन्दिर में काम करते हैं। मन्दिर के काम से छुट्टी रहने पर वे लोग दक्षिण हिन्दुस्तान में घूमकर याचना करते हैं। विवाह होजाने पर वे लोग मन्दिर की पूजा के द्रव्य पाने और मन्दिर के प्रबंध करने के पूरे हिस्से दार होजाते हैं;इस कारण से ५ वर्ष की अवस्था होने के शीघ्रही बाद वे लोग अपने लड़कों का ब्याह कर डालते हैं। उनकी पारी के समय जो द्रव्य या अन्न पूजा चढ़ता है,उसको वे लोग लेलेते हैं;किन्तु किसी मेले या पर्व के समय जब पूजा बहुत अधिक चढ़ती है,तब सब हिस्से दार बराबर भाग बांट लेते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदपुराण—(सेतुबंध खंड, ५२ वां अध्याय) चिदंबर, कुंभकोण, वेदारण्य, नैमिष, श्रीशैल, श्रीरंग, शेषाद्रि, वेंकटाद्रि, कांचीपुर, ब्रह्मपुर इत्यादि क्षेत्रों में एक वर्ष निवास करने से जो फल लाभ होता है वह सेतुबंध के धनुष्कोटि में माघ भर बसने से मिल जाता है।

शिवभक्तविलास—(१४ वां अध्याय), चिदंबर नामक उत्तम क्षेत्र के दर्शन करने से मुक्ति लाभ होती है, जहां महर्षि व्याघ्रपाद और पतंजलि स्वर्ण-सभा के मध्य में भगवान शंकर को नृत्य करते हुए देखकर संसार बंधन

से मुक्त होगए। उस नगरी का एक कुम्भार नित्यही शिवगंगा में स्नान करके शिव की कथा सुनता था और शिवभक्तों को नित्य नवीन भाड तथा भोजन की सामग्री देकर उनकी सेवा करता था। उसकी पतिव्रता स्त्री भी शिवभक्त थी। वह कुम्भार चिदंबर क्षेत्र के नटेश शिव की प्रतिमा में अपने चित्त को अच्छी प्रकार से लगाया। जब उसने नीलकंठ महादेव के कंठनाल में प्रीति किया, तब वहा के लोगों ने उसका नाम नीलकंठ रक्खा। बहुत काल के पश्चात् एक समय संध्याकाल में वर्षा से भींजता हुआ सीत से व्याकुल होकर वह मार्ग में एक वेश्या के गृह में चलागया। वेश्या न उसको सूखा वस्त्र पहनाया और लेप देकर उसका ठंढापन दूर किया। नीलकंठ वर्षा छूट जाने पर अग राग से भूषित अपने गृह गया। उसने स्त्री के पूछने पर सत्य सत्य सब वृत्तांत कह सुनाया। स्त्री ने नीलकंठ के विषय में सन्देह करके उससे कहा कि आज से तुम मुझको मत छूना। नीलकण्ठ ने प्रतिज्ञा की कि मै अब कभी नहीं तुझको छुउगा। पतिव्रता स्त्री पति को शांत करने लगी, किन्तु उसने अपनी प्रतिज्ञा नहीं छोडी। ऐसा देख नटेश शिव उनको मुक्ति देने की इच्छा से मुनि का वेष धर कर उनके गृह आए। नीलकण्ठ ने मुनि का सत्कार करके उनसे पूछा कि किस कार्य क लिए तुम आये हो। मुनि बोले कि एक दुर्लभ पात्र मै तुम्हारे घर धरोहर रखता हूं, तुम इसको यत्न से रक्खो। ऐसा कह नीलकण्ठ का पात्र देकर वह चले गए। नीलकण्ठ बडे यत्न से पात्र की रक्षा करने लगा। कुछ दिनों के पश्चात् महादेवजी ने उस पात्र को अपनी माया से अतर्द्धान कर दिया और वहां आकर नीलकण्ठ से पात्र मागा। नीलकण्ठ ने जब अपने गृह में पात्र को नहीं पाया, तब मुनि से कहा कि पात्र नही मिलता है, उसके समान दूसरा पात्र तुम लो। मुनि ने कहा कि वैसा पात्र दूसरा नही मिलेगा, तुम ने उसको खोगया है, तुम अपनी स्त्री का हाथ पकड कर शिवगगा म स्नान करके नटेश के निकट शपथ करो कि मैने पात्र नहीं लिया है। नीलकण्ठ न अपनी प्रतिज्ञा पर ध्यान देकर अपनी स्त्री का हाथ पकडना स्वीकार नहीं किया। मुनि ने उसको नटेश क पास लाकर वहाके पुजारियो से सब वृत्तात कह सुनाया। पुजारियो के युक्ति के

अनुसार एक बांस के एक छोर को नीलकण्ठ ने और दूसरे छोर को उसकी स्त्री ने पकड़ कर शपथ करने के लिए शिवगंगा में स्नान किया। दोनों ने गोता मार कर पानी से ऊपर होने पर नंदी पर चढ़े हुए नटेश शिव को देखा। नटेश भगवान् प्रसन्न हो उनको वांछित मुक्ति देकर दोनों के सहित अपने धाम चिदाकाश (चैतन्याकाश) में चले गए।

इतिहास—चिदंबरम् का मन्दिर दक्षिणी भारत में अधिक पुराना है। दक्षिण-भारत और सिलोन के लोग उसका बड़ा मान करते हैं।

ऐसा प्रसिद्ध है कि हिरण्यवर्ण चक्रवर्ती मन्दिर के पास के सरोवर में स्नान करने से कुष्ठ रोग से मुक्त होगया; तब उसने मन्दिर के पहले भाग को अच्छे प्रकार से बनवा दिया। यह नाम काश्मीर के एक राजा का भी था, जिसने सिलोन अर्थात् लंका को जीता था। चन्द आदमियों ने लिखा है कि सन् ईस्वी की पांचवीं शदी में उसी राजा ने चिदंबरम् के मन्दिर को बनवाया था। लोग कहते हैं कि वह उत्तर से अपने साथ में ३००० ब्राह्मणों को लाया, जिसके कुल के ब्राह्मण अब तक मन्दिर के अधिकारी हैं। बहुतेरे लोग कहते हैं कि वीर चोला राजा ने (सन् ९२७—९७७ ईस्वी) नृत्य करते हुए शिव को पार्वती के सहित समुद्र के किनारे पर देखा, जिनके स्मरणार्थ उसने नाटेश्वर शिव का कनक सभा अर्थात् सुनहरा मन्दिर बनवाया। दसवीं और सत्रहवीं शदी के बीच में चोला और चेरा वंश के राजाओं तथा उनके वंश वालों ने चिदंबरम् के मन्दिर को कई बार बढ़ाया। सत्रहवीं शदी के अन्त में अथवा अठारहवीं शदी के आरम्भ में सुब्रह्मण्य का मन्दिर बना।

मायावरम्।

चिदंबरम् के रेलवे स्टेशन से ४ मील दक्षिण कोलरम् नदी पर रेलवे का पुल और १५ मील दक्षिण स्वर्ण कोइल स्टेशन के पास एक मंदिर के चारो ओर ४ बड़े गोपुर देख पड़ते हैं। चिदंबरम् से २३ मील और विलीपुरम् जंक्शन से ७६ मील दक्षिण और मद्रास शहर से १७४ मील दक्षिण कुछ पश्चिम

मायावरम् का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते के तंजोर जिले में रेलवे के स्टेशन से ३ मील दूर कावेरी नदी के किनारे पर मायावरम् एक कसवा तथा यात्रा का स्थान है, जो पूर्व समय में चोल देश के अंतरगत था। कसवे में १ अस्पताल और कई एक स्कूल हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मायावरम् में २३७६५ मनुष्य थे; अर्थात् २२४२७ हिंदू, ८१८ कृस्तान और ५२० मुसलमान।

शिव मन्दिर—मायावरम् में एक प्रसिद्ध शिवमंदिर है। मन्दिर में एक बड़ा और एक छोटा गोपुर है। बड़ा गोपुर १० मंजिला है, जो बाहर के हाते के दक्षिण बगल पर खड़ा है। उसके पश्चिम एक सरोवर है। उत्तर ६ मंजिल का छोटा गोपुर है। यहां कार्तिक में यात्रा का मेला होता है।

रेलवे—मायावरम् जंक्शन से दक्षिण २३ मील तिरुवालूर जंक्शन और ५३ मील मुटूपेटै और तिरुवालूर जंक्शन से पूर्व १५ मील नागपट्टनम् और पश्चिम ३५ मील तंजोर है। मायावरम् से कुम्भकोणम् होकर केवल ४४ मील दक्षिण-पश्चिम तंजोर का रेलवे स्टेशन है।

नागपट्टनम्।

मायावरम् जंक्शन से २३ मील दक्षिण तिरुवालूर में रेलवे का जंक्शन है। मदरास हाते के तंजोर जिले में तिरुवालूर एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय १२९३४ मनुष्य थे। तिरुवालूर से १५ मील (तंजोर शहर से ५० मील) पूर्व नागपट्टनम् का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते के तंजोर जिले में (१० अंश ४५ कला ३७ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश ५३ कला २८ विकला पूर्व देशांतर में) नागपट्टनम् एक कसबा तथा प्रसिद्ध बंदरगाह है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय पास के नागर बंदरगाह के साथ नागपट्टनम् में ५९२२१ मनुष्य थे; अर्थात् २७०४१ पुरुष और ३२१८० स्त्रियां। इनमें ३९०११, हिंदू, १४३४१, मुसलमान, ५८६३, कृस्तान ३, जैन १, बौद्ध

और २ अन्य थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह मदरास हाते के अंगरेजी राज्य मे सातवां और भारतवर्ष में ६२ वां शहर है।

रेलवे स्टेशन के पास कृस्तानों का गिरजा और स्टेशन और बन्दरगाह से २ मील दूर एक धर्मशाला है। स्टेशन से थोड़ी दूर पर रेलवे का बड़ा कल कारखाना है, जिसमें हजारों आदमी काम करते हैं। शहर में कई हिंदू होटल हैं जिनमें ब्राह्मण लोग रसोई बनाकर बेचते हैं। इनके अतिरिक्त नागपट्टनम् में एक कालिज, एक अस्पताल, नमक की सरकारी कोठी, २ देवमंदिर, लाइट हाउस, तथा सदराला, मुनसिफ, एसिस्टंट कलक्टर और तहसीलदार की कचहरियां हैं। बाजार में केला बहुत बिकता है। कसबे से कई मील उत्तर कावेरी नदी है।

बंदरगाह में ब्रह्मा, सिलोन अर्थात् लंका और दूसरे देशों के माल उतरते हैं और बंदरगाह से उन देशों में माल रवाना होते हैं। सन् १८८३—१८८४ मे नागपट्टनम् के बंदरगाह में लगभग ३५ लाख रुपये का माल आया और बंदरगाह मे करीब ८७ लाख रुपये का माल रवाना हुआ।

मन्दिर—शहर के बाहर एक शिव मन्दिर है। खास मन्दिर १८० फीट लम्बा और १२० फीट चौड़ा है, जिसकी छत के ऊपर तीन तरफ शिव के वाहन नंदी बैल पंक्ति से बनाये गये हैं। उनके बीच बीच में एक एक मूर्ति बैठी है। मन्दिर के पूर्वोत्तर पार्वती का मन्दिर और पूर्व ६ मंजिला गोपुर है। नागपट्टनम् में दूसरा मंदिर सुन्दरराज भगवान का है। भगवान पूर्व मुख से स्थित हैं।

रामेश्वर को रास्ता—रामेश्वर के कुछ यात्री आगबोट द्वारा नागपट्टनम् से रामेश्वर की टापू में पाम्बन जाते हैं, या पाम्बन से नागपट्टनम् में आते हैं। महसूल तीन रुपया लगता है। पाम्बन से ७ मील पूर्व रामेश्वर पुरी है। सिलोन अर्थात् लंका के आगबोट सप्ताह में दो बार पाम्बन, नागपट्टनम् आदि बंदरगाहों में होकर मदरास की ओर जाते हैं और मदरास की ओर से नागपट्टनम्, पाम्बन इत्यादि होकर सिलोन के कोलम्बो शहर को जाते हैं।

इतिहास—नागपट्टनम् आरंभ के पोर्चुगाल वालों की आबादियों में से एक है। सन् १६६० में हालेंड वालों ने उस पर अपना अधिकार जमाया। १७८१ में अंगरेजो.ने उस को ले लिया। सन् १७९९ से १८४५ तक तंजोर के कलक्टर नागपट्टनम् में रहते थे।

तेरहवां अध्याय।

(मदरास हाते में) कुंभकोणम्, तंजोर, तिरुचनापल्ली, श्रीरंगम्, जंबुकेश्वर, पुदुकोटा, डिंडीगल और मदुरा।

कुम्भकोणम्।

मायावरम् जंक्शन से १९ मील (मदरास शहर से १९३ मील) दक्षिण कुछ पश्चिम कुम्भकोणम् का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते के तंजोर जिले में (१० अंश ५८ कला, २० विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश २४ कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) ताल्लुक का सदर स्थान और मदरास हाते के पवित्र जगहों में से एक कुम्भकोणम् कसबा है, जिसको कुम्भेकोणम् भी कहते हैं। यह पूर्व काल में चोल देश की राजधानी था।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कुम्भकोणम् में ५४३०७ मनुष्य थे; अर्थात् २६४७१ पुरुष और २७८३६ स्त्रियां। इनमें ५१८७७ हिन्दू, १२९४ मुसलमान, १०६७ कृस्तान. और ६९ जैन थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह मदरास हाते के अंगरेजी राज्य में ९ वां और भारतवर्ष में ७२ वां शहर है।

कुंभकोणम् में एक उत्तम कालिज, मजिष्ट्रर की कचहरी, और कुंभेश्वर शिव का प्रसिद्ध मंदिर है। वहां अच्छी सौदागारी होती है तथा यात्री बहुत आते हैं।

मन्दिर—स्टेशन से करीब १ मील शहर के भीतर मंदिर हैं। विष्णु के मंदिर का ११ खन वाला बड़ा गोपुर लगभग १६० फीट ऊंचा है, जिसके भीतर की सीढ़ियां जगह जगह टूटी हुई और फिसलहट वाली हैं।

• ३३० फीट लंबी और १५ फीट चौड़ी एक मेहराबदार सड़क से जिसके दोनों बगलों पर दुकान हैं, कुम्भेश्वर शिवके मंदिर में जाना होता है। यहां के मंदिर मरम्मत हैं। मंदिरों के राग भोग के खर्च के लिये बड़ी आमदनी है।

मन्दिरों से चौथाई मील दक्षिण-पूर्व महामोहन तालाब है, जिसके किनारों पर जगह जगह १६ मंदिर बने हुए हैं। प्रधान मंदिर तालाब के उत्तर बगल पर है। इस स्थान में १२ वर्ष पर महामाघम् का प्रसिद्ध मेला होता है। उस समय का एक दिन इस सरोवर में गंगाजी आती हैं। इसमें स्नान करने के लिये दूर दूर से बहुत से यात्री आते हैं। इसके अलावे अन्य समयों में भी कुम्भकोणम् में मेले हुआ करते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदपुराण—(सेतुबंध खंड, ५२ वां अध्याय) कुम्भकोण, वेदारण्य, नैमिष, श्रीशैल, श्रीरंगम्, चिदंबरम्, वेंकटाद्री, कांचीपुर आदि क्षेत्रों में एक वर्ष निवास करने से जो फल लाभ होता है वह माघ मास भर धनुष्कोटि में बसने से मिल जाता है। कुंभकोण, सेतुमूल, दंडकारण्य, विरूपाक्ष, वेंकट, प्रयाग, कांची, पद्मनाभ, गोकर्ण,नैमिष अयोध्या, द्वारावती, मथुरा,काशी आदि तीर्थों में मुंडन और उपवास अवश्य करना चाहिए।

शिवभक्तविलास—(५४ वां अध्याय) क्षीरिणी नामक नदी के तट पर ब्राह्मणों से भूषित अरण्य नामक पुर है। उसमें शिवभक्तों की सेवा करने वाला एक शूद्र रहता था। महादेवजी ने उस पर प्रसन्न होकर उसकी परीक्षा के लिये उसका गृह और सब समान अग्नि से जलादिया और दूसरे दिन तपस्वी का वेष धारण कर उससे अन्न और वस्त्र मांगा। शूद्र के पास छाया भी नहीं थी। जब वह अतिथि के सत्कार के विषय में अपनी स्त्री से बातें करने लगा, तब तपस्वी रूपी शिव बोले कि मुझको धूप में खड़ा कराकर तुम स्त्री से बात करते हो, मैं कुम्भकोण में, जहां तुम्हारे समान बहुत भक्त हैं, चला जाता हूं; ऐसा कहकर वह अंतर्द्धान होगए। शूद्र ने समझ लिया कि यह

तपस्वी साक्षात् महादेव हैं। उसने कुम्भकोण में जाकर ७ रात्रि शिव के निकट उपवास किया। तब शिवजी ने स्वप्न में उससे कहा कि तुम इसी स्थान में बसकर हमारे भक्तों का पालन करते रहो। जब शूद्र को शिव भक्तों का पालन करने के लिये किसी उपाय से धन संग्रह नहीं होसका, तब वह कुम्भकोण के जुआड़ियों से जुए में धन जीत कर नित्य शिव भक्तों का पालन करने लगा। अन्तकाल में शिवजी के प्रताप से उसकी मुक्ति होगई।

इतिहास—कुंभकोणम् एक समय चोला राज्य की राजधानी था। वह मदरास हाते के पुराने तथा पवित्र नगरों में से एक है। वहां विद्या का बड़ा प्रचार है। वहां के पंडित प्रसिद्ध हैं।

तंजौर।

कुम्भकोणम् से २९ मील और मदरास से २१८ मील दक्षिण-पश्चिम तंजौर का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते में कावेरी नदी से दक्षिण जिले का सदर स्थान तंजौर एक छोटा शहर है। तंजौर हुनर की दस्तकारीयों के लिये मसहूर है, जिनमें रेशमी, कालीन, भूषन और ताम्बे के बर्तन सामिल हैं।

रेलवे स्टेशन से आधा मील दूर शहर की तरफ सड़क के किनारे पर एक धर्मशाला है, जिससे आगे शहर के पास किले की खाई पर करीब १०० फीट चौड़ा ईंटा का पुल बना हुआ है।

तंजौर में दो किले हैं, जिनकी दीवार के बाहर खाई हैं। बड़ा किला उत्तर, और छोटा किला, जिसमें बड़ा मंदिर है, पश्चिम है। पश्चिमोत्तर के कोने के पास दोनों मिल गये हैं। बड़ा किला बहुत जगह उजड़ गया है। तंजोर में जज, कलक्टर और अन्य हाकिमों की कचहरियां और बहुतेरी सरकारी इमारतें हैं। बड़े किले के भीतर शहर का प्रधान भाग और तंजोर के राजा का महल है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय तंजौर कसबे में ५४३९० मनुष्य थे; अर्थात् २५९४५ पुरुष और २८४४५ स्त्रियां। इनमें ४६४०४ हिंदू, ४३८९

कृस्तान, ३४१० मुसलमान और १८७ जैन थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह मदरास हाते के अंगरेजी राज्य में ८ वां और भारतवर्ष में ७१ वां शहर है।

बड़े किले की पूर्व की दीवार के पास २३ फीट लंबी एक पुरानी तोप पड़ी है, जिसके मुख का व्यास ३½ फीट है। किले के बाहर पूर्व ओर गल्ले और कपड़े का बाजार है।

छोटे किले में बड़े मंदिर से उत्तर शिवगंगा नामक सरोवर है, जिसके पास एक गिरजा बना है, जिसके फाटक के ऊपर सन् १७७७ लिखा है। शिव मंदिर से पूर्व के मैदान में दीवानी कचहरियां हैं।

तंजौर के राजा का महल—रेल के स्टेशन से करीब पौन मील उत्तर बड़े किले के भीतर सड़क के पश्चिम किनारे पर राजा का उत्तम महल है, जिसका पहला हिस्सा करीब सन् १५५० में बना था। कई मकान बनारस की इमारतों के ढांचे के बने हुए हैं। महल के आगे उत्तर तरफ बड़ा चौगान (आंगन) है, जिसके चारो बगलों में मकान बने हैं। वहां कई एक हाथी और पाले हुए बाघ रहते हैं। चौगान के पूर्व और उत्तर एक एक दरवाजा है। उत्तर के दरवाजे के बाहर नित्य बजार लगता है।

चौगान से महल में प्रवेश करने पर सीधा दक्षिण कई ड्योढ़ी के भीतर महाराष्ट्रों का राजदर्बार सून मान मिलता है। वहां आंगन के पूर्व बगल में राजसी सामानों से सजा हुआ दालान है, जिसकी दीवार में महाराष्ट्र कुल भूषण महाराजा शिवाजी और तंजौर के महाराष्ट्र राजाओं की सुन्दर तस्वीर बनी हुई हैं उनके पास उनके नाम लिखे हुए हैं, जो नीचे लिखे जाते हैं;—

नाम राजाओं के	राज्य का सन्	नाम राजाओं के	राज्य का सन्
शिवाजी (पहिला)	०	सुजानबाई……	०
एंकाजी……	१६७६	प्रतापसिंह ……	१७४४
शाहजी……	१६८४	तुलजाजी……	०
सरभोजी (पहिला)……	१७१३	सरभोजी (दूसरा)……	१७९४
तुकाजी……	१७३१	शिवाजी (दूसरा)……	१८३२
बाबासाहब……	०	सैदमांबाई……	०

तंजोर के शिव मंदिर का नकशा
उत्तर
क
ख
ग
घ
ङ
च
१
२
फीट का स्केल
० ५० १०० २०० ३०० ४०० ५००
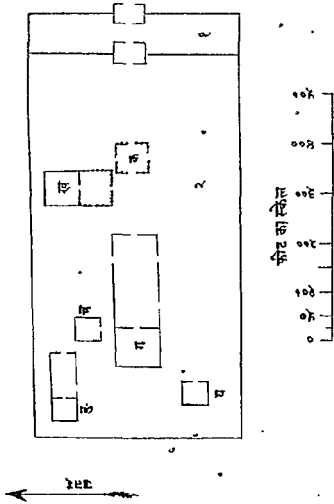
टैनजोर

शिवमन्दिर

दूसरा शिवाजी के दहिने उनके चीफ सेक्रेटरी और प्राए दीवान की तस्वीर हैं।

राजदर्बार से पश्चिम एक दूसरे आंगन के पश्चिम बगल पर पूर्व समय के नायब का दर्बार कमरा है, जिसका फर्श मार्बुल का बना हुआ है। कमरे में दूसरा शरभोजी की सफेद मरमर की प्रतिमा तीन कोने की नोकदार टोपी पहनी हुई खड़ी है। दीवार में लार्ड पिगट की तस्वीर है। आंगन के दक्षिण बगल पर ९० फीट ऊंची आठ मंजिली इमारत है, जिसमें एक समय हथियार रक्खे जाते थे। पूर्व बगल पर सरस्वती भवन नामक पुस्तकालय है, जिसमें १८००० संस्कृत एम.एस.एस. की पुस्तकें हैं। जिनमें से ८००० पुस्तकें तार के पत्रों पर लिखी हुई हैं। इसके समान संस्कृत का पुस्तकालय हिन्दुस्तान में दूसरा नहीं है। यह सोलहवीं शदी के अन्त या सत्रहवीं शदी के आरंभ में नियत हुआ था। आंगन के पश्चिमोत्तर के बगल पर दूर की चीजें देखने के लिये एक बहुत ऊंची इमारत बनी हुई है।

शिव मंदिर—राजा के महल से आधा मील पश्चिम-दक्षिण छोटे किले में दक्षिण तरफ तंजौर का बड़ा शिव मन्दिर है। मन्दिर के तीन बगलों पर किले की दीवार और खाई और उत्तर मैदान है। मन्दिर के बाहर की दीवार के भीतर लगभग १३ बीघा भूमि है। मन्दिर के नकशे के नंबरों से मंदिर के स्थान देखिए।

(१) मंदिर के दो चौगान (कच्छा) हैं। पूर्व वाला चौगान उत्तर से दक्षिण करीब ३७५ फीट लंबा और पूर्वसे पश्चिम १७५ फीट चौड़ा है। उसमें कोई चीज नहीं है। उसके पूर्व बगल पर ९० फीट ऊंचा बाहर का गोपुर और पश्चिम ६० फीट ऊंचा दूसरे चौगान का गोपुर है, जिसके दोनों बगलों पर तामिल अक्षर में लम्बा लेख है।

(२) पश्चिम वाला चौगान पूर्वसे पश्चिम तक करीब ७५० फीट लम्बा और उत्तरसे दक्षिण तक ३७५ फीट चौड़ा है। उसके चारो बगलों पर दोहरी दालान और मकान बने हुए हैं। चारो तरफ की दीवारों के ऊपर शिव के वाहन नन्दी बैल की पंक्ती और नीचे के दालानो में शिव लिङ्ग की

पंक्ती है। चौगान के भीतर जगह जगह नीचे लिखे हुए देव मंदिर, कई एक कूप और बहुत से वृक्ष हैं।

(क) शिव मंदिर और छोटे गोपुर के मध्य भाग में एक चौखूटा मंडपम् है, जिसमें १३ फीट ऊंचा १६ फीट लंबा और ७ फीट चौड़ा काले पत्थर का विशाल नन्दी है, जो ४०० मील दूर से लाया गया था। उस पर सर्वदा तेल लगाया जाता है।

(ख) बड़ा नंदी से उत्तर पार्वती का मंदिर है, जिसके आगे सुन्दर चौड़ा जगमोहन बना है।

(ग) बड़ा नन्दी के सामने पश्चिम शिव मंदिर का जगमोहन है, जिसमें खंभाओं की ३ पंक्तियां लगी हैं। जगमोहन के पश्चिम ७५ फीट लंबे और ७० फीट चौड़े क्रम से २ अन्धियारे कमरे हैं, जिनमें बहुत से चमगादुर रहते हैं। कमरे से पश्चिम बड़ा शिव मंदिर है। जगमोहन से मंदिर तक कमरों के मध्य होकर अन्धियारी राह है। खास शिवमंदिर लगभग ९० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा तथा २०० फीट ऊंचा है। मन्दिर का शिखर, इस किसिम के हिन्दुस्तान के मंदिरों के सब शिखरों से उत्तम है। मन्दिर हिन्दुस्तान के अखीर दक्षिण के सम्पूर्ण मन्दिरो में सबसे अधिक मनोहर है। मंदिर और उसके पास के कमरों की नेव पर पुराना तामिल अक्षरों म बहुत से शिला लेख हैं। मन्दिर का शिखर समय समय पर कई बार मरम्मत हुआ है। ऊपर का हिस्सा, जो देव और दैत्यों की मूर्तियों से पूर्ण है, अब केवल देखता का है। मंदिर के पश्चिम हिस्से में शिवलिंग है, जहां दिन में भी दीप से प्रकाश रहता है।

(घ) मन्दिर के दक्षिण पश्चिम गणेशजी का मन्दिर है।

(ङ) मन्दिर के पश्चिमोत्तर सुब्रह्मण्य अर्थात् शिव के पुत्र कार्तिकेय का उत्तम बनावट का मन्दिर है। उसकी नकाशी लकड़ी पर की नक्काशी से नकल की है। वह मंदिर ५५ फीट ऊंचा है, उसकी नेव हर तरफ से ४५ फीट लंबी है। मंदिर म ६ मुख वाले कार्तिकेय हैं। खास मन्दिर के आगे कमरा और जगमोहन है। कमरे की दीवार म तंजौर के महाराष्ट्र राजागण और रानियों की १२ चित्र मूर्ति हैं, जिनके नाम ऊपर लिखे गये हैं।

(च) मंदिर के पूर्वोत्तर चंडी का मन्दिर है, जिसके पास पूर्व तरफ नारियर का सुन्दर छोटा बाग लगा है ।

तंजौर जिला—इसके उत्तर कोलेरून नदी अर्थात् कावेरी की उत्तरी शाखा, जो तिरुचनापल्ली और दक्षिणी आरकाट जिले से इसको अलग करती है, पूर्व और पूर्व-दक्षिण बंगाल की खाड़ी; दक्षिण-पश्चिम मदुरा जिला और पश्चिम मदुरा तथा तिरुचनापल्ली जिला और पुदुकोटा का राज्य है। तंजौर जिले की भूमि समतल है; उसमें कोई पहाड़ी नहीं है । सदर स्थान तंजौर कसबा है ।

मदरास हाते के जिलों में तंजौर जिले की आबादी बड़ी घनी है । यह जिला उपज के लिये प्रसिद्ध है और दक्षिणी हिन्दुस्तान का बाग कहा जाता है। इस जिले मे बड़ी तिजारत होती है । इसमें ३००० से अधिक देवमन्दिर हैं, जिनमें से बड़े मन्दिरों में से बहुतेरे मन्दिर का उत्तम बनावट है और उनके खर्च के लिये बहुत भूमि निकाली हुई है। जिले के भिन्न भिन्न प्रांतों में अनेक मन्दिरों के पास बड़े मेले होते हैं । तंजौर जिले के बने हुए धातु के बर्तन, रेशमी वस्त्र, कालीन इत्यादि वस्तु प्रसिद्ध हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय तंजौर जिले के ३६५४ वर्गमील क्षेत्रफल में २१३०३८३ मनुष्य थे; अर्थात् १९३९४२१ हिंदू, ११२०५८ मुसलमान, ७८२५८ कृस्तान, ६२५ जैन, २ बौद्ध और १९ अन्य । हिन्दुओं में ६०९७३३ वनिया (मजूरी करने वाले), ३७२४०९ वेल्लाल (खेतिहर), २९७९२१ परयन् (वा परिया), १३४९८४ ब्राह्मण, १२३२०६ सेंबड़वन (मल्लुहा), ७०८०९ इदैयन (भेडिहर), ६०६८६ कंभाडन (कारीगर), ५९२५२ कैकुलर (कपड़ा बिनने वाले), ४२१५५ सत्रानीं (दो मसला), ३७८६४ सानान (मदक), २५३८१ सेट्टी (व्यापारी), २२९९१ अंबटन (नाई), १९८३५ वनान (धोबी), ११६७७ कुसवन (कुम्भार), ५१२८ क्षत्रिय, और बाकी ४८१६४ में अन्य जातियों के लोग थे ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय तंजौर जिले के कसबे नागपट्टनम्

में ५०२२१, तंजौर में ५४३९० कुम्भकोणम् में ५४३०७ मायावरम् में २३७६५, मनारगुड़ी म २०३९९ पोरयार में १४४६८, वेदारण्यम् में १३४३८, तिरुवालूर मे १२९३४ और अधिरामपट्टनम् में १०७४८ मनुष्य थे । तंजौर जिले म तामिल भाषा प्रचलित है।

इतिहास—चोला वंश के राजाओ के राज्य के समय तजौर जिला और उसके आस पास के देश उनके अधिकार में था, इस लिए उस प्रदेश को चोल देश कहते हैं और संस्कृत पुस्तको म भी उसका नाम चोल देश लिखा है । सन् ईस्वी की दूसरी शदी में तिरुचनापल्ली के निकट का वोरैयर नामक नगर उनकी राजधानी था। पीछे क्रम क्रम से कुम्भकोणम्, गगाईकुण्डा, सोरापुरम और तजौर उनकी राजधानी हुई। सन् १३०३ म १३१० तक मुसल्मानो ने आक्रमण किया। दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन के सिपहसालार मलिक काफूर ने चोला राज्य को निर्बल कर दिया। १६ वीं शदी में विजयानगर के राजा का अधिकार हुआ । उसके सूबेदार नायक वंश वाले नाम मात्र विजयानगर के आधीन रह कर दक्षिण म स्वतन्त्र हुकूमत करने लगे। उस समय से चोला वंश के राजाओ के विषय में कुछ नहीं सुना जाता है । ऐसा प्रसिद्ध है कि चोला वंश में सिलसिले से ६६ राजा हुए थे । क्रम से ४ नायकों ने तंजौर पर हुकूमत की। सन् १६७४ में मदुरा के नायक ने आक्रमण करके तजौर के किले पर घेरा डाला तजौर के नायक ने जब अपने बचने का कोई उपाय नहीं देखा, तब अपने महल को गोला से उड़ा कर अपने पुत्र के साथ तलवार लेकर शत्रुओ की सेना में घुस कर अपने प्राण का विसर्जन किया । एक बचे हुए लडके ने मुसलमानों से मेल किया। मुसलमानों ने महाराष्ट्र प्रधान शिवाजी के भाई वंकाजी के आधीन एक फौज भेज कर मदुरा वालो को खदेर उस लडके को तजौर का प्रधान बना दिया, किन्तु २ वर्ष पीछे वंकाजी स्वाधीन बन गए । उनकी राजधानी तजौर शहर था । उनके वंश वालो ने सन् १७९९ तक तजौर में स्वाधीन राज्य किया।

सन् १७४० म तजौर के राजा प्रतापसिंह को गद्दी पर बैठाने के लिये अंगरेजी सेना तंजौर में आई, किन्तु उसका मनोरथ पूर्ण नहीं हुआ । सन्

१७५८ में फरासीसी लोग तंजोर पर आक्रमण करके महाराष्ट्रों से बहुत धन ले गए। आरकाट का नवाब महमदअली मद्रास के गवर्नमेन्ट की सहायता से तंजोर के राजा को दबा कर उनसे 'राज कर' लेने लगा। सन् १७७३ में अंगरेजों ने तंजोर के किले को ले लिया; किन्तु सन् १७७५ में तंजोर के राजा तुलजाजी को लौटा दिया। सन् १७७६ में अंगरेजों ने फिर किले को छीन लिया। सन् १७९९ में राजा दूसरा शरभोजी ने एक संधि करके अपना स्वाधीन राज्य अंगरेजों के आधीन कर दिया। अंगरेजों ने उनके राज्य की मालगुजारी का पांचवां भाग और तंजोर के मन्दिर के खर्च के लिए १ लाख रुपया सालाना राजा के देने को स्वीकार किया और तंजोर का किला तथा शहर के आस पास के चन्द गांव उनको छोड़ दिया। सन् १८३२ में शरभोजी का देहांत होने पर उनके पुत्र दूसरा शिवाजी उत्तराधिकारी हुए। सन् १८५५ में शिवाजी मर गए। उनके कोई पुत्र नहीं था, इस लिए उनका बचा हुआ राज्य भी अंगरेज महाराज के अधिकार में होगया। सैदमाबाई इत्यादि शिवाजी की ८ स्त्रियां हैं। उनको सरकार की ओर से योग्य पेंशन मिलती है और खानगी जायदाद उनको छोड़ दी गई है। तंजोर जिले का सदर स्थान प्रथम नागपट्टनम् में था। सन् १८४५ में ट्रांकूवार में और सन् १८५५ में शिवाजी की मृत्यु होने पर तंजोर में नियत हुआ।

तंजोर के बड़े मन्दिर का काम एक समय का बना हुआ नहीं है। मन्दिर के सबसे पुराने हिस्सों में से मन्दिर का गोपुर है, जिसको सन् १३३० ईस्वी में कांचीवरम् के राजा ने बनवाया था। दूसरे काम १५ वीं शदी के पहिले का नहीं है; किन्तु बड़ा नन्दी बहुत पुराना है। सुब्रह्मण्य का मन्दिर सोलहवीं शदी से पहिले का नहीं होगा।

तिरुचनापल्ली।

तंजोर शहर से ३१ मील पश्चिम (मदरास शहर से २४९ मील दक्षिण-पश्चिम) और मदुरा शहर से ९६ मील पूर्वोत्तर तिरुचनापल्ली का रेलवे जंक्शन है। जंक्शन पर पहुंचने के ६ मील पहिले से तिरुचनापल्ली

शहर के टीले पर गणेश का मन्दिर देख पड़ता है। तिरुचनापल्ली जक्शन से सौथ इंडियन रेलवे की लाइनें तीन ओर गई हैं, जिनके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २ पाई लगता है,—

(१) तिरुचनापल्ली से दक्षिण कुछ पश्चिम, बाद दक्षिण;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

५८ दिंडीगल।

९६ मदुरा।

१६० कुमारपुर।

१७७ मनियार्ची जंक्शन।

मनियार्ची से १८ मील दक्षिण पश्चिम तिरुनलवेली और १८ मील पूर्व तुतीकुडी।

(२) तिरुचनापल्ली से पश्चिमोत्तर,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३ तिरुचनोपल्ली फोर्ट।

४८ करुर।

६८ अंजालूर।

८८ ईरोड जंक्शन।

ईरोड जक्शन से पश्चिम ओर मदरास रेलवे पर ५८ मील पोडैयनूर जक्शन ९२ मील पाल्घाट और १७० मील कलीकोट। पोडैयनूर जक्शन से उत्तर ४ मील कोयमुत्तूर और २६ मील मेट्टुपालयम् है।

ईरोड जक्शन से उत्तर पूर्व मदरास रेलवे पर ३७ मील सेलम, ११२ मील जालारपेट जंक्शन, १३१ मील अम्बूर, १४८ मील कुडीआतम्, १६३ मील कटपड़ी जक्शन, १७८ मील आरकाट २०१ मील आरकोनम् जंक्शन और २४८ मील मदरास शहर है।

जालारपेट जक्शन से पश्चिमोत्तर ४४ मील कोलार रोड और ८७ मील बंगलोर जंक्शन।

कटपड़ी जंक्शन से दक्षिण की ओर ६ मील वेलूर ५७ मील तिरुवनामलई और ९९ मील विल्लीपुरम् जक्शन और उत्तर की ओर सौथ इंडियन रेलवे पर ३९ मील पकाला जक्शन, ६५ मील तिरपदी और ७१ मील रेणुगुंटा जक्शन।

पकाला जंक्शन से पश्चिमोत्तर १४२ मील धर्मवरम् और २०५ मील गुंटकल जंक्शन है।

(३) तिरुचनापल्ली जंक्शन से उत्तर की ओर;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३१ तंजौर जंक्शन।

५६ कुम्भकोणम्।

७५ मयावरम् जंक्शन।

८३ स्वर्णकोइल।

९८ चिदम्बरम्।

१०५ पोटोंनोवे।

१२४ कड़ालूर नया।

१५१ विलीपुरम् जंक्शन।

तंजौर जंक्शन से पूर्व ३५मील तिरुवालूर जंक्शन और ५० मील नागपट्टनम्।

मायावरम् जं० से दक्षिण २३मील तिरुवालूर जंक्शन् और ५३ मील मुटुपेटे है।

मद्रास शहर से एक बड़ी सड़क विलीपुरम्, तिरुचनापल्ली, मदुरा और मनियार्ची होकर कन्याकुमारी के पास तक गई है। कुछ यात्री, जिनके पास खर्च का रुपया कम है, मदुरा नहीं जाकर तिरुचनापल्ली से सीधा दक्षिण दिहाती मार्ग से रामेश्वर जाते हैं।

तिरुचनापल्ली जंक्शन से ३ मील उत्तर तिरुचनापल्ली फोर्ट का रेलवे स्टेशन है। मद्रास हाते में कावेरी नदी के १ मील दक्षिण (१० अंश ४९ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ४४ कला, २१ विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र से लगभग ६० मील पश्चिमोत्तर तथा रेलवे के स्टेशन से ३॥ मील पूर्व जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा तिरुचनापल्ली है, जिसकी म्युनिसिपल्टी के भीतर फौजी छावनी और छोटे बड़े १७ गांव हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय तिरुचनापल्ली के म्युनिसिपल्टी में ९०६०९ मनुष्य थे; अर्थात् ४४०८० पुरुष और ४६५२९ स्त्रियां। इनमें ६७२४८ हिंदू, १२३४१ कृस्तान, ११०१७ मुसलमान, २ बौद्ध और १ अन्य थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारत वर्ष में ३० वां और मद्रास हाते के अंगरेजी राज्य में दूसरा शहर है।

इतिहास—दक्षिण का देश, जिसका एक भाग तिरुचनापल्ली जिला है, चोला, चेरा और पांड्य वंश के राज्यों में विभक्त था। उनके राज्य के आरंभ का समय ठीक नहीं जाना जाता है; किंतु अनुमान से जान पड़ता है कि सन् ईस्वी के आरंभ से ५०० वर्ष पहिले उनके राज्य विद्यमान थे। उनके राज्य कई एक शकल में सोलहवीं शदी तक थे। उनके राज्यों में तिरुचनापल्ली चोला राज्य का एक भाग था, जिसकी राजधानी एक समय वोरैयर नामक नगर था, जो वर्त्तमान तिरुचनापल्ली शहर का एक शहरतली है। कहते हैं कि सन् १३० ईस्वी में वोरैयर नगर विद्यमान था। सोलहवीं शदी के अंत से पहिले यह संपूर्ण देश नायकों के अधिकार में हुआ। उस राजवंश को कायम करने वाला विजयानगर के राजा के एक अफसर का पुत्र विश्वनाथ नायक था, जो सन् १५५९ में मदुरा का हुकूमत करने वाला बना और थोड़ही समय के पश्चात् तिरुचनापल्ली को अपने अधिकार में कर लिया। उसके राज्य के समय तिरुचनापल्ली शहर संवारा गया और किले का बड़ा भाग दुरुस्त किया गया। सन् १५७३ में विश्वनाथ की मृत्यु हुई। नायक वंश के लोग सन् १५५९ से १७४० तक तिरुचनापल्ली और मदुरा में हुकूमत की। उनमें सबसे अधिक प्रतापी तिरुमलई नायक था, जिसका देहांत सन् १६५९ में हुआ। उसके पोता चोका नायक ने मदुरा को छोड़ कर तिरुचनापल्ली को अपनी राजधानी बनाया। उसकी बनाई हुई इमारत अब तक तिरुचनापल्ली में नवाब के महल करके प्रसिद्ध है। सन् १६८२ में चोका नायक का देहांत हुआ।

सन् १७४० में आरकाट के नवाब के रिस्तेदार चंदासाहब ने तिरुचनापल्ली के नायक की विधवा मीनाक्षी को धोखा देकर तिरुचनापल्ली को ले लिया। सन् १७४९ और १७६२ के बीच में, जब अंगरेज और फरासीसी दक्षिण में लड़ते रहे, अंगरेज महम्मदअली के, और फरासीसी चंदासाहब के सहायक थे। प्रधान लड़ाइयां श्रीरंगम् की टापू में हुईं। सन् १७६३ की पेरिस की सन्धि द्वारा महम्मदअली कर्नाटक का नवाब बनाया गया। हैदरअली और टीपू सुलतान से अंगरेजों की लड़ाइयों के समय तिरुचनापल्ली जिला उजाड़ हो

गया; किंतु इसमें कोई प्रसिद्ध लड़ाई नहीं हुई। पीछे यह अंगरेजी सरकार के अधिकार में आगया। तिरुचनापल्ली शहर में सन् १८६६ में म्युनिसिपल्टी कायम हुई और सन् १८६८ में म्युनि स्पल बाजार बनाया गया। पहिले सरकारी फौज किले में रहती थी; उसके पीछे वोरैयर शहरतली में हटाई गई; अब वर्तमान लाइन में है।

राजा शिवप्रसाद ने अपने हस्तामलक में लिखा है कि सेलम, आरकाट, तिरुचनापल्ली, तंजौर, मदुरा, तिरुनलवेल्ली और कोयंबुतूर ये सातो जिलें (खास) द्राविड़ देश में गिने जाते हैं।

श्रीरंगम्।

तिरुचनापल्ली के रेलवे स्टेशन से एक मील पूर्व से दो सड़क दो तरफ गई है;—एक आगे पूर्व ओर तिरुचनापल्ली शहर को और दूसरी उत्तर ओर श्रीरंगम् के टापू को। स्टेशन पर सवारी के लिये एक्के और बैलगाड़ी मिलती हैं। रेलवे के स्टेशन से ३ मील और तिरुचनापल्ली शहर से लगभग २ मील उत्तर मद्रास हाते के तिरुचनापल्ली जिले में कावेरी नदी के श्रीरंगम् टापू के भीतर श्रीरंगम् कसबा तथा श्रीरंगम् का प्रसिद्ध मंदिर है। कावेरी नदी पर ३२ मेहरावी का पुल बना है, जिस से उत्तर मंदिर के निकट कावेरी की छोटी धारा पर छोटा पुल है। लगभग १७ मील लंबा और १½ मील चौड़ा श्रीरंगम् टापू है। श्रीरंगजी के मंदिर से पांच छः मील पश्चिम टापू की पश्चिमी सीमा है, जिस स्थान से कावेरी नदी की दो शाखा हो गई है; उनमें से उत्तर की शाखा कोलरून तथा कोलडन और दक्षिण की शाखा कावेरी करके प्रसिद्ध है। दोनों शाखा श्रीरंगम् के मंदिर से ग्यारह बारह मील पूर्व जा कर प्रायः मिल गई हैं। जब देखा गया कि क्रम क्रम से कोलरून अधिक गहरी और कावेरी कम गहरी होती जाती है, इससे तंजौर जिले के खेतों की सिंचाई के काम में बाधा पड़ेगा, तब सन् १८३६ ईस्वी में कोलरून के एक किनारे से दूसरे किनारे तक एक बांध बना दिया गया। कावेरी नदी कोलरून से अलग होने के बाद कई शाखों में होकर तंजौर जिले को पटाती है; जिनमें से प्रधान धारा का नाम वेनार है। तिरुचनापल्ली के रेलवे स्टेशन

इतिहास—दक्षिण का देश, जिसका एक भाग तिरुचनापल्ली जिला है, चोला, चेरा और पांड्य वंश के राज्यों में विभक्त था। उनके राज्य के आरंभ का समय ठीक नही जाना जाता है; किंतु अनुमान से जान पड़ता है कि सन् ईस्वी के आरंभ मे ५०० वर्ष पहिले उनके राज्य विद्यमान थे। उनके राज्य कई एक शकल में सोलहवीं शदी तक थे। उनके राज्यों में तिरुचनापल्ली चोला राज्य का एक भाग था, जिसकी राजधानी एक समय वोरैयर नामक नगर था, जो वर्तमान तिरुचनापल्ली शहर का एक शहरतली है। कहते हैं कि सन् १३० ईस्वी में वोरैयर नगर विद्यमान था। सोलहवीं शदी के अंत से पहिले यह संपूर्ण देश नायकों के अधिकार में हुआ। उस राजवंश को कायम करने वाला विजयानगर के राजा के एक अफसर का पुत्र विश्वनाथ नायक था, जो सन् १५५९ में मदुरा का हुकूमत करने वाला बना और थोड़ही समय के पश्चात् तिरुचनापल्ली को अपने अधिकार में कर लिया। उसके राज्य के समय तिरुचनापल्ली शहर संवारा गया और किले का बड़ा भाग दुरुस्त किया गया। सन् १५७३ में विश्वनाथ की मृत्यु हुई। नायक वंश के लोग सन् १५५९ से १७४० तक तिरुचनापल्ली और मदुरा में हुकूमत की। उनमें सबसे अधिक प्रतापी तिरुमलई नायक था, जिसका देहांत सन् १६५९ में हुआ। उसके पोता चोका नायक ने मदुरा को छोड़ कर तिरुचनापल्ली को अपनी राजधानी बनाया। उसकी बनाई हुई इमारत अब तक तिरुचनापल्ली में नवाब के महल करके प्रसिद्ध है। सन् १६८२ में चोका नायक का देहांत हुआ।

सन् १७४० में आरकाट के नवाब के रिश्तेदार चंदासाहब ने तिरुचनापल्ली के नायक की विधवा मीनाक्षी को धोखा देकर तिरुचनापल्ली को ले लिया। सन् १७४९ और १७६२ के बीच में, जब अंगरेज और फरासीसी दक्षिण में लड़ते रहे, अंगरेज महम्मदअली के, और फरासीसी चंदासाहब के सहायक थे। प्रधान लड़ाइयां श्रीरंगम् की टापू में हुईं। सन् १७६३ की पेरिस की संधि द्वारा महम्मदअली कर्नाटक का नवाब बनाया गया। हैदरअली और टीपू सुलतान से अंगरेजों की लड़ाइयों के समय तिरुचनापल्ली जिला उजाड़ हो

के मन्दिर से चारो ओर के सुन्दर दृश्य देखने में आते हैं। प्रति वर्ष के भादों में गणेश उत्सव के समय वहां दर्शन का बड़ा मेला होता है। सन् १८४९ के मेले के समय एक आकस्मिक भय से घबड़ा कर उतरने के समय वहां लगभग २५० यात्री कुचल कर मर गए।

तिरुचनापल्ली जिला—इस जिले के पश्चिमोत्तर और उत्तर सेलम जिला; उत्तर और पूर्वोत्तर 'दक्षिण आरकाट' जिला, पूर्व और दक्षिण-पूर्व तंजोर जिला, दक्षिण पुदुकोटा का राज्य और मदुरा जिला और पश्चिम कोयंबुत्तूर जिला है। जिले का सदर स्थान तिरुचनापल्ली शहर है। जिले की भूमि समतल है; किन्तु स्थान स्थान पर चट्टानी टीले देखने में आते हैं। केवल लगभग २५०० फीट ऊंचा पचैमलई नामक एक पहाड़ी है। जिले की प्रसिद्ध नदी कावेरी और उसकी शाखा कोलरून है। कावेरी नदी जिले की पश्चिमी सीमा से जिले में प्रवेश करके पूर्व को बहती है। उसका वृत्तान्त श्रीरंगम् के वृत्तान्त में देखिए। जिले की उत्तरीय सीमा पर कुछ दूर तक वेलार नदी बहती है। तिरुचनापल्ली और कोयंबुतूर जिले के मध्य में अमरावती नदी है। जिले में मकान बनाने के काम का पत्थर और लोहे के ओर होते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय तिरुचनापल्ली जिले के ३५६१ वर्गमील क्षेत्रफल में १२१५०३२ मनुष्य थे; अर्थात् ११११९४३३ हिन्दू, ६१४४० कृस्तान, ३४१०४ मुसलमान ३३ बौद्ध, ६ जैन और १६ अन्य। हिन्दुओं में ३७८४४२ बनिया (जाति विशेष) १९३००१ वेल्लाल (खेतिहर), १३९१६२ सतानी (दो मसला), १३३६१३ परियन् (नीच), ६३८४० इडैयन (भेड़िहर), ३५३२८ कैक्कलर (कपड़ा बिनने वाले), ३४११० ब्राह्मण, २९५६६ कंमाइन (लोहार), १७८७२ सेट्टी (सौदागर), १३८८४ अंबटन (नाई), १२३१० वन्नान (धोबी), १०८३२ सेंवड्वन (मछुहा), ५९९६ कुसवन (कुम्भार), ५६०० सानान (मद्यक), २०६७ छत्री, २४७ कणक्कर्न (लिखने वाले) और ४३६०४ अन्य जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय तिरुचनापल्ली जिले के कसबे तिरुचनापल्ली में ९०६०९ और श्रीरंगम् में २१६३२ मनुष्य थे। तिरुचनापल्ली जिले में तामिल भाषा प्रचलित है।

तिरुचनापल्ली का किला १ मील लंबा और ½ मील चौड़ा समकोण शकल का है। यह पहिले दीवार और खाई से घेरा हुआ था, किन्तु अब उसकी खाई भर दी गई है। उसमें घनी आबादी होगई है; उसके भीतरही तिरुचनापल्ली का चट्टान है, जिसपर शिवजी और गणेशजी का मंदिर बना हुआ है। उस चट्टान से चंद सौ गज दक्षिण नवाब का महल है, जिसको, सत्रहवीं शदी में चोका नायक ने बनवाया था और सन् १८७३ में गवर्नमेंट लगभग ३७००० रुपये के खर्च से मरम्मत करवाया। उसमें अब सरकारी कचहरियों के इजलास और आफिसों के काम होते हैं। चट्टान और किले के प्रधान फाटक के बीच में एक सुन्दर तेप्पकुलम् अर्थात् नाव का सरोवर है, जिसमें देवतों की चल मूर्तियां नाव में बैठाकर जल में घुमाई जाती हैं। सरोवर के चारो तरफ के मकानों में एक समय यूरोपिन अफसर रहते थे। तिरुचनापल्ली में एक अबजरवेटरी, २ जेलखाने, कई एक गिरजे, जिनमें से २ बड़े हैं एक कालिज, कई स्कूल और कई एक अस्पताल हैं। किले से १½ मील पश्चिम फौजी छावनी है; जिसमें सन् १८८४ में देशी पैदल की दो रेजीमेंट थी। रात्रि में शहर की सड़कों पर लालटेनों की रोशनी होती है। दक्षिण वाले सुनहला चट्टान के पश्चिम मदरास हाते के बड़े जिलों में से एक सेंट्रल जेल है। शहर में सोने के सुन्दर भूषण और चुरट बहुत तैयार होते हैं। शहर मे सोनार बहुत हैं। यह जिले में सौदागरी का प्रधान स्थान है।

चट्टान के ऊपर के मन्दिर—शहर की बस्ती के पास २३५ फीट ऊंचा पत्थर का छोटा टीला है; जिसके ऊपर के सब जगहों पर मन्दिर बने हुए हैं और दक्षिण ओर नीचे से ऊपर तक पत्थर की सीढ़ियां हैं। रास्ते के बगलों पर कई हाथी और बहुतेरे ऊंचे स्तंभ हैं। २०४ सीढ़ियों के ऊपर से बाएं और दहिने दोनों ओर अलग अलग सीढियां ऊपर को गई हैं। बाएं ८६ सीढियों के ऊपर बड़ा शिव मन्दिर और दहिने २०८ सीढ़ियों के ऊपर गणेशजी का छोटा मन्दिर है। शिव के मन्दिर के पास कई एक मन्दिर और मण्डपों में शिव, पार्वती, गणेश, सुब्रह्मण्य अर्थात् स्कंद आदि देवताओं की मूर्तियां और चांदी के पत्तरों से मढ़ा हुआ एक बड़ा नंदी है। गणेशजी

के मन्दिर से चारो ओर के सुन्दर दृश्य देखने में आते हैं। प्रति वर्ष के भादों में गणेश उत्सव के समय वहां दर्शन का बड़ा मेला होता है। सन् १८४९ के मेले के समय एक आकस्मिक भय से घबड़ा कर उतरने के समय वहां लगभग २५० यात्री कुचल कर मर गए।

तिरुचनापल्ली जिला–इस जिले के पश्चिमोत्तर और उत्तर सेलम जिला; उत्तर और पूर्वोत्तर 'दक्षिण आरकाट' जिला, पूर्व और दक्षिण-पूर्व तंजौर जिला, दक्षिण पुदुकोटा का राज्य और मदुरा जिला और पश्चिम कोयंबुत्तूर जिला है। जिले का सदर स्थान तिरुचनापल्ली शहर है। जिले की भूमि समतल है; किन्तु स्थान स्थान पर चट्टानी टीले देखने में आते हैं। केवल लगभग २५०० फीट ऊंचा पचैमलई नामक एक पहाड़ी है। जिले की प्रसिद्ध नदी कावेरी और उसकी शाखा कोलरून है। कावेरी नदी जिले की पश्चिमी सीमा से जिले में प्रवेश करके पूर्व को बहती है। इसका वृत्तान्त श्रीरंगम् के वृत्तान्त में देखिए। जिले की उत्तरीय सीमा पर कुछ दूर तक वेलार नदी बहती है। तिरुचनापल्ली और कोयंबुतूर जिले के मध्य में अमरावती नदी है। जिले में मकान बनाने के काम का पत्थर और लोहे के ओर होते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय तिरुचनापल्ली जिले के ३५६१ वर्गमील क्षेत्रफल में १२१५०३२ मनुष्य थे; अर्थात् ११११९४३२ हिन्दू, ६१४४० कृस्तान, ३४१०४ मुसलमान ३३ बौद्ध, ६ जैन और १६ अन्य। हिन्दुओं में ३७८४४२ बनिया (जाति विशेष) १९३००१ वेल्लाल (खेतिहर), १३९१६२ सतानी (दो मसली), १३३६१३ परियन् (नीच), ६३८४० इडैयन (भेड़िहर), ३५३२८ कैकलर (कपड़ा बिनने वाले), ३४११० ब्राह्मण, २९५६६ कंमाइन (लोहार), १७८७२ सेट्टी (सौदागर), १३८८४ अंबटन (नाई), १२३१० वन्नान (धोबी), १०८३२ सेंबडवन (मछुहा), ५९९६ कुसवन (कुम्भार), ५६०० सानान (मदक), २०५७ छत्री, २४७ कणक्कर्त (लिखने वाले) और ४३६०४ अन्य जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय तिरुचनापल्ली जिले के कसबे तिरुचनापल्ली में ९०६०९ और श्रीरंगम् में २१६३२ मनुष्य थे। तिरुचनापल्ली जिले में तामिल भाषा प्रचलित है।

इतिहास—दक्षिण का देश, जिसका एक भाग तिरुचनापल्ली जिला है, चोला, चेरा और पांड्य वंश के राज्यों में विभक्त था। उनके राज्य के आरंभ का समय ठीक नहीं जाना जाता है; किंतु अनुमान से जान पड़ता है कि सन् ईस्वी के आरंभ से ५०० वर्ष पहिले उनके राज्य विद्यमान थे। उनके राज्य कई एक शकल में सोलहवीं शदी तक थे। उनके राज्यों में तिरुचनापल्ली चोला राज्य का एक भाग था, जिसकी राजधानी एक समय वोरैयर नामक नगर था, जो वर्त्तमान तिरुचनापल्ली शहर का एक शहरतली है। कहते हैं कि सन् १३० ईस्वी में वोरैयर नगर विद्यमान था। सोलहवीं शदी के अंत से पहिले यह संपूर्ण देश नायकों के अधिकार में हुआ। उस राजवंश को कायम करने वाला विजयानगर के राजा के एक अफसर का पुत्र विश्वनाथ नायक था, जो सन् १५५९ में मदुरा का हुकूमत करने वाला बना और थोड़ही समय के पश्चात् तिरुचनापल्ली को अपने अधिकार में कर लिया। उसके राज्य के समय तिरुचनापल्ली शहर संवारा गया और किले का बगा भाग दुरुस्त किया गया। सन् १५७३ में विश्वनाथ की मृत्यु हुई। नायक वंश के लोग सन् १५५९ से १७४० तक तिरुचनापल्ली और मदुरा में हुकूमत की। उनमें सबसे अधिक प्रतापी तिरुमलई नायक था, जिसका देहांत सन् १६५९ में हुआ। उसके पोता चोका नायक ने मदुरा को छोड़ कर तिरुचनापल्ली को अपनी राजधानी बनाया। उसकी बनाई हुई इमारत अब तक तिरुचनापल्ली में नवाब के महल करके प्रसिद्ध है। सन् १६८२ में चोका नायक का देहांत हुआ।

सन् १७४० में आरकाट के नवाब के रिस्तेदार चंदासाहब ने तिरुचनापल्ली के नायक की विधवा मीनाक्षी को धोखा देकर तिरुचनापल्ली को ले लिया। सन् १७४९ और १७६२ के बीच में, जब अंगरेज और फरासीसी दक्षिण में लड़ते रहे, अंगरेज महम्मदअली के, और फरासीसी चंदासाहब के सहायक थे। प्रधान लड़ाइयां श्रीरंगम् की टापू में हुईं। सन् १७६३ की पेरिस की संधि द्वारा महम्मदअली कर्नाटक का नवाब बनाया गया। हैदरअली और टीपू सुलतान से अंगरेजों की लड़ाइयों के समय तिरुचनापल्ली जिला उजाड़ हो

गया; किंतु इसमें कोई प्रसिद्ध लड़ाई नहीं हुई । पीछे यह अंगरेजी सरकार के अधिकार में आगया । तिरुचनापल्ली शहर में सन् १८६६ में म्युनिसिपल्टी कायम हुई और सन् १८६८ में म्युनि स्पल बाजार बनाया गया । पहिले सरकारी फौज किले में रहती थी, उसके पीछे वोरैयर शहरतली में हटाई गई, अब वर्तमान लाइन में है।

राजा शिवप्रसाद ने अपने हस्तामलक में लिखा है कि सेलम, आरकाट, तिरुचनापल्ली, तंजौर, मदुरा, तिरुनलवेली और कोयंबुतूर ये सातो जिले (खास) द्राविड़ देश में गिने जाते हैं।

श्रीरंगम् ।

तिरुचनापल्ली के रेलवे स्टेशन से एक मील पूर्व में दो सड़क दो तरफ गई हैं;—एक आगे पूर्व ओर तिरुचनापल्ली शहर को और दूसरी उत्तर ओर श्रीरंगम् के टापू को । स्टेशन पर सवारी के लिये एक्के और बैलगाडी मिलती हैं। रेलवे के स्टेशन से ३ मील और तिरुचनापल्ली शहर से लगभग २ मील उत्तर मदरास हाते के तिरुचनापल्ली जिले में कावेरी नदी के श्रीरंगम् टापू के भीतर श्रीरंगम् कसबा तथा श्रीरंगम् का प्रसिद्ध मंदिर है। कावेरी नदी पर ३२ मेहराबों का पुल बना है, जिस से उत्तर मंदिर के निकट कावेरी की छोटी धारा पर छोटा पुल है । लगभग १७ मील लंबा और १½ मील चौड़ा श्रीरंगम् टापू है । श्रीरंगजी के मंदिर से पांच छः मील पश्चिम टापू की पश्चिमी सीमा है, जिस स्थान से कावेरी नदी की दो शाखा हो गई है; उनमें से उत्तर की शाखा कोलरून तथा कोल्लडम और दक्षिण की शाखा कावेरी नाम से प्रसिद्ध है । दोनों शाखा श्रीरंगम् के मंदिर से ग्यारह बारह मील पूर्व जा कर प्रायः मिल गई हैं। जब देखा गया कि क्रम क्रम से कोलरून अधिक गहरी और कावेरी कम गहरी होती जाती है, इससे तंजौर जिले के खेतों की सिंचाई के काम में बाधा पड़ेगा तब सन् १८३६ ईस्वी में कोलरून के एक किनारे से दूसरे किनारे तक एक बांध बना दिया गया। कावेरी नदी कोलरून से अलग होने के बाद कई शाखों में होकर तंजौर जिले को पटाती है; जिनमें से प्रधान धारा का नाम वेनार है। तिरुचनापल्ली के रेलवे स्टेशन

से श्रीरंगजी के मंदिर को जाने में कावेरी की दो धारा के दो पुल मिलते हैं और मंदिर से उत्तर कावेरी की कोलरुन नामक धारा है।

कावेरी नदी कुर्ग की पहाडियों से निकल कर मैसूर के राज्य और कर्नाटक में बहती हुई ४७२ मील दक्षिण पूर्व बहने के पश्चात् तंजौर से पूर्व ओर समुद्र के पूर्वी घाट में मिल गई है। श्रीरंगपट्टनम्, शिवसमुद्रम्, श्रीरंगम्, तिरुचनापल्ली, तंजौर इत्यादि नगर इसके किनारे के पास हैं। कावेरी के भीतर ३ प्रसिद्ध टापू हैं;—(१) मैसूर राज्य में मैसूर राजधानी के पास का श्रीरंगपट्टनम् आदिरंगम्, (२) मैसूर राज्य में शिवसमुद्रम् नामक टापू मध्यरंगम् और (३) तिरुचनापल्ली के पास श्रीरंगम् का टापू अंत रंगम्। महाभारत—वनपर्व के ८५ वें अध्याय में लिखा है कि कावेरी नदी में स्नान करने से हजार गोदान का फल मिलता है। शिवपुराण—विद्येश्वर संहिता के १० वें अध्याय में है कि पवित्र कावेरी नदी सह्य पर्वत से निकली है, तुला राशी पर बृहस्पति और सूर्य के होने पर कावेरी में स्नान करने से संपूर्ण मनोरथ सिद्ध होता है और कूर्मपुराण—उपरिभाग के ३६ वें अध्याय में लिखा है कि पवित्र कावेरी नदी में स्नान और तर्पण करने से संपूर्ण पापो का नाश होता है। इनके अलावे पुराणों में स्थान स्थान पर कावेरी का माहात्म्य और उस का नाम मिलता है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय श्रीरंगम् कसबे में २१६३२ मनुष्य थे, अर्थात् १०२३८ पुरुष और ११३९४ स्त्रियां। इनमे २१३७३ हिंदू, २१२ कृस्तान और ४७ मुसलमान थे। श्रीरंगजी के मंदिर के घेरे के भीतर ही प्रायः संपूर्ण कसबा है। उसके भीतरही बाजार, पंडाओं और सर्वसाधारण लोगों के मकान और कई धर्मशाले हैं। बाजार में खाने पीने की वस्तु सर्वदा तैयार रहती हैं। धनी यात्रियों को पंडे रोग अपने मकानों में टिकाते हैं। यहां रामानुज संप्रदाय के आचारी लोगों की प्रबलता तथा आधिक्यता है। इनकी मूलगद्दी तोताद्री में है, किंतु श्रीरंगम् भी उनका मुख्य स्थानही के समान है। यहां रामानुज संप्रदाय की २ गद्दी हैं, आनंदस्वामी की और भट्टरस्वामी की। मंदिर के एक भाग में रामानुजस्वामी का मंदिर है।

पूस सुदी १ से ११ तक श्रीरंगम् में बैकुंठ एकादशी का बड़ा मेला होता है। उस समय एक बड़ा पंडाल बनता है और उसमें बांस की कमानियों पर कागज साट कर और अन्य प्रकार से भी देव देवियों तथा हाकिम, सिपाहियों, कैदियों इत्यादि की विचित्र मूर्तियां बनाकर रक्खी जाती हैं। पंडाल और प्रतिमाओं के बनाने में तीन चार हजार रुपया खर्च पड़ता है।

श्रीरंगजी का मन्दिर—श्रीरंगजी का मन्दिर, जिसके भीतर श्रीरंगम् कसबा का बड़ा हिस्सा है, उत्तर से दक्षिण तक लगभग २९०० फीट लंबा और पूर्वसे पश्चिमको २५०० फीट चौड़ा है; अर्थात् वह।२६६ बीघे भूमि पर फैला हुआ है। उसका विस्तार दिल्ली के किले से करीब ड्योढ़ा है। इतना बड़ा देव मंदिर किसी स्थान में नहीं है। सात दीवारों के भीतर श्रीरंगम् का निज मंदिर है। स्थान स्थान पर चारो ओर की दीवारो में छोटे बड़े १८ गोपुर बने हुए हैं, जिनमें २ बहुत बड़े हैं। इनके अतिरिक्त अनेक दरवाजे भी हैं। नीचे के नंबरों से नकशे के नंबरों से मिलाकर मंदिर के स्थानों को देखिए। नीचे लिखे हुए मन्दिर और मंडपों के अलावे मंदिर के घेरे के भीतर बहुत से मंदिर, मण्डप तथा स्थान हैं।

(नंबर १) बाहर वाली चारो ओर की दीवारों के मध्य भाग में एकही समान एक एक बड़ा फाटक है, जो गोपुरों की नेव जान पड़ते हैं। अगर इनके ऊपर सुंडाकार गोपुर बनकर तैयार होते तो उनकी ऊंचाई लगभग ३०० फीट होजाती। इनमें से तिरुचनापल्ली की ओर के दक्षिण के फाटक की भीतर की ऊंचाई ४३ फीट; लंबाई (दहिने, बांए) १३० फीट और गहराई (अर्थात् आगे पीछे) १०० फीट है। फाटक में बड़े बड़े पत्थर खड़े हैं, जिनमें से चन्द पत्थर ४० फीट से अधिक ऊंचे हैं। दक्षिण के फाटक से यात्री लोग मन्दिर के सातवें कोट में प्रवेश करते हैं, जहां एक अस्पताल है और नित्य बाजार लगता है। इस कोट के मध्य में चारो तरफ पक्की सड़क बनी है, जिसके बगलों में सर्व साधारण लोगों की बस्ती है। दक्षिण वाले फाटक से चार पांच सौ गज दक्षिण, कावेरी नदी के दक्षिणी शाखाओं में की छोटी शाखा है, जिसमें यात्रीगण स्नान और दान करते हैं। कावेरी की उत्तरी शाखा, जि-

सको कोलरुन कहते है, मंदिर के उत्तर के फाटक से आधा मील से अधिक उत्तर है।

(नंबर २) छठव कोट में तीन ओर छोटे और दक्षिण ओर सात खन वाला बडा गोपुर है। कोट के भीतर चारो ओर सडक के बगलो में ब्राह्मण और पडो की वस्ती तथा दक्षिण ओर दुकाने हैं। चारो बगलों की दीवार लगभग २० फीट ऊंची है।

(नंबर ३) पांचवें कोट में चारो तरफ एक एक छोटे गोपुर और कोट के भीतर चारो ओर सडक के बगलो में ब्राह्मण और पडो के मकान हैं।

(नंबर ४) चौथे कोट में दक्षिण और उत्तर एक एक छोटा गोपुर और पूर्व ओर १५२ फीट ऊंचा, एक बडा गोपुर है, उसके ऊपर का भाग पूरा नहीं हुआ है, अगर पूरा होता तो वह २०० फीट से अधिक ऊंचा होजाता। उसके नीचे का फाटक ४४ फीट ऊंचा है, इस कोट में कई एक बडे बडे मंडप बने हुए हैं, जिनमें से लगभग ४५० फीट लम्बा और १३० फीट चौड़ा "सहस्र स्तंभ मडपम्" है, जिसमें १६ स्तंभो के ६० पक्तियो में १८ फीट ऊंचा ९६० स्तंभ लगे हुए हैं। इस कोट के पूर्व वाले बडे गोपुर के पश्चिम अपूर्व चित्रकारी का एक सुन्दर मंडप है। उसके स्तम्भों में भांति भांति के घोडे घोड़सवार इत्यादि के पूरे स्वरूप बने हुए हैं। कोट के दक्षिण के मंडप में श्रीरंगजी आदि देवताओं के चित्रपट रक्खे हैं। कोट के पश्चिम के भाग में एक बावली और केला नारियल का छोटा बाग है।

(५) तीसरे कोट में दक्षिण और उत्तर एक एक गोपुर और पूर्व एक खिड़की है। दक्षिण के गोपुर के सामने उत्तर गरुड़ मंडप में नवीन रंग से रंजित बहुत बडी गरुड की मूर्ति है, जिसमे उत्तर एक चबूतरे के पास सोना का मोलम्मा किया हुआ गरुड स्तंभ है।

कोट के ईशान कोने में चन्द्रपुष्करणी नामक एक गोलाकार सुन्दर सरोवर है, जिसमें यात्रीलोग स्नान वा मार्जन करते हैं। उसके पास महा लक्ष्मी का विशाल मन्दिर, कल्पवृक्ष नामक पेड, श्रीरामचन्द्र की मूर्ति, और

श्रीरङ्गक्षेत्रस्य राजस्थाने (कोट) अश्वाः

खेमराज श्रीकृष्णदासके "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणालय-मुम्बईमें छापागया.

वैकुण्ठनाथ भगवान का प्राचीन स्थान है। वहां कितने देवता और ऋषियों की प्रतिमा हैं।

(६) दूसरा कोट १९० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है, जिसके पश्चिम बगल में एक दरवाजा और दक्षिण हिस्से में दालान और मंडपम् है।

(७) पहला कोट का दरवाजा दक्षिण है। कोट के उत्तर हिस्से में साधारण कद का श्रीरंगजी का निज मन्दिर है, जिसके नीचे का भाग पीछे की ओर अर्थात् उत्तर गोलाकार है और ऊपर के शिखर पर सोना का मुलम्मा किया हुआ है। मन्दिर के पीछे की छत में देवतों की चित्र मूर्ति हैं। श्रीरंगजी के निज मन्दिर के पीछे एक कूप और एक मन्दिर है, जिसके पीछे पीतल का एक पत्तर भूमि में गड़ा है। यहां से श्रीरंगजी के निज मंदिर के शिखर का दर्शन होता है। शिखर पर चार वेदें के स्थान पर चार स्वर्ण कलस हैं। थोड़ी दूर आगे एक ऊंचे दालान में भी वैसाही एक पत्तर है, जहांसे मन्दिर के शिखर पर पीतलमयी श्रीवासुदेव की मूर्ति देख पड़ती है।

श्रीरंगजी की कृष्णपाषाणमय ६ फीट से अधिक लंबी चतुर्भुज मूर्ति शेष पर शयन करती है। उनका किरीट, मुकुट, चरण, हाथ सब सुनहरे हैं। वह बहुमूल्य भूषण पहरे हुए हैं। उनके निकट श्रीलक्ष्मीजी और विभीषण बैठे हैं और श्रीदेवी, भूदेवी इत्यादि ताम्रमयी ३ उत्सव मूर्तियां खड़ी हैं। मन्दिर का पुजारी एक रुपया लेकर यात्री की ओर से श्रीरंगजी की पूजा और कपूर की आरती कर देता है। जो यात्री रुपया नहीं देता है, वह दर्शन मात्र करके चलाजाता है। मन्दिर में दर्शकों की भीड़ रहती है। खास मंदिर एक कोठरी के समान छोटा है। कोई कोई यात्री वहां अटका चढ़ाते हैं। मन्दिर के खजाने में सोना, चांदी, पन्ना, हीरा, लाल, इत्यादि रत्नों से बने हुए लाखों रुपये के देव भूषण और पात्र हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—श्रीमद्भागवत—(दशम स्कंध, ७९ वां अध्याय) श्रीबलदेवजी कावेरी नदी में स्नान कर श्रीरंग नामक विख्यात स्थान में गये, जहां श्रीहरि नित्य निवास करते हैं।

मत्स्यपुराण—(२२ वां अध्याय) श्रीरंग नामक तीर्थ में श्राद्ध करने से मनुष्य को अनंत फल लाभ होता है।

पद्मपुराण—(पाताल खंड उत्तरार्द्ध, प्रथम अध्याय) द्रविड़ देश के मनुष्यों ने विभीषण को जंजीर से बांध लिया। श्रीरामचन्द्र अयोध्या में दूतों के मुख से यह समाचार सुनकर मुनिगण और वानरों को संग ले विभीषण को ढूँढते हुए श्रीरंग नामक नगर में पहुँचे। वहां के उपस्थित राजाओं ने उनकी पूजा की। रामचन्द्र ने बहुत खोजने के पश्चात् बहुत जंजीरों से बंधा हुआ भूगर्भ में विभीषण को पाया। उनके पूछने पर वहां के ब्राह्मणों ने कहा कि एक वृद्ध धार्मिक ब्राह्मण ध्यान में मग्न बैठा था। विभीषण ने उसको अपने चरण से ऐसा मारा कि वह मरगया। तब हम लोगों ने इस ब्रह्मघाती को बहुत मारा, परंतु यह नहीं मरा। इसको मारडालना उचित है। रामचन्द्र बोले कि मैंने इसको कल्प पर्यंत राज्य करने को कहा है; आप लोग इसके बदले में मेरा दंड कीजिए। तब वहां के ब्राह्मणों ने विभीषण से प्रायश्चित्त करवा कर उसको शुद्ध कर दिया। रामचन्द्र अयोध्या में आए।

वाल्मीकि रामायण—(उत्तर कांड, १२१ वां सर्ग) श्रीरामचन्द्रजी के परमधाम जाने के समय सुग्रीव आदि वानर और विभीषण आदिक राक्षस उनके साथ जाने के लिये अयोध्या में आए। उस समय रामचन्द्र ने विभीषण से कहा कि हे राक्षसेन्द्र! जब तक यह प्रजागण हैं, तब तक तुम लंका में राज्य करो और इक्ष्वाकु वंश के इष्टदेव इन श्रीजगन्नाथ का, जो इन्द्रादि देवताओं के पूज्य हैं, आराधना करते रहो। विभीषण ने रामचन्द्र का वचन स्वीकार किया।

श्रीरंगमाहात्म्य—(प्रथम अध्याय) चंद्रपुष्करणी के तट पर श्रीरंग क्षेत्र है, जिसमें जाने से मनुष्य को गर्भवास नहीं होता। चंद्रपुष्करणी में स्नान करके रंग मन्दिर का दर्शन करने से संपूर्ण पदार्थ मिलता है। कावेरी नदी में स्नान करके पितरों को तिलाजली देने से उनका उद्धार हो जाता है। कन्याराशि के सूर्य होने पर कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को रंगधाम में पितरकर्म करना उत्तम है। माघ के महीने में कावेरी नदी और चंद्रपुष्करणी का स्नान और रंगक्षेत्र का निवास अति दुर्लभ है।

(दूसरा अध्याय) प्रलय के अंत में भगवान नारायण ने प्रलय के समुद्र में शेष के ऊपर शयन किया। उनकी नाभी की नाल से ब्रह्माजी प्रकट हुए। (तीसरा अध्याय) एक समय ब्रह्माजी ने क्षीर समुद्र में विष्णु का तप किया। विष्णु भगवान् कूर्मरूप से प्रकट हुए। ब्रह्मा ने कहा कि हे भगवन्! तुम मुझको अपना दिव्य रूप देखाओ। विष्णु ने कहा कि "ओं नमोनारायणाय" इस अष्टाक्षर मन्त्र से तुम फिर तप करो; तब हमारा परम रूप देखोगे। जब ब्रह्मा ने एक हजार वर्ष तक फिर तप किया, तब क्षीर सागर से श्रीरंगम् नामक परम धाम प्रकट हुआ। ब्रह्मा ने श्रीरंग का दिव्य विमान देखकर उसको प्रणाम किया। विष्णु भगवान् उस आलय में सोते थे। (चौथा अध्याय) ब्रह्मा ने धाम के द्वार के एक ओर जय को और दूसरी ओर विजय को और धाम के भीतर शेषशायी भगवान् को देखा। वह अपनी भुजाओं को तकिए बनाए थे और अपना एक हाथ फैलाए हुए थे। उनके निकट लक्ष्मीजी बैठी थी इत्यादि। (पांचवां अध्याय) ब्रह्मा ने वर मांगा कि मै तुम्हारी इसी भांति की विग्रह से तुम्हारा पूजन करना चाहता हूँ। भगवान् बोले कि तुम्हारी इच्छा से मैने तुमको विमान के साथ अपना साकार रूप देखलाया है, तुम इसी प्रकार की हमारी प्रतिमा स्थापन करो।

(६ वां अध्याय) ब्रह्मा ने सत्यलोक में जाकर विरजा नदी के पार विष्णु का धाम बनवाकर तुला राशि के सूर्य में भगवान की स्थापना करवाई और देवताओं को आज्ञा दी कि तुमलोग श्रीरंगशायी भगवान् की पूजा करो। बहुत काल तक सूर्य और उनके पश्चात् बहुत समय तक सूर्य के पुत्र वैवस्वतमनु सत्य लोक में श्रीरंगशायी भगवान की पूजा करते रहे। मनु ने अपने पुत्र इक्ष्वाकु को वैष्णव धर्म का उपदेश दिया। इक्ष्वाकु ने बड़ा तप करके ब्रह्माजी से श्रीरंग को पाया और उनको अपनी राजधानी अयोध्या में लाकर स्थापित किया। तबसे श्रीरंग इक्ष्वाकु वंशियों के इष्टदेव हुए। (८ वां अध्याय) त्रेतायुग में अयोध्या के राजा दशरथ ने अपने यज्ञ के समय चोल देश के राजा धर्मवर्म्मा को बुलाया। धर्मवर्म्मा ने देखा कि श्रीरंग के प्रभाव से अयोध्या का वैभव अत्यंत बढ़ गया है। उसके पश्चात् वह अपने देश

में चंद्रपुष्करणी के तट पर जाकर रंगधाम के पाने के लिये तप करने लगा। तब मुनियों ने कहा कि भगवान ने हम लोगों को बर दिया है कि थोड़े दिनों के पश्चात् कावेरी में चन्द्रपुष्करणी के तट पर हमारा रंगधाम आवेगा। राजा धर्मवर्म्मा मुनियों के वचन सुन कर कावेरी के दक्षिण तीर के निचुला नामक अपनी पुरी में चला गया। उसके पश्चात् राजा दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र ने लंका के राजा विभीषण को श्रीरंगधाम देदिया। विभीषण ने राक्षसो के सहित श्रीरंगधाम को लेकर अयोध्या से प्रस्थान किया और दक्षिण देश में पहुंच चन्द्रपुष्करणी के तट के अनंत पीठ पर उसको रक्खा। राजा धर्मवर्म्मा ने विभीषण का अतिथि सत्कार किया। विभीषण वहांसे चलने के समय जब श्रीरंग के विमान अर्थात् मन्दिर को उठाने लगा, तब किसी प्रकार से वह नहीं उठा। उस समय वह दुःखी होकर रंगजी के चरणों पर गिरपड़ा। श्रीरंगजी बोले कि हे विभीषण! कावेरी नदी और चन्द्रपुष्करणी के निकट यह मनोहर तथा पवित्र देश है; यहां का राजा धर्मवर्म्मा हमारा परम भक्त है और मैंने पूर्व काल में कावेरी को वरदिया था कि तुम्हारे मध्य में हमारा रंगधाम बसेगा; इस लिये तुम लंका में चले जाओ; हम तुम्हारी ओर मुख करके सोवेंगे। तब विभीषण लंका को चला गया।

इतिहास—ग्यारवहीं शदी में श्रीरंगम् के यामुनाचार्य के पुत्र वर-रंगस्वामी ने श्रीरंगपुरी में श्रीरामानुजस्वामी को लाकर श्रीरंगनाथ का कार्य समर्पण करदिया; तबसे रामानुजस्वामी वहांही रह कर भारतवर्ष में अपने मत का प्रचार और उपदेश करने लगे। सन् ११३७ ईस्वी में श्रीरंगनगर अर्थात् श्रीरंगम् में उनका देहान्त हुआ; उस समय उनकी अवस्था १२० वर्ष की थी। (भारतभ्रमण के १० वें अध्याय की भूतपुरी के वृत्तांत में देखिए) श्रीरंगजी का वर्तमान मन्दिर सत्रहवीं और अठारहवीं शदी का बना हुआ है। संपूर्ण मन्दिर एकही समय में नहीं बना था; वह क्रम क्रम से समय समय पर बढ़ाया गया। सन् १८७१ में श्रीरंगम् में म्युनिसिपल्टी नियत हुई।

जम्बुकेश्वर।

श्रीरंगम् के मंदिर से १ मील पूर्व श्रीरंगम् के टापू के भीतर मदरास हाते

के तिरुचनापल्ली जिले में (१० अंश ५१ कला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ४४ कला, पूर्व देशांतर में) जम्बुकेश्वर का प्रसिद्ध मन्दिर है । वह मंदिर शिल्पकारी और मनोज्ञता में श्रीरंगजी के बड़े मन्दिर का मुकाबला कर रहा है । मंदिर का विस्तार १०० बीघे से अधिक होगा । मन्दिर के ३ चोगान हैं।

पहला घेरे के फाटक का रास्ता, जिसमे मन्दिर के पहिला आंगन में प्रवेश करना होता है, ४०० स्तंभ वाले मंडपम् को सीधा चला गया है। फाटक के दहिने ४ फीट ऊंचे पत्थर पर तामिल अक्षर का लंबा लेख है। आंगन में दहिनी ओर अर्थात् दक्षिण एक तेप्पाकुलम् नामक एक प्रसिद्ध सरोवर है, जिस में झरने का पानी गिरता है । सरोवर के मध्य में एक मण्डप और दक्षिण पूर्व तथा उत्तर वगल में दोमंजिला दालान बना हुआ है। आंगन में बांई ओर एक अधबना बड़ा मंडपम् है । उसमे आगे मंदिर के दूसरे आंगन में ७९६ स्तम्भों का मंडप और एक छोटा सरोवर है, जिसके वगलों में स्तम्भ लगे हैं। आंगन के दो तरफ दो गोपुर हैं।

मन्दिर के ५ घेरे हैं;—भीतरी वाला पहला घेरा, जिसमें विमान अर्थात् जम्बुकेश्वर का निज मन्दिर है, लगभग १२५ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है । उसकी चारो ओर की दीवार ३० फीट ऊंची है । दूसरा घेरा ३०० फीट लंबा और २०० फीट चौड़ा है । उसकी दीवार ३५ फीट ऊंची है, जिसमें ६५ फीट ऊंचा एक गोपुर बना हुआ है । उस घेरे में कई एक छोटे मंडपम् है । तीसरा घेरा ७५० फीट लंबा है । उसकी दीवार ३० फीट ऊंची है, जिसमें २ गोपुर बने हुए हैं, जिनमें से एक १०० फीट और दूसरा ७३ फीट ऊंचा है । चौथा घेरा २४५० फीट लंबा और १५०० फीट चौड़ा है। उसकी दीवार ३५ फीट ऊंची और ६ फीट मोटी है । उस घेरे में एक छोटा सरोवर और मन्दिर है । इस स्थान पर प्रति वर्ष श्रीरंगजी के मन्दिर से उत्सव मूर्तियों की सवारी आती हैं । पांचवें घेरे में, जिसके पश्चिम वगल पर एक छोटा गोपुर है, मकानों के ४ सड़कें हैं।

मंदिर के ३ गोपुर लाँघ जाने पर तीसरे आंगन में अँधियारा मंडपम् से चलकर जम्बुकेश्वर के पास पहुंचना होता है। मंदिर के प्राय. आधे भाग में जलही में चलना होता है। जम्बुकेश्वर शिवलिंग के पास एक हाथ से अधिक गहरा जल है। शिवलिंग के ऊपर का भाग पानी के ऊपर देख पड़ता है। मन्दिर का पानी मोरी द्वारा बाहर निकला करता है। जम्बुकेश्वर के पीछे चबूतरे पर जंबु का वृक्ष है।

दक्षिण के ५ प्रसिद्ध लिंगों में से जम्बुकेश्वर शिवलिंग हैं। पांच लिंग ये हैं,—(१) शिवकांची में एकाम्रेश्वर पृथ्वीलिंग,(२) जंबुकेश्वर जल लिंग, (३) दक्षिणी आरकाट जिले में तिरुवन्नामलई कसबे के पास की पहाड़ी पर अग्निलिंग; (४) कालहस्ती में कालहस्तीश्वर वायुलिंग और (५) चिदंबर में नटेश आकाश लिंग।

इतिहास—जम्बुकेश्वर के मन्दिर के भीतर का भाग बहुत पुराना है। श्रीरंगम् के वर्त्तमान मन्दिर के काम आरम्भ होने से पहिले वह तैयार हो गया होगा; किंतु बाहर का भाग श्रीरंगम् के मन्दिर के काम आरम्भ होने के बाद का अर्थात् १७वीं शदी के आरम्भ का बना हुआ ज्ञात होता है। मन्दिर के कई एक भागों में कई एक शिला लेख हैं, जिनमें के एक लेख सन् १४८० ईस्वी का लिखा हुआ है।

जम्बुकेश्वर के मन्दिर के खर्च के लिये सन् १७५० में ६४ गांव थे; किन्तु सन् १८२० में केवल ३५ गांव रह गए थे। सन् १८५१ से इन गांवों के बदले में मन्दिर के खर्च के लिये लगभग १०००० रुपया वार्षिक मिलता है।

पुदुकोटा।

तिरुचनापल्ली शहर से लगभग ७० मील दक्षिण कुछ पूर्व (१० अंश, २३ कला, उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ५१ कला, ५१ विकला पूर्व देशांतर में) मदरास हाते में देशी राज्य की राजधानी पुदुकोटा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पुदुकोटा कसबे में १६८८८ मनुष्य थे; अर्थात् १५३९३ हिन्दू, ११२९ मुसलमान और ४०३ कृस्तान।

पुदुकोटा कसबा अत्यंत साफ और अच्छा बनावट का है। उसमें राजा का सुन्दर महल एक जेलखाना एक बीमारखाना और एक कालिज है। जिसमें सन् १८८२—१८८३ में ३३७ विद्यार्थी पढ़ते थे।

पुदुकोटा का राज्य—यह राज्य मदरास हाते के तंजोर, तिरुचनापल्ली और मदुरा ये तीनों अंगरेजी जिलों से घेरा हुआ है। देश प्रायः समतल है। जगह जगह छोटी पहाड़ियां हैं, जिनमें से चंद पर पुराने किले देखने में आते हैं। राज्य के दक्षिण-पश्चिम के भाग में पहाड़िया और जंगल हैं किन्तु अन्य भाग में उपजाऊ भूमि है। राज्य में लगभग ३००० तालाब बने हुए हैं, जिनमे से कई एक बहुत बड़े हैं।

सन् १७८१ की मनुष्य-गणना के समय पुदुकोटा राज्य का क्षेत्रफल ११०१ वर्गमील था, जिसमें एक कसबा और ८९६ गांव और ३०२१२७ मनुष्य थे; अर्थात् २८१८०९ हिंदू, ११३७२ कृस्तान, और ८९४६ मुसलमान। हिंदुओं में ८२९९४ वनिया (जाति विशेष), ५३९६१ संवडवम (मछुहा), ३०१३९ वेल्लाल (खेतिहर), २६५६८ परवन्, २६१५८ इडैयन् (भेड़िहर) और बाकी में अन्य जातियों के लोग थे।

पुदुकोटा के राजा कलाल हैं। उनके राज्य से ९७५००० रुपया मालगुजारी आती है; किंतु जमीन की बहुत आमदनी राजा के परिवार के लोगों के पिंशिन में मन्दिरों के खर्च तथा अन्य धर्मार्थ काम में खर्च होजाती है। सन् १८८२—१८८३ में राजा को राज्यसे ४००००० रुपया मालगुजारी मिली थी। राजा रामचन्द्र तोंडमान् बहादुर के पश्चात् पुदुकोटा के वर्तमान नरेश राजा मार्तंडभैरव तोंडमान् बहादुर जिनकी अवस्था १४ वर्ष की है, पुदुकोटा के सिंहासन पर बैठे।

इतिहास—सन् १७५३ में पुदुकोटा के राजा से अंगरेज सरकार का संबंध हुआ। पीछे राजाने लड़ाईयों में अंगरेजों की सहायता की। सन् १८०१

में अंगरेजी गवर्नमेंट ने राजा को किळानेकी जिन्स और किला देदिया, जिनको तंजोर के राजा प्रतापसिंह और उसके बाद अगरेजी अफसरों ने उनको दिया था। पुदुकोटा के राजा का राज्य तोंडमान का राज्य भी कहलाता है। तामिल भाषा में तोंडमान का अर्थ हुकूमत करने वाला है।

डिंडीगल।

तिरुचनापल्ली जंक्शन से ५८ मील दक्षिण-पश्चिम डिंडीगल का रेलवे स्टेशन है। मद्रास हाते के मदुरा जिले में समुद्र के जल से ८८० फीट ऊपर ताल्लुक का सदर स्थान डिंडीगल एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय डिंडीगल कसबे में २०२०३ मनुष्य थे; अर्थात् १४५८९ हिन्दू, ३३६३ कृस्तान और २२५१ मुसलमान।

डिंडीगल में सरकारी कचहरियां, पुलिस का स्टेशन, स्कूल, अस्पताल, बंगला और २ गिरजा हैं; तंबाकू, कहवा और चमड़े की बड़ी तिजारत होती है। डिंडीगल का जल वायु मदुरा के जल वायु से अधिक ठंढी और स्वास्थ्य कर है। कसबे से पश्चिम आस पास के मैदान से २८० फीट ऊंची पहाड़ी पर डिंडीगल का किला है, जिसको नायक वंश के राजा ने बनवायाथा।

इतिहास—डिंडीगल पहिले मदुरा राज्य के (बराय नाम के) आधीन एक स्वाधीन देश की राजधानी था। उसके पश्चात् डिंडीगल का किला क्रम से चंदा साहब, महाराष्ट्र लोगों और मैसूर के अधिकार में रहा। उसके बीच बीच में देशी प्रधान लोगों के आधीन में रहता था। सन् १७५५ में मैसूर के हैदरअली ने किले में अपनी फौज रक्खी। सन् १७८३ में अंगरेजों ने हैदरअली के पुत्र टीपूसुलतान से किला ले लिया, किन्तु सन् १७८४ में टीपू को मिल गया था। सन् १७९२ में पैक्ट सन्धि द्वारा वह किला फिर अगरेजी सरकार को मिल गया।

मदुरा।

डिंडीगल के रेलवे स्टेशन से ३८ मील दक्षिण-पूर्व (तिरुचनापल्ली जंक्शन

से ९६ मील और मदरास शहर से ३४९ मील दक्षिण-पश्चिम) मदुरा का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते में (९ अंश, ५९ कला, २६ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ९ कला, ४४ विकला पूर्व देशांतर में) पांड्य मंडल के अन्तरगत वैगा नदी के दक्षिण किनारे पर जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा मदुरा है, जिसका नाम संस्कृत पुस्तक में मथुरा लिखा हुआ है। वैगा नदी मदुरा कसबे से दक्षिण-पूर्व रामेश्वर के टापू के पास जाकर समुद्र में मिल गई है। वह नदी स्थान स्थान पर गुप्त होगई है। उसके बालू खोदने पर पानी मिल जाता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मदुरा कसबे में ८७४२८ मनुष्य थे; अर्थात् ४३८८० पुरुष और ४३५४८ स्त्रियां। इनमें ७७४३३ हिन्दू, ७०६९ मुसलमान, २९१९ कृस्तान, ९ जैन और २ अन्य थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ३१ वां और मदरास हाते के अंगरेजी राज्य में तीसरा शहर है।

वैगा नदी के पास कालाक्षत्रम् नामक धर्मशाला है, जिसमें रामेश्वर के यात्री टिकते हैं और गाड़ी भाड़ा करते हैं। इसके अतिरिक्त उसके आस पास कई अन्य धर्मशाले हैं। जज साहब की कोठी के हाते में एक सरोवर के पास बट का एक बड़ा वृक्ष है; उसकी जड़ का घेरा ७० फीट और साया का व्यास १८० फीट है। मदुरा में चौड़ी सड़कों के किनारों पर दुकानें बनी हुई हैं और बड़ा मन्दिर, जेलखाना, सरकारी कचहरियां, अनेक अस्पताल, स्कूल तथा गिरजे हैं।

मदुरा शहर में सुन्दर पगड़ियां, जिनके किनारों पर सुनहला काम बनता है और एक प्रकार के अजीब लाल कपड़े तैयार होते हैं। रामेश्वर के यात्री मदुरा में रेल से उतर कर यहां से पैदल अथवा बैलगाड़ी पर समुद्र के तीर पहुंचते हैं मार्ग में अच्छी जिनिस नहीं मिलती है इस लिए कोई कोई मदुरा से अपनी गाड़ी पर ले जाते हैं।

एक अच्छी सड़क मदुरा कसबे से पूर्वोत्तर तिरुचनापल्ली और बिली-

पुरम् होकर मदरास शहर को और दक्षिण-पश्चिम मनियार्चा होकर कन्याकुमारी के पास तक गई है।

मीनाक्षीदेवी और सुन्दरेश्वर शिव का मन्दिर।

रेलवे स्टेशन से करीब १ मील पश्चिम ८४५ फीट लम्बा और ७२५ फीट चौड़ा अर्थात् लगभग २२ बीघे में यह मन्दिर है। बाहर की दीवार करीब २१ फीट ऊंची है। उसके चारो बगलों पर प्रतिमाओं से पूर्ण रंगों से चित्रित ग्यारह मंजिला ग्यारह कलश वाला एकही समान एक एक गोपुर है। उनमें से एक गोपुर १५२ फीट ऊंचा, १०५ फीट लम्बा और ६६ फीट चौड़ा उनके अतिरिक्त मन्दिर में स्थान स्थान पर ५ छोटे गोपुर बने हुए हैं।

मन्दिर के २ भाग हैं,—दक्षिण के भाग में मीनाक्षीदेवी का और उत्तर के भाग में सुन्दरेश्वर शिव का मन्दिर है। मन्दिर पत्थर का है, जिसमें संगतरासी का उत्तम काम बना हुआ है। यहां मन्दिर के नकशे के नम्बरों से मन्दिर के स्थान जान पड़ेंगे।

(नं० १) मीनाक्षी के मन्दिर के फाटक से अष्ट लक्ष्मी मंडपम् होकर रास्ता गया है। दोनों तरफ छत को थांभती हुई लक्ष्मी की ८ प्रतिमा हैं, इससे उसका नाम 'अष्ट लक्ष्मी मण्डपम्' पड़ा है। वह ३० फीट लम्बा है। फाटक के रास्ते के दहिने सुब्रह्मण्य (स्कन्द) की और बांए गणेशजी की मूर्ति है। फाटक का रास्ता 'मीनाक्षी नायक मण्डपम्' को गया है। उसमें रास्ते के दोनों बगलों में स्तंभों के कतार हैं। मण्डपों में से एक मण्डप १६६ फीट लम्बा है, जिसके अखीर के पास पीतल जड़ा हुआ बड़ा दरवाजा है, जहां रात में बहुत से दीप जलते हैं। एक अन्धियारा मण्डपम् छोटे गोपुर के नीचे से प्रकाश वाले स्थान को गया है, जहां दोनो तरफ तीन तीन मूर्ति हैं। उसके पास के आंगन में स्वर्णपुष्करणी नामक सुन्दर तालाब है, जिसमें उत्सव मूर्तियां बेड़े में बैठाकर घुमाई जाती हैं। वहां रानी मङ्गमलका बनवाया हुआ एक छोटा कमरा है, वह रानी सन् १७०६ म पर पुरुष क साथ कुव्यवहार करने के कारण अपनी प्रजाओं द्वारा मारी गई। तालाब के चारो ओर मेहराबदार मण्डपम् और पश्चिमोत्तर बगल पर घण्टाघर है। छत के नीचे रास्ते के दोनों
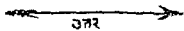
उत्तर
मिनाक्षी देवी और सुंदरेश्वर शिव के मंदिर का नकशा
मिनाक्षी
सुंदरेश्वर
फीट का स्केल
० ५० १०० १५० २०० ३०० ४०० ५००
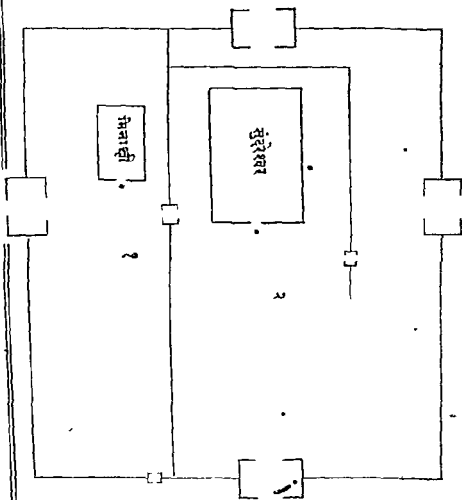
मधुरायां श्रीमीनाक्षीदिव्या मंदिरस्य
दक्षिणदिग्द्वारगोपुरम्.

खेमराज श्रीकृष्णदासके "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणालय-मुम्बईमें छापागया.

बगलों में दिलेर सूरतों के साथ १२ स्तंभ हैं, जिनमें से ६ दक्षिणी सिंह हैं। उनके बीच बीच में पांचों पांडवों की प्रतिमा हैं;—पहिले दहिने युधिष्ठिर और उसके सामने बाएं अपने प्रसिद्ध धनुष के साथ अर्जुन; तब दहिने सहदेव और बाएं नकुल, उसके बाद दहिनी ओर भीमसेन अपने गदा के साथ देख पड़ते हैं। उसके सामने बाएं देवी का स्थान और द्वारपाल हैं। उस घेरे के पश्चिम भाग में दक्षिण वाले बड़े गोपुर से पश्चिमोत्तर मीनाक्षी का निज मन्दिर है। कई देवढ़ी के भीतर मीनाक्षी की श्यामवर्ण सुन्दर मूर्ति पूर्व मुख से खड़ी है। मंदिर में कई देवमूर्तियां हैं और प्रकाश के लिये सर्वदा दीप जलते हैं। मन्दिर के आगे सोना का मुलम्मा किया हुआ एक बड़ा स्तंभ है।

(नंबर २) सोनहला स्तंभ से उत्तर सुंदरेश्वर शिव के मंदिर के घेरे का छोटा गोपुर है। उस मंदिर के बगल के मंदिर में देवताओं और ऋषियों की बहुत सी मूर्तियां हैं। उस मंदिर के पास के कमरों में मीनाक्षी और सुन्दरेश्वर के वाहन रक्खे हुए हैं, उनमें से २ सुनहली पालकी का मूल्य दस दस हजार रुपया और २ चांदनी का मूल्य, जिनके बेश कीमती ओप हैं, बारह बारह हजार रुपया है। वहां चांदी से मढ़ा हुआ एक हंस और एक नन्दी बैल है। पूर्व वाले बड़े गोपुर से लगभग ५० गज दूर पर सहस्र स्तंभों का मंडपम् है, जिसमें के बहुतेरे स्तंभ देखने में नहीं आते; क्योंकि कई जगह स्तंभों के बीच में ईंटे जोड़ कर गृह बनाये गये हैं। उसकी संगतराशी बहुत उत्तम है। उस मंडपम् को विश्वनाथ नायक का मंत्री आर्यनायक मुदली ने बनवाया, जिसकी घोड़े पर चढ़ी हुई प्रतिमा दरवाजे के बाएं बनी है। उसके पीछे की पंक्ति में स्त्रियों और पुरुषों की चन्द दिलरुबे मूर्तियां बनी हुई हैं। पश्चिम वाले गोपुर के पूर्व सुन्दरेश्वर शिव का निज मंदिर है। कई देवढ़ी के भीतर उस मंदिर के पश्चिम भाग में बड़े अर्घे के ऊपर सुन्दरेश्वर शिव लिंग हैं, जिनके पास दिन रात बहुत से दीप जलते हैं। मंदिर में कई अन्य देवते हैं। मंदिर के द्वार पर एक बड़ा सुनहला स्तंभ है।

बड़ा मंदिर से पूर्व तिरुमलई नायक का बनवाया हुआ ३३३ फीट लंबा

और १०५ फीट चौडा एक उत्तम मंडपम् है। उसके छत के नीचे ४ कत्तारों में भिन्न भिन्न तरह की संगतरासी के १२० स्तंभ लगे हैं, जिनमें से मध्य के २ कत्तारों में दोनों तरफ पांच पांच स्तंभों में नायक वंश के राजाओं की मूर्तियां बनी हुई हैं, जिनमें तिरुमला नायक की मूर्ति के ऊपर चांदनी बनी हुई है। उसके पीछे दो मूरत हैं। बाएं की मूरत तंजोर की शाहजादी तिरुमलई नायक की स्त्री की है। दरवाजे के पास शिकार खेलने वालों और शिकारों का झुण्ड है। कहा जाता है कि उसके बनाने में १०००००० इस्टर्लिंग खर्च पडा था। उसके बगलों में दीवार है, उसके भीतर मनहरी आदि की दुकानें रहती हैं।

तिरुमलई नायक का महल—रेलवे स्टेशन से १½ मील पश्चिम मदुरा के तिरुमलई नायक का महल है। अब यह सरकारी आफिसों के काम में आता है। उसका दरवाजा पूर्व बगल पर है। पूर्व बगल के प्रत्येक कोने के पास एक एक नीचा टावर है। नेपियर फाटक होकर २५२ फीट लंबा और १५१ फीट चौडा चौगान में जाना होता है, जिसके चारो बगलों पर दालान हैं। महल के पश्चिम बगल में ६७ फीट चौडी दोहरी दालान और ऊंचा हाल है। उसके बाद एक बडे गुम्बज के नीचे एक दूसरी इमारत मिलती है, जो तख्त का कमरा था। उसका व्यास ६१ फीट और ऊंचाई ७३ फीट है। गुम्बज के चारो ओर बालाखाना है। तिरमलई नायक के राज्य के समय उसमें स्त्रियां बैठ कर राज्य के स्वागतों को देखती थीं। बडे गुम्बज के पश्चिम, उत्तर और दक्षिण एक एक गुम्बजदार कमरा है, जिनमें से दक्षिण वाला अच्छे प्रकार से दुरुस्त किया गया है। उत्तर को जाते हुए उसके पश्चिम ५४ फीट ऊंचा एक कमरा मिलता है, जिसमें तिरमलई नायक का बिस्तर रहता था। सीढी घर के पास के दरवाजे से मजिस्ट्रेट की कचहरी में जाना होता है। यह महल का सबसे उत्तम हिस्सा है और अच्छी तरह से मरम्मत किया गया है।

वैगा नदी के पुल से करीब १ मील दूर उस नदी के किनारे पर कलवटर का मकान है, जिसको तिरमलई नायक ने जंगली जानवरों की लडाई देखने के लिये बनवाया था।

तेप्पकुलम्—तेप्पकुलम् का अर्थ तामिल भाषा में बेडा का तालाब है। जिस तालाब में मंदिर की उत्सव मूर्तिया नाव में बैठा कर फिराई जाती हैं, उसको लोग तेप्पकुलम् कहते हैं । मदुरा के रेलवे स्टेशन से ३ मील पूर्व रामेश्वर के मार्ग में वैगा नदी के उत्तर १२०० गज लम्बा और इतनाही चौडा॰ तेप्पकुलम् तालाब है । उसके चारो तरफ पत्थर के घाट, तथा सड़क; मध्य में मोरब्बा टापू पर एक शिखरदार बडा मंदिर और प्रत्येक कोने पर एक छोटा मंदिर है। टापू पर सुन्दर वाटिका लगी है । तालाब में सर्वदा पानी रहता है। प्रति वर्ष उत्सव के समय उस तालाब के किनारे एक लाख दीप जलाये जाते हैं । उसी समय मदुरा के बडे मंदिर की उत्सव मूर्तियो को मंदिर से ले जाकर तालाब म बेडेपर घुमाते हैं।

मदुरा जिला—इसके उत्तर कोयम्बुतूर, तिरुचनापल्ली और तंजौर जिला, पूर्व और पूर्व दक्षिण समुद्र की खाडी; दक्षिण और दक्षिण पश्चिम तिरुनलवेली जिला और पश्चिम तिरुवांकूर का राज्य है । जिले का सदर स्थान मदुरा कसबा है । जिले के दक्षिण पूर्व की सीमा पर पश्चिमी घाट का सिल सिला, जो वहां तिरुवांकूर की पहाड़ी कहलाता है, तिरुवांकूर के राज्य से मदुरा जिले को जुदा करता है । मदुरा जिला की भूमि प्रायः समतल है, किंतु जगह जगह छोटी पहाडिया हैं और जमीन दक्षिण पूर्व को ढालू होती गई है। सबसे बडी पहाड़ी की चोटी समुद्र के जल से लगभग ८००० फीट ऊंची है। मदुरा कसबे के आस पास डिंडीगल आदि ३ पहाड़ियां हैं । जिले की प्रधान नदी वैगा है, जो जिले के मध्य होकर दक्षिण पूर्व को बहती है । मैदानो में वृक्ष प्रायः नहीं हैं । पश्चिम की पहाड़ियो में अब तक हाथी, भालू, बाघ और तेंदुए मिलते हैं । जिले के सब भागा में लोहा के ओर मिलते हैं। चंद नदियो के बालू धोकर सोना निकाला जाता है। मदुरा जिले में ६ तालुका और रामनाद तथा शिवगंगा २ जमीन्दारी हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय मदुरा जिले के ८४०१ वर्गमील में २१६८६८० मनुष्य थे, अर्थात् १९४२८३० हिंदू, १४०९४८ मुसलमान,

८४९०० कृस्तान, ९ बौद्ध और जैन और ३ अन्य। इनमें १९९२१५३ शैव और ३३२६१६ वैष्णव थे । हिन्दूओं में ४९८०१४ वेल्लाल (खेतिहर), ४७८५९९ वनियां (जाति विशेष मजदूरी पेसे वाले), १४४२८३ इडैयन (भेड़िहर), ११८६५९ सॅवड़वन (मल्लाह), ८६२६८ सानान (मदक), ७८९७१ कंभाड़न (लोहार), ५०२६१ कैक्लर (बिनने वाले), ५००८३ मेटी (सौदागर), ४२५५५ ब्राह्मण, ३३६७५ अंबटन (नाई), ३३५०८ सतानी (दोगला), २८३०० वनान (धोबी), २५९४१ कुसवन (कुंभार), ४१२३ छेत्री और २३७६६६ अन्य मनुष्य थे, जिनका कोई खास पेसा नहीं था। कृस्तानों में १७६ यूरोपियन, ३७७ यूरेशियन और ८४३४७ देशी कृस्तान थे। मदुरा जिले में तामिल भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मदुरा जिले के कसबे मदुरा में ८७४२८, डिंडीगल में २०२०२, पलनी में १९९४०, पेरियाकुलम् में १६३६२ रामनाद में १३६१९, किलकराय में १२३९३, अरुपुकोटई में १२६७३ और परमकुड़ी में १०००१ मनुष्य थे । इनके अतिरिक्त देवीकोट, शिवगंगा और तिरुमंगलम् छोटे कसबे हैं ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(सभा पर्व, ५१ वां अध्याय) चोलनाथ और पांड्यनाथ राजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय इन्द्रप्रस्थ में आए। वे लोग राजा को भेंट देने के लिये सुवर्ण के घड़ों में मलयगिरि से सुगंधयुक्त चंदन रस, दर्दूर पर्वत से चन्दन और अगर का ढर; चमकीले मणि, रत्न तथा सुवर्ण के तुल्य सुन्दर पतले चीर लाये थे । (वनपर्व, ८८ वां अध्याय) पांड्य देश में अगस्त्य तीर्थ और वरुण तीर्थ हैं, उसी देश में ताम्रपर्णी नदी बहती है । (कर्णपर्व, २० वां अध्याय) पांड्य देश के राजा मलयध्वज कुरुक्षेत्र के संग्राम में राजा युधिष्ठिर की ओर लड़ते थे। वे कौरवों की असंख्य सेना के विनाश करने के पश्चात् अश्वत्थामा के हाथ से मारे गये।

वाल्मीकिरामायण—(किष्किन्धा काण्ड, ४१ वां सर्ग) सुग्रीव ने श्रीजानकीजी को खोजने के लिये अंगद, हनूमान आदि वानरों को दक्षिण दिशा

में भेजा और उनसे कहा कि तुम लोग दक्षिण में जाकर पांड्यों के नगर में प्राकार का द्वारा देखोगे, जिसका सुवर्णमय किवाड़ मुक्तामणि से खचित है; उसके पश्चात् तुम लोगों को समुद्र मिलेगा; तब उसके पार जाने का उद्योग तुम लोग को करना चाहिए।

आदि ब्रह्मपुराण—(१३वां अध्याय)चन्द्रवंशी राजा ययाति का पुत्र तुर्वसु, तुर्वसु का वह्नि, वह्नि का गोभानु, गोभानु का त्रैसानु, त्रैसानु का करंधम और करंधम का पुत्र मरुत हुआ। राजा मरुत की केवल सम्मता नामक एक कन्या थी। वह राजा संवर्त को दी गई। उस पुत्री से दुष्यंत पुत्र जन्मा। इस भांति राजा ययाति के शाप से तुर्वसु का वंश पौरव वंश में मिल गया। उसके पश्चात् दुष्यन्त का पुत्र करुत्थाम, करुत्थाम का पुत्र अथाक्रीड और अथाक्रीड के ४ पुत्र हुए; अर्थात् पाण्ड्य, केरल, कौल और चोल, जिनके नाम से पांड्य, केरल, कोल और चोल ये ४ देश विख्यात हुए हैं।

शिवभक्तविलास—(३० वां अध्याय) दक्षिण दिशा के मधुरा नामक नगर में मीनाक्षी नाम्नी देवी और पांड्य राजाओं से पूजित परमेश्वर विराजमान हैं। मीन अर्थात् मछली के समान सुन्दर नेत्र होने के कारण देवी का नाम मीनाक्षी पड़ा है। वह मलयध्वज की कन्या है। पांड्य वंश के राजा लोग ताम्रपर्णी नदी से उत्पन्न मोतियों से देवी की नित्यही पूजा करते हैं।

मधुरा में मूर्तिनाथ नामक एक धनी वैश्य बड़ा शिवभक्त था। वह हालासनाथ शिव का पूजन किया करता था। अधू देश का जैन राजा मधुरा के पांड्य राजा को निकाल कर वहां का राजा बन गया। उसने ब्राह्मण और देवताओं का पूजन बंद करवा दिया। मूर्तिनाथ के अतिरिक्त सब लोग जैन मतावलंबी होगए। जब जैन राजा के निषेध करने पर भी मूर्तिनाथ ने शिव की पूजा का त्याग नहीं किया तब जैन राजा ने ढिंढोरा फिरवा कर चंदन का बिकना बंद करदिया। मूर्तिनाथ अपने गृह के संचित चन्दन से शिव की पूजा करने लगा। जब घर का चन्दन चुक गया तब उसने सुवर्णपुष्करणी में स्नान करके अपना हाथ काट डालने का उद्योग किया। उस समय आकाशवाणी हुई कि हे मूर्तिनाथ! तुम ऐसा काम मत

करो; जैन राजा शत्रु के हाथ से मारा जावे गा; तुम पांड्य देश के राजा होकर वैदिक धर्म स्थापित करोगे। मूर्तिनाथ हालासनाथ के पास चलागया। गजेश्वर राजा ने मधुरा पर आक्रमण करके जैन राजा अंघूनाथ को मारडाला और मूर्तिनाथ को मधुरा के सिंहासन पर बैठा दिया। जैन लोग मारे गए और वैदिक धर्म स्थापित हुआ। एक सौ वर्ष के पश्चात् मूर्तिनाथ की मुक्तिहुई।

(४८ वां अध्याय) द्रोणीपुर के हरदत्त ब्राह्मण ने मधुरा में जाकर वहां के जैन राजा के मंत्री से पूछा कि मीनाक्षी और सुन्दरेश्व, जिसको हलासनाथ कहते हैं, कितनी दूर है। मंत्री ने उनको देखला दिया। हरदत्त ने मणि के कुम्भों से शोभित गोपुर को देख कर वेगवतीनदी में स्नान करके शिव और पार्वती का पूजन किया और मलयध्वज पांड्य की कन्या मीनाक्षीदेवी तथा उनके पति हलासनाथ की प्रदक्षिणा करके अपने स्थान पर चला गया। हरदत्त के तेज से वहां के जैन राजा को ज्वर लग गया। मंत्री लोग हरदत्त को राजमहल में लेगए। उसने भस्म डालकर राजा को आरोग्य कर दिया। तब जैन राजा ने जैनों को निकाल कर शैव मत ग्रहण किया।

इतिहास—मदुरा हिन्दुस्तान के बहुत पुराने शहरों में से है। वह पुराने समय से हिन्दुस्तान के दक्षिणीय भाग की राजधानी था और वहां के पंडित प्रसिद्ध होते थे। भारतवर्ष के राज्यों में कोई राज्य ऐसा नहीं है, जिसका राजवंश इतनी बड़ी मुद्दत तक बराबर कायम रहा हो। सन् ईस्वी के आरम्भ से चार पांच सौ वर्ष पहिले पांड्य वंश के राजा का राज्य विद्यमान था। कई एक शिला लेखों और तांबे के दानपत्रों पर, जो अब तक विद्यमान हैं, पांड्य वंश के कई राजाओं के नाम देख पड़ते हैं। मदुरस्थलपुराण नामक एक संस्कृत की पुस्तक में पांड्य राजाओं के चन्द ऐतिहासिक विषय हैं। उसमें लिखा हुआ 'इसवंश के अन्तिम राजा सुन्दर पांड्य ने जैनों का नाश किया और अपने पड़ोस के चोल राज्य को जीता, किन्तु ११ वीं शदी के अन्त में उत्तर से आक्रमण करने वाले ने जो कदाचित् मुसलमान था, सुन्दर पांड्य को परास्त किया। १४ वीं शदी के पहिले भाग में दिल्ली के बादशाह के सेनापति मलिक काफूर ने मदुरा पर अधिकार किया। मुसल-

मानों ने मदुरा शहर को लूटा और बड़े मन्दिर के बाहर की दीवार को, जिसमें ४ बुर्ज थे, और बाहर की इमारतों को गिरवा दिया, किंतु भीतर के दोनों मंदिर बच गए। उसके पश्चात् हिन्दुओं ने मुसलमानों को निकाल बाहर किया। बाहर वाले वर्तमान बड़े गोपुर फिर बनवाए गए। ऐसा प्रसिद्ध है कि पांड्य वंश में सिलसिले से १९६ राजा हुए थे।

सोलहवीं शदी के मध्य में विजयानगर के राजा ने विश्वनाथ नायक को हुकूमत करने के लिये मदुरा मे भेजा। उसके साथ प्रसिद्ध जनरल आर्य नायक मुठली गया। सन् १५५९ में मदुरा जिला विजयानगर के राज्य का एक भाग बना। विश्वनाथ नायक ने मदुरा के नायक वंश को नियत किया। सन् १५७३ में विश्वनाथ का देहांत हुआ। उसका जीता हुआ राज्य उसके संतानों के अधिकार में चला आया। उसके वंश में सबसे अधिक प्रतापी तिरुमलई नायक हुआ, जिसका राज्य सन् १६२३ से १६५९ तक था। उसने बहुतेरी इमारतों से मदुरा शहर को संवारा। उसका महल अब तक विद्यमान है। उसने अपने राज्य को तिरुवांकूर, कोयंबुतूर, सेलम, तिरुचनापल्ली, तिरुनलवेली जिलों पर फैलाया। उसके पुरुषे नाम मात्र विजयानगर राज्य के अधिकार में थे; परंतु वह स्वाधीन बन गया, इस लिये बीजापुर के मुसलमान बादशाह ने जो विज्यानगर के राज्य को अपने अधिकार में लाया था, मदुरा पर आक्रमण किया। तिरुमलई नायक ने कर देने को स्वीकार किया। तिरुमलई नायक की मृत्यु होने पर मदुरा राज्य के कई एक मालिक हुए। सन् १७४० में कर्नाटक के चन्दाशाहब ने मदुरा को अपने अधिकार में कर लिया। नायक वंश के राज्य का अंत होगया। उसके पीछे २० वर्ष तक महाराष्ट्र और मुसलमान लोग मदुरा पर आक्रमण करते रहे। सन् १७६२ में कर्नाट के नवाब वलाजाह के लिये अंगरेजी अफसर अमानत दार होकर मदुरा जिले के अधिकारी हुए। सन् १७९० में अंगरेजों ने मैसूर के टीपू से डिंडीगल तालुक ले लिया। सन् १८०१ में कर्नाटक के नवाब ने अपना स्वत्व इष्ट इन्डियन कम्पनी को देदिया। सन् १८६९ में मदुरा कसबे में म्युनिसिपल्टी कायम हुई।

मदुरा के मीनाक्षी और सुन्दरेश्वर के वर्तमान मंदिरो को लगभग सन् १५६० में विश्वनाथ नायक ने, सहस्र स्तंभ मंडपम् को,विश्वनाथनायक के मन्त्री आर्यनायक मुदली ने, मीनाक्षी नायक नामक मंडप को,तिरुमलई नायक से प-हिले के राजा के दीवान मीनाक्षी नायक ने, बड़े मन्दिर के अन्य अनेक सुन्दर हिस्सों को और बड़े मन्दिर से पूर्व वाले बड़े मंडप को १७ वीं शदी में तिरु मलइ नायक ने बनवाया। तेप्पकुलम् सरोवर भी तिरुमलई नायक के राज्य के समय बना।

चौदहवां अध्याय।

(मदरास हाते में) रामनाद, रामेश्वर, देवीपत्तन और दर्भशयन।

रामनाद।

रामेश्वर के यात्री मदुरा में रेलगाडी से उतर कर रामेश्वर जाते हैं। मदुरा से ९० मील दक्षिण पूर्व समुद्र के किनारे के हरवोला की खाडी तक सड़क है। सड़क के बगल में मील के पत्थर लगे है। नित्य सैकड़ों यात्री पैदल और बैलगाडी पर मदुरा से रामेश्वर के लिये प्रस्थान करते हैं। हर-बोला की खाडी तक का बैलगाडी का भाड़ा सात आठ रुपया लगता है। रामनादपुर तक ६७ मील अच्छी सड़क है, किन्तु उससे आगे बालूदार मार्ग है, जिसमें कई यात्रियों की गाड़ी उलट जाती है। रामनादपुर तक बैलगाड़ी और घोड़े गाडी की डाक जाती है। कोई कोई यात्री डाकगाड़ी में जाते हैं, किंतु घोड़े गाड़ी वाले असबाब नहीं लादते हैं। नाव द्वारा खाडी पार होकर पामन से ७ मील पूर्व सडकद्वारा रामेश्वर पहुंचना होता है। (कुछ लोग मागपट्टन में रेलगाड़ी से उतर आगबोट पर चढ़कर पांबन में उतरते हैं।

मदुरा से रामेश्वर का फासिला इस भांति है;—

मील—मोकाम।		मील—मोकाम।	
८	तेप्पकुलम्।	४४	दिवानीकचहरी।
८½	छोटीबस्ती।	४४½	परमगुड़ी।
७½	छोटीबस्ती।	५७¼	पुलुरक्षेत्र।
१२	लिमुवन चट्टी।	६७	रामनादपुर।
१८½	बड़ी बस्ती और चट्टी।	६८	धर्मशाला।
२८¼	मुतनंदन चट्टी।	८१	ऊंचीपल्ली।
२९	बस्ती और मन्दिर।	९०	इरवोला की खाड़ी।
२९½	मानामदुरा।	९३	पावन।
३८	झुडुकोटा बस्ती।	१००	रामेश्वरपुरी।

लिमुवनचट्टी पर धर्मशाला, १८॥ मील के पास की बड़ी चट्टी पर छोटी धर्मशाला, मुतनन्दन चट्टी पर धर्मशाला, २९ मील के पास वैगा नदी के पास एक गिरजा; माना मदुरा में धर्मशाला, झुडुकोटा में धर्मशाला, ४१¼ मील पर नदी का बालू, परमगुड़ी बड़ी बस्ती में धर्मशाला, पुलुर क्षेत्र में धर्मशाला, रामनादपुर में राजा और धर्मशाला, ऊंचीपल्ली में धर्मशाला और पावन में कचहरी तथा धर्मशाला है। परमगुड़ी चट्टी से देवीपत्तन तीर्थ का मार्ग गया है। वहांसे लगभग २० मील दक्षिण कुछ पूर्व समुद्र के पास देवीपत्तन है। दस बारह घण्टे में बैलगाड़ी वहां पहुंच जाती है।

रामेश्वर के मार्ग में मदुरा कसबे से ६७ मील दक्षिण-पूर्व (९ अंश, २२ कला, १६ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ५२ कला, ९ विकला पूर्व-देशांतर में) मदरास हाते के मदुरा जिले में वैगा नदी के दहिने सेतुपति राजाओं की राजधानी रामनाद कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय रामनाद में १३६१९ मनुष्य थे; अर्थात् ११०६८ हिन्दू, १९९६ मुसलमान और ५५५ क्रस्तान।

रामनाद कसबे में राजा का महल, १ मिशन, ३ गिरजे और कई धर्मशाले

है। किले की जगह के भीतर खास कर मारवार और वेल्लाल जाति के लोग, जो महल सम्बन्धी काम करते हैं और बाहर चेटी तथा लबाई जाति के लोग बसे हैं। कसबे से १ मील दूर रामेश्वर के मार्गही पर राजा के एक धर्मशाले में सदावर्त्त जारी है।

राजा की जमीदारी—इसके उत्तर शिवगंगा की जमीन्दारी और तिरुमंगलम् ताल्लुक; पूर्व तंजौर जिला; दक्षिण मनार की खाड़ी और पश्चिम तिरुनलवेली जिला है। देश प्रायः समतल है। राजा की जमीन्दारी में ताड़ और खजूर के बहुत वृक्ष और लगभग २००० सरोवर हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय राजा की जमींदारी का क्षेत्रफल लगभग २११२ वर्ग मील था। उस समय उसमें ४३२५४२ मनुष्य थे; अर्थात् ३४४१८८ हिन्दू, ६०४३६ मुसलमान, ७७९१० क्रस्तान और ८ अन्य। राज्य से ७४१००० रुपया मालगुजारी आती है; जिसमें से ३१४००० रुपया सरकार को राजकर दिया जाता है।

इतिहास—रामनाद का राजवंश मारवार जाति का है। वहां के राजा सेतुपति करके प्रसिद्ध है। उनके पूर्वज लोग पहिले रामनाद से १० मील पश्चिमोत्तर मदुरा की सड़क के पास एक छोटे गांव में रहते थे। १८ वीं शदी के आरंभ में रामनाद राजधानी बना। वहां किला बनाया गया, जो अब नष्ट होगया है। किले की चारो ओर खाईं थी, जो अब भर गई है। किले के मध्य भाग में राजा का महल है। १८ वीं शदी के मध्य भाग में झगड़े के कारण देश उजाड़ होगया। सन् १७२९ में राज्य के ५ भागों में से २ भाग बागी प्रजा को दे दिया गया, जिनके वंश धर शिवसागर के राजा हैं। सन् १७७२ में अंगरेजी अफसर ने रामनाद को ले लिया और राजा अंगरेजों के आधीन हुए। सन् १७९५ में अंगरेज महाराज ने बगावत करने के कारण रामनाद के राजा को गद्दी से उतार कर मदरास शहर में बंद रक्खा। सन् १८०३ में सरकार ने उस राजा की बड़ी बहिन को रामनाद की जमीदारी दे दी। सन् १८८९ में रामनाद के वर्तमान राजा बालिग होने पर राज्य के अधिकारी हुए।

रामेश्वर ।

रामनाद कसबे से २३ मील और मदुरा कसबे से ९० मील दक्षिण-पूर्व समुद्र के पास इरवोला की खाड़ी है, जिसको वेताल मण्डपम् कहते हैं। उससे पूर्व (९ अंश ७ कला, १० विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, २१ कला, ५८ विकला पूर्व देशांतर में) मदरास हाते के मदुरा जिले के रामनाद की जमीन्दारी के अन्तरगत मनार की खाड़ी में रामेश्वर नामक टापू है, जिसका नाम सेतुबन्ध खण्ड में गंधमादन पर्वत लिखा हुआ है । टापू उत्तर से दक्षिण को लगभग ११ मील लम्बा और पूर्व से पश्चिम को ७ मील चौड़ा है । उस बालूदार टापू में बबुल ताड़ और नारियल के अनेक बाग तथा बहुत से वृक्ष लगे हुए हैं। टापू के निवासी, जिनमें खास करके ब्राह्मण तथा उनके नोकर हैं, रामेश्वर के मन्दिर की आमदनी से अपना निर्वाह करते हैं । टापू के उत्तरीय भाग के पश्चिम के किनारे पर पांबन सबडिवीजन और पूर्व के किनारे की ऊंची भूमि पर रामेश्वरपुरी है, जिसके बड़े मन्दिर से दक्षिण और ३ मील घेरे की मीठे पानी की झील है।

इरवोला की खाड़ी से ३ मील पूर्वोत्तर रामेश्वर के टापू में पांबन बस्ती है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ४८३३ मनुष्य थे । वहांके निवासी खास करके माझी, डुबुआ और अन्य सामुद्रिक पेसे वाले हैं। यात्री लोग खाड़ी में नावों में बैठकर पांबन उतरते हैं। प्रत्येक आदमी को नाव का भाड़ा चार आना लगता है। समुद्र के नावों के पाल, त्रिभुजाकार होते हैं । पवन किसी तरफ चलता हो पाल के सहारे से नाव सब दिशाओं में जाती हैं। पांबन में लगभग १०० फीट ऊंचा लाइटहाउस, सरकारी कचहरी, धर्मशाला और (धर्मशाले के पास) भैरवजी का एक छोटा मन्दिर है । वहां समुद्र के तीर पर भांति भांति की सामुद्रिक वस्तु देखने में आती हैं । पांबन में गल्ले की तिजारत होती है और वर्ष में ६ मास सिलोन की गवर्नमेन्ट की तरफ से कूली ले जाने के लिये एमीग्रेशन डेपोट कायम रहता है । पांबन के आमने सामने मनार की खाड़ी के पश्चिम किनारे पर हनूमानजी का मन्दिर है। पांबन

के पास से मन्दिर के निकट तक खाड़ी के आर पार जलके ऊपर बांध के समान पत्थर की एक लकीर है। पानी में थोड़ी दूर तक लकीर नहीं है, उसी मार्ग से समुद्र की नाव और आगबोट जाते आते हैं। सिलोन अर्थात् लंका से आने वाले तथा लंका जाने वाले आगबोट पांबन में मुसाफिरों को चढ़ाते उतारते हैं। पांबन से लंका जाने का महसूल प्रति आदमी का दो तीन रुपया लगता है। रामेश्वर के यात्रियों में से कोई कोई पांबन के पास आगबोट में चढ़कर उससे पूर्वोत्तर नागपट्टनम् में उतर कर रेलगाड़ी में चढ़ते हैं और कोई कोई नागपट्टनम् में रेलगाड़ी से उतर कर आगबोट द्वारा पांबन जाते हैं। प्रति मनुष्य का महसूल तीन रुपया लगता है। आगबोट पर चढ़ाने अथवा उससे उतारने वाली नाव का भाड़ा अलग है। आगबोट में चढ़ने तथा उस-से उतरने के समय अथवा उसके हिलने से क्लेश होता है, इस लिए रामेश्वर के प्रायः सब यात्री मद्रास होकर पांबन जाते हैं। कोई कोई यात्री रामेश्वर से लौटने पर पांबन से लगभग ८० मील दक्षिण-पश्चिम नाव द्वारा तुतिकुडी में जाकर रेलगाड़ी में चढ़ते हैं। पांबन से तुतिकुडी का नाव भाड़ा प्रत्येक आदमी का लगभग एक रुपया लगता है। मार्ग में देवीपत्तन और दर्भशयन तीर्थ मिलता है।

पांबन से ७ मील पूर्व रामेश्वर टापू के पूर्व किनारे पर भारतवर्ष के प्रसि-द्ध ४ धामों में से दक्षिण का धाम रामेश्वर नामक बस्ती है। पांबन से वहां तक तांगे और बैलगाड़ी की सड़क बनी हुई है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय रामेश्वर बस्ती में ८१६ मकान और ६११९ मनुष्य थे; अर्थात् ५४६७ हिन्दू, ४१६ क्रस्तान और २३६ मुसल्मान।

बस्ती के बाजार में बनियों और हलवाइयों की दुकानों पर खाने पीने की सब वस्तु मिलती हैं; पर मांगी। बाजार में फल और तरकारी सर्वदा रहती हैं। वहांके ६ पैसे का एक आना होता है। यहां रामनाद के राजा का एक मकान, कई धर्मशाले और सदावर्त हैं। मैं चुरू वाले राजा शिवबक्स बागला की धर्मशाले में टिका था। यहां नारियल के बगैचे और जल भरने के लिए

ताड़ के ढोल दर्शनीय होते हैं, जो बीनकर के अथवा सी करघे बनाए जाते हैं। नारियल और ताड के पत्तों से मकान भी छाये जाते हैं। रामेश्वर में यात्री सर्वदा जाते हैं, इस कारण से वहांके पडे तथा दूकानदार लोग सब की भाषा समझते हैं। वहांके पण्डाओं ने यात्रियों को लाने के लिए उत्तरीय भारत के बहुत लोगों को गुमास्ता तथा नोकर रक्खा है। वे लोग सैकड़ों कोसों से यात्रियों को लेजाते हैं।

लक्ष्मण तीर्थ—रामेश्वर के मन्दिर से पौन मील पश्चिम पांबन की सडक के दक्षिण बगल लक्ष्मण तीर्थ में लक्ष्मण कुण्ड नामक एक उत्तम सरोवर है, जिसके चारो बगलों पर पानी तक पत्थर की सीढ़ियां और सीढ़ियों के सिरे पर दीवार है। सरोवर के उत्तर बगल पर एक मण्डप और ईशान कोण के पास एक मन्दिर में लक्ष्मणेश्वर शिव हैं। रामेश्वर के यात्री प्रथम लक्ष्मणकुण्ड में स्नान करके लक्ष्मणेश्वर को तीथ भेंट देते हैं। जिसका पिता मर गया है, वह वहां मुण्डन कराकर पिण्डदान करता है। पितरजीवी पुरुष मुण्डन करवाकर स्नान दर्शन करते हैं।

रामतीर्थ—लक्ष्मण कुण्ड से पूर्व उसी सडक के दक्षिण रामतीर्थ में रामकुण्ड नामक पक्का सरोवर है, उसमें यात्री लोग स्नान वा मार्जन कर लेते हैं।

रामझरोखा—रामेश्वर के मन्दिर से १ मील उत्तर रामझरोखा एक स्थान है। यात्रीगण बालू के मार्ग से पैदलही वहां जाते हैं। वहां एक टीले पर दो मंजिला छोटा दालान है जिसमें रामचन्द्रजी के चरण चिन्ह की पूजा होती है। वहांसे धनुष तीर्थ और तीन तरफ समुद्र देख पडते हैं। टीले के उत्तर एक छोटे कुण्ड में थोडा जल रहता है।

सुग्रीवतीर्थ—रामेश्वर के मन्दिर और रामझरोखा के बीच में सुग्रीवकुण्ड नामक सरोवर है, जिसके किनार पर एक छोटे मन्दिर में सुग्रीव की छोटी मूर्ति है। सरोवर में थोड़ा पानी है। मन्दिर में कोई रहता नहीं।

ब्रह्मकुण्ड—रामेश्वरपुरी की परिक्रमा ८ मील की है। उस परिक्रमा में हनूमानकुण्ड और उसके पश्चात् समुद्र की रेती में ब्रह्मकुण्ड मिलता है। वहां

स्वाभाविक विभूती (भस्म) होती है, जिसको यात्री लोग अपने घर लेजाते हैं। ब्रह्मकुण्ड के पास महिषमर्दिनी देवी का मन्दिर है। विजया दशमी के दिन गणेश, रामेश्वर और स्कन्द की धातुमयी उत्सव मूर्तियां रामेश्वर के मन्दिर से विमानों में बैठाकर ब्रह्मकुण्ड पर जाती हैं। वहां शमी वृक्ष की पूजा होती है।

सीताकोटि–रामेश्वरपुरी से चार पांच मील दूर समुद्र के किनारे पर सीताकोटि नामक तीर्थ है। वहांके कूप का जल बहुत मीठा है।

धनुष्कोटि तीर्थ–यह स्थान रामेश्वरपुरी से करीब १२ मील दक्षिण धनुष तीर्थ करके प्रसिद्ध है। तीन चार रुपये में आनी जाती दोनों तरफ के लिए बैलगाड़ी किराया होती है। अनेक यात्री रामेश्वरपुरी से समुद्र की नाव द्वारा धनुष तीर्थ जाते हैं। खुश्की रास्ते से रामेश्वरपुरी से ७ मील दक्षिण जाने पर एक छोटी धर्मशाला मिलती है, जिसमें २ मील आगे एक सेठ की बड़ी धर्मशाला है, जहां सदावर्त लगा है और बनियों की दुकाने हैं। उससे ३ मील आगे धनुष तीर्थ है। वहां जमीन की नोक पानी के भीतर चली गई है। उसके एक बगल के समुद्र को महोदधि और दूसरे बगल के समुद्र को रत्नाकर लोग कहते हैं। बीच में बालू का मैदान है। यात्रीगण समुद्र में स्नान करके अपने पंडे के सुनहरे छोटे धनुष को, जो वह अपने पास ले जाते हैं, पूजन करके सेतुकी प्रार्थना करते हैं। ग्रहण आदि पर्वों में वहां स्नान का मेला होता है।

रामेश्वर का मन्दिर–रामेश्वर बस्ती के पूर्व समुद्र के किनारे पर लगभग ९०० फीट लंबा और ६०० फीट चौड़ा अर्थात् २० बीघे भूमि पर रामेश्वर का पत्थर का मन्दिर है। मन्दिर के चारो ओर २२ फीट ऊंची दीवार है, जिसमें तीन ओर एक एक और पूर्व ओर २ गोपुर हैं, जिनमें से केवल पश्चिम वाला सात मंजिला गोपुर, जो लगभग १०० फीट ऊंचा है, तैयार हुआ है। उत्तर और दक्षिण वाला गोपुर, जो तैयार नहीं है, दीवार से थोड़ेही ऊंचे हैं। गोपुरों और भीतर की दीवारों में नकाशी का विचित्र काम और बहुतसी मूर्तियां बनी हुई हैं। पश्चिम वाले गोपुर के फाटक के भीतर रामेश्वरजी के चित्र पट और रुद्राक्ष की माला बिकती हैं। मन्दिर के

रामेश्वर के मंदिर का नकशा
उत्तर
समुद्र
फीट का स्केल
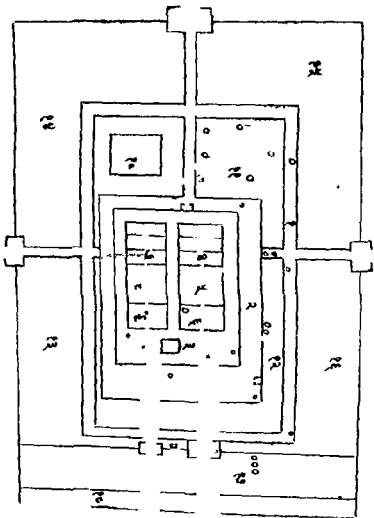
भीतर की पाटी हुई सड़कें, जो लगभग ४००० फीट लंबी और २० फीट से ३० फीट तक चौड़ी हैं, दर्शकों के मनको चकित करती हैं और मन्दिर के विभव को जनाती हैं। जमीन से ३० फीट ऊपर सड़कों की छत हैं। दरवाजे के रास्ते और छतों में ४० फीट लम्बे पत्थर लगे हैं। रात्रि में सड़कों की छतों में सैकड़ों लालटेन बरती हैं। नीचे लिखे हुए नंबरों से मन्दिर का नकशा देखिए।

नंबर १—यह मंदिर के घेरे के भीतर प्रधान स्थानों और नंबर २ की सड़क को घेरती हुई मन्दिर की प्रधान सड़क है। पश्चिम, उत्तर और दक्षिण के गोपुरों से एक एक सड़क उस प्रधान सड़क को काटती हुई भीतर को गई हैं। नंबर १ की सड़क के दोनों तरफ ४ फीट की ऊंचाई पर दोहरी दालान हैं, जिनमें बड़े बड़े खंभे लगे हुए हैं। उनमें मनुष्यों और सिंह आदि जानवरों की बड़ी बड़ी मूर्तिया सुन्दर रीति से बनी हुई हैं। द्वार से भीतर एक जगह दहिने के खंभों पर राजा सेतुपति और उनके परिवार के कई आदमी के चित्र खोदे हुए हैं। उत्सव के समय जब रामेश्वरजी की प्रतिनिधि मूर्ति मंदिर की परिक्रमा करती है तब वह इस स्थान पर ठहरती है। उस समय राजा की ओर से उनको आरती उतारी जाती है और माला तथा ताम्बूल आदि वहां राजा के चित्र को प्रसाद मिलता है। उत्तर की सड़क में पश्चिम ओर **ब्रह्महत्याविमोचन** नामक कूप, मध्य में **गंगातीर्थ** और **यमुनातीर्थ** २ कूप और इनसे पूर्व **गयातीर्थ** एक कूप है। सड़क के पूर्व छोर पर दक्षिण मुख के मन्दिर में स्कन्द आदि की धातुमयी उत्सव मूर्तियां रहती हैं। इनके अतिरिक्त इस नंबर की सड़क में कई देव मन्दिरों के द्वार हैं। इस सड़क से रामेश्वर और पार्वती के निज मन्दिरों का तीसरी परिक्रमा होती है।

नम्बर २—यह सड़क रामेश्वर और पार्वती के मन्दिरों के दूसरी परिक्रमा की जगह है। सड़क के दोनों बगलों में खंभाओं के कत्तार और ऊपर छत हैं। पश्चिम के गोपुर की सड़क से प्रवेश करने पर सामने छोटे मन्दिर में गणेशजी की विशाल मूर्ति का दर्शन होता है। ईशान कोण पर छोटे मंदिर

में शिव और पार्वती की धातुमयी उत्सव मूर्तियां हैं, जिसके पूर्व **शंखतीर्थ** एक कूप है। पूर्व की सड़क पर **चक्रतीर्थ** नामक कूप है।

नम्बर ३—यह रामेश्वर और पार्वती के मन्दिरों का पहिली परिक्रमा है। पूर्व तरफ रामेश्वरजी के निज मन्दिर के सामने सोने का मुलम्मा किया हुआ बड़ा स्तंभ है, जिसके पास १३ फीट ऊंचा १८ फीट लंबा और ९ फीट चौड़ा बड़ा नन्दी (बैल) बैठा है, जो भारत के सब नन्दियों से बड़ा होगा। नन्दी के सामने रत्नाकर और महोदधि दोनों समुद्रों की और हरबोला की खाड़ी की प्रतिमा हैं। नंदी के वामपार्श्व के मंडप में बाल हनुमान की मूर्ति है। नन्दी से उत्तर **कोटितीर्थ** नामक कूप और दक्षिण **शिवतीर्थ** नामक छोटा तालाब है, जिसके दक्षिण **अमृततीर्थ** नामक कूप है।

नम्बर ४—श्रीरामेश्वरजी का निज मन्दिर १२० फीट ऊंचा है। तीन देवढ़ी के भीतर शिव के प्रख्यात बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक रामेश्वर शिवलिंग हैं। इनके ऊपर शेषजी अपनी फणा से छाया करते हैं। मंदिर में सर्व साधारण यात्री नहीं जा सकता, तथापि जगमोहन से अरघा समेत श्रीरामेश्वरजी का अत्युत्तम रीति से दर्शन होता है। रात्रि में पचासों दीप जलते हैं और आरती होती रहती है, जिसके प्रकाश से रामेश्वरजी देख पड़ते हैं। फूल माला और बिल्वपत्र की माला मन्दिर के अर्चक लोग यात्री की तरफ से रामेश्वर पर चढ़ा देते हैं। ३॥=) देने पर गंगाजल चढ़ाने का टिकट मिलता है और ।=) आना ऊपर से लगता है। गंगाजल मन्दिर के अर्चकद्वारा चढ़ाया जाता है। जिसके पास गंगाजल नहीं रहता वह उसको अपने पंडे से खरीद लेता है। यहां की रीती के अनुसार किसी यात्री को मन्दिर में जाकर निज हाथ से रामेश्वर पर जल चढ़ाने का अधिकार नहीं है, परन्तु कोई कोई धनी लोग यहां के अर्चक और पंडों को प्रसन्न करके रामेश्वर पर निज हाथ से गंगाजल चढ़ाते हैं।

नम्बर ५—रामेश्वर का बड़ा जगमोहन है, जिसमें खड़े होकर यात्रीगण रामेश्वरजी का दर्शन करते हैं। जगमोहन में कई देव मूर्तियां हैं।

जगमोहन से उत्तर काशीविश्वेश्वर का मन्दिर है । वहां अन्नपूर्णाजी की भी मूर्ति है और भोगराग का अच्छा प्रबंध है।

काशीविश्वेश्वर शिव लिंग को हनुमान ने स्थापित किया । आगे स्कन्द पुराण के सेतुबन्ध खण्ड के ४४ वें से ४६ वें अध्याय तक देखो । वहां लिखा है कि हनुमान कैलाश से शिवलिंग लाया और रामेश्वर के उत्तर पार्श्व में स्थापित किया। रामचन्द्र ने कहा कि यह लिंग हनुमान के नाम से प्रसिद्ध होगा। रामचन्द्र की आज्ञा है कि हनूमान के लाये हुए लिंग (काशी विश्वेश्वर) का दर्शन करके तब रामेश्वर का दर्शन करना चाहिये । वहां ऐसाही होता है।

नम्बर ६—जगमोहन के पूर्व नीची भूमि पर आंगन है, जिसके नैऋत्य कोण के पास **सर्वतीर्थ** नामक कूप है।

नम्बर ७—पार्वतीजी का मन्दिर है—तीन ड्योढ़ी के भीतर बहुमूल्य वस्त्र और भूषणों से सुशोभित पार्वतीजी की सुन्दर मूर्ति है । रात्रि में पचासों और दिन में भी कई दीप मन्दिर में जलते हैं । मन्दिर का पुजारी दक्षिणा पाने पर यात्री की ओर से पार्वतीजी की आरती करता है। फूल माला तथा बिल्वपत्र की माला बिना दक्षिणा लिए वह चढ़ा देता है । मन्दिर के भीतर सर्व साधारण लोग नहीं जाने पाते, परन्तु वहां का पुजारी कुछ दक्षिणा लेकर दूसरी ड्योढ़ी से यात्री को पार्वती का दर्शन कराता है।

नम्बर ८—पार्वती के मन्दिर का बड़ा जगमोहन है,-जिसमें खड़े होकर यात्रीगण श्रीपार्वतीजी का दर्शन करते हैं। जगमोहन के उत्तर भाग में एक घेरे के भीतर सोनहुले झूलन पर पार्वती की सोने की छोटी मूर्ति है । झूलन के चारो चोब चान्दी के बने हैं। पार्वती के पास में चन्दन का चंवर रक्खा है। जगमोहन के दूसरे हिस्से में कई देव मूर्तियां हैं।

नम्बर ९—जगमोहन के पूर्व, के आंगन में एक मंडपम् और एक ऊंचा स्तंभ है। स्तंभ पर सोना का मुलम्मा किया हुआ है।

नम्बर १०—**माधवतीर्थ**—नामक सरोवर है, जिसके चारो बगलों पर पानी तक पत्थर की सीढ़ियां और ऊपर तीन तरफ बड़े बड़े खंभे लगे हुए

दोहरी दालान और पूर्व ओर फर्श के बाद दीवार है। दालान के पीछे चौड़ी सड़क बनी हुई है। माधव तीर्थ के पास सेतु माधवजी की मूर्ति है।

नम्बर ११—में **गवयतीर्थ, गवाक्षतीर्थ, नलतीर्थ, नीलतीर्थ, और गंधमादनतीर्थ**—नामक ५ कूप क्रम से मिलते हैं और पांच छः देव-मन्दिर हैं।

नम्बर १२—के उत्तर के भाग में छोटे दरवाजे के पास **सूर्य्यतीर्थ** और **चन्द्रतीर्थ**—दो कूप हैं।

नम्बर १३—में कोई प्रसिद्ध वस्तु नहीं है।

नम्बर १४—में नारियल आदि के बहुत वृक्ष है और उसके पश्चिम भाग में एक शिखरदार मन्दिर है।

नम्बर १५—में नारियल आदि के बहुत वृक्ष हैं। उसके पश्चिम हिस्से में सड़क के पास शिखरदार शिव मन्दिर है।

नम्बर १६—में मकान और अनेक वृक्ष हैं।

नम्बर १७—के उत्तर हिस्से में **सरस्वतीतीर्थ, सावित्रीतीर्थ** और **गायत्रीतीर्थ** नाम के ३ कूप और दूसरी जगहों में कई मण्डपम् हैं। दोनों गोपुरों के मध्य में **लक्ष्मीतीर्थ** नामक एक बावली है।

नम्बर १८—में दोनों गोपुरों के सामने दो दरवाजे हैं; उसका दक्षिण भाग उजाड़ है।

रामेश्वरजी के बृहत् मन्दिर में उर्द्ध लिखित देवताओं के अतिरिक्त स्थान स्थान में श्रीरामचन्द्र, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सीता, साक्षीगोपाल, जनार्द्दन, वेंकटेश, कोटि देवता, कोटेश्वर महादेव, गणेश, कार्तिवीर्य, महावीर, नवग्रह आदि देवताओं की मूर्तियां, रामेश्वरजी का भंडार; महसूल का दफ्तर और मन्दिर के अधिकारियों के अनेक मकान हैं।

अग्नितीर्थ—रामेश्वरजी के मन्दिर के पूर्व के समुद्र के एक घाट को अग्नितीर्थ कहते हैं। यात्रीलोग उस जगह समुद्र में स्नान करते हैं।

अगस्त्यतीर्थ—मन्दिर के ईशान दिशा में उससे चार, पांच सौ गज दूर अगस्त्यतीर्थ नामक बावली है।

चौबीसतीर्थ—स्कन्द पुराण के सेतुबन्ध खण्ड में रामेश्वरपुरी से देवीपत्तन तक २४ तीर्थ लिखे हुए हैं; उनमें से बहुतेरे तीर्थ ऊपर लिखे हुए २४ तीर्थों में नहीं हैं; उनके बदले में कई एक दूसरे नाम के तीर्थ हैं। वहां नीचे लिखे हुए २४ तीर्थ प्रसिद्ध हैं, जिनके जल से यात्रीलोग स्नान करते हैं।

(नम्बर १० में) १ माधवतीर्थ, (नम्बर ११ में) २ गवयतीर्थ, ३ गवाक्षतीर्थ, ४ नलतीर्थ, ५ नीलतीर्थ, ६ गंधमादनतीर्थ, (नम्बर १ में) ७ ब्रह्महत्याविमोचन तीर्थ, ८ गंगातीर्थ, ९ यमुनातीर्थ, १० गयातीर्थ, (नम्बर १२ में) ११ सूर्य्यतीर्थ, १२ चंद्रतीर्थ, (नम्बर २ में) १३ शंखतीर्थ, १४ चक्रतीर्थ (नम्बर ३ में) १५ अमृततीर्थ, १६ शिवतीर्थ, (नम्बर ६ में) १७ सर्वतीर्थ, (नम्बर १७ में) १८ सरस्वती तीर्थ, १९ सावित्री तीर्थ, २० गायत्री तीर्थ, २१ लक्ष्मीतीर्थ, (समुद्र में) २२ अग्नितीर्थ, (मन्दिर से ईशान दिशा में) २३ अगस्त्यतीर्थ और (नम्बर ३ में) २४ वां कोटितीर्थ है।

इनमें माधवतीर्थ और शिवतीर्थ तालाब; लक्ष्मीतीर्थ और अगस्त्य तीर्थ बावली; अग्नितीर्थ समुद्र और बाकी १९ तीर्थ १९ कूप हैं। २२ तीर्थ मन्दिर के भीतर और २ तीर्थ उसके बाहर हैं। २३ तीर्थों के जल से एकही समय में और कोटितीर्थ के जल से पुरी से चलने के समय यात्री लोग स्नान करते हैं।

मन्दिर का उत्सव—मन्दिर की उत्सव मूर्तियां फाल्गुन की शिवरात्रि के दिन ६ विमानों में सिंहासनारूढ बाजे बाजे के समारंभ से निकलती हैं। प्रत्येक विमान में ४ कहार लगते हैं। पहले विमान में शिव, दूसरे में पार्वती, तीसरे में गणेश, चौथे में कार्तिवीर्य्य, पांचवें में हनूमान और छठे में एक अन्य देवता रहते हैं। श्रावण मास में शिव पार्वती के विवाह का उत्सव होता है। उस समय आस पास के प्रदेशों के बहुत यात्री आते हैं। इनके अलावे समय समय पर रामेश्वरपुरी में उत्सव हुआ करता है। भारत के सैकड़ों यात्री नित्य रामेश्वरपुरी में पहुंचते हैं।

मन्दिर का प्रबंध—पहिले रामनाद के राजा, रामेश्वर के मन्दिर का प्रबंध करते थे, किन्तु इस समय अंगरेज महाराज ने उसको मदुरा के जंगमबाबा के आधीन किया है। मन्दिर के खर्च के लिए रामनाद के राजा के दिए हुए ८७ गांव हैं, जिनसे वार्षिक ४८००० रुपया मालगुजारी आती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—पराशरस्मृति—(१२ वां अध्याय) समुद्र के सेतु के दर्शन करने से ब्रह्महत्या पाप छूट जाता है। ब्रह्महत्या करने वाले मनुष्य को उचित है कि वह सेतुबंध यात्रा के मार्ग में चारो वर्णों से भिक्षा मांगे। श्रीरामचन्द्र की आज्ञा से नल वानर ने १०० योजन लंबा और १० योजन चौडा सेतु बांधा था; उसके दर्शन मात्र से उसके ब्रह्महत्या पाप का नाश हो जाता है। उसको उचित है कि सेतु के दर्शन से विशुद्ध होकर सागर में स्नान करे।

बाल्मीकिरामायण—(लंकाकाण्ड, १२४ और १२८ वां सर्ग) श्रीरामचन्द्र ने रावण को जीत कर लक्ष्मण, सीता, बिभीषण आदि राक्षस और सुग्रीव आदि वानरों के सहित पुष्पक विमान पर चढ़ लंका से प्रस्थान किया। विमान आकाश मार्ग से चला। श्रीरामचन्द्र जानकीजी को स्थानों को दिखाने लगे; वह बोले कि हे सीते! देखो यह सेना टिकने का स्थान है; यहां सेतु बांधने के पहले शिवजी मेरे ऊपर प्रसन्न हुए थे; यह समुद्र का घाट सेतुबंध नाम से प्रसिद्ध तीनों लोकों में पूजित हुआ है; यह पवित्र स्थान पापों का नाश करने वाला है।

ब्रह्माण्डपुराण—अध्यात्मरामायण—(लंकाकांड, ४ था अध्याय) सेतु आरंभ के समय श्रीरामचन्द्र ने लोक के हित के लिये यहां रामेश्वर शिव को स्थापित किया। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति सेतुबंध का दर्शन करके रामेश्वर शिव को प्रणाम करेगा, उसका ब्रह्महत्यादि पाप छूट जायगा। जो प्राणी सेतुबंध में स्नान और रामेश्वर के दर्शन करके वाराणसी के गंगाजल से रामेश्वर को स्नान करावेगा और जल की कांवर समुद्र में डाल देगा उसको निःसन्देह ब्रह्मलोक मिलेगा।

शिवपुराण—(ज्ञानसंहिता, ३८ वां अध्याय) शिवजी के १२ ज्योतिर्लिंग

हैं,—(१) सौराष्ट्र देश में सोमनाथ, (२) श्रीशैल पर मल्लिकार्जुन, (३) उज्जैन में महाकालेश्वर, (४) ओंकार में अमरेश्वर, (५) हिमालय में केदारेश्वर, (६) डाकिनी में भीमशंकर, (७) वाराणसी में विश्वेश, (८) गोदावरी के तट पर त्र्यम्बक, (९) चिता भूमि पर वैद्यनाथ, (१० दारुका वन में नागेश, (११) सेतुबन्ध में रामेश्वर और (१२ वा) शिवालय म घुश्मेश्वर।

(५७ वा अध्याय) रामचन्द्रजी लक्ष्मण तथा सुग्रीव आदि १८ पद्म सेनाओं के सहित सीता को छुडाने के लिए दक्षिण समुद्र के पास पहुंचे। उनको जल पीने के समय स्मरण हुआ कि आज हमने शिवजी का दर्शन नहीं किया, विना दर्शन किए हम जल कैसे पिएंगे। ऐसा विचार कर उन्होंने वानरों से मृतिका मगाकर मृतिका का शिवलिंग बनाया और आवाहन तथा पूजन करके उनमे विनय किया कि हे शंकर! आपकी कृपा से रावण दुर्जय हुआ है, आप मेरा सहाय कीजिए। शिवजी प्रकट होकर बोले कि हे रामचन्द्र! तुम्हारा मंगल होगा। उसके पश्चात् श्रीरामचन्द्र ने शिवजी की जलधारा से जल पान करके शिवजी से विनय किया कि हे शंकर! आर्य लोगों के हित के लिए आप इस स्थान पर निवास कीजिए। शिवजी ने रामचन्द्र के वचन से प्रसन्न होकर वहा लिंग रूप से निवास किया, उसी लिंग को रामेश्वर कहते हैं। रामेश्वर शिव के स्मरण करने से सपूर्ण पापो का नाश होजाता है।

गरुडपुराण—(पूर्वार्द्ध, ८१ वां अध्याय) सेतुबन्धरामेश्वर एक उत्तम तीर्थ है।

मत्स्यपुराण—(२२ वां अध्याय) रामेश्वरतीर्थ श्राद्ध के लिए श्रेष्ठ है।

ब्रह्मवैवर्तपुराण—(कृष्ण जन्म खण्ड, ७६ वा अध्याय) आषाढ़ की पूर्णिमा को सेतुबन्ध रामेश्वर के दर्शन और पूजन करने से प्राणी का फिर जन्म नहीं होता है। रात में महादेवजी के दर्शन के लिए वहा विभीषण आते हैं।

स्कन्दपुराण—(सेतुबन्ध खण्ड, पहिला अध्याय) श्रीरामचन्द्र के बांधे हुए सेतु के समीप सब क्षेत्रों में उत्तम रामेश्वर-क्षेत्र है। (दूसरा अध्याय) श्रीरामचन्द्रजी की आज्ञा से वानरगण सहस्रो पर्वतो के शृङ्ग, वृक्ष, बेलि, तृण आदि लाये। नल ने समुद्र के ऊपर १० योजन चौड़ा और १०० योजन लम्बा

सेतुबांधा। जहां रामचन्द्रजी ने कुश शय्या पर शयन किया और सेतु बांधा वही स्थान प्रसिद्ध तीर्थ होगया। सेतुबन्ध के समीप के तीर्थों में नीचे लिखे हुए २४ तीर्थ प्रधान हैं;—१ चक्रतीर्थ (जो देवीपत्तन में है), २ वेताल वरद (देवीपत्तन की ओर), ३ पापविनाशन, ४ सीतासर, ५ वां मंगलतीर्थ, ६ अमृतवापिका, ७ वां ब्रह्मकुण्ड, ८ वां हनुमत्कुण्ड, ९ वां अगस्त्यतीर्थ, १० वां रामतीर्थ, ११ लक्ष्मणतीर्थ, १२ जटातीर्थ, १३ लक्ष्मीतीर्थ, १४ अग्नितीर्थ, १५ चक्रतीर्थ, १६ शिवतीर्थ, १७ शंखतीर्थ, १८ यमुनातीर्थ, १९ गंगातीर्थ, २० गयातीर्थ, २१ कोटितीर्थ, २२ साध्यामृततीर्थ, २३ मानसतीर्थ और २४ वां धनुष्कोटितीर्थ।

(तीसरा अध्याय) सेतुमूल के समीप चक्रतीर्थ है। धर्म ने दक्षिण के समुद्र के तट पर बहुत काल तक तप किया और स्नान के लिए वहां एक पुष्करिणी बनाया, जिसका नाम धर्मपुष्करिणी पड़ा। धर्म शिवजी को प्रसन्न करके उनका वाहन वृष बन गया। उसके पश्चात् ध्यान करते हुए गालव मुनि को एक राक्षस ने जा पकड़ा। उस समय मुनि विष्णु को पुकारने लगे। विष्णु की आज्ञा से सुदर्शन चक्र ने वहां जाकर उस राक्षस का सिर काट लिया। उसके उपरांत वह चक्र धर्मपुष्करिणी में प्रवेश कर गया; तभी से धर्मपुष्करिणी का नाम चक्रतीर्थ होगया।

(८ वां अध्याय) चक्रतीर्थ के दक्षिण भाग में वेताल वरद तीर्थ है। (९ वां अध्याय) एक ऋषि के आदेशानुसार कपालस्फोट नामक दैत्य दक्षिण-समुद्र के तट पर पवित्र तीर्थ में पहुंचा। पवन के वेग से उस तीर्थ के जलकण उड़कर उस दैत्य के शरीर पर गिरे। जलकणों के स्पर्श से उसने अपना वेताल रूप छोड़कर पूर्व रूप धारण कर लिया। पूर्व जन्म में वह विजयदत्त नामक ब्राह्मण था, किन्तु गालव मुनि के शाप से वेताल हुआ था। उसके पश्चात् वह उस तीर्थ में स्नान करके मनुष्य देह छोड़ कर दिव्य रूप हो स्वर्ग में चला गया। उसी दिन से उस तीर्थ का नाम वेतालवरद हुआ।

(१० वां अध्याय) वेतालवरद तीर्थ में स्नानकर गंधमादन पर्वत को, जो सेतुरूप से समुद्र में स्थित है, जाना चाहिये। उसके ऊपर लोक में प्रसिद्ध

पापविनाशन तीर्थ है। सुमति नामक ब्राह्मण करोड़ों वर्ष नरक भोग कर ब्राह्मण के गृह जन्मा; परन्तु उसको ब्रह्मराक्षस का आवेश होगया। तब अगस्त्य मुनि के उपदेश से उसके पिता ने गंधमादन पर्वत के पाप विनाशनतीर्थ में उसको संकल्प पूर्वक तीन दिन स्नान कराया, जिससे ब्राह्मण का पुत्र आरोग्य होगया और अंत में मुक्ति पाया। पापों के नाश करने में उस तीर्थ का नाम पापविनाशन पड़ा है।

(११ वां अध्याय) गंगा आदि तीर्थ सीता सरोवर में निवाश करते हैं। इसी तीर्थ में स्नान करने से ब्रह्महत्या ने इन्द्र को छोड़ा। राम चन्द्रजी के संदेह निवृत करने के लिए सीता ने अग्नि में प्रवेश किया और अग्नि से निकल अपने नाम का यह तीर्थ बनाया। तभी से उसका नाम सीतासरोवर हुआ।

(१२ वां अध्याय) सीताकुण्ड में स्नानकर मंगलतीर्थ को जाना चाहिये, जिसमें लक्ष्मीजी निवाश करती हैं। इन्द्रादि देवता अलक्ष्मी के नाश के लिये नित्य उस तीर्थ में स्नान करते हैं। सेतुबंध के बीच गंधमादन पर्वत पर मंगलतीर्थ है। उसमें सीता और रामचन्द्र सदा सन्निहित रहते हैं।

(१३ वां अध्याय) रामनाथ क्षेत्र में अमृत वापिका है, जिसमें स्नान करने वाले मनुष्य अजर अमर होजाते हैं। मंगल तीर्थ के पास के तीर्थ में अगस्त्य मुनि के भ्राता की मुक्ति हुई, उसीसे उस तीर्थ का नाम अमृतवापी हुआ; क्योंकि मोक्ष को अमृत कहते हैं।

(१४ वां अध्याय) अमृतवापी में स्नान कर ब्रह्मकुंड तीर्थ को जाना चाहिए। ब्रह्मकुण्ड में स्नान करने वाले मनुष्य को यज्ञ, तप, दान, तीर्थ करने का कुछ प्रयोजन नहीं है। जो मनुष्य ब्रह्मकुण्ड से निकली विभूति को धारण करता है, उसके समीप ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी सदा निवास करते हैं। एक समय ब्रह्मा और विष्णु का परस्पर विवाद हुआ। दोनों अपने को बड़ा कहने लगे। उसी समय मध्य में एक लिंग प्रकट हुआ। उसके अनन्तर यह निश्चय हुआ कि दोनों में से जो इस लिंग के आदि अन्त को निश्चय करे, वही सबमें बड़ा और लोक का कर्त्ता गिना जाय। ब्रह्मा हंस का रूप धर ऊपर को उड़े और विष्णु वाराह रूप धर नीचे चले। १००० वर्ष के पीछे विष्णुजी ने

लौट कर देवताओं से कहा कि हमको लिंग का अंत न मिला। इतने में ब्रह्मा भी आ पहुचे। वह असत्य बोले कि हम इस लिंग के अग्र को देख आये हैं। तब शिवजी ने कहा कि हे ब्रह्मा! तुमने हमारे सन्मुख झूठ कहा इसलिये जगत में कोई तुह्मारी पूजा न करेगा। पीछे ब्रह्मा की प्रार्थना से प्रसन्न हो कर शिवजी बोले कि हमारा वचन तो मिथ्या नहीं होसकता, परन्तु तुम गंधमादन पर्वत पर जाकर यज्ञ करो, जिससे हमारे शाप का दोष निवृत्त होजायगा। प्रतिमा में तुह्मारी पूजा न होगी; किन्तु श्रौत स्मार्त कर्मों में तुह्मारा पूजन होगा। ब्रह्माजी ने गधमादन पर्वत पर में जाकर ८८ हजार वर्ष पर्यन्त कई यज्ञ किये। तब शिवजी ने प्रकट होकर यह वरदान दिया कि अब श्रौत स्मार्त कर्मों में तुह्मारा पूजन हुआ करेगा और तुम्हारा यह यज्ञ का स्थान ब्रह्म कुंड के नाम से जगत में प्रसिद्ध होगा। जो एक बार भी इस ब्रह्मकुण्ड में स्नान करेगा उसके लिये मुक्ति का द्वार खुल जायगा। जो इस कुंड के भस्म को धारण करेगा, वह आवागमन से रहित होजायगा।

(१९ वां अध्याय) ब्रह्मकुण्ड में स्नान कर हनुमत्कुंड में जाना चाहिये। जब रामचन्द्र रावण को मार कर लौटे और गंधमादन पर्वत पर पहुचे, तब हनूमान ने अपने नाम से उत्तम तीर्थ बनाया। साक्षात् रुद्र उस तीर्थ का सेवन करते हैं। धर्मसख राजा ने उस तीर्थ में स्नान कर दीर्घायु १०० पुत्र पाये। जो स्त्री उस तीर्थ में स्नान करती है, उसको अवश्य पुत्र उत्पन्न होता है।

(१६ वां अध्याय) हनुमत्कुण्ड के पश्चात् अगस्त्य तीर्थ को जाना चाहिये। उस तीर्थ को साक्षात् अगस्त्यजी ने बनाया है। पूर्व काल में सुमेरु और विंध्य पर्वत का परस्पर विवाद हुआ; तब विंध्याचल इतना बढ़ा कि सब जीवों का श्वास रुक गया, उस समय शिवजी की आज्ञा से अगस्त्यजी ने उस पर्वत को अपने पैर से ऐसा दबाया कि वह भूमि के समान होगया। फिर अगस्त्यजी वहांसे चले और दक्षिण दिशा में विचरते हुए गंधमादन पर्वत पर पहुंचे। वहां उन्होने अपने नाम से तीर्थ बनाया, जिसमें वह अपनी भार्या लोपामुद्रा के साथ आज तक निवास करते हैं। दीर्घतपा मुनि के पुत्र कक्षीवान् ने उस तीर्थ के प्रभाव से स्वनय की कन्या से विवाह किया

(१८ वां अध्याय) बाद रामकुंड को जाना चाहिये। उस सरोवर के तीर पर अल्प दक्षिणा के भी यज्ञ करने से सम्पूर्ण फल मिलता है। अगस्त्य मुनि के शिष्य सुतीक्ष्ण मुनि ने उस सरोवर के तीर पर बहुत काल तक तप किया। राजा युधिष्ठिर उस तीर्थ में स्नान और शिवलिंग का दर्शन करके असत्य भाषण के महादोष से छूट गये।

(१९ वां अध्याय) बाद लक्ष्मणतीर्थ को जाकर उसमें स्नान करना चाहिये। उस तीर्थ के तट पर लक्ष्मणजी ने शिवलिंग स्थापन किया है। बलदेवजी लक्ष्मणतीर्थ में स्नान और लक्ष्मणेश्वर का सेवनकर ब्रह्महत्या से छूट गये।

(२० वां अध्याय) पूर्व काल में शिवजी ने गंधमादन पर्वत में सबके उपकार के अर्थ एक तीर्थ बनाया। रामचन्द्रजी ने रावण को मारने के पश्चात् उस तीर्थ में जटा धोई थी, इससे उस तीर्थ का नाम जटातीर्थ पड़ा।

(२१ वां अध्याय) राजा युधिष्ठिर ने कृष्णचन्द्र की प्रेरणा से इन्द्रप्रस्थ से जाकर लक्ष्मीतीर्थ में स्नान किया, जिससे उन्होंने बड़ा ऐश्वर्य्य पाया।

(२२ वां अध्याय) पूर्व काल में श्रीरामचन्द्रजी रावण को मार सीता और लक्ष्मण के सहित जानकी की शुद्धि के लिये सेतु मार्ग से गंधमादन पर पहुंचे। उन्होंने वहां लक्ष्मीतीर्थ के तट पर स्थिर हो अग्नि को आवाहन किया। अग्नि समुद्र से निकल कर कहने लगी कि हे रामचन्द्रजी! जानकी के पातिव्रत्य धर्म के प्रभाव से आपने रावण को जीता है; आप इनको ग्रहण कीजिये। तब रामचन्द्रजी ने सीता को ग्रहण किया। रामचन्द्र के आवाहन करने से जहां अग्नि प्रकट हुई, वहांही अग्नितीर्थ हुआ। पूर्व काल में पाटलिपुत्र नामक नगर के रहने वाले पशुमान नामक वैश्य का पुत्र दुष्पण्य उस तीर्थ के जल के स्पर्श से पिशाच योनि से मुक्त हो स्वर्ग को गया।

(२३ वां अध्याय) पूर्वकाल में अहिर्बुध नामक ऋषि गंधमादन पर्वत में सुदर्शन चक्र की उपासना करते थे। उस समय राक्षस आकर उनको पीड़ा देने लगे, तब सुदर्शनचक्र ने आकर सब राक्षसों को मारडाला और मुनि की प्रार्थना से उस तीर्थ में निवास किया। उस दिन से उस तीर्थ का नाम चक्र-

तीर्थ पड़ा। पूर्वकाल में जब सूर्य्य भगवान ने उस तीर्थ में स्नान किया, तब उनके कटे हुए हाथ पहिले की भांति पूर्ण होगये।

(२४ वां अध्याय) कालभैरव शिवतीर्थ में स्नान करके ब्रह्महत्या से छूटे। ब्रह्मा ने कहा कि हे महादेव! तू मेरे ललाट से उत्पन्न हुआ, इस लिये मेरा पुत्र है। ब्रह्मा का अहंकार युक्त वचन सुन शिवजी ने कालभैरव को भेजा भैरव ने ब्रह्मा का पांचवां सिर काट लिया। पीछे शिवजी ब्रह्मा पर प्रसन्न होकर काल भैरव से बोले कि लोक की मर्यादा रखने के लिये तुम प्रायश्चित्त करो। कालभैरव ब्रह्मा का सिर हाथ में लिये हुए पुण्यतीर्थ में स्नान करते हुए काशी में पहुचे। ब्रह्महत्या भयंकर स्त्री के रूप से उनके साथ२ फिरती थी। काशी में पहुंचने पर भैरव की ३ भाग ब्रह्महत्या नष्ट होगई, किंतु एक भाग रह गई। तब कालभैरव ने गंधमादन पर्वत में पहुंच शिवतीर्थ में स्नान किया, जिससे सम्पूर्ण हत्या दूर होगई।

(२५ वां अध्याय) पूर्वकाल में शंख मुनि ने विष्णु की प्रसन्नता के लिये गंधमादन पर्वत में तप किया और अपने नाम से शंखतीर्थ भी बनाया। उस तीर्थ में स्नान करने से कृतघ्न पुरुष भी शुद्ध होजाता है।

(२६ वां अध्याय) शंखतीर्थ में स्नान कर गंगातीर्थ यमुनातीर्थ और गयातीर्थ को क्रम से जाना चाहिये। उन तीर्थों में स्नान कर जानश्रुति नामक राजा ने रैक मुनि से दिव्य ज्ञान पाया। पूर्वकाल में रैक मुनि गंधमादन पर्वत में तप करते थे। वह जन्म के पंगु थे, इस लिये दूर के तीर्थों में नहीं जा सकते, किंतु गंधमादन के तीर्थों में गाडी पर बैठकर जाया करते थे। एक समय गंगा, यमुना और गया तीर्थों के स्नान करने की मुनि की इच्छा हुई, तब मुनि पूर्वाभिमुख बैठ मंत्रबल से तीनों तीर्थों का आवाहन किया। उस समय भूमि को भेदन कर गया, गंगा और यमुना की धारा पाताल से निकली। मुनि ने तीनों तीर्थों से प्रार्थना की कि तुम तीनों इस पर्वत में निवास करो। उस दिन से तीनों तीर्थ गंधमादन में रहगये। उनमें स्नान करने से मारक कर्म का नाश होता है।

(२७ वां अध्याय) कोटितीर्थ को रामचन्द्रजी ने अपने धनुष की कोटि

अर्थात् अग्रभाग से बनाया है । रामचन्द्रजी ने रावण के मारने के उपरान्त ब्रह्महत्या के निवृत्ति के लिये गंधमादन पर्वत में रामेश्वर शिवलिंग स्थापन किया। जब लिंग के स्नान के लिये जल नहीं मिला, तब उन्हो ने गंगा का स्मरण कर धनुष की कोटि से भूमि को भेदन किया, जिससे गंगा की धारा निकली। तब रामचन्द्र ने उस दिव्य जल से शिवलिंग को स्नान कराया । धनुष की कोटि से यह तीर्थ बना; इस लिये इसका नाम कोटितीर्थ पड़ा । गंधमादन के सब तीर्थों में स्नान कर शेष पाप की निवृत्ति के लिये कोटितीर्थ में स्नान करना चाहिये । उसमें स्नान करने के पश्चात् गंधमादन पर्वत में क्षण मात्र भी न रहना चाहिये । उसमें साक्षात् गंगा निवास करती हैं । श्रीकृष्णजी कोटि तीर्थ में स्नान करके अपने मातुल कंस की हत्या के पाप से छूटे थे।

(२८ वां अध्याय) जब तक साध्यामृततीर्थ में अस्थि पड़ी रहती है, तब तक वह जीव शिव लोक में निवास करता है । राजा पुरुरवा उस तीर्थ में स्नान कर तुम्बुर के शाप से छूटा और फिर उर्वशी से उसका समागम हुआ। उस तीर्थ में स्नान करने वालो को अमृतः अर्थात् मोक्ष साध्य है, (असाध्य नही है) इस लिये उसका नाम साध्यामृत हुआ है।

(२९ वां अध्याय) पूर्वकाल में भृगुवंश में सुचरित मुनि हुआ । वह जन्मसे ही अंधा था । उसने जन्म भर तप किया । वृद्धावस्था में उसको इच्छा हुई कि सम्पूर्ण तीर्थों में स्नान करना चाहिये; परन्तु तीर्थों में जाने की उसकी सामर्थ्य न थी, इस लिये वह गंधमादन पर्वत में शिवजी का तप करने लगा । शिवजी प्रकट हुए । मुनि बोले कि हे नाथ ! मुझको इसी स्थान पर संपूर्ण तीर्थों में स्नान करने का फल प्राप्त हो । तब शिवजी ने एक स्थान में सब तीर्थों का आवाहन किया, उसके उपरान्त उन्होंने कहा कि इस स्थान पर हमने सब तीर्थों का आवाहन किया, इस लिये यह तीर्थ सर्वतीर्थ नाम से प्रसिद्ध होगा और हमने मन से यहां तीर्थों का आकर्षण किया है इस लिये इसका नाम मानस तीर्थ भी होगा।

(३० वां अध्याय) सर्वतीर्थ के पश्चात् धनुषकोटि तीर्थ को जाना चाहिये । जो पुरुष धनुष्कोटि का दर्शन करते हैं वे अट्ठाइस प्रकार के महा

नरकों को नहीं देखते। रामचन्द्र रावण को मारने के पश्चात् विभीषण और सुग्रीव आदि वानरों के साथ गंधमादन पर्वत में पहुंचे, उस समय विभीषण ने प्रार्थना की कि महाराज! आपके बांधे हुए सेतु के मार्ग से प्रतापी राजा लोग आकर मेरी पुरी लंका को पीड़ा देगें। तब रामचन्द्र ने अपने धनुष की कोटि अर्थात् अग्रभाग से सेतु को तोड़ दिया; वहांही धनुष्कोटितीर्थ हुआ। जो पुरुष धनुष करके की हुई रेखा देखता है वह गर्भ वास का दुःख नहीं भोगता। रामचन्द्र ने धनुष्कोटि से समुद्र में रेखा की है। जो पुरुष माघमास मकर के सूर्य्य में धनुष्कोटि में स्नान करता है, उसका पुण्य वर्णन नहीं होसकता। अर्द्धोदय योग में वहां स्नान करने से सब पाप नष्ट होवे हैं। चन्द्र और सूर्य्य के ग्रहणों में वहां स्नान करने वाले के पुण्य फल को शेषजी भी नहीं गिन सकते। वहां पिंडदान करने से पितर कल्पभर तृप्त रहते हैं। रामचन्द्रजी ने पितरों की तृप्ति के लिये तीन स्थान बनाये हैं; सेतुमूल, धनुष्कोटि और गंधमादन पर्वत। (आगे ३७ वें अध्याय तक धनुष्कोटि का माहात्म्य है) (यहां तक २४ तीर्थों की कथा है)

(४० वां अध्याय) गायत्रीतीर्थ और सरस्वतीतीर्थ में स्नान करने से गर्भवास का दुःख कभी नहीं होता। गंधमादन पर्वत में ब्रह्मपत्रि गायत्री और सरस्वती के सन्निधान से २ तीर्थ हैं। शिवजी ब्रह्मा को दुराचार देख व्याध का रूप धर हरिण रूप धारी ब्रह्मा के पीछे दौड़े। उन्होंने एक बाण ऐसा मारा कि हरिण रूप ब्रह्मा मर गये। तब गायत्री और सरस्वती अति शोकातुर हो ब्रह्माजी के जीवन के लिये गंधमादन पर्वत में जाकर तप करने लगीं। उन्होंने स्नान के लिये अपने अपने नाम से एक एक तीर्थ बनाया और त्रिकाल उन तीर्थों में स्नान करके बहुत काल तक वहां उग्र तप किया। तब महादेवजी प्रकट हुए। उन्होंने गायत्री और सरस्वती की प्रार्थना से प्रसन्न हो अपने गणों से ब्रह्मा का शरीर वहां मंगवाया और सिर को धड़ से जोड़ कर ब्रह्मा को जिला दिया। शिवजी ने गायत्री और सरस्वती से कहा कि इन दोनों कुण्डों में स्नान करने वाले पुरुषों की मुक्ति होगी; तुम दोनों के नाम से दोनों तीर्थ प्रसिद्ध होंगे।

(४२ वां अध्याय) गंधमादन पर्वत पर ऋणमोचनतीर्थ, पंचपांडवतीर्थ, देवतीर्थ, सुग्रीवतीर्थ, नलतीर्थ, नीलतीर्थ, गवाक्षतीर्थ, अंगदतीर्थ, गजतीर्थ, गवयतीर्थ, शरभतीर्थ, कुमुदतीर्थ, पनसतीर्थ और विभीषणतीर्थ है।

(४३ वां अध्याय) रामेश्वर के दर्शन करने वाले की तुल्यता चारो वेदों को जानने वाला ब्राह्मण भी नहीं कर सकता। वेदवेत्ता ब्राह्मण को छोड़ कर रामेश्वर के भक्त चांडाल को सब दान देना उचित है। रामेश्वर के दर्शन करने वाले पुरुषों को वेद,शास्त्र,तीर्थ, यज्ञ आदि से कुछ प्रयोजन नहीं है। जो पुरुष चंदन, केसर,कस्तूरी, गुग्गल, राल, आदि रामेश्वर को अर्पण करता है, वह धनाढ्य और वेद शास्त्र का जानने वाला होता है। जो गंगाजल से रामनाथ को स्नान कराता है, उसका सत्कार शिवजी भी करते हैं।

(४४ वां अध्याय) रामचन्द्र रावण को मार सब के साथ विमान में चढ़ गंधमादन पर्वत में पहुँचे। उन्होंने वहां अग्नि में सीता का शोधन किया। उस समय वहां अगस्त्य मुनि के साथ दण्डकारण्य के सब मुनि आये। रामचन्द्र ने मुनियों से पूछा कि पुलस्त्यमुनि के पौत्र रावण के वध के पाप का प्रायश्चित क्या है, मुनि बोले कि हे रामचन्द्र! आप इस गंधमादन पर्वत में शिवलिंग स्थापन कीजिये। इनके दर्शन का फल काशी विश्वनाथ के दर्शन के फल से कोटि गुणित होगा और आप के नाम से यह लिंग प्रसिद्ध होगा। तब रामचन्द्र ने हनूमान को आज्ञा दी कि तुम शीघ्रही कैलास में जाकर एक उत्तम शिवलिंग लाओ। हनूमान क्षणमात्र में कैलास पर्वत पर पहुंचे; परन्तु जब वहां लिंगरूप महादेव न मिले, तब वह वहां तप करने लगे। कुछ काल के अनन्तर शिवजीने एक उत्तम शिवलिंग हनूमान को दिया। यहां हनूमान के आने में विलम्ब होने पर मुनियों ने रामचन्द्र से कहा कि मुहूर्त काल आगया, किंतु शिवलिंग नहीं आया, इस लिये सीताजी ने क्रीड़ा कर के जो बालू का शिवलिंग बनाया है, उसको आप स्थापन कीजिये। तब सीता के सहित रामचन्द्र ने ज्येष्ठमास, शुक्लपक्ष, दशमी तिथि, बुधवार, हस्त नक्षत्र, व्यतीपात योग, गरकरण और वृष के सूर्य में रामेश्वर लिंग को और रामेश्वर के आगे नन्दिकेश्वर को स्थापित किया।

(४५ वाँ अध्याय) उसी अवसर में हनूमानजी भी शिवलिंग लेकर आ पहुंचे। उन्होंने जब देखा कि रामचन्द्रजी ने शिवलिंग स्थापन करदिया, तब वह बहुत विलाप करने लगे। उस समय रामचन्द्र बोले कि हे हनूमान! कैलास से लाये हुए लिंग को तुम स्थापन करो; यह लिंग तेरे नाम से प्रसिद्ध होगा; सब मनुष्य तेरे स्थापित लिंग का प्रथम दर्शन करके तब रामेश्वर का दर्शन करेंगे। हम ने, सीता ने, लक्ष्मण ने, तुम ने, सुग्रीव ने, नल ने, नील ने, जाम्बवान ने, विभीषण ने, इन्द्रादि देवताओं ने, शेष नागादिकों ने, जो लिंग स्थापन किये हैं, इन ११ लिंगों में शिवजी सदा निवास करेंगे; अगर तू रामेश्वर लिंग को उखाड सके तो हम तेरे लाये हुए लिंग को स्थापन करें। तब हनूमान ने अपने दोनों हाथों से रामेश्वर लिंग को पकड कर उखाड़ने के लिये बहुत बल किया। जब वह लिंग न हिला, तब उसको पूंछ में लपेट कर दोनों हाथो को भूमि पर रख आकाश को उछला; परन्तु लिंग नहीं उखडा। उस समय हनूमान का पुच्छ लिंग से छूट गया; वह एक कोस दूर जा गिरे और उनके आंख, नाक कान, आदि इन्द्रियों से रुधिर गिरने लगा; जिससे रक्तकुण्ड बन गया। रामचन्द्र लक्ष्मण आदि अपने साथियों के साथ वहां जाकर विलाप करने लगे। पीछे हनूमान मूर्छा से जागे। (४६ वां अध्याय) रामचन्द्र बोले कि हे वायुपुत्र! आज से यह कुंड तुह्मारे नाम से प्रसिद्ध होगा; इसमें स्नान करने से महा पातकों का नाश होगा। हनूमानजी ने रामचन्द्र की आज्ञा से रामेश्वर के उत्तर भाग में अपना लाया हुआ शिवलिंग स्थापन किया।

(४७ वां अध्याय) जहां रामचन्द्र की ब्रह्महत्या निवृत्त हुई, वहां ब्रह्महत्याविमोचनतीर्थ हुआ। उसके आगे एक नागलोक का बिल है जिसमें रामचन्द्र ने ब्रह्महत्या का प्रवेश करादिया। और बिल के ऊपर मंडप बनाकर वहां भैरव को स्थापन किया। रामेश्वर लिंग के दक्षिण भाग में पार्वतीजी और दोनों ओर सूर्य और चन्द्र हैं और सन्मुख भाग में अग्नि निवास करता है। गणपति, कार्तिकेय और वीरभद्र आदि गण रामेश्वर के पास में विद्यमान हैं।

(५० वां अध्याय) पूर्वकाल में मथुरापुरी में पुण्यनिधि नामक चंद्रवंशी राजा था; वह अपने पुत्र को राज्य सौंप चतुरंगिणी सेना सहित रामसेतु में जाकर रामेश्वर का सेवन करने लगा। कुछ काल के अनन्तर लक्ष्मीजी विष्णु भगवान से रुष्ट होकर ८ वर्ष की कन्या बन धनुष्कोटितीर्थ पर जाकर स्थित होगई। राजा पुण्यनिधि ने उस कन्या से पूछा कि तुम कौन हो। कन्या बोली कि मै अनाथ हूं; आपकी पुत्री होकर आपके गृह में रहना चाहती हूं; जो कोई हठ से मुझको आकर्षण करे उसको आप दंड दीजिये। राजा ने स्वीकार किया और कन्या को पुत्री की भांति अपनी रनिवास में रक्खा। विष्णुभगवान ब्राह्मण रूप से लक्ष्मी को ढूँढते हुए रामसेतु के उपवन में पहुंचे। वहां पुष्प बिनती हुई कन्यारूपिणी लक्ष्मी मिली। जब विष्णु ने उस कन्या को हाथ पकड़ कर खींचा तब वह पुकारने लगी। उसकी पुकार सुनकर राजा पुण्यनिधि दौड़कर वहां आया और वह ब्राह्मण रूपी विष्णु को पकड़ हथकड़ी बेड़ी पहनाय रामनाथ के समीप एक मण्डप में कैद करदिया। रात्रि के समय राजा ने स्वप्न में देखा कि वह ब्राह्मण शंख, चक्र, गदा, पद्म और भांति२ के भूषण धारण कर शेषशय्या पर शयन करता है, नारद, गरुड़ विष्वक्सेन, आदि पार्षद उसकी सेवा में खड़े हैं और वह कन्या हाथ में कमल लिये हुए कमल पर बैठी है। राजा उठकर कन्या के घर में जाकर देखा कि वह उसी रूप में बैठी है, जैसा वह स्वप्न मे देखा था। प्रभात होतेही उसने उस कन्या के साथ मंडप में जाकर उस ब्राह्मण को जैसा स्वप्न में देखा था वैसाही चतुर्भुज तथा शेषशायी देखा। तब वह राजा विष्णुभगवान को पहचान स्तुति करने लगा। विष्णुभगवान ने प्रसन्न होकर कहा कि हे राजन्! तुमने जिस प्रकार से हमको निगड़ से बांधा है; अब हम इसी रूप से यहां निवास करेंगे। हम ने सेतु बांधा है; इसकी रक्षा के लिये हम सेतुमाधव नाम से यहां रहेंगे। जो मनुष्य सेतुमाधव के बिना सेवा किये हुए रामेश्वर की सेवा करेगा; उसकी सेवा का फल व्यर्थ होजायगा।

(५१ वां अध्याय) कंठ से ऊपर वपन अर्थात् क्षौरकर्म करवा कर लक्ष्मणतीर्थ में स्नान करना चाहिए। (५२ वां अध्याय) किसी तीर्थ में स्नान

करने से कृतघ्न का उद्धार नहीं होता किन्तु सेतुबन्ध में स्नान करने से इसकी भी सद्गति होजाती है।

इतिहास—रामेश्वरजी का निज मन्दिर बहुत पुराना है। ऐसा प्रसिद्ध है कि मदुरा के एक नायक ने बड़े मन्दिर के भीतर का भाग बनवाया। उसके चारो ओर के मन्दिर, दीवार, गोपुर इत्यादि इमारतों को १७ वीं शदी में रामनाद के सेतुपति राजाओं ने बनवाया. उसी समय तिरुमलई नायक मदुरा का बड़ा मन्दिर बनवा रहा था। उस समय सेतुपति स्वाधीन थे और उनका प्रताप चमका था। मन्दिर के गोपुरों का काम १८ वीं शदी तक बना होगा। जब १८ वीं शदी के आरम्भ में मुसलमानो, महाराष्ट्रों और अन्य आक्रमण करने वालों ने इस टापू में जाकर लूटपाट की, तब मंदिर बनने का काम रुक गया।

देवीपत्तन।

रामेश्वर के टापू के पश्चिम के हरवोला की खाड़ी से लगभग २० मील पश्चिम समुद्र के तीर सेतुमूल के पास देवीपत्तन एक तीर्थ है। कोई कोई यात्री पांबन से समुद्र की नाव द्वारा देवीपत्तन और दर्भशयन तीर्थ होकर तुतिकुडी में जाकर रेलगाड़ी में चढ़ते हैं। पाबन से लगभग १२ घंटे में समुद्र की नाव तुतीकुड़ी पहुंच जाती है। एक आदमी का नाव भाड़ा लगभग एक रुपया लगता है। कुछ लोग मदुरा कसबे और हरवोला की खाड़ी के बीच के परमगुड़ी के चट्टी से देवीपत्तन जाते हैं। वहां से लगभग २० मील दक्षिण कुछ पूर्व देवीपत्तन है। दस बारह घंटे में बैलगाड़ी देवीपत्तन में पहुंच जाती है।

देवीपत्तन से सेतुबंधरामेश्वर का क्षेत्र माना जाता है। यहां सुन्दरी देवी और तिलकेश्वर महादेव का मन्दिर है। देवीपत्तन के पूर्वोत्तर समुद्र की खाड़ी में नव पाषाण अर्थात् नवग्रह है, जिनको श्रीरामचन्द्रजी ने सेतु बांधने के समय स्थापन किया। उनमें ग्रहों का कुछ आकार नहीं है इस लिये लोग उनको नव पाषाण कहते हैं। उनके पास समुद्र के जल में रामचन्द्र का चरण-

पादुका, किनारे पर चक्रतीर्थ और वेंकटेश की चतुर्भुज मूर्ति है । यात्रीगण चक्रतीर्थ में स्नान करके वहां के देवताओं का दर्शन करते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदपुराण—(सेतुबंधखंड, तीसरा अध्याय) सेतुमूल के समीप चक्रतीर्थ है, जो पहिले धर्मतीर्थ तथा "धर्मपुष्करिणी" नाम से प्रसिद्ध था । पूर्वकाल में धर्म ने दक्षिण-समुद्र के तट पर बहुत काल तक महादेवजी का तप किया और स्नान करने के लिये एक पुष्करिणी रचा। शिवजी प्रकट होकर बोले कि हे धर्म ! तुम इच्छित वर मांगो । धर्म बोले कि हे नाथ ! मैं यही चाहता हूं कि आपका वाहन होऊं । शिवजी ने धर्म को अपना वाहन (अर्थात् नंदी बैल) बना लिया। उसके पश्चात् महादेवजी बोले कि हे धर्म ! तुम्हारा बनाया हुआ तीर्थ आज से धर्मपुष्करणी नाम से प्रसिद्ध होगा । कुछ समय के पश्चात् महर्षि गालव धर्मपुष्करिणी के तीर पर विष्णु भगवान का ध्यान करने लगे । उस समय एक राक्षस ने आकर मुनि को पकड़ा । मुनि विष्णु को पुकारने लगे । विष्णु की आज्ञा से सुदर्शनचक्र ने वहां आकर उस राक्षस का सिर काट लिया । उसके पश्चात् वह धर्मपुष्करणी में प्रवेश करगया। चक्र के निवास करने के कारण धर्मपुष्करणी का नाम चक्रतीर्थ होगया।

(सातवां अध्याय) महिषासुर के संग्राम में जगदम्बा ने उस असुर को एक मूका मारा । वह व्याकुल होकर भागा और दक्षिण समुद्र के तट पर जाकर दस योजन लम्बी चौड़ी धर्मपुष्करणी के जल में गुप्त होगया । भगवती के जाने पर वहां आकाश वाणी हुई कि-दैत्य धर्मपुष्करिणी के जल में छिपा है । उस समय जगदम्बा की आज्ञा से उनके वाहन सिंह ने पुष्करिणी के सब जल को पीलिया । तब भगवती ने महिषासुर का सिर काट लिया और दक्षिण समुद्र के तट पर अपने नाम से नगर बसाया; वही देवीपुर और देवीपत्तन नाम से प्रसिद्ध हुआ।

श्रीरामचन्द्रजी ने शिवजी की आज्ञा से देवीपत्तन के समीप अपने हाथ से नवशिला स्थापन किये । देवीपत्तन से लंका तक १०० योजन लंबा और १० योजन चौड़ा सेतु पांच दिन में पूरा हुआ । देवीपत्तन से सेतु का आरंभ

हुआ, इस लिये देवीपत्तन सेतुमूल कहाया। सेतुमूल के पश्चिम का छोर दर्भशयनतीर्थ और पूर्व का छोर देवीपत्तन है। प्रथम नव पाषाण के समीप समुद्र में स्नान करके चक्रतीर्थ में श्राद्ध करना चाहिये।

(८ वां अध्याय) चक्रतीर्थ के दक्षिण भाग में वेताल वरद नामक तीर्थ है। (९ वां अध्याय) एक ऋषि के वचन के अनुसार सुकर्ण नामक दैत्य अपने भाई कपाल स्फोट के साथ दक्षिण समुद्र के तट पर तीर्थ में पहुंचा। इतने में पवन चला, जिससे तीर्थ के जल कण उड़ कर कपाल स्फोट के शरीर पर गिरे। जल कणों के गिरतेही वह गालव मुनि के शाप से निवृत्त हो बेताल रूप छोड़ अपना पूर्व रूप अर्थात् ब्राह्मण-पुत्र विजयरत्न होगया। फिर जब उसने उस तीर्थ में स्नान किया तब मनुष्य देह छोड़ कर दिव्य स्वरूप हो स्वर्ग में चला गया। उस दिन से उस तीर्थ का नाम वेतालवरद हुआ।

(३७ वां अध्याय) देवीपत्तन से पश्चिम दिशा में थोड़ी दूर पर पुल्लग्राम नामक पुण्य क्षेत्र है, जहां से रामचन्द्र ने सेतु का आरंभ किया। उसी स्थान में क्षीर कुंड है। पूर्व काल में जब मुद्गल मुनि ने पुल्लग्राम में यज्ञ किया, तब विष्णु भगवान ने प्रकट होकर वहां क्षीरकुण्ड बनादिया।

दर्भशयन।

देवीपत्तन से लगभग २९ मील पश्चिम कुछ दक्षिण और पांवन से लगभग पचास मील दक्षिण-पश्चिम समुद्र के किनारे से ३ मील दूर दर्भशयन तीर्थ है। कोई कोई यात्री पांवन में समुद्र की नाव पर सवार हो देवीपत्तन और दर्भशयन होकर तुतीकुडी में जाकर रेलगाड़ी पर चढ़ते हैं। प्रति आदमी का भाड़ा लगभग एक रुपया लगता है। दर्भशयन के पास समुद्र के किनारे पर एक धर्मशाला है।

दर्भशयन में एक धर्मशाला है और खाने की वस्तु मिलती है। वहां के मुख्य देवता शेषशायी चतुर्भुज भगवान हैं। उनकी मूर्ति मनुष्य के समान बड़ी है। मंदिर के भीतर की परिक्रमा में कोदंडरामस्वामी अर्थात् श्रीरामचन्द्र, कल्याण जगन्नाथ और नृसिंहजी हैं। श्रीरामचन्द्र ने लंका पर आक्रमण

करने के समय समुद्र से मार्ग पाने के लिये उसी स्थान पर ३ दिनों तक दर्भ अर्थात् कुश के आसन पर शयन किया, इस कारण से उस स्थान का नाम दर्भशयन पड़ा । दर्भशयन तीर्थ सेतु मूल का पश्चिम छोर है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—वाल्मीकिरामायण—(लंकाकांड, २१ वां सर्ग) श्रीरामचन्द्र समुद्र के तीर अपने बांहु को तकिया बना कर मौन हो कुशासन पर लेट गए। इस भांति उनको ३ रात बीतगई, किन्तु सागर प्रकट नहीं हुआ, तब वह महा क्रुद्ध हो इन्द्रवज्र के समान बाणों को छोड़ने लगे। जब वायु से युक्त समुद्र के जल का महा वेग उत्पन्न हुआ (२२ वां सर्ग) तब समुद्र मूर्तिमान होकर जल से प्रकट हुआ और रामचन्द्र से बोला कि हे महाराज! विश्वकर्मा के पुत्र नल वानर तुम्हारी सेना में हैं। विश्वकर्मा ने उनको वरदान दिया है, वह मेरे जल के ऊपर सेतु बनावें। ऐसा समुद्र का वचन सुन नल आदि वानरों ने सेतु बनाया। सब सेना सेतु द्वारा समुद्र पार हुई।

स्कंदपुराण—(सेतुप्रभार्वंड ७ वां अध्याय) सेतुमूल के पश्चिम का छोर दर्भशयनतीर्थ और पूर्व का छोर देवीपत्तन तीर्थ है।

पंद्रहवां अध्याय।

(मदरास हाते में) तुतिकुड़ी, (समुद्र में) सिलोन, (मदरास हातेमें) तिरुचेंदूर, तिरुनलवेली, पालमकोटा, पापनाशनतीर्थ, तोताद्री, कुमारीतीर्थ, तिरुवंद्रम्, कोचीन और राजा का कोचीन।

तुतिकुड़ी।

दर्भशयन तीर्थ से लगभग ४० मील (पांबन से लगभग ९० मील) दक्षिण पश्चिम तुतिकुड़ी का बंदरगाह है,जिससे ८ मील दूर तुतिकुड़ी का रेलवे

स्टेशन है। मदुरा के रेलवे स्टेशन से ८१ मील दक्षिण मनियार्ची का रेलवे जंक्शन और मनियार्ची से १८ मील दक्षिण-पूर्व तुतिकुड़ी का रेलवे स्टेशन है। मद्रास हाते के तिरुनल्वेल्ली जिले में (८ अंश, ४८ कला, ३ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ११ कला, २७ विकला पूर्व देशांतर मे) तुतिकुड़ी बंदरगाह के पास तुतिकुड़ी कसबा है, जिसको द्रविड़ियन लोग तुतुगुड़ी और अंगरेजी लोग तुतीकोरिन कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय तुतिकुड़ी में २५१०७ मनुष्य थे; अर्थात् १३७१३ पुरुष और ११३९४ स्त्रियां । इनमें १४८९९ हिंदू, ७५९१ क्रुस्तान, २५८७ मुसलमान २८ बौद्ध और २ अन्य थे।

तुतिकुड़ी में मातहत कलक्टर रहते हैं । वहां कई एक गिरजे हैं । तुतिकुड़ी विदेशी सौदागरी के विषय में मदरास हाते में दूसरा और भारतवर्ष में ६ वां कसबा है । वहां से रूई, काफी, मवसी इत्यादि वस्तु अन्य स्थानों में और चावल, मवेसी, घोड़े, भेड़, मुर्गे खास कर सिलोन में भेजे जाते हैं। वहां बहुत से अंगरेज सौदागर और रूई दबाने के लिये घूंए की कल हैं । कसबे के कूप का पानी खारा है; ताम्रपर्णीनदी से पानी लाया जाता है । कसबे के आस पास की भूमि अच्छी नहीं है; उस पर वृक्ष और पौधे प्रायः नहीं होवे।

तुतिकुड़ी के बंदरगाह का पानी केवल ८ फीट गहरा है, इस लिये किनारे से २½ मील भीतर समुद्र में लंगर पर जहाज तथा आगबोट ठहरते हैं । २० टन वाली नावो पर जहाजों का माल किनारे लाया जाता है । हाल में हेयर टापू पर एक लाइटहाउस बना है । तुतिकुड़ी के पास के समुद्र में मोती वाले सीप और शंख निकाले जाते हैं। तिरुनलवेली और मदुरा जिले से बहुत से कुली काफी रोपने और अन्य काम करने के लिये सिलोन भेजे जाते हैं।

इतिहास—पहिले तुतिकुड़ी बहुत प्रसिद्ध स्थान था । लोग कहते हैं कि सन् १७०० में उसमें ५० हजार मनुष्य बसते थे। १७ वीं सदी में हालेंड वालों ने पोर्चुगीजों से इसको लेलिया । सन् १७८१ में जब अंगरेज और हालेंड वालो से लड़ाई आरंभ हुई तब तुतिकुड़ी हालेंड वालों के अधिकार से निकल गई।

सिलोन ।

तुतिकुड़ी के बंदरगाह से लगभग २०० मील दक्षिण-पूर्व सिलोन अर्थात् लंका टापू का सदर स्थान कोलंबो शहर है । सप्ताहिक आगबोट तुतिकुडी से कोलंबो को जाता है और कोलंबो से तुतिकुड़ी आता है और प्रति सप्ताह में दो अथवा तीन बार छोटे जहाज जाते हैं।

सिलोन का नाम सिंहलद्वीप- सरंद्वीप और लंका है। वहां के निवासी, जो बौद्धमत के हैं, सिंहाली कहलाते हैं । सिलोन टापू उत्तर से दक्षिण तक २७० मील लंबा और पूर्व से पश्चिम तक अधिक से अधिक १४० मील चौड़ा अर्थात् लगभग २५००० वर्गमील में है । इस टापू में ३० लाख से अधिक मनुष्य बसते हैं, जिनमें २० लाख से अधिक वहां के निवासी सिंहाली, लगभग ८ लाख तामिल और ६ हजार से कम खालिस युरोपिन हैं।

इस टापू के मध्य भाग की भूमि समतल है; किन्तु समुद्र के पास की पृथ्वी नीची है। तीन चार प्रसिद्ध पर्वत हैं । टापू में महावलीगंगा, कल्यानीगंगा, कालूगंगा और वेलवेगंगा प्रसिद्ध नदी हैं। सिलोन एक गवर्नर के आधीन ७ भागों में विभक्त है । इसमें कोलंबो, निगम्, जाफना, कलतुरा, त्रिकामली, कांडी, अनिरुद्धपुर इत्यादि १० प्रसिद्ध कसबे हैं । कोलम्बो सदर स्थान है, जिसमें लगभग १ लाख मनुष्य बसते हैं। जाफना में बहुत नमक तैयार होता है । वहांसे नमक मदरास और कलकत्ते में भेजा जाता है । पूर्व समय में कांडी कसबा कांडी वंश के राजाओं की राजधानी था । एक समय अनिरुद्धपुर सिलोन की राजधानी था । सिलोन की खानों से अकीक, लाल, पोखराज, और संगमशव आदि जवाहिरात निकलते हैं । टापू में दारचीनी, नारियल, कहवा, सुपारी आदि बहुत होती हैं । चौपाया जानवरों में हाथी बहुत होते हैं । मनार की खाड़ी में मोती निकलते हैं ।

इतिहास—सन् १५०५ ईस्वी में पोर्चुगल वाले पोर्चुगीज लोग सिलोन में उतरे, उन्होंने शीघ्रही कोलंबो में एक कोठी बनाई । वे लोग देशियों के साथ बराबर लड़ते रहे, तथा कई बार परास्त हुए। सन् १६०२ में

हालैंड वाले सिलोन में आए। उन्हो ने सन् १६३८ में देशियों में मिलकर पोर्चुगीजों से लड़ाई आरंभ की। सन् १६५८ में लड़ाई खतम हुई। हालैंड वाले यहां के मालिक रह गए। उन्होंने कोलंबो में किला बनाया, जिसके कई एक बैटरी अब तक समुद्र के किनारे पर विद्यमान हैं। सन् १७९६ में अंगरेजों ने हालैंड वालों को निकाल कर सिलोन को अपने अधिकार में कर लिया, तब से वह अंगरेजी गवर्नमेंट के आधीन है।

तिरुचेंदूर।

तुतिकुड़ी कसबे से १८ मील दक्षिण समुद्र के किनारे पर तिरुनलवेली जिले में तिरुचेंदूर एक कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय ७५८२ मनुष्य थे; अर्थात् ६३८६ हिंदू, ९८४ कृस्तान और २१२ मुसलमान। तिरुचन्दूर में समुद्र के किनारे पर सुब्रह्मण्य अर्थात् शिवजी के पुत्र स्कन्दजी का बड़ा मन्दिर है। मन्दिर में सुन्दर शिलालेख है; वहां यात्री बहुत आते हैं। मदरास हाते में स्कन्द के ५ मन्दिर प्रधान हैं;—(१) बल्लारी जिले में बल्लारी और हुसपेट के बीच में, (२) दक्षिणी आरकाट जिले के तिरुवन्नामलई में, (३) उत्तरी आरकाट जिले के तिरुत्तनी में (आरकोनम् जंक्शन से ८ मील पश्चिमोत्तर) [४] तिरुनलवेली जिले के तिरुचेंदूर में और [५] मदुरा में। पांचो स्थानो में तिरुचेन्दूर अधिक प्रख्यात है। वहां मन्दिर के खर्च के लिये भारी आमदनी है; प्रति वर्ष एक बड़ा मेला होता है, जिसमें बहुतसी मवेशियां बिकने के लिये आती हैं।

तिरुनलवेली।

तुतिकुड़ी के रेलवे स्टेशन से १८ मील पश्चिमोत्तर (मदुरा से ८१ मील दक्षिण) मनियार्ची का रेलवे जंक्शन और मनियार्ची से १८ मील दक्षिण-पश्चिम तिरुनलवेली का रेलवे स्टेशन है। ताम्रपर्णी नदी के बाएं किनारे से १½ मील (८ अंश, ४३ कला, ४७ विकला उत्तर अक्षांश, और ७७ अंश, ४३ कला, ४९ विकला पूर्व देशान्तर में) मदरास हाते के तिरुनलवेली जिले में तिरु-

नलवेली कसबा है, जिसको तीन्नेवेली भी कहते हैं। ताम्रपर्णीनदी पर ११ मेहराबियों का पुल बना है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय तिरुनलवेली कसबे में २४७६८ मनुष्य थे; अर्थात् २२९४८ हिंदू, १५०४ मुसलमान और ३१६ कृस्तान।

तिरुनलवेली कसबे में एक कालिज, एक बड़ा अस्पताल, एक मिशन और एक बड़ा शिव मंदिर है। कसबे से ३ मील पूर्व ताम्रपर्णी के दहिने तिरुनलवेली जिले का सदर स्थान पालमकोटा है।

बड़ा शिवमन्दिर— तिरुनलवेली का शिव मन्दिर ७५० फीट लंबा और ५८० फीट चौड़ा अर्थात् १६ बीघे में है। वह मन्दिर मदुरा के बड़े मंदिर के समान दो भागों में बंटा हुआ है। दक्षिण के आधे भाग में पार्वती का और उत्तर के भाग में शिव का मन्दिर है। दोनों में तीन तीन गोपुर बने हुए हैं, जिनमें से पूर्व वाले गोपुर प्रधान हैं; उनके बाहर पेसगाह बने हुए हैं। भीतर जाने पर एक बड़ा पेशगाह मिलता है, जिसके दहिने तप्पकुलम् अर्थात् नाव चलने का सरोवर, जिसमें उत्सवों के समय मन्दिर की उत्सव मूर्तियां नौका पर चढ़ा कर फिराई जाती हैं और बाएं सहस्र स्तंभ मण्डपम् है। वह मण्डपम् उस घेरे की संपूर्ण चौड़ाई में लंबा और ६४ फीट चौड़ा है। उसमें १०० स्तंभों की १० पंक्तियां हैं। मन्दिर दर्शनीय है।

इतिहास—मदुरा के नायकों की हुकूमत के समय उनके सूबेदार तिरुनलवेली कसबे में रहते थे। लगभग सन् १५६० में मदुरा के विश्वनाथ नायक ने तिरुनलवेली कसबे को सुधारा और अनेक मन्दिर तथा अन्य इमारतों को बनाया।

पालमकोटा।

मदरास हाते के तिरुनलवेली जिले में तिरुनलवेली कसबे से लगभग ३ मील पूर्व ताम्रपर्णी नदी के दहिने के किनारे से १ मील दूर तिरुनलवेली के रेलवे स्टेशन के पास तिरुनलवेली जिले का सदर स्थान पालमकोटा एक कसबा है। तिरुनलवेली कसबे से पालमकोटा तक उत्तम सड़क बनी हुई है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पालमकोटा में १८६८६ मनुष्य थे, अर्थात् १५७०३ हिंदू, २१८४ कृस्तान और ७०९ मुसलमान।

पालमकोटा में सरकारी कचहरियां, जेलखाना, अस्पताल और कई एक स्कूल हैं। यहां का पुराना किला तोड़ दिया गया है। ताम्रपर्णीनदी और किले के बीच में ११० फीट ऊंचा एक गिरजा है। तिरुनलवेली कसबे के बहुत अफसर पालमकोटा में रहते हैं। पालमकोटा स्वास्थ्य कर स्थान है।

तिरुनलवेली जिला—इसके उत्तर और पूर्वोत्तर मदुरा जिला; दक्षिण-पूर्व और दक्षिण मनार की खाड़ी और पश्चिम तिरुवांकूर का राज्य है। जिले की सब से अधिक लंबाई उत्तर से दक्षिण को १२२ मील और सब से अधिक चौड़ाई पूर्व से पश्चिम को ७४ मील है। तिरुनलवेली जिले में बहुत मैदान है। जिले के पश्चिमी सीमा के पास की भूमि मैदान से ४००० फीट ऊंची है। ६०० फीट से अधिक वर्गमील के क्षेत्रफल में ऊंची भूमि और पहाड़ियां हैं। लगभग ३०० वर्गमील में जंगल लगे हैं। जिले की ३४ नदियों में ताम्रपर्णी नदी प्रधान है, जो तिरुनलवेली और पालमकोटा कसबे के बीच होकर गई है। जिले के उत्तरी भाग में वृक्ष कम हैं। नदियों के आस पास धान इत्यादि के खेत और विविध भांति के वृक्ष हैं। समुद्र के पास बहुत से चट्टान, रेती और नमकदार दलदल हैं; बस्ती बहुत कम हैं।

तिरुनलवेली जिले में हिंदू लोगों के ३ पवित्र स्थान हैं;—(१) समुद्र के पास तिरुचेंदूर, (२) ताम्रपर्णी नदी के पास पापनाशनतीर्थ और (३) ताम्रपर्णी की सहायक चिट्टार नदी के पास कुट्टालम्। पापनाशन और कुट्टालम् के पास की पहाड़ियों के पादमूल के निकट सुन्दर जल प्रपात हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय तिरुनलवेली जिले के ५३८१ वर्गमील क्षेत्रफल में १६९९७४७ मनुष्य थे; अर्थात् १४६८९७७ हिंदू, १४०९४६ कृस्तान, ८९७६७ मुसलमान और ५७ अन्य। हिंदुओं में ३६२३२५ वेल्लाल (खेतिहर जाति), ३३१३९४ बनिया (जाति विशेष), २३२४५७ सानान (मद्यक), १२३९२५ परिया (परयन्), ९०११२ इडैयन (भेड़िहर), ६७२३८ कंमाइन (लोहार), ५९१०२ ब्राह्मण, ४३७५८ कैक-

कर (कपड़े विनने वाले), २४३९७ सतानी (दोमसला), २०७८९ अंबटन (नाई), २०६५४ वन्नान (धोबी), १९१९७ सेट्टी (सौदागर), १०७२४ कुसवन (कुम्भार), ५८२४ छत्री, ५५७३ सेनइवन (मछुहा), १००८ कणक्कन (लिखने वाले) वाक़ी में अन्य लोग थे। कृस्तानों में ५६६ यूरेशियन, १२९० यूरोपियन और अमेरिकन थे। इस जिले के समान हिंदुस्तान के किसी जिले में कृस्तान नहीं है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय तिरुनलवेली जिले के कसबे तुतिकुड़ी में २५१०७, तिरुनलवेली में २४७६८, श्रीवल्लीपुत्तूर में २१४४८, पालमकोटा में १८६८६, कुलसेखरन् पट्टनम् में १५९२४, विरुदुपट्टी में १४०७५, तेन्काशी में १२८६१, शिवकाशी में १२१८४, वीरवनल्लूर में १३९५१, राजापालयम् में १३३०१, कायरपट्टनम् में ११४६५ और कलड़ैकुरची में ११०९६ मनुष्य थे । तिरुनलवेली जिले के लगभग ४० कसबे में ५०० से अधिक मनुष्य हैं। इस जिले की प्रधान भाषा तामिल है; कुछ लोग तैलंगी बोलते हैं। जिले में तुतिकुड़ी प्रसिद्ध बंदरगाह है । समुद्र से शंख और मोती के सीप निकाले जाते हैं।

तेन्काशी—तिरुनलवेली कसबे से २५ मील पश्चिमोत्तर तिरुनलवेली जिले में ताल्लुक का सदर स्थान तेन्काशी एक पवित्र कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १२८६१ मनुष्य थे । एक सड़क तिरुनलवेली से तेनकाशी होकर क्वीलन कसबे को गई है । तेन्काशी में आस पास के देशों से तिजारत होती है । तामिल भाषा में तेन् का अर्थ दक्षिण है। इस स्थान को अतिपवित्र समझ कर वहांके लोगों ने तेन्काशी अर्थात् दक्षिण की काशी इसका नाम रक्खा था। तेन्काशी में तिरुवांकूर जाने वाली सड़क के निकट एक सुन्दर मन्दिर है, जिसको लोग बड़ा मान करते हैं।

कुट्टालम्—पालमकोटा कसबे से ३५ मील दूर तेन्काशी के ताल्लुक में चिट्टारनदी के पास कुट्टालम् एक पवित्र गांव और जल प्रपातों के होने के कारण प्रसिद्ध है । वहां के छोटे जल प्रपात के नीचे, (जो १०० फीट ऊंचा है) एक सुन्दर कुंड और एक मन्दिर है । यात्री-लोग जलप्रपात के कुण्ड में

स्नान करके मन्दिर में देव दर्शन करते हैं। जलप्रपातो का दृश्य आश्चर्य जनक है। उनके आस पास अनेक बंगले बने हुए हैं, जिनमें युरोपियन लोग पालमकोटा और तिरुवंद्रम् से आकर जून से अक्तुबर तक रहते हैं।

श्रीविल्लीपुतूर—मदुरा के रेलवे स्टेशन से ४४ मील दक्षिण सातूर का रेलवे स्टेशन से, जिससे लगभग २५ मील पश्चिम ओर तिरुनलवेली जिले में तालुक का सदर स्थान श्रीविल्लीपुतूर एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१ में २१४४८ मनुष्य थे। वहा रंगमंदार भगवान का बड़ा मन्दिर है। मन्दिर में श्रीलक्ष्मीजी और गरुड़ के सहित रंगमदार भगवान विराजते हैं। वहा वटपत्र भगवान शयन करते हैं। मन्दिर के पश्चिमोत्तर पहाड़ी के ऊपर श्रीनिवास भगवान हैं और मन्दिर के निकट एक सरोवर है। श्रीविल्लीपुतूर में प्रति वर्ष रथयात्रा का मेला होता है। मेले में लगभग १०००० मनुष्य एकत्र होते हैं।

इतिहास—तामिल लोगों की कहावत के अनुसार चेरा, चोला और पांड्य वंश वाले ये तीनों राजा ताम्रपर्णी नदी के पास कोलकाई नगर में रह कर हुकूमत करते थे। पीछे पाड्य वंश के राजा वहांही रहगये और चेरा तथा चोला वंश के राजाओ ने उत्तर और पश्चिम जाकर अपना अपना खास राज्य नियत किया। पीछे पांड्य वंश के राजाओं की राजधानी मदुरा हुआ। कोलकाई के पास समुद्र से मोती वाली सीप निकलती थी। वह जगह अब समुद्र से लगभग ३ मील दूर है। जब कोलकाई से समुद्र हटगया, तब कायल बंदरगाह हुआ। कुछ समय के बाद कायल भी समुद्र से दूर होगया। उसके पश्चात् पोर्चुगीजो ने तुतिकुडी को, जो एक छोटा गाव था, प्रसिद्ध बंदरगाह बनाया।

ऐतिहासिक समय के आरम्भ से सन् १०६४ तक तिरुनलवेली जिला पाड्य वंश के राजाओं के अधिकार में था। सन् १०६४ में राजेंद्र चोला ने, जो सुन्दर पाड्य के नाम से मशहूर हुआ, पांड्य वंश के राजा को जीता। उसके पश्चात् २५० वर्ष तक जिले में गड़बड़ था। सन् १३१० में मुसलमानों ने उस जिले पर आक्रमण किया। उसके बाद फिर पाड्य वंश के राजा का

अधिकार हुआ। तबसे मुसलमान लोग, पांड्य वंश वाले और उस देश के अन्य लोग राज्य के लिये झगड़ा करते रहे। सन् १५६५ में मदुरा के नायक का हुकूमत कायम हुआ। पांड्य वंश के राजाओं के राज्य की घटती के समय तिरुनल्वेली मदुरा के नायक के अधिकार में हुई। लगभग सन् १७४४ में तिरुनल्वेली आरकाट के नवाब के अधिकार में हुई; किन्तु वास्तव में यह कई एक स्वाधीन मधानों के आधीन रही। जिले में लूट पाट और मार काट होती रही।

सन् १७८१ में आरकाट के नवाब ने इष्टइन्डियन कंपनी को तिरुनल्वेली जिले की मालगुजारी का अधिकार सौंपा। सन् १७८२ में एक अंगरेजी अफसर ने जिले के २ किलों को जीता और चन्द पालेगारों को अपनी अख्तियार में करलिया। सन् १७९९ में जब पालेगार बागी हुए तब उनसे हथियार छीनलिये गए और उनके किले ना कार्म करदिये गए। सन् १८०१ में फिर बलवा हुआ, जो दबाया गया। उसी साल तिरुनल्वेली के साथ संपूर्ण कर्नाटक अंगरेजी अधिकार में होगया।

पापनाशनतीर्थ।

पालमकोटा कसबे से २९ मील (८ अंश, ४८ कला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, २४ कला, पूर्व देशांतर में) मद्रास हाते के तिरुनल्वेली जिले के अम्बासमुद्रम् नामक तालुके में अंबासमुद्रम् गांव से लगभग ६ मील पश्चिम ताम्रपर्णीनदी के अन्त वाले जलप्रपात के पास पापनाशन नामक पवित्र गांव है। यहां ताम्रपर्णीनदी पहाडी के ऊपर से नीचे गिरती है। बड़े जलप्रपात (बड़े झरने) की बड़ी चौडी धारा पहाड़ी से ८० फीट नीचे देश के सतह पर जोर सोर से गिरती है। जलप्रपात के निकट एक पूज्य मन्दिर है। वहां ब्राह्मण लोग मछलियों को खिलाते हैं और बहुत से यात्री जाते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—शिवपुराण—(विद्येश्वरसंहिता, १० वां अध्याय) ताम्रपर्णीनदी में स्नान करने से ब्रह्मलोक मिलता है, उसके किनारे पर स्वर्ग देने वाले बहुत से क्षेत्र विद्यमान हैं।

कूर्मपुराण—(उपरिभाग, ३६ वां अध्याय) तीनों लोकों में विख्यात

ताम्रपर्णीनदी के जल में तर्पण करने से पितर लोगों के संपूर्ण पाप नाश होकर उनकी मुक्ति होजाती है।

तोताद्री।

तिरुनल्वेली के रेलवे स्टेशन से लगभग ४० मील दूर श्रीरामानुजस्वामी की संप्रदाय की मूलगद्दी का स्थान तोताद्री है। तिरुनल्वेली से बैलगाड़ी तोताद्री जाती हैं। वहां तोताद्रीनाथ भगवान का बड़ा मन्दिर क्षिराब्धि-पुष्करिणी नामक सरोवर और रामानुजीय संप्रदाय की मूलगद्दी है। द्रविड़ देश में रामानुजीय सम्प्रदाय अर्थात् आचारी लोगों की ८ गद्दी हैं;—उनमें से तोताद्री, मेलकोटा, और वेंकटाचल इन ३ गद्दियों पर विरक्त अचारी और विष्णुकांची, श्रीरंगम् आदि ५ गद्दियों पर गृहस्थ आचारी रहते हैं। संपूर्ण गद्दियों में तोताद्री की गद्दी मुख्य है, इस लिये वह मूलगद्दी कहलाती है। वहां बहुत से आचारी यात्री जाते हैं। रामानुजीय संप्रदाय का वृत्तांत भारत-भ्रमण के इसी खंड में भूतपुरी के बयान में लिखा है।

कुमारीतीर्थ।

तिरुनल्वेली (तिनेवेली) के रेलवे स्टेशन से साठ सत्तर मील दक्षिण हिन्दुस्तान के अंत में उसके दक्षिण के नोक के भीतर (८ अंश ४ कला उत्तर अक्षांश और ७७ अन्श ३६ कला पूर्व देशांतर में) तिरुवांकूर राज्य के कुमारी अन्तरीप में समुद्र के निकट कुमारी नामक बस्ती है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय २०५७ मनुष्य थे। कुमारी गांव में कुमारीदेवी का बड़ा मन्दिर बना हुआ है। देवी के भोगराग में बड़ा खर्च होता है। उनके बहुमूल्य भूषण हैं। वहां तिहवारों के समय बहुत से यात्री जाते हैं। इसी कुमारीदेवी के नाम से उस अन्तरीप का नाम कुमारी अन्तरीप पड़ा है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(वनपर्व, ८३ वां अध्याय) कन्यातीर्थ में ३ दिन स्नान करने से १०० दिव्य कन्या मिलती हैं और स्वर्ग लोक में निवास होता है। (८९ वां अध्याय) यात्रियों को उचित है कि

कावेरीनदी में स्नान करने के पश्चात् समुद्र के किनारे पर जाकर कन्यातीर्थ का स्पर्श करे, जिससे उसका सम्पूर्ण पाप विनाश होजायगा।

मत्स्यपुराण—(१९२ वां अध्याय) जो पुरुष कन्यातीर्थ के संगम पर स्नान करता है, उसको देवी पार्वतीजी का स्थान प्राप्त होता है।

श्रीमद्भागवत—(दशम स्कंध, ७९ वां अध्याय) बलदेवजी ने सेतुबंध रामेश्वर के दर्शन करने के पश्चात् कृतमाला और ताम्रपर्णीनदी में स्नान करके मलयाचल और कुलाचल पर्वत में जाकर अगस्त्य मुनि की स्तुति की। उसके अनन्तर उन्होंने दक्षिण के समुद्र के तट पर जाकर कन्या नामक देवी का दर्शन किया।

तिरुवंद्रम्।

तिरुनलवेली (तिन्नेवेली) के रेलवे स्टेशन से साठ सत्तर मील पश्चिम कुछ दक्षिण पश्चिमी घाट के समुद्र से २ मील दूर (८ अंश २९ कला, ३ विकला, उत्तर अक्षांश और ७६ अन्श, ५९ कला, ९ विकला, पूर्व देशांतर में) मद्रास हाते के तिरुवांकूर राज्य के तिरुवंद्रम तालुक में तिरुवांकूर के महाराज की राजधानी तिरुवंद्रम कसबा है, जिसको द्रविड़ियन् लोग तिरुवंदनपुरम् कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय तिरुवंद्रम् में २७८८७ मनुष्य थे; अर्थात् १४७०७ पुरुष और १३१८० स्त्रियां। इनमें २४८०४ हिन्दू, १६१० मुसलमान और १४७३ कृस्तान थे।

तिरुवंद्रम् कसबे के नीचे का भाग रोगवर्द्धक है। पानी के निकास का मार्ग अच्छा नहीं है। नारियल आदि के घने वृक्षों के रहने के कारण स्वच्छ पवन का आवागमन कम रहता है। किले और कसबे का एक बड़ा भाग नीची भूमि पर है। कसबे में बहुत सी अच्छी सड़कें बनी हुई हैं।

तिरुवंद्रम् में १ डाक्टरी का स्कूल, १ लड़कियों का स्कूल, १ हाईस्कूल, ५ दवाखाना, ४ बिमारखाने, १ किला, बहुतेरे आफिस, अङ्गरेजी रेजीडेंट की कोठी, महाराज कालिज, एक अबजरवेटरी, २ जेलखाने और कई धर्मशाले हैं। पबलिकबाग में देखने लायक नेपियर मिउजियम, बना है। कसबे

मे उत्तर फौजी छावनी है, जिसमे हथियारखाना, अस्पताल, और फौजी अफसरो की कोठियां बनी हुई हैं। एक पहाडी पर एक सुंदर महल बना है, जिसमे कभी कभी महाराज रहते हैं। तिरुवद्रम के आस पास का दृश्य सुन्दर है।

ऊची दीवार से घेरा हुआ तिरुवद्रम का किला है। किले के भीतर पद्म नाभ का बडा मंदिर और महाराज तथा राजघराने के अनेक राजकुमारो और राजकुमारियो के दर्शनीय महल बने हुए हैं। इनके अतिरिक्त किले के भीतर एक टकसाल और चन्द आफिस हैं।

पद्मनाभ का मन्दिर—तिरुवद्रम के किले के भीतर पद्मनाभ नारायण का विशाल कोइल अर्थात् मन्दिर है। मन्दिर के बगलो में दीवार और अनेक गोपुर बने हुए हैं। विमान अर्थात् निज मन्दिर के भीतर पद्मनाभ भगवान की विशाल मूर्ति सिंहासन पर शयन करती है। यात्री लोग मन्दिर के एक द्वार से भगवान के मुखमंडल का, दूसरे द्वार से नाभि का ओर तीसरे द्वार से चरण का दर्शन करते हैं। पद्मनाभ का मन्दिर तिरुवद्रम मे पहिले का बना हुआ बहुत पुराना है। महाराज की ओर से मन्दिरकी मरम्मत पर बडा ध्यान रहता है। मन्दिर के खर्च के लिये ७५ हजार रुपय आमदनी की भूमि है। भगवान के भोगराग की बडी तैयारी रहती है। यात्री लोग वहा का प्रसाद खाते है। तिरुवांकूर राजघराने के राजकुमारो के बहुतेरे मज हबी रसम पद्मनाभ के पास होते हैं।

महाभारत वनपर्व के ८३ वे अध्याय में लिखा है कि तीर्थसेवी पुरुष को पार्वती के स्थान का दर्शन करके पद्मनाभ नारायण का दर्शन करना चाहिए। उनके दर्शन करने वाला पुरुष प्रकाशमान होकर विष्णुलोक मे जाता है।

पद्मनाभ से दस बारह मील पूर्व केशव भगवान का विशाल मन्दिर है। पद्मनाभ के समान केशव भगवान भी शयन करते हैं। एक द्वार से उनके मुखम डल का दूसरे द्वार से नाभी का और तीसरे द्वार से चरण का दर्शन होता है।

पद्मनाभ से लगभग ३० मील उत्तर जनार्दन भगवान का मन्दिर है। मन्दिर मे भगवान की विशाल मूर्ति खडी है।

तिरुवांकूर का राज्य—यह राज्य हिन्दुस्तान के दक्षिणांत में मद्रास हाते के पश्चिमी किनारे पर कन्याकुमारी से कोचीन तक फैला है। इसके उत्तर कोचीन का राज्य, पूर्व मदुरा और तिरुनलवेली जिला और दक्षिण तथा पश्चिम हिंद का समुद्र है। इसकी सबसे अधिक लंबाई उत्तर से दक्षिण तक १७४ मील और सबसे अधिक चौड़ाई ७५ मील तथा इसका क्षेत्रफल ६७३० वर्गमील है। इस राज्य से महाराज को लगभग ६६००००० रुपया वार्षिक मालगुजारी आती है, जिसमें से अंगरेज सरकार को ८००००० रुपया दिया जाता है। इस राज्य में ३१ तालुक हैं। राज्य का प्रधान कसबा तिरुवंद्रम है, जिसमें महाराज रहते हैं। राज्य में ४ जेलखाने हैं;—दो तिरुवंद्रम में, एक कीलन छावनी में और १ अलेपी में। महाराज का सैनिक बल ४ तोप, ३० गोलंदाज, ६० सवार और १३६० पैदल है।

तिरुवांकुर का राज्य दक्षिण भारत के सबसे अधिक सुंदर भागों में से एक है। इसके पूर्व सीमा की पहाड़ियां, जो चंद स्थानों में, समुद्र के जल से लगभग ८००० फीट ऊंची है, सुन्दर जंगल तथा पौधों से हरी भरी हैं। पहाड़ी देश फैला हुआ है। उत्तर की पहाड़ियां ८००० फीट तक ऊंची हैं। चन्द स्थान अगम हैं। पहाड़ियों में सबसे अधिक प्रसिद्ध अनामलई पहाड़ी का भाग है। दक्षिण ओर अगस्तेश्वरमलई नामक पवित्र चोटी है, जिससे ताम्रपर्णी नदी निकली है। तिरुवांकूर की पहाड़ियों में एक पहाड़ी समुद्र के जल से ८८५० फीट ऊंची है। इतनी ऊंची कोई पहाड़ी हिमालय से दक्षिण नहीं है।

समुद्र के आस पास बहुत बस्तियां, धान के खेत और नारियल तथा ताड़ के सुंदर जंगल हैं। समुद्र के पास चाह और काफी रोपे जाते हैं, धान, नारियल, ताड़, मिर्च, परका फल इत्यादि बहुत पैदा होते हैं और बेश कीमती लकड़ी होती हैं। समुद्र के किनारे पर नदियों के फैलने से अनेक झील बन गई हैं। नदियों से स्थान स्थान में नहर निकाली गई हैं। पहाड़ियों से बहुत सी छोटी नदियां निकली हैं। कोई प्रसिद्ध स्थान नहीं है, किन्तु लोहा बहुत होता है। फिटकरी, गंधक इत्यादि धातुओं की खानि हैं, परंतु

किसी में काम नहीं होता है। हाथी, बाघ, तेंदुए, भालू तथा अनेक भांति की हरिन आदि बहुत बन जंतु होते हैं। हाथी के दांतो से महाराज को बड़ी आमदनी है।

तिरुवांकूर राज्य में एरिया ५६ नामक पवित्र स्थान है, जहां एक बड़ा मन्दिर है और बहुत धर्मशाले बनी हुई हैं। महाराज की ओर से उस मंदिर के खर्च के लिये प्रति वर्ष बहुत रुपया दिया जाता है।

तिरुवांकूर राज्य में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय २५५७७४० और सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय २४०११५८ मनुष्य थे; अर्थात् १७२५६१० हिन्दू, ४९८५४२ कृस्तान, १४६९०९ मुसलमान और ९७ यहूदी। हिंदुओं में ४६४२३९ नायर, १२८६०० सोनान, ९२५७८ कंमाइन (लोहार), ६६४५४ परयन्, ४५९८३ वेल्लाल (खेतिहर), ३७११८ ब्राह्मण, २२५२६ बनिया (जाति विशेष), २१८५२ सेट्टी (सौदागर), १४५७८ अंबटन (न.ई), ११९५२ बन्नान (धोबी), बाकी में अन्य जातियों के लोग थे। राजपूत केवल २४४० थे। कोचीन के समान तिरुवांकूर राज्य में भी बहुत कृस्तान हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय तिरुवांकूर राज्य के कसबे तिरु-वंद्रम में २७८८७, अल्लोपी में २२७६८, कौलन में १५३७५ और नागर कोयल में ११९८७ मनुष्य थे, । इनके अलावे कोडायल्ल इत्यादि कई अन्य कसबे हैं। इन में कौलन में महाराज की फौज रहती है; अल्लोपी, कौलन, मनारगुड़ी इत्यादि बंदरगाह हैं।

मनुष्य-संख्या के ५ हिस्सों में से लगभग ४ हिस्से लोग मलेयालम् और १ हिस्सा लोग तामिलभाषा बोलते हैं। मलेवार लोगों की चाल विचित्र है। नंबुरी ब्राह्मणो में केवल बड़ा लड़का विवाह करता है और अपने पिता के संपूर्ण धन संपत्ति और मिलकियत का वारिस होता है; अन्य पुत्रों को अपने पिता के किसी चीज पर दावा नहीं है। नंबुरी ब्राह्मण लोग अपनी पुत्रि-यो का विवाह बड़ी अवस्था होजाने पर भी जल्दी नहीं करते। उनके मत में मरने के समय तक पुत्रियों को कुमारी रहना चाहिए। कितनी पुत्री

मरने के समय तक बिनब्याही हुई रह जाती हैं। यह चाल पूर्व समय से इन लोगों में चली आती है। महाभारत-वनपर्व के ८८ वें अध्याय में लिखा है कि पांड्य देश में बहुत सी पवित्र स्त्रियां ऐसी हैं जो अपना ब्याहही नहीं करतीं; उसी देश में ताम्रपर्णी नदी बहती है।

नायर लोगों की लड़कियां लड़कपन में ब्याही जाती हैं; किन्तु युवा होने पर किसी ब्राह्मण अथवा अपनी जाति के पुरुष को वे अपना पति बना कर उसके साथ रह सकती हैं। इसमें उसका विवाहित पति कुछ दावा नहीं कर सकता है। युवा युवती को एक सारी और कुछ गहने तथा खिलौने देदेवे, तो दोनों में ब्याह सिद्ध होजाता है। युवा युवती को अथवा युवती युवा को अपनी इच्छानुसार छोड़ सकती है। एक युवती को एकही समय में कई पति होना नाजायज नहीं है, किन्तु यह रीति अब बहुत घट गई है। मलेवार की रीति के अनुसार नायरों में बहिन के वंशवाले धन जायदाद के वारिस होते हैं। जिसको बहिन अथवा बहिन की संतान नहीं है, वह अपनी खांदानी वारिस कायम रखने के लिये किसी लड़की को गोद लेकर उसको बहिन बनाता है। तिरुवांकूर के महाराज यद्यपि अपने को क्षत्रिय मानते हैं;किन्तु तिरुवांकूर की राजगद्दी के वारिस होने की यही रीति चली आती है। राजा की बहिनही रानी कहलाती है और बहिन का पुत्र युवराज होता है। बहिन का पुत्र नहीं हो तो वह किसी लड़के को गोद लेती है; वही राजसिंहासन का अधिकारी होता है। नायर का लड़का अपने मामा का वारिस होता है और उसके मरने पर वही उसका श्राद्ध कर्म करता है।

नायर शूद्र हैं और खास करके खेती तथा सरकारी नोकरी करते हैं। नंबूरी ब्राह्मण और नायर बड़े पवित्र रहते हैं; वे दिन में कई बार स्नान करते हैं। ब्राह्मण अपने मुर्दों को जलाते हैं, किन्तु नायर लोगों में कुछ लोग अपने मुर्दों को जलाते हैं और कुछ लोग अपने वंश परंपरा के अनुसार भूमि में गाड़ देते हैं। सब लोग अपने बाग के किसी कोने में मुर्दों को जलाते हैं, अथवा गाड़ देते हैं। सब हिन्दूलोग अपने शिखा को पीछे लटकाते हैं; किन्तु यहां के लोग अपने शिखा को आगे की ओर अपने ललाट पर लटकाए

रहते हैं। मलेवार देश में ब्राह्मणों की प्रधानता बहुत है। मलेवार में ब्राह्मण और शूद्र बहुत हैं।

तिरुवांकूर राज्य की प्रधान फसिल धान और नारियल, उसके बाद मिर्च अंगूर, काफी, इलायची इत्यादि हैं। सूखा और हरा नारियल, नारियल का तेल, अदरक, मिर्च, खजूर, लकड़ी, काफी, इलायची, मधुमक्खियों का मोम इत्यादि वस्तु दूसरे देशों में भेजी जाती हैं और तंबाकू, चावल, कपड़ा, रुई, तांबा और अङ्गरेजी चीजें दूसरे देशों से यहां आती हैं।

तिरुवांकूर राज्य में शिक्षा की उन्नती है। तिरुवंद्रम् में हाईस्कूल और कालिज में लगभग १७०० विद्यार्थी पढ़ते हैं। वहां लड़िकियों का भी एक स्कूल है। इनके अलावे राज्य में २४ जिला स्कूल, २४४ सरकारी वर्नेक्युलर स्कूल और ४४० एडेड स्कूल हैं। ऊपर लिखे हुए स्कूलों में लगभग ३६००० विद्यार्थी पढ़ते हैं। इनके अतिरिक्त लंडनमिशन और रोमन कैथोलिक मिशन की ओर से बहुत स्कूल हैं, जिनमें लगभग १६००० विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। प्रधानों के लडको की शिक्षा के लिये एक खास स्कूल है। राज्य में कृस्तानों के बहुत गिरजे हैं।

तिरुवांकूर के राजा बड़े धर्मात्मा होते हैं। महाराज की ओर से तिरुवांकूर के राज्य में ४५ सदाबर्त लगे हैं, जिनमें देश देश से आए हुए ब्राह्मण साधु भोजन पाते हैं। बहुतरे लोग तिरुवांकूर राज्य को रामराज्य और वहां के राजाओ को रामराजा कहते हैं। प्रति वर्ष परमार्थ कामों में महाराज का आठ दस लाख रुपया खर्च होता है। तिरुवांकूर के राजा सोने की गाय अथवा सोने के कमल में होकर निकलने से द्विजाति समझे जाते हैं और उनको भोजन करते हुए ब्राह्मणों का देखने का अधिकार होता है। हिरण्य-गर्भ दान कि विधि में महाराज के तुल्य वजन की सुवर्ण की गाय बनाई जाती है। उसके गर्भ से वह निकलते हैं। पीछे उस गौ के सोने को ब्राह्मण लोग बांट लेते हैं। हिरण्यगर्भ दान का विधान भविष्यपुराण-उत्तरार्द्ध के १६९ वें अध्याय में और महाभारत में लिखा हुआ है।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि महर्षि जमदग्नि के पुत्र परशुरामजी

ने २१ बार क्षत्रियों का विनाश करने के पश्चात् विचार किया कि मैंने बड़ा पाप किया, इसके प्रायश्चित्त के लिये भूमि दान करना चाहिए। उस समय उन्होंने वरुणजी से भूमि मांगी। वरुणजी ने समुद्र को आज्ञा दी कि तुम हट जाओ। समुद्र कुछ दूर हट गया। परशुरामजी वही समुद्र की छोड़ी हुई भूमि लेकर नंबूरी ब्राह्मणों को दान दे निःपाप हुए। वही भूमि मालाबार देश है। परशुराम का सन् खास मालाबार और तिरुवांकूर के राज्य में कन्याकुमारी अन्तरीप तक जारी है। नंबूरी ब्राह्मणों ने दान पाई हुई भूमि पर देश बसाया। उनकी हुकूमत बहुत काल के पश्चात् सन् ईस्वी के आरंभ से ६८ वर्ष पहिले खतम हुई। उसके पीछे ब्राह्मण लोग प्रति १२ वर्ष पर हुकूमत करने के लिये एक क्षत्रिय को राजा चुनते थे; अर्थात् १२ वर्ष तक एक क्षत्री हुकूमत करता था। उन राजाओं में सबसे पिछला राजा चेरा राजा का डिपोटी 'चेरमान पेरुमाल' सबसे अधिक प्रतापी हुआ। उसने अंत में अपने राज्य को अपने आधीन के अफसरों को बांट दिया। उनमें से सबसे बड़े हिस्सा पाने वाले को दक्षिण का भाग मिला, जिसकी राजधानी तिरुवांगोड, जो अब छोटा गांव है, बना था। चेरमान पेरुमाल का वृत्तांत मालाबार जिले में देखिए।

तिरुवांकूर राज्य के २३ राजाओं ने ३०० वर्ष से अधिक राज्य किया। वे लोग अपने पड़ोस के राजाओं से लगातार लड़ते रहे। २४ वां राजा (सन् १६८०—१७१७) 'एरुमा बर्मा पेरुमाल' था। उसके और उसकेर उत्तराधिकारियों के राज्य के समय घरऊ लड़ाई होती रही। 'वांचीमारतंड पेरुमाल' ने, जिसका राज्य सन् १७२९ से सन् १७४६ तक था, सन् १७४२ में एल्लाएदतुन्द को और सन् १७४५ में कायंकुलम् को परास्त किया। उसके बाद 'वांची वाला पेरुमाल' का राज्य हुआ, जिसने अपने राज्य को बहुत बढ़ाया। जब मैसूर के टीपूसुलतान ने मलेबार पर आक्रमण किया, तब तिरुवांकूर के राजा ने उससे डर कर सन् १७८८ में अंगरेजों के साथ संधि की। सन् १७८९ में टीपू ने तिरुवांकूर पर हमला किया; किन्तु परास्त हो कर चला गया। उसके २००० सैनिक मारे गए। दूसरे साल टीपू फिर

आक्रमण करके विमुख लौट गया। सन् १७९५ में तिरुवांकूर के राजा बलराम वर्मा ने इष्ट इन्डियन कंपनी के साथ एक दूसरी संधि की, जिसके अनुसार वह बिना कंपनी की राय में किसी यूरोपियन के साथ नहीं संबंध रखने का और आवश्यकता पड़ने पर अपनी सेना से कम्पनी की सहायता करने का पाबंद हुए। थोड़ही दिनों के बाद राजा बलराम वर्मा मर गए। उनके भांजे, जिनका नाम भी बलराम वर्मा था, उत्तराधिकारी हुए। जिसके साथ सन् १८०५ में अंगरेजों की तीसरी संधि हुई, जिससे कई सर्त बदले गए। सन् १८११ में राजा बलराम वर्मा की मृत्यु होने पर लक्ष्मी रानी उत्तराधिकारी हुई, जिसने अंगरेजी रेजीडेंट कर्नल मनरो को राज्य का प्रबंध सौंप दिया। सन् १८१४ में लक्ष्मी रानी के मरने पर उसकी बहिन पार्वती रानी ने उसके शिशुपुत्र रामवर्मा के बालकपन में राजकार्य का निर्वाह किया। लक्ष्मी रानी के पुत्र ७ वर्ष राज्य करने के पश्चात् मरगये। सन् १८४६ में उनके छोटे भाई महाराज मार्तण्ड वर्मा उत्तराधिकारी बने। मार्तंड वर्मा के पश्चात् लक्ष्मीरानी की पुत्री के लड़के महाराज बांची बलराम वर्मा सन् १८६० में राजगद्दी पर बैठे। सन् १८८० में महाराज बांची बलराम वर्मा की मृत्यु होने पर उनके भाई महाराज सर बलराम वर्मा, जी० सी० एस० आई०, जिनका जन्म सन् १८३७ में हुआ था, तिरुवांकूर के राज सिंहासन पर बैठे। सन् १८६२ में भारतवर्ष के गवर्नर जनरल ने तिरुवांकू के महाराज जो एक सनद दी, जिसके अनुसार उनको अपने वंश कायम रखने के लिये अपनी बहिन की पुत्री को गोद लेने का अधिकार होगया।

कोचीन।

तिरवंद्रम कसबे से १०० मील से अधिक पश्चिमोत्तर (९ अंश, ५८ कला, ७ विकला उत्तर अक्षांश, और ७६ अंश, १७ कला, पूर्व देशांतर में) समुद्र के बंदरगाह के पास मदरास हाते के मालाबार जिले में कोचीन ताल्लुक का सदर स्थान कोचीन कसबा है। कोचीन के बंदरगाह से साप्ताहिक आगबोट सिलोन के कोलंबो को जाते हैं। किनारे से १½ मील दूर जहाज के लंगर का

स्थान है। रेलवे के स्टेशन तुतिकुड़ी से अथवा कलीकोट से समुद्र के आग-बोट द्वारा कोचीन जाना चाहिए।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कोचीन कसबे में १७६०१ मनुष्य थे; अर्थात् ९७६८ कृस्तान, ४७१६ हिन्दू, ३०९० मुसलमान और २७ यहूदी।

समुद्र के पास उत्तर से दक्षिण तक १२ मील लंबी और १ मील से १½ मील तक चौड़ी भूमि समुद्र के खाल और धारों की खाड़ियों से बनी है। उसके उत्तर के किनारे के पास कोचीन कसबा है। उसके उत्तर एक टापू है। पहिले कोचीन कसबा कोचीन के राज्य की राजधानी था। किन्तु अब अंगरेजी जिले मालाबार में है। इसके निवासियों में आधे से अधिक कृस्तान हैं।

कोचीन कसबे में सरकारी कचहरियां; जेलखाना, अनेक आफिस, बहुतेरे स्कूल, तथा गिरजे और हालैंड वालों की बहुत सी पुरानी इमारतें हैं। अंगरेजी कोचीन और देशी राज्य के कोचीन की सीमा के भीतर कष्टमहौस है। पुराने किले की अब कोई निशानी नहीं है। उसकी जगह पर लाइटहाउस बना है। उसके पास यूरोपियन लोगों के बंगले हैं। बंदरगाह में जहाज बनाये जाते हैं।

कोचीन कसबे से १½ मील दक्षिण कोचीन राज्य का कोचीन कसबा है, जिसका वृत्तांत नीचे लिखा है।

इतिहास—कहावत से विदित होता है कि सन् ५२ ईस्वी में सेंटथामस ने कोचीन में जाकर उन कृस्तानों को बसाया, जो नसरानी मापिला कहलाते हैं। ऐसा भी प्रसिद्ध है कि यहूदी लोग सन् इस्वी के पहिले वर्ष में उस जगह बसे जिस जगह पर वर्त्तमान समय में उनकी बस्ती है। पीछे उन्होंने क्रम क्रम अन्य स्थानों में अपने मुकाम कायम किए। तांबे के पत्रों के लेखों से जान पड़ता है कि ८ वीं शादी में यहूदी और सिरियन कोचीन में बसे थे।

सन् १५०० में पोर्चुगल के पोर्चुगीज लोग कलीकोट पर गोले चलाने के पश्चात् कोचीन में उतरे और जहाज पर मिर्च लाद कर पोर्चुगल को फिर गए। सन् १५०२ में पोर्चुगल के वास्कोडीगामा अपनी दूसरी यात्रा में को-

चीन में आया। उसने वहां एक कोठी नियत की। सन् १५०३ में अलबुकर्क कोचीन में पहुंचा, जिसने वहां के किले को बनवाया। वह हिन्दुस्तान में पहिले पहिल यूरोपियन किला बना। कलीकोट के राजा जमोरिन ने कोचीन के देश पर आक्रमण किया, किंतु पोर्चुगल वालों ने उनको खदेरा। सन् १५२५ में वह किला बढ़ाया गया। सन् १५७७ में पहिले पहिल कोचीन में किताब छापी गई, उसमे पहिले भारतवर्ष में कोई किताब नहीं छपी थी। सन् १६१६ के कई वर्ष बाद पोर्चुगीजों की राय से कोचीन में अङ्गरेजी कोठी बनी। सन् १६६३ में हालैंड वालों ने पोर्चुगीजों से कोचीन कसबा और किला छीन लिया। अंगरेज लोग दूसरी जगह चले गए। हालैंड वालों ने कोचीन में यूरोपियन तरीके पर अच्छी अच्छी इमारतें बनवाईं। उन्हों ने वहां सौदागरी की बड़ी उंन्नति की। सन् १७७८ में उन्होंने फिर से किले को बनवाया और किले के बगलों में खाईं बनवाई। सन् १७९५ में अंगरेजी अफसर मेजर पेट्री ने आक्रमण करके हालैंड वालों से कोचीन ले लिया। सन् १८०६ में अंगरेजों ने कैथेड्रल को तोप से उड़ा कर किले और उत्तम इमारतों का विनाश कर दिया। सन् १८१४ की संधि के अनुसार अंगरेजों को कोचीन मिल गया, तबसे वह इन्हीं के अधिकार में है।

राजा का कोचीन।

कोचीन कसबे से १½ मील दक्षिण समुद्र के किनारे पर (९ अंश, ५८ कला, ७ विकला, उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, १७ कला, पूर्व देशांतर में) मदरास हाते के कोचीन राज्य के कोचीन सबडिवीजन में कोचीन एक कसबा है, जिसमें ४ गाव सामिल हैं। वहां से कोचीन राज्य के कसबे तिरुचर तक नहर बनी हुई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मतनचेरर में १७२५४ मनुष्य थे; अर्थात् ८४६१ हिन्दू, ४८११ कृस्तान, ३५०४ मुसलमान, और ४६८ यहूदी।

कोचीन कसबे से २ मील पूर्व (९ अंश, ५८ कला, ५५ विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, १९ कला, २१ विकला पूर्व देशांतर में) मदरास हाते के कोचीन राज्य की राजधानी एरनाकोलम् एक कसबा है।

कसबे में कोचीन राज्य के प्रधान अफसर रहते हैं। वहां कई एक सड़कें पक्की बनी हैं; महाराज का एक महल, एक हाईस्कूल, कई एक आफिस, कई कचहरियां, २ गिरजे और कई अन्य सुन्दर इमारतें हैं। उसके पास के गांव में एक सुन्दर बाजार बना है। वहां यहूदी और कुंकानी लोग बड़ी सौदागरी करते हैं।

वर्तमान कोचीन नरेश "राजा सरबीर केरल वर्मा के० सी० आई० ई०" ४४ वर्ष अवस्था के क्षत्रिय हैं। महाराज न्यायशास्त्र के पूरे पण्डित हैं और उनको शास्त्रार्थ की बड़ी शौख है।

कोचीन का राज्य—कोचीन को मालावार के लोग कोच्ची कहते हैं। इसके दक्षिण तिरुवांकूर का राज्य; पश्चिम मालावार का समुद्र और उत्तर पूर्वोत्तर और पूर्व मालावार जिला है। यह राज्य कोचीन, कननूर, तिरुचुर, कांगनूर इत्यादि ७ भागों में विभक्त है। इस राज्य में १३३ मील अच्छी सड़के बनी हैं। इस देश में (कम गहड़ी) झीले बहुत हैं, जिनमें पश्चिमी घाट पहाड़ियों से बहुत धाराएं गिरती हैं। राज्य में अनेक छोटी नदियां हैं। दलदल भूमि के पास कई टापू हैं। जंगलों में बेश कीमती लकड़ी होती हैं। प्रति वर्ष महाराज को जंगलों से पचासो हजार रुपये की आमदनी होती है। एक समय खानों से लोहा और सोना निकाला जाता था; किन्तु अब खानों में काम नहीं होता है। पहाड़ियों में अनेक भांति की दवा, रंग तथा गोंद और बहुत हिस्सों म इलायची होती हैं। जंगलों में बहुत हाथी, भालू, सांभर, बाघ, तेंदुए और भांति भांति के हरिन रहते हैं। राज्य से १६१८००० रुपये मालगुजारी आती है, जिसमें से २००००० रुपया अंगरेजी गवर्नमेंट को 'राज कर' दिया जाता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय कोचीन राज्य के १३६१ वर्गमील क्षेत्रफल में ६००२७८ मनुष्य थे, अर्थात् ४२९३२४ हिन्दू, १३६३६१ क्रस्तान, ३३३४४ मुसलमान और १२४९ यहूदी। कोचीन के राज्य में मलेयालम भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कोचीन के राज्य में ७१६८७०

मनुष्य और कोचीन राज्य के कसबे मतनचेरर में १७२५४ और तिरुवर में १२९४५ मनुष्य थे। कोचीन कसबे के पास आरनीकोलम राजधानी है। राज्य के उत्तर भाग में तिरुत्तुर एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१ में ६८८४ हिन्दू, ५२०३ कृस्तान और ८५८ मुसलमान थे। तिरुत्तुर में कोचीन के राजा का एक छोटा महल, स्कूल, एक सुन्दर मन्दिर, राजा की कचहरी और जेलखाना है। पालघाट और कोचीन के साथ बड़ी सौदागरी होती है। द्रविडियन लोग कोचीन के राज्य को कोची का राज्य और कोचीन के राजा को कोच्ची का राजा कहते हैं।

इतिहास—९ वीं सदी में चेरा वंश के राजा का डिपोटी प्रसिद्ध चेरमान् पेरुमाल चेरा अर्थात् केरल के संपूर्ण देश का, जिसमें तिरुवांकूर और कोचीन का राज्य तथा मालावार जिला है, सूबेदार था। पीछे वह स्वतंत्र हुकूमत करने वाला बन गया। अन्त में उसने अपने राज्य को कई आदमियों को बांट दिया। उसीमें से एक कोचीन राज्य है। कोचीन के राजा अपने को चेरमान्पेरुमाल का वंशधर कहते हैं।

सन् १५०३ में पोर्चुगल वालों ने कोचीन में एक किला बनाया। सन् १६६३ में हालैंड वालों ने पोर्चुगीजों से कोचीन कसबे को छीन लिया। उसके लगभग १०० वर्ष पीछे कलीकोट के जमोरिन वंश के राजा ने कोचीन राज्यपर आक्रमण किया। तिरुवांकूर के राजा ने उसको निकाल बाहर किया। इस काम की कृतज्ञता में कोचीन के राजा ने तिरुवांकूर के राजा को अपने राज्य का एक भाग दे दिया।

सन् १७७६ में मैसूर के हैदरअली ने और सन् १७९० में हैदरअली के पुत्र टीपूसुलतान ने इस देश को लूटा। देश नाम मात्र के लिये टीपू के आधीन बना। पहिले कोचीन राज्य की राजधानी कोचीन कसबा था, इसलिये उस राज्य का कोचीन नाम पड़ा। सन् १७९५ में जब अंगरेजों ने हालैंड वालों से कोचीन कसबे को छीन लिया, तबसे वह मालाबार जिले के भीतर अंगरेजी अधिकार में है। सन् १७९८ में कोचीन के राजा ने एक संधिपत्र में अंगरेजी आधीनता स्वीकार की और वार्षिक १००००० रुपया 'राजकर' देने को

कबूल किया। सन् १७९९ में अङ्गरेजों ने टीपू को परास्त करके दूसरे देशों के साथ कोचीन राज्य को लेलिया। तबसे कोचीन के राजा अङ्गरेजी सरकार की रक्षा में हुए।

सन् १८०९ में अंगरेजी रेजीडेंट के मारने के लिये बगावत हुई। उस बगावत के दबाए जाने के पीछे कोचीन राज्य का 'राजकर' २७०००० रुपया नियत किया गया, किन्तु अंगरेजी सरकार ने सन् १८१९ में उसको घटा कर २४०००० रुपया और उसके पश्चात् केवल २००००० रुपया कर दिया।

———o———

सोलहवां अध्याय।

(मदरास हाते में) करूर, ईरोड, कोयम्बुतूर, उत्तकमंद, पालघाट, कलीकोट, तलीचेरी, माही, कननूर, (कुर्गदेश में) मरकाड़ (मदरास हाते में) मंगलूर और सेलम।

करूर।

तिरुनलवेली अर्थात् तिन्नेवेली के रेलवे स्टेशन से १८ मील पूर्वोत्तर मनियाची जंक्शन और मनियाची से उत्तर कुछ पूर्व ८१ मील मदुरा और १७७ मील तिरुचनापल्ली का रेलवे जंक्शन है। तिरुचनापल्ली से ४८ मील पश्चिम कुछ उत्तर करूर का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते के कोयंबुतूर जिले में अमरावती नदी के बाएं किनारे पर (१० अंश, ५७ कला, ४२ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ७ कला, १६ विकला पूर्व देशान्तर में) तालुक का सदर स्थान करूर एक कसबा है, जिसके पास अमरावती नदी कावेरी में मिल गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय करूर में १०७५० मनुष्य थे; अर्थात् ९६९३ हिन्दू, ७३७ मुसलमान और ३२० कृस्तान।

करूर में एक उजड़ा पुजड़ा किला, जिसमें एक पुराना जर्जर मन्दिर है और सरकारी कचहरी है। बाजार में बहुत माल बिकता है। कई एक सड़कें आकर करूर में मिल गई हैं।

इतिहास—पूर्वकाल में करूर चेरा राज्य की राजधानी था। चेरा, चोला और पांड्य वंश के राजाओं के परस्पर झगड़े के समय कई बार इसके मालिक बदले थे। नायकों की बढ़ती के समय यह मदुरा के राज्य का आधीन था। १७ वीं शदी के अन्त में यह मैसूर राज्य में मिला लिया गया। कई बार अंगरेजों ने इस पर अधिकार किया था; किंतु सन् १७९९ में टीपू-सुलतान के मारे जाने पर यह सर्वदा के लिये अंगरेजों के आधीन होगया। सन १८०१ में करूर के किले से फौज उठा ली गई।

ईरोड।

करूर से ४० मील (तिरुचनापल्ली जंक्शन से ८८ मील) पश्चिमोत्तर ईरोड का रेलवे जंक्शन है। मदरास हाते के कोयम्बुतुर जिले में कावेरीनदी के पास (११ अन्श, २० कला, २९ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अन्श, ४६ कला, ३ बिकला पूर्व देशांतर में) ताल्लुक का सदर स्थान ईरोड कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ईरोड में १२३३० मनुष्य थे; अर्थात् १०४८१ हिन्दू, १३९३ मुसलमान, ४५३ कृस्तान और ३ जैन।

ईरोड में पुलिस स्टेशन, स्कूल, मातहत जेलखाना और सरकारी कचहरियां हैं। कसबे से १ मील से अधिक पूर्व कावेरीनदी पर १५३५ फीट लंबा जिसमें २२ मेहराबियां हैं, पुल बना है। उसके बनाने में ४०८७५० रुपया खर्च पड़ा था। कसबा सुंदर है। वहां से रुई, चावल, सोरा इत्यादि चीजें दूसरे स्थानों में भेजी जाती हैं। ईरोड से करूर और मैसूर को सड़क गई है।

ईरोड जंक्शन से रेलवे लाइन ३ ओर गई है।

(१)इरोद से पश्चिम कुछ दक्षिण मदरास रेलवे, जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २ पाई लगता है;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
५८ पोडेयनूर जंक्शन।
९२ पालघाट।
१७० कलीकोट।

पोडैयनूर जंक्शन से उत्तर ४ मील कोयम्बुतूर और २६ मील मेट्टुपालयम्।

(२)ईरोद जंक्शन से पूर्वोत्तर मदरास रेलवे;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
३७ सेलम्।
११२ जालारपेट जंक्शन।
१३१ अम्बूर।
१४८ कुडिआतम्।
१६३ कटपद्दी जंक्शन।
१७८ आरकाट।
२०१ आरकोनम् जंक्शन।
२१८ तिरुवल्लूर।
२४४ मदरास शहर।

जालारपेट जंक्शन से पश्चिमोत्तर ४४ मील कोलार रोड, ८४ मील बंगलोर छावनी और ८७ मील बंगलोर शहर है।

कटपद्दी जंक्शन से उत्तर सौथ इंडियन रेलवे पर ३९ मील पकाला जंक्शन, ५८ मील चंद्रगिरि, ६५ मील तिरुपद्दी और ७१ मील रेणुगुंटा जंक्शन है। (रेणुगुंटा में देखिए)

(३) ईरोद जंक्शन से पूर्व सौथ इन्डियन रेलवे है, जिसके तीसरे दर्जे का महसूल २ पाई लगता है;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
२० ऊंजलूर।
४० करूर।
८५ तिरुचनापल्ली फोर्ट।
८८ तिरुचनापल्ली जंक्शन।

कोयम्बुतूर।

ईरोद जंक्शन से ५८ मील पश्चिम-दक्षिण पोडैयनूर जंक्शन और पोडैयनूर से ४ मील उत्तर, नीलगिरि के पास, उत्तकमंद से लगभग ५० मील दूर

कोयम्बुतूर का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते में (१० अन्श, ५९ कला, ४१ विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अन्श, ५९ कला, ४६ विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र के जल से १४३७ फीट ऊपर एक छोटी नदी के बाएं किनारे पर जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा कोयम्बुतूर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कोयम्बुतूर कसबे में ४६३८३ मनुष्य थे; अर्थात् २२२३८ पुरुष और २४१४५ स्त्रियां। इनमें ४०१०६ हिन्दू, ३४१४ मुसलमान, २८२१ कृस्तान और ४२ जैन थे। मनुष्य संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ८४ वां और मदरास हाते के अंगरेजी राज्य में ११ वां शहर है।

कोयम्बुतूर में जिले की प्रधान कचहरियां,पुलिस स्टेशन, अस्पताल, स्कूल, रेलवे स्टेशन से २ मील पश्चिमोत्तर बड़ा जेलखाना और १ मील पूर्वोत्तर गिरजा है। कसबे की सड़क चौड़ी हैं। कसबे के निकट की पहाड़ी से मकान के काम के लिए पत्थर निकाले जाते हैं।

मेल चिदंबरम् का मन्दिर—कोयम्बुतूर कसबे से ३ मील दूर पेरूर गांव में मेलचिदंबरम् का सुन्दर मन्दिर है, शिव को पेरूर सभापति अर्थात् पेरूर का शिव भी कहते हैं। दक्षिण आरकाट जिले के चिदंबरम् को किल चिदंबरम् और पेरूर के चिदंबरम् को मेलचिदंबरम् लोग कहते हैं। मन्दिर के आगे ३८ फीट ऊंचा पत्थर का ध्वजा स्तंभ और मन्दिर के पास पाटेश्वर का छोटा मन्दिर है। वे दोनों मन्दिर मदुरा के तिरुमलई नायक के राज्य के समय बने थे। वहां ५९ फीट ऊंचा पंचमंजिला गोपुर और ७२ स्तंभों का एक मण्डपम् है। मन्दिर के स्तंभो में तांडव नृत्य करते हुए शिव, गजासुर को मारते हुए शिव, शत्रुओं को मारते हुए वीरभद्र की प्रतिमा और सिंहों की मूर्तियां बनी हुई हैं।

त्रिमूर्ति कोइल—कोयम्बुतूर जिले में त्रिमूर्तिकोइल नामक गांव में एक पुराना मन्दिर है। वहां पहाड़ी में पत्थर काट कर मन्दिर बना हुआ है और हजार स्तंभो का एक पुराना जर्जर मंडपम् है। वहां पास की पहाड़ी से गिरा

हुआ एक पत्थर का बड़ा टुकड़ा, जिस पर बहुत से चरण चिन्ह, पड़ा है, जिसको लोग पवित्र समझते हैं। उस स्थान पर प्रति रविवार को यात्री लोग दर्शन को जाते हैं और प्रतिवर्ष एक बड़ा मेला होता है।

कोयम्बुतूर जिला–इसके उत्तर और पश्चिमोत्तर मैसूर का राज्य; पूर्व सेलम और तिरुचनापल्ली जिला; दक्षिण मदुरा जिला और तिरुवांकूर का राज्य और पश्चिम नीलगिरि, और मालाबार जिला तथा कोचीन का राज्य है। इस जिले में १० तालुक हैं। जिले की भूमि ऊंची नीची है। पश्चिम के भाग में नीलगिरि और दक्षिण अनामलई पहाड़ी का सिलसिला है। लगभग ३००० वर्गमील भूमि में जंगल हैं, जिनमें बेश कीमती लकड़ी होती है और बहुत से बनैले हाथी रहते हैं। जंगलों और पहाड़ियों में बहुत से हाथी, भालू, सूअर, बाघ, तेंदुए, भेड़िया और भांति भांति की हरिन रहती हैं। जिले में सांप बहुत हैं। प्रतिवर्ष लगभग १०० आदमी सांप के काटने से मर जाते हैं। हिंसक जानवरों के मारने लिए प्रतिवर्ष लगभग २००० रुपया सरकार खर्च करती है। जिले की प्रधान नदी कावेरी उत्तरी सीमा पर बहती है, जिसमें अमरावती, भवानी और नोइल नदी की धारा गिरती है। कावेरी की धारा बड़ी तेज है; क्योंकि १२० मील में उसकी धारा लगभग १००० फीट नीचे होजाती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय कोयम्बुतूर जिले के ७८४२ वर्गमील क्षेत्रफल में १६५७६९० मनुष्य थे; अर्थात् १६०६३४३ हिन्दू, ३७८५५ मुसलमान, १३३२६ कृस्तान, ६८ जैन, ६३ बौद्ध, ४ पारसी और ३१ अन्य। हिंदुओं में ६९०४०२ वेल्लाल (खेतिहर), २१६२७० परियन, १०७४८० बनिया (जाति विशेष), ८१६४१ कैकलर (बिनाई के काम करने वाले), ६६०६८ सतानी (दो गदा), ५५५१७ सानान (मदक), ५५१३६ चेटी (सौदागर), ४३४५८ कंभाइन (सिलपकार), ४२४३२ इडैयन (भेड़िहर), २९७५२ ब्राह्मण, २५००४ संबक्कन (मछुहा), २३३१७ वन्नान (धोबी), २००६२ अंबटन (नाई), १६३९४ कुसवन (कुंभार), ३०३९ छत्री, १०६२ कणक्कन (लिखाई के काम करने वाले) और बाकी में अन्यजातियों के लोग थे।

सन् १८९१की मनुष्य-गणना के समय कोयम्बुतूर जिले के कसवे कोयम्बुतूर में ४६३८३, ईरोड में १२३३० और करुर में १०७५० मनुष्य थे। इनके अलावे कई छोटे कसवें हैं। कोयम्बुतूर जिले में तामिल भाषा प्रचलित है।

इतिहास—कोयम्बुतूर जिला चेरा राज्य के अधिकार में था। ९ वीं शदी में चोला वंश के राजा ने चेरा के देश को जीता। लगभग २०० वर्ष के बाद पांड्य राज्य के साथ मिल कर दोनों एक राज्य होगया। १६ वीं शदी में कोयम्बुतूर जिले का पूर्वी भाग और कोयम्बुतूर कसवा नाम मात्र के लिए मदुरा के नायक के अधिकार में हुआ। १७ वीं शदी से सन् १७७३ तक मैसूर वालों ने इस जिले पर बहुत बार आक्रमण किया। सन् १७७३ में यह जिला मैसूर राज्य में मिला लिया गया। कई बार कोयम्बतूर कसवे के मालिक बदले। कई बार अंगरेजों ने इसको लिया; किंतु उनको छोड़ देना पड़ा; परंतु सन् १७९९ में टीपू सुलतान के मारे जाने पर यह जिला अंगरेजी अधिकार में हो गया।

उतकमन्द।

कोयम्बुतूर के रेलवे स्टेशन से २२ मील (पोडैयनूर जक्शन से २६ मील) उत्तर मदरास रेलवे की शाखा का अंतिम स्टेशन मेट्टुपालयम् है। मेट्टुपालयम् से ९ मील की अच्छी सड़क भवानीनदी को लांघ कर कोलार को गई है, जहां पहाड़ी की चढ़ाई आरंभ होती है। कोलार से पुरानी सड़क द्वारा ९ मील और नई सड़क से १६ मील दूर कुनूर गांव है, जहां यूरोपिन लोग हवा खाने के लिये रहते हैं। पुरानी सड़क चढ़ाई की है; किन्तु नई सड़क से घोड़े गाड़ी जा सकती है। मेट्टुपालयम् से कुनूर वेलिंटन तथा उत्तकमन्द को तांगे जाते हैं। अब कुनूर तक तंगलाइन की रेलवे बनती है। कुनूर के वेलिंटन बारक से ९ मील दूर उतकमन्द है। कुनर गांव से उतकमन्द तक १२ मील पक्की सड़क बनी है।

मदरास हाते में (११ अन्श, २४ कला, उत्तर अक्षांश और ७६ अन्श, ४४ कला, पूर्व देशांतर में) समुद्र के जल से ७२२८ फीट ऊपर ऊंची पहा-

ड़ियों से घेरी हुई घाटी में नीलगिरि पहाडी जिले का सदर स्थान उत्तकमन्द नामक स्वास्थ्य कर स्थान है, जिसको उस देश के लोग उदकमंडलम् कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय उत्तकमंद में १५०५३ मनुष्य थे; अर्थात् ७९१२ पुरुष और ७१४१ स्त्रियां। इनमें ९०७१ हिन्दू, ४१६४ कृस्तान, १७९० मुसलमान, २१ पारसी, ३ बौद्ध और ४ अन्य थे।

वास्तव में उत्तकमंद कसबा नहीं है; वहां की पहाड़ियों पर मकान तथा अंगरेजों की कोठियां इत्यादि इमारतें छितराई हुई हैं। मदरास हाते के यूरोपियन लोगों के गर्मी की ऋतुओं में रहने के लिये उत्तकमंद प्रधान स्थान है। गर्मी की ऋतुओं में मदरास के गवर्नर वहां रहते हैं। वहां जिले का कलक्टर, डिपोटी कलक्टर, सब जज इत्यादि हाकिम सर्वदा रहते हैं। बहुत यूरोपियन लोग वहां जाकर मार्च से जून तक निवास करते हैं। नवंबर से फरवरी तक केवल वहां के निवासी रह जाते हैं। वहां औसत में सालाना वर्षा ४८ इंच होती है।

पहाड़ियों के बीच में समुद्र के जल से ७२२० फीट ऊपर पूर्व से पश्चिम तक १½ मील लंबी झील है, जो बांध बांध कर बनाई गई थी। पूर्वी और पश्चिमी घाट से बने हुए कोन में नीलगिरि पहाड़ी है। कसबे में झील के चारो ओर गाड़ी दौड़ने के लिये सुंदर सड़क बनी हुई है। पास की पहाड़ी पर यूरोपियन लोगों की कोठियां हैं।

झील के पूर्व बगल पर बाजार, पश्चिमोत्तर के बगल पर जेलखाना और दक्षिण के बगल पर सेंटथामस का चर्च है। प्रधान दूकानों के पास पोष्टआफिस, पवलिक लाइब्रेरी और प्रधान चर्च है। पहाड़ी के पादमूल के पास उसके बगल में सीढ़ी नामा चबूतरों पर खूबसूरती के साथ नबाती बाग लगा हुआ है, जो चंदे के खर्च से बना था। उसमें उद्यान विद्या की उन्नति के लिए भांति भांति के विदेशी वृक्ष लगाए गए हैं।

पोष्टआफिस से ८ मील दूर यतीमखाना है, जिसका टावर ७० फीट ऊंचा है। उसमें ३०० लड़कों के भोजन करने के लायक एक बड़ा कमरा बना है। वहां अतीम अर्थात् बिना माता पिता के लड़कों को खाने को मिलता है और उनको

टेलीग्राफ, सौदागरी इत्यादि का काम सिखलाया जाता है। उनमें से कई एक लड़के पल्टन में भरती किए जाते हैं। नारंगीघाटी में जंगली नारंगी होती है। इनके अतिरिक्त उतकमन्द में कई एक स्कूल, अनेक अस्पताल और कई होटल हैं।

इतिहास—सन् १८१९ में दो सिविलियन अफसरों ने तंबाकू की चुंगी के चोरों के पीछा करते हुए उतकमन्द को पाया। सन् १८२१ में जिले के कलक्टर ने उतकमन्द में पहिले पहिल कोठी बनाई। कुछ दिनों में वहां कसबा बस गया। सन् १८४२—१८४३ में नराती बाग बना। सन् १८५८ में लारेंस अतीमखाना कायम हुआ। सन् १८५९ में पबलिक लाइब्रेरी नियत हुई। सन् १८६६० में वहां म्युनिसिपल्टी कायम हुई।

नीलगिरि जिला—यह मदरास हाते में पहाड़ियों का जिला है। इस में प्रायः सर्वत्र पहाड़ियों के सिलसिले हैं। इसकी सबसे अधिक लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक ३६ मील और पूर्व से पश्चिम तक ४८ मील है। जिले का क्षेत्रफल केवल ९५७ वर्गमील है। इसके उत्तर मैसूर का राज्य; पूर्व और पूर्व दक्षिण कोयम्बुतूर जिला; दक्षिण कोयम्बुतूर जिला और मालाबार जिले का एक भाग और पश्चिम मालाबार जिला है। जिले का सदर स्थान उतकमन्द है। इस जिले में ५ सबडिवीजन हैं।

नीलगिरि जिले की पहाड़ियां खड़ी हैं; सबसे ऊंची दोदाबेटा नामक पहाड़ी समुद्र के जल से ८७६० फीट ऊंची है। उतकमन्द पहाड़ी ७३६१ फीट और कुनूर पहाड़ी ५८८२ फीट ऊंची है। इनके अतिरिक्त बहुतसी पहाड़ियां हैं।

अनेक छोटी नदियां हैं। जिले में पहिले बाघ तथा भालू बहुत थे, किन्तु शिकारियों ने मार कर इनको बहुत कम कर दिया है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय नीलगिरि जिले में ९१०३४ मनुष्य थे; अर्थात् ७८९७० हिन्दू, ८४८८ कृस्तान, ३५३१ मुसलमान, १४ पारसी और ११ अन्य। हिंदुओं में २०३९७ परिया (परयन), १०५८८ वेल्लाल (वेतिहर), १४६१२ इडैयर (भेड़िहर), २८२७ सेटी (सौदागर), २६०९ बनिया

(जाति विशेष), १७६० कंमाइन (सिलपकार), ८४९ सतानी, ५४७ वन्नान (धोवी), ४४० ब्राह्मण, ४१९ कैवकलर, ३८७ कुसवन (कुम्हार), २४७ अंबटन (नाई), २९१ सेंबडवन (मछुहा), १६९ सनान (पदक), १५३ कणक्कन (लिखने वाले), १०७ छत्रिय और वाकी ३३७२१ में अन्य जातियों के लोग थे।

नीलगिरि जिले में तामिल, कनड़ी और अंगरेजी भापा प्रचलित हैं और अन्य कई पहाड़ी भापा भी हैं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय नीलगिरि जिले के कसबे उतकमन्द में १५०५३ और सन् १८८१ में उतकमन्द में १८११६ मेकुनाद में १२७४० और तोडानाद में ११८५७ मनुष्य थे।

नीलगिरि पर उत्तम स्वभाविक जंगल हैं, जिनमें भांति भांति के वनजन्तु तथा चिड़ियें रहते हैं, जिनमें जंगली भेड़, वनैले कुत्ते तथा शाही-बाघ भी होते हैं। वहां रंगस्वामी का मन्दिर और गगनचुक्की का किला है। कुपालहटी के निकट और सिगुरघाट के ऊपर कई जल प्रपात हैं। नीलगिरि जिले में गेंहू, जव, मटर, लहसुन प्याज, सरसों, रेंडी, आलू, काफी, चाय, वेशीकूनायन इत्यादि फसिल होती हैं; नारंगी, सेव, नाशपाती आदि बहुत प्रकार के फल भी होते हैं। नीलगिरि की पहाड़ियों में अकाल कभी नहीं पड़ा; किन्तु मैदानों में महंगी पड़जाने पर वहां भी उसका असर पहुंच जाता है। नीलगिरि जिले में लगभग ३०० मील गाड़ी चलने लायक सड़क हैं।

नीलगिरि जिले में ठोडा, वदगा, कोटा, कोरवा और इरुला ये ५ पहाड़ी जातियां हैं। इनमें कोरवा और इरुला, जो आलसी हैं, गरीब हैं, किन्तु दूसरे पहाड़ी लोग अच्छे हालत में हैं। वडगा, जो परिश्रमी हैं, तेजी से धनी होते जाते हैं।

ठोडा जाति के लोग अच्छे बनावट के बलवान होते हैं। उनमें पुरुष तथा स्त्रियां नीचे से ऊपर तक केवल एकही वस्त्र रखते हैं। स्त्रियां अपने कांधे से नीचे ठेहुने तक एकही कपड़ा लपेटती हैं। एक स्त्री के कई पति होते हैं। सब भाई मिल कर एक स्त्री से विवाह करते हैं। ये लोग तामिल और कनड़ी मिली हुई एक प्रकार की भापा बोलते हैं। इनकी झोंपड़ियां साधारण तरह से १८-फीट लंबी, ९ फीट चौड़ी तथा १० फीट ऊंची होती हैं। दरवाजे ३

फीट से कम ऊंचे और १½ फीट चौड़े होते हैं, जो ½ फीट मोटी लकड़ी के टुकड़े से बंद किए जाते हैं। झोंपड़ियों की दीवारें बांस की और छप्पर फूस या घास के बनते हैं। एक झोंपड़ी के भीतर एक तरफ २ फीट ऊंचा मिट्टी का एक चबूतरा, जिस पर हरिन अथवा भैंसे का चमड़ा या एक चटाई रहती है, बना रहता है; उस पर वे लोग शयन करते हैं। उसके सामने के बगल पर थोड़ी ऊंची जगह रहती है, जिस पर रसोई के बर्त्तन रक्खे जाते हैं और आग रखने का स्थान होता है। दूध रखने का घर कुछ अधिक बड़ा रहता है, जिसमें घेर कर दो भाग बनाया जाता है। सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय नीलगिरि जिले में ६७५ ठोडा थे।

बडगा जाति के लोग जंगली जातियों में सभ्य हैं। इनमें पुरुष मैदान के देशी लोगों के समान कमर में कपड़ा पहनते हैं, सिर पर मुरेठा बांधते हैं और देह पर चादर ओढ़ते हैं। स्त्रियां उजले कपड़े कांख से ठेहुने तक पहनती हैं; उसको एक रस्सी से बांध देती हैं। बडगा जाति के लोग पीतल, लोहा या चांदी के कुछ गहने भी पहनते हैं। वे लोग पुरानी कनड़ी भाषा बोलते हैं। इनके प्रधान देवता रंग स्वामी हैं, जिनका मंदिर नीलगिरि के पूर्वी छोर के पास रंगस्वामी नामक चोटी पर बना हुआ है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय २४१३० बडगा थे।

कोटा जाति के लोग अच्छे बनावट के होते हैं। इनके सिर का लंबा बाल खुला हुआ रहता है। वे लोग खेती करते हैं, बोझ ढोते हैं, तथा ठोडा और बडगाओं की नोकरी करते हैं। इनकी भाषा कनड़ी की पुरानी तथा मोटी बोली है। कोटा लोगों की ७ बस्तियां हैं। प्रत्येक गांव में ३० से ६० तक झोंपड़ियां हैं, जिनकी दीवार मिट्टी की और छप्पर फूस के हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय १०६५ कोटा थे।

कोरवा (भेड़िहर) जाति के लोग पांचो पहाड़ी जातियों में अधिक असभ्य हैं। वे कद में छोटे होते हैं। इनका कठोर शरीर, मलीन मुख मंडल, बड़ा पेट, बड़ा मुख, मोटे ओठ और बड़े बड़े दांत होते हैं। सिर के बालों में जटा बधा रहता है। स्त्रियों के नाक छोटे तथा बंदर के नाकों के समान

होते हैं। वे कांखों से नीचे ठेहुनों तक कपड़े का टुकड़ा पहनती हैं। पुरुष और स्त्रियां दोनों अपनी गले, बांह, कान और अंगुरियों में पीतल, लोहा, घोंघा, सीसा और अनेक प्रकार के बीजों के भूषण पहिनते हैं। इनकी बस्तियां पहाड़ियों के दर्रों में तथा जंगलों में हैं। इनके घर ३० फीट से ५० फीट तक लंबे और ५ फीट से कम ऊंचे होते हैं, जिनकी दीवार झाड़ियों तथा बांसों से और छप्पर फूस से बने हुए हैं। उनमें आठ दस फीट मोरब्बे, अनेक कोठरियां रहती हैं। उनकी भाषा तामिल भाषा का अपभ्रंश है। वे विना हल की थोड़ी खेती करते हैं और बनों में अनेक भांति के अन्न, फल, रंग के छाल, जानवर, मछली, जड़, मधु, मोम, इत्यादि एकत्र करते हैं और मैदानों में जाकर इनके बदले में अन्न तथा वस्त्र खरीदते हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ३१८९ कोरवा जाति के लोग थे।

इरुला जाति के लोग नीलगिरि की नेव से मैदानों तक फैले हुए नीचे की ढालू पर और जंगलों में रहते हैं; किंतु वास्तव में वे लोग पहाड़ियों के निवासी नहीं हैं। वे बलवान होते हैं, उनकी स्त्रियां बहुत मजबूत होती हैं। उनमें प्रायः सब काले रंग की हैं। वे अपने कमर से ठेहुने तक कपड़ा दोहरी लपेटती हैं। उनके कमर से उपर का भाग नंगा रहता है। वे सफेद और काल गुरियों के हार और बांह, कान तथा नाकों में पतले तार के भूषण पहनती हैं। इरुला जाति के लोगों की भाषा कनड़ी और मलेयालम् शब्दों से मिला हुआ मोटा तामिल है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय वे ९४६ थे।

इतिहास—ज्ञान पड़ता है कि सत्रहवीं शदी में नीलगिरि जिले की पहाड़ियों पर ३ प्रधान हुकूमत करते थे। १८ वीं शदी में मैसूर के हैदरअली और उसके पुत्र टीपू सुलतान ने कुछ पहाड़ी लोगों को अपने अधिकार में किया था। सन् १८३१ तक नीलगिरि पहाड़ियां कोयम्बुतूर जिले का भाग था। उस समय उसका बड़ा भाग मालाबार जिले में कर दिया गया। सन् १८४३ में वह हिस्सा फिर कोयम्बुतूर जिले में आया। सन् १८६८ में नीलगिरि नामक जिला कायम हुआ। हाल तक नीलगिरि जिला,

जिसकी औसत ऊंचाई समुद्र के जल से लभ भग ६५०० फीट है, ७२५ वर्गमील मे था; किंतु सन् १८७३ में अक्टरलोनी घाटी जोड़ करके और सन् १८७७ में ३००० फीट औसत ऊंचाई का देश जोड़ कर जिला बढ़ाया गया।

पालघाट।

पोडैयनूर जंक्शन से ३४ मील (ईरोड जंक्शन से ९२ मील) पश्चिम कुछ दक्षिण पालघाट का रेलवे स्टेशन है। मद्रास हाते के मालाबार जिले में तालुक का सदर स्थान पालघाट एक क़सबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय पालघाट में ३९४८१ मनुष्य थे, अर्थात् १९१२८ पुरुष और २०३५३ स्त्रियां। इनमें ३२८५८ हिंदू, ५५२७ मुसलमान, १०८३ कृस्तान और १३ जैन थे।

पालघाट में सरकारी कचहरियां, अस्पताल, स्कूल और एक पुराना किला हैं, किंतु उसमें अब कोई सैनिक नहीं रहता है।

इतिहास—पूर्व समय में पालघाट बहुत प्रसिद्ध था। सन् १७६८ में अंगरेजो ने उसको ले लिया, किंतु चंद महीनो के बाद मैसूर के हैदरअली ने संपूर्ण दूसरे किलो के साथ पालघाट के किले को अंगरेजो से छीन लिया। हैदरअली के मरने के पश्चात् सन् १७९० में अंगरेजो ने टीपूसुलतान से पालघाट के किले को ले लिया।

कलीकोट।

पालघाट से ७८ मील और इरोड जंक्शन से १७० मील पश्चिम कलीकोट का रेलवे स्टेशन है। मद्रास हाते में पश्चिमी घाट अर्थात् मालाबार के किनारे पर (११ अन्श, १५ कला उत्तर अक्षांश और ७५ अन्श, ४९ कला पूर्व देशांतर में) मालाबार जिले और कलीकोट तालुक का सदर स्थान कलीकोट एक बड़ा क़सबा है। मद्रास रेलवे की दक्षिण पश्चिम की शाखा कलीकोट

तक गई है । कलीकोट का शुद्ध नाम कोलीकोडू अर्थात् (मालाबार भाषा की) मूर्गा की बोली है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कलीकोट कसबे में ६६०७८ मनुष्य थे; अर्थात् ३४५०७ पुरुष और ३१५७१ स्त्रियां । इनमें ३७७३३ हिंदू, २४५४५ मुसलमान, ३७०३ कृस्तान, ६७ पारसी, २७ जैन, २ बौद्ध और १ अन्य थे । मनुष्य संख्या के अनुसार यह भारत वर्ष में ५४ वां और मद्रास हाते के अंगरेजी राज्य में ८ वां शहर है।

देशी लोगों की बस्ती समुद्र के जल से थोडी ऊंची है, जिसमें एक लंबा बाजार बना है। दक्षिण ओर दहिने फैली हुई मपिला मुसलमानो की बस्ती आदि, पश्चिमोत्तर पोर्चुगीजो की बस्ती, देशी पैदल सेना के एक भाग की लाइने, परेड की भूमि और कलक्टर की कचहरी है। पोर्चुगीजों की बस्ती में जेलखाना है।

कष्टमहौस, क्लब और यूरोपियन शरीफों की कोठियों के मुख समुद्र की ओर हैं । समुद्र के पास लाइटहाउस बना हुआ है । एक मीठे पानी के सुंदर सरोवर के चारो ओर अनेक सरकारी आफिस और बहुत सी प्रसिद्ध इमारतें बनी हुई हैं । कसबे से २ मील उत्तर एक पहाडी पर छावनी और कलक्टर की कोठी है । इनके अतिरिक्त कलीकोट में जिले की प्रधान कचहरियां, पागलखाना, दवाखाना, अस्पताल, बंगला, बंक, अनेक स्कूल और कई एक गिरजे हैं। कलीकोट का पवन पानी साधारण तरह से स्वास्थ्यकर है। वहां औसत में १२० इञ्च सालाना वर्षा होती है । कलीकोट में ६ एकड़ भूमि के साथ फरांसीसियों का एक मकान है, अर्थात् ६ एकड भूमि उनके अधिकार में अब तक है।

बेपुर—कलीकोट से ६ मील दक्षिण एक नदी के मुहाने के पास बेपुर बस्ती है । कलीकोट और बेपुर के बीच में शहरतलियों के गांव फैले हैं। गांवो की चारो ओर ताड़, आम, और कटहल के वृक्षों के कुंज लगे हैं। बेपुर के पड़ोस में लोहे के ओर होते हैं। पूर्वीघाट की टीक की लकड़ियां पानी में बहाकर बेपुर में लाई जाती हैं और वहां से दूसरे देशों में भेजी जाती हैं।

मालावार जिला—इसके उत्तर दक्षिणी किनारा जिला; पूर्व कुर्ग, मैसर का राज्य, नीलगिरि और कोयम्बुतूर जिला; दक्षिण कोचीन का राज्य और पश्चिम पश्चिमीघाट का समुद्र है। जिले का सदर स्थान कलीकोट है। यह जिला उत्तरी मालावार और दक्षिणी मालावार नाम से २ भाग होकर २ जजों के अधिकार में है।

मालावार जिला समुद्र के किनारे पर १४५ मील फैला हुआ है। इसकी चौड़ाई २५ मील से ७० मील तक है। पश्चिमी घाट की पहाड़ियां ३००० फीट से ७००० फीट तक ऊंची हैं। जिले में बहुतेरी अप्रसिद्ध नदियां और धाराएं हैं। मालावार के किनारे के समानांतर में खारे पानी की झीलों का लगातार जंजीर है। लगभग १७०००० रुपये की नमकदार मछलियां प्रतिसाल मालावार जिले से सिलोन में भेजी जाती हैं। मालावार का फैला हुआ जंगल वेश कीमत है। जंगलों और पहाड़ियों में हाथी, सांभर, बाघ, तेंदुए, सूअर, भालू, हरिन इत्यादि वनजन्तु रहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय मालावार जिले के ५७६५ वर्गमील क्षेत्रफल में २३६५०३५ मनुष्य थे; अर्थात् १६६९२७१ हिंदू, ६५२१९८ मुसलमान, ४३१९६ कृस्तान, १५७ जैन, ५४ बौद्ध, ४६ पारसी, ३० यहूदी और ८३ अन्य। हिन्दुओं में ५७२२३१ तानान (मदक), ३४८१६९ वेल्लाल (खेतिहर), ९००५१ कंभाडन (सिल्पकार), ५०६७४ बनिया (जाति विशेष), ४७६८३ ब्राह्मण, ४२६०६ कैकलर (बिनाई के काम करने वाले), ३७८५६ वन्नान (धोबी), २२०५४ सेटी (सौदागर), १६१९१ सेंपदवन (मछुहा), १३१०२ अंबटन (नाई), ११७७० कुमवन (कुम्हार), ७६२७ सतानी (दुमसला), ४९९१ इडैयर (भेड़िहर), १५०९ क्षत्रिय, और बाकी में अन्य जातियों के लोग थे। मलेवार जिले में मलेयाल्म भाषा प्रचलित है; किन्तु तलीचेरी, कननूर आदि कई स्थानों में तुळु भाषा बोलने वाले लोग बहुत हैं।

मालावार के नायरों में, जो शूद्र हैं, एक स्त्री के अनेक पति होते थे; किंतु वहां अब यह रीति नहीं है; परंतु मालावार के दक्षिण भाग में और

तुलु वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स

ह ः ळ का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

तिरुवांकर तथा कोचीन के राज्य के कई भाग में अब तक भी कुछ कुछ ऐसा होता है । उसमें एक स्त्री की जितनी संतान होती है, वे एक खांदान के कहलाती हैं । स्त्री अपनी जाति अथवा अपने से बड़ी जाति के किसी पुरुष को अपना पति चुना लेती है । अंगरेजी राज्य के मालावार में दो भाई एक स्त्री के साथ अथवा कोई पुरुष अपनी विधवा भौजाई के साथ विवाह नहीं करता है । मालावार के उत्तरीय भाग में की स्त्रियां सर्वदा अपने पति के घर रहती हैं और दक्षिणीय भाग की निर्धन पुरुषों की स्त्रियां वर्ष में ६ मास अपने पति के घर और ६ मास अपने पिता के गृह में निवास करती हैं । प्रधानों की स्त्रियां सर्वदा अपने पिता के घर रहती हैं; उनके पति वहांहीं जाते हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मालावार जिले के कसबे कलीकोट में ६६०७८, पालघाट में ३९४८१, कननूर में २७४१८, तलीचरी में २७१९६ और कोचीन में १७६०१ मनुष्य थे । कलीकोट मालावार की राजधानी; कननूर और तलीचरी बंदरगाह और कननूर, फौजी छावनी है । जिले की सौदागरी खास करके कननूर, तलीचरी, पालघाट, कलीकोट और कोचीन में होती है ।

कलीकोट का इतिहास—ऐसी कहावत है कि मालावार के मालिक "चेरमान पेरुमाल" ने नवीं शदी में कलीकोट को बसाया । उसने अपना मक्का जाने के समय मानविक्रम या जमोरिन को कलीकोट दे दिया । जमोरिन ने मोपला लोगों की सहायता से, जो अरब के सौदागरों की संतान थे, अपने राज्य को दक्षिण और पर्व फैलाया । कलीकोट का वर्त्तमान कसबा १३ वीं शदी का है ।

पहिले योरोप वालों को समुद्र की राह से हिंदुस्तान में पहुँचने का मार्ग मालूम न था । सन् १४८६ में पोर्चुगल का कोविलहम कलीकोट में उतरा था । उसके पश्चात् कुछ जहाज वेस्कोडीगामा के आधीन पोर्चुगल के लिज़्बों शहर से रवाने हुए । १० महीने और २ दिन के बाद सन् १४९८ की ११ वीं मई को वास्कोडीगामा कलीकोट में पहुँचा । उस समय कलीकोट में एक

बड़ा देवमन्दिर और बहुत सी उत्तम इमारतें थीं। वहां का जमोरिन नामक हिंदू राजा एक फैला हुआ राज्य पर राज्य करता था, जिसके वंश वाले अब तक सरकार से पिंशन पाते हैं। राजा ने वास्कोडीगामा का स्वागत किया। वास्कोडीगामा ६ मास तक मालावार के किनारे पर रह कर योरोप को लौट गया। सन् १५०१ में पोर्चुगल की एक कोठी कलीकोट में कायम हुई। थोड़े ही दिनों के बाद मोगलाओं ने उस कोठी को तोड़ फोड़ दिया और पोर्चुगीजों के ५० आदमियों को मारडाला। सन् १५०२ में वास्कोडीगामा बदला लेने के लिये २० जहाजों के साथ आपहुंचा। उसने कोचीन और कननूर के राजाओं से मेल किया और जमोरिन के महल पर गोला चलाया। सन् १५१० में पोर्चुगीजों के गवर्नर अलबुकर्क ने कलीकोट पर आक्रमण करके जमोरिन के महल को जलाया और कसबे को बरबाद किया; किंतु देशियों ने उसको वहां से कोचीन में भगादिया। उस समय कलीकोट पर उसका अधिकार नहीं हुआ; परंतु गोवा उसके अधिकार में होगया, जो अब तक पोर्चुगल वालों के हिन्दुस्तान के राज्य का सदरस्थान बना हुआ है। सन् १५१३ में कलीकोट के राजा ने पोर्चुगीजों के साथ मेल किया। राजा के हुक्म से पोर्चुगीजों ने एक किलाबंदी कोठी बनाई।

सन् १६१६ में कलीकोट में अंगरेजी कोठी कायम हुई। सन् १७२२ से फरासीसी लोग कलीकोट में बसने लगे, जिस समय से अंगरेजों ने ३ बार कलीकोट को जीता। सन् १७५२ में हालेंड वालों की कोठी कलीकोट में बनी, जिसका भाग सन् १७८४ में बरबाद किया गया और उसके थोड़ही पीछे वह कोठी अगरेजी आबादी में मिलाली गई। सन् १७६६ में मैसूर के हैदरअली ने कलीकोट के देश पर आक्रमण किया। राजा अपने महल में आग लगा कर अपने घर के लोगों के साथ जल मरा, किन्तु मुसलमानों की आधीनता स्वीकार नहीं की। उस समय हैदरअली को आरकाट की लड़ाई में जाने की आवश्यकता हुई, इस लिये कलीकोट उसके अधिकार में नहीं हो सका, किन्तु सन् १७७३ में मैसूर वालों ने फिर कलीकोट को जीत लिया। सन् १७८२ में अंगरेजों ने मैसूर वालों को कलीकोट से निकाल दिया।

सन् १७८९ में मैसूर के टीपूसुलतान ने कलीकोट के देश को बरवाद किया। उस समय शहर प्राय: उजाड़ होगया। टीपू ने ६ मील दक्षिण-पूर्व फरुखाबाद नामक नया शहर बसाया और वहां किला बनाने का काम आरंभ किया। सन् १७९० में अंगरेजों ने टीपू के जनरल को परास्त किया और फरुखाबाद को लेलिया। सन् १७९२ में कलीकोट का संपूर्ण देश अंगरेजों के अधिकार में होगया। उस समय से धीरे धीरे देश आवाद होने लगा। सन् १८४९ में यूरोपियन सेना का एक टुकड़ा कलीकोट में रक्खा गया। सन् १८५१ में फौज वहां से हटा दी गई थी, किंतु सन् १८५५ में वहां के कलक्टर के मारे जाने पर कलीकोट में फिर सेना रक्खी गई।

कलीकोट के राजा के महल के, जिसमें वास्कोडीगामा का स्वागत हुआ था, २ स्तंभ अब तक विद्यमान हैं। पुराने महल की निशानियां भी देखने में आती हैं। कलीकोट में अब तक फरासीसियों का एक मकान है।

मालाबार जिला का इतिहास—पूर्वकाल में तिरुवांकूर और कोचीन राज्य के देश के साथ मालाबार का नाम केरल और चेरा देश था। पुराणों में उस देश का नाम केरल देश लिखा हुआ है। बंबई के वृत्तान्त में देखिए। कहावत के अनुसार चेरा राज्य का पिछला राजा 'चेरमान पेरूमाल' था। वह अपने राज्य को अपने आधीन के लोगों को बांट कर मुसलमान हो मक्का चला गया। चेरमान पेरूमाल के रहने के समय के विषय में अनेक मत भेद हैं। साधारण प्रकार से कहा जाता है कि वह चौथी शदी के मध्य में था; किंतु अरब के समुद्र के किनारे पर सफाई में उसकी कबर विद्यमान है। उसके ऊपर के लेख से विदित होता है कि सन् २१२ हिजरी (सन् ८२७ ईस्वी) में चेरमान पेरूमाल वहां पहुँचा और सन् २१६ हिजरी (सन् ८३१ ईस्वी) में वहां मर गया। चेरमान पेरूमाल के पश्चात् चेरा देश बहुत से छोटे राजाओं के अधिकार में बट गया।

सन् १४९८ में पोर्चुगल का वास्कोडीगामा मालाबार में आया। उसके थोड़ही दिन बाद उसके उत्तराधिकारीयों ने कलीकोट, कोचीन और कननूर में रहना आरंभ किया। सन् १६५६ में हालैंड वाले हिन्दुस्तान में आए।

उन्हों ने पहिले कननूर को जीता और उसके पश्चात् सन् १६६३ में कोचीन के किले और तंगाचेरी को ले लिया। सन् १७१७ में हालैंड वालों ने जमोरिन से चेटवाई नामक टापू छीन लिया; किंतु उसके लगभग ६० वर्ष पीछे से उनका बल घटने लगा। उन्होंने कननूर के राजा के वंशधरों के हाथ कननूर बेंच दिया। सन् १७७६ में मैसूर के हैदरअली ने चेटवाई टापू को और सन् १७९५ में अंगरेजों ने कोचीन को जीत लिया।

सन् १७२० में फरांसीसी लोग पहले पहल माही में बसे। सन् १७५२ में वे लोग कलीकोट में आए। उन्होंने सन् १७५४ में माउंटडेली और उत्तर के कई स्थानों पर अपना अधिकार कर लिया, जिनको अंगरेजों ने सन् १७६१ में ले लिया। अंगरेज लोग सन् १६१६ में कलीकोट में, सन् १६८३ में तलीचेरी में, और सन् १७१४ में चेटवाई में अपनी कोठियां कायम कर चुके थे। उसके बाद मैसूर के हैदरअली और टीपूसुलतान के साथ अंगरेजों को मालावार में कई बार लड़ना पड़ा। सन् १७९२ में टीपू से इष्टइंडियन कंपनी की संधि हुई, जिसके अनुसार मालावार कंपनी के अधिकार में हो गया।

तलीचेरी।

कलीकोट के बंदरगाह से ३९ मील पश्चिमोत्तर समुद्र के किनारे पर (११ अंश, ४४ कला, ५३ विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ३१ कला, ३८ विकला पूर्व देशांतर में) मदरास हाते के मालावार जिले में तलीचेरी बंदरगाह तथा कसबा है। कलीकोट से तलीचेरी होकर आगबोट जाते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय तलीचेरी में २७१९६ मनुष्य थे; अर्थात् १३४०३ पुरुष और १३७९३ स्त्रियां। इनमें १५१५२ हिन्दू, १०२८२ मुसलमान, १७४७ कृस्तान, ८ पारसी, ५ जैन और २ अन्य थे।

तलीचेरी में उत्तरी मालावार जिले की प्रधान कचहरियां, जेलखाना, कष्टमहौस, गिरजा और बहुत से सरकारी तथा तिजारती लोगों के आफिस हैं। घने वृक्षों से युक्त सुन्दर स्वास्थ्य कर पहाड़ियों पर, जो समुद्र की ओर ढालू

हैं, तलीचेरी कसबा बसा है। कसबे के उत्तर समुद्र के किनारे पर ४० फीट ऊपर किला है। किले के पश्चिमोत्तर के संपूर्ण बगल पर ऊंची इमारत बनी हुई हैं; ऊपर के भाग में जज की कचहरी और अनेक सरकारी आफिस तथा नीचे के भाग में जेलखाना है। देशी लोगों का कसबा दक्षिण ओर है। बाजार के साथ प्रधान सड़क समुद्र के किनारे के समानांतर में एक मील लंबा है।

तलीचेरी से बहुत इलायची और काफी दूसरे देशों में भेजी जाती हैं। वहां की इलायची सब देशों की इलायची से उत्तम होती है। वहांसे उत्तम चंदन की लकड़ी दूसरे कसबों में जाती है।

इतिहास—सन् १६८३ में इष्टइन्डियन कंपनी ने तलीचेरी में मिर्च और इलायची के लिये एक कोठी नियत की। सन् १७०८ में चेरिकल राजा ने इष्टइन्डियन कंपनी को तलीचेरी का किला इनाम दे दिया। सन् १७६६ में वहां की कोठी रेजीडेंसी बनाई गई। सन् १७८२ में मैसूर के हैदरअली ने तलीचेरी पर आक्रमण किया; किन्तु बम्बई से अंगरेजी फौज आने पर उसने अपना घेरा उठा लिया।

माही।

तलीचेरी कसबे से ५ मील दक्षिण मदरास हाते के मालाबार जिले की सीमा के भीतर, माही नदी के मुहाने से दक्षिण, समुद्र के किनारे पर, फरासीसियों के राज्य में माही एक कसबा तथा बंदरगाह है। पश्चिमी किनारे पर केवल यही २ वर्गमील भूमि फरासीसियों के अधिकार में हैं, जिसमें लगभग ८००० मनुष्य बसते हैं। बंदरगाह में ७० टन बोझे का जहाज आ सकता है। किनारे की सड़क बेपुर के रेलवे स्टेशन से माही होकर कननूर के फौजी स्टेशन को गई है।

एक ऊंची भूमि पर माही बस्ती है। बस्ती का अगवास माही नदी की ओर है। वहां फरासीसियों की कोठी, स्कूल, गिरजा और अंगरेजी पोष्ट आफिस है।

इतिहास—फरांसीसी लोग मिर्च की सौदागरी करने के लिये पहिले पहल माही में बसे। सन् १७२२ में उन्हों ने वहां के राजा से कोठी के लिये भूमि प्राप्त की। उसके पश्चात् उन्हों ने सन् १७५२ में नीलेश्वरम् आदि कई बंदरगाहों को और सन् १७५४ में मांउटडेली को खरीदा। सन् १७६१ में अङ्गरेजों ने माही तथा खरीदी हुई भूमि को उनसे छीन लिया। अङ्गरेजों ने सन् १७६५ में माही फरासीसियों को लौटा दी; फिर सन् १७७९ में उनसे छीन ली; फिर सन् १७८५ में उनको लौटा दी; फिर सन् १७९३ में तीसरी वार छीन ली, किंतु सन् १८१६ में फिर उनको लौटा दी; तबसे वह उनके अधिकार में है। माही पहिले बहुत मसहूर तथा बड़ी सौदागरी की जगह थी; किन्तु सन् १७८२ में संपूर्ण कसबा जला दिया गया और वहां की किलाबंदी तोड़ दी गई। उसकी दिन पर दिन घटती होती जाती है। सन् १८८३ में लगभग १८००० रुपया उससे मालगुजारी आई थी।

कननूर।

तलीचेरी के बंदरगाह से १३ मील पश्चिमोत्तर कननूर का बंदरगाह है। मदरास हाते के मलेवार जिले में) ११ अंश, ५१ कला, १२ विकला उत्तर अक्षांस और ७५ अन्श, २४ कला, ४४ विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र के किनारे पर एक तालुक का सदर स्थान और फौजी स्टेशन कननूर है। लंगर की जगह किनारे से २ मील दूर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय फौजी छावनी के साथ कननूर कसबे में २७४१८ मनुष्य थे; अर्थात् १३२७३ पुरुष और १४१४५ स्त्रियां। इनमें १२५६८ मुसलमान, ११७०७ हिन्दू, ३११० कृस्तान, ३० पारसी, और ३ जैन थे।

कननूर के चारो ओर पहाड़ियां और तंग घाटियां और जगह जगह नारियल के वृक्षों के झुण्ड हैं। एक अन्तरीप पर किला है, जो अंगरेजी अमलदारी होने के पीछे मजबूत किया गया। ३० फीट से ५० फीट तक ऊंची एक लम्बी पहाड़ी के किनारों पर अंगरेजी अफसरों के बहुत से बंगले बने हैं। कननूर में सरकारी कचहरियां, जेलखाना, स्कूल, अस्पताल, कष्टमहौस, बहुत

से आफिस बहुतेरी मसजिदें (जिनमें २ प्रसिद्ध हैं) और अनेक मिशन हैं। छावनी में यूरोपियन और एक देशी पैदल की रेजीमेंट अर्थात् पल्टन रहती है। कननूर का पवन पानी मोलायम, एक रस तथा स्वास्थ्यकर है। वहां औसत में सालाना वर्षा ९७ इञ्च होती है। कननूर में एक राजा है।

इतिहास—सन् १४९८ में पोर्चुगल का वास्कोडीगामा कननूर में आया। उसके ७ वर्ष पीछे उसने वहां एक कोठी बनाई। सन् १६५६ में हालैंड वाले कननूर में बसे, उन्होंने अपनी रक्षा के लिये कननूर के वर्त्तमान किले को बनवाया। सन् १७६६ में मैसूर के हैदरअली ने हालैंड वालों से कननूर का किला छीन लिया। सन् १७८४ में अंगरेजों ने कननूर को ले लिया और वहां का राजा इष्टइन्डियन कम्पनी के आधीन हुआ। उसके ७ वर्ष बाद अङ्गरेजों ने फिर कननूर को लेकर अपने राज्य में मिला लिया।

मरकाड़।

कननूर बंदरगाह से ७२ मील पूर्वोत्तर, मंगलूर बंदरगाह से ८६ मील पूर्व-दक्षिण और मैसूर शहर से लगभग ८० मील पश्चिम (१२ अन्श, २६ कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अन्श, ४६ कला, ५५ विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र के जल से ३८०० फीट ऊपर कुर्गदेश के मध्य भाग में कुर्गदेश में प्रधान कसबा और उसकी राजधानी मरकाड़ है। मार्ग पहाड़ी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मरकाड़ कसबे में ७०३४ मनुष्य थे, अर्थात् ३९०४ पुरुष और ३१३० स्त्रियां। इनमें ४९४१ हिन्दू, १४७१ मुसलमान; ५९१ क्रस्तान और ३१ पारसी थे।

मरकाड़ में छः पहल एक किला है। उसकी चारो ओर पत्थर की दीवार और खाई बनी हुई है और उत्तर ओर एक पुश्ता है। किले के भीतर राजा का महल, अंगरेजों का गिरजा और हथियारखाना है। किले में पूर्व वाले फाटक के पास कमिश्नरसाहब की कोठी और अनेक सरकारी आफिस हैं। किले के भीतर का महल ईन्टे का दो मंजिला है। उसके मध्य भाग में आंगन है। महल के अधिक हिस्से में अब सरकारी काम होता है।

देशी लोगों के महल्ले में एक ऊंचे बांध के भीतर दोदावीर राजेंद्र, लिंगराजेंद्र और दोनों की रानियों के समाधि मन्दिर हैं, उनके मध्य में गुँबज और कोनों पर मीनार बने हुए हैं। समाधि के पास सर्वदा दीप जलता है। प्रति दिन समाधि पर फूल और एक शुक्ल वस्त्र चढ़ाया जाता है। वहां के लिंगायत पुजारियों को सरकार से वार्षिक २००० रुपये मिलते हैं।

हिन्दू-मन्दिरों में उमेश्वर का मन्दिर प्रधान है, जो ऊपर लिखे हुए समाधि मंदिरों के ढाचे का बना हुआ है। उस मन्दिर के ब्राह्मण पुजारी को वार्षिक ४८५० रुपये मिलते हैं। इनके अलावे मरकाड़ में अस्पताल, स्कूल और जनाना स्कूल है। वहां का जल वायु सर्द तथा रोग वर्द्धक है। वहां औसत में सालाना १३९ इञ्च वर्षा होती है। मरकाड़ में फौजी छावनी है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय २१९६ मनुष्य थे। कुर्ग के राजा के वंश धर मरकाड़ा में रहते हैं।

इतिहास—लोग कहते हैं कि मधु राजा नामक कुर्ग के पहिला राजा ने सन् १६८१ में मरकाड़ को बसाया। 'राजेंद्रनामा' में कुर्ग के राजाओं का इतिहास लिखा हुआ है। सन् १७८२ में मैसूर की सेना मरकाड़ से निकाल बाहर की गई। सन् १७९० में मैसूर के टीपू ने मरकाड़ के राजा दोदावीर राजेंद्र से मेल किया। टीपू ने किले की पत्थर की दीवार को बनवाया। सन् १८१२ में मरकाड़ के राजा लिंग राजेंद्र वोडियर ने किले के भीतर के महल को बनवाया। वह महल हाल में मरम्मत किया गया है। सन् १८३४ में अङ्गरेजों ने विना मुकाबिला के मरकाड़ पर अधिकार करके वहां के राजा को गद्दी से उतार दिया और कुर्गदेश को अपने राज्य में मिला लिया।

कुर्गदेश—दक्षिण हिन्दुस्तान में एक चीफ कमिश्नर के आधीन, जो मैसूर के रेजीडेंट भी हैं, कुर्ग एक देश है, जिसको उस देश के लोग कोड़गु कहते हैं। इसके उत्तर कुमारधारा और हेमवतीनदी, जो मैसूर की ऊंची भूमि से इसको अलग करती हैं, पूर्व मैसूर का राज्य और पश्चिम पश्चिमीघाट की पहाड़ियां, जो मालावार और दक्षिण किनारा जिले से इसको जुदा करते हैं, फैली हुई हैं। पूर्व की सीमा पर थोड़ी दूर तक कावेरी नदी बहती है। इस

देश की सबसे अधिक लंबाई उत्तर से दक्षिण तक ६० मील और सबसे अधिक चौड़ाई पूर्व से पश्चिम तक ४० मील है।

संपूर्ण कुर्गदेश में वन और घास से पूर्ण पहाड़ियां फैली हुई हैं । केवल चंद घाटियों में खेती होती है। जिले में सबसे ऊंची पहाड़ी का शिखर समुद्र के जल से ५७२९ फीट ऊंचा और पुष्पगिरी का शिखर ५५४८ फीट ऊंचा है । खानों में मकान बनाने योग्य पत्थर निकलता है । लोहा की खाने हैं, किंतु किसी खान से लोहा नहीं निकाला जाता । किसी किसी स्थान में कुछ कुछ सोना मिलता है । जंगल बहुत हैं। जंगलों में भालू, बाघ, तेंदुए, हाथी, इत्यादि बनैले जन्तु रहते हैं। हाथी अब कम होगए हैं। गवर्नमेंट ने अब शिकारियों को हाथी मारने के लिये निषेध किया है। कावेरीनदी और उसकी सहायक लक्ष्मणतीर्थ, हेमवती तथा सुवर्णवती नदी कुर्गदेश की प्रधान नदियां हैं, उनमें से कोई नदी नाव चलने लायक नहीं है । वे तंग घाटियों में सघन जंगल होकर बहती हैं । कावेरीनदी कुर्ग की पहाड़ियों से निकली है। कुर्ग में बहुत परिश्रम से थोड़ी खेती होती है। कहवा बहुत होता है और इलायची अपने आप उपजती है । मजदूरी बहुत लगती है, इस कारण से वहां दस्तकारी का काम नहीं होता । देश के काम की प्रायः संपूर्ण वस्तु बाहर से आती है।

कुर्ग के हेरमाल गांव में तथा उसके पास के इरपोगांव के निकट फाल्गुन की शिवराती को मेला होता है । कुर्ग के उत्तरीय सीमा पर सुब्रह्मण्य नामक पहाड़ी के पादमूल के पास प्रति वर्ष अगहन में मेला होता है। मेले में बहुत यात्री आते हैं और धातु के बर्त्तन, मूर्तियां तथा बहुत मवेसियां बिकती हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कुर्गदेश का क्षेत्रफल १५८३ वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या १७३०५५ थी, अर्थात् ९५९०७ पुरुष और ७७१४८ स्त्रियां । इनमें १५६८४५ हिन्दू, १२६६५ मुसलमान, ३३९२ कृस्तान, ११४ जैन और ३९ पारसी थे, जिनमें सैकड़े पीछे ४४ कनड़ी भाषा वाले, २०½ कोंड्गू भाषा वाले, ९¼ तामिल भाषा वाले, ७ तलु भाषा वाले, ६½ मलेयालम् भाषा वाले, ४ उर्दू भाषा वाले, २ तेलगु भाषा वाले, और ६¾

अन्य भाषा बोलने वाले मनुष्य थे। कुर्ग में ३ हजार से अधिक आबादी के केवल २ कसबे हैं, जिनमें से सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मरकाड़ में ७०३४ और वीरराजेंद्र पेट में ४४४७ मनुष्य थे।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय कुर्ग के हिंदुओं में २४४९ ब्राह्मण, जो खास करके शैव हैं; छत्रियों में ३५१ राजपूत और १२९ पीछे के हुकूमत करने वाले के वंशधर राजविंदि; वैश्यों में २२८ कोमटी और बाकी में अन्य जातियों के लोग थे। कुर्ग के कोड़ागू, जो एक समय इस देश के राजा थे, सन् १८८१ में केवल २७०३३ थे। वे लोग अपनी पुस्तैनी भूमि को जोतते हैं और स्वतंत्र भाव से हथियार बांधते हैं। उनके मुखिया अंगरेजी सरकार से परस्पर मित्रता की शर्त पर अंगरेजी अफसरों से सुव्यवहार रखते हैं। हिन्दुस्तान के किसी प्रदेश के किसी जाति के मनुष्यों ने कुर्ग के लोगों के तुल्य अंगरेजों को राज भक्ति का प्रमाण नहीं दिया है। वहां के पुरुष लंबे चौड़े तथा बलवान होते हैं। वे लोग काले रंग के कोट, जो ठेहुने तक लटका रहता है, पहनते हैं; कमर में लाल अथवा नीले रंग के पटुका बांधते हैं, जिसमें सर्वदा एक चाकू, जिसमें चांदी की सिकड़ी और हाथीदांत का बेंट लगा रहता है, रखते हैं; सिर पर लाल मुरेठा अथवा विचित्र चाल की पगड़ी बांधते हैं; गले में गुरिओं का हार और कानों में तथा पहुंचों पर चांदी अथवा सोने के भूषण पहनते हैं। उनकी स्त्रियों में से चंद सुन्दर और अच्छी बनावट की होती हैं। वे एक लंबा रूमाल अपने सिर के बालों पर, बांधती हैं। बहुत कम लोग १६ वर्ष से कम अवस्था में विवाह करते हैं।

इतिहास—देशी कहावत के अनुसार कुर्ग के कोडागू लोग कदंबा राजा के, जो ६ वीं शदी में मैसूर राज्य के पश्चिमोत्तर भाग में हुकूमत करते थे, सैनिक की संतान हैं। कुर्ग के दक्षिण भाग में मिले हुए लेखों से जान पड़ता है कि उस राजा के वंशधर उस प्रदेश में कुछ अधिकार रखते थे। १६ वीं शदी की लिखी हुई एक मुसलमानी किताब से विदित होता है कि उस समय एक खास राजा कुर्ग में हुकूमत करता था। कहावत से जान पड़ता है कि एक समय कुर्ग १२ जिलों में विभक्त था। प्रत्येक जिले का एक

स्वाधीन हुकूमत करने वाला था । वे प्रधान 'नायक' कहलाते थे। उनको मरकाड़ के राजा के पूर्व पुरुषों ने, जिनसे राजवंश नियत हुआ था, परास्त किया। कुर्ग के लोग इतिहासों में बलवान तथा स्वाधीन लिखे गए हैं। उन्होंने मैसूर के हैदरअली के प्रताप के समय अपनी स्वाधीनता कायम रक्खी थी, किन्तु पीछे थोड़की लड़ाई होने के पश्चात्, जब अंगरेजी सरकार ने उनकी रीति, मजहब तथा मर्यादा पर हस्तक्षेप नहीं करने का एकरार किया, तब उन्होंने अंगरेजों की आधीनता स्वीकार करली।

सन् १८३४ में कुर्ग के राजा के कुप्रबंध के कारण से एक छोटी, किंतु सख्त लड़ाई हुई । तब राजा नजरबंद करके काशी में भेजा गया और उसका राज्य अंगरेजी राज्य में मिला लिया गया ।

मंगलूर ।

कननूर के बंदरगाह से ७७ मील (कलीकोट के बंदरगाह से १२९ मील) पश्चिमोत्तर मंगलूर का बंदरगाह है । मदरास हाते के दक्षिणी किनारा जिले में (१२ अंश, ५१ कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ७४ अन्श, ५२ कला, ३६ विकला पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान तथा जिले में प्रधान कसबा मंगलूर है। कननूर से मंगलूर होकर आगबोट जाते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मंगलूर कसबे में ४०९२२ मनुष्य थे; अर्थात् २१३५७ पुरुष और १९५६५ स्त्रियां। इनमें २३४३८ हिन्दू, ९८४९ कृस्तान, ७५८४ मुसलमान, ३६ जैन, १९ पारसी, और ४ बौद्ध थे। मनुष्य संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ९८ वां और मदरास हाते के अङ्गरेजी राज्य में १४ वां शहर है।

मंगलूर कसबे के दक्षिण पूर्व मंगला देवी का मंदिर है, उसी देवी के नाम से कसबे का नाम मंगलूर पड़ा था । मंगलूर कसबा उन्नति पर है। अच्छी सड़कों के किनारों पर देशी लोगों के मकान बने हैं। यूरोपियन लोगों की बस्ती मनोरम है । नारियल तथा ताड़ के कुंजों में कसबा बसा है। कसबे के पास नेत्रवती और गुरपुर नदी के मुहाने से बनी हुई एक झील है।

बंदरगाह में बड़े जहाज नहीं जा सकते हैं। मंगलूर से कुर्ग और मैसूर की बहुत काफी दूसरे स्थानों में भेजी जाती है। समुद्र द्वारा वहां बड़ी सौदागरी होती है। बंदरगाह में लाइट हाउस बना है।

मंगलूर में सरकारी कचहरियां, कष्टमहौस, गिरजा और फौजी छावनी हैं। छावनी में देशी पैदल की एक रेजीमेंट अर्थात् पल्टन रहती है।

मंगलूर में यूरोपियन, पोर्चुगीज, बंगाली, पारसी, मुगल, अरब वाले, सीदी, मपिला, कनारी, यहूदी, और कोंकानी, इत्यादि लोग देखने में आते हैं। वहां का जरमनमिशन देखने लायक है। वहां छापने, जिल्दबांधने, खपड़ा बनाने, लकड़ी के चीज बनाने के काम सिखलाये जाते हैं। वहां मदरास की यूनीवरसीटी के आधीन २ कालिज हैं। तलीचेरी, कननूर और मंगलूर के साधारण लोगों की भाषा तुलु है, जिसको तुलुवकु भी कहते हैं। तुलु भाषा उर्दू की तरह पर बनी है; उसको मुसलमान लोग अधिक बोलते हैं।

मंगलूर के इलाके में मिर्च, अदरक, दारचीनी और सुपारी बहुत होती हैं। वहां नफीस और खूबसूरत मोमजामे बनते हैं। लोग, जटामसी आदि मसाले और रेशम, कपड़ा, सोना, चांदी, इत्यादि चीजें दूसरे स्थानों से मंगलूर में आती हैं।

दक्षिणी किनारा जिला—यह जिला मदरास हाते के पश्चिम किनारे पर है। इसके उत्तर बम्बई हाते में उत्तर किनारा जिला, पूर्व मैसूर का राज्य और कुर्ग, दक्षिण मालाबार जिला और पश्चिम समुद्र है। जिले का सदर स्थान मंगलोर है। भूमि नीची ऊंची है। ३००० से ६००० फीट तक ऊंची पहाड़ियां हैं। १०० मील से अधिक लंबी कोई नदी नहीं है। नदियों में नेत्रवती, गुरपुर और चद्रगिरि नामक नदी प्रधान हैं। जिले की खानों में कुछ कुछ सोना और याकूत होते हैं। जिले में जंगल बहुत हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय दक्षिणी किनारा जिले के ३९०२ वर्गमील क्षेत्रफल में ९५९५१४ मनुष्य थे, अर्थात् ७९७४३० हिंदू ९३६६२ मुसलमान, ५८२१९ क्रस्तान, १००४५ जैन १६ पारसी और १५७ अन्य थे।

हिंदुओं में १३८१४६ इडवेयन (जिनको इडेगा भी कहते हैं), १३०००० परयन, १०६४१५ ब्राह्मण, ९४४६४ बलिजा, ४१३३८ गौड़ा, ३६०९९ पलयन, २४८८३ कुसवन, २२९१३ कंभाडन, १०९१८ वनियन्, २८७ राजपूत और बाकी में अन्य जातियों के लोग थे। जिले में केवल मंगलूर बड़ा कसबा है। दक्षिणी किनारा जिले की प्रधान भाषा मलेयालम् है।

इतिहास—सन् १२५२ में उस देश में पांड्य वंश के राजा का अधिकार था, जिसके उत्तराधिकारी ने (सन् १३३६) विजयानगर के राजा को जगह दी। सन् १५६४ में विजयानगर के राजा के परास्त होने पर वेदनूर के गवर्नर ने अपने स्वाधीनता को छोड़ दिया। उसी राज्य में पीछे कनारा जोड़ा गया। १६ वीं शदी में पोर्चुगीजों ने मंगलूर को ३ बार लूटा था। सन् १७६३ में मैसूर के हैदरअली ने वेदनूर को जीता। वहां के राजा उसके आधीन हुए। उसके पश्चात् उसने पश्चिम किनारे को जीतने के लिये अपनी फौज भेजी। राजधानी पर अधिकार होने के चंद महीनों के भीतर मंगलूर और वसरूर, मैसूर वालों के आधीन हो गए। सन् १७६८ में बंबई की अङ्गरेजी फौज ने हैदरअली के जहाज को छीन लिया और कुछ दिनों तक मंगलोर पर अपना अधिकार किया। हैदरअली के समय मंगलूर प्रधान बंदरगाह था। टीपू सुलतान ने किनारा के कृस्तानों में से बहुतेरों को मुसलमान बनाया। सन् १७९१ में टीपू ने दक्षिणी किनारा अङ्गरेजों को दे दिया। १७९९ में मंगलूर अङ्गरेजी अधिकार में हो गया। सन् १८६० में देश दक्षिण किनारा और उत्तर किनारा नाम से दो जिलों में तकसीम हुआ। सन् १८६२ में उत्तर किनारा जिला बंबई हाते में कर दिया गया।

सेलम।

कलीकोट के रेलवे स्टेशन से १७० मील पूर्व पूर्वकथित इरोड जंक्शन है। इरोड के रेलवे स्टेशन से ३७ मील पूर्वोत्तर सुरमंगलम् के पास सेलम का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते में (११ अन्श, ३९ कला, १० विकला, उत्तर अक्षांश और ७८ अन्श, ११ कला, ४७ विकला पूर्व देशांतर में) रेलवे

के स्टेशन से ४ मील दूर समुद्र के जल से ९०० फीट ऊपर जिले का सदर स्थान और जिले का प्रधान कसबा सेलम है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सेलम कसबे में ६७७१० मनुष्य थे; अर्थात् ३२८६० पुरुष और ३४८५० स्त्रियां। इनमें ६०८८० हिंदू, ५३९३ मुसलमान और १४३७ कृस्तान थे। मनुष्य संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ५२ वां और मदरास हाते के अङ्गरेजी राज्य में चौथा शहर है।

सेलम में जिले की प्रधान कचहरियां, जेलखाना, कई एक स्कूल, २ गिरजा, और कई अस्पताल हैं। देशी कसबे के बीच में होकर एक छोटी नदी निकली है। यूरोपियन लोग एक शहरतली में रहते हैं। खास सेलम में बहुत से तिजारती लोग और अफसर लोग रहते हैं। शिवपेट में प्रति वृहस्पतिवार को मेला होता है। सेलम का किला अब नहीं है। उसके पास बहुत सरकारी इमारतें बनी हैं। सेलम में बड़ी सौदागरी होती है और बहुत कपड़े तैयार होते हैं।

सुरमगलम् बस्ती से ७ मील दूर शिवराय नामक पहाड़ियों पर बहुत सी काफी उत्पन्न होती है। वहां एक एकड़ भूमि पर एक टन काफी तैयार होती है। काफी के वृक्ष ३० वर्ष तक रहते हैं, ३ वर्ष के पश्चात् फलने लगते हैं और ६ वर्ष के बाद पूरे तौर से फलते हैं।

सेलम जिला—इसके उत्तर मैसूर का राज्य और उत्तरी आरकाट जिला; पूर्व तिरुचनापल्ली, दक्षिणी आरकाट और उत्तरी आरकाट जिला, दक्षिण तिरुचनापल्ली और कोयम्बुतूर जिले का भाग और पश्चिम कोयम्बुतूर जिला और मैसूर का राज्य है। सदर स्थान सेलम कसबा है। जिले के दक्षिण भाग को छोड़ कर जिले के सब हिस्सों में पहाड़ियां हैं। पहाड़ियों के सिलसिलों के बीच बीच में बड़े बड़े मैदान हैं जिले की प्रधान नदी कावेरी है। जंगलों में बेश कीमत लकड़ी होती हैं। चंदन की लकड़ी भी पाई जाती हैं। बनैले जानवर दिन दिन घटते जाते हैं, क्योंकि संपूर्ण पहाड़ी लोग बंदूक रखते हैं और अपने खाने के लिये सर्वदा जंगली जानवरों

को मारते हैं। पहाड़ियों में भालू और तेंदुए बहुत हैं। कभी कभी हाथी भी देख पड़ते हैं। उस जिले में इस्पात बहुत होता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय सेलम जिले के ७६५३ वर्गमील क्षेत्रफल में १५९९५९६ मनुष्य थे; अर्थात् १५३१८५५ हिन्दू, ५१०९२ मुसलमान, १६५६७ कृस्तान, ४६ जैन, १८ बौद्ध और १८ अन्य। हिन्दुओं में ९९८८५३ शैव और ५०६९४५ वैष्णव थे। हिंदू की जातियों में ३९१२८७ वनिया (जाति विशेष, जो मजूरी करते हैं), ३७६२२१ वेल्लाल (खेतिहर), २११८५६ परिया, ७७९९४ कैकुलर (बिनाई के काम करने वाले), ५७५३० इडैयन् (भेड़िहर), ४५१५७ सानान (मदक), ४३३४३ कंमाड़न (सिलपकार), ४०३३५ सतानी (दोमसला), २८३९३ ब्राह्मण, २२५१२ सेटी (सौदागर), २०१४२ वन्नान (धोबी), १७०८६ अंबटन (नाई), १४९५० सेंबड़वन् (मछुहा), ११९४९ कुसवन (कुम्भार), ३१७८ क्षत्रिय, २५२९ कणकन और बाकी में अन्य जातियों के लोग थे। सेलम जिले में तामिल भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सेलम जिले के कसबे सेलम में ६७७१०, तिरुपत्तूर में १६४९९, वाणियमबाड़ी में १५८३८, मैदामगलम् में ११३५४, और राशिपुरम् में १०५३९ मनुष्य थे। इनके अतिरिक्त कृष्णगिरि, अत्तूर, धर्मपुरी, अम्नापेट इत्यादि छोटे कसबे हैं।

इतिहास—सेलम जिले के उत्तरीय और दक्षणीय भाग का पुराना इतिहास अलग अलग है; क्योंकि वे भिन्न भिन्न राज्यों के अधिकार में थे। उत्तरीय भाग पल्लव वंश के राजाओं के राज्य में सामिल था। वह राज्य पांचवीं शदी में उन्नति पर था। एक समय उनका राज्य उत्तर में नर्मदा नदी और उड़ीसा की सीमा से दक्षिण में दक्षिणी पेनार तक और पश्चिम में पश्चिमीघाट के उत्तरी अलोर से पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक फैला था। एक समय कांचीवरम् उनकी राजधानी था। ९ वीं शदी में जब तंजोर के चोला वंश के राजा ने पल्लव वंश के राजा का राज्य छीन लिया, तब उनके राज्य का केवल यही भाग उनके अधिकार में रह गया। सेलम जिले का

दक्षिणी भाग पूर्व काल में कोंगा देश के राज्य का हिस्सा था। कोंगी के गंगा वंश के तीसरा राजा हरीवर्मा ने लगभग सन् २९० में अपनी राजधानी स्कंदपुर को छोड़ कर तलकाई को राजधानी बनाया।

कुछ काल के पीछे चोला वंश के राजा ने और लगभग सन् १०६९ में बल्लाला वंश के राजा ने दूसरे देशों के साथ वर्तमान सेलम जिले को लेलिया। लगभग २०० वर्ष तक दोनों वंश के राजाओं के अधिकार में वह राज्य था। लगभग सन् १३५० में विजयानगर के राजाओं के आधीन था और सन् १५६५ तक उनके राज्य का एक भाग बना रहा। उसके पीछे भी विजयानगर के राज्य के दक्षिण का सम्पूर्ण भाग पुराने राजाओं के हाथ में रहा।

१७ वीं शदी के आरम्भ में सेलम जिला मदुरा के आधीन था। सन् १७६० में मैसूर के हैदरअली ने बारहमहाल को छीन लिया। सन् १७९२ की सन्धि में हैदरअली के पुत्र टीपू ने सेलम जिले के होसुर तालुक को छोड़ कर अन्य देशों के साथ सेलम जिला अंगरेजों को देदिया। सन् १७९९ में टीपू के मारे जाने पर होसुर तालुक भी अंगरेजी अधिकार में होगया।
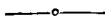
सत्रहवां अध्याय।

(मैसूर के राज्य में) कोलार, बंगलोर, सोमनाथपुर, शिवसमुद्रम्, श्रीरंगपट्टनम्, मैसूर और नंजनगुड़ी।

कोलार।

सेलम के रेलवे स्टेशन से ३७ मील (ईरोद जंक्शन से ११२ मील)

पूर्वोत्तर और आरकोनम् जंक्शन से ८९ मील (मदरास शहर से १३२ मील) पश्चिम-दक्षिण जालारपेट का रेलवे जंक्शन है। जालारपेट से ४४ मील पश्चिमोत्तर ओरींपेट का रेलवे स्टेशन है, जहांसे एक रेलवे शाखा मैसूर राज्य के कोलार की सोना की खानों को गई है। ओरींपेट से ६ मील बालाघाट माइन् अर्थात् बालाघाट की खान का और १० मील मरकूपम् का रेलवे स्टेशन है।

ओरींपेट जंक्शन से लगभग १० मील उत्तर (बंगलोर शहर से सड़क द्वारा ४३ मील) पूर्व थोड़ा उत्तर (१३ अंश, ८ कला, ९ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, १० कला, १८ विकला पूर्व देशांतर में) मैसूर राज्य के कोलार जिले का सदर स्थान और उस जिले में प्रधान कसबा तथा सोने की खानों के लिये प्रसिद्ध "कोलार" है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कोलार कसबे में १२१४८ मनुष्य थे, अर्थात् ९२०७ हिन्दू, २५३४ मुसलमान, ३८९ कृस्तान और १८ जैन।

कोलार कसबे में जिले की प्रधान कचहरियां तथा अनेक आफिस और जेलखाना, स्कूल, अस्पताल, हैदरअली के पिता फतहमहम्मदखां का मकबरा तथा अनेक बारक अर्थात् सैनिकगृह हैं। वहां रेशम के कीड़ों के पालने के लिये तूत की खेती होती है और मोटे कंबल बनते हैं।

मैसूर राज्य में (विशेष करके कोलार में) ८ वर्गमील भूमि से सोना निकाला जाता है। अब प्रति वर्ष करोड़ो रुपये का सोना निकलता है। पचासों हजार कूली उस काम में लगे हैं।

बंगलोर।

ओरींपेट के रेलवे स्टेशन से ४३ मील (जालारपेट जंक्शन से ८७ मील) और मदरास शहर से २१९ मील पश्चिम बंगलोर शहर का रेलवे स्टेशन है। शहर के स्टेशन से ३ मील पूर्व फौजी छावनी का रेलवे स्टेशन मिलता है। मैसूर के राज्य में समुद्र के जल से ३१०० फीट ऊपर बंगलोर जिले तथा ताल्लुक का सदर स्थान और मैसूर राज्य का सदर स्थान तथा प्रधान कसबा

बंगलोर है। यह १२ अंश, ५७ कला, ३७ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, ४६ कला, ५६ विकला पूर्व देशांतर में स्थित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय फौजी छावनी के साथ बंगलोर शहर में १८०३६६ मनुष्य थे; अर्थात् ९१०६२ पुरुष और ८९३०४ स्त्रियां। इनमें १२९२९८ हिन्दू, ३४३६४ मुसलमान, २०३२७ कृस्तान, ४०२ जैन, ६ पारसी, ९ बौद्ध, २ सिक्ख और २ अन्य थे। मनुष्य संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में १० वां और मैसूर के राज्य में पहिला शहर है।

बंगलोर शहर दो भागों में विभक्त है,—एक भाग पेटा। (अर्थात् किले के सहित पुरानी देशी वस्ती) और दूसरा भाग छावनी है। दोनो १३½ वर्ग-मील में फैले हैं, अर्थात् २½ वर्गमील में पेटा और ११ वर्गमील में छावनी। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ६२३१७ मनुष्य पेटा में और ९३५४० मनुष्य छावनी में थे।

बंगलोर में मैसूर के महाराज का एक सुन्दर महल है, जिसको खास आज्ञा होने पर आदमी देख सकता है। समय समय महाराज उस महल में रहते हैं। उससे ३½ मील दक्षिण कोरा मङ्गल नामक सरोवर के दक्षिण का किनारा है और बंगलोर के पेटा अर्थात् पुरानी वस्ती के पश्चिम बगल से लगभग ३½ मील पूर्व मैदर्स—प्रेक्टिस ग्राउंड है। इन्हीं के मध्य में शहर के दोनों भाग अर्थात् पेटा और छावनी फैलती है।

दक्षिण पश्चिम के अन्त में किला और किला के उत्तर पेटा अर्थात्, पुरानी देशी वस्ती है। उससे पूर्वोत्तर छावनी फैली है। देशी वस्तियों के बीच के मैदान में घोड़दौड़ की सड़क, पार्क, परेड् की भूमि, यूरोपियनों के मकान, और बहुत से प्रधान प्रधान सरकारी आफिस हैं। उत्तर भाग में रेल्वे स्टेशन है। बंगलोर में ८ गिरजा, बहुत सी मसजिदें और बहुत देव मन्दिर हैं। पेटा तथा छावनी दोनों में रवनक दार बाजार है। देशी कसबे में मैसूर फाटक और किले के बीच में पबलिक बाजार है, किन्तु कारोबार सर्वत्र होता है। यूरोपियन लोगों की अधिक दुकानें छावनी के बाजार में हैं।

पेटा अर्थात् पुरानी देशी शहर में घनी आबादी है। उसकी सड़कें तंग और नादुरस्त हैं और जगह जगह सुन्दर मकान बने हुए हैं। पेटा में खास करके गल्ले और रुई की सौदागरी होती है। पहिले पेटा के चारो ओर गहिरी खाई और सघन झाड़ी थी।

पेटा से उत्तर जेलखाना और जेलखाने से पूर्व-दक्षिण कालिज और लगभग १ मील पूर्वोत्तर गवर्नमेंट हाउस है।

रेलवे स्टेशन से ३०० गज दक्षिण मिल्लर का तालाब और उस तालाब से १ मील पूर्व हलसूर तालाब है। एक छोटी धारा दोनों में मिली है। दोनों तालाबों के बीच में छावनी का बाजार; बाजार के दक्षिण पश्चिम सिपाहियों की लाइनें; लाइनों के थोड़ा पूर्व सिविल अस्पताल, लंदन मिशन और एक गिरजा है। इनके अलावे यहां पैदल और सवार सेनाओं के बारक अर्थात् सैनिक गृह बने हैं। गवर्नमेंट हाउस में मैसूर के रजीडेंट रहते हैं। सेंट्रल जेल के चारो ओर बड़ा मैदान है। सेंट्रल कालिज में एक बड़ा कमरा है, जिसमें एकही पत्थर के ३५ फीट ऊंचे स्तंभ लगे हुए हैं। गवर्नमेंट हौस से ½ मील दक्षिण ५२५ फीट लंबा सरकारी आफिस है। बंगलोर की छावनी दक्षिण भारत में बड़ी छावनी है।

बंगलोर मैसूर राज्य का प्रधान तिजारती शहर है। आस पास की खानों के पत्थर से उसमें बहुत सुन्दर मकान बने हैं। अनेक बड़े सरोवरों से बंगलोर में पानी आता है। शहर स्वास्थ्य कर होने के कारण शहरतलियों में बहुत से यूरोपियन बसे हैं। बंगलोर का रेशम बहुत मजबूत और सुन्दर होता है। यहां रेशमी किनारों के साथ सूत के सुन्दर कपड़े बहुत तैयार होते हैं। गलीच की दस्तकारी के लिये बंगलोर शहर प्रसिद्ध है, यहां के जेलखाने में परसियन और तुर्की चाल के गलीचे, जिनको अंगरेज लोग भी चाहते हैं, बहुत बनते हैं। सोने और चांदी के लैस भी अच्छे तैयार होते हैं। बंगलोर बंक सन् १८६८ से कायम है। सन् १८५८ में सेंट्रल कालिज, सन् १८६१ में १ नार्मल स्कूल और उसके दूसरे वर्ष १ इंजिनियरिंग स्कूल बंगलोर में कायम हुआ।

किला—पेटा के दक्षिण अण्डाकार शकल में बंगलोर का किला है। उसकी लंबाई उत्तरसे दक्षिण को २८०० फीट और चौडाई पूर्वसे पश्चिम को १८०० फीट है। किले के उत्तर बगल में पटा की ओर पत्थर का बना हुआ दिल्ली फाटक और दक्षिण बगल मे मैसूर फाटक है। किले की दीवारो में स्थान स्थान पर बुर्ज बने हुए है। किले में अब तोपखाना है और टीपूसुलतान के महल की चंद निशानियां देखने म आती हैं। मैसूर फाटक के निकट एक छोटा मन्दिर है।

लालबाग—किले से लगभग १ मील पूर्व मैसूर के हैदरअली के समय का लालबाग नामक मनोरम उद्यान है। बाग म देश देश के वृक्ष लगे हुए हैं जो पास के तालाब से सींचे जाते हैं। उसमें चंद बनैले जानवर रक्खे हुए हैं। वहां साय समय पर फूल और फलो की नुमाइश होती है और सप्ताहिक नियत समय में अङ्गरेजी बाजा बजते हैं। उस समय बहुत यूरोपियन तथा देशी लोग वहां देखने जाते है।

अजायबखाना—पेटा से १ मील से अधिक पूर्वोत्तर कैथोलिक कैथेड्रल के १०० गज दक्षिण "कुबनपार्क" में जहां शाम को बहुत लोग टहलने के लिये जाते हैं, बंगलोर का अजायबखाना है। ड्योढ़ी म जैन बस्ता की सुन्दर प्रतिमा है। नीचे के बड़े कमरे म खानिक वस्तुएं इत्यादि के बहुत से नमूने और ऊपर के मंजिल म भांति भांति के मृतक जानवर तथा मछलियां अनेक प्रकार के देशी भूषण तथा पोशाक इत्यादि वस्तुएं रक्खी हुई हैं।

इतिहास—सन् १५३७ में एक देशी सरदार ने बंगलोर म मिट्टी का किला बनाया। सन् १६३८ म बीजापुर के आदिलशाही बादशाह के जनरल ने बंगलोर को लिया। उसके पश्चात् सुप्रसिद्ध महाराज शिवाजी के पिता शाहजी बीजापुर के दक्षिण के नये राज्य के डीपाटी गवर्नर हुए। उनको अन्य भूमि के साथ बंगलोर जागीर में मिला। उसके बाद वह जागीर शाहजी के पुत्र वकाजी के हाथ में आई। पीछे वकाजी ने तंजोर की गद्दी पाने पर मैसूर के वाडियर के हाथ बंगलोर को बेच दिया।

इसके उपरांत मुगल बादशाह औरंगजेब का जनरल कासिमखां कुछ दिनों तक बंगलोर के किले में था, जिसने सन् १६८७ में बंगलोर को ३ लाख रुपये पर मैसूर के राजा के हाथ बेंच दिया। सन् १७३८ में मैसूर के राजा ने चारो तरफ के जिले के साथ बंगलोर का किला हैदरअली को जागीर में देदिया। हैदरअली ने उसको अपना फौजी सदर स्थान बनाया। उसने अपने स्वाधीन होने के पहले वर्ष सन् १७६१ में मिट्टी के किले के बढ़ाने का काम आरम्भ किया और पीछे पत्थर के बुर्जों के साथ किले की दीवार को बनवाया। यद्यपि हैदरअली और उसके पुत्र टीपू के राज्य के समय श्रीरंगपट्टनम् राजधानी था; तथापि बादशाही खांदान के लोग बंगलोर के किले के महल में बहुधा रहा करते थे।

सन् १७९१ की ७ वीं मार्च को भारतवर्ष के गवर्नर जनरल लार्ड कर्नवालिस ने भारी फौज लेकर बंगलोर पर आक्रमण किया। उन्होंने टीपू सुलतान के दिलेरी के साथ रुकावट करने पर भी बंगलोर के पेटा को ले लिया। तारीख २१ मार्च को लार्ड कर्नवालिस ने रात में ११ बजे के समय किले पर आक्रमण किया। उस समय किले के रक्षक बहादुरखां के आधीन ८००० आदमी और शहर में २००० पैदल तथा ५००० नए भरती किए हुए लोग थे। इनके अलावे टीपू सुलतान बड़ी भारी फौज के साथ, जो कर्नवालिस की सेना से अधिक थी, अंगरेजों की गफलत का समय देखता था; किंतु किले के किसी भाग में उसके बगल का पूरा बचाव नहीं था। उस समय की लड़ाई में अंगरेजों के १३१ आदमी मरे तथा घायल हुए और मैसूर की सेना के २००० आदमी से अधिक हत तथा आहत हुए। किलादार भाग गया। किला अंगरेजों के हाथ में हो गया। उस रात में टिपू सुलतान का कंप किले से ६ मील दक्षिण पश्चिम जिगनी के पास था; किंतु राति गिरने पर वह किले के १½ मील दूर तक आया था।

बंगलोर से ३६ मील उत्तर समुद्र के जल से ४८५६ फीट ऊपर नंदीदुग नामक एक मजबूत पहाड़ी किला है, जिसको टीपू सुलतान दुर्गम समझता था; क्यों कि पश्चिम के अतिरिक्त उस पर चढ़ने का मार्ग नहीं था और पश्चिम

और मजबूती के साथ किलाबंदी किया हुआ था; परंतु सन् १७९१ की तारीख १९ अकतूबर को अंगरेजी जनरल मिष्टर मेडोज ने उसको ले लिया।

सन् १७९९ में श्रीरंगपट्टनम् के युद्ध में टीपू के मारे जाने पर अंगरेजी सरकार ने मैसूर के पुराने हिंदू राजा के वंश धर को मैसूर का राज्य लौटा दिया और श्रीरंगपट्टनम् में एक अङ्गरेजी फौज रक्खी। सन् १८११ में श्रीरंगपट्टनम् रोग वर्द्धक समझ कर वहांकी सेना बंगलोर में रक्खी गई और सन् १८२३ में किले में हथियार खाने बने, जो अब तक हैं।

सन् १८३१ में जब अंगरेजी गवर्नमेंट ने मैसूर के राज्य को अपने प्रबंध के आधीन किया, तब प्रधान सरकारी महकमें बंगलोर के किले के भीतर के महल में लाये गए। सन् १८६८ में छावनी में नए आफिस बनाए गए।

रेलवे—बंगलोर शहर से रेलवे लाइन ४ ओर गई हैं, जिनके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २ पाई लगता है।

(१) बंगलोर से पश्चिम-दक्षिण सदर्न मरहटा रेलवे;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

४६ मधूर।

७४ फ्रेंचरक्स।

७७ श्रीरंगपट्टनम्।

८६ मैसूर।

१०१ नंजनगुड़ी।

(२) बंगलोर शहर से पश्चिमोत्तर सदर्न मरहटा रेलवे है; लोंडा जंक्शन से आगे लाइन उत्तर गई है;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

४० समकूर।

१०० आर्सीकेर।

११० घानावार।

१२८ बिरूर।

१५८ रामगिरि।

२०७ हरिहर।

२८८ हुबली जंक्शन।

३०० धारवाड़।

३४४ लोंडा जंक्शन।

३७७ बेलगांव।

४११ गाकाकरोड

४६२ मिराज जंक्शन।

५४४ सितारारोड

५५३ वाथर।

६२२ पूना जंक्शन।

हुबली जंक्शन से पूर्व कुछ दक्षिण ३६ मील गदग जंक्शन, ७८ मील होसपेट, १२९ मील बल्लारी, और १५९ मील गुंटकल जंक्शन। गदग जंक्शन से उत्तर ११५ मील बीजापुर और १७३ मील होतगी जंक्शन।

लोंडा जंक्शन से पश्चिम १५ मील कैसिलरक और ६६ मील गोआ।

मिराज जंक्शन से पश्चिम २९ मील कोलापुर।

(३) बंगलोर शहर से उत्तर सदर्न मरहटा रेलवे,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

६२ हिंदपुरम्।

१११ धरमवरम् जंक्शन।

१७४ गुंटकल जंक्शन।

धरमवरम् जंक्शन से दक्षिण पूर्व ४२ मील कादिरी, और १४२ मील पकाला जंक्शन, पकाला जंक्शन से पूर्वोत्तर १९ मील चद्रगिरि, २६ मील तिरुपदी और ३२ मील रेणुगुंटा जंक्शन, पकाला जंक्शन से दक्षिण पूर्व ३९ मील कटपदी जंक्शन, ४५ मील वेलूर और १३८ मील विलूपुरम् जंक्शन।

(४) बंगलोर शहर से पूर्व दक्षिण मद्रास रेलवे;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३ बंगलोर छावनी।

४३ ओरीपेट जंक्शन।

८७ जालारपेट जंक्शन।

ओरीपेट जंक्शन से पूर्वोत्तर ७ मील बालाघाट और १० मील मरकूपम्।

जालारपेट जंक्शन से पश्चिम दक्षिण ७५ मील सेलम, और ११२ मील ईरोद जंक्शन और जालारपेट से पूर्वोत्तर ५१ मील कटपदी जंक्शन, ६६ मील आरकाट, ८९ मील आरकोनम् जंक्शन और १३२ मील मद्रास शहर।

बंगलोर शहर से एक सड़क पूर्व ओर जालारपेट और कटपदी जंक्शन के पास से होकर मद्रास शहर को; दूसरी सड़क पश्चिम कुछ दक्षिण

श्रीरंगपट्टनम् होकर कननूर को; तीसरी सड़क पश्चिम ओर हसन कसबे होकर मंगलूर को और चौथी सड़क पश्चिमोत्तर तमकूर, हरिहर, हुबली और बेलगांव होकर कोल्हापुर तथा पूना को गई है।

सोमनाथपुर।

बंगलोर शहर के रेलवे स्टेशन से ४६ मील दक्षिण-पश्चिम मद्दूर का रेलवे स्टेशन है। मद्दूर के पास शिवसा नदी पर, जिसको कदंवनदी भी कहते हैं, ७ मेहराबियों का एक पुल और योगनृसिंह स्वामी तथा वरदराज के दो बड़े मन्दिर हैं। मद्दूर से १२ मील दूर रामगिरि नामक पहाड़ के ऊपर कोदंडराम स्वामी अर्थात् श्रीरामचंद्र का मन्दिर है। ऐसा प्रसिद्ध है कि इसी स्थान में सुग्रीव का मधुवन था। मद्दूर के स्टेशन से १७ मील दक्षिण, बंगलोर से श्रीरंगपट्टनम् होकर कननूर जाने वाली सड़क के पास, मैसूर राज्य में तालुक का सदर स्थान मड्डवल्ली नामक प्रसिद्ध गांव है, जिसको हैदरअली ने अपने पुत्र टीपू को दिया था। मड्डवल्ली से १२ मील दक्षिण-पश्चिम मैसूर के राज्य में सोमनाथपुर गांव प्रसन्नचन्द्र केशव के मन्दिर होने के कारण प्रसिद्ध है।

प्रसन्नचन्द्र केशव का मन्दिर—सोमनाथपुर में एकही स्थान पर शिखरदार ३ बड़े मन्दिर हैं;—मध्य में प्रसन्नचंद्र केशव का, दक्षिण गोपालजी का और उत्तर जनार्दन भगवान का। मन्दिरों में नीचे से ऊपर तक शिलाकारी का सुन्दर काम बना हुआ है। चारो ओर के बाहर की नेवों पर महाभारत, रामायण तथा भागवत की बहुत सी कथाओं की घटनाओं के चित्र पत्थरों की नकाशी में अलग अलग बने हुए हैं। मन्दिर के चारो ओर बहुत सी टूटी फूटी पुरानी प्रतिमा पड़ी हैं। ऐसा प्रसिद्ध है कि होयसला वल्लाल राजाओं के प्रसिद्ध शिल्पकार और इमारत की विद्या में प्रख्यात कारीगर डंकनाचारी ने बारहवीं सदी में इन मन्दिरों को बनाया था। दरवाजे के पास के शिला लेख से जान पड़ता है कि होयसला वल्लाल वंश के सोमनाथ ने, जो राज्य का बड़ा अफसर भी था, सन् १२७० ईस्वी में इन

मन्दिरों को बनवाया था। सोमनाथपुर में उजड़ा पुजड़ा एक पुराना बड़ा शिव मन्दिर है।

शिवसमुद्रम्।

मद्दूर के रेलवे स्टेशन से १७ मील दक्षिण मड्वल्ली गांव और मड्वल्ली से १२½ मील दक्षिण शिवसमुद्रम् के जलप्रपात हैं। मैं मद्दूर के रेलवे स्टेशन के पास किराए की बैलगाडी पर सवार हो शिवसमुद्रम् गया। वहां कावेरी नदी दो धारा होकर उत्तर को बहती है। दोनों धाराओं से दक्षिण से उत्तर तक लगभग ३ मील लंबा और ¾ मील चौड़ा (शिवसमुद्रम् नामक) टापू बन गया है, जिसको कनड़ी भाषा में हेगुरा कहते हैं। कावेरी के पश्चिम वाली धारा मैसूर के राज्य और कोयम्बतूर जिले की सीमा बनती है। शिवसमुद्रम् टापू कोयम्बतूर जिले में है। दोनों धाराएं टापू के उत्तरी छोर के पास ऊपर से लगभग २०० फीट नीचे गिर कर एक में मिल जाती हैं। उन्हीं को जलप्रपात कहते हैं। धाराओं के अलग होने के स्थान से उनके मिलजाने का स्थान लगभग ३०० फीट नीचा है। दोनों धाराओं में पश्चिम वाली धारा बड़ी है, जिसमें एक दूसरा छोटा टापू बन गया है। कावेरी की दोनों धाराओं पर पुल बने हैं। वर्षा काल में धारा बड़ी तेज होजाती है। उस समय वे बिना पुल के पार होने योग्य नहीं रहती।

श्रीरंगनाथ का मन्दिर—कावेरीनदी में श्रीरंगम् के ३ टापू हैं,—मैसूर शहर के पास श्रीरंगपट्टन् के टापू में आदिरंगम्; शिवसमुद्रम् के टापू का मध्यरंगम् और तिरुचनापल्ली के पास के श्रीरंगम् टापू को अंतरंगम् कहते हैं। शिवसमुद्रम् के टापू में श्रीरंगनाथ भगवान का मन्दिर है। विमान अर्थात् खास मन्दिर में भगवान पूर्व मुख करके भुजंग पर शयन करते हैं।

शिवसमुद्रम् से दक्षिण बिळिगिरि रंग नामक पर्वत के ऊपर चंपकारण्य नामक क्षेत्र में श्रीनिवास भगवान का मन्दिर और मार्गवनदी तीर्थ है। वहां चम्पक का एक बहुत पुराना बड़ा वृक्ष है, जिसमें सर्बदा फल फूलता है। ऐसा

प्रसिद्ध है कि परशुरामजी ने अपनी मातृ हत्या के निवृत्ति के लिये उस स्थान में तप किया था।

कावेरी का जलप्रपात—शिवसमुद्रम् टापू के उत्तर के छोर पर कावेरीनदी की दोनों धारा लगभग २०० फीट ऊपर से विशाल शब्द करती हुई नीचे गिरती हैं। उनमें से पश्चिमी शाखा की धारा के जलप्रपातों को गगनचुकी तथा गगनचुक्त तीर्थ कहते हैं। उसका पानी एक छोटे टापू के चारो ओर चक्कर लगा कर बड़े गर्ज के साथ नीचे के चट्टान पर गिरता है। गगनचुकी से लगभग १ मील पूर्व ओर कावेरी की पूर्वी शाखा से बना हुआ बड़चुक्की नामक जलप्रपात का बड़ा फैलाव है; वह वर्षा काल में ¼ मील की चौड़ाई की विना टूटी हुई एक धारा होकर बड़े शब्द के साथ ऊपर से नीचे गिरता है; किंतु ग्रीष्म काल की ऋतुओं में वह अनेक धारा होकर नीचे गिरता है, इस लिये उसको लोग सप्तधारा तीर्थ कहते हैं। कभी कभी उसकी १४ धारा तक हो जाती हैं; (उसके पास बहुत सुगमता से आदमी जा सकता है) पीछे जल प्रपात का पानी एक संकीर्ण स्थान मे इकट्ठा होकर ३० फीट नीचे एक कुन्ड में तेजी के साथ गिरता है। दोनों जलप्रपातों का जल नीचे गिरने के उपरान्त संकीर्ण मार्ग होकर आगे रेलता है और शिवसमुद्रम् टापू के पूर्वोत्तर जाकर एक धारा होकर पूर्व को बहता है; अर्थात् वहां कावेरी की दोनों शाखा एक में फिर मिल जाती हैं। जलप्रपातों को देखने का वर्षाकाल सबसे अच्छा समय है।

इतिहास—कहावत के अनुसार विजयानगर के राजा के संबंधी गंगा राजा ने १६ वीं शदी के आरंभ में कावेरी के टापू में शिव समुद्रम् नामक नगर बसाया, जिसकी चंद निशानियां चारो ओर देखने में आती हैं। उसी नगर के नाम से टापू का नाम शिवसमुद्रम् करके प्रसिद्ध है। टापू का पुराना नाम हेगूरा है। गंगा राजा के वंशधर केवल २ पुस्त तक थे।

सन् १७९१ में जब लार्ड कार्नवालिस की सेना ने श्रीरंगपट्टनम् पर आक्रमण किया, तब टीपू सुलतान ने चारो ओर के देश को बरबाद करके संपूर्ण निवासी और पशुओं को शिवसमुद्रम् के टापू में खदेर दिया। उसके

पीछे संपूर्ण टापू में जंगल लग गया; जंगली जानवर हो गए और नदी के ऊपर के पत्थर के पुल टूट फूट गए। सन् १८२५ में मैसूर के रेजीडेंट के कर्मचारी रामस्वामी मुदलेयार ने कावेरी की दोनों धाराओं के ऊपर के पुलों को और टापू के भीतर के मंदिर को बहुत सा रुपया खर्च करके दुरुस्त करवा दिया। उसने एक डांक बंगला बनवाया, जिसमें यूरोपियन दर्शक लोग ठहरते हैं।

श्रीरंगपट्टनम्।

मद्दूर के रेलवे स्टेशन से ३१ मील (बंगलोर शहर से ७७ मील) दक्षिण-पश्चिम और मैसूर शहर से ९ मील पूर्वोत्तर श्रीरंगपट्टनम् का रेलवे स्टेशन है। मैसूर राज्य में (१२ अन्श, २५ कला, ३३ विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, ४३ कला, ८ विकला पूर्व देशांतर में) कावेरीनदी के श्रीरंगपट्टनम् नामक टापू पर श्रीरंगपट्टनम् कसबा तथा पवित्र स्थान है, जिसको बहुत लोग सेरंगापट्टम् भी कहते हैं। श्रीरंगम् नामक विष्णु की मूर्ति के नाम से उस टापू तथा कसबे का ऐसा नाम पड़ा है। श्रीरंगपट्टनम् से एक छोटी सड़क दक्षिण-पश्चिम मैसूर शहर को और दूसरी सड़क पूर्वोत्तर बंगलोर शहर को और पश्चिम कुछ दक्षिण कननूर बंदरगाह को गई है। मैसूर की ओर कावेरी पर पुल बना है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय गंजाम शहरतली के साथ श्रीरंगपट्टनम् में १२५५१ मनुष्य थे, अर्थात् १०५८७ हिन्दू, १७८४ मुसलमान, १७८ कृस्तान और २ जैन। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह मैसूर के राज्य में तीसरा कसबा है।

श्रीरंगपट्टनम् का टापू पूर्वसे पश्चिम तक लगभग ३ मील लंबा और १ मील चौड़ा है। टापू के पश्चिम किनारे पर कावेरी के पास किला और पूर्व किनारे के पास गंजाम नामक शहरतली के निकट लालबाग है। लालबाग और दरियादौलत बाग के बीच में गंजाम शहरतली है। टापू में धान और ऊख की फसिल होती है। टापू का जल वायु रोगवर्द्धक है; वहां मलेरिया बुखार बहुत होता है। गंजाम रवनकदार बस्ती है; उसमें प्रति वर्ष ३ मेले होते हैं।

लालबाग—टापू के पूर्व किनारे के पास लालबाग है, जिसमें टीपूसुलतान का बनवाया हुआ हैदरअली का सुन्दर मकबरा बना हुआ है। मकबरे के ऊपर मध्य में एक गुम्मज तथा चारों कोनों पर एक एक मीनार और चारो बगलों में काले पत्थर के स्तंभ लगे हुए सायवान हैं। मकबरे में हाथीदांत जड़े हुए दोहरे किवाड़ लगे हैं, जिनको मार्किस डलहौसी ने, जो सन् १८४८ से १८५६ तक भारतवर्ष के गवर्नर जनरल थे, दिया था। मकबरे में हैदरअली की कबर के बगल में टीपूसुलतान की कबर है। टीपू की कबर पर उसकी मृत्यु का समय सन् १२१३ हिजरी (सन् १७९९ ई०) लिखा हुआ है।

किला—टापू के पश्चिम के किनारे पर टीपूसुलतान का बनवाया हुआ पंच पहला शकल का किला है। उसकी सबसे अधिक लंबाई १½ मील और चौड़ाई १ मील है। किले के उत्तर का बगल, जो सब से बड़ा है, लगभग १ मील लंबा है। किले की गहरी खाई पत्थर काट कर बनी थी।

किले के भीतर पहिले के हिन्दू राजाओं के महल की चंद निशानियां; टीपूसुलतान के महल का खंडहर, जो चंदन की लकड़ी का गोदाम बना है; टीपूसुलतान की बनवाई हुई एक बड़ी जामामसजिद, जिसके मीनारों के ऊपर चढ़ने से श्रीरंगपट्टनम् और आस पास का सुन्दर दृश्य देखने में आता है; और रंगनाथस्वामी का पुराना मन्दिर है। किले के भीतर के बहुत मकान गिर गए हैं; जो बचे हैं वह हीन दशा में हैं।

किले के बाहर उसकी दीवार के पास दरियादौलताबाग नामक एक उत्तम इमारत है, जिसको टीपू ने गरमी के दिनों में अपने रहने के लिये बनवाया था। इमारत में लड़ाई को जाहिर करते हुए सुन्दर चित्र बने हैं। वह इमारत श्रीरंगपट्टनम् पर आक्रमण होने से पहिले ही बद शकल होचुकी थी; किंतु अंगरेजी अफसर वेलस्ली उसको मरम्मत करवा कर उसमें ३ वर्ष रहा था।

श्रीरंगनाथ का मन्दिर—कावेरीनदी में रंगम् के ३ टापू हैं। इस टापू को आदिरंगम्, शिवसमुद्रम् के टापू को मध्यरंगम् और तिरचनापल्ली

के पास के टापू को अंतरंगम् कहते हैं; क्योंकि कावेरी में पहिले श्रीरंगपट्टनम्, उसके बाद शिवसमुद्रम् और उसके पीछे श्रीरंगम् मिलता है।

श्रीरंगपट्टनम् के किले में श्रीरंगनाथस्वामी का पुराना बड़ा मन्दिर, जो श्रीरंगपट्टनम् शहर से पहिले बना था, खड़ा है। मन्दिर में श्रीरंगनाथस्वामी की विशाल चतुर्भुज मूर्ति शेष नाग पर शयन करती है।

श्रीरंगपट्टनम् से पूर्व करिगट्टे नामक पहाड़ी के ऊपर श्रीनिवास भगवान का मन्दिर है। श्रीरंगपट्टनम् से २४ मील पूर्व-दक्षिण कावेरी और कपिला के संगम के निकट तिरुमकूल नरसीपुर में गुञ्जानरसिंह का मन्दिर है।

इतिहास—देशी कहावत से जान पड़ता है कि गौतम ऋषि ने कावेरी के टापू में रंगनाथस्वामी का पूजन किया और उस स्थान का नाम श्रीरंगपट्टनम् रक्खा। तामिल भाषा की एक पुस्तक में लिखा है कि श्रीरंगपट्टनम् टापू में जंगल लग गया था। शाका ८१६ (सन् ८९४ ईस्वी) के वैशाख सुदी सप्तमी के दिन गंगा वंश के अंतिम राजा के राज्य के समय तिरुमलयन् ने टापू के पश्चिम भाग में रंगनाथस्वामी का मंदिर बनवाया।

सन् ११३३ में सुप्रसिद्ध रामानुजस्वामी ने बल्लाल वंश के राजा हयशाल को जैन धर्म से वैष्णव धर्म में प्रवृत्त किया। राजा ने रामानुजस्वामी को अष्टग्राम के सूबे के साथ श्रीरंगपट्टनम् टापू को दे दिया। रामानुजस्वामी ने उनके प्रबंध के लिये अनेक कर्मचारी नियुक्त किए। ऐसा प्रसिद्ध है कि रामानुज के कर्मचारीयों के वंशधरों में से एकने विजयानगर के राजा से इजाजत लेकर सन् १४५४ में श्रीरंगपट्टनम् में मिट्टी का किला बनवाया और कलशवाड़ी के पास के, जो ३ मील दूर था, बहुत से जैन मंदिरों के असबाबों से श्रीरंगनाथस्वामी के मंदिर को बढ़ाया।

इतिहासों से विदित होता है कि पीछे विजयानगर के राजा ने श्रीरंगरायल की पदवी देकर श्रीरंगपट्टनम् में एक राजप्रतिनिधि कायम किया, जिसके उत्तराधिकारी श्रीरंगरायल के खिताब के साथ श्रीरंगपट्टनम् में हुकूमत करते चले आए। सन् १६१० में मैसूर के राजा वोडियर ने तिरुमलई नामक श्रीरंगरायल को परास्त किया। तिरुमलई मैसूर के आधीन हुआ।

उसके पश्चात् मैसूर के हिंदू राजा तथा हैदरअली और टीपूसुलतान के राज्य के समय श्रीरंगपट्टनम् सर्वदा राज्य का सदर स्थान बना रहा। हैदरअली और टीपू के राज्य के समय वह मैसूर राज्य की राजधानी था। टीपू के राज्य के समय श्रीरंगपट्टनम् में लगभग १५०००० मनुष्य बसे थे। टीपू ने किले की वर्त्तमान किलाबंदियों को बनवाया। लोग कहते हैं कि उसीने गंजाम शहरतली को बसाया था।

सन् १७९१ में हिंद के गवर्नर जनरल लार्ड कर्नवालिस स्वयं सेनापति बन कर भारी सेना के साथ श्रीरंगपट्टनम् के पास आये, किन्तु रसद के कमी के कारण वहां से वह लौट गए। सन् १७९२ के ५ फरवरी को लार्ड कर्नवालिस के मातहत १०००० गोरे, २७००० देशी फौज, जिनके साथ मदद के लिये ४५००० महाराष्ट्र और हैदराबाद के बहुत से घोड़ सवार थे, ४०० तोपों के साथ टीपू सुलतान के किलाबंदी कम्प के सामने आए। किले के बाहर कावेरी नदी के उत्तर की झाड़ी में टीपू का कम्प था। उसकी फौज में ५००० सवार और ४०००० से अधिक पैदल सिपाही थे। ता: ६ फरवरी की रात में अंगरेजी कम्प के ९००० आदमियों ने ३ दल होकर झाड़ी में पेल दिया। टीपू की फौज हटकर किले और पेटा (शहर) में चली गई। कावेरी लांघने के समय अंगरेजी फौज के बहुतेरे आदमी डूब गये। अंगरेजों ने दुश्मन के कम्प को ले लिया। ता: १६ फरवरी को जब बंबई हाते से ९००० आदमियों की फौज पहुंच गई, तब ता २४ फरवरी को टीपू ने सुलह का पयगाम किया, जिसके अनुसार टीपू ने अपने राज्य का आधा भाग अंगरेजों और उनके मददगारों को छोड़ दिया और लड़ाई के खर्च का ३ करोड़ रुपया उनको दिया।

सन् १७९९ में गवर्नर जनरल लार्ड वेलेजली मुहिम के बंदोबस्त के लिये शाही शान से मदरास में दाखिल हुए। बहाना यह था कि टीपूने अङ्गरेजों के विरुद्ध फरासीसियों से साजिश की है। अंगरेजों की एक फौज निजाम की फौज के साथ मदरास से मैसूर को रवाना हुई और दूसरी फौज पश्चिमी किनारे से उतरी। टीपू लड़ाई के मैदान में थोड़ा मोकाबिला करके

श्रीरंगपट्टन को लौट गया। जब उसकी राजधानी श्रीरंगपट्टनम् पर हमला हुआ, तब बड़ी बहादुरी से लड़कर वह मारा गया। उसके पश्चात् लार्ड वेलेज्ली ने मैसूर के पुराने हिन्दू राजाओं के घराने के एक लड़के को टीपू के राज्य के मध्य भाग को, जो मैसूर का पुराना राज्य था, लेकर मसनद पर बैठाया और बाकी राज्य को निज़ाम, मरहठों और अंगरेजों ने बांट लिया। लार्ड वेलेज्ली ने टीपू के बेटों के लिये निहायत अच्छी पेंशन मुकरर की। वे पहले वेलूर में रहते थे; पीछे कलकत्ते में रहने लगे। उस खांदान का शाहजादा गुलाम महम्मद कलकत्ते का बड़ा रईस था, जो सन् १८७७ में मर गया।

टीपू की मृत्यु के बाद मैसूर शहर, उस राज्य की राजधानी हुआ; तब से श्रीरंगपट्टनम् की घटती तेजी से होने लगी। सन् १८११ में श्रीरंगपट्टनम् के जलवायु रोगवर्द्धक होने के कारण वहां की अंगरेजी फौज बंगलोर में हटा दी गई।

मैसूर।

श्रीरंगपट्टनम् से ९ मील और बंगलोर शहर से ८६ मील दक्षिण पश्चिम (मदरास शहर से ३०५ मील पश्चिम) मैसूर का रेलवे स्टेशन है। मैसूर राज्य में चामुण्डा पहाड़ी के पश्चिमोत्तर की नेव के पास मैसूर राज्य के दक्षिण भाग में (१२ अन्श. १८ कला, २४ विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, ४१ कला, ४८ विकला पूर्व देशांतर में) मैसूर के महाराज की राजधानी मैसूर एक शहर है। महिषासुर शब्द का अपभ्रन्श मैसूर शब्द है; महिषासुर शब्द से महिसुर और महिसुर से मैसूर हो गया है। (महिषासुर की कथा भारत-भ्रमण—८ वें खण्ड के धामाकोटी के वृत्तांत में है) मैसूर शहर से १ सड़क पूर्वोत्तर श्रीरंगपट्टनम् को गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय छावनी के साथ मैसूर शहर में ७४०४८ मनुष्य थे; अर्थात् ३६६९१ पुरुष और ३७३५७ स्त्रियां। इनमें ५६८१६ हिन्दू, १५३०७ मुसलमान, १६४० क्रस्तान, २३६ जैन, २७ सिक्ख,

१७ पारसी और ८ यहूदी थे । मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारत वर्ष में ४३ वां और मैसूर के राज्य में दूसरा शहर है।

मैसूर शहर में सुन्दर चौडी सडकें बनी हुई हैं। बहुत से दो मंजिले तीन मंजिले सुन्दर मकान बने हैं और बहुतेरे कपड़े पोस हैं । शहर साफ है। वर्षाकाल में शहर का पानी बडी तेजी के साथ दक्षिण ओर जाकर देवराज नामक बडे जलाशय में और किले का पानी देवराज जलाशय से ४ मील दक्षिण एक दूसरे बडे जलाशय में गिरता है।

शहर के दक्षिण किला, किले के भीतर मैसूर के महाराज का महल, किले के बाहर उसके पश्चिम वाले फाटक के सामने जगमोहन महल नामक उत्तम मकान (जिसको यूरोपियन अफसरो के रहने के लिये महाराज ने बनवाया है), शहर के पूर्व यूरोपियन लोगों की बहुत सी कोठियां, किले से लगभग ६०० गज पूर्व महाराज का ग्रीष्म महल और किले से ! मील दक्षिण शहर के पूर्वी भाग म ऊंची भूमि पर रेजीडेंसी है । पुरानी रेंजीडेंसी में सेशन की कचहरी होती है और महाराज के यूरोपियन मेहमान रहते हैं। दीवान के महल को ड्यूक आफ वेलिंटन ने अपने रहने के लिये बनवाया था।

इनके अलावे मैसूर शहर में महाराज का कालिज, वेस्लियन मिशन कालिज और श्वेतागाह, लक्ष्मीनारायण, अष्टभुजी इत्यादि देवताओं के मंदिर तथा किले के महल के एक भाग में स्त्रिया का बड़ा स्कूल है, जिसमें लगभग ६०० स्त्रियां पढ़ती हैं।

किला और महाराज का महल—शहर के दक्षिण चतुर्भुज शकल का किला है । किले के तीन बगल की पत्थर की दीवारें प्रत्यक ४८० गज लंबी और दक्षिण की दीवार उससे कुछ अधिक लंबी है। किले के उत्तर दक्षिण और पश्चिम फाटक, चारो ओर खाई और पूर्व तरफ देवराज तालाब है । किले की बनावट अच्छी नहीं है। किले के भीतर महाराज तथा राज वंश के लोगों और महल के कर्मचारियो के मकान हैं । सड़कें तंग और टेढ़ी हैं । सामने पश्चिम जेलखाना है।

किले के भीतर महाराज का अत्युत्तम महल है। उसका अगवास पूर्व ओर है। महल के भीतर और उसके अगवास में चित्रकारी का काम है। महल के प्रधान फाटक से एक रास्ता एक आंगन में गया है, जिसके पश्चिम बगल के दरवाजे से एक मार्ग महल के पश्चिम भाग में स्त्रियों के कमरों में गया है। उत्तर बगल में हथियारखाना, लाइब्रेरी और कई एक आफिस हैं। ऊपर के अंबाविलास नामक उत्तम कमरे में मैसूर के संबंधी अफसरों की तस्वीरें हैं। किवाड़ों में चांदी और हाथीदांत जड़े हुए हैं।

महल के एक भाग के विशाल कमरे में महाराज का राजसिंहासन है। सिंहासन अञ्जीर की लकड़ी का बना हुआ है, जिस पर हाथी दांत तथा सोना चांदी के जड़ाव का सुन्दर काम बना है। लोग कहते हैं कि मुगल बादशाह औरंगजेब ने सन् १६९९ में चिका देवराज को यह सिंहासन दिया था। उसके पीछे उस पर सोना चांदी लगाया गया। मैसूर के सब राजाओं को उसी सिंहासन पर राज तिलक होता है और प्रधान उत्सवों के समय महाराज उस पर बैठते हैं। महल के आगे मैदान और अन्य बगलों में गरीब लोगों के मकान हैं।

चामुंडादेवी—मैसूर के किले से २ मील दक्षिण-पश्चिम समुद्र के जल से लगभग ३५०० फीट ऊंची चामुंडा नामक पहाड़ी है। पहाड़ी के ऊपर चामुण्डा देवी का, जिसको महिषमर्दिनी भी कहते हैं, मन्दिर बना हुआ है। नीचे से पहाड़ी के शिखर तक ५½ मील की अच्छी सड़क बनी है। दो तिहाई मार्ग के ऊपर पहाड़ी के चट्टान में नन्दी की बहुत बड़ी प्रतिमा बनी हुई है। बहुत लोग चामुण्डा के दर्शन को जाते हैं।

मैसूर राज्य—यह राज्य डेकान के दक्षिण हिस्से में अंगरेजी जिलों से घेरा हुआ २७९३६ वर्गमील के क्षेत्रफल में फैला है। हैदराबाद के राज्य के अतिरिक्त भारतवर्ष के किसी देशी राज्य की मनुष्य-संख्या मैसूर राज्य के मनुष्य संख्या के बराबर नहीं है। इसमें ८ जिले हैं; बंगलोर, कोलार, तुमकूर, मैसूर, शिमोगा और कडूर। राज्य से महाराज को लगभग १०६००००० रुपया मालगुजारी आती है। राज्य का सदर स्थान बंगलोर और राजधानी

मैसूर शहर है। बंगलोर की छावनी अंगरेजी सरकार के अधिकार में है।

मैसूर राज्य के मैदान की साधारण ऊंचाई समुद्र के जल से २००० फीट से ३००० फीट तक है। देश की भूमि नीची ऊंची है। पश्चिम घाट की ओर अधिक पहाड़ियां हैं। पहाड़ियों के बहुत सिलसिले उत्तर से दक्षिण को गए हैं, जिनमें से ८ पहाड़ियां समुद्र के जल से ५००० फीट से ६३०० फीट तक ऊंची हैं। राज्य में स्थान स्थान पर नंदीदुर्ग आदि बहुत चट्टान हैं, जिनमें से कई एक समुद्र के जल से लगभग ४००० तथा ५००० फीट ऊंचे हैं, और बहुतेरे के शिखर पर मीठे पानी के कुण्ड हैं। पूर्व समय में वे दुर्गम चट्टान किले का काम देते थे। राज्य का बड़ा भाग मैदान है, जिस पर बहुत से गांव और कसबे बसे हुए हैं। सन् १८८१ में मैसूर राज्य के २४७२३ वर्गमील क्षेत्रफल में लगभग ७०५५ वर्गमील भूमि जोती गई, ५७१७ वर्गमील जोतने के लायक परती थी और बाकी ११९५१ वर्गमील जोतने के लायक नहीं थी।

मैसूर राज्य के जंगलों और पहाड़ियों में जगह जगह बाघ, तेंदुए, भालू, सूअर, सांभर, बनैली भेड़, हरिन इत्यादि बहुत बनजंतु रहते हैं। मैसूर जिले के जंगलों में बनैले हाथी बहुत हैं, जो कभी कभी खेतों की हानि करते हैं। सन् १८७४ में खेदा वालों ने ५५ हाथी को, जिनमें १३ दंतैले थे, पकड़ा था। इसके अलावे मैसूर राज्य के शिमोगा, कडूर आदि जिलों में कभी कभी हाथी देख पड़ते हैं। दक्षिण हिस्से में कावेरीनदी बहती है। पलार और उत्तरी और दक्षिणी दोनों पनारनदी पूर्व भाग म है। राज्य के पश्चिमोत्तर भाग में तुंगभद्रा नदी है। तुंग और भद्रा नदी पश्चिमीघाट से निकल कर तुंगभद्रा में मिली हैं। हेमवती, लोकपावनी, शिमशा और अर्कवती नदी कावेरी में गिरती हैं। मैसूर राज्य की कोई नदी नाव चलने लायक नहीं हैं। देश में लगभग ३८००० तालाब हैं, जिनमें सबसे बड़ा सुलकर नामक तालाब का घेरा ४० मील है। राज्य के दक्षिण भाग में काली भूमि के मैदानों में रुई और मिरचे बहुत उपजते हैं। दक्षिण और पश्चिम के देश म, जो नदियों की नहरों से पटाये जाते हैं, ऊख और धान होते हैं। पूर्व की ढाल जमीन के देशों में

रागी और दूसरी सखी फसिल होती हैं। जंगली लोग तसर के कीड़ों को पकड़कर बेंचते हैं।

सन् १८८५ ईस्वी में मैसूर राज्य में ३३२९००० एकड़ में रागी और दूसरी सूखी फसिल, ८९७००० एकड़ में धान; १६४००० में तेल निकलने वाली फसिलें, १३२००० एकड़ में नारियल और एरका का सख्त फल; २४२००० एकड़ में काफी, २७००० में तरकारियां, २१००० एकड़ में रुई; २४००० में ऊख; २०००० में गहू और ६००० एकड़ में तम्बाकू थीं।

रागी यहां का प्रधान खोराक है। जंगल में चन्दन की लकड़ी बहुत होती है। मालाबार के किनारे और उसके आस पास श्वेत चंदन होता है, परन्तु मैसूर राज्य, कुर्ग आदि देशों में आपसे आप बहुत श्वेत चंदन के वृक्ष उपजते हैं। मैसूर राज्य में चदन के पेड़ से विशेष आय होती है। सालाना १० लाख से १४ लाख तक चदन का बीज लगाया जाता है। २० वर्ष से लेकर ४० ५० वर्ष में पेड़ पुष्ट होता है। दस्तकारी मसहूर नहीं है, क्योंकि खास करके बहुत लोग खेतिहर हैं। कोलार के पास कई खानों से सोना निकलता है। गल्ले, एरका का फल, काफी, चीनी और पान यहां से दूसरे देशों में जाते हैं।

सन् १८८३—१८८४ में मैसूर राज्य से १ करोड़ ६ लाख रुपये मालगुजारी आई थी; अर्थात् जमीन से ७३००००,महसूल से १२६०००० जंगल, से ६०००००,स्टाम्प से ४५००००, विदेशी माल के महसूल से ३०००४० और हैसियत से ३०००० रुपये; बाकी में अन्य आमदनी थी।

सन् १८८४ में राज्य में ८६ म्युनिसिपलटी थीं। ३०२९ मील सड़क हैं। राज्य की तरफ से ६३५०००० रुपये के खर्च से १४० मील रेलवे बनी है। सन् १८८४ में ६३४९० विद्यार्थियों के साथ २३८८ स्कूल थे, जिनमें ५९६६२ लड़के और ३८२८ लड़कियां पढ़ती थीं। इनके अलावे १ पागलखाना, १ कोढ़ी का दवाखाना, ३ साधारण दवाखाने और १७ सफाखाने थे।

मैसूर राज्य की दस्तकारी बहुत प्रसिद्ध नहीं हैं, क्योंकि सर्व साधारण लोग खेती करते हैं। राज्य के अनेक हिस्सों की खानियों से खास कर बंगलोर जिले में लोहा निकाला जाता है। लगभग ३८००० मन लोहा प्रति

बर्ष निकलता है; बंगलोर जिले के पश्चिमोत्तर कोलार जिले में खानों से बहुत सोना निकलता है। तमकूर जिले की चंद पहाड़ी धाराओं में कुछ कुछ सोना मिलता है। कच्चा रेशम पहिले बहुत होता था, किन्तु अब कम होता है; क्योंकि रेशम के बहुत कीड़े बीमारी से मर जाते हैं। हरिहर कसबे के बने हुए लाल चमड़े, चितलदुर्ग के कंबल और बंगलोर के भूषण तथा कालीन प्रशंसनीय होते हैं। राज्य में चन्दन की लकड़ी बहुत होती हैं, उससे मैसूर राज्य को औसत सालाना लगभग १८०००० रुपये की आमदनी है।

मैसूर के राज्य में मेले बहुत होते हैं;—मैसूर जिले में कावेरीनदी पर चुंचनकट्टा नामक बांध हैं, जिसमें ७० फीट ऊपर से पानी गिरता है। राम-समुद्रम् नामक एक नाला बांध से निकल कर २६ मील गया है, जिससे खेत पटाए जाते हैं। बांध और नाला दोनों को सन् १६७२-१७०४ में मैसूर के राजा चिकादेव वोडियर ने बनवाया। प्रति बर्ष बांध के पास लगभग १ मास मेला होता है। वहां माघ में लगभग २०००० आदमी जाते हैं।

मैसूर जिले के अष्टग्राम सबडिवीजन में कावेरी और लोकपावनी नदी के संगम के समीप करिगट्टा पहाड़ी पर चैत्र में मेला होता है। मेले में लगभग २०००० यात्री जाते हैं।

मैसूर जिले के तालकाद के निकट कावेरी नदी के किनारे पर मुडकटोर नामक पवित्र पहाड़ी पर मल्लिकार्जुन नामक शिव का मन्दिर है। वहां प्रति बर्ष फाल्गुन में १५ दिन मेला होता है। लगभग १०००० यात्री वहां जाते हैं। (मैसूर जिले के नंजनगुड़ी के मेले का वृत्तांत नंजनगुड़ी में देखिए)।

बंगलोर जिले में बंगलोर शहर से ३६ मील दक्षिण अर्कवती नदी के दहिने किनारे पर तालुक का सदर स्थान काकनहल्ली नामक छोटा कसबा है; जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ४३६० मनुष्य थे। वहां एक किले के भीतर रंगनाथ का एक पुराना मन्दिर है, जहां प्रति वृहस्पतिवार को लगभग २००० आदमियों का मेला होता है।

बंगलोर जिले में बंगलोर से कोलार जाने वाली सड़क के निकट बंग-लोर शहर से १८ मील पूर्वोत्तर एक नदी के बाएं किनारे पर तालुक का

सदर स्थान होसकोट नामक छोटा कसबा है, जिसमें सन् १८८२ में ४३७७ मनुष्य थे। वहां २ मील लंबा बांध और एक सरोवर हैं; जिसके भर जाने पर पानी की चादर का घेरा का विस्तार १० मील होजाता है। वहां प्रति वर्ष दो मेले होते हैं। प्रत्येक मेले में लगभग ५००० मनुष्य वहां आते हैं।

बंगलोर जिले के तिरुमल नामक गांव में रंगनाथस्वामी का एक मंदिर है। वहां प्रति वर्ष चैत की पूर्णमासी से १० दिन तक मेला होता है। मेले के समय लगभग १०००० मनुष्य वहां जाते हैं।

कोलार जिले में अवानी नामक पवित्र गांव है, जिसमें स्मार्त मत के साधु का एक मठ है। लोग कहते हैं कि श्रीरामचन्द्रजी लंका जाने के समय इस स्थान पर ठहरे थे और इस गांव की पहाड़ी पर महर्षि बाल्मीकि कुछ दिनों तक रहे थे। वहां रामचन्द्र का मन्दिर है, जहां प्रति वर्ष मवेसी का बड़ा मेला होता है। मेले में लगभग ४०००० मनुष्य आते हैं।

कोलार जिले में कोलार कसबे से ७ मील उत्तर बनरासी नामक छोटा गांव है। वहां प्रति वर्ष तारीख ६ अपरैल से ९ दिन तक यरलप्पा देवता का मेला होता है। मेले में लगभग २५००० आदमी आते हैं और बिकने के लिये करीब ६०००० मवेसी आती हैं।

कदूर जिले के शृंगेरी में श्री शंकराचार्य संप्रदाय का मठ और सारदा देवी का मन्दिर है। वहां नवरात्र में तथा अन्य समयों में वर्ष में कई बार मेले होते हैं (शृंगेरी के वृत्तांत में देखिए)।

कदूर जिले में चिकमंगलूर से १५ मील पूर्वोत्तर सक्रायपपट्टन नामक बस्ती है। वहां ऐसा प्रसिद्ध है कि इसी स्थान पर महाभारत में प्रसिद्ध राजा रुक्मांगद की राजधानी थी। वहां एक बड़ी तोप और ४ खंभों के ऊपर एक चौखूटा पत्थर तथा रंगनाथ देवता का मन्दिर है, जहां प्रति वर्ष रंगनाथ की रथयात्रा के समय बहुत लोग जाते हैं। और उनको भेड़ा बलिदान देते हैं।

तमकूर जिले के गुब्बी में मेला होता है, जिसमें दूर दूर से सौदागर आते हैं और सब तरह के माल बिकते हैं।

तमकूर जिले के यदीपुर गाँव में प्रति वर्ष चैतमास में सिद्धेश्वरम् की यात्रा का मेला होता है। मेला ९ दिन रहता है। लगभग १०००० मनुष्य आते हैं।

तमकूर जिले में तमकूर कसबे से १५ मील उत्तर धोबी नामक गाँव है, जिसमें लगभग १०० वर्ष का बना हुआ नृसिंहजी का प्रसिद्ध मन्दिर है। मन्दिर के चारो ओर ऊंची दीवार है। यहां गांव में १५ दिन मेला होता है। मेले में लगभग १०००० मनुष्य आते हैं और बड़ी सौदागरी होती है।

शिमोगा जिले में शिमोगा कसबे से ३० मील दक्षिण पश्चिम तुंगनदी के बाएं किनारे पर तिर्थहल्ली नामक गाव में एक खाल है। यहां के लोग कहते हैं कि परशुरामजी ने इसको अपने परशा से बनाया था। यहां अगहन में मेला होता है। मेले में लगभग ३००००० रुपये की मवेसी आदि वस्तु बिकती हैं। ३ दिन उस खाल में हजारों आदमी स्नान करते हैं। उस गाव में २ पुराने मठ हैं।

मैसूर राज्य के दुवेरी तालुक में नया कनहट्टी नामक गांव है, जिसमें लिंगायत लोगो के महापुरुष प्रसिद्ध दप्पारद्द का समाधि मन्दिर है। यहां प्रति वर्ष रथयात्रा का मेला होता है, जिसमें लगभग १५००० यात्री आते हैं।

मैसूर राज्य में हसन कसबे से २३ मील पश्चिमोत्तर वेलूर नामक पुराना पवित्र गाव है। यहां प्रति वर्ष वैशाख में ५ दिन मेला होता है। (वलूर में देखिए)।

मैसूर राज्य में चुंचनगिरि नामक पहाड़ी के पादमूल के पास गंगाधरेश्वर का मेला होता है। मेला १५ दिन रहता है, उसमें लगभग १०००० मनुष्य आते हैं।

मैसूर राज्य के अतिकुप्पा तालुक में मेलकोटा नामक गांव है, जिसमें विशेष करके वैष्णव लोग रहते हैं। श्रीरामानुजस्वामी ने १२ वीं सदी में यहां १४ वर्ष निवास किया था। यहां रामानुजीय सम्प्रदाय का एक प्रसिद्ध मठ और कृष्ण का मन्दिर और ऊंचे चट्टान के ऊपर नृसिंहजी का मन्दिर है। उस गांव के निकट एक प्रकार की सफेद मिट्टी होती है, दूर दूर के आचारी लोग अपने ललाट पर तिलक करने के लिये उसको लेजाते हैं। उस गांव

के निकट एक पर्व के समय प्रति वर्ष लगभग १०००० मनुष्य आते हैं.। रामानुजीय संप्रदाय की ८ गद्दी प्रधान हैं, जिनमें से मेलकोटा, तोताद्री, और तिरुपदी की गद्दी पर विरक्त आचारी रहते हैं।

मैसूर जिले की सीमा के पास कुर्ग के पश्चिमोत्तर की सीमा के निकट मदरास हाते के दक्षिणीकिनारा जिले में पश्चिमीघाट के एक कंटा पहाड़ियों के सुब्रह्मण्य सिलसिले की एक चोटी को पुष्पगिरि कहते हैं। आदमी कठिन चढ़ाई से ३ घंटे में वहां पहुंचता है। उसके नीचे के ढालू बगल के सघन वन में बनैले हाथी रहते हैं। वहां प्रति वर्ष माघ के मेले में बहुत यात्री आते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मैसूर के राज्य के २७९३६ वर्गमील के क्षेत्रफल में ४९४३६०४ मनुष्य थे; अर्थात् २४८३४५१ पुरुष और २४६०१५३ स्त्रियां। इनमें ४६३९१२७ हिंदू, २५२९७४ मुसलमान, ३८१३५ कृस्तान, १३२७८ जैन, ३५ पारसी, २९ सिक्ख, २१ यहूदी, और ५ बौद्ध थे। इनमें सैकड़े पीछे ७४ कनड़ी बोलने वाले, १५ तेलगु अर्थात् तैलंगी भाषा वाले, ४½ उर्दू भाषा वाले, ३½ तामिल बोलने वाले और ३ अन्य भाषावाले थे। मैसूर राज्य में नीचे लिखी हुई जातियों के लोग इस भांति पढ़े हुए थे; प्रति हजार में ८१९ वनिया; ६७८ ब्राह्मण, ३८ ब्राह्मणी; और ६६४ कोमटी पुरुष तथा १२ कोमटी की स्त्रियां। राज्य के पूर्व के एक छोटे भाग के अतिरिक्त राज्य के सब लोग कनड़ी भाषा बोलते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय मैसूर राज्य के २४७२३ वर्गमील-क्षेत्रफल में ४१८६१८८ मनुष्य थे; अर्थात् ३९५६३३६ हिंदू, २००४८४ मुसलमान, २९२४९ कृस्तान, ४७ पारसी, ४१ सिक्ख, ९ बौद्ध, १ यहूदी और २१ अन्य, जिनमें से हिंदुओं में ८०३५२१ वकलिगा (खेती और मजूरी करने वाले), ४७००६९ लिंगायत, २९१९६५ कुरुबेवर (भेड़िहर), १६७७८५ नेयिगर (बिनाई के काम करने वाले), १६२६९२ ब्राह्मण, ८४५८३ उपार (नमक बनाने वाले), ८४४०७ इदगा (ताड़ी वाले), ८२४७४ कुंचिगर (पीतल तथा ताम्बे की चीज बनाने वाले), ६९९२८ अगासा (धोबी), ५७९१६ गोल्लार (चरवाहा), हंवेरा इत्यादि, ४४२८३

टिगलर (बागवान), ४१२३९ महाराष्ट्र, ३१२६९ कुंभार, ३०३७६ नापित (नाई), २९४४९ धनिगा (तेली), २९९८८ कोमटी (व्योपारी), १६८७३ सतानी (मंदिरों के पुजारी), १३२५१ छत्री, ९७१८ आदि निवासी जातियों के लोग और बाकी में अन्य जातियों के लोग थे। मुसलमानों में १७९२९६ सुन्नी, ५०५५ पिंडारी, ४६५६ लब्बा, ४२४८ सीया, ३७७७ दइरा, ९१६ वहाबी, ३८५ मपिला और २५५१ अन्य किसिम के थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मैसूर राज्य के नीचे लिखे हुए कसबों में १०००० से अधिक मनुष्य थे;—बंगलोर जिले के बंगलोर कसबे में १८०३६६; मैसूर जिले के मैसूर कसबे में ७४०४८ और श्रीरंगपट्टनम् में १२५५१; कोलार जिले के कोलार कसबे में १२१४८ और चिकबालापुर में १०६२३; शिमोगा जिले के शिमोगा में ११३४० और तमकूर जिले के तमकूर कसबे में ११०८६।

मैसूर राज्य के आस्तिकों में शंकराचार्य के अद्वैत मत के स्मार्त, माधवाचार्य के द्वैत मत के लोग और रामानुजीय संप्रदाय के विशिष्टाद्वैत मत के वैष्णव लोग बहुत हैं;—स्मार्त लोग कहते हैं कि जीव ईश्वर से अलग नहीं हैं, वह उन्हीं का हिस्सा है; माधवाचार्य के मत के लोगो का कथन है कि ईश्वर और जीव अलग अलग है और रामानुजीय संप्रदाय के लोग कहते हैं कि माया विशिष्ट ब्रह्म है, जीव ईश्वर से अलग होकर जन्म लेता है और मरने पर ईश्वर में मिल जाता है। नास्तिकों में लिंगायत लोग प्रबल हैं। वे लोग ब्राह्मणों से बैर रखते हैं और खास कर के मैसूर राज्य के उत्तरीय भाग में सौदागरी करते हैं।

माधवाचार्य की संप्रदाय के लोग मैसूर राज्य में बहुत हैं। कोडगु (कुर्ग) देश के पश्चिम के भाग में उडपीपुर गांव है; उसी में माधवाचार्य का जन्म हुआ था। उस गांव में माधवाचार्य का मठ है।

मैसूर के राज्य में जंगली जातियों में से एक प्रकार के लोगों की झोपड़ियां वृक्षों की डाढ़ पात से बनती हैं। वे लोग शिकार से अपना निर्वाह करते हैं; किन्तु अब कुछ लोग वृक्षों को काटते हैं और काफी की

खोपाई में काम करते हैं। ये लोग जाति भेद नहीं रखते। प्रत्येक गांव में उनका एक मुखिया रहता है। उनके सिर का बाल मोटा तथा १९ इंच तक लंबा होता है, जिसको वह पीछे एक रस्सी से बांधते हैं। उनकी स्त्रियां पुरुषों के साथ में काम नहीं करती हैं। जंगली लोगों में एक जाति के लोग केवल जंगली पैदावारो से अपना निर्वाह करते हैं। ये लोग वृक्षों से मधु मक्खियों के मधु निकाल कर इकट्ठे करते हैं। पुरुष तथा स्त्री दोनों के मुख मोटे तथा बेडौल होते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(अश्वमेधपर्व, ८३ वां अध्याय) राजा युधिष्ठिर ने कौरवों को जीतने के पश्चात् अश्वमेध यज्ञ का सामान किया। अर्जुन की रक्षा में यज्ञ अश्व छोड़ा गया। अर्जुन देश देश के राजाओं को जीतते हुए दक्षिण समुद्र की ओर गए। उन्हों ने उस तरफ के द्राविण अर्थात् द्राविड, अंध्र, माहिषक अर्थात् मैसूर वाले, कालगिरीय अर्थात् नील गिरि वाले वीरों को संग्राम में परास्त करके सुराष्ट्र की ओर गमन किया।

आदिब्रह्मपुराण—(२९ वां अध्याय) भारतवर्ष के दक्षिण भाग में माहिषक, मैलेय अर्थात् मलयगिरि इत्यादि देश हैं।

इतिहास—मैसूर राज्य में कई एक शिला लेख तथा तांबे के पत्तरों के लेख मिले हैं, जिनमें महाभारत और रामायण में लिखे हुए कई एक स्थान पहचाने गए हैं। जान पड़ता है कि ईसा से लग भग ३०० वर्ष पहिले बौद्धों के भेदिया अर्थात् गुप्त दूत ने उस देश को देखा था। जैन लोग बहुत दिनों तक मैसूर में प्रधान बन कर रहे। उनके बनाए हुए बहुतेरे सुन्दर मंदिर और अन्य स्मरण चिन्ह विद्यमान हैं।

ऐतिहासिक समय में प्रथम मैसूर का उत्तरी भाग कदंब वंश के राजाओं के आधीन था। उन्हों ने १४ वीं शदी में राज्य किया, पीछे वे लोग चालुक्य वंश के राजाओं को "कर" देते थे। उस समय गंगा वंश के राजा मैसूर के दक्षिणी भाग और कोयम्बतूर में राज्य करते थे। उनकी राजधानी पहिले कोयम्बतूर जिले के कष्टर में और पीछे कावेरी नदी के पास तालकद में थी। ९ वीं शदी में चोला वंश के राजा ने तालकदु के गंगा वंश के राजा का

विनाश किया। मैसूर राज्य के पूर्वी बगल का एक भाग पहिले पल्लव वंश के राजाओं के अधिकार में था। ७ वीं शदी में चालुक्य वंश के राजा ने पल्लव वंश के राजा को परास्त किया; किंतु पल्लव वंश वाले १० वीं शदी तक उनके बड़-दुश्मन बने रहे। चालुक्य वंश वालों ने चौथी शदी में हिंदुस्तान के उत्तर से आकर एक फैला हुआ देश को जीता, जिस का एक भाग १२ वीं शदी के अन्त तक उनके अधिकार में था। बाद बल्लाला वंश के राजा ने उनको परास्त करके उनका राज्य अपने राज्य में मिला लिया। जान पड़ता है कि चोला वंश के राजाओं ने मैसूर में १५० वर्ष से अधिक राज्य नहीं किया। कलचुरिया वंशवालों का राज्य भी ऐसाही बहुत समय तक नहीं रहा।

होसला बल्लाल वंश के राजा, जो जैन धर्मी थे, बड़े लड़ाके थे। उन्हीं ने मैसूर के वर्तमान राज्य के संपूर्ण पश्चिमी, दक्षिणी तथा मध्य भाग को और कोयम्बतूर, सेलम और धारवाड़ के हिस्से को जीता। उनकी राजधानी द्वार समुद्र (द्वारकावती पाटन) था। सन् १३१० में दिल्ली के अलाउद्दीन के जनरल मलिक काफूर ने बल्लाल वंश के राजा को कैद किया और शहर को लूटा। सन् १३२६ में महम्मद तुगलक की भेजी हुई सेना ने द्वार समुद्र को अच्छी तरह से बरबाद किया। जैन राजाओं और उनके पीछे के राजाओं के समय के बहुत मंदिर अब तक विद्यमान हैं। पीछे के राजाओं के मंदिरों में से होसलेश्वर का मंदिर हिंदुस्तान के विचित्र मंदिरों में से एक है।

होसला बल्लाल वंश के राज्य का अन्त होने पर सन् १३३६ में वारंगल की कचहरी के अफसर बूका और हरिहर ने विजयानगर का राज्य कायम किया। विजयानगर के हिंदू राजा और बहमनी वंश के मुसल्मान बादशाह से कई बार लड़ाई हुई। ऐसा प्रसिद्ध है कि मैसूर शहर के स्थान पर पहिले एक गांव था। मैसूर के वोडियर के पूर्वज ने सन् १५२४ में उस गांव के पास एक किला बनाया और उसका नाम महिषासुर जिसको उसके वंश की इष्ट देवी चामुंडा ने मारा था, रक्खा। वही नाम शहर का भी पड़ा, किंतु पीछे महिषासुर नाम बदल कर मैसूर हो गया। सन् १६६९ में दक्षिण के

९ मुसलमान बादशाहों में से ४ मिलकर विजयनगर के रामराजा को तालीकोट में परास्त करके मार डाला। रामराजा के वंश धर अपनी राजधानी को छोड़ कर पेनुकुंडा और चंद्रगिरि में हुकूमत करने लगे।

पेनुकुंडा के नरसिंह राजा के निर्बल होने पर छोटेर अनेक देशी प्रधान स्वाधीन बन गए, जिनमें एक दक्षिण के मैसूर का वोडियर था। कनड़ी भाषा में मालिक तथा प्रभु को वोडियर कहते हैं। मैसूर वोडियर की राजधानी था। पहले मैसूर के प्रधान लोग विजयनगर के राजा के प्रतिनिधि को, जो श्रीरंगपट्टनम् में रहते थे, खिराज देते थे। सन् १६१० में मैसूर के वोडियर ने पेनुकुंडा के सूबेदार तिरुमलई से श्रीरंगपट्टनम् का किला छीन लिया; तबसे मैसूर राज्य नियत हुआ। ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा वोडियर का पूर्व पुरुषा विजयराज नामक यादव छत्री अपने भाई कृष्णराज के साथ सन् १३९९ में काठियावार के द्वारिका से आए; उनके ९ वें पीढ़ी में राजा वोडियर थे। चमाराज और कंठीराज राजा वोडियर के उत्तराधिकारी हुए। कंठीराज ने सन् १६३८ से १६५८ तक योग्यता के सहित राज्य किया। उन्होंने राजधानी की किलाबंदी किया और एक टकशाल बनाया। उनके सिक्के सन् १७६१ तक चलते थे।

सन् १६७० में चिक्का देवराज मैसूर के राजसिंहासन पर बैठे। उन्होंने अपने राज्य को दक्षिणी भारत में प्रख्यात राज्य बनाया। सन् १६८७ में राजवंश के लोग शैव से वैष्णव होगए। सन् १७०४ में चिकादेवराज मरगए। उसके बाद दो राजा हुए; उनमें के पिछले राजा सन् १७३१ में निः संतान मर गए; तब राजा के कुल का रामराज नामक एक आदमी मैसूर का राजा बना था; किंतु दीवान ने उसको गद्दी से उतार कर कैद कर दिया; वह कैद खानही में मर गया। सन् १७३४ में उस वंश के चिक्का कृष्णराज राजसिंहासन पर बैठे।

चिक्का कृष्णराज के राज्य के समय हैदरअली एक मामूली सिपाही था, जिसने सन् १७६२ में मैसूर के राजा से उनका राज्य छीन लिया और बिदनोर की लूट से मालामाल होगया। मैसूर राज्य के कोलार जिले के बुड़ीकोट

नामक गांव में सन् १७२२ में हैदरअली का जन्म हुआ था। उस समय उसका पिता फतह महम्मदखां सीरा के नवाब के आधीन कोलार का फौजदार होकर बुडीकोटा में रहता था। हैदरअली के पुत्र टीपूसुल्तान ने हिंदू राज्य का चिन्ह मिटाने के लिये मैसूर के किले को तोड़वा दिया और उसके सामान से उससे एक मील पूर्व एक टीले पर नजराबाद नामक किला बनवाया, जिसकी चद निशानियां अब तक देखने में आती हैं।

सन् १७९९ में अंगरेजों ने श्रीरंगपट्टनम् की लड़ाई में टीपूसुल्तान को परास्त किया। टीपू मारा गया। अंगरेजी सरकार ने मैसूर के राजवंश के चमाराज के पुत्र कृष्णराज को मैसूर का पुराना राज्य, जिसको हैदरअली ने छीन लिया था, दे दिया। टीपू के मरने पर नजराबाद किले के पत्थर उजाड़ कर मैसूर के पुराने किले के स्थान पर फिर किला बनाया गया और किले के भीतर राजमहल इत्यादि इमारतें बनाई गईं। श्रीरंगपट्टनम् शहर की घटती और मैसूर शहर की बढ़ती होने लगी। राजा लड़के थे इस कारण से राज्य का प्रबंध एक योग्य महाराष्ट्र करने लगे। सन् १८१० में सबालिग होने पर राजा कृष्णराज राज्याधिकारी हुए। उन्होंने महाराष्ट्र सरदार के जमा किए हुए धन को खर्च कर दिया। उनसे राज्य का प्रबंध उचित भांति से नहीं चला, इस लिये सन् १८३१ में अंगरेजी गवर्नमेंट ने अपने कर्मचारियों द्वारा मैसूर राज्य का प्रबंध करना आरम्भ किया। बंगलोर शहर मैसूर राज्य का सदर स्थान बना। राजा को खर्च के लिये मालगुजारी का पांचवां भाग मिलने लगा। सन् १८६८ में राजा कृष्णराज ७५ वर्ष की अवस्था में मर गए। उसके उपरांत कृष्णराज के गोद लिये हुए पुत्र जो उसी वंश के थे, चमाराजेंद्र वोडियर के खिताब के साथ उत्तराधिकारी हुए, जिनकी अवस्था छः सात वर्ष की थी।

सन् १८७६ से १८७८ तक मैसूर के राज्य में बड़ा भारी अकाल था। उस समय मैसूर राज्य की तरफ से ७० लाख रुपये खर्च किये गये और मालगुजारी के ३८ लाख रुपये छोड़ दिये गये, तथा १५ लाख ६० हजार रुपये चंदा से आये, तिस पर भी राज्य के १० लाख मनुष्य और २ लाख ६० हजार मवेसी अकाल से मरगए।

सन् १८८१ के मार्च में अंग्रेज महाराज ने नये महाराज सर चमाराजेंद्र वोडियर जी० सी० एस० आई को राज का पूरा अधिकार देदिया । मिष्टर आर० सी० रंगाचालू दीवान बने * ।

नंजनगुडी ।

मैसूर के रेलवे स्टेशन से १९ मील दक्षिण नंजगुडी का रेलवे स्टेशन है। मैसूर राज्य के मैसूर जिले में चामुण्डा पहाडी से दो मील दूर कव्वानी और गुंडल नदी के किनारे पर नंजनगुडी कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ५७०२ मनुष्य थे । कनडी भाषा में नंजन का अर्थ विष पीने वाला अर्थात् शिव और गुडी का अर्थ नगर है (अर्थात् शिव का नगर) नंजनगुडी से १ मील दूर मैसूर के रेजीडेंट का एक बंगला है, जिसके पास कव्वानी नदी पर पत्थर का पुल बना हुआ है।

नंजनगुडी में ३८५ फीट लंबा और १६० फीट चौडा, जिसमें १४७ खंभे लगे हैं, नंजुडेश्वर शिव का बडा मन्दिर है । नंजुडेश्वर को लोग नीलकंठ भी कहते हैं। मन्दिर के खर्च के लिये मैसूर राज्य की ओर से २०२०० रुपये प्रति साल मिलते हैं । वह मैसूर राज्य में पवित्र स्थान है। वहां प्रति महीनें की पूर्णिमा को रथयात्रा का उत्सव होता है । चैत्र और अगहन की रथयात्रा के समय दक्षिण भारत के सब विभागों से हजारो यात्री वहां आते हैं।

इतिहास—सन् १७४० में मैसूर के एक दीवान ने नंजुडेश्वर के पुराने छोटे मन्दिर के स्थान पर नंजुडेश्वर का वर्तमान मन्दिर बनवाया और एक दूसरे दीवान ने उसको सुधारा।

---

* सन् १८९४ के अन्त में महाराज सर चमाराजेन्द्र वोडियर की मृत्यु होगई। उसके पश्चात उनके पुत्र महाराज श्रीकृष्णराजेंद्र वोडियर बहादुर जिनकी अवस्था लगभग ११ वर्ष की थी, उत्तराधिकारी हुए।

अठारहवां अध्याय।

(मैसूर राज्य में) तमकूर, श्रावन वड़गुला, हलेबिड के मंदिर, वेलूर, शृङ्गेरीमठ और हरिहर, (बंबई हाते में) हुबली, धारवाड़, (पोर्चुगीजों के राज्य में) गोआ, (बंबई हाते में) कारवार, गोकर्णतीर्थ, जरसोपा के जल-प्रपात और रत्नागिरि।

तमकूर।

बंगलोर शहर के रेलवे स्टेशन से ४० मील पश्चिमोत्तर तमकूर का रेलवे स्टेशन है। मदरास हाते में (१३ अंश, २० कला, २० विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, ८ कला, ५० विकला पूर्व देशांतर में) देवरायदुर्ग नामक पहाड़ी के दक्षिण-पश्चिम की नेव के पास तमकूर जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा तमकूर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय तमकूर कसबे में ११०८६ मनुष्य थे, अर्थात् ८५७१ हिंदू, २०३३ मुसलमान, ३७४ कृस्तान और १०८ जैन।

केले, कसईली, नारियल इत्यादि वृक्षों के कुंजों से घेरा हुआ तमकूर कसबा है। कसबे में कई एक चौड़ी सड़के बनी हुई हैं। देशी लोगों के मिट्टी के मकान खपड़े से छाए हुए हैं। यूरोपियन लोग उत्तर और बसते हैं। डिपोटी कमिश्नर की कचहरी का विशाल मकान बना हुआ है, जो गोल्लेकार ढाचे का तीन मंजिला है। अन्य इमारतों में इस्टेट कमिश्नर, एंजिनियर और आमिलदार के आफिस; कई एक स्कूलों के साथ एक मिशन; जेलखाना, जिला स्कूल, अस्पताल, बंगला, और गिरजा हैं। यहां १२० लोहारखाने हैं, जिनमें लड़ाई के हथियार और छूरियां बनती हैं। यहां भांति भांति के पत्थर की मूर्तियां और विविध प्रकार के बाजे तैयार होते हैं।

प्रति वृहस्पति वार को मेला होता है । ऐसा प्रसिद्ध है कि मैसूर राजवंश के एक राजा ने तमकूर को बसाया।

तमकूर जिले में बहुत देशी कपड़े तैयार होते हैं । उस जिले में लगभग ४००० कपड़े बिनने की दरकियां तथा करिगह और लगभग ३५००० सूत कातने के चरखे हैं।

श्रावन बड़गुला।

तमकूर के रेलवे स्टेशन से ६० मील (बंगलोर शहर से १०० मील) पश्चिमोत्तर अर्सीकेरा का रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से ८ मील दक्षिण-पश्चिम मैसूर के राज्य में श्रावन बड़गुला नामक गांव है, जिसमें जैन लोगों के धर्म प्रचारक रहते हैं । उस गांव के निकट इन्द्रबेत्ता और चंद्रगिरि नामक २ पहाड़ियां हैं, जिनमें से इन्द्रबेत्ता पहाड़ी के ऊपर मैदान में जैनों के तीर्थंकरों में से गोमतराय अर्थात् गोमेतश्वर की ७० फीट ऊंची प्रतिमा है । उसके आगे के शिलालेख से जान पड़ता है कि उस प्रतिमा को चामुण्डराय ने बनवाया था । लोग कहते हैं कि ईसा से ६० वर्ष पहिले चामुण्डाराय था । वहां पुराने समय के बहुत से शिला लेख हैं। घेरे के भीतर कमरों में लगभग ७० छोटी जैन मूर्तियां हैं। चंद्रगिरि पहाड़ी के ऊपर १५ जैन मन्दिर हैं।

हलेवीड के मंदिर।

अर्सीकेरा के रेलवे स्टेशन से १० मील (बंगलोर शहर से ११० मील) पश्चिमोत्तर बानाबार का रेलवे स्टेशन है । स्टेशन से २० मील दक्षिण-पश्चिम मैसूर राज्य के बेलूर तालुक में हलेवीड एक प्राचीन गांव है, जिसके पास पूर्व समय के अनेक मकान तथा मन्दिरों की निशानियां और हौसलेश्वर तथा केदारेश्वर के २ मन्दिर हैं।

हौसलेश्वर का मंदिर—५ फीट ऊंचे चबूतरे पर १६० फीट लंबा और १२२ फीट चौड़ा हौसलेश्वर का प्राचीन मन्दिर है, जिसको हौसला बलाल वंश के राजा ने बनवाया था । मन्दिर के चारो ओर लगभग २०

फीट चौड़ी उस चबूतरे की हाँसिया है। चबूतरे से २५ फीट ऊपर मन्दिर का कार्निस है । मंदिर की कारीगरी और बनावट विचित्र है । मंदिर में एक ओर हौसलेश्वर नामक बहुत बड़ा शिवलिंग और दूसरी ओर पार्वतीजी की सुंदर प्रतिमा है । मंदिर के आगे जगमोहन में नंदी बैल बैठा है। जगमोहन के आगे एक मंडपम् में १८ फीट लंबा, ७ फीट चौड़ा और १० फीट ऊंचा दूसरा नंदी है । मन्दिर हाल में मरम्मत किया गया है।

केदारेश्वर का मंदिर—यह मन्दिर हौसलेश्वर के मन्दिर से बहुत छोटा है; किंतु इसकी कारीगरी उससे भी अधिक बारीक है । इसकी नेव से इसके सिर तक उत्तम संगतरासी का काम है । मन्दिर १६ पहला है।

मन्दिर के शिखर पर एक वृक्ष लग कर पत्थरों को हटा दिया, बहुत सी प्रतिमा अपने स्थानों से हट गई, जो बंगलोर के अजायबखाने में रक्खी हुई हैं। मन्दिर हीन दशा में है। उसका जगमोहन उजड़ रहा है, तथा उसमें पौधे जम गए हैं ।

वेलूर ।

बाणावार के रेलवे स्टेशन से २० मील दक्षिण पश्चिम ऊपर लिखा हुआ हलेबीड, और हलेबीड से १० मील दक्षिण-पश्चिम, तथा हसन कसबे से २३ मील पश्चिमोत्तर मैसूर राज्य में एक नदी के दहिने किनारे पर, तालुक का सदर-स्थान वेलूर एक म्युनिस्पल कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय २९१७ मनुष्य थे । पुराणों में वेलूर का नाम वेलापुर लिखा है। उसको उस देश के लोग दक्षिण की काशी कहते हैं।

चन्नकेशव का मन्दिर—ऊंची दीवार के भीतर ४४० फीट लम्बा और ३६० फीट चौड़ा अर्थात् ६ बीघे विस्तार का आंगन है । आंगन में चन्नकेशव का विशाल मन्दिर और चार पांच अन्य छोटे मन्दिर हैं। आगे पूर्व तरफ २ उत्तम गोपुर बने हुए हैं। मंदिर और जगमोहन में संगतरासी का बारीक काम है। चन्नकेशव ७ फीट से अधिक ऊंचे हैं। वहां प्रति वर्ष के वैशाख में ९ दिनों तक उत्सव होता है, जिसमें लगभग ९ हजार मनुष्य आते हैं।

१२ वीं शदी के मध्य में होसला वल्लाला वंश के राजा विष्णुवर्द्धन ने, जैन धर्म से वैष्णव धर्म में आने के पश्चात् चन्नकेशव का मंदिर बनवाया। उसका प्रसिद्ध कारीगर ढंकनाचारी ने मन्दिर में विचित्र कारीगरी का काम बनाया था।

शृंगेरी मठ।

पानावार के रेलवे स्टेशन से १८ मील (बंगलोर शहर से १२८ मील) पश्चिमोत्तर और हुवली जंक्शन से १६० मील दक्षिण-पूर्व विरूर का रेलवे स्टेशन है, जहांसे एक रेलवे शाखा पश्चिमोत्तर शिमोगा कसबे को गई है। विरूर के रेलवे स्टेशन से लगभग ६० मील पश्चिम मैसूर राज्य के कदूर जिले में तुंग नदी के उत्तर अर्थात् बाएं किनारे पर (१३ अंश, २९ कला, १० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, १७ कला, ५० विकला पूर्व देशांतर में) शृंगेरी एक पवित्र गांव है। शृंगेरी से ९ मील पश्चिम शृंगगिरि, जिसको लोग ऋषिशृंग भी कहते हैं, पहाड़ी है, जिसके नाम से शृंगेरी नाम पड़ा है। ऐसा प्रसिद्ध है कि यहांही शृंगी ऋषि का जन्म हुआ था। शृंगगिरि का अपभ्रंश शृंगेरी नाम है। शृंगेरी बस्ती में मैसूर राज्य की एक तहसीली कचहरी, एक लम्बी सड़क और मल्लिकार्जुन नामक शिव का मन्दिर है। शृंगेरी में लगभग १७०० मनुष्य बसते हैं।

शृंगेरी गांव के पास टीले पर शारदा देवी का प्रसिद्ध मन्दिर है। वहां शृंगेरीमठ तथा मठ के स्वामी विद्याशंकर और शृंगेरीभट्ट का मन्दिर बना हुआ है। शृंगेरी के आस पास चंदन के वृक्ष बहुत हैं और छोटी इलायची, काली मिर्च और सुपारी बहुत उत्पन्न होती हैं। वहां नृसिंहजी का एक मन्दिर है।

शृंगेरीमठ में शंकराचार्य की नियत कीहुई गद्दी पर तबसे इस समय तक लगातार गद्दी के उत्तराधिकारी लोग होते आते हैं। एक अंगरेजी किताब में शृंगेरीमठ की गद्दी पर क्रम से रहने वाले २९ उत्तराधिकारियों के नाम हैं शृंगेरीमठ के वर्तमान स्वामी श्रीजगद् गुरु शिवाभिनव नृसिंह भारती बड़े

भारी पण्डित हैं। यह भारत वर्ष के विविध प्रांतों में पर्य्यटन करके बहुत द्रव्य लाते हैं और पुण्य कार्य में खर्च करते हैं। तुंग नदी की घाटी में मांगनी नामक उपजाऊ भूमि शृंगेरीमठ की जायदाद है और मैसूर के राज्य की ओर से मठ को वार्षिक १००० रुपये मिलते हैं। वर्ष में नवरात्र आदि पर्वों के समय कई बार मठ में बड़ा उत्सव होता है, जिनमें ३००० से १०००० तक लोग आते हैं। उस समय सब जाति के लोगों को मठ की ओर से भोजन कराया जाता है और पुरुषों को मुद्रा तथा स्त्रियों को पहनने के कपड़े और चोली बांटी जाती हैं।

शृंगेरीमठ की शाखा ४ मठ हैं;—(१) मैसूर राज्य में तुंगभद्रा नदी के तट पर कुड़ली गांव में, (२) मैसूर राज्य के बंगलोर जिले के शिवगंगा नामक गांव में, (३) मदरास हाते के बेल्लारी जिले में किष्किन्धा के विरूपाक्ष के मन्दिर के पास और (४) बम्बई हाते के पूना शहर के पास संकेश्वर में।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—कूर्म्मपुराण—(ब्राह्मी-संहिता, २९ वां अध्याय) नील लोहित शङ्कर भक्तों के मंगल के लिए प्रकट होंगे और श्रौत तथा स्मार्त मत की प्रतिष्ठा के लिए सकल वेदांत का सार ब्रह्मज्ञान और निर्दिष्ट धर्म अपने शिष्यों को उपदेश देंगे।

दूसरा शिवपुराण—(उर्दू अनुवाद, ७ वां खण्ड, पहिला अध्याय) अधर्मियों के मत प्रबल होने के समय शिवजी एक ब्राह्मण के गृह जन्म लेकर शंकर नाम से प्रसिद्ध हुए। उन्होंने अधर्म का विनाश करके सन्यास धर्म तथा अद्वैत मत को प्रकट किया।

भक्तमाल—लगभग ३०० वर्ष हुए कि नाभाजी ने भक्तमाल नामक पद्य भाषा की पुस्तक बनाई। उसके ४३ वें अंक में लिखा है कि शंकराचार्य धर्म पालन करने के लिये कलियुग में प्रकट हुए। उन्होंने अनीश्वरवादी बौद्धों और कुतर्की जैनों को परास्त करके धर्म विमुखों को सत मार्ग में कर दिया। वह सदाचार की सीमा थे। उनकी कीर्ति विश्व में फैली है। वह ईश्वर के अंश से अवतार लेकर मर्यादा का पालन करते थे।

शंकराचार्यजी का जीवन चरित्र—शंकरदिग्विजय आदि संस्कृत पुस्तकों में लिखा है कि केरल (अर्थात् मालाबार) देश में वृष पर्वत के ऊपर पूर्णा नदी के किनारे पर ज्योतिर्लिंग रूप में शिवजी प्रकट हुए। वहां के राजशेखर नामक राजा ने उस लिंग की प्रतिष्ठा करवाई। उस लिंग के समीप्र कालटी नामक नगर में विद्याधिराज नामक पण्डित के गृह शिवजी ने जन्म लिया। उनके पिता विद्याधिराज ने उनका "शिवगुरु" नाम रक्खा। और उचित समय पर मध्यपण्डित की कन्या से उनका विवाह कर दिया। जब २८ वर्ष की अवस्था होने पर भी शिवगुरु के कोई संतान नहीं हुई, तब वह अपनी भार्या के सहित नदी में स्नान करके वृष पर्वत पर शिवजी की आराधना करने लगे। शिवजी के प्रकट होने पर शिवगुरु ने उनसे पुत्र मांगा। शिवजी ने पूछा कि तुम अल्प बुद्धि वाले बहुत पुत्र कि थोडी आयु वाला सर्वज्ञ एक पुत्र लोगे। शिवगुरु ने कहा कि मुझको थोडी आयु वाला सर्वज्ञ एकही पुत्र स्वीकार है। शिवजी उनको यही वर देकर चले गए। उसके अनन्तर गर्भ धारण करने से १० मास पर शिवगुरु की भार्या के पुत्र उत्पन्न हुआ। श्रीशङ्करजी की आराधना करने से पुत्र का जन्म हुआ, इस लिये शिवगुरु ने उसका नाम शङ्कर रक्खा। शङ्कर के ४ वर्ष की अवस्था होने पर उनके पिता शिव गुरु का देहांत होगया। शंकर ने ८ वर्ष की अवस्था में अपनी माता से आज्ञा लेकर नर्मदा नदी के तीर पर जाकर श्रीगौडपादजी के शिष्य गोविंदनाथ अर्थात् गोविंदानंद से, जिनको गोविंद योगींद्र भी कहते हैं, संन्यास धर्म की शिक्षा ली।

कुछ समय के पश्चात् गोविंदानंद ने शंकर को आज्ञा दी कि तुम काशीपुरी में जाकर ब्रह्मसूत्रो पर भाष्य की रचना करो। शंकर ने काशी में जाकर कावेरी तट के निवासी एक ब्राह्मण कुमार को संन्यास की दीक्षा देकर उसका सनदन नाम रक्खा और अन्य बहुतेरे लोगों को सन्यास की दीक्षा देकर अपना शिष्य बनाया। उसके उपरांत वह अपने शिष्यों के सहित तीर्थभ्रमण करते हुए बदरिकाश्रम पहुंचे। उन्हों ने वहा कुछ दिन निवास करके व्यासजी के रचे हुए, सूत्रो पर भाष्य बनाया। उसके पश्चात् शंकराचार्य ने ईश,

केन, कठ, प्रश्न, मुंडक, माडूक्य, तैतिरेय, ऐतरेय, छांदोग्य और बृहदारण्य, इन १० उपनिषदो पर भाष्य की रचना की। उसके पीछे उन्होंने भगवद्गीता पर भाष्य किया। इन्ही तीनो भाष्यों को "प्रस्थानत्रयी" कहते हैं। इनके अतिरिक्त शंकराचार्यजी ने अनेक वेदांत ग्रंथो को बनाया और अपने बनाए हुए ग्रंथों को अपने शिष्यों को पढ़ाया। उन्हो ने अपने प्रेमपात्र शिष्य सनंदन का नाम पद्मपाद रक्खा।

शंकराचार्यजी ने प्रयाग में जाकर भट्टपाद नामक महात्मा का, जिसका नाम कुमारिल भी है, दर्शन किया। भट्टपाद ने कहा कि हे शंकर! यदि तुम अद्वैत मत का प्रकाश करने चाहते हो तो माहिष्मती में जाकर चारों दिशाओं में प्रसिद्ध कर्ममीमांसा के सिद्ध करने वाले मंडनमिश्र को शास्त्रार्थ में परास्त करो। उसके परास्त होने पर संपूर्ण पंडित परास्त होने के तुल्य हो जायंगे। भट्टपाद ऐसा कह कर परमधाम को चले गए।

शंकराचार्यजी ने नर्मदा नदी के तट पर माहिष्मतीपुरी में जाकर पण्डित मंडनमिश्र से कहा कि तुम हमारे साथ शास्त्रार्थ करो, जिसका पराजय होगा वह जीतने वाले के मत को ग्रहण कर उसका शिष्य होजायगा। तुम ने वेदानुकूल अद्वैत मार्ग को छोड कर कर्म मार्गही का आश्रय लिया है; कि तो तुम अद्वैत मत ग्रहण करलो नहीं तो हमसे शास्त्रार्थ करो। मंडनमिश्र बोले कि मुझको शास्त्रार्थ करने की सर्वदा इच्छा रहती है, किन्तु ऐसा कोई मुझको नहीं मिलता। मैं तुह्मारे साथ शास्त्रार्थ करूंगा, परन्तु हमारे तुह्मारे बीच में अवश्य कोई मध्यस्थ होना चाहिए, जो जीत हार का निर्णय करे। उस समय दोनो आदमी की सम्मति से मंडनमिश्रकी सरस्वती नामक स्त्री मध्यस्थ बनाई गई। शंकराचार्य ने कहा कि परास्त होजाने पर मैं गेरुआ वस्त्र और सन्यास कर्म को छोड कर स्वेत वस्त्र धारण करके पुनः गृहस्थ हो जाऊंगा। मंडनमिश्र ने प्रण किया कि शास्त्रार्थ में हार जाने पर मै स्वेत वस्त्र और गृहस्थाश्रम धर्म का परित्याग करके गेरुआ वस्त्र और संन्यास धर्म को ग्रहण करलूंगा। उस समय मंडनमिश्र की भार्या सरस्वती ने दोनों के कंठ में पुष्प का एक एक माला पहना करके उनसे कहा कि शास्त्रार्थ करते करते

जिसके कंठ की माला कुंभलाय जाय वह अपने को परास्त हुआ समझ ले। श्रीशंकराचार्यजी और मंडनमिश्र का परस्पर शास्त्रार्थ होने लगा। दोनों अपने अपने अनुकूल युक्ति से वेद का प्रमाण देने लगे। पांच छः दिन से अधिक शास्त्रार्थ होने के पश्चात् शंकराचार्य ने जब अनेक रीतिओं से श्रुतियों के प्रमाण से जीव और ब्रह्म का अभेद सिद्ध किया तब मंडनमिश्र के गले की माला कुंभला गई। सरस्वती ने मंडनमिश्र का पराजय स्वीकार करके शंकराचार्य से कहा कि हे यतिराज! तुमने मेरे पति को पूर्ण रीति से नहीं जीता; क्योंकि वेद में लिखा है कि पत्नी पुरुष का आधा अंग है, इसलिये तुम मुझको भी शास्त्रार्थ में जीत कर इनको अपना शिष्य बनाओ। शंकराचार्य ने सरस्वती का वचन स्वीकार किया। शंकराचार्य और सरस्वती का १७ दिनों तक शास्त्रार्थ हुआ किंतु किसी का पराजय नहीं हुआ, तब सरस्वती ने विचार किया कि शंकराचार्य आजन्म ब्रह्मचारी हैं, इस कारण से यह "कामशास्त्र" को कुछ भी नहीं जानते होंगे; इनसे कामशास्त्र में प्रश्न करने पर मेरा विजय होगा, ऐसा विचार उसने शंकराचार्य से प्रश्न किया कि काम की कला कितनी हैं, उसका स्वरूप क्या है, वह किस स्थान पर रहता है, उसकी पूर्व की तथा अंत की स्थिति किस भांति है और स्त्री पुरुष में उसकी विलक्षणता क्या है इत्यादि। शंकराचार्य कुछ काल तक मौन रह शोच करके बोले कि हे सरस्वती! इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिये तुम मुझको एक एक मास का समय दो, तब मैं कामशास्त्र में भी तुमको पराजय करूंगा। सरस्वती ने उनका वचन स्वीकार किया।

शंकराचार्यजी कामशास्त्र जानने के लिये अपने शिष्यों के सहित मंडनमिश्र के घर से चल दिए। उन्हों ने जाकर एक स्थान पर एक गुहा में अमरुक नामक राजा का मृत शरीर देखा। तब उन्हों ने पद्मपाद आदि शिष्यों से कहा कि मैं इस राजा के शरीर में प्रवेश करके इसकी स्त्रियों से काम शास्त्र का ज्ञान प्राप्त करूंगा और फिर अपने योग बल से उस शरीर को छोड़ कर अपने शरीर में आजाऊंगा। जब तक मैं लौट आऊं तब तक तुम लोग इस गुहा में मेरे मृत शरीर की रक्षा करते रहो। ऐसा [illegible]

मे अपने स्थूल शरीर को वहां छोड़ कर ज्ञानेंद्रियों के सहित लिंग शरीर द्वारा राजा के शरीर में प्रवेश कर गए। तब वह राजा जीवित होकर अपने घर गया। राजा को देख पुरवासी और प्रजाओं को परम आनंद हुआ। राजा इंद्र के समान प्रजापालन करने लगा, किंतु राजा का अलौकिक प्रभाव देख कर मंत्रियों के चित्त में बड़ा संदेह उत्पन्न हुआ। वे कहने लगे कि जान पड़ता है कि किसी योगिराज ने राजा के शरीर में प्रवेश किया है, इसलिये ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे योगी फिर अपने शरीर में न जासके। ऐसा विचार कर मंत्रियों ने गुप्त भाव से दूतों को आज्ञा दी कि तुम लोग मृतकों को खोज खोज अग्नि म भस्म करदो। इधर राजा संपूर्ण राज्य भार मंत्रियों पर छोड़ कर स्त्रियों के साथ अनेक प्रकार के विषय भोग भोगने लगे। उसके उपरान्त उन्हो ने कामशास्त्र के जानने वालों के साथ विचार करके भाष्य सहित वात्स्यायन सूत्रों का अभ्यास कर लिया और शृङ्गार का निधि रूप "अमरु शतक" नामक एक ग्रन्थ बनाया। उधर शंकराचार्यजी के शिष्यों ने देखा कि अवधि के एक मास से पाच छः दिन अधिक बीत गए, किंतु स्वामीजी लौट कर नहीं आए। तब वे लोग स्वामीजी के शरीर की रक्षा के लिये कुछ चलों को छोड़ कर उनको खोजने के लिये वहा से चल कर अमरुक नामक राजा के राज्य में पहुंचे। उन्हों ने वहां जाकर सुना कि अमरुक राजा मर कर फिर जी गया है और वह बड़े न्याय से अब प्रजा पालन करता है तब समझ लिया कि इसी राजा के शरीर में गुरु महाराज हैं। शिष्यों ने जब उस राजा के शरीर में स्थित शंकराचार्य को अपने गान विद्या की चातुर्य देखलाई तब शंकराचार्य ने शिष्यों को पहचान कर अपने शरीर में जाने की इच्छा की। आचार्यजी ने राजा के शरीर को वहा छोड़ कर लिंग शरीर द्वारा अपने पूर्व के शरीर में प्रवेश करने के लिये चल दिया। उन्हों न गुहा में जाकर देखा कि राजा के मंत्रियों के भेजे हुए दूत गण उनके मृतक शरीर को भस्म करने के निमित्त चिता पर रख कर उसमें अग्नि लगा रहे हैं। उस समय शंकराचार्यजी ने अपने शरीर में प्रवेश करके संकट से छूटने के लिये नृसिंहजी का स्मरण किया। जब नृसिंहजी प्रकट हुए तब

अग्नि शांत होकर बुझ गई । उसके पश्चात् शंकराचार्यजी ने मंडनमिश्र के घर जाकर उसकी स्त्री सरस्वती को कामशास्त्र में परास्त कर दिया । तब मंडनमिश्र ने विधि पूर्वक संन्यास धर्म ग्रहण किया । शंकरजी ने उनको अपने शिष्यों में श्रेष्ठ बनाया और उनका नाम सुरेश्वराचार्य रक्खा।

शंकराचार्यजी दक्षिण दिशा में गए । वहां सुरेश्वराचार्य आदि उनके शिष्यों ने शैव, पाशुपत, गाणपत्य, शाक्त आदि मत वादियों को शास्त्रार्थ में परास्त किया । उसके पश्चात् जब शंकराचार्यजी ने सिद्ध स्थान के पास श्रीवल्ली नामक ग्राम में निवास किया था तब उस ग्राम के प्रभाकर नामक विद्वान ब्राह्मण ने अपने १३ वर्ष की अवस्था के मूढ़ पुत्र को उनके चरणों पर डाल दिया । शंकराचार्यजी ने उस पुत्र से पूछा कि जड़वृत्ति वाला तू कौन है ? उस समय शंकरजी के दर्शन के प्रभाव से उसने विज्ञान लाभ करके १२ श्लोको में आत्मतत्व वर्णन किया । तब शंकराचार्य ने प्रभाकर ब्राह्मण से कहा कि इन श्लोकों से आत्मतत्व हस्तमलकवत् प्रकाशित होता है, इस लिये इनको रचने वाले तुम्हारे पुत्र का नाम अब से हस्तामलक होगा। उसके पश्चात् शंकरस्वामी हस्तामलक को अपने साथ में लेकर तुंगभद्रा के तट पर शृंगेरी नामक पुरी में आए, जहां पहिलेही से वह शारदादेवी की स्थापना कर चुके थे । उन्हों ने वहां शृंगेरीमठ स्थापन किया । शंकरस्वामी के शिष्यों में गिरि नामक एक मूर्ख शिष्य था, जिसने स्वामीजी के अनुग्रह से तत्कालही संपूर्ण विद्या प्राप्त करके तोटक छंद में शंकराचार्य की स्तुति की; इस कारण से उसका नाम तोटकाचार्य करके प्रसिद्ध हुआ। स्वामीजी के मुख्य शिष्यों में उसकी गणना हुई । उस समय पद्मपाद, सुरेश्वराचार्य, हस्तामलक, और तोटकाचार्य शंकरस्वामी के शिष्यो में प्रधान हुए । इनके अतिरिक्त समित्पाणि, चिद्विलास, ज्ञानकंद, विष्णुगुप्त, शुद्धकीर्ति, भानुमरीचि, कृष्ण दर्शन, बुद्धिवृद्धि, विरिंचिपाद, अनंतानंद इत्यादि उनके बहुत शिष्य थे। स्वामीजी की आज्ञा से उनके शिष्यों ने बहुत से ग्रंथ बनाए । शंकरस्वामी ऋषिशृंग पर बहुत दिनों तक निवास करने के पश्चात् अपने घर गए; क्योंकि एक बार घर पर जाने को उन्हों ने पहिले अपनी माता से कहा था । उनके घर जाने पर उनकी माता का देहान्त होगया।

श्रीशंकराचार्यजी पृथ्वी में दिग्विजय करके नास्तिक तथा द्वैतमत वाले लोगों को परास्त कर उनको शुद्ध अद्वैत मत में लाए। उनका मत है कि इस प्रपंच में जो कुछ देखने में आता है वह सब मिथ्या है। ब्रह्म से भिन्न कोई पदार्थ नहीं है। ईश्वर और जीव एकही वस्तु है। इस कारण से उन्होंने किसी आस्तिक मत को, जिसमें ईश्वर की सत्ता मानी जाती है, खण्डन नहीं किया; अद्वैत भाव से सब मतों को स्थापित किया। विष्णु, शिव आदि देवताओं में भेद रखने वाले लोगों को उनमें अभेद बुद्धि रखने को उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि केवल ब्रह्मही उपासना करने योग्य है; किन्तु उसकी उपासना करना कठिन है, इस कारण से शिव, विष्णु, सूर्य, गणेश, दुर्गा इत्यादि देवताओं की, जो उसके अंश हैं, समान भाव से उपासना करो। शंकराचार्यजी जैन, बौद्ध आदि मताभिमानियों को परास्त करने के पश्चात् कुछ शिष्यों के साथ बदरिकाश्रम में गए। वहां केदाराश्रम में उनका देहान्त होगया। उस समय उनकी ३२ वर्ष की अवस्था थी।

श्रीशंकराचार्यजी के जन्म का कोई ठीक समय अभी तक ज्ञात नहीं हुआ है; परन्तु शिष्य परम्परा से, जो शंकराचार्य के बाद से अभी तक चली आती है, अनुमान होता है कि सन् ईस्वी की ९ वीं शदी में वह थे। कुछ लोग उससे पहिले उनके रहने का समय अनुमान करते हैं।

भारत वर्ष के चारो दिशाओं की सीमाओं के पास शंकराचार्यजी के ४ प्रधान मठ हैं, जो उनके ४ शिष्यों से हुए हैं;—दक्षिण की सीमा की ओर मैसर राज्य के शृंगेरी गांव में उनके शिष्य पृथ्वीधराचार्य का शृंगेरीमठ है, जिसका भूवार संप्रदाय; भूर्भुवगोत्र, सरस्वती, भारती और पुरी उपाधि; रामेश्वर क्षेत्र; आदि वाराह देवता; कामाक्षा देवी; तुंगभद्रा तीर्थ, चैतन्य ब्रह्मचारी; यजुर्वेद; और अहं ब्रह्मास्मि महावाक्य है। पश्चिम की सीमा पर द्वारिका पुरी में शंकराचार्य के शिष्य विश्वरूपाचार्य का शारदामठ है, जिसका कीटवार संप्रदाय, अवगत गोत्र, तीर्थ, आश्रम और श्रीपाद उपाधि, द्वारिका क्षेत्र, सिद्धेश्वर देवता, भद्रकाली देवी, गंगागोमती तीर्थ, स्वरूप ब्रह्मचारी, सामवेद और तत्वमसि महावाक्य है। उत्तर की सीमा के पास गढ़वाल जि-

के के जोशीमठ नामक बस्ती में शंकरजी के शिष्य तोटकाचार्य का जोशीमठ है, जिसका आनन्दवार संप्रदाय;भृगु गोत्र; गिरि, पर्वत, और सागर उपाधि, बदरिकाश्रम क्षेत्र; नारायण देवता, पुण्यागिरि देवी, अलकनन्दा तीर्थ, नन्द ब्रह्मचारी, अथर्व वेद और अहमात्मा ब्रह्म महा वाक्य है। पूर्व की सीमा पर, उड़ीसे के पुरी जिले के जगन्नाथपुरी में शंकरजी के शिष्य पद्मपादाचार्य का गोवर्द्धनमठ है, जिसका भोगवार संप्रदाय,कश्यप गोत्र, वन और अरण्य उपाध, पुरुषोत्तम क्षेत्र, जगन्नाथ देवता, विमला देवी, महोदधि तीर्थ, प्रकाश ब्रह्मचारी, ऋग्वेद और प्रज्ञानमानन्दंब्रह्म महावाक्य है। ऐसा मठाम्नाय आदि ग्रन्थों में लिखा है।

हरिहर।

बिरूर के रेलवे स्टेशन से ७९ मील उत्तर (बंगलोर शहर से २०७ मील पश्चिमोत्तर) और हुबली जंक्शन से ८१ मील दक्षिण-पूर्व हरिहर का रेलवे स्टेशन है। मैसूर राज्य में मैसूर राज्य और बम्बई हाते के अंगरेजी जिले की सीमा के पास तुंगभद्रा नदी के दहिने किनारे पर (१४ अंश, ३० कला, ९०) विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश,९० कला, ३६ विकला पूर्व देशांतर में) हरिहर एक छोटा कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय ४६७९ मनुष्य थे।

हरिहर के निकट तुंगभद्रा नदी पर,जो बम्बई हाते और मैसूर राज्य की सीमा बनी है, सन् १८६८ का बना हुआ १४ मेहराबियों का एक सुन्दर पुल है, जिस पर होकर बंगलोर की सड़क धारवाड़ को गई है। पुल के बनाने में ३००००० रुपये से अधिक खर्च पड़े थे।

हरिहर पुराना कसबा है। हरिहर का वर्त्तमान मंदिर सन् १२२३ का बना हुआ है। सन् १८६५ तक कसबे के २ मील पश्चिमोत्तर फौजी छावनी थी। हरिहर के बने हुए लाल चमड़े प्रसिद्ध हैं।

हुबली।

हरिहर कसबे से ८१ मील (बंगलोर शहर से २८८ मील) पश्चिमोत्तर

और धारवाड़ कसबे से १२ मील दक्षिण पूर्व हुबली का रेलवे जंक्शन है। बम्बई हाते के धारवाड़ जिले में (१५ अंश, २० कला, उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, १२ कला, पूर्व देशांतर में) सब डिवीजन का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा हुबली है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय हुबली में ५२५९५ मनुष्य थे, अर्थात् २६८१८ पुरुष और २५७७७ स्त्रियां। इनमें ३४७५५ हिन्दू, १५५१६ मुसलमान, १४४२ क्रस्तान, ८०१ जैन, ६० पारसी, १६ यहूदी और ५ एनिमिष्टिक थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ७४ वां और बम्बई हाते के अंगरेजी राज्य में ८ वां शहर है।

हुबली में सबडिवीजन की प्रधान कचहरियां, खैराती अस्पताल और स्कूल हैं। वहां रूई, रेशम, नमक और गल्ले की बड़ी तिजारत होती है। तांबे के बर्त्तन बहुत बनते हैं। दक्षिणी महाराष्ट्र देश के रूई के व्यापार का यह केंद्र हुआ है। पूना वाली सड़क हुबली होकर हरिहर और उससे दक्षिण पूर्व बंगलोर को गई है।

रेलवे—हुबली जंक्शन से 'सदर्न मरहटा रेलवे" की लाइन ३ ओर गई हैं, तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २ पाई लगता है—

(१) हुबली जंक्शन से पश्चिम;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१२ धारवाड़।

५६ लोंडा जंक्शन।

७१ कैसिलरक्।

१२२ मोरमूगांव बंदरगाह।

लोंडा जंक्शन से उत्तर ३३ मील बेलगांव, ६९ मील गोकाकरोड, ११८ मील मीराज जंक्शन, १२४ मील सगली, १३४ मील तासगांवरोड, १४२ मील कुंडलरोड, १६४ मील करदा कसबा, २०० मील सितारा रोड, २०९ मील वायर २३० मील नीरा, २४६ मील जेजुरी, और २७८ मील पूना जंक्शन।

मिराज जंक्शन से पश्चिम ६ मील शिरोलरोड, और २९ मील कोलहापुर।

(१) हुबली जंक्शन से पूर्व-दक्षिण—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३६ गदग जंक्शन।

५७ हरपालपुर।

८८ होसपेट।

१०४ मादिगनूर।

१२९ बल्लारी शहर।

१६९ गुंटकल जंक्शन।

गदग जंक्शन से उत्तर ५२ मील बादामी, ५८ बगलकोट कसबा, ११५ मील बीजापुर, और १७१ मील होतगी जंक्शन।

गुंटकल जंक्शन से दक्षिण ६१ मील धरम्बरम् जंक्शन, ११२ मील हिंदूपुरम् और १७४ मील बंगलोर शहर (गुंटकल से रेलवे लाइन ५ ओर गई है, पृष्ठ १७४ में देखिए)।

(२) हुबली जंक्शन से दक्षिण-पूर्व;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

८१ हरिहर।

१६० बिरूर।

१७८ बानावार।

१८८ अर्सीकेरा।

२५८ तमकूर।

२८८ बंगलोर शहर।

धारवाड़।

हुबली जंक्शन से १२ मील पश्चिमोत्तर धारवाड का रेलवे स्टेशन है। बंबई हाते में (१५ अंश, २७ कला, उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ३ कला, २० विकला पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान धारवाड़ एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय धारवाड़ कसबे में ३२८४१ मनुष्य थे, अर्थात् १६७४९ पुरुष और १६०९२ स्त्रियां। इनमें २३८९६ हिंदू, ७६६७ मुसलमान, ८८३ कृस्तान, ३४८ जैन, ४२ पारसी और ५ यहूदी थे। इस जिले के हिंदुओं में ब्राह्मण और लिंगायत शरीफ हैं।

धारवाड़ कसबे में ७ महल्ले हैं। बहुत मकान दो मंजिले तीन मंजिले बने हुए हैं। प्रति मंगल वार को बाजार लगता है। सबसे ऊंची भूमि पर कलक्टर का आफिस है, यहांसे कसबा और उसके पास की बस्तियां तथा चारो ओर का देश देख पड़ता है। उसके पास एक मन्दिर है। कसबे

के उत्तर ओर नीची ऊंची भूमि पर धारवाड़ का किला है। किले की दीवार के भीतर तथा बाहर २५ फीट से ३० फीट तक चौड़ी दो खाई हैं। किले के भीतर कोई दर्शनीय वस्तु नहीं है। किला हीन दशा में है। किले से लगभग २ मील पश्चिमोत्तर देशी पैदल की छावनी, १ मील पश्चिम मुसाफिरों के लिये बंगला, थोड़ा पश्चिम दक्षिण कबरगाह, और बंगले से १ मील दक्षिण जरमन मिशन का बंगला है। धारवाड़ कसबे से लगभग १½ मील दक्षिण एक पहाड़ी है, जिसके ऊपर पत्थर से बना हुआ जैन ढांचे का एक चौकोना मन्दिर है। उसके खंभों में से एक खंभे पर पारसी लेख है, जिसमें लिखा है कि सन् १६६० में बीजापुर के बादशाह के डिपोटी ने इस मन्दिर को मसजिद बना लिया। दो जलाशयों से कसबे में पानी आता है, क्योंकि कसबे के प्रायः सब कूपो का पानी खारा है।

धारवाड़ कसबे में ब्राह्मण, लिंगायत, पारसी, मारवाड़ी इत्यादि लोग सौदागरी करते हैं। रुई, चावल इत्यादि माल धारवाड से अन्य देशों में भेजे जाते हैं और शोरा, नारियल, खजूर, कमैली, नील, तांबा इत्यादि धातु और अंगरेजी चीजें अन्य स्थानों से धारवाड़ में आती हैं। जेलखाने के कैदी लोग कपड़े, कालीन और बेंत की चीजें बहुत सुंदर बनाते हैं। धारवाड़ में 'सदर्न मरहटा रेलवे' का सदर स्थान है।

धारवाड़ जिला—बम्बई हाते के दक्षिणी महाराष्ट्रदेश (दक्षिणी किस्मत) में धारवाड़ जिला है। इसके उत्तर बेलगांव और बीजापुर जिला; पूर्व हैदराबाद का राज्य और तुंगभद्रानदी, जो मदरास हाते के बल्लारी जिले से धारवाड़ को अलग करती है; दक्षिणी मैसूर का राज्य और पश्चिम ओर उत्तरी कनारा जिला है। जिले की भूमि उपजाऊ है। धारवाड़ जिले में कोई बड़ी नदी नहीं है। पहिले इस जिले में सोना बहुत मिलता था। जिले के पूर्व भाग के डंबल के पड़ोस की पहाड़ियों में और उनसे निकली हुई नदियों में अब तक कुछ सोना मिलता है। एक प्रकार के लोग, जो जलगार कहलाते हैं, सोना निकालने का काम करते हैं। जिले के जंगल और

पहाड़ियों में भालू, बाघ, तेंदुए इत्यादि वनैले जंतु रहते हैं। धारवाड़ जिले का जलवायु बंबई हाते के सब जिलों से अधिक स्वास्थ्य कर समझा जाता है।

इस जिले में ३ मेले होते हैं;—(१) बांकीपुर सबडिविजन के हलगुरगांव में एक मुसलमान फकीर के दरगाह के पास फागुन में ३००० यात्रियों का मेला, (२) नवगढ सबडिविजन के अमनूरगांव में एक मुसलमान फकीर के यादगार में चैत्र में लगभग ६००० मनुष्यों का मेला और (३) रानी बेनूर सबडिविजन के गुरगूडपुर गांव में हिन्दू देवता मल्हार मार्तंड के स्मरणार्थ आश्विन में लगभग ९००० मनुष्यों का मेला होता है। जिले में लिंगायत लोगों के अनेक मठ हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय धारवाड़ जिले के ४५३५ वर्गमील क्षेत्रफल में ८८२९०७ मनुष्य थे; अर्थात् ७६९३४९ हिन्दू, १००६२२ मुसलमान, १०५२६ जैन, २३५६ कृस्तान, ३१ पारसी, १८ यहूदी और ५ बौद्ध। हिंदुओं में १३५३५७ पंचमशाली, ८७५६८ धांगर, ५४२५४ बिराध, ४४३४५ कुनबी, ३९११६ जंगम, २८४०३ ब्राह्मण, २७६१२ मांग, २२४९९ तेली, २१६८६ रेडी, १८९५३ कोस्ती (बिनाई के काम करने वाले), ११३९२ महारा और बाकी में कोली, सीपी, सुतार (बढ़ई), इत्यादि जातियों के लोग थे। राजपूत केवल ३४५० थे।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय धारवाड़ जिले के कसबे हुबली में ५२५९५, धारवाड़ में ३२८४१, गदग में २३८९९ और रानीबेनूर में १३७६१ मनुष्य थे। इनके अलावे धारवाड़ जिले में बंकापुर, नरगढ़, नवलगढ़ इत्यादि छोटे कसबे हैं।

इतिहास—लोगों की कहावत से विदित होता है कि विजयानगर राज्य के आनागुंदी में रामराजा रहते थे। उनके आधीन के जंगल महकमे का अफसर धारराव ने सन् १४०३ में धारवाड़ के किले को बनवाया। सन् १५६४ में तालीकोट की लड़ाई में विजयानगर के राजा के परास्त होने पर धारवाड़ जिला बीजापुर के राज्य में मिलगया। सन् १५६८ में बीजापुर के महम्मद आदिलशाह ने आनागुंदी के राज्य का विनाश कर दिया। सन

१६७८ में शिवाजी के आधीन महाराष्ट्रों ने धारवाड़ जिले में उपद्रव मचाया। उस समय से एक सौ वर्ष तक वह देश महाराष्ट्रों के अधिकार में रहा। सन् १६८५ में दिल्ली के बादशाह औरंगजेब ने धारवाड़ का किला लेलिया। सन् १७०३ में वह किला महाराष्ट्रों के आधीन हुआ। सन् १७५६ में मैसूर के हैदरअली ने धारवाड़ जिले पर अधिकार करके धारवाड़ कसबे को लेलिया। सन् १७९१ में महाराष्ट्रों ने अंगरेजी सहायता पाकर धारवाड़ कसबा और वहां का किला मुसलमानों से छीन लिया। सन् १८१८ में पेशवा के परास्त होने पर किले के समेत धारवाड़ जिला अंगरेजी अधिकार में होगया।

पहिले धारवाड़ जिले के कसबों और बड़े बड़े गांवों के पास एक एक किले थे; उनके भीतर शरीफ तथा धनी लोगों और बाहर गरीब लोगों के मकान थे। अब तक बहुतेरे किलों की निशानियां देख पड़ती हैं। पूर्व समय में बहुतेरे गावों के चारो ओर लुटेरों के आक्रमण से बचने के लिये मिट्टी तथा ईंटे की दीवार बनी हुई थी, जिनमें से बहुतेरी दीवार अब गिर गई हैं।

गोआ।

हुबली जंक्शन से पश्चिम १२ मील धारवाड़ का रेलवे स्टेशन और धारवाड़ के रेलवे स्टेशन से पश्चिम ४४ मील लोंडा जंक्शन, ५९ मील सदर्न मरहट्ठा रेलवे और इंडिया पोर्चुगीज रेलवे का जंक्शन, कैसिलरक् और ११० मील मोरमूगांव बंदरगाह का रेलवे स्टेशन है। कैसिलरक् स्टेशन के पास अंगरेजी और पोर्चुगीजों के राज्य की सीमा है। कैसिलरक से पश्चिम १७ मील के भीतर १२ जगह पहाड़ फोड़ करके उसके भीतर रेलवे लाइन बैठाई गई है। सुरंगी मार्ग, जो पहाड़ फोड़ कर बने हैं, १९० फीट से ८३८ फीट तक लंबे हैं। कैसिलरक् से ८½ मील पश्चिम दूधसागर नामक स्टेशन के पास एक उत्तम झरना है, जिसको लोग दूधसागर कहते हैं। खड़ी पहाड़ी के पादमूल के पास मोरमूगांव का रेलवे स्टेशन है। मोरमूगांव बंदरगाह से ब्रिटिस इंडिया स्टीम नवीगेशन कंपनी के आगबोट लगभग २६ घंटे में बंबई

शहर में पहुंच जाते हैं। बंदरगाह से पश्चिमोत्तर १०१ मील रत्नागिरि और २२७ मील बंबई है।

गोआ शहर समुद्र के किनारे पर (१५ अन्श, ३० कला उत्तर अक्षांश और ७३ अन्श, ५७ कला पूर्व देशांतर में) पोर्चुगीजों के हिंदुस्तान के राज्य की राजधानी है। वास्तव में ३ कसबों का नाम गोआ है;—पहिला गोआ, पुराना गोआ और पांजिम। इनमें से पहिला गोआ, जो ज्वारीनदी के किनारे पर कदंब.वंश के राजाओं द्वारा बनाया गया था; वह मुसलमानों के आक्रमण से पहिले हिंदुओं का पुराना शहर था, किंतु उसकी इमारतों की अब कोई निशानी नहीं है। दूसरा गोआ, जिसको लोग पुराना गोआ कहते हैं, पहिला गोआ से लगभग ५ मील उत्तर है। उसको वास्कोडीगामा के हिन्दुस्तान में आने से १९ वर्ष पहिले (सन् १४७९ ई०) मुसलमानों ने बसाया। उस प्रसिद्ध शहर को जब पोर्चुगल वालों ने जीता, तब वह पोर्चुगीजों के एशिया के राज्य की राजधानी हुआ। १६ वीं शदी में वह खूब बढ़ा चढ़ा था। किंतु पीछे महामारी से मनुष्य संख्या घट जाने से और पोर्चुगल गवर्नमेंट का सदर स्थान पांजिम होने के कारण वह शहर खंडहर होगया; परंतु अब तक वह हिन्दुस्तान के रोमन कथोलिक पादड़ियों का सदर स्थान बना है। वहां अब जंगल जमगया है, गिरजों और पादड़ियों के मकान के अतिरिक्त कुछ नहीं है। उनमें चार पांच गिरजे मरम्मत से हैं। सन् १८९० में पुराना गोआ में केवल ८६ मनुष्य थे।

पांजिम—पांजिम को नया गोआ भी कहते हैं। मोरमूगांव से ४ मील उत्तर पांजिम शहर तक अच्छी सड़क बनी हुई है। समुद्र के पास की एक जमीन की पट्टी के ऊपर मंडावी नदी के बांए किनारे पर उसके मुहाने से लगभग ३ मील दूर पोर्चुगीज वालों के राज्य का सदरस्थान पांजिम है, जिसमें सन् १८८१ में ११८५ मकान और ८४४० आदमी थे और इस समय लगभग ९५०० मनुष्य हैं, जिनमें से आधे से अधिक लोग देशी कृस्तानों के बंशधर हैं। पांजिम के बीच वाले महल्ले से रिबंदर शहरतली तक लगभग ३०० गज लंबी एक ऊंची सड़क बनी है, जिससे होकर प्रधान सड़क पुराने

गोआ को जाती है। पांजिम शहर निहायत सुंदर और साफ है। इसमें पोर्चुगल्ल गवर्नमेंट की बहुत सी सुन्दर इमारतें बनी हुई हैं। बारक अर्थात् सैनिकगृह दूर तक फैले हुए हैं, जिनमें ३०० सेना रहती है। बारक के पास पोर्चुगीजों के पूर्व गवर्नर अलबुकेर्क की ९ फीट से अधिक ऊंची प्रतिमा खड़ी है। पुराने किले में गोआ के गवर्नर रहते हैं। इनके अलावे पांजिम में हाई-कोर्ट, कष्टमहौस, अस्पताल, जेलखाना, स्कूल, म्युनिस्पल आफिस और अन्य अनेक आफिस हैं।

गोआ का राज्य—यह पश्चिमी किनारे पर पोर्चुगीजों का राज्य है। इसके पश्चिम ओर समुद्र और ३ ओर अंगरेजी जिले हैं: अर्थात् इसके उत्तर सावंत वाड़ी का राज्य; पूर्व-पश्चिमी घाट पहाडियों का सिलसिला, जो बेलगांव जिले से इसको अलग करता है, दक्षिण तरफ उत्तरी किनारा जिला और पश्चिम समुद्र है। इसकी सबसे अधिक लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक ६२ मील और सबसे अधिक चौड़ाई पूर्व से पश्चिम तक ४० मील तथा संपूर्ण क्षेत्रफल प्रायः १०६२ वर्गमील है।

गोआ राज्य पहाड़ी देश है। इसकी सबसे ऊंची पहाड़ी की सोनसागर नामक चोटी, जो राज्य के उत्तरीय भाग में है, समुद्र के जल से ३८२७ फीट ऊंची है। छोटी नदियां बहुत हैं। बहुतेरी नदियां एक दूसरी को काटती हुई बहती हैं; जिससे बहुत से छोटे टापू बन गए हैं, जिनमें १८ प्रधान हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय गोआ राज्य के आठो जिलों में ४४५४४९ मनुष्य थे; अर्थात् २६६६११ यूरेशियन और देशी क्रुस्तान; ६१९ यूरोपियन और अमेरिकन; २३० अफ्रिकन और बाकी में हिन्दू, मुसलमान इत्यादि। उस समय गोआ राज्य के कसबे मोरपू गांव में २९२२ मकान और ११७९४ मनुष्य; मपुका में २२८९ मकान और १०२८६ मनुष्य तथा पांजिम में ११८९ मकान और ८४४० मनुष्य थे।

गोआ के राज्य में अब तिजारत बहुत कम होती है; किन्तु वहां के बढ़ई, लोहार, सोनार तथा जूता बनाने वाले बड़े कारीगर हैं। वे अपनी कारीगरी की चीजों को बनाकर बेंचते हैं। नारियल, कमेली, आम, तरबूज, कटहल

इत्यादि फल; दारचीनी, मिर्च आदि मसाले और नमक आदि चीजें उस राज्य से अन्य स्थानो में भेजी जाती हैं और कपड़ा, चावल, तमाकू, चीनी, शराब, धातु और शीशे के वर्त्तन इत्यादि विविध प्रकार की वस्तु अन्य स्थानों से गोआ राज्य में आती हैं। सन् १८७३—१८७४ में गोआ के गवर्नमेन्ट को गोआ राज्य से १०८१४८० रुपये मालगुजारी आई थी। और १०७१४४० रुपये खर्च पड़े थे।

पोर्चुगीजों के हिंदुस्तान का राज्य—हिन्दुस्तान में पोर्चुगल के बादशाह के आधीन गोआ, दमन और ड्यू हैं। ये तीनों बंबई हाते में हैं;— गोआ उत्तरी किनारा जिले के उत्तर, दमन सूरत और थाना जिले के मध्य में और ड्यू काठियावार के दक्षिण भाग में। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पोर्चुगीजों के हिंदुस्तान के संपूर्ण राज्य का क्षेत्रफल १०६६ वर्गमील था और संपूर्ण मनुष्य संख्या ५६१३८४ थी।

इतिहास—सन् १०९ ईस्वी से गोआ कदंब वंश के राजाओं के, जिनमें पहिला राजा का नाम त्रिलोचन कदंब था, अधिकार में चला आया। सन् १३१२ में दिल्ली के अलाउद्दीन के सेनापति मलिक काफूर ने उसको अपने अधिकार में किया। सन् १३७० में बिजयानगर के हरिहर के मन्त्री विद्यारण्य माधव ने मुसलमानों को परास्त करके गोआ छीन लिया। सन् १४७२ में बहमनी खांदान के बादशाह दूसरा महम्मद ने गोआ को जीत कर बहमनी राज्य में मिला लिया। लगभग १५ वीं शदी के अन्त में यह बीजापुर के आदिलशाही खांदान के हस्तगत हुआ। सन् १५१० के १७ वीं फरवरी को पोर्चुगल के बादशाह के गवर्नर "अल्फंसोडी अल्युकर्क" ने बीजापुर वालों से गोआ छीन लिया। उसने वहां किलाबन्दी करके पोर्चुगीजों का राज्य नियत किया। उसके पश्चात् वह बहुत शीघ्रता से प्रसिद्ध होकर पोर्चुगीजों के पूर्वी राज्य की राजधानी हुआ। जब गोआ शहर बढ़ा चढ़ा था तब उसमें लगभग २००००० मनुष्य बसते थे और उसमें बड़ी भारी तिजारत होती थी। पोर्चुगीजों ने अनेक गिरजे बनवाए। हालैंड वालों तथा महाराष्ट्रों के कई बार आक्रमण से तथा देशी लोगों की बगावत से गोआ की बड़ी हानि हुई।

बार बार की लूट पाट से तथा वहां के जल वायु रोगवर्द्धक होने के कारण उसके निवासी लोग उसको छोड़ने लगे।

पहिले पुराने गोआ कसबे में पोर्चुगीजों के गवर्नर रहते थे। सन् १७५९ में पांजीम अर्थात् नया गोआ, जो मल्लुहों का छोटा गांव था, गवर्नर का सदर स्थान बना। वहां बीजापुर के युसुफ आदिलशाह का बनवाया हुआ किला पहिलेही से था। उस समय से पुराने गोआ की आबादी तेजी से घटने लगी। सन् १८४३ में गोआ कसबा पोर्चुगीज वालों के हिन्द के राज्य की राजधानी हुआ।

कारवार।

मोरमुगांव के बंदरगाह से ४८ मील दक्षिण-पूर्व कारवार का बंदरगाह है। बंबई हाते के पश्चिमीघाट पर उत्तरी किनारा नामक जिले का सदरस्थान और उस जिले में प्रधान कसबा कारवार है। एक सप्ताह पर बंबई के आगबोट मोरमुगांव तथा कारवार होकर दक्षिण जाते हैं। कारवार के बंदरगाह के किनारे से ५८० गज दूर समुद्र में लंगर की जगह है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कारवार कसबे की म्युनिसिपल्टी के भीतर १४५७९ मनुष्य थे; अर्थात् ११६६६ हिंदू, १८१६ कृस्तान, १०८३ मुसल्मान, ९ जैन, १ पारसी, १ यहूदी और ३ अन्य।

कारवार की म्युनिसिपल्टी के भीतर ९ बस्तियां हैं। कारवार में जिले की प्रधान कचहरियां, अस्पताल, टेलीग्राफ आफिस, स्कूल इत्यादि सरकारी मकान हैं। किनारे के आसपास कई टापू हैं, जिनमें से सबसे बड़े टापू पर एक लाइट हाउस बना है, जो समुद्र के जल से २१० फीट ऊंचा है और समुद्र में २५ मील दूर से देख पड़ता है।

उत्तरी किनारा जिला—बंबई हाते के दक्षिणी महाराष्ट्र देश में उत्तरी किनारा नामक जिला है। इसके उत्तर बलगांव जिला, पूर्व धारवाड़ जिला और मैसूर का राज्य; दक्षिण मदरास हाते म दक्षिणी किनारा जिला; पश्चिम पश्चिमीघाट का समुद्र और पश्चिमोत्तर गोआ का राज्य है। जिले का सदर स्थान कारवार है।

पश्चिमीघाट का सह्याद्रि सिलसिला, जो २६०० से ३००० फीट तक ऊंचा है; जिले में उत्तर से दक्षिण को गया है। जिले में धरदा, काली, गंगावली, शिरावती आदि छोटी नदियां वहती हैं। होनावर कसबे से ३८ मील उत्तर जरसोपा का प्रसिद्ध जलप्रपात अर्थात् बड़ा झरना है। कारवार से होनावर तक समुद्र के किनारे के पास की पहाड़ियों से मकान बनाने योग्य सुन्दर पत्थर निकलते हैं। जिले के चंद भागों में लोहा की खान हैं। जिले में जंगल बहुत है। उत्तरी किनारा जिले में बंबई हाते के सब जिलों से अधिक बनैले जंतु रहते हैं। इसमें अब तक अनेक प्रकार के बाघ, भालु, बनैले कुत्ते, सांभर, बनैले सूअर और भांति भांति के हरिन बहुत हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय उत्तरी किनारा जिले के ३९११ वर्गमील क्षेत्रफल में ४२१८४० मनुष्य थे, अर्थात् ३८१३२८ हिंदू, २४२८२ मुसलमान, १४५०९ क्रस्तान, १६६९ जैन, २५ यहूदी, १७ पारसी और १० बौद्ध। हिन्दुओं में ६३८६६ ब्राह्मण, ५१०५७ कुनबी, १८७६६ घेद, १०१५८ सोनार, ३२२२ सुतार (बढ़ई), २१६१ कुंभार, १९७१ तेली, ८३४लोहार, ३४४ राजपूत और बाकी२३१९३३ में अन्य जातियों के मनुष्य थे।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय उत्तरी किनारा जिले के कसबे कारवार में १५८७९ और कुमटा में १०७१४ मनुष्य थे। इनके अतिरिक्त ५ हजार से अधिक और १० हजार से कम आबादी वाले ८ छोटे कसबे और गोकर्ण प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। गोकर्ण और बनवासी में उत्तम पुराने मंदिर, जरसोपा में प्रसिद्ध जैन मन्दिर और मीरजान तथा सदाशिवगढ़ में पुराने किले हैं। जिले में १९ बंदरगाह हैं, जिनमें से कारवार, कुमटा, अंकोला, भटकल और होनावर प्रसिद्ध हैं।

इतिहास—पुराना कारवार कसबा एक समय कारवार कसबे से ३ मील पूर्व काली नदी के किनारे पर बहुत प्रसिद्ध तिजारती स्थान था। यहां सन् १६३८ में अंगरेजों ने एक कोठी कायम की। सन् १६६० में कारवार कसबा बीजापुर राज्य के अधिकार में था। उसी समय यहां ५० हजार जोलाहे रहते थे। सन् १६६५ में शिवाजी ने अंगरेजों से ११२० रुपया खिराज लिया।

सन् १६७४ में शिवाजी ने कारवार कसबे को लूटा और जला दिया; किन्तु अंगरेजों की कुछ हानि नहीं की। सन् १६७६ में वहां के देशी प्रधानों ने अंगरेजी कोठी पर जुल्म किया। सन् १६७९ में अंगरेजों ने कोठी का काम उठा लिया; किन्तु सन् १६८२ में उन्होंने फिर काम आरम्भ किया। सन् १६८४ में प्रायः सब अंगरेज कारवार कसबे से निकाल दिए गए। सन् १६९७ में महाराष्ट्रों ने कारवार को उजाड़ दिया। सन् १७१५ में वहां का पुराना किला तोड़ दिया गया। एक देशी प्रधान ने सदाशिवगढ़ में किला बनवाया। सन् १७२० में अंगरेजों को फिर वहां से अपना कारवार उठा लेना पड़ा। सन् १७५२ में फिर अंगरेजी कोठी कायम हुई। सन् १८०१ में पुराना कारवार कसबा हीन दशा में पड़चुका था।

उत्तरी किनारा जिले का इतिहास मदरास हाते के दक्षिणी किनारा जिले के इतिहास में सामिल है। पहिले उत्तरी किनारा जिला मदरास हाते में था; किन्तु सन् १८६२ में बम्बई हाते में कर दिया गया। उसके पीछे का वर्तमान कारवार कसबा है, जो पहिले मछुहों का छोटा गांव था।

गोकर्ण तीर्थ।

कारवार के बंदरगाह से ४० मील और मोरमू गांव के बंदरगाह से ८८ मील दक्षिण पूर्व उत्तरी किनारा जिले में समुद्र के किनारे पर कुमटा एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १०७१४ मनुष्य थे। कुमटा के बंदरगाह से १० मील उत्तर, समुद्र के किनारे से लगभग १ मील दूर बम्बई हाते के उत्तरी किनारा जिले में गोकर्ण एक गांव तथा प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। मोरमू गांव में रेलगाड़ी से उतर कर वहांसे आगबोट द्वारा गोकर्ण जाना चाहिए। कुछ यात्री हुबली के रेलवे स्टेशन से गोकर्ण जाते हैं। हुबली से लगभग १२५ मील दक्षिण-पश्चिम गोकर्ण तक बैलगाड़ी का मार्ग है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय गोकर्ण गांव में ४२०७ मनुष्य थे; अर्थात् ४१९१ हिन्दू, ९ कृस्तान और ७ मुसलमान।

गोकर्ण गांव में महाबळेश्वर शिव का द्राविड़ियन ढाचे का बड़ा मन्दिर

बना हुआ है। बड़े घेरे के भीतर महाबलेश्वर शिव का खास मन्दिर है;उसके आस पास अनेक मन्दिर और गोपुर बने हैं। मन्दिर में सर्वदा १०० से अधिक दीप जलाए जाते हैं। भारत वर्ष के सब विभागों के यात्री खास करके पर्यटन करने वाले साधु लोग गोकर्ण में जाते हैं। प्रति वर्ष फाल्गुन की शिवरात्रि को वहां मेला होता है, जिसमें २००० से ८००० तक आदमी एकत्र होते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–महाभारत—(वनपर्व, ८८ वां अध्याय) दक्षिण की ताम्रपर्णी नदी के देश में विख्यात गोकर्ण तीर्थ है। (२७७ वां अध्याय) लंकापति रावण खर की सेना का विनाश सुनकर रथारूढ़ हो त्रिकुटाचल और कालपर्वत को लांघ आकाश मार्ग से रमणीय समुद्र को देखता हुआ गोकर्ण में पहुंचा। उसने वहां मारीच राक्षस को, जो राम के डर से उस स्थान में आ पड़ा था, देखा। (२७८ वां अध्याय) वह मारीच को साथ लेकर पंचवटी के पास पहुंचा। मारीच मृग का विचित्र रूप धारण कर राम को वनांतर में लेगया। रावण ने सीता को हर कर चल दिया।

(अनुशासनपर्व, १८ वां अध्याय) चारुशीर्ष ने गोकर्ण तीर्थ में जाकर १०० वर्ष पर्यन्त तप किया। तब महादेवजी ने उसको सौ हजार वर्ष की परमायु तथा एक सौ पुत्र दिए।

अध्यात्मरामायण—(उत्तरकांड, प्रथम अध्याय) रावण ने कुम्भकर्ण और विभीषण के सहित गोकर्ण में जाकर कठिन तप किया था। जब एक सहस्र वर्ष बीत जाता था, तब वह अपना एक सिर काट कर अग्नि में होम कर देता था। इसी प्रकार से दस सहस्र वर्ष बीत ने पर जब वह अपना दसवां सिर काटने के लिए उद्यत हुआ, तब उसको वर देने के लिए ब्रह्मा प्रकट हुए। रावण ने ऐसा वर मांगा कि मै सुर, असुर, नाग, यक्ष आदि देवताओं से अवध्य होजाऊं, मनुष्य से मुझको कोई भय नहीं है। ब्रह्माजी उसको यह वर देकर कुम्भकर्ण के पास गए। कुम्भकर्ण ने सरस्वती के प्रेरणा से मोह युक्त होकर ऐसा वर मांगा कि मै ६ मास निद्रित रह कर एक दिन भोजन करूं। उसको यह वरदान देकर ब्रह्माजी विभीषण के निकट गए। विभीषण ने यह वर-

दान मांगा कि मेरा मन सर्वदा धर्म में तत्पर रहे। ब्रह्माजी इनको भी, ऐसाही होगा कह कर चले गए। (यह कथा वाल्मीकिरामायण, उत्तरकांड के १० वें सर्ग में है)।

लिंगपुराण—(२४ वां अध्याय) शिवजी ने कहा कि सोलहवें द्वापर में गोकर्ण नाम से हम अवतार लेंगे, जिनके नाम से यह स्थान गोकर्णवन के नाम से प्रसिद्ध होगा।

पद्मपुराण—(उत्तरखण्ड, २२२ वां अध्याय) गोकर्ण क्षेत्र में मृत्यु होने से मनुष्य निःसंदेह शिवरूप होजाता है; उसका फिर जन्म नहीं होता।

गरुड़पुराण—(पूर्वार्द्ध, ८१ वां अध्याय) भारतवर्ष में गोकर्ण नामक उत्तम तीर्थ है।

कूर्मपुराण—(उपरि भाग, ३४ वां अध्याय) तीर्थों में उत्तम गोकर्ण तीर्थ है, जिसमें गोकर्णेश्वर शिवलिंग के दर्शन करने से मनोवांच्छित फल लाभ होता है, तथा वह मनुष्य शंकर को अति प्रिय हो जाता है।

वाराहपुराण—(उत्तरार्द्ध, २०७ वां अध्याय) एक समय महर्षि सनत्कुमार ने सुमेरु पर जाकर ब्रह्मा से पूछा कि शिवजी का नाम उत्तर गोकर्ण, दक्षिण गोकर्ण और शृंगेश्वर किस भांति से हुआ? इन लिङ्गों के स्थान कहां हैं। ब्रह्माजी ने कहा कि मंदराचल के उत्तर किनारे पर मुंजवान पर्वत है; वहां पार्वती और स्वामिकार्त्तिक आदि गणों के साथ भगवान् शंकर विराजते थे। शिलाद मुनि के नंदी नामक पुत्र उस स्थान पर बहुत काल से उग्र तप कर रहे थे। शिवजी ने नंदी को बहुत वरदान दिया और कहा कि आज से सर्वत्र हमारे तुल्य तुम्हारा पूजन होगा। उन्होंने अपने जाने के समय नंदी से कह दिया कि हम श्लेष्मातक वन में जाते हैं, किसी के पूछने पर तुम उस स्थानको बतलाना नहीं। (२०८ वां अध्याय) शिवजी के जाने पर नन्दीश्वर ने चतुर्भुज तथा त्रिनेत्र होकर दिव्य रूप धारण किया और हाथों में त्रिशूल, परिघ, दंड और पिनाक धारण करके दूसरे शिव के समान वह होगया। देवताओं ने नन्दीश्वर के विलक्षण तेज को देख कर यह वृतांत इन्द्र से कहा। इन्द्र को भय हुआ कि यह तपस्वी अवश्य तीनों लोकों को अपने वश में करेगा, इस

लिए शिवजी से मिलकर के इसके शांति के लिये कोई उपाय पूछना चाहिए। ऐसा विचार कर ब्रह्मा और विष्णु को साथ ले वह नन्दी के पास पहुंचे। नन्दी ने ब्रह्मादि देवताओं का बड़ा सत्कार किया और इनके दर्शन से अपने को कृतकृत्य माना; परन्तु उनके पूछने पर शिव का पता नहीं बताया। (२०९ वां अध्याय) तब देवताओं ने मुंजवान पर्वत से शिवजी को खोजने चले और ढूंढते ढूंढते श्लेष्मातक वन में पहुंचे। वहां उन्होंने मृगरूप धारण किए हुए शिवजी को देखकर उनको पहचान लिया। सब लोग मृगको पकड़ने के लिए चारो ओर से दौड़े। इन्द्र ने उस मृग के शृंगका अग्र भाग जाकर पकड़ा, बिचला भाग ब्रह्मा ने पकड़ लिया और शृंग का मूल विष्णु के हाथ में आया। तब वह शृंग तीन टुकड़े होकर तीनों के हाथ में रह गया और मृग अन्तर्द्धान होगया। उस समय आकाशवाणी हुई कि हे देवताओं! तुम सब हमको नहीं पा सकोगे। अब शृंग मात्र के लाभ से सन्तुष्ट हो जाओ।

(२१० वां अध्याय) इन्द्रने शृंग के निज खण्ड को विधि पूर्वक अमरावतीपुरी में स्थापित किया और ब्रह्मा ने उसी भूमि में स्थापित कर दिया। दोनों खण्डों का नाम लोक में गोकर्ण प्रसिद्ध हुआ। विष्णु ने भी अपने हाथ के शृंग के खण्ड को लोक के हित के लिए स्थापित किया, जिसका नाम शृंगेश्वर हुआ। जहां जहां शृंग का खंड स्थापित हुआ, वहां शिवजी निज अंश कला से स्थित होगए।

लंकापुरी का रावण संपूर्ण पृथ्वी को जीत अपने पुत्र मेघनाद के साथ स्वर्ग में गया। उसने वहां इन्द्रादि देवताओं को जीत स्वर्ग में निज राज्य स्थिर किया। रावण ने अपने घर जाने के समय अमरावती के गोकर्णेश्वर को लंका में स्थापित करने के लिए अपने साथ ले लिया। वह अपने मार्ग के एक स्थान में गोकर्णेश्वर शिवलिंग को रख संध्योपासन करने लगा। जब चलने के समय वह शिवलिंग को उठा ने लगा, तब वह नहीं उठा। उस समय रावण उसी भांति लिंगको वहांही छोड़ कर लंका को चला गया। उसी लिंग का नाम दक्षिण गोकर्ण प्रसिद्ध हुआ। उसकी किसी ने प्रतिष्ठा नहीं की, लोक की रक्षा के लिए शिवजी अपने आप उस भूमि में स्थिर होगए (ब्रह्मा के

स्थापित शृंग के खंड का नाम उत्तर गोकर्ण है, उनका वृत्तांत भारत भ्रमण दूसरे खंड के गोलागोकर्णनाथ में और विष्णु के स्थापित शृंग के खंड का वृत्तात तीसरे खंड के शृंगेश्वरनाथ में लिखा हुआ है)।

स्कन्दपुराण—(ब्रह्मोत्तर खंड, दूसरा अध्याय) शिवजी कैलास और मंदराचल के समान गोकर्ण क्षेत्र में भी सर्वदा निवास करते हैं। वहां महाबल नामक शिवलिंग है, जिसको रावण ने बड़ा तप करके पाया और गोकर्णक्षेत्र में स्थापित किया।

उस क्षेत्र में अगस्त्य, सनत्कुमार, उत्तानपाद, अग्नि कामदेव, भद्रकाली, गरुड़, रावण, विभीषण, कुंभकर्ण आदि व्यक्तियों ने तप करके अपने अपने नाम से शिवलिंग स्थापित किए थे। वहा ब्रह्मा, विष्णु, स्कंद, गणपति, धर्म, क्षेत्रपाल, दुर्गा आदि देवताओं के स्थान हैं। वहां के सब तीर्थों में कोटितीर्थ मुख्य है और सब लिंगो में महाबल नामक शिवलिंग श्रेष्ठ है। पश्चिम के समुद्र के तीर पर ब्रह्महत्यादि पापो के नाश करने वाला गोकर्ण क्षेत्र है। उस क्षेत्र म फाल्गुन की शिवरात्रि को बिल्वपत्र से शिव के पूजन करने से संपूर्ण मनोरथ सिद्ध होते हैं।

दूसरा शिवपुराण—(८ वां खंड, १० वां अध्याय) पश्चिम के समुद्र के तट पर गोकर्ण नामक तीर्थ है। शिवजी को मंदराचल आदि स्थानों के समान गोकर्ण भी प्रिय है। वहां असंख्य मनुष्यो ने तप करके मोक्ष पाया है। उस तीर्थ के महाबल नामक शिवलिंग को रावण ने तप कर के पाया था और गणपति ने उसको वहा स्थापित किया।

(४३ वां अध्याय) एक समय लंकापति रावण ने हिमालय पर्वत पर शिवलिंग स्थापित करके शिव का बड़ा तप किया। जब शिवजी प्रकट नहीं हुए, तब उसने अपने ९ सिरो को काट कर शिवलिंग पर चढ़ा दिया। जब वह अपना दसवा सिर चढ़ाने को उद्यत हुआ तब शिवजी प्रकट हुए। शिवजी ने उसके सिरो को उसके धड़ से जोड़ दिया और उससे कहा कि हे दशानन! तुम क्या चाहते हो? रावण ने कहा कि मैं बलवान होऊं और तुम्हारे लिंग को अपने नगर में स्थापित करके उसका दर्शन करूं, यही मर-

दीन आप मुझको देवें। शिवजी ने कहा कि ऐसाही होगा; किंतु मार्ग में किसी स्थान पर तुम हमारे लिंगों को रक्खोगे तब वह वहांही रह जायंगे। ऐसा कह शिवजी दो लिंग रूप होगए। रावण दोनों को मंजूषों में करके कांवर पर ले चला। मार्ग में शिव की माया से रावण को बड़े वेग से लघु-शंका लगी। वह एक मुहूर्त के लिये एक गोप को कांवर थंभा कर मूत्र करने लगा। (४४ वां अध्याय) जब रावण के मूत्र करते हुए विलंब होगया और उसका मूत्र नहीं रुका, तब अहीर ने थक कर धरती पर कांवर रख दिया। उसके पश्चात् रावण बड़ा जोर करके लिंगों को उठाने लगा; किंतु वे नहीं उठे। तब वह दोनों लिंगों का अपने अंगूठे से दबा कर अपने घर चला गया। जो लिंग कांवर में रावण के आगे था, वह गोकर्ण में चंद्रभाल नाम से और जो पीछे था वह चिताभूमि में वैद्यनाथ नाम से प्रसिद्ध हुआ।

जरसोपा के जलप्रपात।

कुमटा के बंदरगाह से १० मील, कारवार के बंदरगाह से ५० मील और मोरमुं गाव के रेलवे स्टेशन से ९८ मील दक्षिण पूर्व (मंगलूर के बंदरगाह से १०३ मील पश्चिमोत्तर) होनावर का बंदरगाह है। उत्तरी किनारा जिले में समुद्र के तीर पर समुद्र के एक बड़े कोल के उत्तर सबडिवीजन का सदर स्थान होनावर एक छोटा कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ६६५८ मनुष्य थे, अर्थात् ५२५२ हिंदू, ८६८ कृस्तान और ५३८ मुसलमान। कोल के दक्षिण-पूर्व जरसोपा नामक नदी, जिसको शिरावती भी कहते हैं, समुद्र में गिरती है। होनावर में बड़ा कारबार होता है। बंबई के आगबोट मोरमूगांव, कारवार, कुमटा और होनावर होकर दक्षिण की ओर जाते हैं।

होनावर से १८ मील पूर्व नदी की धारा के पीछे जरसोपा नामक बस्ती और उस बस्ती से २० मील पूर्व की ओर कोदकानी बस्ती है। होनावर से जरसोपा बस्ती तक नदी में नाव जाती है और जरसोपा से कोदकानी तक जंगल का मार्ग है। जलप्रपातों के पास जाने के लिये सवारी के लिये मंचोला भी मिलता है।

कोदकानी बस्ती के पास जरसोपा नदी के ४ जलप्रपात अर्थात् बड़े झरने हैं। लोग कहते हैं कि ऐसा विचित्र जलप्रपात किसी जगह नहीं है; अमेरिका के नियागरा नामक जलप्रपात भी इसका मुकाबला नहीं कर सकता है। दूरही से जरसोपा के पानी का शब्द आकर कानों पर भनकता है। कोदकानी के आस पास २ डाक बंगले हैं। वहां के जंगलों में बनैले सूअर, बाघ इत्यादि बनजंतु रहते हैं। कोदकानी के पास से उसके नीचे अजीब तरह से खौलता हुआ जलप्रपातों का पानी देख पड़ता है। तीन स्थानो से जलप्रपात देख पड़ते हैं। घूम घाम कर खड़ी उतराई से इन स्थानों पर जाना होता है। जलप्रपातों के निकट की एक बस्ती में खास करके जैन लोग बसे हैं।

वहां ४ जलप्रपात हैं—पहिला का नाम ग्रेटफल, अर्थात् बड़ा जलप्रपात; दूसरा का नाम रोरर अर्थात् गर्जने बाला, तीसरे का नाम राकेट अर्थात् अग्निवाण और चौथे का नाम डेमब्लांची अर्थात् घूंघट बाली दुलहिन है। इनमें से पहिला जलप्रपात ८३० फीट ऊपर से १३२ फीट गहरे कुण्ड में गिरता है। देखने वाला नीचे कुण्ड में गिरते हुए जल को देख सकता है। रोरर नामक दूसरा जलप्रपात का अंग पहिले जलप्रपात से बड़ा है, किन्तु वह पहिला के समान तेजी से नहीं गिरता है। जलप्रपात का पानी कुंड में होकर नदी के बिस्तर में गिरता है। राकेट नामक तीसरा जलप्रपात का पानी फव्वारा बन कर वाणों के समान वर्षता है और डेमब्लांची नामक चौथा जलप्रपात ऊपर से निहायत मुलायम देख पड़ता है, वह देखने में नफीस तथा बहुत सुन्दर है।

रत्नागिरि।

मीरमू गांव के बंदरगाह से १०१ मील पश्चिमोत्तर और बम्बई शहर से १२६ मील दक्षिण कुछ पूर्व रत्नागिरि का बंदरगाह है। बम्बई हाते के दक्षिणी विभाग में (१६ अंश, ५९ कला, ३७ विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, १९ कला, ८० विकला पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान रत्नागिरि नामक कसबा है। बम्बई से आगबोट रत्नागिरि, मीरमू गाव, कारवार इत्यादि बंदरगाहों से होकर दक्षिण जाते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय रत्नागिरि कसबे में १४३०३ मनुष्य थे; अर्थात् १०४२७ हिन्दू, ३७०८ मुसलमान, ९९ कृस्तान, ५३ जैन, २ पारसी और १४ अन्य।

रत्नागिरि में जज, कलक्टर आदि हाकिमों की कचहरियां, कोढ़ियों के लिए एक अस्पताल और अनेक स्कूल हैं। दो कोलों के बीच के एक चट्टानी टीले के ऊपर पुराना किला है। कसबे से उत्तर की छावनी में थोड़ी फौज रहती है। प्रधान सड़कों पर और बंदरगाह में रात को लालटेनों की रोशनी होती है। लाइट हाउस पर समुद्र के जल से २५० फीट ऊपर लालटेन जलती है। कसबे से १½ मील दूर की एक नदी से कसबे में नल द्वारा पानी आता है।

जयगढ़, रत्नागिरि और पूरनगढ़ प्रधान बंदरगाह है। गल्ले, नमक और मकान बनाने के काम की लकड़ी अन्य स्थानों से रत्नागिरि में आती हैं और जलावन की लकड़ी, मछली तथा बांस रत्नागिरि से दूसरे स्थानों में भेजे जाते हैं।

रत्नागिरि जिला—इसके उत्तर जंजीरा का राज्य और कुलाबा जिला; पूर्व सेतारा जिला और कोल्हापुर का राज्य; दक्षिण सावंतवाड़ी देशी राज्य और पोर्चुगीजों का गोआ राज्य और पश्चिम समुद्र है। रत्नागिरि जिले को दक्षिणी कोकन भी कहते हैं। साधारण तरह से जिले की भूमि नीची ऊंची तथा पत्थरिली है। जिले में जंगल अब कम हैं, सर्प बहुत हैं। गर्म-पानी के झरने राजापुर, ल्हेड़गांव, संगमेश्वर गांव, अर्वली गांव, तोरला गांव और दपोली सबडिवीजन में हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय रत्नागिरि जिले के ३९२२ वर्ग-मील के क्षेत्रफल में ९९७०९० मनुष्य थे; अर्थात् ९२१०४६ हिन्दू, ७१०५१ मुसलमान, ३२७५ कृस्तान, १६९९ जैन, १६ पारसी, २ बौद्ध और १ यहूदी। हिन्दू और जैनों मे ४८६७८४ कुन्बी, ८४१९४ मांग और महार, ६८१७८ ब्राह्मण, ६८०३९ भंडारी (ताड़ी के काम करने वाले,) १६६३८ तेली, १९१०८ सुतार (बढ़ई), १२५४२ सोनार, १०९०६ कुम्भार, १०६२४ चमार, ८६ राजपूत और बाकी में अन्य जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय रत्नागिरि जिले के कसबे दापु-चन में १७०८३, रत्नागिरि में १४३०३, चिपलून में ११७१७ और विंगुरला में १०१३४ मनुष्य थे। जिले में राजापुर इनसे छोटा कसबा है।

इतिहास—रत्नासुर दैत्य के नाम से कसबे का नाम रत्नागिरि पड़ा है। उस देश में ऐसा प्रसिद्ध है कि शिवजी का अवतार ज्योतिबा ने यहां रत्नासुर को मारा था। कोल्हापुर के पास एक प्रसिद्ध मन्दिर में ज्योतिबा की पूजा होती है। चिपलून और कोल के गुफे से विदित होता है कि सन् ईस्वी के २०० वर्ष पहिले से ५० वर्ष पीछे तक रत्नागिरि के उत्तरीय भाग में बौद्ध लोग बसते थे। उसके पश्चात् जिले में अनेक राजा हुए, जिनमें चालुक्य वंश के राजा अधिक बलवान थे। सन १३१२ में मुसलमानों ने उस जिले में लूट पाट किया। वे लोग ६ मील में बसे, किन्तु जिले का संपूर्ण भाग सन् १४७० तक उनके आधीन नहीं हुआ। सन् १६०० में सावित्री के दक्षिण का संपूर्ण कोकन बीजापुर के आधीन हुआ। पोर्चुगीजों के बल घटने के समय शिवाजी ने बीजापुर की फौज और पोर्चुगीजों को जीत करके रत्नागिरि जिले में अपना अधिकार करलिया। सन् १७५५ में अंगरेजो ने पेशवा के साथ मिल करके सुवर्णदुर्ग नामक प्रधान किले का विनाश किया और उसके दूसरे वर्ष विजयदुर्ग को छीन लिया; तब पेशवा ने इन कामो के बदले में अंगरेजो को नव गावों के साथ बानकोट को देदिया। उन्हो ने सन् १७६५ में मालवान और रेडी को जीत कर, मालवान कोल्हापुर के राजा को और रेडी सावतवाडी के राजा को वापस दिया। उसके पश्चात् २३ वर्ष तक कोल्हापुर और सावतवाडी के राजा परस्पर लड़ते रहे। अन्त में दोनो राजाओं ने अंगरेजी सरकार को मालवान और वेंगुरला देकर के उससे मेल किया। सन् १८१८ में अंगरेजो ने पेशवा से अन्य जिलों के साथ रत्नागिरि जिले को लेलिया।

---o---

उन्नीसवां अध्याय।

(बंबई हाते में) वेलगांव, गोकाक का जलप्रपात, मीराज, कोल्हापुर, संगली, सेतारा, वाई और महाबलेश्वर।

वेलगांव।

हुबली जंक्शन से ९६ मील पश्चिम और मोरमुगांव के रेलवे स्टेशन से ६६ मील पूर्व लोंडा जंक्शन और लोंडा जंक्शन से ३३ मील उत्तर वेलगांव का रेलवे स्टेशन है। बंबई हाते के दक्षिणी महाराष्ट्र देश (दक्षिणी किस्मत) में (१५ अंश, ५१ कला, ३७ विकला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश, ३३ कला, ५९ विकला पूर्व देशान्तर में) समुद्र के जल से लगभग २५०० फीट ऊपर जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा वेलगांव है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय फौजीछावनी के साथ वेलगांव कसबे में ४०७३७ मनुष्य थे, अर्थात् २२१३७ पुरुष और १८६०० स्त्रियां। इनमें २७२४० हिंदू, ८६४५ मुसलमान, ३१८४ कृस्तान, १६१३ जैन, और ५५ पारसी थे। मनुष्य गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ९९ वां और बंबई हाते के अंगरेजी राज्य में १२ वां शहर है।

वेलगांव कसबा चट्टानी भूमि पर बसा है, उसमें वृक्ष बहुत हैं। उसके पूर्व किला है और पश्चिम फौजी छावनी फैली है। वेलगांव में जिले की प्रधान कचहरियां, जेलखाना, अस्पताल और छोटे बड़े लगभग १५ स्कूल हैं। कसबे के चारो ओर दूर दूर पर छोटी२ पहाड़ियां हैं। वहां नमक, सूखी मछली, नारियल और नारियल के छिलके के रस्से की खास करके सौदागरी होती है। चीनी तथा अनेक प्रकार के गल्ले चारो ओर से वेलगांव में आते हैं। एक अच्छी सड़क वेलगांव कसबे से कोल्हापुर राज्य होकर पूने को गई है।

किला—लगभग १००० गज लंबा और ७०० गज चौड़ा अंडाकार

शकल में बेलगांव का किला है। इसके चारो ओर पत्थर की दीवार और चौड़ी खाई है। किले के उत्तर एक बड़ा तालाब और पश्चिमोत्तर फाटक है। उसके भीतर तोपखाना, बारक (सैनिक गृह), और सिविलियन तथा अन्य लोगों के चंद बंगले हैं। नकारखाने के पूर्व एक सादी मसजिद; दक्षिण एक जैन मन्दिर, कमसरियट स्टोर के आंगन में दूसरा जैन मन्दिर और मंदिर के दक्षिण पूर्व सन् १५१९ का बनी हुई मसजिद है।

बेलगांव जिला—इसके उत्तर मीरास का राज्य, पूर्वोत्तर बीजापुर जिला; पूर्व जमखंडी और मधोल का राज्य, दक्षिण और दक्षिण-पूर्व धारवार और उत्तरी किनारा जिला और कोल्हापुर का राज्य, दक्षिण पश्चिम गोआ का राज्य और पश्चिम सावंतवाडी और कोल्हापुर का राज्य है। जिले की सीमा के भीतर आसपास के कई छोटे राज्य की भूमि हैं। जिले में बड़ा मैदान है; किन्तु जगह जगह झाड़ियों से हरे भरे नीची पहाड़ियों के सिलसिले हैं। अनेक चोटियों पर छोटे छोटे किले हैं। कृष्णा, घटपर्वा, और मलपर्वा जिले की प्रधान नदियां हैं; इनमें से किसी में सर्वदा नाव नहीं चल सकती हैं। जिले में अनेक प्रकार के पत्थर हैं। पहिले के अपेक्षा अब जंगल कम हैं। जिले के पश्चिम के भाग के मकान फूस या खपड़े से छाए गए हैं; परंतु पूर्व के भाग में, जहां वर्षा कम होती है, मिट्टी की छत वाले मकान बने हैं।

बेलगांव जिले के परसगढ़ नामक सबडीवीजन में बेलगांव कसबे से ४१ मील पूर्व कुछ दक्षिण सौदत्ती नामक कसबा है। उससे ५ मील पश्चिमोत्तर वर्ष में दो बार यल्लमादेवी का प्रसिद्ध मेला होता है,—दोनों मेले तीन दिनों तक रहते हैं; उनमें १५००० से २०००० तक लोग आते हैं। अगहन की पूर्णिमासी के मेले के समय यल्लामा के पति की मृत्यु होने का और वैशाख की पूर्णिमा के मेले के समय उसके जी जाने की लीला होती है। बेलगांव जिले में महाराष्ट्री, कनड़ी और हिन्दी भाषा प्रचलित है, सरकारी काम कनड़ी में होता है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय बेलगांव जिले के ४६५७ वर्गमील क्षेत्रफल में ८६४०१४ मनुष्य थे, अर्थात् ७८६२८६ हिन्दू, ६९२६९ मुसल-

मान,४४९९१ जैन, ६३२२ कृस्तान, ८९ यहूदी और ६४ पारसी। हिंदुओं में ९०८४८ लिंगायत, ३०४०४ ब्राह्मण, २७११ राजपूत और बाकी में अन्य जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय वेलगांव जिले के कसबे बेलगांव में ४०७३७, गोकाक में १२१०६, निपानी में ११७२८ और अथंनी में १०४१६ मनुष्य थे।

इतिहास—सन् १४४२ में महम्मदशाह के जनरल ख्वाजा महम्मद गवन ने बेलगांव कसबे को जीता। सोलहवीं शदी के आरंभ में कुछ समय तक वह खूरम तुर्क के अधिकार में था। १९ वीं शदी के आरंभ में बेलगांव जिला धारवार जिले के नाम से पेशवा के आधीन था। सन् १८१८ में अंगरेजों ने पेशवा को परास्त करके धारवाड़ जिले तथा बेलगांव के किले को ले लिया। अंगरेजी राज्य होने पर बेलगांव कसबे की उन्नति होने लगी। सन् १८३६ में धारवाड़ जिले के उत्तरी भाग को बेलगांव जिला बनाया गया।

गोकाक का जलप्रपात।

बेलगांव के रेलवे स्टेशन से ३६ मील (लोंडा जंक्शन से ६९ मील) उत्तर कुछ पूर्व गोकाकरोड का रेलवे स्टेशन है। बेलगांव जिले में गोकाक एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १२१०६ मनुष्य थे, अर्थात् ९६४१ हिन्दू, २२९२ मुसलमान और २१३ जैन।

गोकाकरोड के रेलवे स्टेशन से ४ मील दूर गोकाक का जलप्रपात है। वहां गतपर्भ नदी की धारा १७८ फीट ऊपर से चादर की तौर पर नीचे गिरती है, गोकाक कसबे के पास रहने के कारण उसको गोकाक का जलप्रपात कहते हैं। नीचे का कुण्ड बड़ा गहरा है; वहांसे गोकाक नहर निकाली गई है। कुण्ड के पास महादेव आदि देवताओं के कई एक पुराने मन्दिर हैं। वर्षा काल में जलप्रपात का दृश्य बहुत मनोरम रहता है; उस समय जल की चादर की चौड़ाई लगभग २०० फीट होजाती है।

मीराज।

गोकाकरोड के रेलवे स्टेशन से ४९ मील (लोंडा जंक्शन से ११८ मील), पूत्तर मीराज का रेलवे जंक्शन है। बम्बई हाते में कृष्णानदी से पूर्व मीराज राज्य की राजधानी मीराज एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय मीराज कसबे में २६०६० मनुष्य थे, अर्थात् १३१०५ पुरुष और १२९५५ स्त्रियां। इनमें २००४६ हिंदू,५२४४ मुसलमान, ७०३ जैन, ५६ क्रस्तान, ६ यहूदी और ५ पारसी थे।

मीराज राज्य के दो राजा हैं, एक राजा, जो बडी शाखा से हैं, मीराज में और दूसरा, जो छोटी शाखा से हैं, बडगांव में रहते हैं।

मीराज का वर्त्तमान राजा गंगाधरराव गणपति जाति के कोकन ब्राह्मण हैं। मीराज कसबे में उनका महल और १ अस्पताल बना हुआ है। उनके राज्य का क्षेत्रफल ३४० वर्गमील है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय २ कसबे और ५५ गांव तथा ६९७३२ मनुष्य थे। उनका राज्य शोलापुर और धारवाड जिला तथा कृष्णानदी की घाटी में हैं। जिससे उनको ३ लाख रुपये से अधिक मालगुजारी आती है, जिसमें से १२५६० रुपये अंगरेजी गवर्नमेंट को दिये जाते हैं। राजा को ५५४ फौज और ३२८ पुलिस रखने का अधिकार है।

बडगांव के वर्तमान राजा लक्ष्मणराव हरिहर कोकन ब्राह्मण हैं। उनके राज्य में, जो धारवाड, सतारा तथा सोलापुर जिले में है, सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ३५ गांव और ३०५४१ मनुष्य थे। राज्य का क्षेत्रफल २०८ वर्गमील है, जिससे उनको १६०००० रुपये से अधिक मालगुजारी आती है, जिसमें से ६४१० रुपये अगरेजी सरकार को 'कर' स्वरूप दिये जाते हैं। राजा को २७० फौज और २१९ पुलिस रखने का अधिकार है।

मीराज राज्य बम्बई हाते के दक्षिणी महाराष्ट्र देश के पोलिटिकल एजेंसी के आधीन है। दोनों राजा दक्षिण महाराष्ट्र देश में औवल दरजे के सरदार समझे जाते हैं।

इतिहास—पेशवा ने पटवर्द्धन वंश के एक ब्राह्मण को मीराज का राज्य दे दिया। (संगली के इतिहास में देखिए) उसके उपरांत उसमें से संगली का राज्य अलग होगया। उसके पीछे (पेशवा का राज्य अंगरेजी अधिकार में होजाने पर) सन् १८२० में अंगरेजी सरकार की मंजूरी से वह राज्य चार भागों में बट गया। उनमें से एक भाग का मालिक सन् १८४२ में और दूसरे भाग का मालिक सन् १८४५ में निप्पुत्र मर गया, इस कारण से वे दो भाग राज्य का अंत होगया, बाकी दो भाग, जिनमें से एक के राजा मीराज कसबे में और दूसरे के बड़गांव में रहते हैं, विद्यमान हैं।

कोल्हापुर।

गोकाकरोड के रेलवे स्टेशन से ४९ मील (लौंडा जंक्शन से ११८ मील) उत्तर मीराज जंक्शन और मीराज से २९ मील पश्चिम कुछ दक्षिण कोल्हापुर का रेलवे स्टेशन है। कोल्हापुर राज्य के खर्च से मीराज से कोल्हापुर तक रेलवे शाखा बनी है। बंबई हाते के (१६ अंश, ४२ कला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश, १६ कला पूर्व देशांतर में) एक प्रसिद्ध देशी राज्य की राजधानी कोल्हापुर है जिसको अनेक लोग करवीर कहते हैं; उसके निकट पुराने करवीर की छोटी बस्ती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय फौजी छावनी के साथ कोल्हापुर शहर में ४५८१५ मनुष्य थे, अर्थात् २३३९३ पुरुष और २२४२२ स्त्रियां। इनमें ४००७० हिन्दू, ४१९३ मुसलमान, १२७९ जैन, २६० कृस्तान और १३ पारसी थे। मनुष्य गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ८७ वां और (बड़ोदा को छोड कर) बम्बई हाते के देशी राज्यों में तीसरा शहर है।

कोल्हापुर शहर के आस पास पहाडियां हैं, इस लिए शहर के छोटे बड़े प्रायः सब मकान पत्थर से बने हैं। शहर उत्तम मकानों से भूपित है। अनेक सडकें पक्की तथा चौडी बनी हुई हैं। शहर की सफाई में बडी उन्नति हुई है। हाल में चंद सरकारी इमारत उत्तम बनी हैं। पबलिक बाग में टाउनहाल है। इनके अलावे कोल्हापुर में पोलिटिकल एजेंट की सुन्दर कोठी, गिरजा,

फिलखाना, अनेक अस्पताल तथा स्कूल हैं और अनेक शहर तथा कसबों के लोग आकर सौदागरी करते हैं।

कोल्हापुर शहर के उत्तर ब्रह्मपुरी नामक पवित्र पहाड़ी के पास ब्राह्मणों के मुर्दे जलाये जाते हैं; उससे लगभग १०० गज उत्तर पंचगंगा नामक नदी के निकट रानीबाग में राजवंश के मुर्दों का अग्नि संस्कार किया जाता है। रानी बाग के समीप एक घेरे के भीतर महाराष्ट्र प्रधान शंभाजी, शिवाजी ताराबाई और आईबाई के समाधि मन्दिर हैं। बौद्ध लोगों के मन्दिर तथा मकानों की अनेक निशानियां शहर के आस पास मिली हैं। कोल्हापुर के पास ३ मील घेरे की एक गहरी झील है। कोल्हापुर कसबे से ३ मील दूर पावरा गांव के पास कोल्हापुर की पैदल सेना रहती है।

महाराज के महल—कोल्हापुर में कोल्हापुर नरेश के दो राजमहल हैं,—पुराना महल शहर के मध्य में और नया महल शहर के बाहर है। पुराने महल का घेरा बहुत बड़ा है; उसके चौक के दरवाजे पर नक्कार खाना बना है, जिससे भीतर प्रवेश करने पर दहिने ओर राजवाड़ा अर्थात् पुराना महल देख पड़ता है। उसके दूसरे मंजिल के दरबार कमरे में कोल्हापुर के मृत महाराज राजाराम को गोद लेने वाली अहिल्याबाई और दूसरे किसी प्रधान की माता अकाबाई की तस्वीर और तीसरे मंजिल में एक हथियार खाना है। चौक के दक्षिण बगल में खजाना का मकान और उस मकान में लगा हुआ राज्य को आफिस है। पुराने महल के पास हाईस्कूल और उसके आगे देशी पुस्तकालय है।

शहर और रेजीडेंसी के बीच में ७००००० रुपये के खर्च से अंगरेजी ढंग का नया राजमहल बना है। एक बहुत बड़े रमने के भीतर राजमहल और एक बड़ा सरोवर है। राजभवन में एक लम्बा चौड़ा मनोहर दरबार गृह बना है। उसकी छत तथा दीवारों में सफेद पालिस पर सुनहली गिलटी द्वारा विविध भांति के फूल पत्र और पक्षियों की मूर्तियां बनी हुई हैं। वहां ऊपर अनेक बरामदे भी हैं। दरबार गृह के फर्श में विविध रंग के बहुमूल्य पत्थरों की सुन्दर पचीकारी की हुई है। उसके ऊपर बड़ा कालीन बिछा है। उस गृह के द्वार के सामने मार्बुल का अर्द्ध चंद्राकार सुंदर चबूतरा है, जिसके

ऊपर सुन्दर सिंहासन रक्खा है। दरबार गृह के एक ओर की दीवार के पास पूर्वोक्त सिंहासन और तीन ओर की दीवारों में गाथिक ढंग के द्वार बने हैं, जिनके ऊपर की मेहराबियों में भांति भांति के चित्रों में चित्रित शीशे जड़े गए हैं। दरबार गृह के कमरे के पास उससे लगे हुए अंगरेजी ढंग से सजे हुए दो मनोरम कमरे हैं, जिनमें महाराज से भेंट करने वाले अंगरेज लोग आकर ठहरते हैं।

महालक्ष्मीजी का मन्दिर—शहर के भीतर पुराने राजमहल के निकट खजाना घर और खजाना घर तथा राज्य के आफिस के पीछे, कोल्हापुर की प्रसिद्ध महालक्ष्मीजी का विशाल मन्दिर है, जिसको बहुत लोग अम्बा का मंदिर भी कहते हैं। उस मंदिर में पुरानी कारीगरी का अनेक उदाहरण विद्यमान है। मंदिर का प्रधान भाग देशी खानों से निकले हुए नीले रंग के पत्थरों से बना हुआ है। एक बड़े घेरे के पूर्व बगल में महालक्ष्मीजी का निज मंदिर है। मंदिर के गुंबज के नीचे की नकाशी का काम जैन मंदिरों से ढांचे का है। जैन लोग कहते हैं कि यह हमारी इष्ट देवी पद्मावती का मंदिर है। प्रति वर्ष वैशाखमास में महालक्ष्मीजी की प्रतिनिधि स्वरूप पीतल की प्रतिमा शहर में चारो ओर फिराई जाती है; उस समय बहुत से लोग एकत्र होते हैं। महालक्ष्मीजी के मंदिर के पास पद्मसरोवर, काशी और मणिकर्णिकातीर्थ, और विश्वनाथ, जगन्नाथ आदि देवता हैं।

देवीभागवत—सातवें स्कंध के ३८ वें अध्याय में लिखा है कि दक्षिण देश में सह्याद्रि नामक पर्वत पर कोल्हापुर नामक नगर में लक्ष्मीजी सदा स्थित रहती हैं (लोग कहते हैं कि करवीर माहात्म्य में महालक्ष्मीजी की महिमा का विशेष विवरण लिखा है)।

मंदिर और गुफा—पनाला के किले के पास जाने वाली सड़क के समीप समुद्र के जल से लगभग २६०० फीट ऊंची ज्योतिबा नामक पहाड़ी है। उसके ऊपर बहुतेरे मंदिर बने हुए हैं, जिनमें से ३ शिव मंदिर प्रधान हैं। उन मंदिरों में कोई बहुत पुराना मंदिर नहीं है। उस पहाड़ी के बगल में पत्थर निकाल कर बनाई हुई कई एक पुरानी कोठरियां अर्थात् गुफाएं हैं।

ज्योतिबा पहाड़ी के पास पाविला की गुफा में ३४ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा एक बड़ा कमरा है उसमें चट्टान के १४ स्तंभ लगे हैं और भीतर की दीवारों में काट कर छोटी कोठरियां बनाई हुई हैं। कमरे के बाएं के बगल में (आगे से पीछे तक) ३० फीट लंबी और १५ फीट चौड़ी बेडौल शक्ल की चैत्यगुफा अर्थात् बौद्ध मन्दिर है।

पनाला का किला—कोल्हापुर शहर से १२ मील पश्चिमोत्तर समुद्र के जल से लगभग ३००० फीट ऊपर पनाला का पहाड़ी किला है। ७ मील तक सुगम मार्ग और ५ मील खड़ी चढ़ाई की राह है। पूर्व समय में यह किला दुर्गम तथा दुर्भेद्य था, किन्तु अब उसमें जाने का सुगम मार्ग बना दिया गया है, जिस पर तांगा चला जाता है। पहाड़ी के सिर पर किला है। किले के "चार दर्वाजे" के पास मारुती का मंदिर है। उससे आगे जाने पर बाई ओर एक स्कूल देख पड़ता है, जो पहिले मुसलमानों का मकबरा था। उससे थोड़े आगे सड़क के उसी बगल में शंभाजी का मंदिर है। खड़ी पहाड़ी के बगल पर शिवाजी की दो मंजिली इमारत है, जिसमें गर्मी की ऋतुओं में कोल्हापुर के पोलिटिकल एजेंट रहते हैं। उससे ½ मील दक्षिण-पश्चिम १३० फीट लंबा, ५७ फीट चौड़ा तथा ३० फीट ऊंचा पत्थर से बना हुआ मालखाना है। शिवाजी के समय में उसमें फौज के खाने के लिये गल्ले रक्खे जाते थे। सन् १६५९ और १६६० में जब बीजापुर की सेना ने इस किले में ४ मास तक शिवाजी को घेर रक्खा था, तब उसी मालखाने के गल्ले से उनकी सेना का निर्वाह हुआ था। किले के पश्चिम बगल पर नक्काशीदार तेहरा फाटक है। एक देव मंदिर के पास सन् १४९७ का बना हुआ एक मगवर है। किले के पूर्व वाले फाटक से लगभग १ मील दूर पवनगढ़ का किला है।

कोल्हापुर का राज्य—बंबई हाते के अंगरेजी जिलों के बीच में कोल्हापुर का राज्य है। इसके उत्तर सतारा जिला; पूर्वोत्तर कृष्णानदी, जो सांगली, मीरज आदि देशी राज्यों से कोल्हापुर को अलग करती है पूर्व तथा दक्षिण बेलगाम जिला और पश्चिम सह्याद्रि पर्वत है। कोल्हापुर राज्य में महाराष्ट्र देश तथा करनाटक के पुराने हिंदू राज्य का भाग शामिल

है, इस लिये राज्य में महाराष्ट्री तथा कनड़ी दोनों भाषा प्रचलित हैं। राज्य की राजधानी कोल्हापुर शहर है। राज्य के पश्चिम ऊंची पहाड़िया और मध्य में नीची पहाड़ियों की कई लाइनें और पूर्व के भाग में खेतों का मैदान है। राज्य के पश्चिम भाग में पनाला, विशलगढ़, बावरा, भूंधरगढ़ आदि, पहाड़ियों पर कोल्हापुर के प्रधानों के पुराने किले हैं। पनाला, विशालगढ़, भूंधरगढ़ और कोल्हापुर की पहाड़ियों में लोहा के ओर मिलते हैं। राज्य में अनेक पहाड़ियों से पत्थर निकाला जाता है। कोल्हापुर राज्य की आठों नदियों में से कोई ऐसी नहीं है, जो गर्मी की ऋतुओं में हेल कर पार जाने लायक न होय। इस राज्य में धान, मिलेट, ऊख, तंबाकू, कपास और अनेक भांति की तरकारियां बहुत पैदा होती हैं। धातु और मिट्टी के बर्तन; ऊन और सूत के कपड़े, कागज, इत्तर, लाह इत्यादि वस्तु तैयार होती हैं। रूई, चीनी, तंबाकू और अनेक प्रकार के गल्ले इस राज्य से बाहर के कसबों में भेजे जाते हैं और रेशम, नामक, गधक, अनेक भांति के मसाले और खुरदा वस्तुए अन्य स्थानों से इस राज्य में आती हैं। कोल्हापुर, शिरोल, वड़-गांव, अलटा, इंचल करंजी कागल और मलकापुर में देशी सौदागरी होती है। कोल्हापुर को 'कर' देने वाली विशलगढ़, बावरा, कागल, इंचलकरंजी आदि १३ मिलकियतें हैं। कोल्हापुर कसबे में बड़ा जेलखाना और राज्य में १३ मातहत जेल हैं। कोल्हापुर राज्य में एक प्रविंशियल कालिज, एक देशी पुस्तकालय और छोटे बड़े लगभग १७५ स्कूल हैं। राज्य से महाराज को वार्षिक लगभग २३००००० रुपये मालगुजारी आती है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय कोल्हापुर राज्य के २८१६ वर्ग-मील क्षेत्रफल में ८००१८९ मनुष्य थे, अर्थात् ७१९१६४ हिन्दू, ४६७३२ जैन, ३३०२२ मुसलमान, १२५३ क्रस्तान, १२ बौद्ध, ५ यहूदी और १ पारसी। हिंदुओं में ३६२१९८ कुनबी, ७२३९१ लिंगायत, ६९३१४ महारा, ३८३२६ धांगड, २९४४६ ब्राह्मण, १३३२३ मांग, ११५५१ सोनार, १०२१९ चमार, ८५०९ कुम्भार, ७४७६ नापित (नाई) ५९२४ कोष्टी, ५६६६ दर्जी, ५२७७ बिराध, ५२०८ धोबी, १५०० राजपूत और बाकी में अन्य जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कोल्हापुर राज्य के कसबे कोल्हापुर में ४५८१५, इचल करंजी में ११२०० और शिरोल, कागल में दस दस हजार से कम मनुष्य थे।

इतिहास—देशी कहावतों से विदित होता है कि पूर्वकाल में कोलापुर के पास का 'करवीर' नामक नगर बहुत प्रसिद्ध तथा एक पवित्र स्थान था। महालक्ष्मीजी का बड़ा मंदिर उन कहावतों की साक्षी है। उस मंदिर के चारो ओर के बरामदे अब नहीं हैं। कोल्हापुर कसबे के उत्तर बगल में अब तक करवीर नामक एक छोटा गांव है। प्रथम करवीर राजधानी था; पीछे कोल्हापुर राजधानी बनाया गया। कोल्हापुर शहर के आस पास बौद्धों की इमारातों के अनेक निशानियां मिली हैं। लगभग सन् १८८० में एक बौद्ध स्तूप में बिल्लौर का एक डबा मिला था, जिसके ऊपर सन ईसवी के आरंभ से लगभग ३०० वर्ष पहिले के राजा अशोक के समय का लेख था, इससे जान पड़ता है कि कोल्हापुर अति प्राचीन स्थान है। आस पास की भूमि खोदने पर अनेक छोटे मंदिर तथा अन्य इमारतें मिली हैं, जो किसी समय में भूकंप में पृथ्वी में धस गई थीं।

पश्चिमीघाट पर बसने वाले सिलहार वंश के प्रधान के तीसरे पुत्र के वंशधरों ने कोल्हापुर शहर के चारो ओर के देश और बेलगांव जिले के पश्चिमोत्तर के भाग को १० वीं सदी के अंत में अपने अधिकार में किया। सन् १२१३—१२१४ में देवगिरि के यादववंश के राजा ने उनसे वह देश और पनाला का किला छीन लिया। पीछे बहमनी खांदान के बादशाह ने यादवों को निकाल कर वहां अपना अधिकार जमाया। पीछे उस देश को बीजापुर के बादशाह ने अपने अधिकार में किया। उसने सन् १५४९ में पनाला के किले की मरम्मत करवाई। सन् १६५९ में महाराष्ट्र कुलभूषण महाराज शिवाजी ने बीजापुर वालों से कोल्हापुर का देश और पनाला का किला छीन लिया। सन् १६९० में दिल्ली के बादशाह औरंगजेब ने शिवाजी के वंशधरों से पनाला का किला ले लिया।

सन् १६८० ई० में महाराज शिवाजी के देहान्त होने पर उनके पुत्र शंभाजी उनके उत्तराधिकारी हुए, जिनको सन् १६८९ में औरंगजेब ने मार डाला और शंभाजी के पुत्र शाहूजी को कैद कर रक्खा। सन् १७०० में जब शिवाजी के छोटे पुत्र राजाराम मर गए; तब उनकी विधवा स्त्री ने शिवाजी नामक अपने पुत्र को कोल्हापुर में रक्खा। सन् १७०७ में औरंगजेब के मरने के पश्चात् शाहूजी दिल्ली की आधीनता स्वीकार करके अपने दादा शिवाजी की जायदाद का अधिकारी बने। उन्हों ने सितारा को अपनी राजधानी बनाया। बड़े शिवाजी के बड़े पुत्र शंभाजी के और छोटे पुत्र राजाराम के वंशधरों में कई वर्षों तक अपने अधिकार के लिये झगड़ा जारी रहा। सन् १७३१ में संधि हुई, जिसके अनुसार राजाराम के वंशधरों के आधीन कोल्हापुर स्वतंत्र राज्य माना गया। सन् १७६० में राजाराम के पुत्र की मृत्यु होने पर भोंशला वंश के एक मनुष्य उस राज्य के उत्तराधिरी हुए। उसको कई पुश्त के पीछे तीसरा शिवाजी कोल्हापुर की गद्दी पर थे। सन् १८४५ में कोल्हापुर राज्य की निगरानी के लिये अंगरेजी पोलिटिकल सुपरिंटेंडेंट कायम हुआ और शहर के पास एक कंप नियत किया गया। सन् १८५७ के बलवे के समय कोल्हापुर के बलवाइयों ने हथियार खाने से हथियारों को और सरकारी खजाने से ४५००० रुपये ले लिए। तीसरा शिवाजी ने सन् १८६६ में अपने मरने के समय राजाराम नामक अपने भांजे को गोद लिया। सन् १८७० में राजाराम इंगलैंड से हिंदुस्तान को लौटते समय मार्ग में मर गये। तब उनकी विधवा रानी ने एक लड़के को गोद लेकर कोल्हापुर के सिंहासन पर बैठाया। वह लड़का महाराज शिवाजी छत्रपति के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सन् १८८३ में शिवाजी छत्रपति उन्मत्त होकर मर गए। उनका कोई पुत्र नहीं था इस लिये उनकी रानी ने कोल्हापुर राज्य के आधीन के कागल नरेश के बड़े पुत्र यशवंत राव को, जिनका जन्म सन् १८७४ में हुआ था, गोद लिया। यशवंतराव सन् १८८४ के मार्च में महाराज शाहू छत्रपति के नाम से कोल्हापुर राज्य के उत्तराधिकारी हुए। सन् १८९१ में बड़ोदा के एक राजपुरुष की राजकुमारी से उनका

ब्याह हुआ। कोल्हापुर के राजाओं को दत्तक पुत्र बनाने का अख्तियार है। उनको अंगरेज महाराज की ओर से १९ तोपों की सलामी मिलती है।

संगली।

मीराज जंक्शन से ६ मील पश्चिमोत्तर (लोंदा जंक्शन से १२४ मील उत्तर) संगली का रेलवे स्टेशन है। बंबई हाते के दक्षिणी महाराष्ट्र देश में कृष्णा नदी के पास संगली नामक देशी राज्य की राजधानी संगली कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय संगली कसबे में १४७९८ मनुष्य थे, अर्थात् ११७५५ हिंदू, २०५७ मुसलमान, ९२७ जैन, और ५९ कृस्तान।

संगली में एक छोटा किला है, जिसके भीतर वहां के राजा का महल और उनके अनेक आफिस बने हुए हैं। बाहर अनेक आफिस और कसबे की बस्तियां हैं। कसब से दक्षिण एक छोटी नदी कृष्णा में मिली है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय संगली राज्य के ८९६ वर्गमील में १९६८३२ मनुष्य थे। यह राज्य बंबई हाते के दक्षिण महाराष्ट्र देश के पोलिटिकल एजेंसी के आधीन ६ टुकड़ों में है। राज्य से राजा को ९८११६० रुपये मालगुजारी आती है। संगली के राजा कोकन ब्राह्मण हैं।

इतिहास—पेशवा ने पटवर्द्धन वंश के हरिभट्ट नामक कोकन ब्राह्मण को मीराज का राज्य दे दिया। सन् १७७२ में गोविंदरावहरि के पोते चिंतामणि राव राज्य के अधिकारी हुए। चिंतामणि राव केवल ६ वर्ष के लड़के थे, इस लिये उनके लड़कपन में उनके चाचा गंगाधर राव ने राज्य का प्रबंध किया। लड़के के बड़े होने पर चचा भतीजे में राज्य के लिये झगड़ा उठा। अन्त में उस राज्य म से मीराज का राज्य गंगाधर राव को और संगली का राज्य चिंतामणि राव को मिला। उस समय मीराज की मालगुजारी ४७९८०० रुपये और संगली की ६३५१८० रुपये थी। सन् १८१८—१८१९ में पेशवा के परास्त होने के पश्चात् चिंतामणि राव अङ्गरेजी

गवर्नमेंट के आधीन हुए। सन् १८५१ में चिंतामणि राव का देहांत होगया। अब उनके पुत्र वर्त्तमान संगली नरेश धुंदीराव चिंतामणि हैं।

सतारा।

संगली के रेलवे स्टेशन से ७६ मील (लोंडा जंक्शन से २०० मील) उत्तर कुछ पश्चिम और पूना के रेलवे स्टेशन से ७८ मील दक्षिण सतारा रोड का रेलवे स्टेशन है। बंबई हाते के दक्षिणी विभाग में (१७ अन्श, ४१ कला, २५ विकला उत्तर अक्षांश और ७४ अन्श, २ कला, १० विकला पूर्व देशांतर में) कृष्णा और येना नदी के संगम के निकट जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा सतारा है। सतारा रोड के रेलवे स्टेशन से पश्चिम १० मील की पक्की सड़क सतारा कसबे को गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय फौजी छावनी के सहित सतारा कसबे में २९६०१ मनुष्य थे; अर्थात् १५४०६ पुरुष और १४१९५ स्त्रियां। इनमें २४६८५ हिंदू, ३७६० मुसलमान, ५५९ कृस्तान, ४३७ जैन, ७८ पारसी, ७६ यहूदी और ६ अन्य मनुष्य थे।

सतारा के मकान छोटे तथा सादे हैं, किंतु कसबा साफ तथा उसकी सड़कें चौड़ी हैं। वहां एक हाई स्कूल, जेलखाना, अस्पताल और जिले की कचहरियां हैं। सतारा के पूर्व और पश्चिम पहाड़ियां हैं। पश्चिम की पहाड़ी से कसबे तक ४ मील लंबी एक नाली लाई गई है, जिस द्वारा कसबे में पानी आता है। १½ मील लंबी और इतनीही चौड़ी भूमि पर फौजी छावनी फैली है। उसके दक्षिण किनारे पर पुरानी रेजीडेंसी का हाता है, जिसके उत्तर फाटक के बाहर यूरोपियन सिपाहियों की लाइनें; लाइनों के उत्तर देशी सिपाहियों की लाइनें और सदर बाजार है। अङ्गरेजी बारक के ½ मील पश्चिम एक वृक्ष के चारो ओर पत्थर का चबूतरा है, जिस पर सतारा के राजा शाहूजी और यहां के मृत कमिश्नर के स्मरणार्थ एकहृदय ग्राहक लेख देखने में आता है। यूरोपियन बारक से ½ मील पूर्वोत्तर नया कबरगाह है।

कसबे के बीच में सतारा के राजा आपासाहब का बनवाया हुआ पुराने

महल के पास, उससे लगा हुआ नया महल है, जिसके आंगन के उत्तर बगल पर एक बहुत बड़ा कमरा; आंगन के आगे कलक्टर साहब का अफिस और बड़े कमरे के पश्चिम जज साहब का अफिस है। नया महल से १ मील की सड़क पूर्व ओर पुराने कबरगाह को गई है। पुराना महल अब छोड़ दिया गया है। उससे लगभग २०० गज दूर राजाराम का विला (बाहर का मकान) और बाग है।

राजाराम को सेतारा की मृतरानी ने दत्तकपुत्र बनाया था; किंतु अंगरेजी सरकार ने उसको उत्तराधिकारी स्वीकार नहीं किया। राजाराम के पास सेतारा के राजाओं के भूषण और शिवाजी के जयभवानी नामक प्रसिद्ध तलवार तथा अनेक दूसरे हथियार; अर्थात् एक बघानखां नामक हथियार, जिससे उन्हों ने अफजलखां को घायल किया था; एक गेंड़े का ढाल, जिस पर हीरे के ४ फूल जड़े हुए हैं; एक डब्बा जिस पर हीरा, लाल आदि रत्न जड़े हैं; रत्न जड़े हुए कलम तथा दावात, लडाई का बखतर और ११ फीट लंबा (जिसकी मूठ में हीरे आदि रत्न जड़े हुए हैं) सुन्दर खंजर है।

एक छोटी खड़ी पहाड़ी के सिर पर सतारा का किला है। किले के उत्तर बगल पर मजबूत फाटक बना हुआ है। नीचे से चढ़ाव का मार्ग फाटक तक गया है। किले के भीतर अब चंद बंगलों के अतिरिक्त कुछ नहीं है; प्राय: सर्वत्र उजाड़ हो रहा है। किले से चारो ओर पहाड़ियां देख पड़ती है, जिनमें से चंद पहाड़ी पर उजड़े पुजड़े किले हैं। ऐसा प्रसिद्ध है कि पनाला के राजा ने, जो सन् ११९२ में राज्य करता था, सतारा के वर्त्तमान किले को बनवाया था।

सतारा से ३ मील पूर्व कृष्णा और वेना नदी के संगम के पास महुली नामक गांव है, जहां चारो तरफ के लोग मुर्दे ला कर जलाते हैं। नदी के तीर पर सन् १७०० का बना हुआ रामेश्वर का मंदिर, सन् १७४२ का बना हुआ भोलेश्वर महादेव का मंदिर और सन् १८२८ का बना हुआ राधाशंकर का मंदिर और संगम के पास सन् १७३८ का बना हुआ वहां के सब मंदिरों से बड़ा विश्वेश्वर महादेव का मंदिर और सन् १६७९ का बना हुआ

संगमेश्वर महादेव का मंदिर है । संगमेश्वर के मंदिर के बाहर के फाटक से नीचे कृष्णा नदी के तीर तक सीढ़ियां बनी हैं। इनके अतिरिक्त वहां बहुतेरे अन्य मंदिर और सतियों के स्थान हैं।

सतारा जिला—इसके उत्तर नीरानदी, जो पूना जिले से सतारा को जुदा करती है और दो छोटे देशी राज्य; पूर्व शोलापुर जिला और कई मिलकियतें; दक्षिण कोल्हापुर और संगली का देशी राज्य तथा बेलगांव जिले के चंद गांव और पश्चिम सह्याद्रि पहाड़ियों की श्रेणी है, जो कुलाबा और रत्नागिरि जिले से इस जिले को जुदा करती है । जिले का सदर स्थान सतारा कसबा है । जिले में पहाड़ियां बहुत हैं । लगभग ६५० वर्गमील भूमि पर जंगल है । पश्चिम की पहाड़ियों में बनैले सूअर, भालू, सांभर, हरिन इत्यादि वनजंतु रहते हैं । सतारा कसबे से ४६ मील पूर्वोत्तर सिहन-पुर गांव के पास की पहाड़ी पर महादेवजी का मन्दिर है । वहां यात्री बहुत जाते हैं; फाल्गुन में मेला होता है, जिसमें ५०००० तक मनुष्य जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय सतारा जिले के ४९८८ वर्गमील क्षेत्रफल में १०६२३५० मनुष्य थे; अर्थात् १००८९१८ हिन्दू, ३६७१२ मुसल-मान, १५६७९ जैन, ८८६ कृस्तान, ९९ पारसी, २९ सिक्ख, २१ यहूदी और ६ बौद्ध । हिंदुओं में ५८३५६९ कुन्बी, ८७६७९ महारा, ४८३६२ ब्राह्मण, ४१५४७ धांगर, २५७८४ माली, २०९१९ मांग, १७०३५ लिंगायत, १६१०५ चमार, १४२५१ नावित (नाई), १२३२१ कुंभार, ११०४३ सुतार (बढ़ई) ८६३२ कोस्ती, ११२८ राजपूत, १७९६ जंगम, २०४६ वनजारा और बाकी में अन्य जातियों के लोग थे । सतारा जिले में महाराष्ट्री और कुछ कनड़ी भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सतारा जिले के कसबे सतारा में २९६०१, वाई में १२४३८, करदा में १२०८६, अस्ता में ११४०३, तासगांव में ११२७१ और इसलामपुर में १०६९७, मनुष्य थे। इसी जिले में गर्मी की ऋतुओं में अंगरेजों के रहने का स्थान महाबलेश्वर है ।

इतिहास—एक समय सतारा के क़िले में दीवार, बुर्ज तथा फाटक,

सब मिलकर गिनती में १७ थे, इसी कारण से शहर का नाम सतारा पड़ गया। संभव है कि बंबई हाते के कोकन के समान सतारा जिला भी सन ईस्वी के ९० वर्ष पहिले से सन् ३०० ईस्वी तक अंध्रभृत्य या शातकर्णी वंश के राजाओं के अधिकार में था। कदाचित् इस वंश की शाखा के कोल्हापुर वालों ने तीसरी अथवा चौथी सदी तक सतारा पर अपना अधिकार रखते थे। उसके पीछे से १४ वीं शदी के आरंभ तक सतारा के विषय में कोई ऐतिहासिक समाचार नहीं मिलता है। शिला तथा तांबे के पत्तर पर के लेख रत्नागिरि और बेलगांव जिले तथा कोल्हापुर राज्य के पड़ोस में मिले हैं, इससे संभव है कि लगभग सन् ५५० से सन् ७६० तक चालुक्य वंश वाले, सन् ९७३ तक राष्ट्रकूटा वंश वाले सन् १२२० तक पश्चिमी चालुक्य और उनके आधीन थे शालापुर के शिलहरा, और लगभग सन् १३०० तक देवगिरि के यादव वंश वाले राजा सतारा जिले पर अधिकार रखते थे। सन् १३१८ में यादव वंश के राजा के राज्य का विनाश होने पर मुसलमानो ने और सन् १३४८ में बहमनी खांदान के बादशाह ने सतारा पर अधिकार किया। १५ वीं शदी के अन्त में बहमनी खांदान के अंत होने पर सतारा के कई राजा बने; किन्तु पीछे सतारा जिला बीजापुर के आधीन हुआ। उसके पश्चात् पास के पूना और शोलापुर जिले के साथ सतारा जिला महाराष्ट्रों के राज्य का केंद्र बना। सन् १६७३ में शिवाजी ने सतारा का किला लेलिया। सन् १६९८ में सतारा महाराष्ट्रों के राज्य का सदर स्थान बना। दूसरे वर्ष औरंगजेब ने सतारा में जाकर महाराष्ट्रों को परास्त किया। अठारहवीं शदी के आरंभ से लगभग सन् १७५० तक मुगल बादशाहों के निर्बल होने के समय में महाराष्ट्रों के अधिकार का मार्ग खुला। सन् १७०५ में महाराष्ट्रों ने आनाजी पन्त की चातुर्य्य से फिर मुसल्मानों से किला छीन लिया। लगभग सन् १७१८ में बालाजी पेशवा का प्रताप चमका। सन् १७४९ में ब्राह्मण पेशवा ने सतारा के राजपूत राजाओं का राज्य लेलिया। पेशवा का सदर स्थान पूना में हुआ। शिवाजी के वंश के सतारा के राजा पेंशन पाने लगे।

सन् १८१८ में जब पूना के दूसरा बाजीराव पेशवा परास्त हुए, तब

अंगरेजी सरकार ने शिवाजी के वंशधर दूसरा शाहूजी के पुत्र प्रतापसिंह को, जिसको पेशवा ने राजकैदी के समान पिंशन देकर रक्खा था, आसपास के देश के साथ सतारा देदिया और पेशवा के बाकी राज्य को अपने राज्य में मिला लिया। सन् १८३९ में जब राजा प्रतापसिंह ने बगावत की इच्छा की; तब अंगरेजों ने उनको राजकैदी बना कर बनारस में भेज दिया और उनके भाई शाहूजी को, जिनको आपासाहब भी कहते हैं, सतारा की गद्दी पर बैठाया। सन् १८४८ में आपासाहब निष्पुत्र मरगए; तब अंगरेज महाराज ने उनका राज्य अपने राज्य में मिला लिया और उनकी ३ रानियों को उचित पिंशिन का प्रबंध कर दिया। वे सतारा के महल में रहती थीं। सन् १८७४ तक तीनों का देहांत होगया।

वाई।

सताराराड के रेलवे स्टेशन से ९ मील उत्तर और पूना के रेलवे स्टेशन से ६९ मील दक्षिण वाथर का रेलवे स्टेशन है। वाथर से पश्चिम ओर ४० मील की सड़क महाबलेश्वर को गई है; उसी सड़क पर वाथर से १८ मील पश्चिम ओर सतारा कसबे से २० मील उत्तर कुछ पश्चिम बंबई हाते के सतारा जिले में कृष्णा नदी के बांए किनारे पर सब डिवीजन का सदर स्थान वाई एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय वाई कसबे में १२४३८ मनुष्य थे; अर्थात् ११४०१ हिन्दू, ९९८ मुसलमान, २१ जैन, १६ कृस्तान, और २ यहूदी।

वाई कसबा कृष्णानदी के किनारों के अतिपवित्र स्थानों में से एक है। इसमें लगभग २० मन्दिर हैं, जिनमें माधवजी, लक्ष्मीजी, गणेशजी और महादेवजी के मंदिर प्रधान हैं। कसबे में ब्राह्मण बहुत बसते हैं। नदी के तीर पर ½ मील तक सीढ़ियां बनी हुई हैं। दिनभर वहां के लोग घाटों पर, स्नान करने तथा अपने वस्त्र धोने के काम में लगे हुए देखने में आते हैं; क्यों-कि उस देश के प्रायः सब हिंदू लोग अपने वस्त्र आप धोते हैं। वाई में सब

जज की कचहरी, अस्पताल और बंगला है । यहां बड़ी तिजारत होती है। यहां ब्राह्मणों का एक कालिज है, जो एक समय बहुत प्रसिद्ध था।

वाई के निकट एक पहाड़ी पर पांडुगड़ नामक किला है । बस्ती से थोड़ेही दूर पर मुसल्मानी ढांचे का सुन्दर नमूना रास्तिया खांदान के राजा का मकान है, जिसको लोग मोतीबाग कहते हैं । वाई से लगभग ५ मील पश्चिम ओर कृष्णानदी के पास डोमगांव में एक बहुत सुन्दर मंदिर है । उसके आंगन में श्वेत संगमर्मर का फर्श लगा है । यहां ५ फीट ऊंचे मार्बुल के स्तंभ पर पंचमुखी महादेव की प्रतिमा और अनेक सर्पों के आकार बने हुए हैं। वाई से लगभग ८ मील दूर एक पहाड़ी के पादमूल के पास ३ एकड़ भूमि पर छाया करता हुआ पुराना वटवृक्ष है।

महाबलेश्वर ।

सतारारोड के रेलवे स्टेशन से ९ मील उत्तर और पूना के रेलवे स्टेशन से ६९ मील दक्षिण वाथर का रेलवे स्टेशन है, जहां से पश्चिम ४० मील की सड़क महाबलेश्वर को गई है । वाथर से १८ मील पश्चिम वाई कसबे के पास तक समतल सड़क है। और वाई से पश्चिम चढ़ाई की राह है। वाथर से २९ मील पर पंचगनीगांव के पास अंगरेजों के बहुत से बंगले, उससे आगे ¼ मील तक उतराई की सड़क, वाथर से ३९ मील सतारा के राजा की बनवाई हुई लगभग ८०० गज लंबी और २०० गज चौड़ी एक झील और ४० मील पर महाबलेश्वर है। महाबलेश्वर जाने का दूसरा मार्ग पूना शहर से है। पूना से ७४ मील की अच्छी सड़क गई है । पसरनीघाट तक घोड़ा गाड़ी जासकती है,किन्तु घोड़ों की सहायता देने के लिये दस बारह कुलियों को साथ रहने की जरूरत रहती है।

बंबई हाते के सतारा जिले में (१७ अंश, ५८ कला, ५ विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश ४३ कला, ३५ विकला पूर्व देशांतर में) पश्चिमीघाट के महाबलेश्वर नामक सिलसिले के ऊपर, जिसकी साधारण ऊंचाई समुद्र के जल से लगभग ४५०० फीट है. बंबई हाते का प्रधान स्वास्थ्य कर स्थान महाबलेश्वर है।

महाबलेश्वर पहाड़ी के ऊपर लगभग ७ मील लंबी और ३ मील चौड़ी प्रायः समतल जगह है। उस मैदान से पश्चिम पहाड़ियां हैं, जो समुद्र से २५ मील पूर्व चली आई हैं। महाबलेश्वर में गाड़ी दौड़ने योग्य अच्छी सड़के बनी हैं। मामूली सरकारी इमारतें तथा जगह जगह यूरोपियन लोगों के रहने के लिये लगभग १०० बंगले बने हुए हैं। वहां एक अमीर आदमी के रहने योग्य कमरों का मासिक भाड़ा ४० रुपये लगते हैं। स्टेशन के मध्य में बाजार है, जिसमें विविध प्रकार की वस्तु, जो वहां लाई जासकती हैं, मिलती हैं। महाबलेश्वरगांव से ३ मील दक्षिण यूरोपियन लोगो की बस्ती में एक अच्छी लायब्रेरी क्लब, गिरजा और कबरगाह है।

गर्मी के दिनों म महाबलेश्वर में बंबई के गवर्नर, बंबई की फौज के कमांडर इनचीफ और बंबई आदि शहरों के अनेक अन्य प्रधान अफसर तथा अमीर लोग आकर रहते हैं।

महाबलेश्वर की मनुष्य संख्या समय के अनुसार बढ़ती घटती है। सन् १८८१ की फरवरी की मनुष्य गणना के समय मलकोल्मपेट नामक गांव के सहित महाबलेश्वर के ६५ टीलो अर्थात् झुण्डों में ३२४८ मनुष्य थे।

वहां सालाना औसत में लगभग २६४ इंच वर्षा होती है। वर्षा काल में महाबलेश्वर का दृश्य अति मनोरम होजाता है, क्योंकि उस समय संपूर्ण नदियों और झरनों की धारा गिरती हैं।

कृष्णानदी के निकसने का स्थान—महाबलेश्वर गाव के समीप जहां से कृष्णानदी निकली है, एक लंबी पहाड़ी के पादमूल के निकट मंदिर के भीतर एक कुण्ड बना हुआ है, जिसमें गोमुखी होकर पानी की धारा गिरती है। महाबलेश्वर गांव में महाबलेश्वर शिव का पुराना मंदिर तथा ग्वाली राजा का बनवाया हुआ काले पत्थर का एक बहुत पुराना मंदिर और उसी का बनवाया हुआ कोटेश्वर का मन्दिर है। वहां के सब मन्दिरों में महाबलेश्वर शिव का मन्दिर प्रधान है। कृष्णा के निकासे का स्थान होने के कारण महाबलेश्वर पवित्र स्थान समझा जाता है, वहा बहुत से यात्री जाते हैं। वह नदी उस स्थान से निकल कर बम्बई हाते, हैदराबाद के राज्य और मदरास

हाते में दक्षिण-पूर्व और पूर्व को बहती हुई लगभग ८०० मील बहने के उपरांत मछली बंदर के नीच समुद्र में गिरती है। मालपर्व, गतपर्व, भीमा, तुंगभद्रा आदि नदियां उसमें मिली हैं। वाई, सतारा, मगली, बेजवाड़ा, मछली बंदर आदि कसबे उसक किनारा पर बसे हैं।

प्रतापगढ़ का किला—महाबलेश्वर से ६ मील दूर पहाड़ी के बगल के नीचे तक गाड़ी जाने लायक सड़क है। वहांसे किले के फाटक तक कड़ी चढ़ाई का मार्ग है। खड़ी पहाड़ी के ऊपर प्रतापगढ़ का सुन्दर पहाड़ी किला है, जिसको शिवाजी के किला होने के कारण बहुत लोग जानते हैं। शिवाजी ने उसके आस पास के देश को जीत करके उस किले को बनवाया और उसी किले के पास सन् १६५९ में बीजापुर के सेनापति अफजलखां को मार डाला था। (पूना क इतिहास में देखिए)।

महाबलेश्वर का इतिहास—सन् १८२८ में बम्बई के गवर्नर सर-जान मलकोल्म ने सतारा के राजा से महाबलेश्वर को लेकर वहा अपना ग्रीष्म भवन बनाया और राजा को उसके बदले में कोई दूसरी जगह देदी, तभी से यह स्थान प्रसिद्ध हुआ। महाबलेश्वर के पास उसके नाम से मलकोलमपेट नामक गांव बसा है।

बीसवां अध्याय।

(बम्बई हाते में) पूना, भीमशंकर, कारली के गुफा मन्दिर और अमरनाथ।

पूना।

सतारारोड के रेलवे स्टेशन से ७८ मील उत्तर, धौंद जक्शन से ४८ मील पश्चिमोत्तर और बम्बई शहर से ११९ मील दक्षिण पूर्व पूना में रेलवे का

जंक्शन है। मैं दक्षिण से आकर रेलवे के पास के धर्मशाले में टिका । बम्बई हाते के मध्य विभाग में (१८ अन्श, ३० कला, ४१ विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अन्श, ५५ कला, २१ विकला पूर्व देशांतर में) सीधी लकीर से समुद्र के किनारे से लगभग ६५ मील पूर्व, समुद्र के जल से १८५० फीट ऊपर बम्बई हाते की सेना का सदर मुकाम और पूना जिले का सदर-स्थान पूना एक सुंदर शहर है। यहां जुलाई से नवम्बर तक बम्बई के गवर्नर रहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय फौजी छावनी के साथ पूना जिले में १६१३९० मनुष्य थे; अर्थात् ८७०९७ पुरुष और ७४२९३ स्त्रियां। इनमें १२८३३३ हिंदू, १९९९० मुसलमान, ८१८५ क्रस्तान, २३०४ जैन, १६९६ पारसी, ७८७ यहूदी और ९६ अन्य थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में १६ वां और बम्बई हाते में दूसरा शहर है । पूना शहर की मनुष्य-संख्या बढ़ रही है। सन् १८५१ में फौजी छावनी छोड करके उसमें केवल ७३२०९ मनुष्य और सन् १८८१ में ९९६२२ मनुष्य थे।

शहर पूर्व से पश्चिम तक २ मील लंबा और उत्तर से दक्षिण को १½ मील चौड़ा, २¼ वर्ग मील में फैला है। दक्षिण से मोटा नदी और पश्चिमोत्तर से मूला नदी आकर शहर के उत्तर शहर तथा छावनी के बीच में मिल गई है। संगम के पास कई एक देव मन्दिर और मोटा नदी पर ४८२ फीट लंबा और २८ फीट चौड़ा वेलेस्लीब्रिज नामक पत्थर का पुल है, जो सन् १८७५ में १११००० रुपये के खर्च से तैयार हुआ था । संगम से थोडही दूर पर मोटा नदी के दहिने किनारे पर मैदान में शहर बसा है । शहर और छावनी के बीच में सरकारी आफिसों के पास रेलवे स्टेशन है। शहर के दक्षिण पार्वती पहाडी और चंद मील पूर्व तथा पूर्वोत्तर अनेक पहाड़ियां हैं, जो सतारे की ओर गई हैं। शहर से दक्षिण एक झील है। एक नहर शहर होकर निकली है, जिसको एक महाराष्ट्र सरदार ने बनवाया था । वह लगभग २००००० रुपये के खर्च से सुधारी गई है, जिसमें १७५००० रुपये बम्बई के पारसी सर जमसिद जीजी भाई ने दिया था।

शहर की प्रधान सड़कें, जो चौड़ी हैं, उत्तर से दक्षिण को और तंग

सड़कें पूर्व से पश्चिम को गई हैं। शहर के अधिक मकान दो मंजिले तथा तीन मंजिले हैं। बहुतेरे मकान खपड़े पोस हैं। सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय १२२७१ मकानों में से ७१६ मकान औवल दरजे के थे। कई जगह सड़क के पास पानी की नल में लोहे की पुतली बनी है, जलकल का पानी उसके सिर से निकल कर छत्राकार बर्षता है। और किसी किसी में फव्वारे के समान पानी निकलता है।

पूना शहर १८ महल्लों में विभक्त है। पेशवाओं के राज्य के समय वह सातो दिनों के नाम से सात महल्लों में बंटा था। जिस दिन के नाम से जो महल्ला है उसी दिन को उस महल्ले में बाजार लगता है, जैसे कि बुधवारीपेठ अर्थात् बुधवारी महल्ले में बुध के दिन बुधवारी नामक बाजार होता है। शनिवारी महल्ले में पेशवा के महल का खंडहर विद्यमान है, जिसको वहां के लोग जूनावाड़ा अथवा पुराना महल कहते हैं। उसको अंतिम पेशवा बाजीराव के दादा ने बनवाया था, वह बड़ी भारी इमारत थी, जो सन् १८२७ में जला दी गई; अब लगभग १७५ गज लंबा और इतनाही चौड़ा केवल एक घेरा है।

बुधवारी महल्ले में महाराष्ट्रों के चंद पुराने महल तथा नाना फरनवीस की हवेली है, जिसमें छोटा आंगन, एक होज और बहुत सी छोटी कोठरियां बनी हुई हैं। उस महल्ले में एक बहुत सुंदर अठपहला बाजार है। उसके मध्य में एक अठपहला मकान, जिसके आठो दिशाओं म आठो पहलों से बाहर को निकले हुए ८ चौकोने खुले हुए मकान हैं, जिनमें एक ओर से अर्थात् लंबाई में छः छः और चौडाई में चार चार लकड़ी के खंभे लगे हैं। आठों के बाहर के छोर पर दीवार और भीतर के छोर पर अतर दे करके केवल ४ पहलों में दीवार हैं। वह बाजार सुन्दर अंगरेजी खपड़ों से छाया हुआ है। उसके भीतर ऊंचे चबूतरों पर, जो तरह दार बने हुए हैं, भांति भांति के मेवे, फल, तरकारियां और अनेक प्रकार की अन्य वस्तुएं बिकती हैं। चबूतरों के नीचे सड़क बनी हैं।

बाजार से थोड़ही दूर पर तुलसीबाग नामक स्थान में राम लक्ष्मण तथा जानकीजी का सुंदर शिखरदार मंदिर और बुधवारी महल्ले के पास बेलबाग

नामक स्थान में लक्ष्मीनारायण का मंदिर है। मंदिर के पास के कूप में रहट लगा है।

वेलेस्ली पुल के पार होने पर बांई ओर पुराना इंजिनियरिंग कालिज मिलता है, जिसके पूर्व जिले की कचहरियां फैली हैं। पुल के पूर्व बगल से एक रास्ता एक उत्तम बाग को गया है, जिसमें कई एक सुंदर शिव मंदिर बने हुए हैं। इंजिनियरिंग कालिज से ३०० गज दूर "सर एलवर्ट मैसून होस" नामक एक उत्तम इमारत है। उस जगह को लोग गार्डनरीच भी कहते हैं। वह सुन्दर बाग नदी के किनारे पर फैला है। बाग में सर एलवर्ट मैसून होस है, जिसके कमरों में मार्बुल के टुकड़ा के फर्श हैं। बाग में एक सुंदर हौज तथा पानी का टावर बना है। मूलानदी के पास ६ एकड़ भूमि पर एक मनोरम बाग है। शहर के बाहर की सीमा के पास एक बड़ा जैन मंदिर है। किर्की कसबे की ओर २४६००० रुपये के खर्च से डेकान कालिज बना हुआ है, जिसका आधा खर्च सर जमसिदजी जीजीभाई ने दिया था। कालिज के मध्य का ब्लक दो बाजुओं के साथ दो मजिला है। उसकी लाईं की छत रंगी हुई है। प्रधान ब्लक के पश्चिमोत्तर के कोण के पास १०६ फीट ऊंचा टावर है। ७० फीट लंबा कालिज का हल है। प्रधान इमारत में क्लासों के कमरे हैं और बाजुओं के कमरों में विद्यार्थी रहते हैं।

शहर के उत्तर फौजी छावनी है, जिसकी सीमा के भीतर सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ३०१२९ मनुष्य थे। छावनी में यूरोपियन और देशी घोड़सवार तथा पैदल सेना रहती हैं। सीमा के भीतर मोटा और मूला नदी के किनारों के पास तथा किर्की की छावनी को जाने वाली सड़क के बगल में दो मील तक यूरोपियन लोगों की बहुतसी कोठियां बनी हुई हैं। पूना शहर से २½ मील दूर किर्की के रेलवे स्टेशन से ४½ मील पर गवर्नमेन्ट होस है।

पूना में एक हाईस्कूल, दो कालिज और कई एक छोटे स्कूल और देशी लड़कियों तथा यूरोपियन और यूरेशियन लड़कियों के अलग अलग कई स्कूल हैं। इनके अलावे एक यतीमखाना, उत्तम चित्रशाला, एक खेती विद्या के कालिज, खेती की फसिलों की परीक्षा के लिए गवर्नमेंट बाग, तीन अंगरेजी

कचरगाह, अनेक अस्पताल, कई एक मिशन, बहुतेरे गिरजा, एक कागज बनाने का मिल, दूसरे कई एक कल कारखाने, और एक पिंजरापोल है, जिसमें असमर्थ तथा दुःखी पशु पाले जाते हैं। शहर की सड़कों पर रात्रि में लालटेनों की रोशनी होती है। *जलकल सर्वत्र लगी है।*

पूना में सुप्रसिद्ध पण्डिता रमाबाई की "शारदा सदन" नामक प्रसिद्ध पाठशाला है, जिसमें स्त्रियां पढ़ाई जाती है। रमाबाई पूना के महाराष्ट्र ब्राह्मण की पुत्री है। उसने संस्कृत, महाराष्ट्री, अंगरेजी तथा डाक्टरी विद्या अच्छी तरह से पढ़ी है। इंगलैंड, अमेरिका आदि देशों में पर्यटन करके क्रिस्तान होकर वह अब पूना में रहती हैं।

यद्यपि पूने की सौदागरी और दस्तकारी पेशवाओं के राज्य के समय के समान अब नहीं है, तथापि वहां अब तक कपड़े, रेशमी वस्त्र, पीतल, तांबे, लोहे, तथा मिट्टी के बर्त्तन, इत्यादि वस्तु बहुत बनती हैं। वहां के कारीगर सोने चांदी के भूषण, हाथी दांत की कची इत्यादि चीजें बनाने में बहुत प्रसिद्ध हैं। वे लोग मोरपंख लगा कर के खस के, सुन्दर पंखे तथा डोरी बनाते हैं। वहां मिट्टी की प्रतिमा अत्युत्तम तैयार होती हैं। पूना शहर का जल वायु स्वास्थ्य कर है। वहां औसत में सालाना वर्षा लगभग २९ इञ्च होती है।

गणेशचौथ का उत्सव—जैसे बंगाल देश में दुर्गा पूजा, राजपूताने में दीवाली और पश्चिमी हिंदुस्तान में होली की धूमधाम होती है, वैसेही बंबई हाते में गणेशचौथ के महोत्सव का समारोह देखाई देता है। जैसे बंगाल में दुर्गा की प्रतिमा बना कर लोग पूजते हैं और अंत समय में उसको जल में विसर्जन कर देते हैं, वैसेही बंबई हाते के लोग गणेश की प्रतिमा को बनवाते और जल में विसर्जन करते हं। गणेशचौथ का उत्सव भादो सुदी चौथ से चौदस तक १० दिन पर्यन्त होता है।

बंबई हाते के अन्य नगरों के समान गणेशचौथ का उत्सव पूने में सैकड़ों जगह होता है। कुंभार द्वारा मिट्टी की गणेश की सुन्दर प्रतिमा बनाई जाती हैं। भादो सुदी ४ के दिन, जिस तिथि में गणेशजी का जन्म है, बड़ी धूमधाम से गणपतिजी की प्रतिमा की सुन्दर सिंहासन पर प्रतिष्ठा होती है और

बड़े समारोह से गणेशजी की सवारी निकलती है । लोग डंडों के ताल पर मधुर स्वर से भजन गाते हैं। बहुतेरे लोग उन्मत्त होकर नाचते हैं । नाचने वालों में कोई स्त्री, कोई शराबी तथा कोई मल्लाह बनता है और सब मिल जुलकर नाचने लगते हैं। नित्य गणेशजी की प्रतिमा की पूजा होती है। उसको नैवेद्य चढ़ाया जाता है। भादो सुदी १० के दिन सब मूर्तियां समुद्र, नदी अथवा सरोवर में विसर्जन करदी जाती हैं । उस दिन प्रतिमाओं को लेजाने वाले दलों की बड़ी भीड़ होती है। लोग नाच गान करते हुए विविध सवारियों पर प्रतिमाओं को जल के किनारे पर ले जाते हैं।

गणेशपुराण—(उपासना खंड, ९० वां अध्याय) मनुष्यों को उचित है कि भादों मास की दोनो चौथ को बड़ा उत्सव करे, बाजा बजाते हुए तथा गान करते हुए रात्रि में जागरण करे; प्रभात होने पर गणेशजी की प्रतिमा की पूजा करके होम करें; दूसरे दिन प्रतिमा को पालकी में रखकर लेचले; आगे आगे किशोर अवस्था के बालक डंडों से युद्ध करते हुए चलें; प्रतिमा को लेजाकर जल में विसर्जन करे और बाजे गाजे से युक्त अपने गृह लौट आवे।

(८७ वां अध्याय)—भादो मास की दोनों चौथ में गणेश जी की प्रतिमा बना कर गाना, बजाना आदि उत्सवों के साथ सुन्दर विधान से उस प्रतिमा की पूजा करके रात्रि में जागरण करना चाहिए । उत्सव करने वालों को उचित है कि धातु की प्रतिमा होवे तो ब्राह्मणों को देवे; किन्तु दूसरी वस्तु की प्रतिमा को परम उत्साह से पालकी में रख कर जल के किनारे लेजावें। पालकी के साथ छत्र, ध्वजा, पताका, तथा गान करते हुए और डंडे बजाते हुए बालकों का दल जाना चाहिए। इस भांति प्रतिमा को लेजा कर जल में पधरा देना उचित है।

(उत्तर खंड, ८१ वां और ८२ वां अध्याय) श्रीपार्वतीजी ने भादो सुदी चौथ के दिन गणेशजी की पार्थिव प्रतिमा बना कर पूजन किया । उस समय गणेशजी के प्रसन्न होने पर वह प्रतिमा चैतन्य होकर बालरूप होगई। पार्वतीजी उस बालक को स्तन पिलाने लगी। भादो सुदी चौथ सोमवार को गणेशजी का जन्म हुआ था; तभी से चौथ तिथि वरदात्री कहाती है। मनुष्यों

कपरगाह, अनेक अस्पताल, कई एक मिशन, बहुतेरे गिरजा, एक कागज बनाने का मिल, दूसरे कई एक कल कारखाने, और एक पिंजरापोल है, जिसमें असमर्थ तथा दुःखी पशु पाले जाते हैं। शहर की सड़कों पर रात्रि में लालटेनों की रोशनी होती है। जलकल सर्वत्र लगी है।

पूना में सुप्रसिद्ध पण्डिता रमाबाई की "शारदा सदन" नामक प्रसिद्ध पाठशाला है, जिसमें स्त्रियां पढ़ाई जाती हैं। रमाबाई पूना के महाराष्ट्र ब्राह्मण की पुत्री है। उसने संस्कृत, महाराष्ट्री, अंगरेजी तथा डाक्टरी विद्या अच्छी तरह से पढ़ी है। इंगलैंड, अमरिका आदि देशों में पर्यटन करके क्रिस्तान होकर वह अब पूना में रहती हैं।

यद्यपि पूने की सौदागरी और दस्तकारी पेशवाओं के राज्य के समय के समान अब नहीं है, तथापि यहां अब तक कपड़े, रेशमी वस्त्र, पीतल, तांबे, लोहे, तथा मिट्टी के बर्त्तन, इत्यादि वस्तु बहुत बनती हैं। यहां के कारीगर सोने चांदी के भूषण, हाथी दांत की कंघी इत्यादि चीजें बनाने में बहुत प्रसिद्ध हैं। ये लोग मोरपंख लगा कर के खस के सुन्दर पंखे तथा डोरी बनाते हैं। यहां मिट्टी की प्रतिमा अत्युत्तम तैयार होती हैं। पूना शहर का जल वायु स्वास्थ्य कर है। यहां औसत में सालाना वर्षा लगभग २९ इञ्च होती है।

गणेशचौथ का उत्सव—जैसे बंगाल देश में दुर्गा पूजा, राजपूताने में दीवाली और पश्चिमी हिंदुस्तान में होली की धूमधाम होती है, वैसेही बंबई हाते में गणेशचौथ के महोत्सव का समारोह देखाई देता है। जैसे बंगाल में दुर्गा की प्रतिमा बना कर लोग पूजते हैं और अंत समय में उसको जल में विसर्जन कर देते हैं, वैसेही बंबई हाते के लोग गणेश की प्रतिमा को बनवाते और जल में विसर्जन करते हैं। गणेशचौथ का उत्सव भादो सुदी चौथ से चौदस तक १० दिन पर्यन्त होता है।

बंबई हाते के अन्य नगरों के समान गणेशचौथ का उत्सव पूने में सैकड़ों जगह होता है। कुंभार द्वारा मिट्टी की गणेश की सुन्दर प्रतिमा बनाई जाती है। भादो सुदी ४ के दिन, जिस तिथि में गणेशजी का जन्म है, बड़ी धूमधाम से गणपतिजी की प्रतिमा की सुन्दर सिंहासन पर प्रतिष्ठा होती है और

बड़े समारोह से गणेशजी की सवारी निकलती है। लोग डंडों के ताल पर मधुर स्वर से भजन गाते हैं। बहुतेरे लोग उन्मत्त होकर नाचते हैं। नाचने वालों में कोई स्त्री, कोई शराबी तथा कोई मल्लाह बनता है और सब मिल जुलकर नाचने लगते हैं। नित्य गणेशजी की प्रतिमा की पूजा होती है। उसको नैवेद्य चढ़ाया जाता है। भादो सुदी १० के दिन सब मूर्तियां समुद्र, नदी अथवा सरोवर में विसर्जन करदी जाती हैं। उस दिन प्रतिमाओं को लेजाने वाले दलों की बड़ी भीड़ होती है। लोग नाच गान करते हुए विविध सवारियों पर प्रतिमाओं को जल के किनारे पर ले जाते हैं।

गणेशपुराण—(उपासना खंड, ९० वां अध्याय) मनुष्यों को उचित है कि भादों मास की दोनो चौथ को बड़ा उत्सव करे, बाजा बजाते हुए तथा गान करते हुए रात्रि में जागरण करें; प्रभात होने पर गणेशजी की प्रतिमा की पूजा करके होम करें; दूसरे दिन प्रतिमा को पालकी में रखकर लेचले; आगे आगे किशोर अवस्था के बालक डंडों से युद्ध करते हुए चलें; प्रतिमा को लेजाकर जल में विसर्जन करे और बाजे गाजे से युक्त अपने गृह लौट आवे।

(८७ वां अध्याय)—भादो मास की दोनों चौथ में गणेश जी की प्रतिमा बना कर गाना, बजाना आदि उत्सवों के साथ सुन्दर विधान से उस प्रतिमा की पूजा करके रात्रि में जागरण करना चाहिए। उत्सव करने वालों को उचित है कि धातु की प्रतिमा होवे तो ब्राह्मणों को देवे; किन्तु दूसरी वस्तु की प्रतिमा को परम उत्साह से पालकी में रख कर जल के किनारे लेजावें। पालकी के साथ छत्र, ध्वजा, पताका, तथा गान करते हुए और डंडे बजाते हुए बालकों का दल जाना चाहिए। इस भांति प्रतिमा को लेजा कर जल में पधरा देना उचित है।

(उत्तर खंड, ८१ वां और ८२ वां अध्याय) श्रीपार्वतीजी ने भादो सुदी चौथ के दिन गणेशजी की पार्थिव प्रतिमा बना कर पूजन किया। उस समय गणेशजी के प्रसन्न होने पर वह प्रतिमा चैतन्य होकर बालरूप होगई। पार्वतीजी उस बालक को स्तन पिलाने लगी। भादों सुदी चौथ सोमवार को गणेशजी का जन्म हुआ था; तभी से चौथ तिथि वरदाता कहाती है। मनुष्यों

को उचित है कि उस तिथि में गणेशजी का उत्सव करें, उनकी मृत्तिका की प्रतिमा बनाकर यथा विधि से पूजन करे और मंडप बनाकर व्रत तथा रात्रि में जागरण करें। जो मनुष्य उस तिथि में मृण्मय गणेश की पूजा नहीं करता, वह नाना प्रकार के रोगों से पीड़ित होता है।

किर्की-पूना के रेलवे स्टेशन से ३ मील पश्चिमोत्तर किर्की का रेलवे स्टेशन है। बंबई की ओर टिलरी का सदर-मुकाम किर्की फौजी छावनी है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय किर्की में १०९९१ मनुष्य थे, अर्थात् ७७०६ हिंदू, १५३४ कृस्तान, १४६० मुसलमान, १२८ जैन, ७४ पारसी, ४७ यहूदी, और ९ अन्य। किर्की के बारकों के १ मील पूर्वोत्तर लड़ाई के सामान रखने की कोठी और उत्तर ओर बारूद का कारखाना है। किर्की के रेलवे स्टेशन से १½ मील दूर गणेशखंड के पास गवर्नमेंट हौस है। उसमें ८० फीट ऊंचा एक बुर्ज है, जिस पर चढ़ने से मनोरम दृश्य देखने में आता है। गवर्नमेन्ट हौस में दरबार कमरा, मेहमानों के रहने का कमरा, नाच का कमरा इत्यादि सुन्दर इमारतें बनी हुई हैं और ९० फीट लंबी फूलों के गमलों की गैलरी है।

पार्वती का मन्दिर—पूना शहर से दक्षिण पश्चिम रेलवे स्टेशन से लगभग ४ मील दूर पार्वती नामक पहाड़ी पर पार्वतीजी का विशाल मंदिर बना हुआ है। सिंहगढ़ जाने वाली सड़क पूना से पार्वती पहाड़ी के उत्तर होकर गई है, जिसके पास हीरा बाग में एक झील, मसजिद, मन्दिर और पेशवाओं का किला अर्थात् बाहर का बैठक है।

पहाड़ी के नीचे से पार्वती के मन्दिर के पास तक सीढ़ियां बनी हुई हैं। पूने के बालाजी बाजीराव पेशवा ने सन् १७४९ में मन्दिर को बनवाया था। मन्दिर के बनाने में लगभग १०००००० रुपये खर्च पड़े थे; किन्तु बहुत लोग उसको सतारा के राजा का मन्दिर कहते हैं। मन्दिर के पहिला चौगान में कोने के पास विष्णु, सूर्य, दुर्गा और स्कंद के छोटे छोटे मन्दिर और मध्य में पार्वतीजी के खास मन्दिर में, जो बृहद् है, पार्वतीजी, महादेवजी तथा गणेशजी हैं। उस पहाड़ी के ऊपर इनके अलावे

अन्य कई मन्दिर तथा स्थान हैं। यहां सावन मास में बड़ा मेला होता है। दीवारी के दिन उत्तम रीति से मन्दिर में रोशनी की जाती है।

मन्दिर के घेरे की दीवार के ऊपर चढ़ने से नीचे पूर्व ओर पार्वती तालाव; तालाव के दक्षिण पार्वती गांव, हीराबाग, और संटमेरी का चर्च और दक्षिण पश्चिम पेशवाओं के एक महल का खंडहर देखने में आता है।

सिंहगढ़ का किला—पूना शहर से १९ मील दक्षिण पश्चिम सह्याद्रि पर्वत के बड़े सिलसिले के पूर्व बगल की पहाड़ी पर समुद्र के जल से ४१६२ फीट ऊपर सिंहगढ़ का पुराना किला है। पूना से सिंहगढ़ पहाड़ी की नेव के पास तक १४ मील तक गाड़ी जाती है, यहां से टट्टू या झंपान पर जाना होता है। पूना से १० मील आगे उस मार्ग में ६ वर्गमील के क्षेत्रफल में एक बड़ी झील, जो पत्थर के बांध बांध करके बनाई गई थी, मिलती है। उस झील से किर्की तथा पूना शहर और २ नहरों में पानी जाता है। पहाड़ी के ऊपर पुरानी दीवार के भीतर लगभग ४० एकड़ भूमि पर ना दुरुस्त शकल में सिंहगढ़ का किला है। ३ फाटक होकर किले के भीतर जाना होता है। फाटक से थोड़ही दूर शिवाजी के समय का अस्तबल है, जो उसी जगह के चट्टान में उसके भीतर से पत्थर निकाल कर बनाए गए थे। फाटक से ½ मील पूर्व रामराजा का मंदिर है, जिसके पास पत्थर निकाल कर बनाया हुआ एक सरोवर और इसी भांति बने हुए कई एक कूप हैं। उस पहाड़ी के ऊपर यूरोपियन लोगों के गर्मी के दिनो में रहने के लिये कई एक बंगले बने हुए हैं।

पूना से सीधी लाइन द्वारा १७ मील और जाने आने के मार्ग से २४ मील दक्षिण पूर्व पहाड़ी के बगल पर पुरंधर के २ किले हैं; एक नीचे और दूसरा ऊपर।

खंडो का मंदिर—पूना के रेलवे स्टेशन से ३२ मील दक्षिण-पूर्व जेजुरी का रेलवे स्टेशन है। जेजुरी में खंडोवा का, जो एक राजा था और शिव का अवतार समझा गया, प्रसिद्ध मंदिर है। उस देश के लोगों में से अनेक लोग, जिनको संतान नहीं होती, मानता करते हैं कि हमारे संतान

होगी तो पहिली संतान हम खंडोवा को देंगे-। उस आदमी का जो प्रथम पुत्र होता है वह उस मंदिर के पास रहा करता है और खंडोवा का पुत्र समझा जाता है। अगर पहिले पुत्र नहीं हुआ; पुत्री हुई तब उसका पिता उस पुत्री का ब्याह विधान के साथ खंडोवा से कर देता है; यह पुत्री मुरली कहलाती है।

पूना जिला—इसके उत्तर अहमदनगर जिला; पूर्व अहमदनगर और शोलापुर जिला; दक्षिण नीरानदी बाद सतारा जिला और फलताना की मिलकियत और पश्चिम कुलावा और थाना जिला है। जिले का सदर स्थान पूना शहर है। जिले की भूमि ऊंची नीची है। पश्चिम की सीमा के पास सह्याद्रि की प्रायः अगम चोटियां हैं। भीमानदी उस जिले में पश्चिमोत्तर से दक्षिण पूर्व को बहती है। सह्याद्रि के सिलसिले से बहुत धाराएं निकल कर भीमानदी में गिरती हैं। उस जिले में खानिक पैदावार बहुत नहीं हैं; किन्तु सड़क और मकान बनाने के योग्य पत्थर निकाले जाते हैं। पश्चिम के भाग में बाघ, तेंदुए, सांभर और भालू कभी कभी मिलते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय पूना जिले के ५३४८ वर्गमील क्षेत्रफल में ९००६२१ मनुष्य थे; अर्थात् ८३४८४३ हिन्दू, ४२०३६ मुसलमान, १०८८० जैन, ९५०३ कृस्तान, १५७४ पारसी, १०५८ पहाड़ी और जंगली जातियां, ६१९ यहूदी, ७८ बौद्ध और ३० सिक्ख। हिंदुओं में ३९६६८६ कुन्बी, ८८०१९ मांग और महारा, ५२५४३ माली, ४९०६० ब्राह्मण, ४२८२९ कोली, १५७९० चमार, ९५३५ सुतार (बढ़ई), और बाकी में लिंगायत, दरजी इत्यादि जातियों के लोग थे; राजपूत केवल ३३६४ थे। पूना जिले में महाराष्ट्री भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पूना जिले के कसबे पूना में १६१३९०, जुनीर में ११९०५ और किर्की में १०९५१ मनुष्य थे।

इतिहास—पूना, सतारा और शोलापुर इन तीनों जिलों का प्राचीन इतिहास एकही है। ऐसा प्रसिद्ध है कि सन् ईस्वी के आरम्भ में राजा

मोडी वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द

ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह ळ क्ष ज्ञ

का कि की कु कू के कै को कौ कं कः १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

स्वाधीन बन कर भीमानदी के पास तक के देश का मालिक बना। सन् १४९१ में दक्षिण के नये राजाओं ने एक प्रकार की सन्धि की, जिसके अनुसार नीरानदी के उत्तर और करमारानदी के पूर्व के देश वर्तमान शोलापुर जिले के एक भाग के साथ अहमदनगर के निजामशाही बादशाह को और भीमा तथा नीरा नदी के दक्षिण का देश बीजापुर के बादशाह को मिला। गुलबर्गा का दस्तूरदीनार कई लड़ाइयों के पश्चात् सन् १५०४ में मारागया और गुलबर्गा का राज्य बीजापुर के राज्य में मिल गया। सन् १५११ में बीजापुर के राज्य में शोलापुर मिला लिया गया। पुरंधर और उसके पास का देश बहुत वर्षों तक अहमदनगर के आधीन ख्वाजाजहां के अधिकार में था।

बीजापुर और अहमदनगर के बादशाह आपस में लड़ते रहे, किन्तु उन्हों ने विजयानगर के हिन्दू राजा रामराज से डर कर परस्पर मेल किया और सन् १५६५ की जनवरी में तालीकोट में रामराज को परास्त करके उनका राज्य लेलिया।

सन १५९२ के पीछे दिल्ली के मुगल बादशाहों ने दक्षिण देश पर आक्रमण आरम्भ किया। सन् १६०० में अकबर ने अहमदनगर को परास्त किया। वह देश थोड़े दिनों तक मुगलो के आधीन रहा।

सन् १६०४ में अहमदनगर के बादशाह न शिवाजी के दादा मालोजी को पूना देदिया। सन् १६१६ में दिल्ली के शाहजहा ने अहमदनगर राज्य के बड़े भाग को जीता; किंतु सन् १६२९ में वह राज्य अहमदनगर को लौटा दिया गया। सन् १६३३ में मुगलो ने दौलताबाद को लेलिया और वहा के बादशाह को बद कर दिया, परंतु शिवाजी के पिता शाहजी भोसला ने सन् १६३४ म बादशाही खादान के एक आदमी को बादशाह बनाया, गगाधरी और पूना शहर को लूटा तथा बीजापुर की सेना की मदद से मुगलो को पुरधर से भगाया। तब शाहजहा ने सेनाओं के साथ स्वय जाकर बीजापुर पर घेरा डाला। सन् १६३६ में वहा का बादशाह सुलह करने के लिये मजबूर हुआ। शाहजहां को शाहजी द्वारा छीना हुआ देश मिल गया। सन् १६३७ में अहमदनगर का बादशाह मुगलों के अधीन बनगया। निजामशाही

खांदान का अंत होगया। जुनीर के साथ भीमानदी के उत्तर का देश मुगलों के राज्य में मिला लिया गया और उसके दक्षिण का देश बीजापुर के बादशाह को मिला। शाहजी बीजापुर के आधीन रहकर काम करने लगे; उनको कई बस्तियों के साथ पूना और सूपा की जागीर मिली।

बीजापुर के बादशाहो के आधीन महाराष्ट्र लोग प्रसिद्ध होने लगे और उनका बल क्रम क्रम से बढ़ने लगा। शाहजी भोसले के पुत्र शिवाजी महाराष्ट्रों के अगुआ हुए (उनका जीवनचरित्र आगे है)। सन् १६६३ में औरंगजेब का सेनापति साइस्ताखां ने शिवाजी से पूना छीन लिया, किन्तु उसके चंद रोज बाद शिवाजी ने अचानक चढ़ाई करके साइस्ताखां के पुत्र और उसके रक्षक को मार कर उसको घायल कर दिया। मुसलमानी सेना भाग गई। उसके पीछे औरंगजेब ने फिर पूना पर अधिकार किया। सन् १६६७ में औरंगजेब ने शिवाजी को पूना लौटा दिया। शिवाजी के पुत्र शंभाजी के राज्य के समय औरंगजेब के अफसर खांजहां के अधिकार में पूना शहर था।

औरंगजेब के मरने के पश्चात् १८ वीं शदी में पूना, सतारा और सोलापुर ये तीनों जिले महाराष्ट्रों के बैठक थे, जिनका राज्य पंजाब से बंगाल तक और दिल्ली से मैसूर पर्यंत पहुंचा था। पहिले पेशवाओं का सदर स्थान सतारा था, किन्तु जब उनका अधिकार बहुत बढ़ गया तब उन्होंने पूना को अपना सदर स्थान बनाया। सन् १७६३ में हैदराबाद के निजामअली ने पूना को लूटा और उसके एक भाग को जला दिया। उसके पश्चात् पीछे के पेशवाओं और संधिया तथा हुलकर के परस्पर के झगड़ों से बहुत बार पूना का परिवर्तन हुआ था। सन् १८०२ में पेशवा ने बेसीन की संधि द्वारा अपनी सहायता के लिये अंगरेजी सेना को पूना के पास रखना स्वीकार किया। अन्त में अंगरेजी गवर्नमेंट ने बड़ी लड़ाइयों के पश्चात् बाजीराव पेशवा को परास्त करके सन् १८१८ में पूना को लेलिया। उसके उपरांत पूना शहर अङ्गरेजी जिले का सदर स्थान और दक्षिण में सर्व प्रधान फौजी छावनी का मुकाम हुआ।

शालिवाहन ने, जिसकी राजधानी गोदावरी के किनारे पर पैठन थी, महाराष्ट्र देश में हुकूमत किया। उसके पश्चात् चालुक्य वंश के बलवान राजपूत राजाओं ने महाराष्ट्र देश के एक बड़े भाग को तथा कर्नाटक को अपने अधिकार में करलिया। उनकी राजधानी कल्यानी कसबा था। उस राज्य को नियत करने वाला जयसिंह ने पल्लववंश के राजपूत राजा को जीता था। १० वीं शदी में चालुक्य वंश का एक राजा बड़ा प्रतापी हुआ। १२ वीं शदी के अंत में देवगिरि के यादव वंश के राजा ने चालुक्य वंश वालों को परास्त करके उस देश पर अपना अधिकार किया। बारहवीं शदी के अन्त में एक राजा, जिसका राज्य उत्तर ओर नीरानदी तक था, कोल्हापुर के निकट पुनल्ला में रहता था। उसको देवगिरि के राजा सिंहन ने परास्त किया।

मुसलमानों के आक्रमणों से सन् १३१२ ई० तक देवगिरि के यादव वंश के राज्य का अन्त होगया। सन् १३४८ में दक्षिण के मुसलमान सरदारों ने दिल्ली के बादशाह मुहम्मद तोगलक से बागी होकर बहमनी वंश के बादशाह को अपना शासक बनाया। उसकी राजधानी गुलबर्गा थी। सन् १४२६ में बहमनी खांदान के बादशाह अहमदशाह ने गुलबर्गा को छोड़ कर बीदर को राजधानी बनाया। सन् १४७२ में बहमनी खांदान के पिछला स्वाधीन बादशाह ने पश्चिमी घाट के पास के छोटे किलों को तथा खेलना को जीता। उसके पीछे उसने बहमनी राज्य का नया विभाग किया, जिसके अनुसार जुनीर एक सूबा का सदर स्थान बना, जिसके आधीन बाई, बेलगांव इत्यादि तथा कोंकन का एक भाग था। भीमानदी के पास का अन्य देश बीजापुर के आधीन हुआ। शोलापुर, गुलबर्गा और पुरंधर एक अलग देश बना। बीजापुर का राज्य कायम करने वाला युसफ आदिलशाह बीजापुर का गवर्नर बनाया गया। अहमदनगर के राजवंश कायम करने वाला अहमदशाह जुनीर भेजा गया। दस्तूर दीनार नामक एक अबिसिनियन गुलबर्गा का हाकिम बनाया गया। जीनखां तथा ख्वाजाजहां नामक दो भाइयों के अधिकार में पुरंधर, शोलापुर और अन्य ११ जिले हुए। सन् १४८९ में अहमदशाह स्वाधीन बन गया। लगभग उसी समय बीजापुर का युसफ आदिलशाह भी

शिवाजी की कथा—चित्तौरगढ़ के राणाओं के वंश में शिवराव के ३ पुत्र थे; दो तो समर में मारे गये, किन्तु तीसरे सबसे छोटे भीमसिंह ने भोंसला नामक दुर्ग में भाग कर अपना जान बचाया, इसी से उनके वंश वाले भोसला कहाये। भीमसिंह के पुत्र विजयभानु थे। विजयभानु के पुत्र खेलकर्ण यवनों से दिक होकर दौलताबाद के पास वेरुल में आ बसे। उनके पुत्र का नाम जयकर्ण था। जयकर्ण के पुत्र महाकर्ण, उनके पुत्र राजा शिव, राजा शिव के पुत्र शम्भाजी और शंभाजी के पुत्र मालोजी थे।

सन् १५५२ ईस्वी में मालोजी का जन्म हुआ। मालोजी के पिता शभाजी कई छोटे गांवों के जमीन्दार थे। मालोजी २५ वर्ष के होने पर अहमदनगर के राज्य में कुछ घुड़ सवारों के स्वामी हुए। पीछे वह ५००० घोड़सवारों के मालिक बनाये गए।

सन् १५९४ ई० में मालोजी के पुत्र शाहूजी का जन्म हुआ। सन् १६०४ में निजामशाही गवर्नमेंट ने सूपा और पूना के परगनों को मालोजी को दे दिया। सन् १६१८ में मालोजी भोसला का परलोक हुआ।

शाहजी का विवाह सन् १६०१ में लुखजी यादवराव की पुत्री से हुआ था। लुखजी यादवराव निजामशाही दरबार के आधीन एक बड़ी जागीर के अधिकारी थे। जब दिल्ली के बादशाह का अधिकार अहमदनगर के राज्य पर फैला, तब सन् १६२१ ई० में लुखजी यादवराव मुगलों की तरफ चले गए। उस समय निजामशाही और मुगलों के बीच में घोर शत्रुता चल रही थी। जमाई शाहजी निजामशाही के पक्ष में और ससुर लुखजी मुगलों के पक्ष में थे; किसी किसी लड़ाई में ससुर और दमाद का भी सामना हो जाता था।

सन् १६२६ की एक लड़ाई में शाहजी हारकर भाग चले। उस समय उनके ज्येष्ठ पुत्र शम्भाजी और उनकी पत्नी जीजी बाई भी युद्धस्थल में उपस्थित थीं। जीजी बाई गर्भवती थी। तीनों एक एक घोड़े पर भाग रहे थे और लुखजी यादवराव मुगल सेना लेकर अपनी बेटी, दमाद और नाती को पछिया रहे थे। जब गर्भवती जीजीबाई भागने में असमर्थ होगई,

तब शाहजी उनको छोड़ अपने बालक पुत्र शंभाजी को लेकर निरापद स्थान में चले गए।

लुखजी यादवराव अपनी पुत्री जीजी को शिवनेरी किले में कैद कर शाहजी से शत्रुता साधने लगे। शाहजी के मांगने पर भी उसने कन्या को उनके पास नहीं भेजा। जीजीबाई अपना समय शिवनेरी दुर्ग की शिवाई देवी के पूजन में बिताती थी। सन् १६२७ ई० के वैशाख शुक्ला द्वितीया को जुनीर के शिवनेरी किले में जीजीबाई के गर्भ से शिवाजी का जन्म हुआ। शिवाई देवी के प्रसाद से पुत्र जन्मा, इस लिये उसका नाम शिवाजी रक्खा गया। जब दूसरा सुल्तान मुरतिजा निजामशाह बालिग होगए, तब उन्होंने सन् १६३० ई० म लुखजी यादवराव को दगा से दौलताबाद में बुलाया और वहां आने पर उसको मरवाडाला।

पीछे मुरतिजा निजामशाह मुगलों की कैद में पड़े और दौलताबाद मुगलों के हाथ में गया। उसी समय शाहजी की पत्नी जीजीबाई मुगलों के हाथ पकड़ी गई, पर अनेक महाराष्ट्रों ने मिल कर बड़ी बड़ी दिक्कतों से जीजीबाई का उद्धार किया; तबसे जीजीबाई शिवाजी के साथ कूंडाने दुर्ग में-रहने लगी।

जब निजामशाही राज्य मुगलों के राज्य में मिल गया, तब शाहजी ने बीजापुर के आदिलशाही की नौकरी कबूल करली। उस समय से वह अपनी नई ब्याही पत्नी तुका बाई और बड़े पुत्र शम्भाजी को अपने साथ रखने लगे। जीजीबाई कुछ दिन पति के साथ रहकर पीछे शिवाजी के साथ पूना में जाकर रहने लगी। शाहजी के आधीन अनेक ब्राह्मण कर्मचारी थे, जिनमें से नारूपन्त पर कर्नाटक की जागीर का और दादाजी पर पूना की जागीर का भार दिया हुआ था। दादाजी की पूना की जागीर तथा पूना की जन संख्या दिन पर दिन बढ़ने लगी। दादाजी शिवाजी को वीरोचित शिक्षा देने लगे।

शिवाजी जब १६ वर्ष के हुए, तब वह पहाड़ी मावली वीरों के सहारे से धनियों का धन लूट कर अपने आवश्यकीय कामों के लिये धन इकट्ठा करने लगे। शाहजी की पूना की जागीर में कोई पहाड़ी किला नहीं था। सन्

१६४६ ई० में शिवाजी ने बिना लडाई के तोरन का किला लेलिया, जो पूना से २० मील दक्षिण पश्चिम नीरानदी के किनारे पर मजबूत पहाडी किला था। पीछे उन्होंने किले को मजबूत करके उसमें मावली वीरों को नियुक्त किया। और किले का नाम पूर्णचन्द्रगढ़ रक्खा। उसके पश्चात् उन्होंने सन् १६४७ में बडी फुर्ती के साथ एकही वर्ष में वहां से ६ मील दूर महोर बघ्द पहाडी पर दूसरा किला तय्यार करके उसका नाम राजगढ़ रक्खा। शिवाजी के उन कामों की खबर से बीजापुर दरबार में हलचल मच गई, परंतु जब शाहजी ने अपनी कर्नाटक की जागीर से मुलायम चिट्ठी लिखी, तब दरबार शांत रह गया। दादाजी की मृत्यु होजाने पर शिवाजी ने अपनी जागीर के अन्तरगत कोंढाने दुर्गनामक किले को मुसलमान किलेदार से छीन लिया और उसका नाम सिंहगढ़ रक्खा। तथा पुरंधर के हिन्दू किलेदार के मर जाने पर उस किले को भी लेलिया। अब शिवाजी की जागीर चाकून से नीरानदी तक फैल गई।

सन् १६४८ में शिवाजी बीजापुर राज्य का खजाना, जो कल्याण से बीजापुर जाता था, लूट कर अपने वर्तमान वासस्थान राजगढ़ में उठालाये। उस समय उन्होंने बीजापुर के राज्य के कई छोटे किलों को लेलिया और कल्याण के पास बीरवारी और लिंगाना नामक दो किले बनवाये।

उस समय कर्नाटक में शाहजी का भी विलक्षण प्रभाव हुआ था। सन् १६४९ में बीजापुर के सुलतान आदिलशाह की अनुमति से मुधौल के बाजी घोरपुरे ने, जो शाहजी के साथ काम करता था, उनको नेवता देकर घर में बुलाया और पकड़ कर बीजापुर के दरबार में भेज दिया। महम्मद आदिलशाह ने शाहजी को कैदखाने में रक्खा; पर कुछ दिनों के बाद शिवाजी की गुप्त प्रार्थना से, जब महम्मद आदिलशाह के ब्राह्मण मंत्री मुरार पन्त ने कोशिश की, तब आदिलशाह ने शाहजी को कारागार से मुक्त करके चार वर्ष के लिये राजधानी में नजरबन्द रक्खा। उधर शिवाजी मुगलों से लिखा पढ़ी कर रहे थे, इसी भय से सुलतान आदिलशाह को चारो वर्ष तक शिवाजी के विरुद्ध सेना भेजने का साहस न हुआ। उधर कर्नाटक की दशा बहुत बिगड़ गई, शाहजी

के बड़ा पुत्र शम्भाजी विद्रोहियों के हाथ से मारे गये। सन् १६५३ में सुलतान ने शाहजी को नजर बन्द से रिहाई कर पुनः कर्नाटक में भेजा।

शिवाजी ने नये जीते हुए देशों की रक्षा के लिये कृष्णा के तट के पर्वत पर प्रतापगढ़ नामक किला बनाया। शिवाजी के प्रधान मंत्री श्यामराजेपन्त ने राज्य का अच्छा प्रबंध किया। इस लिये शिवाजी ने उसको पेशवा की पदवी दी। सन् १६५७ में शिवाजी ने मुगल राज्य के जुनीर शहर को लूट लिया, जिससे उनको बहुत धन और घोड़े मिले। उसी वर्ष शिवाजी के पुत्र शम्भाजी का जन्म हुआ। सन् १६५९ में जब मंत्री श्यामराजेपन्त कोंकण के फतहखां सिद्दी से युद्ध में हारगए; तब वह मंत्री के काम से च्युत किये गए और मोरो त्रिमल पिंगले को पेशवा का पद प्राप्त हुआ।

उसी साल के अक्टूबर महीने में बीजापुर दरबार के सिपहसालार अफजलखां ने शिवाजी को पकड़ने का बीड़ा उठाया और दरबार के कर्मचारी पन्तोजी गोपीनाथ को दूत बनाकर शिवाजी के पास भेजा। पन्तोजी ने मित्रता दृढ़ करने के लिये परस्पर मिलन होनी की बात शिवाजी से कही। शिवाजी ने दगा को जान लिया। उसने भी कृष्णजी भास्कर को अपना दूत नियुक्त कर अफजलखां के पास भेजा। मिलने का स्थान प्रतापगढ़ किले के नीचे मुकरर हुआ। अफजलखां के साथ शस्त्रधारी हजारों सिपाहियों को देख शिवाजी ने अपने कर्मचारियों के आधीन बहुतसी सेना छिपा रक्खी और अपने वस्त्र के नीचे जिरहबखतर पहिन लिया तथा बिछुआ और बाघनखा हथियार धारण किया। जब शिवाजी और अफजलखां नियत स्थान पर एकत्र हुए, तब शिवाजी ने अपने बिछुए और बाघनखा हथियार से अफजलखां को घायल करके उसको मारडाला। उसी समय छिपे हुए महाराष्ट्रों ने मुसलमानों की सेना पर आक्रमण किया। मुसलमानी सेना के बहुत लोग मारे गये, कुछ भाग गये और जो पकड़े गये उनको शिवाजी ने छोड़वा दिया। नवम्बर बीतने से पहिलेही अगणित स्थान और दिसम्बर में कोल्हापुर जिला शिवाजी के अधिकार में होगया।

अफजलखां की फौज का नाश सुन कर बीजापुर की फौज चारो तरफ से

शिवाजी के किलों पर आक्रमण किया। पहले तो बहुत मुसलमानी सेना मारी गई परंतु पीछे मुसलमानों ने पनाला के किले में शिवाजी को घेर लिया। शिवाजी ४ मास तक किले में आत्मरक्षा करके उसके पश्चात् चुने हुए मावली वीरों के साथ एक ओर का व्यूह भेद कर निकल गए।

सन् १६६२ में शिवाजी ने बम्बई हाते के उत्तरी सरहद तक बड़ा मुल्क ले लिया और बादशाही शहर सूरत को खूब लूटा। सन् १६६४ में अपने पिता के मरने पर उन्होंने राजा की पदवी ली और अपने नाम का सिक्का जारी किया। सन् १६६९ में उन्होंने मुगलों के लशकर को बीजापुर की रियासत पर चढ़ाई करने म मदद दी। सन् १६७४ में शिवाजी अपनी राजधानी राजगढ़ में बड़ी धूमधाम से राज सिंहासन पर बैठे। उस समय उन्होंने सोना का तुलादान किया। उसके पश्चात् उन्होंने छोटे छोटे राजाओं से राज्य कर और बंबई के अंगरेजो से बहुत नजर लिया। सन् १६७६ में शिवाजी ने कर्नाटक तक अपनी सेना भेजी। सन् १६८० में ५३ वर्ष की अवस्था में उनका देहांत होगया। राजगढ़ में उनका समाधि मन्दिर बना हुआ है।

सन् १६८० में शम्भाजी, जिनका वय २३ वर्ष का था, अपने बाप शिवाजी की जगह गद्दी पर बैठे, परन्तु उनकी जिन्दगी का समय पोर्चुगीजों और मुगलो की लड़ाइयों में कटा। औरंगजेब ने सन् १६८९ में उनको पकड़ा और मार डाला। उनका पुत्र शाहूजी, जो उस समय ६ वर्ष का था, गिरफ्तार होगया, जो औरंगजेब के मरने तक कैद रहा। सन् १७०७ में शाहूजी मुगलों की आधीनता स्वीकार करके अपने पिता के राज्य पर बहाल हुआ, किन्तु उसने रियासत का प्रबन्ध अपने दीवान बालाजी विश्वनाथ को, जो ब्राह्मण थे, सपुर्द कर दिया।

पेशवाओं का वृत्तांत—जब शिवाजी के पोता शाहूजी ने बालाजी विश्वनाथ को अपनी रियासत सपुर्द करदी, तब धीरे धीरे पेशवा का उहदा मौरूसी होगया। शिवाजी के परिवार के अधिकार में केवल सतारा और कोल्हापुर की छोटी रियासत रह गई।

(१) पहला पेशवा बालाजी विश्वनाथ ने सन् १७१८ में दिल्ली के बादशाह की सहायता के लिए एक फौज भेजी और सन् १७२० ई० में जोर डाल कर दक्षिण की मालगुजारी पर बादशाह फरमान के जरिये से चौथ हासिल की।

(२) दूसरा पेशवा बाजीराव बालाजी अपने पिता के मरने पर सन् १७२१ में राजसिंहासन पर बैठे। उन्होंने सन् १६३६ में मालवा पर भी अपना अधिकार कर लिया और विंध्याचल के उत्तर और पश्चिम को नर्मदा और चम्बल नदी के बीच के मुल्क पर अपना राज्य फैलाया तथा सन् १७३९ में बसीन का किला पोर्चुगीजों से छीन लिया।

(३) बाजीराव के मरने पर उनके पुत्र बालाजी बाजीराव सन् १७४० में तीसरा पेशवा बने, जिनके राज्य के समय महाराष्ट्रों का भय सम्पूर्ण मोगल राज्य पर छा गया। उसने निजाम से दो लड़ाइयां लड़कर अपने राज्य को बढ़ाया; सन् १७५० में पूना शहर को राजधानी बनाया और उत्तरी हिन्द को पंजाब तक लूटा। उस समय पंजाब के शासक अहमदशाह दुर्रानी क्रोध करके चढ़ आया और सन् १७६१ में पानीपत की लड़ाई में महाराष्ट्रों को परास्त किया।

(४) दूसरा बालाजी की मृत्यु होने पर उनके पुत्र माधवराव सन् १७६१ में पूना की गद्दी पर बैठे। सन् १७६३ में निजामअली ने पूना को लूट कर बरबाद किया। माधवराव से इतना बन पड़ा कि उसने अपने जोर को हैदराबाद, मैसूर और बरार के हाकिमों के मुकाबले में कायम रक्खा।

(५) माधवराव के देहांत होने पर सन् १७७२ में नारायणराव, जिसकी अवस्था १७ वर्ष की थी, पांचवां पेशवा बना। वह सन् १७७३ में राज्य पाने के ९ महीने बाद अपने अंग रक्षक द्वारा मारा गया।

(६) नारायणराव के मरने पर उसके पुत्र माधवराव का जन्म हुआ। राज्य का संपूर्ण काम दीवान नानाफरनवीस करने लगा; परन्तु दूसरा बालाजी के भाई रघोवा ने माधवराव नामक लड़के को दोगला कह कर खुद छठवां पेशवा होने का दावा किया। नाना फरनवीस ने फ्रांसीसियों से सहायता मांगी और अंगरेजों ने बम्बई में रघोवा की सहायता की। मरहटों और अंगरेजों

से सन् १७७९ से १७८१ तक लड़ाई होती रही। सन् १७८२ में सुलह हुई, जिसके अनुसार सालसट और एलिफेंटा के टापू और दो दूसरे टापू अंगरेजों के हाथ लगे, रघोबा को अच्छी पंशन मिली और नाबालिग माधवराव अपनी हुकूमत पर पक्का हुआ; परन्तु २१ वर्ष की अवस्था में वह फाटक के ऊपर की बालकानी से गिर कर मर गया।

(७) माधवराव के मरने पर उसके चचेरा भाई दूसरा बाजीराव सन् १७९८ में सातवां पेशवा बनकर पूना की गद्दी पर बैठे। उनका बल दिन पर दिन घटता गया। जशवन्तराव हुलकर ने पेशवा और सिंधिया की मिली हुई फौजों को पूना में परास्त किया और सिंधिया के संपूर्ण तोप, असबाब और भंडार को लूट लिया।

सन् १८१७ के पहिली नवम्बर को बाजीराव पेशवा की फौज ने पूना की अंगरेजी छावनी और नदी के संगम के पास के रेजीडेंसी को लूट करके जला दिया। ता० ६ नवम्बर को अंगरेजी रेजीडेंट किर्की के पास, जो उस समय एक छोटी बस्ती थी, चला गया। पेशवा की सेना में १४ तोपों के साथ ८००० पैदल सेना और १८००० घोड़ सवार थे। उनके अलावे पार्वती पहाड़ी के निकट पेशवा के साथ २००० पैदल फौज और ५००० सवार थे। अंगरेजों के पास केवल २८०० सेना थी, जिनमें ८०० यूरोपियन थे। कई लड़ाइयां हुई, जिनमें पेशवा की ओर के बहुत लोग मारे गए। तारीख ११ नवम्बर को जब अंगरेजी जनरल इस्मीथ के आधीन की सेना सिरूर से आ गई तब थोड़ी लड़ाई के पश्चात् पेशवा की सेना पीछे हटी। अन्त में पेशवा परास्त हुए। सन् १८१८ में उनका राज्य अंगरेजी राज्य में मिला लिया गया। बाजीराव पेशवा को वार्षिक ८ लाख पेंशन नियत हुआ। वह कानपुर के पास बिठूर में रहने लगे, जो सन् १८५३ में वहांही मर गए।

बाजीराव की मृत्यु होने पर अंगरेजी सरकार ने उनके दत्तक पुत्र नाना धुंधुपंत को उनका उत्तराधिकारी स्वीकार नहीं किया और बाजीराव की पेंशन बंद कर दी। सन् १८५७ के बलवे के समय नाना धुंधुपंत ने कानपुर में बहुत से अंगरेजों को मार डाला (कानपुर में देखिए)।

रेलवे—पूना से रेलवे लाइन ३ तरफ गई है।—

(१) पूना से पश्चिमोत्तर ग्रेट इंडियन पेनिन सूला रेलवे, जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २ पाई है।—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३ किर्की।
१० चिचवाड़ा।
२१ तलेगांव।
२३ वाड़गांव।
३४ कार्ली।
३९ कोनवली।
४१ खंडाला।
५७ कर्जत।
६५ नेरल।
८१ अमरनाथ।
८६ कल्याण जंक्शन।
९८ थाना।
१०२ भंडूप।
११३ दादर जंक्शन।
११९ बम्बई (विक्टोरिया टर्मिनस)।

कल्याण जंक्शन से पूर्वोत्तर ८३ मील नासिक, १२९ मील मनमार जंक्शन, और २४३ भुसावल जंक्शन।

(२) पूना जंक्शन से पूर्व-दक्षिण ग्रेट इंडियन पेनिन सुला रेलवे।—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

४८ धोंद जंक्शन।
६६ डिकसल।
१०५ केम।
११६ बारसी रोड।
१४५ मोहल।
१६५ शोलापुर।
१७४ होतगी जंक्शन।
२३५ गुलबर्गा।
२५२ शाहाबाद।
२५८ वाडी जंक्शन।
३२५ रायचुर।

धोंद जंक्शन से उत्तर ५१ मील अहमद नगर और १४६ मील मनमार जंक्शन।

होतगी जंक्शन से दक्षिण सदर्न मरहटा रेलवे पर ५८ मील बीजापुर, १३१ मील बादामी और १७३ मील गदग जंक्शन।

वाडी जंक्शन से पूर्व निजाम स्टेट रेलवे पर ११५ मील हैदराबाद १२१

मील सिकंदराबाद और २०८ मील वारंगल।

(३) पूना जंक्शन से दक्षिण सदर्न मरहटा रेलवे, जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २ पाई है;—

मील—प्रसिद्ध स्टेसन।

६९ वाथर।

७८ सितारारोड।

१६० मिराज जंक्शन।

२०९ गोकाकरोड।

२४५ बेलगांव।

२७८ लोंडा जंक्सन।

मीराज जंक्शन से २९ मील पश्चिम कोल्हापुर।

लोंडा जंक्शन से ६६ मील पश्चिम मोरमूगांव बंदरगाह।

लोंडा जंक्शन से पूर्व ४४ मील धारवाड़, ५६ मील हुवली जंक्शन, ९२ मील गदग जक्शन, १५९ मील होसपेट, १८५ मील बल्लारी और २१५ मील गुंटकल जंक्शन।

हुवली जंक्शन से दक्षिण पूर्व ८१ मील हरिहर, १७८ मील बनावार, २४८ मील तमकूर और २८८ मील बंगलोर शहर।

भीमशंकर।

पूना के रेलवे स्टेशन से २१ मील पश्चिमोत्तर तलेगांव का रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से २४ मील दूर भीमशंकर महादेव का मंदिर है। मार्ग में पहाड़ की चढ़ाई उतराई नहीं मिलती। भीमशंकर के पास जाने का दूसरा मार्ग तलेगांव के स्टेशन से ४४ मील पश्चिमोत्तर नेरल के रेलवे स्टेशन से है। उस स्टेशन से केवल १६ मील दूर भीमशंकर है, किंतु इस मार्ग म १० मील गाड़ी जाने वाली सड़क के बाद ६ मील पहाड़ी की चढ़ाई उतराई मिलती है।

इस भीमशंकर को लोग शिव के १२ ज्योतिर्लिंगों का भीमशंकर कहते हैं; परंतु शिवपुराण में, जहां १२ ज्योतिर्लिंगों की कथा है, कामरूपेश्वर अर्थात् आसामदेश के कामरूप जिले में भीमशंकर लिखा हुआ है, जो नीचे लिखी हुई कथा से विदित होगा।

शिवपुराण—(ज्ञानसंहिता, ३८ वां अध्याय) शिवजी के १२ ज्यो-

तिर्लिंगों में से भीमशंकर शिवलिंग डाकनी में विराजाते हैं । (४८ वां अध्याय) लंका के कुम्भकर्ण का पुत्र भीम नामक राक्षस अपनी माता कर्कटी के सहित सह्याचल पर रहता था । उसने १० हजार वर्ष तक कठोर तप करके ब्रह्माजी से अप्रमेय वर पाया । उसके पश्चात् वह कामरूप के राजा को परास्त कर उसको बंदीखाने में रख कामरूप देश का स्वामी बनगया और देवगण तथा ऋषीश्वरों को क्लेश देने लगा । कामरूप के राजा ने बंदीखाने में पड़े हुए अपनी स्त्री के सहित पार्थिव बना कर शिवजी की आराधना करने लगा । उधर देवताओं ने शिवजी को प्रसन्न करके भीम दैत्य के विनाश के लिये उनसे प्रार्थना की । भीम ने जब सुना कि राजा वंदिगृह में भी शिव का पुजन करता है, तब राजा के निकट आकर उसके ऊपर तलवार चलाई। शिवजी ने उसी समय पार्थिव से निकल कर भीम की तलवार को अपने पिनाक से सौ टुकड़े करडाला । तब महादेवजी और भीम का भयंकर युद्ध होने लगा। उस समय पृथ्वी डोलने लगी, समुद्र उछलने लगा और देवता गण भय से अति त्रसित हुए । जब नारद ने आकर दैत्य के वध के लिये शिवजी की प्रार्थना की, तब भगवान शंकर ने हुंकाररूपी अस्त्र से संपूर्ण राक्षसों के सहित भीम को भस्म कर दिया । उस समय देवताओं ने शिवजी से प्रार्थना की कि हे भगवन ! आप लोक के हित के अर्थ इस स्थान में निवास करके इस दुष्ट देश को पवित्र कीजिए । शिवजी देवताओं के वचन स्वीकार करके उस स्थान में रहगए और भीमशंकर नाम से प्रसिद्ध हुए। उनके दर्शन और स्मरण करने से संपूर्ण पाप का विनाश होता है।

कारली के गुफामंदिर ।

तलेगांव के रेलवे स्टेशन से १३ मील (पूनाशहर के रेलवे स्टेशन से ३५ मील) पश्चिमोत्तर कारली का रेलवे स्टेशन और कारली के रेलवे स्टेशन से ५ मील पश्चिमोत्तर लोनवली का रेलवे स्टेशन है। दोनों स्टेशनों से ६ मील दूर आसपास के मैदान से लगभग ६०० फीट ऊंची पहाड़ी के बगल में कारली के प्रसिद्ध गुफा मन्दिर हैं । लोनवली से ४½ मील तक तांगा जाने लायक मार्ग और १½ मील टट्टू जाने की राह है।

मील सिंकदराबाद और २०८ मील वारंगल।

(३) पूना जंक्शन से दक्षिण सदर्न मरहट्टा रेलवे, जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २ पाई है;—

मील—प्रसिद्ध स्टेसन।

६९ वाथर।

७८ सितारारोड।

१६० मिराज जंक्शन।

२०९ गोकाकरोड।

२४५ बेलगांव।

२७८ लोंडा जंक्सन।

मीराज जंक्शन से २९ मील पश्चिम कोल्हापुर।

लोंडा जंक्शन से ६६ मील पश्चिम मोरमूगांव बंदरगाह।

लोंडा जंक्शन से पूर्व ४४ मील धारवाड़, ५६ मील हुवली जंक्शन, ९२ मील गदग जंक्शन, १४५ मील होसपेट, १८५ मील बल्लारी और २१५ मील गुंटकल जंक्शन।

हुवली जंक्शन से दक्षिण-पूर्व ८१ मील हरिहर, १७८ मील बनावार, २४८ मील तमकूर और २८८ मील बंगलोर शहर।

भीमशंकर।

पूना के रेलवे स्टेशन से २१ मील पश्चिमोत्तर तलेगांव का रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से २४ मील दूर भीमशंकर महादेव का मंदिर है। मार्ग में पहाड़ की चढ़ाई उतराई नहीं मिलती। भीमशंकर के पास जाने का दूसरा मार्ग तलेगांव के स्टेशन से ४४ मील पश्चिमोत्तर नेरल के रेलवे स्टेशन से है। उस स्टेशन से केवल १६ मील दूर भीमशंकर हैं; किंतु इस मार्ग में १० मील गाड़ी जाने वाली सड़क के बाद ६ मील पहाड़ी की चढ़ाई उतराई मिलती है।

इस भीमशंकर को लोग शिव के १२ ज्योतिर्लिंगों का भीमशंकर कहते हैं; परंतु शिवपुराण में, जहां १२ ज्योतिर्लिंगों की कथा है, कामरूपदेश अर्थात् आसामदेश के कामरूप जिले में भीमशंकर लिखा हुआ है, जो नीचे लिखी हुई कथा से विदित होगा।

शिवपुराण—(ज्ञानसंहिता, ३८ वां अध्याय) शिवजी के १२ ज्यो-

तिर्लिंगों में से भीमशंकर शिवलिंग डाकनी में विराजते हैं । (४८ वां अध्याय) लंका के कुम्भकर्ण का पुत्र भीम नामक राक्षस अपनी माता कर्कटी के सहित सह्याचल पर रहता था । उसने १० हजार वर्ष तक कठोर तप करके ब्रह्माजी से अमोघ वर पाया । इसके पश्चात् वह कामरूप के राजा को परास्त कर उसको बंदीखाने में रख कामरूप देश का स्वामी बनगया और देवगण तथा ऋषीश्वरों को क्लेश देने लगा । कामरूप के राजा ने बंदीखाने में पड़े हुए अपनी स्त्री के सहित पार्थिव बना कर शिवजी की आराधना करने लगा । उधर देवताओं ने शिवजी को प्रसन्न करके भीम दैत्य के विनाश के लिये उनसे प्रार्थना की । भीम ने जब सुना कि राजा बंदिगृह में भी शिव का पूजन करता है, तब राजा के निकट जाकर उसके ऊपर तलवार चलाई । शिवजी ने उसी समय पार्थिव से निकल कर भीम की तलवार को अपने पिनाक से सौ टुकड़े करडाला । तब महादेवजी और भीम का भयंकर युद्ध होने लगा । उस समय पृथ्वी डोलने लगी, समुद्र उछलने लगा और देवता गण भय से अति त्रसित हुए । जब नारद ने आकर दैत्य के बध के लिये शिवजी की प्रार्थना की, तब भगवान शंकर ने हुंकाररूपी अस्त्र से संपूर्ण राक्षसों के सहित भीम को भस्म कर दिया । उस समय देवताओं ने शिवजी से प्रार्थना की कि हे भगवन ! आप लोक के हित के अर्थ इस स्थान में निवास करके इस दुष्ट देश को पवित्र कीजिए । शिवजी देवताओं के बचन स्वीकार करके उस स्थान में रहगए और भीमशंकर नाम से प्रसिद्ध हुए। इनके दर्शन और स्मरण करने से संपूर्ण पाप का विनाश होता है।

कारली के गुफामंदिर ।

तलेगांव के रेलवे स्टेशन से १३ मील (पूनाशहर के रेलवे स्टेशन से १४ मील) पश्चिमोत्तर कारली का रेलवे स्टेशन और कारली के रेलवे स्टेशन से ६ मील पश्चिमोत्तर लोनवली का रेलवे स्टेशन है। दोनो स्टेशनों से ६ मील दूर आसपास के मैदान से लगभग ६०० फीट ऊंची पहाड़ी के बगल में कारली के प्रसिद्ध गुफा मन्दिर हैं । लोनवली से ४½ मील तक तांगा जाने लायक मार्ग और १½ मील टट्टू जाने की राह है।

बंबई हाते के पूना जिले में (१८ अंश, ४५ कला, २० विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, ३१ कला, १६ विकला पूर्व देशांतर में) कारली के गुफामंदिर हैं। वहां अनेक विहार गुफाओं के सहित एक बृहत् चैत्यगुफा अर्थात् बौद्ध मंदिर निशन पहाड़ी चट्टान में पत्थर खोद कर अर्थात् भीतर से पत्थर निकाल कर बनाया हुआ है। इतनी बड़ी तथा सुन्दर चैत्यगुफा भारतवर्ष में दूसरी नहीं है। गुफा के पेशगाह अर्थात् आगे के ओसारे के बगल में और आगे के सिंह स्तंभ पर पुराने लेख हैं, जिनसे विदित हुआ है कि महाराज भूति ने (जो सन् ईस्वी के आरंभ से ७८ वर्ष पहिले राज्य करते थे) इसको बनवाया था। वह गुफा अपने पेशगाह के पीछे से अपनी पीछे की दीवार तक १२६ फीट लंबी और दहिने बाएं की दीवार के भीतर ४५ फीट चौड़ी तथा नीचे के तल से छत के तल तक ४६ फीट ऊंची है। इसके भीतर की पिछली दीवार गोलाकार है। गुफा के भीतर चारो ओर की दीवारों से लगभग ६ फीट भीतर चट्टान के बने हुए स्तंभों की एक पंक्ती है, जिनमें से दहिने और बाएं पंद्रह पंद्रह अठ पहले स्तंभ हैं। प्रत्येक स्तंभों की नेव लंबी, मध्य भाग अठपहला और ऊपर का भाग सुन्दर नकाशी से भूषित है, जिसमें दो हाथी दो दो सुन्दर सवारों के सहित बने हुए हैं। गुफा के पीछे के भाग के ७ स्तंभ सादे अठपहले हैं। गुफा के आगे पेशगाह की ओर ४ अठपहले स्तंभ हैं। स्तंभों के भीतर उस गुफा का मध्य भाग लगभग १०५ फीट लंबा और २५ फीट चौड़ा है। वह गुफा अब शिव का मन्दिर समझा जाता है। सामने उसके पीछे के भाग में प्रायः शिवलिंग के समान दघोब है। दघोब छोटे स्तूप के समान होता है; पर उसमें बुद्धदेव अथवा उनके शिष्य की अस्थि रहती है। गुफा और उसके पेशगाह के बीच की दीवार में ३ दरवाजे हैं; मध्य का बड़ा और बगलों के दोनों छोटे। पेशगाह दहिने बाएं ५२ फीट लंबा और आगे से पीछे तक १५ फीट चौड़ा है। उसके आगे पहलदार मोटे मोटे ४ स्तंभ बने हुए हैं। पेशगाह के आगे उसके दहिने बगल में १ मोटा सिंहस्तंभ, जिसके शिरोभाग में ४ सिंह बने हुए हैं, और बाएं एक छोटा मन्दिर है।

कारली कीगुफा
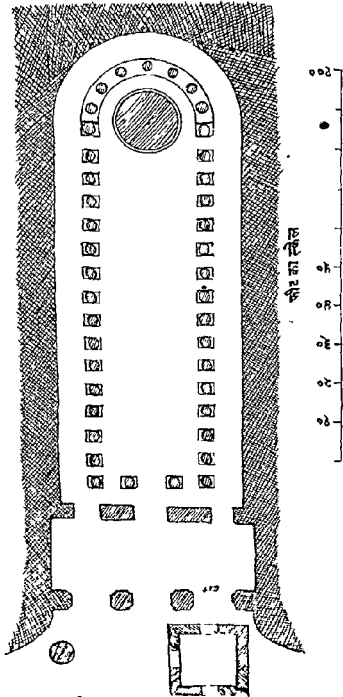
अन्य गुफाएं—कारली के पास बहुतसी बिहार गुफा भी हैं। प्रधान बिहार नीचे ऊपर ३ पंक्तियों में हैं। उनके मध्य में छत के नीचे बड़ा कमरा और कमरे के बगलों में छोटी कोठरियां बनी हुई हैं। ऊपर वाले में केवल एक बरंडा है, जिसके पास भवानी का छोटा मंदिर है। पहाड़ी के कदम के पास एक छोटा गांव है, जिसकी गुफा एकविरा की गुफा कहलाती हैं।

रेलवे स्टेशन से ३ मील दक्षिण मैदान से १२०० फीट ऊंचाई पर लोगढ़ और ईशापुर के पहाड़ी किले हैं।

भाजा की गुफाएं—कारली गांव से ३ मील दक्षिण-पूर्व भाजा नामक बस्ती से लगभग १ मील दूर सन् ईस्वी के २०० वर्ष पहले के बने हुए १२ जगह १८ गुफा हैं। यह स्थान भारतवर्ष के दिलचस्प स्थानों में से एक है।

बेदसा की गुफाएं—भाजागांव से ५½ मील पूर्व और वाडगांव के रेलवे स्टेशन से ६ मील दक्षिण-पश्चिम बेदसागांव है। यहां की गुफाएं भाजा की गुफाओं से थोड़े पीछे की हैं। यहां के प्रधान गुफा मन्दिर में एक दघोब है; छत के नीचे २७ सादे स्तंभ बने हुए हैं। स्थान के दोनों बगलों पर पत्थर काट कर दो मंजली गुफा बनी हुई हैं, जिनमें छोटी कोठरियों के साथ मामूली कमरे हैं। यहां १४ दघोबों में अजीब संगतराशी के काम हैं, जिनमें से ५ भीतर और दूसरे सब गुफा के बाहर हैं। गुफा के आगे मेहराब दार ४ स्तंभों पर बहुतेरे घोड़े बैल और हाथी बने हैं। गुफा मन्दिर का नकशा कार्ली की चैत्य गुफा के समान है, लेकिन न तो उतना बड़ा है और न उसके समान उत्तम है और उससे यह नया जान पड़ता है। इसमें एक दघोब है, जिसकी छत के नीचे १० फीट ऊंचे २६ स्तंभ बने हुए हैं। आगे में करीब २५ फीट ऊंचे ४ स्तंभ हैं, जिनके सिर के पास बहुत से घोड़े, बैल और हाथी बने हैं। मन्दिर के पास मेहराब दार छत वाला अंडाकार शकल का एक हल है, जिसके बगलों में ११ छोटी कोठरियां बनी हुई हैं।

खंडाला—लोनवली के रेलवे स्टेशन से २ मील खंडालागांव का रेलवे स्टेशन है। खंडाला एक बड़ा गांव है। उसके पास एक अस्पताल, एक

अंगरेजी बंगला और एक तालाब है। गर्मी के दिनों में बम्बे के बहुतेरे धनी लोग उस गांव में रहते हैं। डाक बंगले से सीधी लाइन में आधा मील और एक नाले के घुमाव की राह से १½ मील दूर एक जलप्रपात है, जो नीचे और ऊपर दो भागों में बंटा हुआ है, जिनमें से ऊपर वाला जलप्रपात ऊपर से ३०० फीट नीचे गिरता है।

अमरनाथ।

लोनवली के स्टेशन से ४२ मील (पूना के स्टेशन से ८१ मील) पश्चिमोत्तर और कल्याण जंक्शन से ५ मील दक्षिण अमरनाथ का रेलवे स्टेशन है। लोनवली में कर्जत के रेलवे स्टेशन तक १८ मील के भीतर रेलगाड़ी चलने के लिये १६ जगह पहाड़ फोड़ कर उसके भीतर रेलवे सड़क बनी है। संपूर्ण सुरंगी सड़क की लंबाई २५३५ गज है, जिसके बनाने में लगभग ६० लाख रुपये खर्च पड़े थे। लाइन चढ़ाव, उतार तथा घुमाव की है। घोर घाट की चढ़ाई की जगह पर दोनों ओर से गाड़ियों में जोरावर एन्जिन लगाया जाता है। कर्जत से दक्षिण ९ मील की लाइन कंपवली को गई है, जिस पर वर्षा काल में गाड़ी नहीं चलती है।

अमरनाथ नामक स्टेशन के पास बंबई हाते के थाना जिले में अमरनाथ नामक छोटा गांव है, जिसमें लगभग ३०० मनुष्य बसते हैं। गांव से ½ मील पूर्व एक सुन्दर घाटी में अमरनाथ शिव का विचित्र मंदिर है। उसके एक दरवाजे के पास शिला लेख है, जिससे विदित होता है कि यह मंदिर शाका ९८२ (सन् १०६०) ई० में बना। निज मंदिर में खंडित तथा चिपटा शिवलिंग है। उत्तर बगल के ताक में एक पुरुष की तीन सिर वाली प्रतिमा है; उसके जंघे पर एक स्त्री बैठी है। अनुमान से जान पड़ता है कि शिव पार्वती की प्रतिमा होगी। मंदिर के दक्षिण-पूर्व बगल पर कालीजी की प्रतिमा है। मंदिर के आगे अर्थात् पश्चिम २२ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा मंडपम् अर्थात् जगमोहन है, जिसमें पश्चिम, दक्षिण तथा उत्तर द्वार बने हुए हैं। प्रत्येक द्वार के आगे एक ओसारा और प्रत्येक ओसारे में ४ स्तंभ लगे हैं,

जिनमें से २ स्तंभ दीवार से मिले हुए हैं। मंडपम् की छत में उत्तम कारीगरी से विविध भांति के फूल, पत्ते, चिड़िये तथा सिंह के सिर बने हुए हैं। मंदिर के द्वार पर विचित्र शिल्पकारी का काम है। मंदिर के बाहर चारो तरफ और मंडपम् के चारो स्तंभों में विचित्र कारीगरी का काम है। बंबई हाते के किसी मंदिर में इससे बढ़ कर काम नहीं देख पड़ता। दरवाजे के फाटक, जिससे अमरनाथ के निज मंदिर में जाना होता है, अनेक हाथी और सिंह से, जिनके बीच में महादेव की प्रतिमा है, भूषित है।

इक्कीसवां अध्याय।

(बंबई हाते में) कल्याण, नासिक, त्र्यंबक, थाना, और अलीबाग।

कल्याण।

अमरनाथ के रेलवे स्टेशन से ५ मील उत्तर (पूना शहर से ८६ मील पश्चिमोत्तर), नासिक से ८३ मील और मनमार जंक्शन से १२९ मील दक्षिण-पश्चिम तथा बंबई के विक्टोरिया स्टेशन से ३३ मील पूर्वोत्तर कल्याण में रेलवे का जंक्शन है। बंबई हाते के उत्तरीय विभाग के थाना जिले में (१९ अन्श, १४ कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, १० कला पूर्व देशांतर में) सब डिवीजन का सदर स्थान कल्याण नामक तिजारती कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय कल्याण में १२६०८ मनुष्य थे; अर्थात् ९७०२ हिंदू, २४५३ मुसलमान, २७२ पारसी, ११९ कृस्तान, ४६ जैन, ७ यहूदी और १३ अन्य।

कल्याण में सबजज की कचहरी, अस्पताल, स्कूल, ८ छोटे जलाशय एक जलाशय के पास सदानंद का मंदिर और बहुत से कूप हैं। म्युनिसिपल्टी ने एक बाजार बनवाया है, जिसमें तरकारी आदि वस्तु बिकती हैं। कल्याण

में नमक, चावल, तंबाकू इत्यादि की बड़ी तिजारत होती है। सड़कें पक्की बनी हैं।

इतिहास—पहिली, दूसरी, पांचवीं तथा छठवीं शदी के शिला लेखों में कल्याण का नाम मिलता है। दूसरी शदी के अंत में कल्याण प्रसिद्ध हुआ। छठवीं शदी में वह एक प्रतापी राजा का सदर स्थान और भारतवर्ष के ९ प्रसिद्ध बाजारों में से एक बाजार था। १४ वीं शदी के आरंभ में वह एक जिले का सदर स्थान इस्लामाबाद नाम से प्रसिद्ध था। सन् १५३६ में पोर्चुगल वालों ने कल्याण को ले लिया; किंतु सन् १५७० में उनको छोड़ देना पड़ा। उसके पश्चात् वह अहमदनगर के राज्य के आधीन हुआ। सन् १६३६ में बीजापुरवालों ने उसको अपने राज्य में मिला लिया। सन् १६४८ में शिवाजी ने कल्याण को ले लिया; किंतु सन् १६६० में मुसलमानों ने फिर उस पर अपना अधिकार कर लिया। सन् १६६२ में शिवाजी ने फिर उस पर अपना अधिकार किया। उन्हों ने सन् १६७४ में अंगरेजों को कल्याण में एक कोठी नियत करने की आज्ञा दी। सन् १७८० में अंगरेजों ने महाराष्ट्रों से कल्याण ले लिया; तबसे वह उनके अधिकार में है। पहिले कल्याण की चारो ओर दीवार थी, जिसमें ११ बुर्ज ४ फाटक बने थे।

नासिक।

कल्याण जंक्शन से २६ मील पूर्वोत्तर अठगांव के रेलवे स्टेशन के पास बांध बना कर एक बड़ी झील बनाई गई है, जिसको सन् १८९२ में भारतवर्ष के गवर्नर जनरल लार्ड लैंसडौन ने खोला था। झील का बांध २ मील लंबा और ११८ फीट ऊंचा है, जिसकी चौड़ाई नेव के पास १०३ फीट और सिर के समीप २४ फीट है। बांध से टन्सा नदी का जल रुक कर ८ वर्गमील के विस्तार की झील बन गई है, जो ३ किरोड़ ३० लाख गेलन पानी जमा सकती है। उस झील से बंबई शहर में पानी जाता है।

अठगांव के रेलवे स्टेशन से १६ मील (कल्याण जंक्शन से ४२ मील) पूर्वोत्तर कसारा के रेलवे स्टेशन से ताळघाट की चढ़ाई आरंभ होती है।

इस जगह से पूर्वोत्तर इगतपुरी के स्टेशन के पास तक९१ मील में रेलवे लाइन १०५ फीट ऊपर गई है । एक खास एन्जिन कसारा स्टेशन पर गाड़ियों में जोड़ा जाता है और इगतपुरी के पास हटा दिया जाता है । कसारा और इगतपुरी के बीच में ११ जगह पहाड़ियों में छेद करके उनके भीतर रेलवे लाइन बैठाई गई है, जिस पर रेलगाड़ी चलती हैं।

इगतपुरी से २८ मील (कल्याण जंक्शन से ८० मील) पूर्वोत्तर और नासिकरोड से ३ मील दक्षिण पश्चिम देवलाली का रेलवे स्टेशन है। देवलाली से ७ मील की सुन्दर सड़क नासिक कसबे को गई है । देवलाली में १००० सेना के रहने लायक बारक अर्थात् सैनिक गृह बने हैं। यूरोप को जाती हुई अथवा वहांसे आती हुई सेना बारकों में ठहरती हैं ।

देवलाली के रेलवे स्टेशन से ३ मील, कल्याण जंक्शन से ८३ मील और बंबई के विक्टोरिया स्टेशन से ११६ मील पूर्वोत्तर और मनमार जंक्शन से ४६ मील दक्षिण-पश्चिम नासिकरोड का रेलवे स्टेशन है.। स्टेशन के पास धर्मशाला बनी हुई है । बंबई हाते के मध्य विभाग में नासिकरोड के रेलवे स्टेशन से ५ मील पश्चिमोत्तर गोदावरी नदी के दोनों किनारों पर समुद्र के जल से १९०० फीट ऊपर जिले का सदर स्थान तथा एक प्रसिद्ध तीर्थ नासिक कसबा है । रेलवे स्टेशन और नासिक कसबे के बीच में सन् १८९१ से ट्रामगाड़ी चलती है; प्रति आदमी का महसूल एक आना लगता है। सवारी के लिये बैलगाड़ी तथा तांगे बहुत मिलते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय नासिक कसबे में २४४२९ मनुष्य थे; अर्थात् १२५४० पुरुष और ११८८९ स्त्रियां। इनमें २०६९७ हिंदू, ३४५२ मुसलमान, १७५ जैन, ७३ क्रस्तान, २८ पारसी और ४ यहूदी थे।

नासिक कसबा का बड़ा भाग गोदावरी नदी के दहिने; अर्थात् उसके दक्षिण-पूर्व के किनारे पर ३ छोटे टीलों पर फैलता हुआ लगभग १ मील चला गया है, जिसका क्षेत्रफल २ वर्गमील होगा। उसके दक्षिण के भाग को पुराना कसबा और उत्तर के भाग को नया कसबा कहते हैं । कसबे के बहुतेरे मकानों के अगवासों में उत्तम नकाशीदार लकड़ी के काम हैं और

जगह जगह गलियों में फाटक बने हैं। पेशवा के महलों में कलक्टर की कचहरी और अनेक आफिस हैं। नासिक में एक अस्पताल, एक हाईस्कूल और ८ देशी भाषा के स्कूल हैं। उसमें कागज, कपड़ा, लंप, बाक्स, चेन, मूर्तियां आदि चीजें बनती हैं। पीतल और तांबे के बर्तन की दस्तकारी के लिये नासिक प्रसिद्ध है। भारतवर्ष के किसी कसबे में नासिक से बढ़कर बर्तन नहीं बनते। वहां पाव भर का एक लोटा दस रुपये तक बिकता है। कसबे की सड़कों पर रात्रि में लालटेनों की रोशनी होती है।

लोग कहते हैं कि नासिक में लगभग १५०० घर ब्राह्मण हैं। वहां के बहुत ब्राह्मण विद्यावान् तथा शुद्धाचरण होते हैं। वहां की स्त्रियां पर्दे में नहीं रहतीं। ब्राह्मण और ब्राह्मणी एकही पंक्ति में बैठकर भोजन करते हैं। उस देश के लोग नासिक को पश्चिमी भारत की काशी कहते हैं। नासिकतीर्थ में बहुत यात्री जाते हैं। १२ वर्ष पर जब सिंहराशि के बृहस्पति होते हैं, तब नासिक में बहुत बड़ा मेला होता है।

गोदावरी के बाएं किनारे के नासिक कसबे को लोग पंचवटी कहते हैं। नासिक कसबे के लगभग सातवां भाग मनुष्य उसमें बसते हैं। उसमें बहुतेरे मन्दिर और मकान हैं, जिनमें खास करके ब्राह्मण लोग रहते हैं।

गोदावरी नदी—नासिक से १८ मील पश्चिम गोदावरी के निकास का स्थान त्र्यंबक है। वहां से ६ मील पर चक्रतीर्थ में गोदावरी नदी प्रकट हुई है। चक्रतीर्थ से नासिक पैठन, गंगाखेड़, नान्देड़, राजमहेंद्री और धवलेश्वरम् होती हुई करीब ९०० मील पूर्व-दक्षिण बहने के उपरान्त राजमहेंद्री के पास समुद्र में मिल गई है। यह निजाम राज्य में ओर से छोर तक बहती है।

नासिक के पास नदी की धारा सूखे मौसिम में बहुत छोटी रहती है। करीब ५५० गज की लम्बाई में गोदावरी के किनारों पर पत्थर की सीढ़ियां बनी हुई हैं और नदी के मध्य में १२ पक्के कुंड तथा पोखरे बने हैं, जिनमें से एक का नाम रामकुण्ड और रामगया है। गोदावरी का जल क्रम से एक कुण्ड से दूसरे में गिर कर बाहर निकलता है। नदी पार जाने में नाव की आवश्यकता नहीं होती। उस प्रदेश के हिन्दू लोग कपड़ों को अपने हाथ

से धोते हैं । मैने एकही समय में पचासों मनुष्यों को गोदावरी में वस्त्र धोते हुए देखा, जिनमें स्त्री बहुत थीं ।

लोग कहते हैं कि बनवास के समय श्रीरामचन्द्र ने जिस स्थान पर गोदावरी में स्नान कर दशरथजी को पिंड दिया, उसी स्थान का नाम रामगया या रामकुण्ड हुआ । यहां पिंडदान का बडा माहात्म्य है । बाऐं किनारे से एक छोटे झरने का जल आकर पत्थर के गोमुखी से रामकुण्ड में गिरता है; उस स्थान को अरुणसंगम कहते हैं । रामकुण्ड के सामने एक धर्मशाला है, जिसमें पानी कम होने पर साधू लोग रहते हैं । रामकुण्ड के एक किनारे पर मुर्दे की राखी लोग डालते हैं । एक दूसरे झरने का जल रामकुण्ड के पूर्व एक कुण्ड में गिरता है, उस स्थान को वरुणासंगम लोग कहते हैं । गोदावरी नदी के किनारे पर कई छत्तरी बनी है । कपूरथले के महाराज इंगलैंड जाते समय अदन में मरगये; उनकी छत्तरी अर्थात् समाधिमंदिर यहां बना हुआ है। यात्री लोग प्रथम नारियल फल से गोदावरी की भेट करके तब स्नान करते हैं। गोदावरी की उत्पत्ति आदि का वृतान्त त्र्यम्बक की प्राचीन कथा में लिखा है।

देव मंदिर—गोदावरी के किनारों पर तथा उसके भीतर बहुतसे मंदिर और स्थान हैं। सुन्दरनारायण का मन्दिर राम के मन्दिर से छोटा है; लेकिन उसमें कारीगरी का काम उससे अधिक है । उस मंदिर को सन् १७२५ में होलकर के एक सरदार ने बनवाया । उसके नीचे एक बालाजी का मंदिर और एक दूसरा मंदिर है । नदी के बाएं किनारे पर रामकुंड के पास ५० सीढ़ियों के ऊपर ६०० वर्ष का पुराना कपालेश्वर शिवका मंदिर है।

नदी के बाएं किनारे से ¼ मील दूर ९३ फीट लम्बा, ६५ फीट चौड़ा और ६० फीट ऊंचा रामचंद्रजी का उत्तम मंदिर है । उसके बाहर का घेरा २६० फीट लम्बा और १२० फीट चौडा है, जिसके भीतर ९६ मेहराब बने हैं। वर्तमान मंदिर करीब १०० वर्ष का बना हुआ है । मंदिर के पास का मंडप बहुत सुन्दर है । वहांके लोग कहते हैं कि इस मंदिर के बनने में ७ लाख रुपये खर्च पड़े थे।

पंचवटी—गोदावरी के बाएं किनारे से १ मील दूर कई आदियों का एक वटवृक्ष है, जिसको लोग पंचवटी कहते हैं।

वटवृक्ष के पास सीतागुफा नामक एक भुवेवरा है, जिसमें सूत, बैठ कर कर प्रवेश करना होता है। वहां का पुजारी प्रति यात्री से गुफा के द्वार पर एक पाई लेता है। गुफा के भीतर एक दूसरी गुफा है। प्रत्येक गुफा करीब ८ फीट लम्बी चौड़ी और ४ फीट ऊंची हैं। पहली गुफा में ९ सीढ़ियों के नीचे राम, लक्ष्मण, जानकी की छोटी मूर्तियां और ७ सीढ़ियों के और नीचे दूसरी गुफा में पंच रत्नेश्वर महादेव हैं।

तपोवन—नासिक कसबे से २ मील दूर गोदावरीनदी के बाए गौतमऋषि का तपोवन है। पंचवटी से आगे जाने पर लक्ष्मणजी का स्थान मिलता है, जिससे आगे हनूमानजी की मूर्ति है। उससे आगे पहाड़ से गिरती हुई गोदावरी और कपिलानदी का संगम है। वहां पंचतीर्थ नाम के ५ कुण्ड हैं; (१) ब्रह्मयोनि, (२) विष्णुयोनि, (३) रुद्रयोनि, (४) मुक्तियोनि और (५) अग्नियोनि। पहले के तीनों कुण्ड एक साथ मिले हैं; अन्दर अन्दर एक से दूसरे में और दूसरे से तीसरे में जाना होता है। अग्नियोनि विशेष गहिरा है।

पूर्व कथित पंचतीर्थों में सौभाग्यतीर्थ,कपिला संगम और सूर्पणखातीर्थ मिल कर अष्टतीर्थ बनते हैं। गोदावरी और कपिला के संगम के पार सप्तऋषियों का स्थान है। एक जगह गोदावरी के किनारे पर सूर्पणखा की पाखाण प्रतिमा है।

लोग कहते हैं कि पंचवटी से कई एक कोस दक्षिण जटायु की मृत्यु का स्थान और कई एक कोस-पूर्व अकोलहा नामक गांव में अगस्त्यमुनि के आश्रम का स्थान, अगस्त्यकुण्ड, सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम का स्थान और अमृतवाहनीनदी तीर्थ है। अकोलहा से कई एक कोस पश्चिम साईखेड़ा नामक गांव में मारीच की मृत्यु का स्थान है।

पांडव गुफा—इसको अंगरेज लोग लेनाकेव्ज अर्थात् लेना की गुफा

कहते हैं। नासिक कसबे से ४½ मील पश्चिम-दक्षिण एक पहाड़ी के पाद-मूल के पास तक पक्की सड़क है। पहाड़ी के नीचे से गुफा के पास तक पगडंडी मार्ग है। पास की भूमि से लगभग ४५० फीट ऊपर उस पहाड़ी के उत्तर बगल पर लगभग ५०० गज की लंबाई में छोटे बड़े २१ गुफा हैं, जिनको चौथी शदी में बौद्ध लोगों ने बनवाया था, जो अब पांडव गुफा करके प्रसिद्ध है। उसमें की अनेक बौद्ध मूर्तियों को लोग हिंदुओं के देवता कहते हैं। गुफाओं में जोड़ किसी जगह नहीं है, क्योंकि पहाड़ी के भीतर से पत्थर निकालने से वे संपूर्ण गुफा मन्दिर तैयार हुए हैं। पगडंडी मार्ग के सिर के पास ३७ फीट लम्बी, २९ फीट चौड़ी और १० फीट ऊंची चिपटी छत वाली एक गुफा है। उसके मध्य के कमरे के चारो ओर १६ कोठरी और मध्य में भैरव की मूर्ति है, जिसके दोनों तरफ एक एक स्त्री की प्रतिमा बनी हुई है।

दूसरी गुफा अर्थात् कमरा ९७ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है। उसके तीन बगलों में १८ कोठरियां और आगे ६ खंभे लगे हुए सुन्दर दालान है। पश्चिम ओर एक गुफा में विश्वकर्मा आदि की १२ मूर्तियां हैं। विश्वकर्मा के दहिने तथा बाएं एक एक स्त्री और सामने उसका भाई और पिता की प्रतिमा है। पश्चिम ३½ फीट ऊंची गौतम की मूर्ति है। वहां जल से पूर्ण २० फीट लंबा एक सीताकुंड है। उसके बाद एक दूसरा कुंड मिलती है। उस से आगे एक सीढ़ियों द्वारा एक कमरे में जाना होता है, जिसके चारोबगलों में ७ छोटी कोठरियां और उत्तर अलींद में पार्वती की घिसी हुई मूर्ति है।

उससे पूर्व ४६ फीट लम्बी और २७ फीट चौड़ी एक बड़ी गुफा है, जिसके चारो बगलों में २२ कोठरियां बनी हुई हैं। उस गुफा में भीम अर्जुन युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव, द्रौपदी और कृष्ण की पुरानी मूर्ति है।

कभी कभी एक आदमी वहां रहता है। गुफा निर्जन स्थान में है। बहुत लोग देखने के लिए वहां जाते हैं।

नासिक शहर से करीब २ मील पूर्व राममेज की पहाड़ी में गुफाओं का एक झुंड है, परन्तु वह प्रसिद्ध नहीं है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(वनपर्व, ८३ वां अध्याय) पंचवटी तीर्थ में जाने से बड़ा फल होता है और स्वर्ग मिलता है। वहां साक्षात् वृषवाहन शिव निवास करते हैं। उनकी पूजा करने से मनुष्य सिद्ध होजाता है।

(८४ वां अध्याय) गोदावरी नदी में स्नान करने से गोमेध यज्ञ का फल होता है और वासुकी का उत्तम लोक मिलता है। वहां वेणनदी के संगम में स्नान करने से अश्वमेध यज्ञ का फल होता है।

वाल्मीकिरामायण—(आरण्य काण्ड, १३ वां सर्ग) रामचन्द्रजी ने अगस्त्य मुनि के आश्रम पर जाकर उनसे अपने रहने का स्थान पूछा। मुनि बोले कि हे राघव! यहां से एक योजन पर गोदावरी नदी के समीप पंचवटी नाम से विख्यात एकांत पवित्र तथा रमणीय देश है, तुम वहां जाकर आश्रम बनाकर रहो। देखो वह महुओं का महावन देख पड़ता है; उत्तर की ओर से जाने पर एक वट का वृक्ष मिलेगा; उसी के पास पर्वत के समीप पंचवटी नामक वन है।

राम और लक्ष्मण अगस्त्य मुनि से विदा हो ऋषि के कहे हुए मार्ग से पंचवटी को पधारे। (१४ वां सर्ग) रास्ते में जटायु गृद्ध से भेंट हुई। (१५) रामचन्द्रजी पंचवटी में पहुंच कर लक्ष्मण से बोले कि देखो यह गोदावरी नदी, जो अति दूर भी नहीं है, देख पड़ती है यहां के पर्वत अनेक कंदरा तथा स्थान स्थान में सुवर्ण रजत और ताम्र धातुओं से सुशोभित हैं, जान पड़ता है कि इनमें खिड़कियां बनी हैं। वे शृंगार किए हुए हाथियों के समान मनोरम देख पड़ते हैं। उस समय लक्ष्मणजी ने मिट्टी के अनेक स्थान और बांस के खंभाओं, शमी वृक्ष की शाखाओं की टट्टियों की दीवारों और पत्तों के ऊपर से मनोहर पर्णकुटी बनाई। उसमें वे लोग निवास करने लगे। (१६ वां सर्ग) शरदऋतु बीत कर हेमन्तऋतु प्राप्त हुई।

(१७ वां सर्ग) एक समय रावण की बहिन शूर्पणखा नामक राक्षसी वहां आई। वह रामचन्द्र की सुन्दरता देख काम से मोहित होगई। उसने रामचन्द्र से कहा कि मै तुम्हारे भाई सहित सीता को खा जाऊंगी; तुम मेरे पति होकर मेरे साथ दंडक वन में विहार करो। (१८ वां सर्ग) रामचन्द्र बोले कि, मै तो व्याहा हूं; मेरा छोटा भाई लक्ष्मण यदि भार्य्या की आकांक्षा रखता हो; तो तुम उसी को अपना पति बनाओ। तब वह राक्षसी शीघ्र लक्ष्मण के पास जाकर उनसे बोली कि तुम्हारे रूप के योग्य में भार्य्या हूं; तुम मेरे साथ दंडकारण्य मे विहार करो। लक्ष्मण ने कहा कि मै तो रामचन्द्र का दास पराधीन और असमर्थ हूं; तुम उन्ही की छोटी पत्नी बनो। तब शूर्पणखा रामचंद्र के पास जाकर बोली कि हे राम! तुम अपनी पत्नी को अंगीकार कर मुझे नहीं मानते हो, मैं अभी इस मानुषी का भक्षण कर जाऊंगी। ऐसा कह वह सीता पर झपटी। रामचन्द्र उसको रोक कर लक्ष्मण से बोले कि इस राक्षसी को कुरूप करो। तब लक्ष्मण ने क्रोध कर खड्ग निकाल शूर्पणखा के नाक और कान काट लिए।

शूर्पणखा महाभारी नाद करती हुई महावन में घुस गई। उसके अनन्तर उसने जनस्थान में खर नामक अपने भाई के समीप जाकर उससे सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। (१९ वां सर्ग) खर ने रामचन्द्र को मारने के लिये शूर्पणखा के साथ १४ महाबली राक्षसों को भेजा। (२० वां सर्ग) जिनको रामचंद्र ने मार डाला। शूर्पणखा ने खर के पास जाकर सब वृत्तान्त कह सुनाया। (२२ वा सर्ग) खर ने चुने हुए १४००० राक्षसों की सेना लेकर प्रस्थान किया। (२३ वां सर्ग) राक्षस बीरों की सेना शीघ्र आकर राम-लक्ष्मण के पास उपस्थित हुई। (२४ वां सर्ग) रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा कि तुम वैदेही को लेकर दुर्गम पर्वत की गुहा में जा बैठो। तब लक्ष्मण सीता को लेकर धनुष बाण धारण कर वड़ी दुर्गम गुहे में चले गए। (२५ वां सर्ग) रामचन्द्र और राक्षसो का युद्ध होने लगा। (२६ वां सर्ग) अकेले रामचन्द्र ने क्षण मात्र में १४ सहस्र राक्षसो के साथ दूषण को मार डाला। उस समय संग्राम भूमि में खर और त्रिसिरा दो बच गये थे। (२७ वां सर्ग) रामचन्द्र ने तीन

बाणों से त्रिसिरा सेना पति के तीनों मस्तक काट गिराये । (३० वां सर्ग) खर राक्षस भी बड़ा युद्ध करने के उपरान्त रामचन्द्र के हाथ से मारा गया।

(३१ वां सर्ग) रावण ने अकम्पन राक्षस के मुख से जन-स्थान के रहने वाले खर आदि राक्षसों के मारे जाने का वृत्तान्त सुना। उसी समय वह खर युक्त रथ पर चढ़ मारीच के आश्रम में जा पहुंचा । रावण मारीच से बोला कि राम ने मेरा समाज नष्ट कर डाला; मैं उसकी स्त्री को हर लाऊंगा; तुम मेरी सहायता करो। मारीच ने रावण को जब बहुत समझाया, तब वह जानकी हरण के काम से निवृत्त हो लंका में लौट गया।

(३२ वां सर्ग) शूर्पणखा खर आदि राक्षसों के बध से बड़ी व्याकुल हो लंका में गई। (३५ वां सर्ग) उसने रावण से सब वृत्तान्त कह कर उसको धिक्कार दिया। तब रावण रथारूढ़ हो समुद्र के पार एकांत पवित्र बन में तपस्वी रूपी मारीच के पास फिर पहुंचा । (३६ वां सर्ग) रावण बोला कि हे मारीच ! जिसने मेरी बहिन की नाक और कान काट कर उसको विरूप कर दिया है; मैं उसकी भार्य्या सीता को हर लाऊंगा। इस काम में तुम मेरी सहायता करो । (४० वां सर्ग) मारीच ने फिर बहुत समझाया; तब रावण बोला कि यदि तुम मेरा यह कार्य्य नहीं करोगे, तो मैं अभी तुम्हें मार डालूंगा।

(४२ वां सर्ग) जब किसी तरह से रावण ने मारीच का वचन नहीं माना, तब वह रावण के साथ रथ में बैठ रामचन्द्र के आश्रम में पहुंचा और झट मृग बनकर रामचन्द्र के आश्रम के द्वार पर चरने लगा। उस काल में वह अति अद्भुत रूप मृग बना था । (४३ वां सर्ग) सीता मृग को देख प्रसन्न हो रामचंद्र और लक्ष्मण को पुकारने लगीं। तब दोनों भाई उधर देखने लगे। मृग को देख लक्ष्मण शंका युक्त हो बोले कि मैं तो इसको मारीच राक्षस जानता हूं; यह माया से चमकीला रूप बना है। सीता ने लक्ष्मण की बात को सुनी अनसुनी कर रामचन्द्र से बोली कि हे आर्य्य पुत्र! यह परम मनोहर मृग मेरे मन को हर लेता है; तुम इसको हमारे क्रीडा के लिए ले आओ; यदि यह जीता न मिलेगा, तब भी इसकी खाल बहुत सुन्दर होगी। (४४ वां सर्ग) रामचन्द्र भाई को सावधान कर धनुष बाण और खड्ग ले मृग के पीछे दौड़े। वह

मृग बारबार देख पड़ता था और दूर जाकर प्रकट होता था। इस प्रकार से वह राम को आश्रम से दूर लेगया। तब रामचंद्र ने मृग की छाती में बाण से मारा, जिसमें वह राक्षस उछल कर भूमि पर गिर पड़ा। वह मरने के समय रामचन्द्र के तुल्य शब्द से चिल्ला कर बोला कि हा सीते! हा लक्ष्मण!। मरने के समय वह मृग रूप को छोड़ कर विशाल रूप राक्षस होगया। (४५ वां सर्ग) सीता अपने पति के तुल्य आर्त नाद को सुन लक्ष्मण से बोली कि तुम शीघ्र दौड़ो, रामचंद्र को बचाओ। जब लक्ष्मण रामचंद्र के शासन का स्मरण कर सीता के कहने पर भी नहीं गए, तब सीता क्रुद्ध होकर बोली कि तुम अपने भाई के मित्र रूप शत्रु हो इत्यादि। लक्ष्मण सीता के दुर्वचन से क्रुद्ध हो शीघ्रता से राम के पास चले।

रावण एकान्त अवसर पाकर सन्यासी का वेष धर सीता के पास पहुंचा। वैदेही ने रावण का, जो ब्राह्मण अतिथि के वेष से आया था, अतिथि सत्कार किया (४७ वां सर्ग) और उससे अनेक बातें की। उसके पश्चात् रावण बोला कि हे सीते? मै राक्षसों का राजा रावण हूं, तुम मेरी पटरानी बनो। (४९ वां सर्ग) ऐसा कह रावण ने सन्यासी वेष छोड़ अपने रूप को धारण कर सीता को पकड़ रथ में बैठा कर वहांसे चल दिया। सीता किसी बन वृक्ष पर बैठे हुए जटायु को देखकर बोली कि हे जटायु! देखो यह पापी रावण अनाथ के समान मुझको हर ले जाता है। (५१ वां सर्ग) ऐसा सुन जटायु रावण से युद्ध करने लगा। प्रथम तो उसने रावण के रथ को चूर कर दिया, परन्तु अंत में रावण ने उसके दोनों पक्षों, पैरों और अगल बगल के देह भागो को खड्ग से काट डाला। तब जटायु गिर पड़ा, उसकी थोड़ी सांस रह गई। (५२ वां सर्ग) रावण सीता को लेकर आकाश मार्ग से चला और (५४ वां सर्ग) लंका में जा पहुंचा।

(६० वां सर्ग) रामचंद्र ने लक्ष्मण के साथ अपने आश्रम में आकर अपनी पर्णकुटी को शून्य पाया। (६७ वां सर्ग) लक्ष्मण ने कहा कि हे प्रभो! आप इसी जन स्थान में सीता को ढूंढिये, क्योंकि यहां बहुत राक्षस निवास करते हैं और अनेक वृक्ष, लता, दुर्गमपर्वत, गड़हे और कंदरें हैं। यहांके

भयंकर कंदरें नाना मृगगणों से भरी हैं। उसके अनंतर रामचन्द्र ने उस बन में दूदते२ रुधिर से भरा हुआ जटायु को देखा।

(६८ वां सर्ग) जटायु बोला कि हे राघव! राक्षसराज रावण माया करके सीता को हर लेगया। वह मेरे दोनों पक्षो को काट कर सीता को दक्षिण दिशा में लेगया है। ऐसा कह कर गृध्रराज जटायु मरगया। रामचंद्र ने चिता में जटायु का अग्निसंस्कार करके उसके नाम से पिंडदान दिया। उसके पश्चात् दोनों भाइयों ने गोदावरी नदी में स्नान करके गृध्र के नाम से तर्पण किया। उसके अनंतर श्रीरामचंद्र और लक्ष्मण सीता को ढूँढने के लिये उससे आगे चले।

(अध्यात्मरामायण में आरण्यकाण्ड के तीसरे अध्याय से ८ वें अध्याय तक यह कथा है, किंतु उसमें लिखा है कि जब मारीच नामक राक्षस माया का विचित्र मृग बन कर सीता के संमुख दौड़ने लगा, तब रामचंद्र ने जानकीजी से कहा कि हे सीते! तुमको हर लेजाने के लिये रावण यहां आवेगा, इस-लिये तुम अपनी आकृति की छाया कुटी में छोड़कर एक वर्ष पर्यंत अग्नि में निवास करो। सीताजी अपनी पर्णकुटी में अपनी माया का स्वरूप छोड़ कर अग्नि में प्रवेश करगई। माया की सीता को रावण हर लेगया)

कूर्मपुराण—(उपरि भाग, ३६ वां अध्याय) गोदावरी नदी सब पापों का नाश करने वाली है। उसमें स्नान तथा पितर और देवताओं के तर्पण करने से संपूर्ण प्रायश्चित्त छूट जाता है, और सहस्र गोदान का फल मिलता है।

नासिक जिला—इसके उत्तर खानदेश जिला, पूर्व हैदराबाद का राज्य, दक्षिण अहमदनगर जिला और पश्चिम थाना जिला है। सदर स्थान नासिक कसबा है। इस जिले के पश्चिम भाग के चंदगाव के अतिरिक्त जिले के संपूर्ण गांव ऊंची भूमि पर हैं। पश्चिमी भाग, जिसमें बहुत छोटी पहाड़ियां तथा नाले हैं, दांग और पूर्व का भाग, जिसमें अच्छी तरह से खेती होती है, देश कहलाता है। इस जिले में बहुतेरे पहाड़ी किले और लगभग १६०० वर्ग-मील जंगल है, जिसमें बाघ, तेंदुए, हरिन, भालू इत्यादि बनैले जंतु रहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय नासिक जिले के ५९४० वर्गमील

क्षेत्रफल में ७८१२०६ मनुष्य थे; अर्थात् ६८३५७२ हिंदू, ५११८७ एनिमिष्टिक (जिनमें प्रायः सब भील हैं), ३५२९४ मुसलमान, ७६०९ जैन, २६५४ कृस्तान, २८८ पारसी, १०१ यहूदी, २ सिक्ख और २ बौद्ध। हिंदुओं में २७६३५९ कुन्बी, ७८५५८ कोली, ७०३५१ थेद, २९३९३ बनजारा, २९०५३ ब्राह्मण, २५०९४ माली, १४८८९ धांगर, ११९५८ वेली, १०००३ चमार और बाकी में राजपूत, विराध, भंडारी, जंगम, कोस्टी, लिंगायत, मांग, सुतार इत्यादि जातियों के लोग थे। नासिक जिले में महाराष्ट्री भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय नासिक जिले के कसबे नासिक में २४४२९, मालेगांव में १९२६१, योला में १८८६१ और सिन्नेर में १००१२ मनुष्य थे। इनके अतिरिक्त इगतपुरी और त्र्यंबक छोटे कसबे हैं।

सह्याद्री पर्वत के बगल के नीचे पश्चिम की बस्तियों के कोली, भील, कथोड़ी, वारली, ठाकुर इत्यादि जंगली जातियों के निवासी प्रायः सर्वदा एक स्थान पर नहीं रहते। जब उनके खेतों के अन्न खर्च होजाते हैं, तब वे लोग खास करके गर्मी के दिनों में वनों में जाकर अपना निर्वाह करते हैं। वहां वे लोग वनों की लकड़ी काट काट बेचते हैं और फल, मूल तथा जंगली जानवर और मछली खा करके रहते हैं।

इतिहास—जिस स्थान पर लंका के राजा रावण की बहिन शूर्पणखा की नासिका अर्थात् नाक काटी गई, उस स्थान का नाम नासिक होगया। सन् ईस्वी के आरम्भ से लगभग २०० वर्ष पहिले से २०० वर्ष पीछे तक नासिक जिला अंध्रभृत्य वंश के राजाओं के, जो बौद्ध मत के थे, अधिकार में था। उसके पीछे वह जिला समय समय पर चालुक्य, राठोर, चंडोर और देवगिरि के यादव वंश वाले हिंदू राजाओं के आधीन था। सन् १२९५ से सन् १७६० तक वह मुसलमानों के अधिकार में था, अर्थात् क्रम से देवगिरि के सेनापति, गुलबर्गा के बहमनी खांदान के बादशाह, अहमदनगर के निजामशाही खांदान वाले और औरंगाबाद के मुगल बादशाह के अफसर उस पर हुकूमत करते थे। मुसलमानों ने नासिक कसबे को अपने राज्य के

एक विभाग को सदर स्थान बनाया था। सन् १७६० में सन् १८१७ तक नासिक जिला महाराष्ट्रों के आधीन था। पेशवा ने नासिक कसबे को अपने राज्य की एक राजधानी बनाई थी। उस समय कसबे की उन्नति हुई थी। सन् १८१८ में बाजीराव पेशवा के परास्त होने पर वह जिला अंगरेजी राज्य में मिल गया। अंगरेजी राज्य में होने पर कसबे की घटती होने लगी, किंतु उसके पीछे रेलवे बन जाने से तथा जिले का सदर स्थान बनने से कसबे की अब बड़ी उन्नति हुई है।

त्र्यम्बक।

नासिक कसबे से १८ मील पश्चिम कुछ दक्षिण (१९ अंश, ५४ कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, ३३ कला, ५० विकला पूर्व देशांतर में) नासिक जिले में त्र्यंबक एक म्युनिसपल कसबा तथा पवित्र तीर्थ स्थान है। नासिक से त्र्यंबक तक पक्की सड़क बनी है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय त्र्यंबक कसबे में ३८३९ मनुष्य थे; अर्थात् ३६८४ हिंदू, १३० मुसलमान, १६ जैन और ९ क्रस्तान।

त्र्यंबक जाने आने के लिये मैं नासिक में ४ रुपये पर एक तांगा किराया किया था। मार्ग में पत्थर के कई एक कूप, सड़क के दहिनी ओर निर्झरी के समीप अहिल्याबाई का बनवाया हुआ पत्थर का एक सुंदर तालाब और दो छोटे मंदिर और बाड़ी के पास लगभग ९०० फीट ऊंची ८ गावदुमी पहाड़ियां हैं। सड़क के दोनों तरफ जगह जगह स्वाभाविक सुन्दर शकल की कई पहाड़ियां देखने में आती हैं। वाल्मीकिरामायण के आरण्य कांड में लिखा है कि रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा कि देखो यहां के पर्वत शृंगार किए हुए हाथियों के समान मनोरम देख पड़ते हैं। त्र्यंबक कसबे के आस पास द्वितीया के चद्रमा की शक्ल में १२०० फीट से १५०० फीट तक ऊंची पहाड़ियों की श्रेणी है। एक पहाड़ी पर पुराना किला है।

त्र्यंबक कसबे में अनेक जलाशय, देवमंदिर तथा बड़े मकान हैं। यहां बहुत से पंडों के मकान बने हुए हैं और खाने पीने की सब वस्तु सर्वदा मि

लती है। उसके पास की पहाडी में सुप्रसिद्ध गोदावरी नदी निकली है। वहां शिवजी के १२ ज्योतिर्लिंगों में से त्र्यंबक शिव का सुन्दर मन्दिर बना हुआ है। नासिक जाने वाले प्रायः सब यात्री त्र्यबक जाते हैं। जब १२ वर्ष पर सिंह राशि के वृहस्पति और सूर्य होते हैं, तब त्र्यंबक तथा नासिक में कुम्भयोग का बड़ा मेला होता है; जो संवत १९४१ (सन् १८८४ ईस्वी) के सिंहमास में हुआ था और संवत १९५३ (सन् १८९६ ईस्वी) के सिंहमास में होगा। (कुंभयोग की कथा भारत भ्रमण के पहिला खंड में प्रयाग के वृत्तांत मे देखिए)। उस मेले के समय भारतवर्ष के सब प्रांतों से सब संप्रदाय वाले लाखों यात्री त्र्यंबक में आकर स्नान करते है। त्र्यंबकतीर्थ की परिक्रमा करने के समय पहाड़ियों की चढ़ाई उतराई मिलती है।

कुशावर्त तालाव—त्र्यंबक बस्ती के पास कुशावर्त कुंड नामक चौकोना तालाब है। उसके चारो बगलों पर पत्थर की सीढ़ियां; तीन बगलों में २५ फीट ऊंचा मेहराबदार दालान, अनेक देवालय तथा धर्मशाले; प्रत्येक कोने के पास एक मंदिर, पूर्व ओर पत्थर का फर्श और पूर्वोत्तर कनखलतीर्थ नामक पत्थर का छोटा तालाव है। वहां के स्नान का मुख्य स्थान कुशावर्त तालाव है। गोदावरी नदी को जल पर्वत के शिखर से उसके भीतर आता है। और भूगर्भ में बहता हुआ उस स्थान से ६ मील दूर चक्रतीर्थ में जाकर प्रकट होता है। यात्रीगण कुशावर्त में नारियल भेट देकर स्नान करते हैं। उसमें स्नान के समय धोती कचारना निषेध है।

कुशावर्त से दूर एक पहाडी के पास गंगासागर नामक बड़ा तालाव है। उसके किनारे पर निवृत्ति देवी का मंदिर बना हुआ है।

त्र्यम्बक शिव का मन्दिर—कुशावर्त से पूर्व २२५ फीट लंबे घेरे के भीतर लगभग ८० फीट ऊंचा शिवजी के १२ ज्योतिर्लिंगों में से त्र्यंबक शिव का शिखर दार मंदिर है। मंदिर अच्छे डौल का पहलदार है। उसके आगे का जगमोहन अर्थात् मंडप ४० फीट ऊंचा है, जिसके फर्श में मार्बुल का एक कछुआ बना हुआ है। जगमोहन के आगे एक छोटे मंदिर में

नंदी बैल हैं। घेरे के भीतर सर्नल पत्थर का फर्श और मन्दिर के पश्चिम दक्षिण अमृतकुण्ड नामक तालाव है। त्र्यंबक शिव के वर्तमान मंदिर को पहिला बाजीराव पेशवा ने, जिसका राज्य सन् १७२१ से सन् १७४० तक था, बनवाया। उसके बनवाने में ९ लाख रुपये खर्च पड़े थे। सर्व साधारण यात्री त्र्यंबक शिव के निज मंदिर के भीतर नहीं जाने पाते हैं, जगमोहन में खड़े होकर दर्शन करते हैं; पूजा वहां के पुजारी द्वारा चढ़ाई जाती है, किंतु ऐसा नियम मेले के दिनों में नहीं रहता। लोग कहते हैं कि त्र्यंबक शिव के मंदिर के खर्च के लिये सरकार से मासिक १००० रुपये मिलते हैं। प्रति सोमवार को शिव की प्रतिनिधि मूर्ति की पालकी धूम धाम से निकलती है।

ब्रह्मगिरि—त्र्यंबक गांव के तीन ओर पहाड़ियां हैं। जिनमें से कुशावर्त से ½ मील दूर गोदावारी नदी का मूल स्थान ब्रह्मगिर नामक पहाड़ी है। वह वहां की सब पहाड़िया से ऊंची है। पहाड़ी के नीचे से गोमुखी तक बंबई के करमजी नामक भाटिया ने सीढ़ियां बनवा दी हैं। लगभग ३५० सीढ़ियों के ऊपर रामकुण्ड और लक्ष्मणकुण्ड और ६९० सीढ़ियों के ऊपर गोदावरी के निकास का स्थान है। वहां एक मंडप में डेढ़ हाथ लंबा, १ हाथ चौड़ा और १ हाथ गहिरा पत्थर का कुंड है, जिसमें एक गोमुखी से गोदावारी की धारा गिरती है। उस स्थान को वहां के लोग गंगाद्वार कहते हैं। कितने लोग उस जल को कांवर में भर कर दूर दूर तक ले जाते हैं। वहां गंगाजी की मूर्ति है। यात्री लोग उस कुंड में पैसे तथा रेजकी डालते हैं। उसी कुंड का जल नीचे होकर रामकुंड में, रामकुंड से लक्ष्मणकुंड में और लक्ष्मणकुंड से पत्थर की नाली द्वारा, जो लगभग ९०० फीट लंबी और १९ फीट चौड़ी है, त्र्यंबक गांव के पास आया है। वह धारा कुशावर्त में गुप्त होकर चक्रतीर्थ के कूप में प्रकट होती है। उस बड़े कूप से सर्वदा जल निकलता है और नासिक की ओर जाता है।

ब्रह्मगिरि के पास जटाफटका और नील पर्वत नामक पहाड़ी है। जटाफटका से झरने का पानी गिरता है. नीलपर्वत पर धर्मशाला बनी है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—पद्मपुराण—(सृष्टि खंड, ११ वां अध्याय) त्र्यंबक तीर्थ में त्रिलोचन महादेव सदा निवास करते हैं।

कूर्मपुराण—(ब्राह्मी संहिता, उत्तरार्द्ध, ३४ वां अध्याय) त्र्यंबक तीर्थ में रुद्र की पूजा करने से ज्योतिष्टोम यज्ञ का फल मिलता है।

स्कंदपुराण—(सेतुबंध खंड, २० वां अध्याय) सिंह के बृहस्पति होने पर गोदावरी नदी में स्नान करने से महत् पुण्य होता है।

जैमिनिपुराण—(११ वां अध्याय) सिंह राशि पर सूर्य के होने पर गोदावरी नदी में स्नान करने से अन्य तीर्थों में स्नान करने की आवश्यता नहीं रहती।

सौरपुराण—(६९ वां अध्याय) गोदावरी नदी के निकास स्थान पर त्र्यंबक नामक शिवलिंग है। उसके निकट ब्रह्मगिरि पर स्नान, जप, दान तथा ब्रह्मयज्ञ करने से सबका फल अक्षय होता है। जो मनुष्य वहां स्नान और शिवजी का दर्शन करता है, वह स्कंद और नंदी के समान शिवजी के समीप खेलता है।

वायुपुराण—(४३ वां अध्याय) सिंह राशि के बृहस्पति होने पर संपूर्ण तीर्थ गौतम क्षेत्र में निवास करते हैं। सिंहस्थ बृहस्पति में गौतम क्षेत्र के अतिरिक्त अन्य तीर्थ में जाना निषेध है; किन्तु उस समय भी गया में पिंडदान करना निषेध नहीं है।

वाराह पुराण—(७० वां अध्याय) गौतम ऋषि ने दंडक वन में घोर तप करके ब्रह्माजी से ऐसा वर मांग लिया कि हमारे यहां अन्न आदि सब पदार्थ सर्वदा परिपूर्ण रहे। उसके पश्चात् वह भजन में तत्पर रह कर अभ्यागतों को भोजन देने लगे। एक समय जब १२ वर्ष का अवर्षण हुआ, तब वन के ऋषिगण गौतम के आश्रम पर जाकर इच्छा भोजन करते हुए दारुण समय को बिताने लगे। जब वृष्टि होने पर पृथ्वी पर अन्न तथा शाक उत्पन्न हुए, तब ऋषियों ने गौतम के शांडील्य नामक शिष्य से अपने जाने की आज्ञा मांगी। शांडील्य ने कहा कि तुम लोग महर्षि गौतम से आज्ञा लेकर जाओ। ऐसा सुन मरीचि ऋषि क्रोध युक्त होकर बोले कि क्या हम लोग भोजन के लिए अपनी

बेद को बँध दिया है; हम लोग अपनी इच्छा से जब चाहेंगे तब चले जांयगे। उस समय सब ऋषियों ने माया की एक गौ प्रकट करके उसको गौतम को अन्नशाला में छोड़ दिया। गौतमजी ने गौ को देख कर उसके ऊपर जल का छींटा दिया। छिट्टा के लगने से वह गौ मर गई। ऋषियों ने कहा कि हे गौतम! तुम ने गोवध किया, जब तक तुम्हारी गोहत्या नहीं छुटेगी तब तक हमलोग तुम्हारा अन्न नहीं भोजन करेंगे। इसके पश्चात् गौतम की प्रार्थना करने पर ऋषियों ने कहा कि जब तुम इस गौ को गंगा के जल से स्नान कराओगे, तब यह मूर्छा को छोड़ कर सजीव होजायगी।

गौतमजी हिमालय में जाकर गंगा के पाने के लिए शिवजी का तप करने लगे। कुछ काल के उपरान्त महादेवजी प्रकट हुए। गौतम ने उनसे गंगा को मांगा। शिवजी ने गौतम को अपनी जटा का एक खंड दिया। गौतम ने अपने आश्रम में आकर उस जटा का जलबिंदु गौ के ऊपर छिटका, जिससे वह माया की गौ जीवित होगई और उस जल बिंदु से पवित्र नदी बह चली, जिसका नाम गोदावरी है। शिवजी प्रकट होकर गौतमजी से बोले कि जो मनुष्य इस गोदावरी नदी में स्नान करके पितरों का पिंडदान और तर्पण करेगा उसके पितरगण नरक से मुक्त हो स्वर्ग में जा बसेंगे।

शिवपुराण—(ज्ञान संहिता, ३८ वां अध्याय) शिवजी के १२ ज्योतिर्लिंगों में से त्र्यंबक शिवलिंग गोदावरी के तट पर विराजते हैं।

(५२ वां अध्याय) पूर्वकाल में महर्षि गौतम ने अपनी पत्नी अहिल्या के साथ दक्षिण दिशा में ब्रह्मगिरि के पास दशसहस्र वर्ष तक तप किया था। एक समय १०० वर्ष तक वर्षा नहीं हुई; उस समय बहुतेरे जीव मर गए और बहुतेरे वहांसे भाग कर देशांतरों में चले गए। तब गौतमजी ने वरुण देवता की तपस्या की। वरुण प्रसन्न होकर प्रकट हुए। गौतमजी ने वरुण से यह वर मांगा कि यहां वर्षा होवे और मेघ का जल मुझको मिले। उस समय वरुण की आज्ञानुसार गौतम ने एक गढ़ा खोदा, वरुण ने उसको अक्षय जल से पूर्ण कर दिया। उसके पश्चात् वरुण बोले कि हे गौतम! आज से यह गढ़ा तीर्थ रूप होगा, यह क्षेत्र तुम्हारे नाम से लोक में विख्यात होगा, इस क्षेत्र में दान;

हवन, जप तथा श्राद्ध करने से उनका फल अक्षय होगा। वरुणजी के चले जाने पर दुर्लभ जल को पाकर गौतमजी अपना नित्य नैमित्तिक कर्म करने लगे। उस स्थान पर अनेक प्रकार के वृक्ष, फल,फूल और धान्य उत्पन्न होने लगे। पृथ्वीमंडल में गौतम का वन सबसे श्रेष्ठ हुआ। बहुत से महर्षि अपने शिष्यों तथा स्त्री पुत्रों के सहित वहां आकर निवास करने लगे। उन्होंने वहां धान्य की खेती भी की। कुछ समय के पश्चात् ऋषियों की पत्नियों ने ऋषियों से झूठ मूठ कहा कि अहिल्या जल लाने के समय हम लोगों को नित्य दुर्वचन कहती है; हम लोगों के जीने को धिक्कार है। (५३ वां अध्याय) उस समय ऋषिगण गणेशजी की आराधना करने लगे। गणेशजी के प्रकट होने पर उन्होंने उनसे ऐसा वर मांगा कि हे देवेश! तुम ऐसा उपाय करो जिससे गौतम इस आश्रम से निकाल दिए जांय। गणेशजी दुर्बल गौ का रूप धारण करके गौतम के यव के खेत में चरने लगे। यह देख गौतमजी हाथ में एक तृण लेकर गौ को निवारण करने लगे। उस तृण से छूतेही वह गौ गिर कर प्राण रहित होगई। तब ऋषिगण अपने शिष्य और अपनी पत्नियों सहित गौतम को दुर्वचन कहने लगे तथा पाषाणों से उसकी ताड़ना करने लगे और कहने लगे कि तुम अपने परिवार सहित इस वन से चले जाओ; तुम्हारे आश्रम में रहने से अग्नि तथा पितर हमारे दिए हुए अन्न को ग्रहण नहीं करेंगे। गौतम ने ऋषियों की आज्ञानुसार अपने आश्रम से एक कोस दूर आश्रम बनाया। कुछ दिनों के उपरान्त गौतम की बड़ी प्रार्थना करने पर ऋषियों ने गौतम को प्रायश्चित्त का विधान बतलाया। ऋषियों की आज्ञानुसार गौतम ने ब्रह्मगिरि की परिक्रमा करके विधि पूर्वक पार्थिव पूजन का काम प्रारंभ किया। कुछ समय के पश्चात् पार्वती के सहित महादेवजी प्रकट होकर गौतम से बोले कि तुम इच्छित वर मांगो। गौतम बोले कि हे स्वामिन्! आप मुझको पाप से रहित कीजिए और गंगा को दीजिए। पूर्व काल में अपने ब्याह के समय शिवजी ने ब्रह्मा को गंगाजल दिया था और उसका कुछ भाग रख-लिया था। उन्होंने वही गंगाजल गौतम को दिया। तब गंगा जी स्त्री रूप होकर बोली कि हे ऋषीश्वरों! मैं गौतम को पवित्र करके यहांसे चली

जाऊंगी। उस समय शिवजी बोले कि हे देवी! २८ वें युग के वैवस्वत मन्वंतर तक तुम यहां निवास करो। गंगा ने कहा कि हे गौतम! यदि पार्वती और अपने गणों सहित महादेवजी इस स्थान पर निवास करें, तो मैं यहां रह सकती हूं। गंगा का ऐसा वचन सुन शिवजी बोले कि हे देवी! मैं यहां स्थित होऊंगा। गंगा ने भी शिव का वचन स्वीकार किया। (९४ वां अध्याय) उसी समय देवगण, ऋषिगण, अनेक तीर्थ तथा क्षेत्र वहां आकर गंगा और शिव की स्तुति करने लगे। उन्होंने कहा कि हे गंगे! जिस समय बृहस्पतिजी सिंह राशि पर स्थित होंगे, उस समय हम सब यहां आवेंगे और मनुष्यों के ११ वर्ष के धोए हुए पापों को दूर करेंगे। सब लोक के हित के लिये तुम और शिवजी यहां निवास करो। जब तक सिंह राशि के बृहस्पति रहेंगे, तब तक हम लोग यहां निवास करेंगे। ऐसा सुन शिवजी वहां रह गए और गंगा भी स्थित होगई। उस समय से जब सिंह के बृहस्पति होते हैं, तब सब क्षेत्र, पुष्करादि तीर्थ, गंगादि नदी और वासुदेवादिक देवता गोदावरी के तीर पर निवास करते हैं। जब तक वे वहां स्थित रहते हैं तब तक उनके स्थानों में जाने से कुछ फल नहीं मिलता। जब तक सिंह के गुरु रहें तब तक अन्य किसी तीर्थ में जाना उचित नहीं है। गौतमी के निकट महापातक के नाश करने वाले त्र्यंबक नामक ज्योतिर्लिंग शिव विख्यात हुए। ब्रह्म पर्वत के उदुम्बर वृक्ष की शाखा से गंगा की धारा निकली। गौतमजी ने उसमें स्नान किया। उसी दिन से उस स्थान का नाम गंगाद्वार हुआ। जब गौतम के द्वेषी ऋषिगण गंगा में स्नान करने आए तब गंगा वहां अंतर्द्धान होगई। तब आकाशवाणी के अनुसार गौतम के द्वेषी ऋषियों ने १०१ बार ब्रह्मगिरि की प्रदक्षिणा की और गंगा की आज्ञा से गौतम ने गंगाद्वार से कुछ आगे कुशाओं से आवर्त किया, तब वहां गंगाजी प्रकट हुईं। उस दिन से वह तीर्थ कुशावर्त के नाम से विख्यात होगया। उसमें स्नान करने वाला मनुष्य मुक्त होजाता है। गंगाद्वार, कुशावर्त और त्र्यंबक शिव के निकट कोटितीर्थ में स्नान करने से फिर जन्म नहीं होता है। जो मनुष्य प्रथम (नासिक में) रामचन्द्र का दर्शन करके त्र्यंबक शिव और गंगाद्वार का दर्शन करता है, उसका संपूर्ण पाप नष्ट होजाता है।

(विश्वेश्वर संहिता, ७० वां अध्याय) महापवित्र गोदावरी नदी ब्रह्म हत्या और गोहत्या पाप को छुड़ाने वाली तथा रुद्रलोक को देने वाली है। सिंह राशि पर बृहस्पति और सूर्य के होने पर गोदावरीनदी में स्नान करने से शिवलोक मिलता है।

थाना।

कल्याण जंक्शन से १२ मील (नासिक रोड के रेलवे स्टेशन से ९८ मील) पश्चिम दक्षिण और बम्बई के विक्टोरिया स्टेशन से २१ मील पूर्वोत्तर थाना का रेलवे स्टेशन है। बम्बई हाते के उत्तरी विभाग में सालसट के कोल के पश्चिम किनारे पर जिले का सदर स्थान थाना नामक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय थाना कसबे में १७४९९ मनुष्य थे; अर्थात् १३९१८ हिन्दू, १६११ मुसलमान, ११९८ कृस्तान, ३७८ पारसी, २०९ यहूदी, १४३ जैन और ३८ अन्य।

थाना कसबे में एक किला, पोर्चुगलवालों का क्थेड्रल, सरकारी कचहरी, खजाना, अस्पताल और कई एक जलाशय हैं। बहुतेरे सरकारी अफसर और अन्य लोग भी थाना कसबे में रहते हैं और प्रति दिन बंबई शहर में जाकर अपना अपना काम करते हैं। पूर्व समय में थाना कसबे में रेशम का बड़ा काम होता था, अब उसमें केवल १४ लूम अर्थात् बीनने की कल हैं।

थाना जिला—इसके उत्तर पोर्चुगल के बादशाह के राज्य का दमन और अंगरेजी राज्य का सूरत जिला; पूर्व नासिक, अहमदनगर और पूना जिला, दक्षिण कुलाबा जिला और पश्चिम समुद्र है। जिले में वैतरणी नामक एक छोटी नदी बहती है। सम्पूर्ण जिले में पहाड़ियों के सिलसिले देखने में आते हैं। जिले से जलावन की बहुत लकड़ी बम्बई शहर में जाती है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय थाना जिले के ४२४३ वर्ग मील क्षेत्रफल में ९०८५४८ मनुष्य थे, अर्थात् ८०६८४५ हिन्दू, ४२३६१ मुसलमान, ३९९४१ कृस्तान, १३०७८ पहाड़ी और जंगली जातियों के लोग, ३३०८ पारसी, २९१७ जैन, ८९२ यहूदी, और ५ अन्य। हिन्दुओं में २२१३३९

कुन्बी, ११७७३२ अग्रिया (खेती करने वाले), ८९४६७ कोली, ६२७४५ महारा, २४२९९ ब्राह्मण और बाकी मे भंडारी, वुधला, बनजारा इत्यादि जाति के लोग थे; इनमें राजपूत केवल २७७२ थे।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय थाना जिले के कसबे बंदरा में १८३१७, थाना में १७४५५, भिवाड़ी में १४३८७, कल्याण में १२६०८, फुरला में ११४६९, और बसीन में ११२९१ मनुष्य थे।

इतिहास–१३ वीं शदी में थाना कसबा एक प्रसिद्ध शहर तथा एक स्वाधीन राज्य की राजधानी था। सन् १३१८ में मुबारकखिलजी ने थाना को जीता। सन् १५२९ मे थाना का मालिक पोर्चुगीजों को कर देने लगा। सन् १५३३ मे पोर्चुगीजों ने उसको ले लिया। १६ वीं शदी में थाना कसबे में ६००० आदमी रेशम का काम करते थे। सन् १७३७ में महाराष्ट्रों ने पोर्चुगीजों से थाना छीन लिया। सन् १७७४ में अंगरेजों ने थाना पर अपना अधिकार किया; किन्तु उसके पीछे महाराष्ट्रों ने उसको अंगरेजों से ले लिया। सन् १८१८ में बाजीराव पेशवा के परास्त होने पर थाना जिला अंगरेजी राज्य में मिल गया।

अलीबाग।

बंबई शहर से १९ मील दक्षिण समुद्र के किनारे पर बंबई हाते के कुलावा जिले का प्रधान कसबा और अलीबाग सबडिवीजन का सदर-स्थान अलीबाग नामक छोटा कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय अलीबाग में ६३७६ मनुष्य थे; अर्थात् ५६७४ हिन्दू, ४०७ मुसलमान, ६६ जैन, ५५ कृस्तान, २ पारसी और १७२ अन्य लोग।

अलीबाग में सब जज की कचहरी, जेलखाना, अस्पताल, स्कूल, कष्टमहौस और एक उत्तम बाग है। कसबे से लगभग १½ मील पूर्वोत्तर सन् १८७६ की बनी हुई एक झील है, जिससे कसबे में पानी आता है। यह २० फीट गहरा ७ एकड़ भूमि पर है। समुद्र के किनारे से लगभग २०० गज दूर एक

छोटे चट्टानी टापू पर कुलाबा का पुराना किला है । किले से दक्षिण पश्चिम समुद्र के जल में लगभग ६० फीट ऊंचा गोलाकार चट्टान है, जिस पर अनेक जहाज ठोकर-खाकर डूब गए हैं।

कुलाबा जिला—यह बंबई हाते के कोकन अर्थात् दक्षिणी विभाग में, एक जिला है। इसके उत्तर और पूर्वोत्तर बंबई का बंदरगाह और थाना जिला; पूर्व सह्याद्रि पहाड़ी और पूना तथा सतारा जिला, दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम रत्नागिरि जिला और पश्चिम जंजीरा का राज्य और थोड़ी दूर तक समुद्र है। जिले का प्रधान कसबा अलीबाग है । यह जिला १५ मील से ३० मील तक की चौड़ाई में बंबई के बंदरगाह से ७८ मील दक्षिण पूर्व महाबलेश्वर पहाड़ी के पास तक सह्याद्रि पर्वत और समुद्र के बीच मे फैला हुआ है। समुद्र के पास बहुत जलाशय है, जिनमें से चंद जलाशय भूमि से पत्थर निकाल कर बनाए गए हैं। इस जिले में बाघ और तेंदुए बहुत हैं। समुद्र के किनारे के पास के गांवों में बहुत से मछुहे बंबई भेजने के लिए मछलियां एकत्र करते हैं। इसी जिले में रायगढ़ का किला है, जहां सुप्रसिद्ध शिवाजी सन् १६७४ में राजसिंहासन पर बैठे और सोने का तुलादान किया।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय कुलाबा जिले के १४९६ वर्गमील क्षेत्रफल में ३८१६४९ मनुष्य थे, अर्थात् ३६०११७ हिन्दू १७८९१ मुसलमान, २१३९ यहूदी, ११६४ जैन, २०८ कृस्तान, और ३३ पारसी। हिन्दुओं में १६९,३३८ कुन्बी, ४४१९१ अग्रिया, ३४८४७ महारा, १४८६९ कोली, १३७८९ ब्राह्मण, ११२६० माली, ७३३२ गावली और बाकी में भंढारी, लिंगायत, धांगर, जंगम आदि जातियों के लोग थे, राजपूत केवल १६७ थे।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय कुलाबा जिले के कसबे ऊरन में ११४२२ और पनवेल में १०४२० मनुष्य थे । अलीबाग इत्यादि कई इनसे छोटे कसबे हैं।

इतिहास—सन् ईस्वी के आरंभ के बाद अंध्रभृत्य वंश के राजा,

जिनकी राजधानी कोल्हापुर था, कुलाबा के मालिक थे। ६ वीं शदी में संपूर्ण उत्तरीय कोकन के सहित वह चालुक्य वंश के राजा के आधीन हुआ। १३ वीं शदी में कुलाबा जिले पर देवगिरि के राजा का, १४ वीं शदी में बहमनी वंश के बादशाह का और उसके पश्चात् क्रम से गुजरात के बादशाह, मुगल बादशाह और महाराष्ट्र लोगों का अधिकार हुआ। शिवाजी ने २ छोटे किले बनवाए, जिनमें से एक रायगढ़ का किला है। उन्होंने सन् १६६२ में कुलावा के किले की मरम्मत करवाई।

अंग्रिया जाति का कांधोजी सन् १६९८ में महाराष्ट्रों के जहाजों का अफसर था। उसका सदर स्थान वर्त्तमान बंबई शहर से दो तीन मील दूर कुलाबा के किले में था। उसने सन् १७१३ में पेशवा की आधीनता छोड़ कर और जंजीरा के सीदिया को परास्त करके कोकन के किनारे के आसपास अपनी हुकूमत क़ायम की। उसकी राजधानी "विजयदुर्ग" था। सन् १७५६ में पेशवा और अंगरेजों की संमिलित सेनाओं ने कांधोजी के वंशधरों को परास्त करके विजयदुर्ग किले को लेलिया। विजयदुर्ग पेशवा के आधीन हुआ। सन् १८१८ में जब पूना के पेशवा का राज्य अंगरेजी सरकार ने ले लिया, तब कांधोजी के वंश के मानाजी और रावोजी पेशवा के आधीन कुलाबा के अधिकारी थे, जो उस समय से अंगरेजी गवर्नमेंट के आधीन हुए। सन् १८४० में उस खान्दान के दूसरा कांधोजी की मृत्यु होने पर उसका राज्य बंबई के अंगरेजी राज्य में मिल गया।

लगभग २०० वर्ष हुए कि अली नामक एक धनी मुसल्मान ने वर्त्तमान अलीबाग कसबे के पास बहुत से कूप और बाग बनवाए, जिनमें से बहुतेरे अब तक विद्यमान हैं; उसी समय कसबे का नाम अलीबाग पड़गया।

———o———

आगबोट एक सप्ताह पर बंबई से खुलता है और गोआ, कारवार, मंगलूर, कालीकोट, तुतिकुडी इत्यादि पश्चिमी किनारे के बंदरगाहों में होकर सिलोन के कोलंबो शहर को जाता है। एक कंपनी के आगबोट सप्ताह में ३ दिन बंबई के बंदरगाह से खुलते हैं और बिरावल, बंगरोल, पोरबंदर, द्वारिका, मांडवी इत्यादि बंदरगाह होकर कराची बंदर में पहुंचते हैं। इन आगबोटों में द्वारिका के बहुत यात्री जाते हैं। द्वारिका के यात्री २५—३० अथवा ३५ घंटे में बंबई से द्वारिका पहुंच जाते हैं। आगबोट का महसूल एक आदमी का दूसरे क्लास के ४ रुपये और तीसरे क्लास के २ रुपये लगते हैं।

बम्बई शहर से दो रेलवे की दो लाइन दो तरफ गई हैं, तीसरे दरजे का महसूल प्रति मील २ पाई लगता है;—

(१) बंबई शहर के कुलाबा के रेलवे स्टेशन से उत्तर बंबे, बड़ोदा और सेंट्रल इण्डियन रेलवे;—

मील प्रसिद्ध-स्टेशन।

३ चरनी रोड।

८ दादर।

१० महीम।

११ बादरा कसबा।

१८ गुरगांव।

२२ बोरवली।

२८ भयदर।

३३ बेसीन रोड।

५५ संजान।

१०९ दमनरोड।

११५ उदवादा।

१२५ बलसर बताशा।

१४९ नवसारी।

१६७ सूरत।

१९८ अंकलेश्वर।

२०४ भड़ौंच।

२२९ मियागांव जंक्शन।

२४६ विश्वामित्री जंक्शन।

२४८ बड़ोदा।

२७० आनंद जंक्शन।

२८१ नड़ियाद।

२९२ महम्मदाबाद।

३१० अहमदाबाद जंक्शन।

मियागांव जंक्शन से २० मील पूर्वोत्तर डभोई जंक्शन; डभोई से १० मील दक्षिण चंदोद और ९ मील पूर्व बहादुरपुर।

विश्वामित्री जंक्शन से पूर्व १२ मील डभोई जं-

क्शन और २१ मील ब-
हादुरपुर।

आनद जक्शन से पूर्व कुछ उत्तर १४ मील अम-रेठ कसवा, १९ मील डा-कौर, ४९ मील गोधडा, ९५ मील दोहद कसवा, और १६४ मील रतलाम जंक्शन और आनन्द से पश्चिम दक्षिण १४ मील पेतलाद कसवा। (आगे अ-अहमदाबाद में देखो)।

(२) बंबई शहर के विक्टोरिया नामक रेलवे स्टेशन से पूर्वोत्तर ग्रेट इण्डियन पेनिनसूला रेलवे,—

मील प्रसिद्ध स्टेशन।

६ दादर।
१७ भडूप।
२१ थाना।
३३ कल्याण जंक्शन।
५९ अठगाव।
७५ कसारा।
८५ इगतपुरी।
११३ देवलाली।
११६ नासिक।
१४६ लासलगांव।
१६२ मनमार जंक्शन।
१७८ नंदगांव।
२०४ चालीस गाव।
२३२ पचोरा।
२६१ जलगाव कसवा।
२७६ भुसावल जंक्शन।
३१० बुरहानपुर।
३२२ चांदनी।
३५३ खडवा जंक्शन।
४१६ हरदा।
४४२ सिउनी।
४६३ इटारसी जंक्शन।
५३६ गाडरवाड़ा जङ्क्शन।
५६४ नरसिंहपुर।
६१६ जबलपुर।

कल्याण जंक्शन से द-क्षिण पूर्व ५ मील अमर-नाथ, २१ मील नेरल, २९ मील कर्जत, ४५ मील खं-डाला, ४७ मील लोनवली, ५२ मील कारली, ६३ मील वाडगांव, ६९ मील तलेगाव, ७६ मील चिंचवा-ड, ८३ मील किर्की और ८६ मील पूना जंक्शन।

मनमार जंक्शन से द-क्षिण ९५ मील अहमदन-गर और १४६ मील धोंद जंक्शन।

आगबोट एक सप्ताह पर बंबई से खुलता है और गोआ, कारवार, मंगलूर, कलीकोट, तुतिकुड़ी इत्यादि पश्चिमी किनारे के बंदरगाहों में होकर सिलोन के कोलंबो शहर को जाता है। एक कंपनी के आगबोट सप्ताह में ३ दिन बंबई के बंदरगाह से खुलते हैं और बिरावल, बंगरोल, पोरबंदर, द्वारिका, मांडवी इत्यादि बंदरगाह होकर करांची बंदर में पहुचते हैं। इन आगबोटों में द्वारिका के बहुत यात्री जाते हैं। द्वारिका के यात्री २५—३० अथवा ३५ घंटे में बंबई से द्वारिका पहुंच जाते हैं। आगबोट का महसूल एक आदमी का दूसरे क्लास के ४ रुपये और तीसरे क्लास के २ रुपये लगते हैं।

बम्बई शहर से दो रेलवे की दो लाइन दो तरफ गई हैं, तीसरे दरजे का महसूल प्रति मील २ पाई लगता है;—

(१) बंबई शहर के कुलावा के रेलवे स्टेशन से उत्तर बंबे, बड़ोदा और सेंट्रल इण्डियन रेलवे;—

मील प्रसिद्ध-स्टेशन।

३ चरनी रोड।
८ दादर।
१० महीम।
११ बांदरा कसबा।
१८ गुरगांव।
२२ बोरवली।
२८ भयदर।
३३ बेसीन रोड।
९५ संजान।
१०९ दमनरोड।
११५ उदवादा।
१२५ बलसर कस्बा।
१४९ नवसारी।
१६७ सूरत।
१९८ अंकलेश्वर।
२०४ भड़ौंच।
२२९ मियागांव जंक्शन।
२४६ बिश्वामित्री जंक्शन।
२४८ बड़ोदा।
२७० आनंद जंक्शन।
२८१ नडियाद।
२९२ महम्मदाबाद।
३१० अहमदाबाद जंक्शन।

मियागांव जंक्शन से २० मील पूर्वोत्तर डभोई जंक्शन; डभोई से १० मील दक्षिण चंदोद और ९ मील पूर्व बहादुरपुर।

बिश्वामित्री जंक्शन से पूर्व १२ मील डभोई जं:

स्टेशन और २१ मील व-
हादुरपुर।

आनंद जंक्शन से पूर्व कुछ उत्तर १४ मील अम-
रेठ कसबा, २९ मील डा-
कोर, ४९ मील गोधड़ा,
९४ मील दोहद कसबा,
और १६४ मील रतलाम
जंक्शन और आनन्द से
पश्चिम-दक्षिण १४ मील
पेतलाद कसबा। (आगे अ-
हमदाबाद में देखो)।

(२) बंबई शहर के विक्टोरिया नामक रेलवे स्टेशन से पूर्वोत्तर ग्रेट इण्डियन पेनिनसूला रेलवे,—
मील-प्रसिद्ध स्टेशन।

६ दादर।
१७ मंडूप।
२१ थाना।
३३ कल्याण जंक्शन।
५९ अठगांव।
७५ कसारा।
८५ इगतपुरी।
११३ देवलाली।
११६ नासिक।
१४६ लासलगांव।
१६२ मनमार जंक्शन।
१७८ नंदगांव।
२०४ चालीस गांव।
२३२ पचोरा।
२६१ जलगांव कसबा।
२७६ भुसावल जंक्शन।
३१० बुरहानपुर।
३२२ चांदनी।
३५३ खंडवा जंक्शन।
४१६ हरदा।
४४३ सिउनी।
४६३ इटारसी जंक्शन।
५३६ गाडरवाड़ा जंक्शन।
५६४ नरसिंहपुर।
६१६ जबलपुर।

कल्याण जंक्शन से द-
क्षिण पूर्व ५ मील अमर-
नाथ, २१ मील नेरल, २९
मील कर्जत, ४५ मील खं-
डाला, ४७ मील लोनवली,
५२ मील कारली, ६३
मील बाडगांव, ६९ मील
तलेगांव, ७६ मील चिचवा-
डा, ८३ मील किर्की और
८६ मील पूना जंक्शन।

मनमार जंक्शन से द-
क्षिण ९५ मील अहमदन-
गर और १४६ मील धोंद
जंक्शन।

इटारसी जङ्क्शन से उत्तर की ओर इण्डियनमिडलैंड रलवे पर ११ मील हुशंगाबाद, ५७ मील भोपाल जङ्क्शन, ९० मील भिलसा १४३ मील बीना जङ्क्शन, १७९ मील ललितपुर और २३८ मील झांसी जङ्क्शन।

जबलपुर से पूर्वोत्तर ई ए इण्डियन रेलवे पर ५७ मील कटनी जङ्क्शन, १६६ मील मानिकपुर जङ्क्शन, २२४ मील नैनी जङ्क्शन और २२८ मील इलाहाबाद

भुसावल जंक्शन से पूर्व ओर ५६ मील जलंब जंक्शन, ६४ मील सेगांव, ८७ मील अकोला, १३६ मील बडनेरा जंक्शन, १९५ मील वरधा जंक्शन और २६४ मील नागपुर शहर।

खंडवा जंक्शन से पश्चिमोत्तर राजपुताना मालवा रेलवे पर ३७ मील मोरतका, ७३ मील मऊ, ८६ मील इन्दौर, १११ मील फतेहाबाद जङ्क्शन, १६० मील रतलाम जंक्शन और २७७ मील चितौरगढ़।

बंबई शहर में रेलवे के १३ स्टेशन हैं;—शहर के उत्तर के दादर के स्टेशन से दक्षिण-पश्चिम ग्रेटइन्डियन पेनिनसुला रेलवे पर १ मील बेरल, २ मील करीरोड, ३ मील चिंचपोकली, ४ मील बाईकुला, ५ मील मसजिद और ६ मील विक्टोरिया स्टेशन और दादर के स्टेशन से दक्षिण बंबे, बडोदा, सेंटल इन्डियन रेलवे पर १ मील एलफिस्टोन रोड, ३ मील महालक्ष्मी, ४½ मील ग्रेंटरोड, ५¼ मील चरनीरोड, ६ मील मेरिन लाइन, ६¾ मील चर्चगेट और ८ मील कुलाबा का रेलवे स्टेशन है।

भोलेश्वर अथवा माधोदास की धर्मशाले में उतरने वालों को मसजिद के रेलवे स्टेशन में उतरना उचित है। विक्टोरिया स्टेशन पर बहुत लोग रेलगाड़ियों से उतरते हैं।

बंबई में ट्रामवे कंपनी का काम कलकत्ते के ट्रामवे से अधिक फैला हुआ

है। कोलाबा में ट्रामवे का खतमी स्टेशन है, जिसके अस्तबल में लगभग ६५० घोड़े रहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बंबई शहर में ८२१७६४ मनुष्य थे; अर्थात् ५१८०९३ पुरुष और ३०३६७१ स्त्रियां। इनमें ५४३२७६ हिंदू, १५५२४७ मुसलमान, ४७४५८ पारसी, ४५३१० क्रस्तान, २५२२५ जैन, ५०२१ यहूदी, १९० बौद्ध और ३७ अन्य थे। मनुष्य संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में पहिला शहर है; किंतु कलकत्ते में हवड़ा को मिला देने से वही पहिला शहर होता है।

बंबई शहर का क्षेत्रफल २२ वर्गमील है। उसकी लंबाई कोलाबा की दक्षिणी सीमा से सियन कजवे तक, जिसपर होकर रेलवे लाइन सालसट टापू को गई है, ११½ मील और इस्प्लानेड (कौट का मैदान) के उत्तर के भाग की चौड़ाई ३ मील से ४ मील तक है। उत्तर के अतिरिक्त बवई टापू के तीन तरफ समुद्र है। उसके दक्षिण का भाग क्रम क्रम से घट कर दक्षिण में नोक के समान होगया है, जिसको लोग कुलाबा पोइंट कहते हैं। टापू के किनारे की भूमि नीची है। वहां के सबसे ऊंचा मालाबर नामक शिखर समुद्र के जल से केवल १८० फीट ऊंचा है।

बंबई टापू के आस पास खास करके उसके उत्तर और पूर्व बेसीन, ट्राबी, बरसोवा, सालसट, दम्बे, योल्ड, वोमन्स आइलेंड, कोलावा, एलिफेंटा, बुचरस आइलेंड, जीवेट आइलेंड और करेंजा नाम क ११ टापू हैं, जिनमें से कई टापुओं पर अनेक पहाड़ियां हैं। बवई शहर से उत्तर सालसट नामक बड़ा टापू है। बंबई शहर और सालसट के बीच में कजवे और पुल बना है, जिस पर होकर रेलवे लाइन निकली है। सालसट टापू थाना जिले का एक सवडिवीजन है, उसका क्षेत्रफल २४१ वर्गमील है। उसके मध्य भाग में उत्तर से दक्षिण तक पहाड़ियों का चौडा सिलसिला है, जिसका एक शिखर समुद्र के जल से लगभग १५२५ फीट ऊंचा है। सालसट की पहाडियों में बहुत से गुफा मंदिर बने हुए हैं, जिनमें कनारी के गुफामंदिर अधिक प्रसिद्ध हैं।

बंबई शहर के देशी महल्लों की सड़कें कम चौड़ी तथा जगह जगह पर टेढ़ी हैं; किन्तु वे बहुत साफ रहती हैं। सड़कों के बगलों में तीन मंजिले, चौमंजिले तथा पंचमंजिले, कोई कोई छः मंजिले मकान बने हुए हैं, जिनमें से चंद मकानों में बहुत कारीगरी का काम है। जगह जगह मंदिर और मसजिद देखने में आती हैं। शहर का वह भाग जो किला कहलाता है शहर के संपूर्ण भागों से अधिक प्रसिद्ध है। उसमें अधिक यूरोपियन लोग रहते हैं; चौड़ी सड़कें तथा बड़े बड़े मकान बने हैं और बड़ी भीड़ देखने में आती है। इस भाग में बहुत से सरकारी आफिस, कारोबार के मकान और दूकानें बनापन के साथ बनी हुई हैं। इनमें से बहुतेरे मकान बहुत बड़े हैं; उनके मुकाबले के मकान कलकत्ते के अतिरिक्त हिंदुस्तान के दूसरे शहरों में प्रायः देखने में नहीं आते हैं। उस भाग के और खास देशी शहर के बीच में एक बड़ा मैदान है। बंबई शहर की सड़कों पर आदमियों की बड़ी भीड़ रहती है। यहां प्रायः सर्व देशों तथा टापुओं के लोग अपनी अपनी पोशाक पहने हुए देखने में आते हैं। कोट के मैदान में सरकारी इमारतों की सुन्दर लाइनें हैं, जिनमें सेक्रेटेरियट, युनिवरसिटी, सिनेटहाल, नई हाईकोर्ट, पोष्टआफिस, टेलीग्राफ आफिस, सरकारी कामों के महकमे के अनेक आफिस इत्यादि उत्तम इमारतें हैं। किले की भूमि पर रात्रि में बिजली की रोशनी होती है। बंबई के बहुत प्रसिद्ध इमारतों में से एल्फिंष्टोन सर्किल, कष्टमहौस, टाउनहाल, टकसाल और कथेड्रल है। बंदरगाह में भांति भांति के जहाजों और आगबोटों का उत्तम दृश्य दृष्टिगोचर होता है।

पश्चिम किनारे पर कुलाबाचर्च और युनिवरसिटी अर्थात् विश्वविद्यालय, जिसमें घड़ी का बड़ा बुर्ज है, देखने लायक है। ग्रंटरोड पर नार्थब्रुक बाग; मुम्बई देवी से दक्षिण जुमा ममजिद है।

किले की जगह से ३½ मील पश्चिमोत्तर मलाबार पहाड़ी है, जिस पर यूरोपियन, पारसी तथा अन्य अमीर लोगों के बिल्ले और बंगले बने हुए हैं और सुन्दर बाग लगे हैं। उसके दक्षिणी नाक पर गवर्नमेंट हौस है। पहाड़ी के चारों ओर यूरोपियन लोगों की बहुतसी कोठियां हैं। शहर के पश्चिम मेंफुला और मैंझगन, शहरतली में बहुत से कल कारखाने हैं।

बंबई में बहुत से स्कूल हैं, जिनमें कई एक स्कूलों में खास करके लड़कियां पढ़ती हैं। वहां "आर्यमहिला समाज" नामक स्त्रियों की एक सभा है, जिसमें प्रायः शिक्षिता स्त्रीऐं वक्तृता देती हैं। पहिले पूनावाली पंडिता रमाबाई इस सभा की संपादिका थीं, उसके पश्चात् अहिल्याबाई नामक एक महाराष्ट्री स्त्री उस पद पर नियुक्त हुईं। बंबई शहर में महाराष्ट्री, गुजराती इत्यादि भाषा प्रचलित हैं।

बंबई शहर में प्रति वर्ष भादों सुदी चौथ से चौदस तक बहुत स्थानों में धूम धाम से गणेशचौथ का महोत्सव होता है (पूना के वृत्तांत में देखिए)। कार्तिक में ५ दिनों तक दिवाली का उत्सव रहता है। दिवाली के दिन लोग बड़े धूम धाम से समुद्र की पूजा करते हैं। वसंतोत्सव बड़ा समारोह से होकर चैत बदी पंचमी को समाप्त होता है। दादर के रेलवे स्टेशन से एक मील दूर माटुंगा नामक स्थान में आषाढ सुदी एकादशी को विठोबा देव के उत्सव का मेला होता है। वहां विठोबादेव और अन्य देव देवियों के मन्दिर बने हुए हैं।

बंबई की म्युनिसिपल्टी की सफाई सराहनीय है। उसको लगभग ८० लाख रुपये की वार्षिक आमदनी और इसी भांति खर्च है। शहर में सर्वत्र जलकल की नलें फैली हैं। रात्रि में सड़कों पर गैश की रोशनी होती है। शहर का जल वायु उत्तम है। वहां न जाड़े के दिनों में बहुत सर्दी और न धूप के दिनों में बहुत गर्मी पड़ती है। औसत में सालाना वर्षा लगभग ७० इंच होती है। वहां समुद्र का साधारण ज्वार १४ फीट और पूर्णिमासी का ज्वार १७ फीट ऊंचा होता है।

कलकत्ते के सूर्योदय से १ घंटा और ३ मिनट पीछे बंबई शहर में सूर्योदय होता है। जब बंबई शहर की लोकल घड़ी में ६ बज के ३० मिनट होता है; उस समय दिल्ली में ६ बज के ४७ मिनट; आगरा में ६ बज के ६० मिनट मदरास शहर में ६ बज के शून्य मिनट, इलाहाबाद में ६ बज के ७ मिनट और कलकत्ता में ६ बज के ३३ मिनट का समय रहता है, अर्थात् बंबई शहर के सूर्योदय से १७ मिनट पहिले दिल्ली में, २० मिनट पहिले आगरा में, ३०

मिनट पहिले मदरास शहर में; ३७ मिनट पहिले इलाहाबाद में और १ घंटा ३ मिनट पहिले कलकत्ता में सूर्योदय होता है।

धर्मशाले—मार्केट (बाजार) के पास माधोदासजी की धर्मशाला मुसाफिरों के आराम की जगह है। भोलेश्वर महादेव के मन्दिर के पास एक बड़ा मकान बना है; उसमें भी मुसाफिर उतरते हैं। मुम्बई देवी के सरोवर के पास कुछ लोग टिकते हैं। मैं माधोदासजी की धर्मशाले में टिका था।

महारानी बाग—(विक्टोरिया गार्डन)—शहर के उत्तरी भाग में परेल रोड के पूर्व किनारे पर ३४ एकड़ भूमि पर महारानी बाग है, जिसमें मिउनिसपलिटी का प्रति वर्ष १०००० रुपये खर्च पड़ते हैं। बाग में एक घड़ी का टावर है। बाग के वृक्ष, झाड़ी और फूल सभी खूबसूरती के साथ लगाये तथा सजाये गये हैं। उसके भीतर सड़कें और फौआरे उत्तम रीति से बनाये गये हैं। बाग के एक भाग में जगह जगह पशु पक्षी और जल जंतुओं के रहने की जगह बनी है, जिनमें बहुतेरे बाघ, भालू, हरन, सर्प, मूसा, शुतुरमुर्ग आदि जन्तु रहते हैं। एक गोलाकार हौज में पत्थर के ढोकों के नीचे और छोटे अशोक के वृक्षों पर बहुत सर्प हैं।

अजायबखाना—महारानी बाग के पश्चिमी हिस्से में सड़क से थोड़ही दूर एल्बर्ट मिउजियम की दो मंजिली इमारत है, जिसका काम सन् १८६२ में आरम्भ और सन् १८७१ में समाप्त हुआ। भीतर मार्बुल का फर्श और दीवार, छत तथा खंभाओं में जगह जगह सुनहरा काम है। उसके नीचे की मंजिल में महारानी विक्टोरिया के स्वामी प्रिंस एल्बर्ट की मार्बुल की प्रतिमा है। छोटा अजायबखाना होने पर भी उसमें बहुतसी मनोहर वस्तुएं देखने में आती हैं। उसमें विविध भांति के अन्न, बीज, लकड़ी, पत्थर, धातु, हथियार, कपड़ा, नकली फल तथा तरकारी, दरियाई चीज, प्रतिमा, मरे हुए चिड़िये और बड़ी बड़ी हड्डियां, एक बख्तर, एक बख्तर पहना हुआ घोड़सवार इत्यादि सामान रक्खे हुए हैं।

महालक्ष्मी का मन्दिर—परेल से दक्षिण-पश्चिम महालक्ष्मी स्थान

में महालक्ष्मीजी का सुन्दर मंदिर बना हुआ है। महालक्ष्मीजी का स्थान प्राचीन है।

पिंजरापोल—भोलेश्वर नामक स्थान में पिंजरापोल अर्थात् पशु आश्रम है। बम्बे के धार्मिक लोग चन्दा करके वहां जन्तुओं को पालते हैं। बम्बे के लोग रास्ते में कुत्ते को भी पाने पर पिंजरापोल में रख देते हैं। इसी तरह दुर्बल जंतु प्रतिपालित होते हैं। वह कई एकड़ भूमि पर बना है। पहले भाग में रोगी और बूढ़े जानवर; दूसरे में बकरे, भेड़ और गदहे; तीसरे में भैंस और चौथे भाग में कुत्ते रहते हैं।

मुम्बई देवी—उसी देवी के नाम से शहर का नाम मुम्बई और बम्बई है। कलवा देवी सड़क के पास एक सरोवर के समीप मुम्बई देवी का लम्बा मन्दिर है। उसमें मुम्बई देवी, शिव, हनूमान और गणेश की अलग अलग कोठरी है; सबके आगे एक दालान है, जिसका फर्श उजले और काले मार्बुल के टुकड़ों से बना है। मुम्बई देवी के सिंहासन में चाँदी-पत्त जड़ा है; उनका मुकुट सुनहरा है। मन्दिर में समय समय पर दर्शकों की भीड़ रहती है।

द्वारिकाधीश का मन्दिर—इस्प्लानेड के पास परेल जाने वाली सड़क के दहिनी तरफ ४० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा द्वारिकाधीश का मन्दिर है। मन्दिर के दरवाजे पर चांदी का पत्तर जड़ा हुआ है। वह मन्दिर बंबई शहर मे प्रसिद्ध है।

मालावार पहाड़ी—जैसे बम्बे का दक्षिणी भाग दोनों तरफ से घटता हुआ समुद्र में चला गया है, जिसके दक्षिण के नोक को कोलाबा पोइंट कहते हैं, वैसइ मालावार पहाड़ी बम्बे के पश्चिम प्रांत से समुद्र मे दक्षिण-पश्चिम गई है, जो समुद्र के जल से १८० फीट ऊंची है। उस पर पारसियों का समाधि स्थान, वालकेश्वर का मन्दिर और गवर्नमेंट हौस आदि उत्तम इमारत बनी हुई हैं। मालावार के उत्तर कम्बाला पहाड़ी है; दोनों के बीच में होकर एक राह पश्चिमी ओर समुद्र के किनारे तक चली गई है।

पारसियों का दोखमा—ग्रँटरोड के रेलवे स्टेशन से पश्चिम दक्षिण और चरनी रोड स्टेशन से सीधा पश्चिम मालाबार पहाड़ी के ऊंचे शिखर पर समुद्र से करीब १०० फीट ऊपर पारसियों का दोखमा, अर्थात् मुरदे रखने का मकान है। पारसी जाति के अतिरिक्त दूसर मनुष्यों का पारसी पंचायत के सेक्रेटरी से दोखमा देखने के लिए आज्ञा लेनी होती है। एक सड़क दोखमा के टावरों के उत्तर तरफ गई है, जिसको सर जमसिदजी जीजी भाई ने बनवाया। उसने टावरों के पूर्व और उत्तर १००००० गज मुरब्बा भूमि भी दी थी। वह दोखमा देखने लायक उत्तम इमारत है।

दोखमा के बाहरी के हाते के फाटक के भीतर ८० सीढ़ियां हैं। सीढ़ियों को लांघ कर हाते के भीतर दहिनी ओर फिरने पर एक पत्थर की इमारत मिलती है, जिसमें पारसी लोग मृतक की क्रिया के समय प्रार्थना करते हैं। उस स्थान से बंबे शहर का उत्तम दृश्य हासिल होता है। समुद्र के पास रहने से यहां की हवा ठंढी रहती है। वहां एकही जगह गोलाकार ५ मीनार हैं। उनमें से एक मीनार के बनाने में, जो १७६ फीट ऊंचा है, ३००००० रुपये और चार मीनारों में से प्रत्येक में २००००० रुपये खर्च पड़े हैं।

प्रत्येक मीनार के भीतर मध्य में कूप के समान गाड़ है। उसमें नीचे से रास्ता है। गाड़ के चारो तरफ मृत पुरुष, स्त्री और लड़कों के रखने के लिए अलग अलग पत्थर के बहुतेरे गोलाकार स्थान बने हुए हैं। एक स्थान में एक पारसी का मुर्दा रख दिया जाता है। मांस भक्षी पक्षियों के आने के लिए ऊपर रास्ते हैं। दोखमा के समीप के वृक्षों पर गृद्ध, काक, सकुनी आदि पक्षी झुंड के झुंड रहते हैं। वे मृतक का खा लेते हैं। पीछे उसकी हड्डियां बीच वाले गाड़ में जल से बहा दी जाती हैं। उसके पश्चात् गाड़ के नीचे के मार्ग से हड्डियों को निकाल कर गाड़ साफ किया जाता है। पारसी लोग अपने मृतकों को न जलाते हैं और न भूमि में गाड़ते हैं; वे लोग इसी भांति दोखमा में रख कर उनका पक्षियों को खिला देते हैं। कोई कोई धनी पारसी अपने मकानही में खास दोखमा बना लिया है।

पारसियों का वृत्तान्त—छठवीं शदी के पीछे जब मुसलमान लोग दूसरे देशों में जाकर बल से लोगों को अपने धर्म में लाने लगे, तब बहुत से पारसी अपना देश पारस को त्याग कर खुरासान में जा बसे और बहुतेरे अपने प्राण के डर से मुसलमान होगए। पारस के वर्त्तमान मुसलमान उन्हीके वंशधर हैं। भागे हुए पारसियों ने कुछ समय के पश्चात् मुसलमानों के अत्याचार से खुरासान से भाग कर पारस के समुद्र के अर्मज द्वीप में आश्रय लिया। उसके कुछ दिन पीछे करीब ७०० पारसी मुसलमानों के अत्याचार से पीड़ित हो वहां से पूर्व दिशा को चले और समुद्र के रास्ते से हिन्दुस्तान के निकट आकर काम्बे समुद्र के दिऊ नामक टापू में रहने लगे, किन्तु वह द्वीप रहने योग्य नहीं था इस लिए वे वहां कुछ दिन रह कर सन् ७१७ ई० में दमन से प्रायः २० मील दक्षिण संजान नामक स्थान में आए। यहां के राजा जयदेव राणा ने उनको अपने राज्य मे रहने की आज्ञा दी। मुसलमानों ने हिन्दुस्तान में आने पर पारसियों को मुसलमान बनाने के लिए जयदेव राणा से युद्ध किया। राणा के पराजय और निहत होने पर पारसीगण संजान से भाग कर बाहारत नामक पहाड पर १२ वर्ष तक छिपे रहे। उसके पश्चात् क्रमशः वंश विस्तार होने पर पारसी लोग वहांसे बान्सा और बान्सा से नौसारी में जाकर रहने लगे। कुछ दिनों के पीछे वे लोग नौसारी से पारिया में चले गए। वहां कुछ समय के पश्चात् उन्होने सबल होकर वहांके राजा को कर देने से इनकार किया। राजा ने एक विवाह के समय बहुतरे पारसीयों को मारडाला। जो पारसी वहां से प्राण लेकर भागे, उन्हीकी संतान क्रमशः बढ़कर भड़ौच, सूरत, बम्बे आदि शहरो में फैल गई। वर्त्तमान पारसी उन्हीके वंशधर हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय हिन्दुस्तान मे ८९९०४ पारसी थे जिनमें से ४७४५८ बम्बे शहर ही में रहते थे। इस समय भी थोड़े पारसी, पारस (इरान) देश में देखने में आते है।

पहले पारसी भी हिन्दुओं के समान अनेक देव देवी की उपासना करते

थे; परन्तु जौराष्ट्रा स्पिटामा के नये धर्म प्रचार के पीछे से वे अहुर मज्दा नामक एक ईश्वर के उपासक हुए। पारसी कहते हैं कि जौराष्ट्रा स्पिटामा ने एक पवित्र अग्नि को स्वर्ग से पृथ्वी में लाया; इससे वे लोग अग्नि को अति पवित्र समझ कर पूजते हैं और अग्नि पूजक कहे जाते हैं।

बम्बे में प्रायः प्रति पारसी आवास के निकट अग्नि पूजा के लिये एक अग्नि-मन्दिर प्रतिष्ठित है। उनमें नवसारी के अग्निमन्दिर सबसे अधिक प्रसिद्ध है। सब मंदिरों में जौराष्ट्रा स्पिटामा की लाई हुई पवित्र अग्नि दिन राति प्रज्वलित रहती है। किसी घटने से किसी मन्दिर की अग्नि बुझ जाय तो पारसी लोग अमंगल सूचक समझते हैं और दूसरे मंदिर से अग्नि लाकर उस मंदिर में पुनः संस्थापन करते हैं। वर्तमान पारसी जल और सूर्य्य की उपासना भी करते हैं। वे लोग अपने प्रत्येक अग्निमंदिर में एक एक श्वेत वृषभ पालते हैं और गोमूत्र से निरांग नामक एक पदार्थ बनाकर अग्निमंदिर में रखते हैं।

पारसियों की रीति व्यवहार हिन्दुओं की रीत व्यवहार से कुछ मिले हुए और कुछ भिन्न हैं। कोई कोई पारसी किसी हिन्दू से अपना जल नहीं छुलाता और कोई मुसलमान का बनाया पाक खा लेता है। उनमें कन्या का विवाह चचेरे भाई के साथ होता है। पारसी मद्यपान करते हैं, पर चुरट अथवा किसी तरह का धूम्रपान कोई नहीं करता। कृस्तान, हिंदू, मुसलमान, जैन, सिख इत्यादि सब लोगों में बहुत भिक्षुक देख पड़ते हैं; किन्तु पारसी जाति में भिक्षुक अथवा वेश्या एक भी नहीं हैं। पारसियों में दूसरी जातियों से अधिक विद्या की रिवाज है। उनमें सैकड़े पीछे ७८ पुरुष और ८१ स्त्रियां पढ़ी हुई हैं। उनमें बहुतेरों ने अङ्गरेजी विद्या पढ़कर बड़े बड़े सरकारी ओहदे पाये हैं। लगभग ९० हजार पारसियों में दस पंद्रह करोड़पति, सैकड़ो लक्षपति और हजारों पारसी सहस्रपति हैं। बहुतेरे पारसी अपनी कीर्ति के लिये लाखों रुपये दान कर देते हैं।

पारसियों में बहुत लोग गुजराती पोशाक और बहुत लोग कोट पतलून पहनते हैं। उनकी टोपी दो तरह की होती है. बड़ी टोपी सम्मानित

लोग पहनते हैं। पारसियों की स्त्रियां रेशमी साड़ी पहनती हैं, पांव में जूता या बूट लगाती हैं और सिर पर सर्वदा एक सादा रुमाल बांधती हैं। उनमें हीरा मोती के भूषण पहनने की चाल अधिक है। किसी पारसी की मृत्यु के समय पारसी लोग उस रोगी के मुख पर कोई गन्ध द्रव्य लगाकर उसको एक कुत्ते से चटवाते हैं। जिस रोगी के मुख को कुत्ता नहीं चाटता उसके शरीर में पाप समझा जाता है। उस समय उस रोगी के स्वजन किसी उपाय से रोगी का मुख चटाकर उसको निःपाप करते हैं। उस काम के लिये प्रायः सब पारसी के गृह में एक या अधिक कुत्ते पाले जाते हैं।

पारसियों की धर्म पुस्तकों में लिखा है कि मृत आत्मा मरने के तीन दिन पीछे मित्थ नामक देवता के पास जाता है। बाजे वेशो नामक अप देवता वहां से उसको भारत वर्ष में लाता है, जहां से सदात्मा और असदात्मा दोनों एक रास्ते से आत्मसंग्राहक सेतु के निकट पहुचते हैं। वहां से कुत्ता सदात्मा को स्वर्ग में लेजाता है और असदात्मा अंधकार पूर्ण नर्क में गिरता है। जान पड़ता है कि इसी से पारसी कुत्तों का मान करते हैं।

पारसी धर्मशाला—दोखमा से दक्षिण गामदेवी रोड पर गरीब पारसियों के लिये पारसी धर्मशाला बनी है। एक बड़े बाग में वह साफ सुन्दर इमारत है। बाग में एक सरोवर है। धर्मशाले में कभी कभी २०० तक पारसी स्त्री, पुरुष और लड़के रहते हैं।

जल कल के हौज—दोखमा से थोड़ही दूर पर बंबई की जलकल के हौज हैं। सालसट टापू के विहारझील और तुलसीझील से पानी आकर वहां के हौजों में रहता है और वहांसे नल द्वारा संपूर्ण शहर में जाता है।

बालकेश्वर का मंदिर—मलाबार पहाड़ी के दक्षिणी भाग में पश्चिम किनारे पर बालकेश्वर शिव का दर्शनीय मंदिर है। वह मंदिर बम्बे के सम्पूर्ण मन्दिरों में प्रसिद्ध है। वहां बाणतीर्थ नामक एक बहुत सुन्दर छोटा सरोवर है, जिसके चारोतरफ ब्राह्मणों के मकान और देवस्थान बने हुए हैं।

वहां के लोग कहते हैं कि श्रीरामचन्द्र ने सीताहरण होने के पश्चात् यहां

था करके बालू का शिवलिंग स्थापित किया। जब प्यास लगने पर उनको यहां पानी नहीं मिला, तब उन्हों ने एक बाण पृथ्वी में चलाया, जिससे एक सरोवर बन गया, जिसको बाणतीर्थ कहते हैं।

गवर्नमेंट हौस—मलाबार पोंइंट के आखीर दक्षिण-पश्चिम गवर्नमेंट हौस है, जिसको वालकेश्वर का गवर्नमेंट हौस कहते हैं। समुद्र की तरफ बड़े बड़े ठंढे कमरे और बरंडे बने हैं। सन् १८८० से बम्बे के गवर्नर खास करके उस कोठी में रहते हैं और कभी कभी जाड़े में बाग की सैर के लिये परेल की कोठी में ठहरते हैं। मलाबार पोंइट में दूसरे अंगरेजों की भी कई कोठियां बनी हुई हैं। गवर्नमेंट हौस के दक्षिण एक बैटरी है।

प्रिंस आफ वेल्स बाग—इसको साधारण लोग चरनी रोड का बाग कहते है। मलाबार पहाडी और कोलाबा के बीच के पश्चिमी किनारे को बेकवे कहते हैं। उसके पूर्व तरफ प्रिंसआफवेलस बाग है। बाग छोटा होने पर भी समुद्र के तीर में रहने के कारण बहुत मनोरम बना है।

क्रैफोर्ड मार्केट—विक्टोरिया स्टेशन से लगभग आधा मील उत्तर बम्बे में बहुत प्रसिद्ध और देखने योग्य क्रैफोर्ड मार्केट नामक एक उत्तम बाजार है। क्रैफोर्ड नामक कमीश्नर के नाम से १११८००० रुपये के खर्च से यह बाजार बना। लम्बे चौडे मकान में बाजार सजा है। फर्स में मार्बुल के टुकड़े जड़े गए हैं। दीवारों पर खूबसूरत फूलों के लते बढे हुए हैं। हिंदू, मुसलमान, इसाई, आदि सब मजहब के लोगों के खाने की हर किसिम की वस्तु अलग अलग कमरों में सजी रहती हैं। एक से दूसरी का सम्बन्ध नहीं रहता। किसी के धर्म में किसी तरह का फर्क नहीं पड़ता। चीजों के मोल करने की कुछ जरूरत नहीं है। सब चीजों का भाव मोटे कागज पर छपा हुआ या लिखा हुआ रहता है।

विक्टोरिया स्टेशन—एस्प्लानेड मार्केट रोड और बोरी बन्दर रोड के बीच के कोने पर किले की जगह से थोड़ा उत्तर ग्रेट इन्डियन पेनिनसुला रेलवे का विक्टोरिया नामक सबसे स्टेशन है, जिसको बोरीबन्दर का

स्टेशन भी लोग कहते हैं। स्टेशन की इमारत बम्बे की सबसे उत्तम इमारतों में से एक है। वह सन् १८८८ में २७००००० रुपये के खर्च से तय्यार हुई थी। वह दो मंजिली तथा तीन मंजिली इमारत है। उसके छत में सुनहरी मीनाकारी की हुई है। मारबरी पत्थर के खुबसूरत खंभे लगे हैं। ऊपर एक ऊंचे गुम्बज पर बड़ी घड़ी लगी है, जिसकी आवाज दूर से सुन पड़ती है। घड़ी के पास महारानी विक्टोरिया की सुन्दर तस्वीर है। स्टेशन में रात को बिजली की रोशनी होती है। स्टेशन की इमारत १५०० फीट लम्बी है। यह स्टेशन भारत के सब रेलों के स्टेशनों से बड़ा और सुन्दर है।

युरोपियन जनरल अस्पताल—वह विक्टोरिया स्टेशन के पासही दक्षिणपूर्व बोरी बन्दर रोड के दरवाजे पर है। मुसाफिर बिमार पड़े तो उसमें जाने से दूसरी जगहों से अधिक सुभीता है। मुफ्त में और दाम लेकर दोनों तरह के मरीज उसमें रखे जाते हैं। उसके पास उसके आधीन सेंट जर्ज का नया अस्पताल है।

म्युनिस्पिल आफिस—वह विक्टोरिया स्टेशन के पश्चिम पश रहा है, जो बम्बे में सबसे मशहूर इमारत है। उसके खर्च के लिए १३ लाख रुपये अनुमान किये गये हैं। उसका गुम्बजदार टावर २५५ फीट ऊंचा है, जो बंबे के हर हिस्सों से देख पड़ता है। उसमें १३ फीट ऊंची एक अंगरेजी प्रतिमा है। बड़ी सीढी घर के ऊपर एक गुम्बज बना है।

गवर्नमेन्ट इमारतो की बड़ी लाइन का अगवाड़ा बैकवे की तरफ है, जो उत्तर से दक्षिण क्रम से लिखी जाती है,—

महारानी विक्टोरिया की प्रतिमा—टेलीग्राफ आफिस के पास सफेद मार्बुल की बनी हुई महारानी विक्टोरिया की प्रतिमा बैठी है। प्रतिमा के ऊपर गथिक ढाचे की चांदनी बनी हुई है। वह प्रतिमा सन् १८७२ में १८२००० रुपये के खर्च से तैयार हुई, जिसम खांडोजी राव गायकवाड ने १६५००० रुपये दिये थे। यही न्याय परायण महारानी विक्टोरिया, जिनका जन्म सन् १८१९ ईस्वी की चौबीसवी मई को हुआ था, भारतवर्ष की स्वामिनी हैं।

टेलीग्राफ आफिस—यह एक उत्तम इमारत है; इसका अगवास मा-र्बुल से बना हुआ १८२ फीट ऊंचा है, जिसमें नीले रंग के पत्थर के स्तंभ लगे हुए हैं।

पोष्ट आफिस—यह टेलीग्राफ आफिस के दक्षिण २४२ फीट लंबा तीन मंजिला है। इसके उत्तर तरफ बाजू है। जिस पत्थर का टेलीग्राफ आ-फिस है; उसीसे यह भी बना है।

पबलिक वर्क्स सेक्रेटरियट—यह पोष्ट आफिस के दक्षिण । इसमें रेलवे, सींचाई इत्यादि कामों के मुहकमे हैं। इसका अगवास २८८ फीट लम्बा और मध्य का हिस्सा ६ मंजिला है।

हाईकोर्ट—यह पबलिक वर्क्स सेक्रेटरियट से दक्षिण ५६० फीट लंबी पांच मंजिली इमारत है। इसकी चौड़ाई एक तरह की नहीं है। बाहर चारो तरफ बालकानी बनी हैं, जिनमें जगह जगह एक एक, दो दो तथा चार चार मेहराबदार स्तंभ लगे हैं। १७५ फीट ऊंचा १ टावर है। प्रधान दरवाजे के दोनों तरफ १२० फीट ऊंचा टावर है। ऊपर न्याय और दया की प्रतिमा बनी है। प्रधान सीढ़ी पूर्व है। काले, सफेद और सुर्ख पत्थरों का फर्श है। यह इमारत १००००० पाऊंड के खर्च से तय्यार होकर सन् १८७९ में खुली। इस इमारत की पहली और तीसरी मंजिल में इप्तदाई कचहरियां; दूसरी मंजिल में अपील की कचहरियां और मध्य भाग में फौजदारी की कचहरियां हैं। कच-हरियों के मकानों में सब साधारण लोग के बैठने को बहुतसी कुर्सियां रक्खी हैं। हाईकोर्ट के पूर्व बंबें क्लब है।

राजाबाई का टावर—हाईकोर्ट से दक्षिण युनिवरसिटी के पास २६० फीट ऊंचा और १५२ फीट लंबा पोरबन्दर के खुबसूरत पत्थरों से बना हुआ राजाबाई का टावर (बुर्ज) है जिसको रायचन्द प्रेमचन्द नामक एक गुज-राती धनी ने सन् १८७८ ई० में अपनी माता राजाबाई की यादगार के लिए २००००० रुपये के खर्च से बनवाया और पुस्तकालय के लिए भी २००००० रुपया दिया। इसके नीचे की मंजिल में युनिवरसिटी के दफ्तर, मध्य की मंजिल

में युनिवरसिटी का पुस्तकालय और सबसे ऊपर टावर का बुर्ज है, जिस पर चढ़ने से बंबे शहर का उत्तम दृश्य हासिल होता है। टावर के ऊपर एक बड़ी घड़ी लगी है, जिसके पास रात में बिजली की रोशनी होती है।

उसके पास १०४ फीट लंबा, ४४ फीट चौड़ा और ६४ फीट ऊंचा युनिवरसिटी का हल है, जो सन् १८७४ में तय्यार हुआ था।

प्रेसीडेंसियल सेक्रेटरियट-युनिवरसिटी के दक्षिण ४४३ फीट लंबा प्रेसीडेंसियल सेक्रेटरियट है। उसके २ बाजू ८१ फीट लंबे हैं। सीढ़ी घर के ऊपर १७० फीट ऊंचा टावर है। पहली मंजिल में कौंसिल हाल कमेटी के कमरे, गवर्नर और कौंसिल के मेम्बरों के लिए खानगी कमरे और मालगुजारी मुहकमे के अनेक आफिस और दूसरी मंजिल में जुडिसियल और फौजी मुहकमे हैं।

कालेज—प्रेसीडेंसियल सेक्रेटरियट के पूर्व कालिज है।

प्रिंस आफ वेल्स की प्रतिमा-कालेज के पूर्व सेसन-इंस्टीटिउट के सामने महारानी विक्टोरिया के बड़े पुत्र प्रिंसआफवेल्स की धातु की प्रतिमा है, जो सन् १८७९ में करीब १५०००० रुपए के खर्च से तय्यार हुई।

तैरने का हौज—प्रेसीडेंसियल सेक्रेटरियट से पश्चिम-दक्षिण समुद्र के तीर पर तैरने का हौज बना है।

सेंटजान का मेमोरियल चर्च—यह सन् १८५८ में कोलाबा में बना। इसका टावर १९८ फीट ऊंचा है, जो समुद्र में दूर से देख पड़ता है।

अपोलो बन्दर—बम्बे के दक्षिणी भाग के पूर्व किनारे पर अपोलो बन्दर है। यहां समुद्र के किनारे किनारे दूर तक एक बड़ी चौड़ी मजबूत दीवार बनाई गई है, जिसको समुद्र किसी तरह तोड़ नहीं सकता। थोड़ी थोड़ी दूर पर नीचे उतरने को सीढ़ियां बनी हैं। विलायत से आये हुए जहाज यहां खड़े होते हैं और मुसाफिरों को उतार कर डोकयार्ड में चले जाते हैं और विलायत जाने वाले लोग उसी जगह जहाज में बैठते हैं। शाम के वक्त बहुतेरे अंगरेज और हिन्दुस्तानी अमीर लोग बग्गियों पर या पैदल

समुद्र की हवा खाने वहां जाते हैं। वहां नित्य अंगरेजी बाजा बजता है। बन्दरगाह के पास नया यूरोपियन महल्ला है।

गवर्नमेंट डौकयार्ड—बम्बे के बंदरगाहों में छोटे बड़े बहुत डौक हैं; जिनमें रहने से जहाजों को समुद्र के तूफान का डर नहीं रहता। समुद्र के जल में बढ़कर चारो तरफ से दीवार खैंच दी गई है; एक तरफ जहाजों के प्रवेश करने का रास्ता है। जब ज्वार के साथ जहाज भीतर चले जाते हैं तब रास्ते को लोहे के तखते से बन्द कर देते हैं। उनमें गवर्नमेंटडौक, प्रिंसेस डौक और विक्टोरिया डौक प्रधान हैं। अपोलोगेट से उत्तर और कष्टमहौस से दक्षिण समुद्र के किनारे पर लगभग ७०० गज लंबा गवर्नमेंट डौकयार्ड है। उसके पास रात्रि में बिजली की रोशनी होती है। जब इष्टइंडियन कम्पनी ने सन् १७३५ ई० में इसको बैनवाया था तब वह बहुत छोटा था, जो बढ़ते बढ़ते हद से बाहर अवस्था को पहुंच गया है। डौकयार्ड के घेरे के मतअल्लुक करीब २०० एकड़ भूमि है। उनमें ५ ग्रेवीं डौक हैं, जिनमें से ३ मिल करके एक बड़ा बम्बे डौक बन जाता है, जिसकी लंबाई ६४८ फीट, चौड़ाई सिरके पास ५७ फीट और तली में ३४ फीट और खड़ी गहिराई १२ फीट है। दूसरे २ ग्रेवीं डौक एक डौक बनता है, जिसकी लम्बाई ५५० फीट, चौड़ाई सिरके पास ६८ फीट और तली में ४६ फीट और खड़ी गहराई २६ फीट है।

किनारे पर बड़ी बड़ी कलें हैं, जो जहाजों पर से माल को जंजीरों द्वारा उठाकर किनारे पर गिरा देती हैं। डौकों के पास बड़े बड़े मकान बने हैं, जिनमें जहाजों के माल हिफाजत से रक्खे जाते हैं। डौक के पास दिन भर आदमियों की भीड़ रहती है। सुबह और शाम को बहुत लोग हवा खाने के लिये वहां जाते हैं।

टकशाल—किले की तराही के उत्तर बम्बे का टकशाल घर है, जो सन् १८२९ में बना। इमारत सादी है। उसके आगे एक सरोवर है।

एलफिंस्टोन सर्किल—टकशाल से पश्चिम किले की भूमि के प्रायः मध्य भाग में एलफिन्स्टोन सर्किल है। वहां मध्य में वृत्ताकार छोटा बाग सड़क से घेरा हुआ है; सड़क के बाहर गोलाकार मकान बने हैं।

टाउनहाल-एलफिस्टोन सार्किल के पूर्व भाग में बंबे का टाउनहाल है, जो सन् १८३५ में ६०००० पाऊंड के खर्च से तैयार हुआ। इसमें बंबे के गवर्नर और दूसरे प्रसिद्ध लोगों की पत्थर की प्रतिमा बनी हैं। इमारत के आगे स्तंभों का कतार है। अगवास २६० फीट लम्बा है। पहली मंजिल में मेडिकल बोर्ड के आफिस और मिलीटरी आडिटर जनरल का आफिस है। ऊपर की मंजिल का कमरा १०० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा है, जिसमें कमीटी होती है और समय समय पर अंगरेज लोग नाचते हैं।

किले की तबाही-टकशाल और कष्टमहौस के बीच में बन्दरगाह की तरफ अब केवल किले की छोटी दीवार है। वहां एक झंडा है, जिससे जहाजों को इसारा दिया जाता है और एक क्रय टावर भी है। दक्षिण तोपखाना है। पश्चिम किले की लम्बी चौड़ी भूमि पर शहर बस गया है। पहले वहां सेंट डेविड किला था, जो छोड़ दिया गया। अंगरेजी सरकार ने बंबे की रक्षा के लिये समुद्र तीर के छोटे टापुओं में बैटरी (मोर्चा) बनाई है। प्रत्येक बैटरी पर २ या ३ तोपें रखी हुई हैं।

जंगी जहाज-समुद्र के अपोलो बंदर के सन्मुख अबिसिनिया और मेगडेला नामक २ जंगी जहाज रहते हैं। कप्तान से आज्ञा लेकर उनको देखनें के लिये बोट द्वारा जाना होता है। वे जहाज जल के ऊपर के २ हाथ रहते हैं। उसके पहले तह में युद्ध के हथियार और सिपाहियों के रहने के स्थान; दूसरे तह में अस्पताल और जेलखाना और तीसरे तह में खाने की सामग्री और पीने का जल रहता है। आगे और पीछे के हिस्सों में २ किले हैं। प्रत्येक किले में २ बड़ी तोपें रहती हैं। जहाजों में एक एक कल है; जब शत्रुओं के अधिक गोले बर्षने लगते हैं, तब उससे जहाज को डेक तक जल में डुबा दिया जाता है। एक तल से दूसरे तल के आदमी से बातचीत करने के लिये तार लगा है।

प्रिंसेस डौक-मसजिद के रेलवे स्टेशन से पूर्व ४८९ गज लंबा और ३३३ गज चौड़ा प्रिंसेस डौक है, जिसका पानी ३० एकड़ भूमि पर फैला

हुआ है। महारानी विक्टोरिया के बड़े पुत्र, हम लोगों के भावी बादशाह प्रिंस आफ वेल्स ने सन् १८७५ में उसकी नेव दी थी। सन् १८८० में ६८ लाख रुपये के खर्च से वह तैयार हुआ।

विक्टोरिया डौक—प्रिंसेसडौक के दक्षिण ४२४ गज लंबा और ३३३ गज चौड़ा २५ एकड़ भूमि पर विक्टोरिया डौक है। प्रिंसेसडौक से विक्टोरिया डौक में जहाज जाने के लिये दोनों के बीच में ६४ फीट चौड़ा जहाजी मार्ग बना है।

लाइटहाउस—(रोशनीघर) बम्बे में ३ लाइट हाउस हैं,—प्रंग्स, सँक राक और डालफिन लाइटहाउस। उनमें प्रंग्स लाइटहाउस सबसे ऊंचा और दर्शनीय है। उसको देखने के लिये पोर्टकमीश्नर से पास लेना चाहिये। वह बम्बे से दस बारह मील दक्षिण पश्चिम एक जंजीरे पर बना है। अपोलो-बन्दर से नाव पर चढ़कर वहां जाना होता है। उस लाइट हाउस के बनाने में ७५०००० रुपया खर्च पड़े हैं। वह १५० फीट ऊंचा तीन तला है। उसके नीचे के तह की दीवार की मुटाई १७ फीट है। उसके ऊपर जहां रात में रोशनी होती है, और दिन में झंडा खड़ा किया जाता है, उसकी रोशनी पढ़ने को सीढ़ियां बनी हैं। १८ मील तक देख पड़ती है। जहाज वाले उस रोशनी या झंडे से जहाजों के लेआने या रोक रखने के लिये इशारा समझ लेते हैं।

बम्बे का व्यापार और दस्तकारी—रुई का बहुत बड़ा बाजार कोलाबा में है। वहांसे प्रति साल बहुतसी रुई दूसरे मुल्कों में भेजी जाती है और बहुतसी बम्बे के लगभग ७० कल कारखानों में खर्च होती है। लग भग ३० हजार आदमी रुई का काम करते हैं।

परेल में कपड़ों के बहुत मिल अर्थात् कल कारखाने हैं। वहां बड़े बड़े मकानों में कलद्वारा एक जगह कपास से रुई निकाली, दूसरी जगह तूमी और तीसरी जगह धुनी जाती है, चौथी जगह उसकी पिउनी, पांचवी जगह पतली पिउनी और छठवीं जगह उससे भी पतली पिउनी होती है।

इसी क्रम से सूता तय्यार होकर एक कल में करची बनती है। किसी जगह करचियों से नारा बनते हैं, किसी जगह नाराओं से कपड़े की तानी, किसी जगह भरनी होती है; इस तरह से कपड़े तय्यार होते हैं। एक जगह कलही द्वारा कपड़ों की तह लगती है। इसी तरह से रेशम के मिल में रेशमी कपड़े तय्यार होते हैं।

बम्बे में करीब ३००० जवाहिरी हैं, जिनका काम सर्वदा जारी रहता है। यहां की प्रसिद्ध दस्तकारियों में से पीतल और ताम्बा के बर्तन की दस्तकारी है। मुम्बा देवी के तालाब के सामने ताम्बा का बाजार है। बम्बे की काली लकड़ी की नकासी प्रसिद्ध है। चन्दन की लकड़ी और दूसरी लकड़ियों में खाशकर नकाशी होती है। बंबई का आम बहुत प्रसिद्ध है; वहां से दूर दूर तक रेलगाड़ी में आम भेजे जाते हैं। बंबई में सोना और चांदी के तार का लैस बनता है। कराचोबी का बेश कीमत काम होता है। कुम्हार के काम सिखने का स्कूल है। २८, ५६ और ८० रुपये भरी के सेर चलते हैं। बम्बे शहर में कारबार की २१९ कम्पनी हैं, जिनकी पूजी १३ कोटि रुपये से अधिक है।

देशी सौदागरों में पारसी प्रधान हैं; उनके बाद मारवाड़ी और गुजराती हैं। बंबई में अरब, पारस, अफगानिस्तान, तुरकिस्तान, अफ्रिकान, इत्यादि के मुसलमान सौदागर रहते हैं, जो खास करके पारस की खाड़ी, जंजीबार और अफ्रिका के पूर्व किनारे के साथ तिजारत करते हैं। पारसी और यहूदी यूरप के साथ तिजारत करते हैं।

बंबई शहर का इतिहास–मुंबा शब्द का अपभ्रंश बंबे तथा बंबई है। महाराष्ट्र भाषा में महाअंबा को मुंबा कहते हैं। महाअंबा शिवरानी देवीजी का नाम है। कुछ लोगों का मत है कि जब पोर्चुगल वालों ने बंबई में अपना वाणिज्य कायम किया, तब उन्हों ने उसका नाम बनबे अर्थात् उत्तम बंदर रक्खा। उसके पीछे लोग बन्बे को बंबे कहने लगे, जिसको मुंबई तथा बंबई भी कहते हैं।

सन् १५३२ में पोर्चुगल वालों ने बंबई टापू पर अपना अधिकार किया।

सन् १६६१ में पोर्चुगल के बादशाह ने लंडन के शाहजादे दूसरा चार्लस से अपनी लड़की कैथरिन का व्याह किया और दूसरी वस्तुओं के साथ बंबई टापू को भी दहेज में दिया; किंतु पोर्चुगीजों ने सन् १६६५ तक बंबई अंगरेजों के हवाले नहीं किया। सन् १६६८ में चार्लस ने इष्टइंडियन कंपनी को १० पांउड सालाना खिराज पर बंबई को ठीका देदिया। उस समय बंबई शहर में केवल लगभग १०००० मनुष्य बसते थे; किंतु उसकी उन्नति बड़ी तेजी से होने लगी। कंपनी ने किलेबंदी को दृढ़ किया, और यूरोपियन लोगों को बसाया। दस्तकारी और तिजारत की उन्नति होने लगी।

सन् १६७३ में बंबई के किले में १२० तोपें और टापू में पोर्चुगीजों की कई एक गिरजा थीं। उस समय बंबई की मनुष्य-संख्या लगभग ६०००० होगई थी और कंपनी की प्रधान कोठी सूरत शहर में थी; किंतु सन् १६८७ में कम्पनी का सदर स्थान बम्बई हुई। सन् १७०८ में बंबई एक स्वाधीन हाता बनाई गई। सन् १७७३ में यह कलकत्ता के गवर्नर जनरल के आधीन बनी। सन् १७८० में बंबई शहर की मनुष्य संख्या लगभग ६००००० होगई। सन् १८१८ में पूना के बाजीराव पेशवा के परास्त होने के पश्चात् बंबई पश्चिमी भारत में बहुत प्रसिद्ध और भारतवर्ष के एक बड़ा देश की राजधानी हुई।

बंबई हाता—यह भारतवर्ष के पश्चिम भाग में एक हाता है। इसके पश्चिमोत्तर और उत्तर बलोचिस्तान, और खिलात; उत्तर और पूर्वोत्तर पंजाब देश और राजपूताने के देशी राज्य, पूर्व मध्यदेश के देशी राज्य; मध्यदेश, बरार और हैदराबाद का राज्य; दक्षिण मैसूर का राज्य और मदरास हाता और पश्चिम अरब का समुद्र है। इसकी चौड़ाई बहुत कम है, किन्तु लंबाई उत्तर से दक्षिण तक १००० मील से अधिक होगी। बंबई हाते के उत्तर भाग में सिंध, मध्य में गुजरात और दक्षिण भाग में महाराष्ट्र देश है। गुजरात के पश्चिमी भाग को काठियावार प्रायः द्वीप कहते हैं। बंबई हाते के गवर्नर लगभग ८ मास बम्बई शहर में और जुलाई से लगभग ४ मास तक पूना में रहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सिंध छोड़ करके बंबई हाते का क्षेत्रफल ७७२७५ वर्गमील और सिंध देश का क्षेत्रफल ४७७८९ वर्गमील और दोनों मिल कर अंगरेजी राज्य का क्षेत्रफल १२५०६४ वर्गमील; और बड़ोदा को छोड़ करके बंबई हाते के देशी राज्यों का क्षेत्रफल ६९०४५ वर्गमील तथा बड़ोदा का क्षेत्रफल ८२२६ वर्गमील और दोनों मिल कर देशी राज्यों का क्षेत्रफल ७७२७१ वर्गमील और अंगरेजी राज्य तथा देशी राज्यों के साथ बंबई हाते का क्षेत्रफल २०२३३५ वर्गमील था।

बंबई हाते में पहाड़ बहुत हैं;—हाते के पश्चिमोत्तर सिंधनदी के दहिने किनारे पर सुलेमान पर्वत का भाग हाला और खरतरी पहाड़ी; सिंध प्रदेश में बालूदार नीची पहाड़ियों के सिलसिले; कच्छ और काठियावार में अर्वली पहाड़ के भाग की बहुत सी छोटी पहाड़ियां; उसमें दक्षिण-पूर्व गुजरात और मध्य भारत के बीच में फैला हुआ पहाड़ का जंजीरा; असीरगढ़ के किले के पड़ोस से गुजरात तक सतपुड़ा पहाड़ का सिलसिला; खानदेश और हैदराबाद के राज्य की सीमा के पास अजंता पहाड़ियां और पश्चिमीघाट पर सह्याद्री पहाड़ है।

सिंधदेश में सिंधनदी, गुजरात में साबरमती और माही, जो माहीकंठा पहाड़ियों से निकल कर दक्षिण ओर बहती हुई कांबे की खाड़ी में गिरती है; और माही से दक्षिण नर्मदा, तापती, सरावती, गोदावरी, कृष्णा और भीमा इत्यादि नदियां बहती हैं। बंबई हाते में कच्छ की खाड़ी और कांबे की खाड़ी, कच्छ कारन, सिंधनदी के दहिने किनारे पर सेहवन कसबे के पास मच्छर झील और बंबई शहर के पास बनाई हुई बिहार झील तथा तुलसी झील है।

बंबई हाते की प्रधान फसिल अन्न और कपास है। समुद्र के पास के जिलों में नारियल के फल बहुत होते हैं, काली मिट्टी की भूमि में कपास और भूरी मिट्टी में अन्न आदि फसिल होती है। गुजरात और उसके दक्षिण के देश में कपास और ज्वार बाजड़ा बहुत उत्पन्न होता है। एकही समय में किसी खेत में ज्वार बोआ जाता है और किसी में काटा जाता है। कपास की खलिहान लगती है। पश्चिमी घाट पर अधिक वर्षा होने के कारण

गर्मी अधिक पड़ती है, किंतु सिंध प्रदेश में पानी कम बर्षता है और गर्मी बहुत अधिक होती है। गुजरात के बैल तथा गाय प्रसिद्ध हैं। वहां के बैल और गाय बहुत बड़ी बड़ी तथा सुंदर होती हैं। महाराष्ट्र देश में शोलापुर के आसपास बहुत बड़ी सींह वाली भैंस देखने में आई, जिनमें से किसी किसी की सींह ३ फीट से अधिक लंबी थीं। बंबई हाते के सिंध प्रदेश और राजपुताने में बहुत से ऊंट लाये जाते हैं और सवारी के काम में आते हैं।

भारतवर्ष के अन्य प्रदेशों के अपेक्षा बंबई हाते में कल कारखाने बहुत अधिक हैं। कपड़े आदि अनेक भांति की वस्तु कल द्वारा तैयार करके वहांसे भारतवर्ष के शहरों तथा चीन आदि परदेशों में भेजी जाती हैं। इस समय बंबई हाते के लगभग ९० कारखानों में लगभग ७०००० आदमी काम करते हैं।

महाराष्ट्र लोगों में अधिक लोग शैव और गुजरातियों में अधिक लोग वैष्णव मत के होते हैं। महाराष्ट्री और गुजराती लोगों में पुरुष धोती पहनते हैं और सिर पर बहुत बड़ी पगड़ी बांधते हैं। महाराष्ट्र लोगों की स्त्रियां कच्छा देकर कमर में रंगीन कपड़ा और देह में चोली पहनती हैं तथा सिर उघार रखती हैं और गुजराती स्त्रिया घांघरी पहन कर ऊपर से सारी ओढ़ती हैं। महाराष्ट्र और गुजराती हिंदू प्रायः सब लोग अपने वस्त्र आपही धोते हैं। शहरों में नदियों के किनारों पर कपड़े धोने वालों का दल देखने में आता है। वे लोग भींगा हुआ वस्त्र छुआ जाने पर उसको अपवित्र समझते हैं। बंबई हाते में स्त्री की स्वाधीनता अति प्रबल है; उनमें महाराष्ट्री और पारसियो की स्त्रियां प्रधान हैं। ब्याह की बरात के साथ पुत्री वाले के घर स्त्रियां भी जाती हैं। स्त्रियों में सोने के भूषण पहनने की अधिक चाल है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय बंबई हाते की जातियों में से नीचे लिखी हुई जातियो के लोग इस भांति पढ़े हुए थे, प्रति हजार में ७९१ प्रभु और १६५ प्रभु जाति की स्त्रियां, ६९७ बनिया श्रीमाली और १५ उस जाति की स्त्रियां, ६८७ कायस्थ और २१२ उनकी स्त्रियां; ६४८ प्रभाशास्त्री और २६८ उनकी स्त्रियां; ६४५ ब्राह्मण और ३३ ब्राह्मणी; और ५१८ साधारण बनिया और १८ उनकी स्त्रियां।

बंबई हाते के (सिंध को छोड़कर) महाराष्ट्री, गुजराती, पारसी आदि सब लोग अपने नाम के पीछे अपने पिता का नाम लिखते हैं तथा उच्चारण करते है । प्रत्येक आदमी के नाम के बाद एक अन्य नाम सुना जाता है, वह पीछे वाला नाम उसके पिता का रहता है ।

जैसे उत्तरी भारत में विक्रमीय संवत लिखने की बहुत चाल है, वैसे गुजरात और महाराष्ट्र तथा उसके पड़ोस के देशों के सर्व साधारण लोगों में शालिवाहन शाका का प्रचार है । वे लोग चैत सुदी एकम से चैत मास का आरंभ मानते हैं, इस कारण से फागुन की महा शिवरात्री वे लोग माघ की शिवरात्री कहते हैं; क्योंकि उनका फागुन फागुन सुदी एकम से आरंभ होता है।

विक्रमीय संवत का प्रारंभ उत्तरीय भारत में चैत सुदी एकम से होता है; किन्तु पश्चिमी भारत के लोग उसका आरंभ कातिक सुदी एकम से मानते हैं, इस लिये पश्चिमी विक्रमी संवत उत्तरी विक्रमी संवत से ७ मास पीछे आरंभ होता है । जान पड़ता है कि विक्रमी संवत का आरंभ कातिक सुदी १ से और शक संवत का चैत सुदी १ से था, किंतु उत्तरी भारत वालों ने पीछे विक्रमी संवत का आरंभ भी शक संवत के साथ चैत सुदी १ को मान लिया।

बंबई आदि पश्चिमी भारत में बड़ी धूमधाम से होली होती है। फाल्गुन की पूर्णिमा को प्रायः प्रति महल्लो अथवा टोलों में लोग पवित्र लकड़ियों या गोइठों से होलिका दहन करते हैं। चैत की प्रतिपदा के दिन सब लोग इकट्ठे होकर परस्पर डंडे का खेल खेलते हैं; अर्थात् अपने दोनों हाथों में एक एक डंडा लेकर एक आदमी दूसरे तथा तीसरे आदमी के डंडों में और दूसरा तथा तीसरा आदमी उसके डंडो में मारता है। चैतवदी पंचमी को फाग उत्सव समाप्त होता है। महाराष्ट्र लोग प्रति वर्ष भादों में बड़े धूम धाम से गणपति उत्सव करते हैं (पूना के वृत्तांत में देखिए)।

बंबई हाते के अंगरेजी राज्य में बंबई शहर को छोड़ करके ४ विभाग में २३ जिले हैं,—दक्षिणी विभाग में शोलापुर, सतारा, बेलगांव, धारवाड़, बीजापुर, उत्तरी किनारा और रत्नागिरि नामक ७ जिले; मध्य विभाग में

खानदेश, नासिक, अहमदनगर और पूना नामक ४ जिले, उत्तरी विभाग में अहमदाबाद, खेड़ा, पंचमहाल, भड़ौंच, सूरत, थाना, और कुलावा ये ७ जिले, जिनमें से अहमदाबाद, खेड़ा, पंचमहाल, भड़ौच और सूरत ये ५ जिले गुजरात में हैं, और सिंध देश में करांची, हैदराबाद, "थर और परखर," सिकारपुर और अपरसिंध फन्टियर ये ५ जिले।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सिंध को छोड़ करके बंबई हाते के अंगरेजी राज्य में १५९८५२७० मनुष्य थे, अर्थात् ८१९४४७७ पुरुष और ७७९०७९३ स्त्रियां। इनमें १४०८९६७४ हिंदू, १२८६७६३ मुसलमान, २३९९११ जैन, १५१००१ कृस्तान, १३५६८३ जंगली जातियां इत्यादि, ७२४११ पारसी, ९४२९ यहूदी, ६७१ बौद्ध, ९८ सिक्ख और २७ अन्य थे। इनमें सैकड़े पीछे ५३½ महाराष्ट्री भाषा वाले, २०½ गुजराती भाषा वाले, १५¼ कनड़ी भाषा वाले, ५½ उर्दू भाषा वाले और ४¼ अन्य भाषा बोलने वाले मनुष्य थे।

बंबई हाते के सिंध प्रदेश में २८७१७७४ मनुष्य थे; अर्थात् १५६८५९० पुरुष और १३०३१८४ स्त्रियां। इनमें २२१५१४७ मुसलमान, ५६७५३९, हिंदू, ७७९३५ जंगली जातियां, ७७६४ कृस्तान, १५३४ पारसी, ९२३ जैन, ७२० सिक्ख, २१० यहूदी, और २ बौद्ध थे, जिनमें सैकड़े पीछे ८३ सिंधी भाषा वाले, ६¼ बलोच भाषा वाले, ४½ माड़वारी भाषा वाले और ६ अन्य भाषा बोलने वाले मनुष्य थे।

बंबई हाते के अङ्गरेजी राज्य के शहर और कसबे, जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय १०००० से अधिक मनुष्य थे,—

नं०	नाम शहर	नाम जिला	जन संख्या
१	बंबई	बंबई	८२१७६४
२	पूना	पूना	१६१३९०
३	अहमदाबाद	अहमदाबाद	१४८४१२
४	सूरत	सूरत	१०९२२९
५	करांची	करांची	१०५१९९
६	हैदराबाद	हैदराबाद	५८०४८
७	शोलापुर	शोलापुर	६१९१५
८	हुबली	धारवाड़	५२५९५
९	अदन	अदन	४४०७९

नं०	नाम शहर	नाम जिला	जन-संख्या
१०	शिकारपुर	शिकारपुर	४२००४
११	अहमदनगर	अहमद-नगर	४१६८९
१२	बेलगांव	बेलगांव	४०७३७
१३	भड़ौंच	भड़ौंच	४०१६८
१४	धारवाड़	धारवाड़	३२८४१
१५	सतारा	सतारा	२९६०१
१६	सक्कर	शिकारपुर	२९३०२
१७	नडियाद	खेड़ा	२९०५८
१८	नासिक	नासिक	२४४२९
१९	गदग	धारवाड	२३८९९
२०	वीरमगांव	अहमदा-बाद	२३२०९
२१	धूलिया	खानदेश	२१८८०
२२	बारसी	शोलापुर	२०५६९
२३	पढरपुर	शोलापुर	१९९५४
२४	मालेगांव	नासिक	१९२६१
२५	योला	नासिक	१८८६१
२६	बंदरा	थाना	१८३१७
२७	बगलकोट	बीजापुर	१८०३४
२८	थाना	थाना	१७४५५
२९	मालवन	रत्नागिरि	१७०५३
३०	बीजापुर	बीजापुर	१६७५९
३१	धोलका	अहमदा-बाद	१६४९४
३२	चोपड़ा	खानदेश	१५६५५
३३	आणंद	खेड़ा	१५६३८
३४	कलाडगी	बीजापुर	१५४८१
३५	धरनगांव	खानदेश	१५०७३
३६	कपड़वंज	खेड़ा	१४८०५
३७	बलसर	सूरत	१४७७९
३८	गोधड़ा	पंचमहाल	१४६९१
३९	जलगांव	खानदेश	१४६७२
४०	कारवार	उत्तरी किनारा	१४५७९
४१	परोला	खानदेश	१४४७८
४२	भिवाडी	थाना	१४३८७
४३	रत्नागिरि	रत्नागिरि	१४३०३
४४	रनबेनूर	धारवाड़	१३७६१
४५	भुसावल	खानदेश	१३१६९
४६	दोहद	पंचमहाल	१२९३५
४७	कल्याण	थाना	१२६०८
४८	रांडोल	खानदेश	१२५५७
४९	वाई	सतारा	१२४३८
५०	जकोबाबाद	अपरसिंध	१२३९६
५१	बोरसाद	खेड़ा	१२१५९
५२	गोकाक	बेलगांव	१२१०६
५३	करदा	सतारा	१२०८६
५४	जंबुसर	भड़ौंच	१२०७२
५५	लरखना	शिकारपुर	१२०१९
५६	जुनीर	पूना	११९०५
५७	निपानी	बेलगांव	११७२८

नं०	नाम शहर	नाम जिला	जन-संख्या	नं०	नाम शहर	नाम जिला	जन-संख्या
५८	चिपलून	रत्नागिरि	११७१७	६९	यावल	खानदेश	१०८००
५९	कुरला	थाना	११-६९	७०	कुमटा	उत्तरी कनारा	१०७१४
६०	नसीराबाद	खानदेश	११४६२	७१	अंकलेश्वर	भड़ौंच	१०६९२
६१	ऊरन	कुलावा	११४२०	७२	इसलामपुर	सतारा	१०६५७
६२	भसता	सतारा	११४०३	७३	पनवेल	कुलावा	१०४२०
६३	संगमनेर	अहमदनगर	११३६५	७४	अथनी	बेलगांव	१०५१६
६४	बसीन	थाना	११२९१	७५	शेरपुर	खानदेश	१०१४२
६५	तासगांव	सतारा	११२६१	७६	विगुरला	रत्नागिरि	१०१३४
६६	इलकाल	बीजापुर	११२०६	७७	खेड़ा	खेड़ा	१०१०१
६७	किर्की	पूना	१०९५१	७८	धोलेरा	अहमदाबाद	१००८८
६८	नांदेर	सूरत	१०९२६	७९	शिनेर	नासिक	१००१२

बंबई हाते में बहुत देशी राज्य तथा जागीर हैं, किंतु उनमें से बहुत से अत्यन्त छोटे हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय बड़ोदा राज्य को छोड़ करके बंबई हाते के देशी राज्यों में ८०५९२९८ मनुष्य थे अर्थात् ४१२०१२५ पुरुष और ३९३९१७३ स्त्रियां। इनमें ६७८१०६५ हिंदू, ८५३८९२ मुसलमान, ३१४७७३ जैन, ९७६४१ जंगली जातियां, ८२३९ क्रुस्तान, २५११ पारसी, १०८२ यहूदी और ९५ सिक्ख थे; जिनमें सैकड़े पीछे ६०½ गुजराती भाषा वाले, २०½ महाराष्ट्री भाषा वाले, ७½ कनडी भाषा वाले, ४½ कच्छी भाषा वाले, ३ उर्दू वाले और २ अन्य भाषा बोलने वाले मनुष्य थे।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के अनुसार बंबई हाते के गवर्नमेण्ट के आधीन के देशी राज्यों का विवरण —

नंबर	देशी राज्य	क्षेत्रफल वर्गमील	कसबा और गांव	मकान	मनुष्य-संख्या।
१	काठियावाड़ एजेंसी ...	२०५५१	४१६८	४७१४३५	२३४३८११
२	कोल्हापुर	२८१६	१०६१	१२११४८	८००१८१
३	पालनपुर एजेंसी ...	८०००	११०८	१२५२३७	५७६४७८
४	रेवाकांठा एजेंसी ...	४७१२	११०४	१०१७३०	५४३४५२
५	दक्षिणी मरहट्टा जागीर	२७३४	६०२	९०७११	५२३७५३
६	माहीकांठा एजेंसी ...	११०४१	१८१६	११७११२	५१७४८५
७	कच्छ	६५००	८१७	१०२००७	५१२०८४
८	सतारा की जागीरें ...	३३१४	७३६	४५६४६	३१८६८७
९	सावंत वाडी	९००	२२६	३०४४४	१७४४३३
१०	सूरत एजेंसी	१२२०	३७१	२७८१४	१५११३२
११	खैरपुर (सिंध)	६१०९	०	२५७२०	१२११५३
१२	कांबे	३५०	८५	२१७०२	८६०७४
१३	जंजीरा	३२५	२२६	१४४२१	७६३६१
१४	खानदेश एजेंसी ...	३८४०	४८६	११३१३	६०२७०
१५	अक्कलकोट	४९८	१०५	८४१३	५८०४०
१६	जवहर	५३५	११८	८३०७	४८५५६
१७	सवानूर	७०	२४	२६४६	१४७६३
१८	वाड़ीकोट	१४३	५२	१३१३	६४४०
	जोड़	७३७५४	१३१०७	१३०१[illegible]७	६[illegible]४१२४१

बंबई हाते के बड़े देशी राज्यों का लिस्ट;—

नंबर	देशी-राज्य	देश	क्षेत्रफल वर्गमील	मनुष्य-संख्या सन् १८८१	मालगुजारी
१	भावनगर ...	काठियावाड	२८६०	४००३२३	३४०००००
२	कच्छ	कच्छ	६५००	५१२०८४	३००००००
३	नवानगर ...	काठियावाड़	३७११	३१६१४७	२४०००००
४	कोल्हापुर ...	महाराष्ट्र ...	२८१६	८००१८१	२३०००००
५	जूनागढ़ ...	काठियावाड	३२७१	३८७४११	२१०००००
६	गोंडल... ...	तथा	१०२४	१३५६०४	१२०००००
७	मोरवी... ...	तथा	८२१	८११६४	१००००००
८	सगली	दक्षिणी महाराष्ट्र	८१६	११६८३२	१८१०००
९	ध्रांगड्रा ...	काठियावाड	११५६	११६८६	७५००००
१०	कांब	गुजरात ...	३५०	८६०७४	६२५०००
११	राधनपुर ...	पालनपुर एजेंसी	११५०	५८१२१	६०००००
१२	खैरपुर... ...	सिंध	६१०१	१२११५३	५५००००
१३	पोरबंदर ...	काठियावाड	६३६	७१०७२	५५००००
१४	पालनपुर ..	पालनपुर एजेंसी	३१५०	२३६४८१	५०००००
१५	बाढ़वान ...	काठियावाड	२३६	४२५००	४५००००
१६	सावंतवाड़ी	महाराष्ट्र ..	१००	१७४४३३	३२५०००
१७	मीराज... ...	दक्षिणी महाराष्ट्र	३४०	६१६७२	३०००००
१८	लिंबडी ...	काठियावाड़	३४४	४३०६३	२६४०००
१९	राजकोट ...	तथा.... ...	२८३	४६५४०	२०५०००
२०	बड़गांव ...	दक्षिण महाराष्ट्र ...	२०८	३०५४१	१६००००

बंबई हाते के देशी राज्यों के शहर और कसबे, जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १०००० से अधिक मनुष्य थे;—

नं०	नाम कसबा	नाम राज्य	नाम एजेंसी या देश	मनुष्य-संख्या
१	भावनगर	भावनगर	काठियावाड़	५७६५३
२	नवानगर	नवानगर	काठियावाड़	४८५३०
३	कोल्हापुर	कोल्हापुर	महाराष्ट्र	४५८१५
४	मांडवी	कच्छ	कच्छ	३८१५५
५	जूनागढ़	जूनागढ़	काठियावाड़	३१६४०
६	कांबे	कांबे	गुजरात	३१३९०
७	राजकोट	राजकोट	काठियावाड़	२९२४७
८	मीराज	मीराज	दक्षिणी मरहटा-जागीर	२६०६०
९	भुज	कच्छ	कच्छ	२५४२१
१०	धाढ़वान	धाढ़वान	काठियावाड़	२४६०४
११	पालनपुर	पालनपुर	पालनपुर	२१०९२
१२	धोराजी	धोराजी	काठियावाड़	२०४०६
१३	पोरबंदर	पोरबंदर	काठियावाड़	१८८०५
१४	महुआ	महुआ	काठियावाड़	१६७०७
१५	मोरवी	मोरवी	काठियावाड़	१६३२५
१६	गोंडल	गोंडल	काठियावाड़	१५३४३
१७	विरावल	जूनागढ़	काठियावाड़	१५३३९
१८	ध्रांगढ़ा	ध्रांगढ़ा	काठियावाड़	१५२०९
१९	संगली	संगली	दक्षिणी मरहटा-जागीर	१४७९८
२०	अंजर	कच्छ	कच्छ	१४४३३
२१	राधनपुर	राधनपुर	पालनपुर	१४१७५

नं०	नाम कसबा	नाम राज्य	नाम एजेंसी या देश	मनुष्य-संख्या
२२	जैतपुर	जैतपुर	काठियावाड़	१३६४६
२३	लिंबड़ी	लिंबड़ी	काठियावाड़	१३४९७
२४	मंगरोल	मंगरोल	काठियावाड़	१३००९
२५	जमखण्डी	जमखंडी	दक्षिणी मरहटा-जागीर	१२९ ४
२६	मंगलवेधा	मंगलवेधा	तथा	१२२७०
२७	शाहपुर	शाहपुर	तथा	११९६१
२८	लक्ष्मणश्वर	लक्ष्मणश्वर	तथा	११८४२
२९	ईचलकरंजी	कोल्हापुर	महाराष्ट्र	११२००
३०	नादोद	नादोद	रेवाकंठा	१०८१९
३१	फलताना	फलताना	सतारा की जागीर	१०६६१
३२	पालीटाणा	पालीटाणा	काठियावाड़	१०४४२
३३	माडवा	कच्छ	कच्छ	१०४३३
३४	लुनवाडा	लुनवाडा	रेवाकंठा	१०१०१
३५	सिहोर	सिहोर	काठियावाड़	१०००९

वंबई हाते का इतिहास-प्राचीन समय में वर्तमान वंबई हाता बहुत से स्वाधीन राजाओं के अधिकार में बटा हुआ था। अजंता आदि की गुफाओं और गिरनार आदि के चट्टानी लेखों से विदित होता है कि सन् ईस्वी के आरंभ के पहिले तथा आरंभ के समय वंबई हाते में बौद्ध तथा जैन लोगों के मत की प्रबलता थी। अब तक वंबई हाते में जैन लोग बहुत हैं। महाभारत तथा पुराणों से विदित होता है कि अति पूर्वकाल में भारकच्छ, कच्छिक, आनर्त, सिन्धु, सौवीर, महाराष्ट्र; गुजराष्ट्र या गुर्जर, जिसको अब गुजरात कहते हैं, सौराष्ट्र, जिसको काठियावाड़ कहते हैं, इत्यादि देशों के नाम से वर्तमान वंबई हाता बहुत से हिंदू राजाओं के राज्य में विभक्त था। पुराने सिक्कों, शिला लेखों और तांबे के दान पत्रों के लेखों से, जो कई एक स्थानों में बहुत मिले हैं, ज्ञात हुआ है कि सन ईस्वी के आरंभ से लगभग १००० वर्ष

के भीतर इन देशों में राजपूतों ने राज्य किया था। उनमें अधिक प्रतापी वल्लभी और चालुक्य वंश के राजा थे।

मुसलमानों ने पहिले सिंध में अपना अधिकार किया। सन् १०२४ में गजनी के महमूद ने गुजरात पर चढ़ाई करके सोमनाथ के मंदिर का धन लूटा। उस समय गुजरात क हिंदू राजा, जिनकी राजधानी अनहिलवाड़ा, जिसको अब पाटन कहते हैं, था, मुसलमानों के आक्रमण से बंच गए। सन् १२९७ में दिल्ली के अलाउद्दीन के सेनापति अलफखां ने उनके राज्य का विनाश किया। उस समय से सन् १४०३ तक दिल्ली के नियत किए हुए डिपोटी लोग गुजरात पर हूकूमत करते रहे। उनमें से जाफरखां ने एक स्वाधीन राज्य कायम किया। सन् १४१३ में पहिला सुल्तान अहमद ने असावल के पास अहमदाबाद शहर को बसा कर उसको अपनी राजधानी बनाया। अहमद के वंशधर बड़े प्रतापी और विभवशाली हुए थे। सन् १५७३ में दिल्ली के अकबर ने स्वयं सेनापति बन कर गुजरात को जीता। १७ वीं शदी में महाराष्ट्रों के प्रभाव बढ़ने पर भी उस देश के दक्षिण भाग में मुसलमानों का अधिकार कायम था; किंतु सन् १७०७ में औरंगजब के मरने के पश्चात् उनके संपूर्ण देशकाऊ अधिकार जाता रहा। सन् १७५७ में माहाराष्ट्रों ने अहमदाबाद के साथ गुजरात को लेलिया।

सन् १२९४—१२९५ में अलाऊद्दीन ने डेकान अर्थात् दक्षिण के कई शहरों को जीता। १४ वीं शदी में महम्मद तुगलक के राज्य के समय बहमनी खांदान के अहमदशाह ने तुगलक से बागी होकर अपना एक स्वाधीन राज्य कायम किया। उसकी राजधानी पहिले गुलबर्गा और पीछे बीदर था। लगभग सन् १४९० में बहमनी बादशाहत टूट गई और बीजापुर तथा अहमदनगर का राज्य कायम हुआ। १६ वीं शदी के अंत के भाग में दिल्ली के बादशाह ने इन स्वाधीन राज्यों का दबाना आरंभ किया। सन् १६३७ में अहमदनगर का राज्य दिल्ली और बीजापुर के बादशाहों में बांट लिया गया। सन् १६८४ में दिल्ली के औरंगजेब ने बीजापुर को ले लिया। महाराष्ट्र प्रधान शिवाजी, जिनका जन्म सन् १६२७ में था, औरंगजेब से लड़ते हुए दक्षिण में

स्वाधीन बनकर सन् १६७४ में रायगढ़ में बड़े शान से राजसिंहासन पर बैठे। सन् १६८० में शिवाजी का देहांत होगया। १८ वीं शदी में पूना के पेशवा और बड़ोदा के गायकवाड़ बंबई हाते में अधिक प्रसिद्ध हुए, उन्होंने उस देश के बड़े हिस्से से 'कर' लिया।

यूरोपियन लोगों में पोर्चुगाल वाले पहिले पहिल हिंदुस्तान में आए। सन् १४९८ में पोर्चुगाल का "वास्कोडीगामा" पश्चिमी किनारे के कलीकोट में उतरा। उसके ८ वर्ष बाद बड़ा अलबुकर्क ने गोआ को जीता। सन् १५३२ में पोर्चुगाल वालो ने बंबई टापू को अपने अधिकार में किया। सन् १६०८ में अङ्गरेजों का जहाज सूरत शहर में पहुंचा। उस समय सूरत हिंदुस्तान की तिजारत का प्रधान स्थान थी। सन् १६१३ में अङ्गरेजों ने दिल्ली के बादशाह जहांगीर से इजाजत लेकर सूरत में अपनी कोठी कायम की। सन् १६१८ में हालेंड वालों ने भी वैसीही इजाजत ली। सन् १६६१ में पोर्चुगाल के बादशाह ने लंदन के बादशाह को दहेज में बंबई का टापू देदिया (बबई शहर के इतिहास में देखिए)। सन् १७०८ में इष्टइण्डियन कंपनी ने बंबई हाता नियत किया। सन् १७७३ में बंबई हाता कलकत्ते के गवर्नर जनरल के आधीन बनाया गया।

सन् १७५६ में बंबई के गवर्नर ने पेशवा के साथ मिल कर सुवर्णदुर्ग के बंदरगाह को छीन लिया और अंगरेजों ने विजयदुर्ग को जीता जिससे समुद्र के डांकू निर्बल होगए। सन् १७७४ में महाराष्ट्रों के साथ अंगरेजों की लड़ाई आरम्भ हुई। सन् १७८२ में सालबाई की संधि द्वारा अंगरेजों को साल्सट, एलिफेंटा, करंजा और हाग इन ४ टापुओं पर अधिकार होगया। बसीन और गुजरात की जीती हुई सब वस्तु अंगरेजों ने पेशवा को लौटा दी। सिंधिया को भड़ौच शहर मिला। सूरत का किला सन् १७५९ में अंगरेजों के अधिकार में होचुका था। सन् १८०० में वहा के नवाब ने उस शहर का संपूर्ण प्रबंध अंगरेजों के आधीन करदिया। सन् १८०३ और १८०४ में दूसरी बार महाराष्ट्रों सेअंगरेजों की लड़ाई हुई, जिसमे वर्तमान सूरत, भड़ौच और खेड़ा जिले के साथ गुजरात का बहुत बड़ा भाग अंगरेजो अधिकार में

होगया। सन् १८१७ में महाराष्ट्रों की तीसरी लड़ाई आरंभ हुई। पेशवा के परास्त होने पर पूना, अहमदनगर, नासिक, शोलापुर, बेलगांव, बीजापुर, धारवाड़, अहमदाबाद और कोंकन जिला अंगरेजी राज्य में सब मिल गये। उसी समय हुलकर ने खानदेश जिले का अपना अधिकार अंगरेजों को दे दिया। सन् १८४८ में सतारा जिला अंगरेजी राज्य में मिला लिया गया। सन् १८६१ में उत्तरी किनारा जिला मदरास हाते से बंबई हाते में कर दिया गया।

एलिफेंटा के गुफामंदिर।

बंबई शहर के किले के स्थान से ६ मील दूर (१८ अंश, ५७ कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, पूर्व देशांतर में) थाना जिले में एलिफेंटा नामक टापू है, जिसको देशी लोग धारापुरी तथा गोरापुरी का टापू कहते हैं। टापू का घेरा समुद्र के ज्वार और भाटा के अनुसार ४ मील से ४½ मील तक और क्षेत्रफल ४ वर्गमील से ६ वर्गमील तक रहता है। उस टापू में एक तंग घाटी के दोनों ओर एक एक लंबी पहाड़ी है। पहाड़ी के सबसे ऊंचा शृङ्ग समुद्र के जल से ५६७ फीट ऊंचा है। पूर्व और पूर्वोत्तर के अतिरिक्त टापू के संपूर्ण बगलों में जंगली झाड़ी लगी है। टापू के पश्चिमोत्तर बगल में नाव लगने की जगह है। प्रति वर्ष हजारों आदमी बंबई के अपोलो बंदर से नावमें अथवा स्टीम-लंच में सवार होकर एलिफेंटा की गुफाओं को देखने के लिये उस टापू में जाते हैं। शिवरात्रि को वहां एक मेला होता है। शिव के त्योहारों में बहुत लोग त्रिमूर्ति के दर्शन को जाते हैं। उस टापू में पानी का एक गाड़ है।

गुफामंदिरों के होने के कारण एलिफेंटा टापू प्रसिद्ध है। वहां हिंदुओं के ५ गुफा मन्दिर हैं, जिनमें से ४ दुरुस्त अथवा प्रायः दुरुस्त हैं, किंतु पांचवां (एक बड़ा गुफा मन्दिर) पत्थरों से भर गया है। वहां के गुफामंदिरों तथा देव मूर्तियों में पत्थर अथवा ईंटों के जोड़ नहीं हैं, उसी पहाड़ी के भीतर से पत्थर खन कर, उसी जगह मन्दिर, स्तंभ और प्रतिमा सब कुछ बनाई गई थीं, जो अबतक विद्यमान हैं।

उनमें टापू के पश्चिम वाली बड़ी पहाड़ी के बगल में समुद्र के ज्वार के पानी से २५० फीट ऊपर त्रिमूर्ति की गुफा अधिक मनोरम है। उसमें बहुत यात्री जाते हैं। नाव से उतरने के स्थान से ½ मील दूर उस गुफा का दरवाजा है। उत्तर मुख की गुफा है। वह आगे के दरवाजे से पीछे की दीवार तक १३० फीट लंबी और पूर्व के बगल से पश्चिम के बगल तक इतनीहीं चौड़ी है; किंतु उसका फर्श चौकोना नहीं है। आगे का ओसारा, जो तीन ओर से खुला हुआ है, ५५ फीट लंबा और आगे से पीछे तक १६ फीट चौड़ा है। ओसारे और पीछे के भाग को छोड़ कर के गुफा का खास अंग ९१ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा है। उसमें ६ पंक्तियों में २६ स्तंभ और १६ बगल वाले स्तंभ थे, जिनमें से ८ स्तंभ टूट फूट गए हैं और दूसरों को भी हानि पहुंची है। नीचे का फर्श और ऊपर की छत की ऊंचाई एक समान नहीं है, इससे स्तंभ १५ फीट से १७ फीट तक ऊंचे होते हैं।

गुफा अर्थात् गुफामंदिर के भीतर उसके पीछली दीवार के पास एकहीं साथ ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र की मूर्ति बनी हुई हैं, जिनको त्रिमूर्ति कहते हैं। उनमें से सामने अर्थात् उत्तर ब्रह्मा, पश्चिम विष्णु और पूर्व रुद्र की मूर्ति है। तीनों मूर्तियों के केवल गले और मुखमंडल मात्र हैं। इस मूर्ति की ऊंचाई १८ फीट और आंख के सामने के सिर का घेरा २३ फीट है। त्रिमूर्ति के पास अंग भग किए हुए तेरह तेरह फीट ऊंचे दो द्वारपाल हैं। त्रिमूर्ति के दोनों तरफ दो कमरों में बहुत सी मूर्तियां बनाई हुई हैं, जिनमें से पूर्व वाले कमरे में १७ फीट ऊंचा अर्द्धनारीश्वर शिव; शिव के दहिने कमलासन पर बैठे हुए ब्रह्मा और कमलासन के नीचे हंसो की ५ प्रतिमा और अर्द्धनारीश्वर के बाएं गरुड पर चढ़े हुए विष्णु हैं। त्रिमूर्ति के पश्चिम वाले कमरे में १६ फीट ऊंची शिव की और १२ फीट ऊंची पार्वती की प्रतिमा है। एक दूसरे कमरे में शिव और पार्वती के ब्याह के समय की प्रतिमा बनी हुई हैं,—शिवजी के दहिने पार्वती खड़ी है। हिमवान और उनकी भार्या शिवको पार्वती को समर्पण कर रही हैं। एक कमरे में शिव लिंग और अनेक बड़े द्वारपाल हैं। गुफा के पश्चिम भाग के कमरे में कालभृत् शिव की ११ फीट ऊंची मूर्ति है।

गुफा के भीतर एक स्थान में रावण कैलास पर्वत को उठा रहा है। पर्वत पर शिव और पार्वती की मूर्ति है। एक स्थान पर शिव के गण दक्ष के यज्ञ का विध्वंश कर रहे हैं।

व्याघ्र मन्दिर लगभग ९० फीट लंबा और १८ फीट ऊंचा है। उसके आगे ८ स्तंभ बने हैं। सीढ़ी के दोनों ओर बाघ की प्रतिमा खड़ी है। भीतर शिवलिंग और बहुत देव मूर्तियां हैं। अन्य गुफा मन्दिर हीन दशा में विद्यमान है, जिनमें से एक बड़ी गुफा से दक्षिण-पूर्व उत्तर वाले मन्दिर के साथ ११० फीट लंबा है; उसका अगवान ८० फीट लंबा है। एक गुफा एलिफेंटा टापू की दूसरी पहाड़ी के बगल में है। गुफाओं की बहुत सी मूर्तियों के अंगभग होगए हैं।

इतिहास—उस टापू के दक्षिण बगल में १३ फीट लंबा और ७½ फीट ऊंचा पत्थर का हाथी था, इस लिये पोर्चुगाल वालों ने उस टापू का नाम एलिफेंटा रक्खा; क्योंकि अंगरेजी में हाथी को एलिफेंट कहते हैं। सन् १८१४ में उस हाथी का गला और सिर गिर गया। सन् १८६४ में उसका धड़ बंबई के विक्टोरिया बाग में रक्खा गया।

अनुमान किया जाता है कि तीसरी शदी से दसवीं शदी तक उस टापू पर एक नगर और प्रसिद्ध पवित्र स्थान था, जहां बहुत यात्री लोग जाते थे। पहाड़ी के पास धान के खेत में ईंटे और पत्थर की नेव, टूटे हुए स्तंभ; शिव की अनेक प्रतिमा और एक पुराने नगर के अनेक चिन्ह मिले हैं।

एलिफेंटा की गुफाओं के बनाने का ठीक समय जान नहीं पड़ता; उनको कोई कोई पांडवों की गुफा, कोई कोई किनारा के बाणासुर नामक राजा की बनवायी हुई और कोई कोई बड़ा सिकंदर की बनवाई हुई कहते हैं। गुफाओं में कोई शिला लेख नहीं है। अंगरेज विज्ञानिक लोग त्रिमूर्ति की बड़ी गुफा को ९ वीं अथवा १० वीं शदी की बनी हुई कहते हैं।

———o———

तेइसवां अध्याय।

(बंबई हाते में) योगेश्वर का गुफामंदिर, मंडपेश्वर के गुफामंदिर, कनारी के गुफामंदिर, बसीन, (पोर्चुगीजों के राज्य मे) दमन, (बंबई हाते के गुजरात देश में) नौसारी, सूरत, भड़ोंच, शुक्लतीर्थ, डभोई, चंद्रोदय तीर्थ और बड़ोदा।

योगेश्वर का गुफा मंदिर।

बंबई के विक्टोरिया स्टेशन से ६ मील पूर्वोत्तर और कुलाबा के रेलवे स्टेशन से ८ मील उत्तर दादर का रेलवे स्टेशन है। दादर मे 'ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे' और 'बंबे बड़ोदा सेंट्रल इण्डियन रेलवे' का अलग अलग स्टेशन बना है। स्टेशन के पास एक धर्मशाला है। मैं दादर से बंबे बड़ोदा सेंट्रल इण्डियन रेलवे की गाड़ी में सवार हो उत्तर की ओर चला।

दादर के रेलवे स्टेशन से २ मील उत्तर महीम के स्टेशन के पास बंबई टापू और सालसट के टापू के बीच वाले कजवे अर्थात् पहाड़ी पुल को रेलगाड़ी पार होती है। महीम के स्टेशन से १ मील उत्तर बांदरा कसबे का रेलवे स्टेशन है। थाना जिले में बांदरा सबसे बड़ा कसबा है। उसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १८३१७ मनुष्य थे। बांदरा के रेलवे स्टेशन से ७ मील (बंबई के कुलाबा के स्टेशन से १८ मील) उत्तर गुरगांव का रेलवे स्टेशन है।

गुरगांव के रेलवे स्टेशन से २½ मील दक्षिण और योगेश्वर गांव से २ मील पूर्वोत्तर थाना जिले के सालसट टापू में अंधेरी नामक गांव के पास योगेश्वर का गुफा मंदिर है। यह इलोरा के कैलास को छोड़ करके भारतवर्ष के सब गुफा मन्दिरो से बड़ा है। लोग अनुमान करते हैं कि यह गुफा

८ वीं शदी की बनी हुई है । इसकी लंबाई २४० फीट और चौड़ाई २०० फीट हैं । पूर्व के दरवाजे की बनावट अच्छी है; किन्तु पश्चिम वाले दरवाजे से प्रायः सब लोग आते जाते हैं । प्रथम ४ सीढ़ियों के ऊपर एक छोटे कमरे में टूटी हुई बहुत प्रतिमा देखने में आती हैं । उसके आगे एक दरवाजे होकर मध्य वाले बड़े कमरे में, जो १२० फीट लंबा और इतनाही चौडा है, जाना होता है । कमरे में २० स्तंभ बने हुए हैं । बड़े कमरे के भीतर २४ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा महादेव का निज मन्दिर है, जिसमें ४ द्वार बने हुए हैं। गुफामंदिर के पूर्व के दरवाजे के ऊपर एक आश्चर्य प्रतिमा है, जो तैयार नहीं हुई थी । इनके अतिरिक्त उस गुफा में जगह जगह बहुतसी पुरानी मूर्तियां बनी हुई हैं । योगेश्वरगुफा से ६ मील उत्तर मगथाना की गुफा है।

मंडपेश्वर के गुफामंदिर ।

गुरगांव के रेलवे स्टेशन से ४ मील (बंबई के कुलाबा के स्टेशन से २२ मील) उत्तर बोरवली का रेलवे स्टेशन है। बोरवली से १ मील दूर और कनारी की पहाड़ी से, जिसमें कनारी के गुफा मंदिर हैं, ४ मील पश्चिम मंडपेश्वर की गुफाएं हैं । रेलवे स्टेशन से घोड़े जाने का मार्ग है।

वहां पहाडी में काट कर बनाए हुए ३ गुफामंदिर है । लोग अनुमान करते हैं कि वे ९ वीं शदी के बने हुए हैं । पूर्व वाला पहला गुफामंदिर ५७ फीट लंबा और १८ फीट चौड़ा है । उसके पश्चिम पत्थर का कुंड है, जिसमें सर्वदा पानी रहता है । दूसरा गुफामंदिर २७ फीट लंबा और १५ फीट चौडा है । उसके पश्चिम की दीवार में २५ प्रतिमाओं के साथ एक चतुर्भुज मूर्ति है, जिसको लोग भीम कहते हैं; कदाचित अपने गणों के साथ वह शिव होवे । बहुत प्रतिमाओं के अंग भंग हैं । पश्चिम वाले तीसरा गुफा मन्दिर में ताला बंद करके उसका पुजारी अपना घर चला जाता है। उसमें कमरे और अनेक छोटी कोठरियां बनी हुई हैं । दक्षिण ओर उससे अधिक ऊंचाई पर ४० फीट ऊंचा गोलाकार टावर है । बाहर से उस

पर चढ़ने की सीढ़ी बनी है। पूर्व वाली गुफा के दक्षिण-पश्चिम पोर्चुगीजों का उजड़ा पुजड़ा गिरजा है।

कनारी के गुफामंदिर।

बोरवली के रेलवे स्टेशन से, जो बंबई के कुलाबा स्टेशन से २२ मील उत्तर है, ५ मील दूर और तुलसी झील के बांध से २ मील उत्तर तथा थाना के डाक बंगले से ६ मील दूर सालसट टापू के मध्य भाग की एक पहाड़ी के बगल में नीचे ऊपर छोटे बड़े १०९ गुफा मन्दिर बने हुए हैं। बोरवली के स्टेशन से वहां तक घोड़े जाने लायक मार्ग है। संपूर्ण गुफामन्दिर पहाड़ी से पत्थर खोद कर बनाए गए थे। उनमें कोई जोड़ नहीं है। वहां के गुफा मन्दिर इलोरा, अजंता तथा कारली के गुफामन्दिरों के समान मनोहर नहीं हैं; तिस पर भी दर्शनीय वस्तु हैं। पहाड़ी के नीचे से सब गुफाओं के पास पत्थर में काट कर पगडंडी राह बनाई हुई है। गुफा मन्दिरों में स्थान स्थान पर बुद्धदेव और बहुत बौद्ध मूर्तियां बनी हुई हैं। लोग अनुमान करते हैं कि बड़ा चैत्य ५ वीं शदी का है; किंतु ९ विहार उससे पहिले के होंगे (विहार उसे कहते हैं जिसके मध्य में बड़ा कमरा और बगलों में बौद्ध मत के भिक्षुकों के रहने के लिये कोठरियां हो)। ९ वीं शदी के पीछे तक कनारी की गुफा बनी थीं। वहां बुद्ध देव का एक दांत था, इस लिये वह स्थान पवित्र समझा गया।

कनारी के गुफामन्दिर में बड़ा चैत्य गुफा अर्थात् बौद्ध मंदिर प्रधान और दिलचस्प है। वह कारली के बड़ा चैत्य के नकल का है; किंतु उसके समान वह सुन्दर नहीं है। इसके दोनों बगलों में बुद्धदेव की २३ फीट ऊंची एक एक प्रतिमा है। बरंडा के दरवाजे के स्तंभ पर चौथी शदी का शिलालेख है। बरंडा और गुफामंदिर के बीच में पानी का एक कुंड है।

बड़ा चैत्य से थोड़ी दूर पर वहां के विहार गुफाओं में सबसे उत्तम 'दरबार गुफा' है। छोटी कोठरियों को छोड़ करके उसकी लंबाई ९६ फीट

और चौड़ाई ४२ फीट है। एक गुफा मंदिर में बुद्ध देव कमलासन पर बैठे हैं; उनके पास ७ पुजारी और सेवकों की छोटी मूर्तियां हैं।

तुलसीझील-कनारी के गुफामन्दिरों से २ मील दक्षिण सालसट टापू में तुलसीझील का बांध है। वह झील सन् १८७२ में ४ लाख रुपये के खर्च से तैयार हुई। उससे बंबई के पास की मालाबार पहाड़ी पर पानी पहुंचाया जाता है।

विहारझील-तुलसीझील से २ मील दक्षिण और भंडूप के रेलवे स्टेशन से लगभग ५ मील दूर सालसट टापू में २ मील लंबी और १½ मील चौड़ी तथा १४०० एकड़ भूमि पर विहार झील बनी है। उसको एक अंगरेज ने गरपर नदी को बांध करके लगभग ३८०००१० रुपये के खर्च से बनवाया था। झील का बांध ३० फीट चौड़ा और पानी के ऊपर ३० फीट ऊंचा है। उसमें ७८ फीट तक गहरा पानी रहता है। पानी में बहुत मछलियां हैं।

वसीन।

बोरवली के रेलवे स्टेशन से ६ मील उत्तर भयंदर के स्टेशन के पास एक बड़ी नदी पर रेलवे का पुल बना हुआ है। बोरवली से ११ मील (बंबई के कुलाबा के रेलवे स्टेशन से ३३ मील) उत्तर वसीनरोड का रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से ५ मील दूर (२९ अन्श, २० कला, २० विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ५१ कला, २० बिकला पूर्व देशांतर में) बंबई हाते के थाना जिले में समुद्र के पूर्व सबडीवीजन का सदर स्थान वसीन एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय वसीन में ११२९१ मनुष्य थे; अर्थात् ७१४७ हिंदू, ३०८९ क्रस्तान, १०३२ मुसलमान, २८ जैन और ८ पारसी।

पुराने शहर के चारो तरफ दीवार है। उसके भीतर १४ वीं और १८ वीं शदी के बने हुए कई एक गिरजे उजड़ रहे हैं। समुद्र के किनारे से थोड़ी दूर पर वसीन का खंडहर और किला विद्यमान है। वहां हाल का बना हुआ एक शिव मन्दिर है। वसीन में सरकारी कचहरियां बनी हुई हैं।

इतिहास—सन् १५३४ में पोर्चुगाल वालों ने गुजरात के सुलतान बहादुरशाह से दमन के साथ, जो अब तक पोर्चुगीजों के अधिकार में है, बसीन को लेलिया। उसके २ वर्ष पीछे बसीन में एक किला बनाया गया। लगभग २०० वर्ष बसीन पोर्चुगाल वालों के अधिकार में था। उस समय उसका विभव बहुत बढ़ गया था। अन्य शहरों के धनी लोगों को बसीन के धनी लोगों का उपमा दिया जाता था। बहुत से उत्तम मकान बने थे। उस समय यहां १ यतीमखाना, १ कैथेड्रल और १३ गिरजे थे। सन् १६९५ में महामारी से शहर के निवासियों में से एक तिहाई लोग मर गए। सन् १७३९ में महाराष्ट्रों ने बसीन को ले लिया। सन् १७८० में अंगरेजों ने बसीन को महाराष्ट्रों से छीन लिया था, किन्तु सन् १७८२ में उनको लौटा दिया। सन् १८१८ में पेशवा के परास्त होजाने पर वह फिर अंगरेजों को मिल गया।

दमन।

बसीन रोड के रेलवे स्टेशन से ७६ मील (बंबई के कुलाबा के स्टेशन से १०९ मील) उत्तर दमन रोड का रेलवे स्टेशन है। बंबई हाते के गुजरात प्रदेश में पोर्चुगाल के बादशाह के हिन्दुस्तान के राज्य का एक भाग, गोआ के गवर्नर के आधीन दमन एक राज्य है। उस राज्य का दो भाग है, एक खास दमन परगना और दूसरा नागरहवेली परगना। सन् १७८१ की मनुष्य-गणना के समय दोनों परगनो के ८२ वर्गमील क्षेत्रफल में १०२०२ मकान और ४९०८४ मनुष्य थे।

खास दमन परगना का क्षेत्रफल २२ वर्गमील है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय २९ गांवों में २१६२२ मनुष्य थे। दमन परगना दमन गंगा नामक नदी द्वारा दो भागों में विभक्त है;— नदी के दक्षिण थाना जिले के पास बड़ा दमन और नदी के उत्तर सूरत जिले की सीमा के पास छोटा दमन है।

दमन गंगा नामक नदी के दोनों बगलों पर एक एक किला है। दोनों की दीवारों पर तोपें रक्खी हुई हैं। नदी के बाएं का पत्थर का किला, जि-

सके बगल में जमीन की ओर खाई है, प्रायः पुरुगाशा शल्क में है, उसमें यहां के गवर्नर और उनके आधीन कर्मचारियो के आफिस तथा मकान बने हुए हैं और म्युनिसिपल आफिस, अस्पताल जेलखाना अनेक बारक, ६ नया चर्च और बहुत से खानगी मकान हैं। इस किले में पोर्चुगीजो के गवर्नर, फौजी सामान पोर्चुगाल सरकार के कर्मचारी लोग और चंद खानगी निवासी रहते हैं, जो प्रायः सब क्रस्तान हैं। नदी के दहिने का छोटा किला नया बनावट का है। उसकी दीवार बड़े किले की दीवार से अधिक ऊंची है। उसके भीतर एक गिरजा, एक पादड़ी की कोठी, एक मजनालय इत्यादि इमारत हैं।

दमन परगने के पूर्व और ६० वर्गमील क्षेत्रफल में नागरहवेली परगना है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ७२ गांव और २७४६२ मनुष्य थे।

इतिहास–सन् १५३१ मे पोर्चुगाल वालों ने दमन को लूटा। हेशियों ने फिर उसको सवारा। सन् १५५९ में पोर्चुगाल वालो ने उसको ले लिया। सन् १७८० म पूना की सधि के अनुसार महाराष्ट्रो ने पोर्चुगीजो को नागरहवेली का परगना दे दिया। पोर्चुगाल वालों के हिन्दुस्तान के राज्य की बढ़ती के समय दमन मे बडी सौदागरी होती थी, किन्तु अब बहुत कम होती है।

नौसारी।

दमनरोड के रेलवे स्टेशन से ६ मील उत्तर उदवादा का रेलवे स्टेशन है। उदवादा बस्ती में पारसी लोगो के सब से पुराना अग्नि मन्दिर है। लगभग सन् ७०० ईस्वी में पारसी लोगों ने पारस से अग्नि लाकर वहां स्थापित किया था, वही अग्नि अब तक वहा जलता है। उदवादा से १० मील उत्तर सूरत जिले के बलसर कसबे का रेलवे स्टेशन है।

उदवादा के स्टेशन से ३४ मील और दमनरोड के स्टेशन से ४० मील (बबई के पास के दादर म १४१ मील) उत्तर नौसारी का रेलवे स्टेशन है। बबई हाते के सूरत जिले के भीतर बडौदा के राज्य में पूर्णा नदी के बाएं

अर्थात् दक्षिण किनारे पर समुद्र से लगभग १२ मील पूर्व नौसारी एक सुंदर कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय नौसारी में १६३७६ मनुष्य थे, अर्थात् ९२८२ हिन्दू, ४४५२ पारसी, २३२९ मुसलमान, ३१२ जैन और १ क्रुस्तान।

नौसारी में एक उत्तम टाउनहाल, पारसी लोगों का एक सुन्दर मन्दिर, अस्पताल, लायब्रेरी और महाराज गायकवाड़ का जेलखाना है। इसमें पारसी लोग बहुत बसते हैं। पारसी लोगों ने यूरोपियन तरीके पर वहां अर्क और साबुन का कारखाना जारी किया है। समुद्र से पूर्णा नदी होकर नौसारी में बहुत माल आता है। मल्लाह लोग पूर्णा नदी को नौसारी नदी कहते हैं। पारसी लोग नौसारी में तांबा, पीतल, लोहा, कपड़ा, लकड़ी आदि के काम करते हैं। नौसारी की खाड़ी के पास पारसी लोगों के मुर्दे रखने का दोखमा अर्थात् श्मशान मन्दिर बना हुआ है। पारसियों के आने के समय से नौसारी उनकी जमायत का सदर-स्थान है।

सूरत।

नौसारी के रेलवे स्टेशन से १८ मील (बंबई के कुलाबा के स्टेशन से १६७ मील) उत्तर और भड़ौच के स्टेशन से ३७ मील दक्षिण सूरत का रेलवे स्टेशन है। बंबई हाते के गुजरात प्रदेश में ताप्ती नदी के बाएं अर्थात् दक्षिण किनारे पर (२१ अन्श, ९ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अन्श, ५४ कला, १५ विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र से १० मील पूर्व जिले का सदर-स्थान और जिले में प्रधान कसबा सूरत है। *

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय फौजी छावनी के साथ सूरत शहर में १०९२२९ मनुष्य थे, अर्थात् ५६०७४ पुरुष और ५३१५५ स्त्रियां।

* हाल में एक रेलवे लाइन सूरत शहर से पूर्व खानदेश जिले के जलगांव के रेलवे स्टेशन में जा मिली है। उस लाइन पर सूरत शहर से १५६ मील अमलनेर, १७१ मील धरनगांव और १८४ मील जलगांव का स्टेशन है।

इनमें ७८२४० हिन्दू, २०४२० मुसलमान, ५८९३ पारसी, ४२६३, जैन, ३७७ कृस्तान और ३६ यहूदी थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में २६ वां और बंबई हाते के अंगरेजी राज्य में चौथा शहर है।

सूरत शहर तापती नदी की झुकाव पर है। यह नदी वहांसे पश्चिम अपनी मुहाने की ओर घुम गई है। नदी के किनारे की ओर छोड़ करके शहर के बगलों में पुरानी दीवार है। एक अच्छी सड़क स्टेशन रोड से किले की ओर गई है। दूसरी सड़कें कम चौड़ी हैं। रेलवे स्टेशन के पास एक सरकारी धर्मशाला बनी हुई है।

खास शहर के भीतर घनी बस्ती है। सड़कों के बगलों में पारसी लोगों, उच्च जाति के हिन्दुओं तथा बोर मुसलमानों के मकान सुन्दर बने हुए हैं। सूरत में ये तीनों खास करके धनी हैं। शहर के पश्चिम नदी के पास परेड की जगह के साथ फौजी छावनी फैली है। नदी की ओर जिले की कचहरियां हैं।

सूरत शहर में तापती नदी के किनारे के पास सन् १५४० का बना हुआ एक किला है। किले की दीवार ८ फीट मोटी है, उसके प्रत्येक कोने पर गोलाकार बुर्ज बना हुआ है। किले के पूर्व वाले फाटक के ऊपर शिला लेख है। किले के पास उससे लगा हुआ ८ एकड़ भूमि पर विक्टोरिया बाग है। किले और कष्टम हौस के बीच में सन् १८२० का बना हुआ अंगरेजी गिरजा है, जिसमें २०० आदमी बैठ सकते हैं।

सूरत में हिन्दुओं के अनेक मन्दिर हैं, जिनमें से स्वामीनारायण का मन्दिर और हनूमानजी के २ मन्दिर प्रधान हैं। स्वामीनारायण के विशाल मन्दिर में ३ गुंबज हैं, वह शहर के सब स्थानों से देख पड़ता है।

सूरत में मुसलमानों की बहुत मसजिदें हैं, जिनमें ४ प्रधान हैं—(१) गोपीझील नामक पुराने तालाब के पश्चिम किनारे पर नवसैयद साहब की मसजिद है, जो एक समय गुजरात की अत्युत्तम इमारतों में गिनी जाती थी। (२) सैयदपुरा में सैयद इद्रुस की मसजिद सूरत की प्रसिद्ध इमारतों में से एक है, जिसको सन् १६४० में एक मुसलमान सौदागर ने बनवाया था। उस मसजिद में एक बड़ा मीनार है। सैयद इद्रुस सूरत के वर्तमान काजी साहब के

पुरुषे थे। (३) मिर्जा सामिया की मसजिद है, जिसको सूरत के किले को वन वाने वाले खोदावंदखा ने सन् १५४० में बनवाया था। उसमें संगतरासी का अच्छा काम है। (४) सन् १५३० की बनी हुई ख्वाजा दीवान साहब की मसजिद है। इनके अतिरिक्त बोरा मुसलमानों के अनेक सुन्दर मकबरे हैं।

सूरत में पारसियो के २ अग्नि मन्दिर, जैन लोगों के ४० से अधिक मन्दिर और अंगरेजो के कई एक गिरजे और बहुतसी कबरें हैं। दिल्ली जाने वाली सड़क के निकट सन् १८७१ का बना हुआ ८० फीट ऊंचा घड़ी का बुर्ज है, जिस पर चढ़ने से सूरत शहर की सुन्दर शोभा देखने में आती है। इनके अतिरिक्त सूरत में एक हाइ स्कूल, जिसमें ५०० लड़के बैठ सकते हैं, २ खैराती अस्पताल, जानवरों के लिए १ अस्पताल और रूई तथा कपड़े के कई एक मिल अर्थात् कल कारखाने हैं। शहर से १२ मील पश्चिम सूरत का बंदरगाह है।

प्रधान सड़कों पर रात में लालटेनों की रोशनी होती है। सूरत की चंदनकी लकड़ी की नकाशीदार चीजें प्रसिद्ध हैं। वहां की सामुद्रिक व्यापार पहिले से अब बहुत घट गया है। सन् १८०१ में वहां की आमदनी और रफतनी के माल का दाम १०४३२२२ पांउड था, किन्तु सन् १८८३-१८८४ में वह केवल ३२७२२१ पाउड रह गया, इसमें से १४६६९५ पाउड का माल आया और १८०५२६ पांउड का माल सूरत से अन्य स्थानों में गया। बहुत रूई और अन्न सूरत से अन्य शहरों में भेजे जाते हैं। शहर में ३६ रुपये और ७२ रुपये भर के सेर से सौदा बिकती हैं। शहर से कई एक मील दूर देहात में एक मेला होता है।

तापती नदी—रेलवे स्टेशन और तापती नदी के बीच में सूरत शहर है। स्टेशन से १½ मील दूर तापती नदी का प्रधान घाट है। वहां शहर की ओर दूर तक पत्थर की सीढ़ियां बनी हुई हैं, जिस पर पचासहां आदमी अपने कपड़े धोते हुए देखने में आए, क्योंकि वहांके प्रायः सब हिन्दू अपने कपड़े आप धोते हैं। घाट के पास तापती नदी पर १७ पायाओं का पुल है। उस घाट पर आसाढ़ मास में एक महीना स्नान का मेला होता है।

तापती नदी सतपुड़ा की पहाड़ी से निकल कर लगभग ४४० मील पश्चिम बहने के पश्चात् सूरत शहर से १४ मील पश्चिम डुमसा गांव के पास खंभात की खाड़ी में गिरती है। बुरहानपुर, सूरत इत्यादि नगर उसके किनारे पर हैं। तापी अर्थात् तापती नदी का निकास स्थान किसी पुराण में विंध्याचल, किसी में ऋक्षवान पर्वत और किसी पुराण में पारिपात्र पहाड़ लिखा है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—भविष्यपुराण—(पूर्वार्द्ध, ४२ वां अध्याय) सूर्य की पत्नी संज्ञा से यम नामक पुत्र और यमुना नामक पुत्री और छाया से सावर्णि मनु और शनिश्चर दो पुत्र और तपती नामक एक कन्या उत्पन्न हुई। एक दिन यमुना और तपती का परस्पर विवाद हुआ। उस समय परस्पर के शाप से दोनों नदी होगई। सूर्य भगवान ने कहा कि यमुना का जल गंगाजल के समान और तपती का जल नर्मदा के जल के तुल्य माना जायगा।

आश्चर्य फकीर—जिस समय मैं सूरत की धर्मशाले में टिका था; उसी समय एक मुसल्मानी फकीर, जिसकी अवस्था ४० वर्ष की होगी, रेलगाड़ी से उतर कर बैलगाड़ी में सवार हो धर्मशाले में पहुंचा और धर्मशाले के एक भाग में उतरा। उसके आने पर शहर से दर्शकों का तंता लग गया। सैकड़ों मनुष्यों की भीड़ लग गई। कई मुसल्मान उसकी सेवा में नियुक्त होगए। बहुतेरे लोग फकीर के पास पैसा रखने लगे। मैंने पहिले अखबारों में पढ़ा था कि एक फकीर, जिसकी देह में लोहे के बहुत सीकड़ है, जब रेलगाड़ी में बैठा तब रेल कर्मचारियों ने उसको माल समझ कर पसेंजर गाड़ी से उतार कर मालगाड़ी में चढ़ा दिया। मुझको अनुमान होता है कि यह वही फकीर है।

फकीर के शरीर में ३ मन से अधिक लोहे के सीकड़, मेख तथा कड़ियां थी, उसके गले, कमर, जंघों तथा भुजाओं में मोटी मोटी कड़ी लगी थी, जिनमें से गले की कड़ियों में ४ फीट से अधिक लंबे पचीस तीस मोटे मोटे सीकड़, जिनके नीचे के छोरों पर लोहे के मेख थे, और दोनों भुजाओं की दोनों कड़ियों में ग्यारह ग्यारह सीकड़ लटके थे। इसी भांति उसके कमर और जंघाओं की कड़ियों में बहुत सीकड़ लगे थे। वह फकीर सीकड़ों के

बोझ से चल फिर नहीं सकता था; दो आदमियों के सहारे से थोड़ी दूर चलता था।

सूरत जिला—यह जिला गुजरात देश के दक्षिण भाग में है। इसके उत्तर भड़ोंच जिला और बड़ोदा का राज्य; पूर्व बड़ोदा, राजपिपला, बांसदा और धर्मपुर के देशी राज्य, दक्षिण थाना जिला और पोर्चुगीजों का स्वतंत्र दमन राज्य और पश्चिम अरब का समुद्र है। जिले का सदर स्थान सूरत शहर है। डांगा पहाड़ियां और समुद्र के बीच में केम नदी से दक्षिण और दमनगंगा से उत्तर जिले का मैदान लगभग ८० मील फैला है। जिले की औसत ऊंचाई समुद्र के जल से लगभग १६० फीट है। जिले में चंद छोटी पहाड़ियां हैं। नदियों में तापती और केमनदी बड़ी हैं। पहाड़ियों में मकान बनाने लायक पत्थर बहुत हैं। कोई प्रसिद्ध जंगल नहीं है। जंगलों में तेंदुए, भालू, बनैले सूअर, भेड़िया इत्यादि वनजंतु रहते हैं। सूरत जिले में गुजराती और कुछ महाराष्ट्री भाषा प्रचलित है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय सूरत जिले के १६६२ वर्गमील क्षेत्रफल में ६१४१९८ मनुष्य थे; अर्थात् ४१५०३१ हिन्दू, ११८६६४ पहाड़ी और जंगली जातियां, ५५५४७ मुसलमान, १२५९३ पारसी, ११६७० जैन, ६२१ कृस्तान, ६१ यहूदी, और ११ अन्य। हिंदुओं में ७६८६३ दुबला, ४९४५२ कोली (खेतिहर), ४०२९ ब्राह्मण, ३६८०१ कुन्बी (खेतिहर), ३१२०६ महारा, ९९८१ तेली, ८६६९ राजपूत, केवल १४१६ धोबी और बाकी में अन्य जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय सूरत जिले के कसबे सूरत में १०९२२९, वलसर में १४७७९ और रांडेर में १०९२६ मनुष्य थे। वलसर एक बंदरगाह है। सूरत शहर से २ मील दूर तापती के पीछे उसके किनारे पर रांडेर में रुई की तिजारत होती है। बुढ़ान में एक बड़ा मंदिर है, वहां हिंदू यात्री जाते हैं। उनाई में एक सालाना मेला होता है।

इतिहास—१३ वीं सदी के आरम्भ में दिल्ली का कुतबुद्दीन अनहिलवाड़ा के राजा भीमदेव को परास्त करने के पश्चात् सूरत शहर तक गया।

उस समय वह जिला एक हिन्दू राजा के राज्य का एक भाग था। वह राजा सूरत शहर से १३ मील पूर्व कारेज के किले में रहता था। उसने मुसलमानों की अधीनता स्वीकार की। सन् १३४७ में महम्मदतुगलक की फौज ने सूरत शहर को लूटा। सन् १३७३ में फीरोज तुगलक ने सूरत में एक किला बनवाया। १६ वीं शदी के आरंभ में जब गोपी नामक एक धनी हिंदू सौदागर वहां बसा, तब सूरत का वर्त्तमान शहर कायम हुआ। उस समय सूरत में बड़ी तिजरात होती थी। पोर्चुगाल वालों ने अपने हिंदुस्तान में आने के बाद जब सूरत शहर को लूटा, तब अहमदाबाद के सुलतान ने मजबूत किला बनाने की आज्ञा दी। सन् १५४० में खोदावंदखां नामक तुर्की ने सूरत में किला बनवाया। सन् १५७३ में अकबर ने स्वयं जाकर ४७ दिन घेरा देने के बाद सूरत शहर को लेलिया। उस सन् से १६० वर्ष तक मुगलों के नियत किये हुए अफसर सूरत शहर और जिले का प्रबंध करते थे। अकबर, जहांगीर और शाहजहां के राज्य के समय सूरत में सर्वदा शांति बनीरही। १७ वीं शदी में सूरत भारतवर्ष के प्रथम दरजे के तिजारती शहरों में से एक थी, बहुतेरे यूरोपियन सौदागर वहां आते थे।

सन् १५७३ से पोर्चुगाल वाले सूरत में तिजारत करते थे। सन् १६०८ में एक अंगरेजी जहाज तापती के मुहाने पर पहुंचा। सन् १६१२ में दिल्ली के बादशाह जहांगीर ने इष्ट इण्डियन कंपनी को सूरत, कांबे, अहमदाबाद और गोगो में तिजारत करने की आज्ञा दी। सन् १६१५ में अंगरेजों ने पोर्चुगीजों को परास्त किया। उस समय अंगरेजों की ओर ४ जहाजों पर ८० तोपें थीं और पोर्चुगीजों की ओर ४ गैलियन, ३ अन्य बड़े जहाज और ६० छोटे जहाज तथा १३४ तोपें थीं। उस समय अंगरेजों की कोठी सूरत में कायम हुई। सन् १६१६ में हालैंड वालों ने बादशाह से आज्ञा लेकर सूरत में अपनी कोठी नियत की। कुछ फरांसीसी भी सूरत में रहने लगे।

सन् १६६४ की ५ जनवरी को शिवाजी ४००० घोड़सवारों के साथ सूरत में आपहुंचे उन्होंने ६ दिनों तक शहर को खूब लूटा। शिवाजी अंगरेजी कोठी पर महासरा करके कामयाब नहीं हुए, इसलिये मुगल बादशाह

औरंगजेब ने अंगरेजों पर प्रसन्न होकर उनका महसूल माफ कर दिया। सन् १६६८ में फरांसीसियों की कोठी सूरत में कायम हुई। सन् १६७० में महाराष्ट्रों ने सूरत शहर का फिर लूटा। उसके बाद सन् १७०२ और १७०७ में सूरत शहर महाराष्ट्रों द्वारा लूटा गया। सूरत शहर १७ वीं शदी के अन्त में सर्वदा से अधिक धनी था; उस समय उसमें पृथ्वी के प्रायः सब देशों के लोग तिजारत करते थे। उसके पश्चात् बंबई की बढ़ती के साथ साथ सूरत की घटती होने लगी। सन् १७५९ में सूरत के नवाब ने २ लाख रुपये वार्षिक पेंशन कबूल करके अंगरेजों को शहर और किला देदिया। इस प्रबंध को दिल्ली के बादशाह ने स्वीकार किया। सन् १८०० में सूरत और रांदेर कसबा अंगरेजी अधिकार में होगया। सन् १८११ में सूरत कसबे में २५०००० और सन् १८१६ में १२४४०६ मनुष्य थे। सन् १८३७ में सूरत में आगलगी, जिसमें ९३७३ मकान बरबाद होगए। आग १० मील तक फैल गई थी। उसी साल तापती की बाढ़ ने संपूर्ण शहर में फैल कर लोगों को निरालंब कर दिया। बहुतेरे सौदागर सूरत को छोड़कर बंबई चले गए। सन् १८४२ तक नवाब के उत्तराधिकारी नवाब कहलाते थे। सन् १८४७ से सूरत शहर की धीरे धीरे फिर उन्नति होने लगी। सन् १८६२ में सूरत के किले से फौज उठा ली गई।

भड़ौंच।

सूरत के रेलवे स्टेशन से २ मील उत्तर तापती नदी पर रेलवे का बड़ा पुल और ३१ मील उत्तर भड़ौंच जिले में अंकलेश्वर कसबा है। * अंकलेश्वर से ६ मील और सूरत से ३७ मील (बंबई के कुलाबा के रेलवे स्टेशन से २०४ मील) उत्तर और बड़ोदा के रेलवे स्टेशन से ४४ मील दक्षिण कुछ पश्चिम भड़ौंच का रेलवे स्टेशन है। बंबई हाते के गुजरात देश में (२१ अंश.

* अंकलेश्वर से पूर्वोत्तर एक रेलवे लाइन राजपरदी होकर रेवाकांठा एजेंसी में राजपिपला के राज्य की राजधानी नंदोद कसबे को गई है। अंकलेश्वर से १८ मील राजपरदी और ३७ मील नंदोद कसबा है।

४३ कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, २ कला पूर्व देशांतर में) नर्मदा नदी के दहिने अर्थात् उत्तर किनारे पर उसके मुहाने से लगभग ३० मील पूर्व भड़ौंच जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा भड़ौंच है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय भड़ौंच कसबे में ४०१६८ मनुष्य थे; अर्थात् २०७९० पुरुष और १९३७८ स्त्रियां। इनमें २५२५७ हिंदू, ११३८४ मुसलमान, २२४३ पारसी, ७३२ जैन, ४८८ एनिमिष्टिक अर्थात् जंगली जातियां, और ९४ कृस्तान थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में २६ वां और बंबई हाते के अंगरेजी राज्य में १३ वां शहर है।

पहिले भड़ौंच कसबे के चारो ओर पक्की दीवार थी; अब जमीन की ओर की दीवार गिर रही है; चंद स्थानों में उसकी निशानी भी नहीं है; किंतु नर्मदा के बाढ़ से कसबे को बचाने के लिये कसबे के दक्षिण नदी के पास की दीवार मरम्मत करके रक्खी हुई है। वह लगभग १ मील लंबी और ३० फीट से ४० फीट तक ऊंची पत्थर से बनी हुई है। नर्मदा के पास १०० फीट से अधिक ऊंची पहाड़ी पर पुराना किला है। उसमें जेलखाना, अस्पताल, गिरजा, स्कूल, मिउनिसिपल आफिस, लायब्रेरी, हालैंड वालों की पुरानी कोठी और जिले की कचहरियां हैं।

कसबे के अधिक मकान ईंटे के, दो मंजिले तथा खपड़े पोस हैं। कसबे के पूर्व भाग में चंद बड़े मकान हैं। कसबे के पास नर्मदा नदी की चौड़ाई १ मील है। कसबे के दक्षिण नर्मदा नदी पर रेलवे का सुन्दर पुल बना हुआ है; ऐसा पुल उस रेलवे पर किसी जगह नहीं है। पूर्व वाले फाटक के बाहर नर्मदा के तीर पर भृगुऋषि का मन्दिर है, जिसको लोग कसबे से पहिले का बना हुआ कहते हैं। कसबे म पत्थर की एक सुंदर मसजिद, रुई कातने और कपड़े बिनने की २ मील (कल कारखाने), और रुई ओटने तथा दबाने के कई कारखाने हैं।

किले से २०० गज पश्चिमोत्तर एक मकबरा, और २ मील पश्चिम (सड़क से १०० गज बाएं) हालैंड वालों की चंद बड़ी कबरें हैं। उनके सामने

पारसियों के ५ दोखमा अर्थात् मुर्दे रखने के मकान हैं। उनमें से ४ पुराने हैं और पांचवें को बंबई के एक धनी पारसी ने हाल में बनवाया है।

भड़ौंच पश्चिमी भारत के पुराने बंदरगाहों में से एक है। नर्मदानदी मध्य देश में अमरकंटक के पास से निकल कर लगभग ७५० मील पश्चिम बहने के पश्चात् भड़ौंच से ३० मील पश्चिम लोहार नामक गांव के पास समुद्र में मिली है। सन् १८८०-१८८१ में लगभग ४५ लाख रुपये का महुआ, गेहूं, रुई, जलावन की लकड़ी इत्यादि चीजें भड़ौंच से नर्मदा तथा समुद्र द्वारा अन्य स्थानों में भेजी गई और लगभग १५ लाख रुपये का चावल, कसइली, कोयला, लोहा, पत्थर, मकान बनाने की लकड़ी इत्यादि वस्तु अन्य जगहों से समुद्र तथा नर्मदा द्वारा भड़ौंच में लाई गई।

भड़ौंच जिला—यह जिला गुजरात देश में है। इसके उत्तर माही नदी बाद कांबे; पूर्व और पूर्व दक्षिण बड़ोदा और राजपिपला का राज्य; दक्षिण केम नदी बाद सूरत जिला और पश्चिम कांबे की खाड़ी है। इस जिले की लंबाई कांबे की खाड़ी के किनारे पर ५४ मील और चौड़ाई २० मील से ४० मील तक है। जिले में केवल समुद्र के किनारे के पास चंद छोटी पहाड़ियां और भड़ौंच शहर के पड़ोस में चंद टीले हैं। भड़ौंच जिले के बैल बहुत अच्छे होते हैं।

भड़ौंच जिले में भड़ौंच कसबे से लगभग ८ मील दूर नर्मदा नदी के किनारे पर भादभूत गांव में भाग्ड़ेश्वर महादेव का मन्दिर है। भादों के मलमास में वहां एक मास मेला होता है, जिसमें लगभग ६० हजार आदमी जाते हैं। भड़ौंच जिले के जंबुसर सबडीवीजन में धांधर नदी के मुहाने के पास देवजा गांव में दीवार से घेरा हुआ मन्दिर है। वहां साल में २ बार मेला होता है। प्रति मेले में लगभग २ हजार मनुष्य जाते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय भड़ौंच जिले के १४५३ वर्गमील क्षेत्रफल में ३२६९३० मनुष्य थे, अर्थात् २२२८३८ हिंदू, ६७२४८ मुसलमान, २९८१६ पहाड़ी जातियां, जिनमें प्रायः सब भील हैं, ३७६८ जैन, ३०४२ पारसी, ११५ कृस्तान, १८ यहूदी और ५ अन्य। हिंदुओं में ५२५०० कोली,

२७१४२ कुन्बी, १६७१० राजपूत, १५५५३ महरा और धेर, १३१६१ ब्राह्मण, ८०३७ दुबला, ४४९१ कुंभार, केवल १०९४ धोबी और बाकी में अन्य जातियों के लोग थे। भड़ोंच जिले में गुजराती भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय भड़ोंच जिले के कसबे भड़ोंच में ४०१६८, जम्बुसर में १२०७२ और अंकलेश्वर में १०६९२ मनुष्य थे।

इतिहास—उस देश के लोग कहते हैं कि भड़ोंच को भृगु ऋषि ने बसाया था; यह पूर्वकाल में भृगुपुर के नाम से प्रसिद्ध था। सन् ६० से सन् २१० तक भड़ोंच का नाम बड़गजा था। उस समय एक जैन मत वाला राजपूत वहां का स्वाधीन राजा था। चीन का हायनशांग, जो सन् ६२९ से सन ६४५ तक भारतवर्ष में रहा था, लिखा है कि भड़ोंच कसबे में १० बौद्ध-मठ, ३०० बौद्ध फकीर और १० मन्दिर हैं। सन् ७४६ से सन् १२९७ तक भड़ोंच का बंदरगाह अनहिलवाड़ा के राजपूत राजाओं के अधिकार में था। सन् १३९१ से सन् १५७२ तक भड़ोंच शहर अहमदाबाद के मुसलमान बादशाहों के अधिकार में था। सन् १५७३ में दिल्ली के बादशाह अकबर ने भड़ोंच को अहमदाबाद के तीसरा मुजफ्फरशाह से छीन लिया।

सन् १६१६ में बादशाह जहांगीर की आज्ञा से अंगरेजों ने और सन् १६१७ में हालेंड वालों ने भड़ोंच में कोठी कायम की। सन् १६७५ और सन् १६८६ में महाराष्ट्रों ने भड़ोंच को लूटा। सन् १७७२ में अंगरेजों ने भड़ोंच के नवाब से भड़ोंच शहर और जिले को छीन लिया; किंतु उनका सेनापति मारागया जिसकी कबर किले के पश्चिमोत्तर के कोने के पास है। सन् १७७३ में अंगरेजों ने सिंधिया को भड़ोंच देदिया था; किंतु सन् १८०३ में उससे ले लिया।

शुक्रतीर्थ।

भड़ोंच कसबे से १० मील पूर्व नर्मदा नदी के दहिने किनारे पर प्रसिद्ध शुक्लतीर्थ है। यहां कपि, ओंकारेश्वर और शुक्ल नामक ३ पवित्र कुंड और अनेक देव मन्दिर हैं। ओंकारेश्वर के निकट एक मन्दिर में शुक्लनारायण

की मूर्ति है । वहां कार्तिक में एक मेला होता है, जिसमें लगभग २५००० मनुष्य आते हैं । चंद्रगुप्त ने अपने ८ भाइयों के मारने के पातक से छूटने के लिये शुक्लतीर्थ में जाकर स्नान किया था । ११ वीं शदी में अनहिल-वाड़ा के राजा ने पश्चाताप करके शुक्लतीर्थ में निवास कर अपना जीवन व्यतीत किया था।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—कूर्मपुराण—(उत्तरार्द्ध, ३९ वां अध्याय) नर्मदा नदी म शुक्लतीर्थ के तुल्य अन्य तीर्थ नहीं है । उसके दर्शन, स्पर्श तथा स्नान करने मे महान् फल लाभ होता है । उस तीर्थ का परिमाण एक योजन है । उस तीर्थ के वृक्षो के शिखरो के दर्शन मात्र मे ब्रह्महत्या पाप छूट जाता है । प्रति वर्ष बैशाप वदी १४ को पार्वती के सहित महादेवजी शिवलोक से आकर वहां निवास करते है । उस तीर्थ में अहोरात्रि उपवास करने से संपूर्ण पाप विनष्ट होजाता है । जो मनुष्य कार्तिक वदी १४ को उपवास करके वहां परमेश्वर को घृत मे स्नान कराता है, वह अपने २१ पुश्तओ के सहित ईश्वर के समीप निवास करता है । उस तीर्थ में स्नान करने से फिर जन्म नहीं होता । अयन सक्रांति, चतुर्दशी अथवा विषुवत् संक्राति को वहां उपवास करके स्नान करने से मनुष्य हरि और शंकरजी का प्रिय होता है।

कबीरवट—शुक्लतीर्थ से १ मील पूर्व मङ्गलेश्वर के सामने नर्मदा नदी के टापू में कबीरवट नाम से प्रसिद्ध एक बहुत बड़ा वटवृक्ष है। लोग कहानी कहते हैं कि कबीरजी की दातुअन से यह वृक्ष हुआ था । वृक्ष की प्रधान जड़ के पास १ मन्दिर है।

एक आदमी ने जो सन १७७६ और १७८३ के बीच में उस वृक्ष को देखा था, लिखा है कि कबीरवट में ३५० बड़े और लगभग ३००० छोटे जटा अर्थात् बरोह है और इसके प्रधान भाग की शाखाओं का घेरा २००० फीट है। मार्ग में जाते समय ७००० सेना इसकी छाया में बैठती है। सन् १८७५ में कबीरवट का बड़ा भाग नर्मदा की बाढ़ से बहगया, तिसपर भी यह

संसार के उत्तम वृक्षों में से एक था, किंतु बहुत पुराना होजाने से तथा नदी की बाढ़ों से क्रम क्रम से उस वृक्ष का विस्तार अब बहुत घट गया है।

डभोई।

भड़ोंच के रेलवे स्टेशन से २५ मील उत्तर कुछ पूर्व मियागांव का रेलवे जंक्शन है। मियागांव से २० मील पूर्व और बड़ोदा के रेलवे स्टेशन से १४ मील दक्षिण-पूर्व डभोई में रेलवे का जंक्शन है। गुजरात देश-बड़ोदा के राज्य में (२०अंश, १० कला उत्तर अक्षांश और ७३ अन्श, २८ कला पूर्व देशांतर में) डभोई एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय डभोई में १४५३९ मनुष्य थे; अर्थात् १०७४९ हिन्दू, ३०८२ मुसलमान, ५०१ जैन, १९५ एनिमिष्टिक और १२ पारसी।

कसबे के चारो ओर शहरपनाह की पुरानी दीवार है। बड़ोदा की ओर का बड़ोदाफाटक ३१ फीट ऊंचा है; उसके दोनों बाजुओं पर सुन्दर नकाशी का काम बना हुआ है, जिसमें विष्णु के अनेक अवतार और स्वर्गीय चिड़ियाओं के साथ खेलती हुई स्त्रियों की मूर्तियां बनी हुई हैं। फाटक के भीतर किले की दीवार में दालानों के स्तंभों की सुन्दर पंक्तियां हैं। कच्ची सड़क से उससे आगे जाने पर ईंटे के मकान मिलते हैं। उससे और आगे कसबे के दक्षिण का फाटक २० फीट ऊंचा है। कसबे के पूर्व का हीराफाटक ३६ फीट ऊंचा है; उसमें बारीक नकाशी का काम है। उसके पास महाकाली का मन्दिर है, जो नया रहने पर बहुत सुन्दर होगा। कसबे में उत्तर के पुराने महल में अब बड़ोदा के महाराज की कचहरी होती है। उस तरफ एक उत्तम तालाब है। इनके अलावे डभोई में नरनारायण का मन्दिर, लक्ष्मीवेंकटेश का मन्दिर, एक बंगला, एक अस्पताल, एक जेलखाना, एक कपास ओटने की कोठी, पुलिस लाइन और कई एक स्कूल हैं। वहां खिर्नी के वृक्ष में एक खोखला है। लोग कहते हैं कि पापी आदमी उसमें होकर के नहीं निकल सकता है। डभोई में पगड़ी और सारी अच्छी बनती हैं।

ऐसा प्रसिद्ध है कि ११ वीं शदी में डभोई का नाम धर्मवती था। १३ वीं शदी में अनहिलवाड़ा के राजा ने वहां के किले को बनवाया।

डभोई से पूर्व ९ मील बहादुरपुर और १८ मील सोनगिरि का रेलवे स्टेशन है। सोनगिरि के पास मार्बुल की उत्तम खानी है। बहादुरपुर के पास एक किला है।

बहादुरपुर के रेलवे स्टेशन से १५ मील पूर्वोत्तर चंपानीर का पुराना किला है। चंपानीर में बहुत से मकबरों, मसजिदों और तालावों के खंडहर विद्यमान हैं। चारो ओर जंगल में अनेक दीवार, मीनार तथा महलों की निशानियां देख पड़ती हैं। लोग कहते हैं कि अनहिलवाड़ा के राजा ने ८ वीं शदी में चंपानीर को बसाया था। १२९७ तक यह उस वंश के राजाओं के अधिकार में था।

चंद्रोदय।

डभोई के रेलवे स्टेशन से १० मील (बड़ोदा से २४ मील) दक्षिण कुछ पूर्व चन्द्रोदय का रेलवे स्टेशन है। गुजरात देश के बड़ोदा राज्य में नर्मदा नदी के दहिने किनारे पर नर्मदा और ऊर्ज नदी के संगम के पास चंद्रोदय नामक एक बड़ा गांव और पवित्र तीर्थ स्थान है। उसमें लगभग ४२०० मनुष्य बसते हैं। चंद्रोदय के निकट नर्मदा के किनारे पर करनाली नामक एक पवित्र गांव है। चंद्रोदय में बहुत देव मन्दिर, स्थान, पाठशाला, और दो धर्मशाले हैं।

चंद्रोदय पश्चिम भारत में सब से अधिक पवित्र स्थानों में से एक है। इस देश के लोग कहते हैं, कि नर्मदा के किनारे पर चंद्रोदय के समान कोई पवित्र तीर्थ स्थान नहीं है। जैसे गंगा के किनारे पर विद्वान पण्डितों का मुख्य स्थान काशी है, वैसेही नर्मदा के किनारे पर चंद्रोदय है।

चंद्रोदय यात्रा का प्रसिद्ध स्थान है। प्रति पूर्णिमा को वहां हजारों मनुष्य स्नान के लिये जाते हैं। कार्तिक और चैत की पूर्णिमा को वहां प्रधान मेला होता है। प्रति मेले में वहां २० हजार से २९ हजार तक यात्री जाते हैं।

बड़ोदा।

मियागांव जंक्शन से १७ मील पूर्वोत्तर विश्वामित्री जंक्शन है। विश्वामित्री जंक्शन से २ मील, मियागांव जंक्शन से १९ मील, सूरत से ८१ मील और बंबई के कुलाबा के स्टेशन से २४८ मील उत्तर बड़ोदा का रेलवे स्टेशन है। बड़ोदा राज्य के गुजरात प्रदेश में खंभात की खाड़ी से पूर्व (२२ अंश, १७ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अन्श, १६ कला पूर्व देशांतर में) विश्वामित्री नामक छोटी नदी के पूर्व बड़ोदा के महाराज की राजधानी और उस राज्य का प्रधान शहर बड़ोदा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय फौजी छावनी के साथ बड़ोदा शहर में ११६४२० मनुष्य थे; अर्थात् ६२८७१ पुरुष और ५३५४९ स्त्रियां। इनमें ९१९३८ हिन्दू, २०८७९ मुसलमान, २४ ५ जैन, ५८२ पारसी, ५०४ क्रस्तान, ३० यहूदी, ९ एनिमिष्टिक और ३ अन्य थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में २९ वां, बंबई हाते में चौथा और गुजरात में दूसरा शहर है।

रेलवे स्टेशन के पास २ धर्मशाले हैं, जिनमें से दीवान साहब की धर्मशाला बड़ी है। रेलवे स्टेशन से १ मील उत्तर फौजी छावनी और रेजीडेंसी; और छावनी से १ मील दक्षिण-पूर्व शहर है। छावनी और शहर के मध्य में शहर के पश्चिम विश्वामित्री नदी बहती है, जिस पर पत्थर के ४ पुल बने हुए हैं।

बड़ोदा का खास शहर शहरपनाह के भीतर १७ महल्लों में विभक्त है। वह शहरपनाह से बाहर नदी तथा छावनी की ओर पश्चिम को फैला है, जिसमें महाराज गायकवाड़ की सेना की रसद का मुहकमा है। सियाजी, रावजी, आपाजी, बप्पाजी, आनन्दराव, गंगाधरशास्त्री इत्यादि प्रसिद्ध लोगों के नाम से महल्लों के नाम हैं। उत्तर की शहर तलियों में १२ महल्ले हैं, जिनमें से फतहसिंह महल्ले में मृत महाराज खांडेजीराव के दीवान भाऊ सिंधिया का मकान, अस्तबल, गाड़ी के मकान, महाराज का हाथीखाना और

मल्लों के २ स्कूल हैं। पूर्व की शहरतली में, जिसमें अखाड़ा, जतुशाला और आनन्दराव का पुराना महल है, केवल ८ महल्ले हैं। दक्षिण की शहरतली में ११ महल्ले हैं, जिनमें से एक खंडोवा के मन्दिर का महल्ला कहलाता है।

शहर के अधिक मकान बहुत तंग हैं, किन्तु हाल में कई एक अत्युत्तम इमारतें बनी हैं। इस शदी में राजधानी बहुत बढ गई है। शहर तलियों में सरकारी तथा शरीफों के बहुत से अच्छे मकान बने हैं। शहरतली के पश्चिम और दक्षिण तरफ बगलों के साथ महाराज के सुन्दर बाग हैं। शहरतलियों में जेलखाना, सरकारी आफिस, हाईस्कूल, यमुनाबाई का अस्पताल, महाराज की लायब्रेरी, इत्यादि सुन्दर मकान हैं। बड़ोदे में रुई कातने की कल है; कपड़ा बुनने की मिल अर्थात् कल कारखाना बना हुआ है और बहुत कोठीवाल तथा जवाहिरी रहते हैं। महाराज की ओर से सदावर्त जारी है। जल कल ३५ लाख रुपये के खर्च से तैयार होकर सन् १८९२ में खुली। शहर से १८ मील दूर अजवा झील, जिसका क्षेत्रफल ४½ वर्गमील है, बनाई गई है, उसी से नलों द्वारा शहर में पानी आता है। रात्रि में पक्की सड़कों पर लालटेनों की रोशनी होती है।

शहर के गेंडाफाटक से ३ मील दक्षिण मकरपुरा में महाराज खंडेजीराव का बनवाया हुआ एक सुन्दर महल है। शहर से पूर्व ओर १४ मील डभोई का, २३ मील बहादुरपुर का और ३८ मील चंपानीर का किला है।

देवमंदिर—बड़ोदा शहर में विट्ठलजी का मन्दिर (जिसके खर्च के लिये महाराज की ओर से बहुतसी जागीर निकाली हुई है), गायकवाड के वंश की रक्षक खंडोबा देवी का मन्दिर, स्वामीनारायण का मन्दिर, सिद्धनाथ का मन्दिर, कालिका का मन्दिर, रामचन्द्र का मन्दिर, गोवर्द्धननाथजी का मन्दिर, बलदेवजी का मन्दिर, काशीविश्वेश्वर का मन्दिर, गणपतिजी का मन्दिर, बेचराजी का मन्दिर, भीमनाथ का मन्दिर, इत्यादि बहुत से देव मन्दिर हैं। भीमनाथ के मन्दिर के पास महाराज गायकवाड़ की ओर से ब्राह्मण लोग पुरश्चरण करते हैं। एक स्थान में दो शिव मन्दिर और बड़ोदा के राजा गोविंदराव और आनंदराव तथा रानी गेनाबाई और मृत मल्हार-

राव की रानी इन चारों की ४ छतरियां हैं। छतरियों में उनके संपूर्ण शरीर अथवा शरीर के एक भाग की प्रतिमा है। देवताओं के समान उनका मान्य किया जाता है। वहां उनकी प्रसन्नता के लिये बहुत से ब्राह्मण और ब्राह्मणियों को नित्यही खिचरी खिलाई जाती है।

बड़ोदा-कालिज--रेलवे स्टेशन से थोड़ी दूर आगे शहर के मार्ग में सड़क के बाएं बड़ोदा-कालिज की उत्तम इमारत है, जिसको वर्त्तमान बड़ोदा-नरेश ने बनवाया है। वह इमारत लगभग ४०० फीट लंबी और दोनों छोरों के पास तथा मध्य भाग में लगभग १२५ फीट चौड़ी है। उसके दोनों मंजिलों में चारो ओर मेहराबदार सुन्दर ओसारे बने हैं। इमारत के ऊपर ७ बड़े गुंबज हैं। उस कालिज में बी.ए. तक की शिक्षा दी जाती है।

बड़ा बाग—छावनी और शहर के बीच में एक उत्तम बाग है, जिसमें होकर विश्वामित्री नदी निकली है। बाग में भांति भांति के वृक्ष, पौधे और फूल लगे हुए हैं और जगह जगह फूलों और पत्तियों के गमलों की पंक्तियां सजी हुई हैं। फूल पत्तियों का एक बंगला है, जिसमें छोटी सड़कें निकाली गई हैं; उनके बगलों में भांति भांति के फूल पत्तियां लगी हैं तथा गमलें रक्खे हुए हैं। उस बाग में एक छोटा चिड़ियाखाना है, जिसमें बाघ, इत्यादि बनैले जंतु और अनेक भांति के पक्षी रक्खे हुए हैं।

खास शहर--खास शहर के चारो ओर प्रत्येक बगल में ½ मील लंबी पक्की दीवार है। चारो बगलों के मध्य में एक एक फाटक है। पूर्व के फाटक से पश्चिम के फाटक तक और उत्तर के फाटक से दक्षिण के फाटक तक सड़क बनी हुई हैं, जिससे शहर ठीक चार चौखुटे भाग में बंट गया है। मध्य में चारो सड़कों के मेल पर एक छोटा चौखुटा बंगला है, जिसके चारो ओर तीन तीन मेहराबियां बनी हुई हैं। उत्तर वाली सड़क के बगलों में महाराज पहिला सियाजी राव का बनवाया हुआ पुराना महल और अन्य लोगों के मकान तथा दुकानें और अन्य सड़कों के बगलों पर शहर के मकान और दुकाने हैं। शहरपनाह के बाहर चारो ओर शहरतलियां हैं। पश्चिम के फाटक से बाहर एक बड़ा तालाब है।

राजमहल—शहरपनाह के भीतर उत्तर वाली सड़क के दोनों बगलों में पहिला सियाजीराव गायकवाड़ का बनवाया हुआ तीन मंजिला राजमहल है। महल का विस्तार बड़ा है; किन्तु उसमें पुराने ढंग के छोटे छोटे कमरे तथा घुमाव की सीढ़ियां हैं।

नजरबाग का महल—राजमहल के पासही पूर्व नजरबाग नामक उत्तम उद्यान है। पूर्व वाली सड़क के बगल में बाग के दक्षिण का फाटक है। बाग में पक्की सड़कें बनी हैं और भांति भांति के वृक्ष, पौधे तथा फूल उत्तम रीति से लगे हैं।

नजरबाग में मृत महाराज मल्हारराव गायकवाड़ का बनवाया हुआ चौमंजिला महल है। कोई बड़े हाकिम अथवा राजा आते हैं तो उसी महल में उनकी स्वागत होती है। उस महल में महाराज के ३ किरोड़ रुपये से अधिक की जवाहिरात और भूषण रक्खे हुए हैं। महल के नीचे की मंजिल में मार्बुल का फर्श है। मै पहरे वालों से इजाजत लेकर ऊपर के मंजिलों में गया। ऊपर की मंजिलें राजसी सामान से सजी हैं। किसी जगह सीढ़ियों पर बनात बिछे हैं; किसी जगह गलीचे का फर्श है; किसी किसी स्थान में भांति भांति के सुन्दर टेबुल, बेंच, पलंग, आलमारी, आइने, सोने चांदी से भूषित कुर्शियां इत्यादि सामान रक्खे हुए हैं। छतों में सुनहरा रंग दिया हुआ है।

सोने और चांदी की तोपें—पूर्व वाली सड़क के दक्षिण बगल में नजर बाग के दक्षिण के फाटक से लगभग २० गज पूर्व एक अस्तबल के मकान में महाराज मल्हारराव गायकवाड़ की बनवाई हुई २ सोने की और २ चांदी की तोपें रक्खी हुई हैं। दो गाड़ियों पर, जिनमें चांदी के पत्तर जड़े हुए हैं, तीन तीन हाथ लंबी २ सोने की और दो गाड़ियों पर, जिनमें पीतल के पत्तर जड़े हुए हैं, तीन तीन हाथ से कुछ कम लंबी २ चांदी की तोपें रक्खी हैं। उस समय उस अस्तबल में अनेक गाड़ियां और पंदरह बीस घोड़े थे।

अखाड़ा—नजरबाग से पीछे शहर के पूर्व वाले फाटक के पास अखाड़ा

है, जिसमें समय समय पर हाथी, गेंड़े, भैंसे, भेड़े तथा मल्ल लड़ाये जाते हैं। वहां घेरे के भीतर एक बड़ा आंगन है। घेरे की दीवार में जगह जगह छोटे द्वार बने हैं। दीवार में लगा हुआ घेरे से बाहर एक ओर महाराज तथा सरदार लोगों के बैठने का मकान और तीन ओर साधारण दर्शकों के बैठने के लिये ऊंची छत है। आंगन के मध्य की बड़ी कोठरी में कई एक छोटे द्वार हैं। हाथियों तथा गेंड़ों की लड़ाई के समय आवश्यक होने पर लड़ाने वाले उन छोटे द्वारों से आंगन की कोठरी में चले जाते हैं अथवा दीवार के छोटे द्वारों से बाहर निकल जाते हैं।

हाथीखाना—चंपानीर फाटक से उत्तर, उत्तर की शहरतली में हाथीखाना है, जिसमें महाराज खांडेजीराव के समय लगभग १०० हाथी रहते थे; किंतु अब बहुत कम हाथी हैं। हमारे जाने के समय उसमें २३ हाथी थे। वहां हाथियों के रहने के लिये बड़ा घेरा बना हुआ है।

चंपानीर फाटक से थोड़ही दूर पर शहरपनाह से बाहर शेरशाह नामक बड़ा तालाब है। लड़ीपुरा फाटक के पास वाले सुरसागर नामक बड़े तालाब से उस तालाब तक लोहे की नल लगी है।

लक्ष्मीविलास महल—शहर से पश्चिम एक बड़े मैदान में वर्त्तमान बड़ोदा नरेश महाराज सर सियाजीराव बहादुर का बनवाया हुआ लक्ष्मीविलास नामक राजमहल है। महाराज ने २७ लाख रुपये के खर्च से उस महल को बनवाया है। रेलवे स्टेशन से वह महल विस्तृत भूमि पर शहर के मकानों से ऊंचा देख पड़ता है। महल का मध्य भाग ११ मंजिल का और चारो ओर के भाग तीनमंजिले चौमंजिले हैं, जिनमें स्थान स्थान पर बहुत गुम्बज बने हैं।

महल से ९० गज उत्तर बावली की शकल का नवलखा कूप है, उसका पानी धुएं की कल से उठा करके नाला द्वारा मोतीबाग, नजरबाग तथा शहर के अन्य स्थानों में पहुंचाया जाता है। महल के मैदान के पूर्व बगल में सड़क के पास की दो मंजिली और तीन मंजिली इमारतों में महाराज की न्याय विभाग की कचहरियां होती हैं तथा दफ्तर रहते हैं।

बड़ोदा का राज्य—यह राज्य गुजरात देश के अनेक भागों में और काठियावाड़ में है। राज्य के ४ डिवीजन अर्थात् विभाग हैं; जिनमें से (१) बड़ोदा विभाग में बड़ोदा, चोरंदा, पेटलाद, डभोई आदि ८ सबडिवीजन; (२) कादी विभाग में कादी, पाटन, बीजापुर, बीसनगर, देहगांव, सिद्धपुर, कलोल, महसाना आदि १० सबडिवीजन; (३) नौसारी विभाग में नौसारी, टोनगढ़ इत्यादि ८ सबडिवीजन; और (४) अमरेली विभाग में अमरेली, ऊखमंडल, धारी, इत्यादि ५ सबडिवीजन हैं। इनमें अमरेली विभाग के अतिरिक्त, जो काठियावाड़ में है, अन्य तीनों विभाग अंगरेजी राज्य और बड़ोदा को कर देने वाले छोटे प्रधानों के राज्यों में मिले हुए हैं। बड़ोदा के राज्य का क्षेत्रफल ८२२६ वर्गमील है। राज्य से महाराज को वार्षिक मालगुजारी एक किरोड़ ४० लाख रुपए आती है। बड़ोदा राज्य की आमदनी हैदराबाद को छोड़ करके हिंदुस्तान के संपूर्ण देशी राज्यों की आमदनी से अधिक है। बड़ोदा के महाराज को अंगरेजी गवर्नमेंट को 'कर' नहीं देना पड़ता है। बंबई हाते के अन्य देशी राजाओं के समान यह बंबई के गवर्नर के आधीन नहीं हैं; यह भारतवर्ष के गवर्नर जनरल के आधीन हैं। बड़ोदा का राज्य खुला हुआ मैदान है। उसमें सरस्वती, साबरमती, माही, नर्मदा, तापती, पूर्ना, केम इत्यादि बहुतसी नदियां बहती हैं। काठियावाड़ के अमरेली विभाग का ऊखमंडल सबडिवीजन, जिसमें द्वारिका है, तीन ओर से समुद्र से घेरा हुआ है। राज्य के प्रायः सब भागों में अच्छे अच्छे जलाशय और देवमन्दिर हैं। राजपिपला पहाड़ियों के अतिरिक्त राज्य के किसी भाग में पहाड़ियों का कोई सिलसिला नहीं है। काठियावाड़ के ऊखमण्डल सबडिवीजन को छोड़ कर के राज्य के प्रायः सब भूमि उपजाऊ है। बड़ोदा के राज्य में कपास बहुत होती है।

नौसारी सबडिवीजन के सोनागढ़ और सालेर में २ पहाड़ी किले हैं। सोनागढ़ से १० मील दक्षिण रूपागढ़ भी पहाड़ी किला है; किंतु उसमें फौज नहीं रहती है। इनके अलावे डभोई, बहादुरपुर और चंपानीर में भी किले

हैं। बड़ोदा राज्य के सोजिता गांव चाकू के लिए, डभोई पगड़ी और सारी के लिए और पाटन छूरी तथा मिट्टी के बर्तन के लिए प्रसिद्ध है।

बड़ोदा के राज्य में कई मेले होते हैं,—बड़ोदा विभाग में नर्मदा के किनारे पर चंद्रोदय में कार्तिक और चैत्र की पूर्णिमा को,राजपुताना मालवा रेलवे पर कलोल के स्टेशन से १४ मील पश्चिम काडी विभाग के काडी कसबे में साल में कई बार; सिद्धपुर से ८ मील दक्षिण काडी विभाग के ऊंझा कसबे में वर्ष में एक बार और वीरमगांव से २५ मील दूर काडी विभाग के पाटन सबडिवीजन में बचराजी के मन्दिर के पास आश्विन में मेला होता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बड़ोदा के राज्य में २४१५३९६ मनुष्य थे; अर्थात् १२५२९८३ पुरुष और ११६२४१३ स्त्रियां। इनमें २१३७-९६८ हिन्दू, १८८७४० मुसलमान, ५०३३२ जैन, २९८५४ जंगली जातियां, ८२०६ पारसी, ६४६ क्रस्तान, ३६ यहूदी, ११ सिक्ख और ३ अन्य थे। इनमें सैकड़े पीछे ९३ गुजराती भाषा वाले, ३½ उर्दू भाषा वाले, २ महाराष्ट्री भाषा वाले और १½ अन्य भाषा बोलने वाले थे। उस समय बड़ोदा राज्य के हिन्दू की जातियों में से नीचे लिखी हुई जातियों के लोग इस भांति पढ़े हुए थे;— प्रति हजार में ७९० प्रभु और ८७ उस जाति की स्त्रियां; ७७६ बनिया और ११ उनकी स्त्रियां; और ५५९ ब्राह्मण और २४ ब्राह्मणी।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय बड़ोदा राज्य में १९५४३९० हिन्दू थे, जिनमें ३९१९८४ कुन्बी, १३८५०६ ब्राह्मण, ७९८५३ राजपूत, ५७०२७ बनिया, १४८३५ मलाह इत्यादि और शेष में अन्य जातियों के लोग थे।

बड़ोदा राज्य के शहर और कसबे, जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय १०००० से अधिक मनुष्य थे;—बड़ोदा विभाग के बड़ोदा शहर में ११६४२०, पेटलाद में १५५२८, डभोई में १४५३९, सोजिता में ११४१२ और वासो में १०२७१, काडी विभाग के पाटन में ३२६४६, बीसनगर में २१३७६, काडी में १६३३१, सिद्धपुर में १६२२४, वाडनगर में १५९४१ और ऊंझा में ११८८७; नौसारी विभाग के नौसारी में १६२७६; और अमरेली विभाग के अमरेली में १५६५३।

बड़ोदा के राज्य में कपड़े और लोहे की चीजें तथा मिट्टी के बर्तन बहुत तैयार होते हैं। सैकड़ों आदमी दंगल कुस्ती के पेशे करते हैं। राज्य में ३५ से अधिक अस्पताल हैं। राज्य के ५११ स्कूलों में ५४००० से अधिक विद्यार्थी पढ़ते हैं, जिनमें बंबे की युनिवरसीटी के आधीन एक कालिज है। लड़कियों के ४२ स्कूलों में लगभग ५००० लड़कियां और स्त्रियों के ५ स्कूलों में लगभग २३० स्त्रियां पढ़ती हैं।

बड़ोदा राज्य के मामूली सैनिक विभाग में ३८ तोपें, सोने और चांदी की ४ तोपें, १५४ गोलंदाज, आरटिलरी की २ बैटरी, २५७ घोड़सवार सेना, और पैदल की ६ रेजीमेण्ट हैं। ये सब सेना अंगरेजी तरीके से सिखलाई गई हैं। इनके अलावे गैर मामूली फौज में लगभग ४४०० सवार और १८०० पैदल हैं। प्रति वर्ष मामूली फौज में लगभग ७५०००० रुपए और गैर मामूली फौज में लगभग २८००००० रुपए खर्च पड़ते हैं।

इतिहास—बड़ोदा के राजा लोग गायकवाड़ कहलाते हैं, जिसका अर्थ गाय के पालन वाला है। उनको अंगरेजी गवर्नमेंट की ओर से २१ तोपों की सलामी मिलती है। बड़ोदा के किसी राजा ने किसी समय अंगरेजों के विरुद्ध युद्ध नहीं किया था। सन् १७२०—१७२१ में केरूजीराव पटेल के पुत्र दामाजी पटेल ने बालापुर की लड़ाई में बड़ी वीरता दिखलाई। महाराज शिवाजी के पौत्र साहूजी ने, जिसकी राजधानी सतारा था, अपने सेनापति खांडेराव धवरे के मुख से दामाजी की प्रशंसा सुन कर उनको शमशेर बहादुर की पदवी से भूषित करके अपना सहायक सेनापति बनाया। थोड़ही दिनों के बाद दामाजी का देहांत होगया, तब उनके भतीज पीलाजी राव गायकवाड़ उनके पद पर नियुक्त होकर सेनापति के पुत्र त्र्यंबक धवरे के सहायक सेनापति बने।

सन् १७३१ में त्र्यंबक धवरे और पीलाजी पूना के पेशवा के शत्रु महाराष्ट्रों में मिल कर पेशवा के विरुद्ध खड़े हुए। तारीख पहिली अपरैल को बड़ोदा के पास लड़ाई हुई, जिसमें त्र्यंबक धवरे मारा गया और उसकी सेना परास्त हुई। उसके पश्चात् त्र्यंबक का बच्चा पुत्र यशवन्तराव सेनापति बनाया

गया और पीलाजी को सेना खास खैल की एक और पदवी मिली। शमशेर बहादुर और सेना खास खेल ए दोनों उपाधियां अब तक बड़ोदा के राजवंश में चली आती हैं। पीलाजी ने बादशाही अफसरों को संग्राम में परास्त करके गुजरात के बहुत से प्रधान नगरों को अपने अधिकार में कर लिया।

सन् १७३२ में मुगल बादशाह के कर्मचारी जोधपुर के राजा अभयसिंह ने पीलाजीराव को छल से मारडाला। उस समय पीलाजी के दो पुत्र थे; दामाजी और प्रतापराव, जिनमें से बड़े पुत्र दामाजी उत्तराधिकारी हुए, जिन्हों ने अपने ३६ वर्ष के अधिकार में मुगलों से संपूर्ण गुजरात देश छीन लिया था। सन् १७३२ में पीलाजी के भाई महाजी गायकवाड़ ने बड़ोदा नगर को अपने अधिकार में कर लिया, तब से वह शहर गायकवाड़ राजाओं की राजधानी है। सेआना होने पर यशवंतराव सेनापति के योग्य नहीं था, इसलिये धबरे वंश के स्थान पर दामाजी सेनापति नियत हुए। दामाजी ने सतारा की ताराबाई की, जो अपने पोते को पेशवा की आधीनता से निकाल कर स्वतंत्र बनाने का उद्योग करती थी, सहायता की; किंतु पेशवा ने दामाजी को छल से पकड़ लिया। जब दामाजी ने "राजकर" का १५ लाख बकाआ रुपया और अपने भविष्यजीत का आधा भाग देने को एकरार किया तब पेशवा ने उनको छोड़ दिया। उसके दूसरे वर्ष दामाजी ने अपने अधिकार में किए हुए काठियावाड़ देश का एक भाग पेशवा को दे दिया और आवश्यक समय में पेशवा की सहायता करने का एकरार किया। सन् १७५३ में अहमदाबाद जीता गया; उसकी मालगुजारी को दामाजी और पेशवा ने बांट लिया। सन् १७६१ में पानीपत की लड़ाई के समय एक बड़ी सेना दामाजी के आधीन थी। दामाजी ने अपने राज्य को बहुत बढ़ाया। सन् १७६८ में उनका देहांत होगया।

दामाजी की ३ स्त्रियां थीं;—पहिली स्त्री के पुत्र गोविंदराव, दूसरी के पुत्र सियाजीराव और फतहसिंह; और तीसरी स्त्री के पुत्र मानाजी थे। इनमें सियाजी और फतहसिंह बड़े पुत्र थे। दामाजी की मृत्यु के समय गोविंदराव पूना में थे। वह माधवराव पेशवा को नजर देकर अपने पिता

का उत्तराधिकारी बने। उधर बुद्धिमान फतहसिंह ने अपने भाई सियाजी-राव को बड़ोदा की गद्दी पर बैठा दिया और पूना में जाकर उनको राजा स्वीकार करने के लिये पेशवा माधवराव से विनय किया। माधवराव ने परस्पर के झगड़े मे उनके बल घटाने के निमित्त सियाजी को राजा स्वीकार कर लिया। गोविंदराव और फतहसिंह का परस्पर झगड़ा होने लगा। सन् १७८९ में जब फतहसिंह का देहांत होगया; तब मानाजी पेशवा को नजर देकर सियाजीराव के राज्य का प्रबंध करने लगे। सन् १७९३ में मानाजी की मृत्यु होने पर गोविंदराव उत्तराधिकारी बने, जिनको पेशवा ने अहमदाबाद के जिलों की मालगुजारी का अपना भाग ठीका दे दिया। सन् १८०० में गोविंदराव के देहांत होने पर पेशवा ने उनके पुत्र आनंदराव को उत्तराधिकारी स्वीकार किया।

सन् १८१५ में जब बड़ोदा के राजदूत प्रसिद्ध गंगाधर शास्त्री मारे गए तब से पेशवा और गायकवाड़ के बीच का संबंध टूट गया। पेशवा ने केवल ४ लाख रुपये वार्षिक खिराज स्वीकार करली। गायकवाड स्वतंत्र बन गए। सन् १८१७ में अंगरेजों ने पेशवा को परास्त किया; उस समय से गायकवाड़ अंगरेजों के करद मित्र बने।

सन् १८१९ में आनंदराव गायकवाड़ के देहांत होने पर उनके छोटे भाई सियाजीराव और सन् १८४७ में सियाजीराव की मृत्यु होने पर उनके बड़े पुत्र गणपतिराव राज्याधिकारी हुए। सन् १८५६ में गणपतिराव के अपुत्र मरने पर उनके भाई खांडेराव को राजसिंहासन मिला। सन् १८५७—५८ के बलवे के समय खांडेराव गायकवाड़ ने अंगरेजी सरकार की सहायता की, इस लिये उनकी खिराज, जो ३ लाख रुपये थी, सब माफ कर दी गई। सन् १८७० में खांडेराव के निपुत्र मरजाने के उपरांत उनके छोटे भाई मल्हारराव बड़ोदा के राजा हुए, जो खांडेराव को मारने के तद्बीर करने के अपराध में पहिले कई वर्षों तक राजकीय कैदी बन चुके थे। मल्हारराव ने सोने चांदी की ४ तोपें, हीरे का हार, हीरे की पगड़ी, मोतियों की झालर आदि बहुमूल्य वस्तु बनाकर अपनी उदारता का खूब परिचय दिया। उनसे बहुत

प्रजा असंतुष्ट होगई; राज्य में अप्रबंध फैला। उनके राज्य के ३ वर्ष के भीतरही अंगरेजी गवर्नमेंट ने उनके अप्रबंध के विचार करने के लिये एक कमीशन नियत किया। कमीशन की रिपोर्ट देने पर भारत गवर्नमेंट ने आज्ञा दी की महाराज मल्हारराव १७ महीने के भीतर अपना प्रबंध सुधारैं। उस अवधि के भीतरही सन् १८७४ में मल्हारराव पर अंगरेजी रेजीडेंट कर्नल आर फेयर को विष देने के उद्योग करने का संदेह हुआ। उसकी जांच के लिये ६ मेंबरों का एक कमीशन नियत हुआ, जिनमें से ३ ने महाराज को दोषी कहा। भारत गवर्नमेंट ने मल्हारराव को राज्य कार्य में अयोग्य समझ कर सन् १८७५ की २२ वीं अपरैल को पदच्युत करके मदरास भेज दिया। अंगरेज गवर्नमेंट की आज्ञा से महाराज खांडेराव की विधवा महारानी यमुना बाई ने खान देश के एक छोटे गांव के एक साधारण कृपक के पुत्र गोपालराव को दत्तक पुत्र बनाया। बड़ोदा राज्य के नियत करने वाले पीलाजीराव के पुत्र और दामाजीराव के छोटे भाई प्रतापराव थे, जिनके वंशधर गोपालराव हैं। जब दामाजीराव बड़ोदा के राजा हुए तब उनके भाई प्रतापराव अपनी हीन आर्थिक अवस्था के कारण खानदेश के किसी गांव में जा बसे। प्रतापराव से पांचवीं पीढी में काशीराव हुए; उन्हीं के पुत्र गोपालराव हैं। सन् १८७५ के २७ वीं मई को गोपालराव बड़ोदा के सिंहासन पर बैठाए गए, जो महाराज सर सियाजीराव गायकवाड़ सेना खास खेल शमशेर बहादुर जी० सी० एस० आई० के नाम से विख्यात हुए हैं। सन् १८८१ में उनको राज्यकार्य का पूर्ण अधिकार मिल गया। महाराज की अवस्था ३१ वर्ष की है। यह अंगरेजी आदि विद्याओं में अति निपुण हैं। कई बार विलायत से हो आए हैं। इनके राज्य में विद्या की बड़ी उन्नति हुई है। प्रति बड़े गांवों में एक स्कूल कायम होने का प्रबंध हुआ है।

———o———
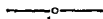
चौबीसवां अध्याय।

(बंबई हाते के गुजरात देश में) डाकोर, गोधड़ा, कांबे, नदियाड़, खेड़ा और अहमदाबाद।

डाकोर।

बड़ोदा के रेलवे स्टेशन से २२ मील उत्तर कुछ पश्चिम आनंद जंक्शन है, जहां से पूर्व कुछ उत्तर रेलवे लाइन अमरेठ, डाकोर, गोधड़ा, दोहद इत्यादि स्टेशन होकर रतलाम जंक्शन को गई है (अहमदाबाद के रेलवे की फिहरिस्त में देखिए)। बड़ोदा और आनंद के बीच में माही नदी पर रेलवे का पुल मिलता है। आनंद जंक्शन से पूर्व कुछ उत्तर १४ मील अमरेठ कसबे का रेलवे स्टेशन है। खेड़ा जिले में अमरेठ एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १६६३८ मनुष्य थे। अमरेठ से ९ मील और आनंद जंक्शन से १९ मील डाकोर कसबे का रेलवे स्टेशन है। बंबई हाते में गुजरात प्रदेश के खेड़ा जिले में (२२ अंश, ४९ कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, ११ कला, पूर्व देशांतर में)डाकोर एक छोटा कसबा तथा तीर्थ स्थान है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय डाकोर में ७७७१ मनुष्य थे; अर्थात् ७४०१ हिंदू, ३५४ मुसलमान, ८ जैन, ५ पारसी और ३ अन्य।

डाकोर में एक तालाब, जिसको गोमती तड़ाग कहते हैं; रणछोड़ भगवान का बड़ा मन्दिर; लिविक्रमजी का मन्दिर; एक अस्पताल और पोष्टआफिस है। डाकोर पश्चिमी भारत में यात्रा का एक प्रधान स्थान है। वहां मंदिरों में भगवान के भोगराग का बड़ा प्रबंध रहता था। प्रति महीने में वहां बहुत से यात्री जाते हैं। कार्तिक की पूर्णिमा को वहां बड़ा मेला होता है, जिसमें लगभग १००००० मनुष्य जाते हैं।

डाकोर की कथा–ऐसा प्रसिद्ध है कि बुढानभक्त नामक एक

ब्राह्मण, जिसको रामदास भी कहते हैं, डाकोर में रहता था। वह प्रति वर्ष गोमती द्वारिका में जाकर बड़ी श्रद्धा भक्ति से रणछोड़जी का दर्शन किया करता। संवत १२७२ (सन् १२१२ ईस्वी) में रणछोड़ भगवान ने उससे कहा कि हे विप्र ? तुम अति वृद्ध होगया; इस लिये यहां आने में तुमको क्लेस होता है। तुम आधीरात के समय गाड़ा लेआओ, मै तुम्हारे संग तुम्हारे नगर में चलूंगा। तुम वहांही हमारा दर्शन करते रहना। भगवान की आज्ञानुसार वह ब्राह्मण आधीरात में गाड़ा लाया। रणछोड़जी की मूर्ति गाड़ा पर विराजमान हुई। ब्राह्मण गाड़ा लेकर डाकौर में पहुंचा।

भोर होने पर गोमतीद्वारिका के पुजारी लोग बुढानभक्त पर संदेह करके रणछोड़जी को खोजते हुए डाकौर की ओर दौड़े। रणछोड़जी ने बुढानभक्त से कहा कि द्वारिका के पुजारी आते हैं; तुम मुझको तालाब में छिपा दो। ब्राह्मण ने वैसाही किया। पुजारियों ने जब बुढान भक्त के गृह में मूर्ति को नहीं पाया, तब तालाब में भाले से टटोल कर मूर्ति को निकाल लिया। भाले की नोक का चिन्ह मूर्ति के कटि स्थान में देख पड़ता हैं। बुढानभक्त ने पुजारियों से कहा कि तुम लोग मुझ से मूर्ति के बराबर सोना लेकर इसको छोड़ दो। पुजारियों ने लोभ वस यह बात स्वीकार की। ब्राह्मण बहुत से सोना लाकर मूर्ति को तौलने लगा, किन्तु मूर्ति का पलरा नहीं उठा। जब रणछोड़जी के स्वप्न के अनुसार उसने सब सोने को पलरे से उतार कर अपनी स्त्री के कान की बारी उस पलरे पर रक्खी, तब मूर्ति का पलरा उठ गया।

उस समय रणछोड़जी ने पुजारियों को स्वप्न दिया कि तुम लोग यहां से चले जाओ। गोमतीद्वारिका में गोमतीगंगा का माहात्म्य रहेगा। लाडुवा गांव के पास पृथ्वी के गर्भ में एक मेरी मूर्ति है। तुम लोग उसको निकाल कर बेटद्वारिका में स्थापित करो। मै नित्यही ७ पहर डाकौर में और १ पहर बेटद्वारिका में निवास करूंगा। पुजारियों ने भगवान की आज्ञानुसार लाडुवा गांव से मूर्ति को लाकर बेटद्वारिका में स्थापित किया। एक दूसरी मूर्ति गोमतीद्वारिका में स्थापित की गई।

गोधड़ा।

डाकोर के रेलवे स्टेशन से ३० मील (आनंद जंक्शन से ४९ मील) पूर्व कुछ उत्तर और बड़ोदा शहर से सड़कद्वारा ५२ मील पूर्वोत्तर गोधड़ा का रेलवे स्टेशन है। एक सड़क नीमच छावनी से गोधड़ा होकर बड़ोदा शहर को गई है। बंबई हाते के गुजरात देश में (२२ अंश, ४६ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, ४० कला पूर्व देशांतर में) पंचमहाल जिले तथा रेवाकंठा के पोलिटिकल एजंसी का सदर स्थान और जिले में सबसे बड़ा कसबा गोधड़ा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय गोधड़ा में १४६९१ मनुष्य थे; अर्थात् ७५३३ मुसलमान, ६४५२ हिंदू, ५२५ जैन, १०९ एनिमिष्टिक, ४६ पारसी और २६ क्रस्तान।

गोधड़ा कसबे के आसपास जंगल है। गोधड़ा में एक अस्पताल, ३ स्कूल, एक मातहत जेलखाना और सरकारी कचहरियां हैं। कसबे के पास एक बड़ा तालाब है, जिससे धान के खेत पटाए जाते हैं। गोधड़ा से ४५ मील पूर्व रेलवे स्टेशन के पास पंचमहाल जिले का दोहद कसबा है।

पंचमहाल जिला—यह गुजरात देश के पूर्वी विभाग में बारिया के राज्य द्वारा दो भागों में विभक्त है। दक्षिण-पश्चिम वाले भाग के उत्तर लोनवाड़ा, सुंथ और संजेली के राज्य; पूर्व बारिया का राज्य; दक्षिण बड़ोदा का राज्य और पश्चिम बड़ोदा का राज्य और माही नदी है; नदी के बाद खेड़ा जिला है और पंचमहाल जिले के पूर्वोत्तर वाले भाग के उत्तर चिलकारी और कुशालगढ़ का राज्य, दक्षिण पूर्व मालवा देश और अनासनदी, दक्षिण और पश्चिमो मालवा और पश्चिम सुंथ, संजेली और बारिया का राज्य है। जिले का सदर स्थान गोधड़ा है। जिले में गोधड़ा, कलोल और दोहद ये तीन सब-डिवीजन हैं। जिले के मध्य भाग में खास करके जंगल है। जिले में २५०० फीट से अधिक ऊंची कोई पहाड़ी नहीं है। पंचमहाल जिले में गुजराती भाषा प्रचलित है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय पंचमहाल जिले के १६१३ वर्गमील में २५५४७९ मनुष्य थे; अर्थात् १५९६२४ हिंदू, ७७८४० जंगली जातियां, १६०६० मुसलमान, १८६७ जैन, ४४ कृस्तान, ३० पारसी, ७ यहूदी और ७ अन्य। हिंदुओं में ८१७३७ कोली, ६०८६ ब्राह्मण, ५९३४ कुन्बी, ५५९५ राजपूत, ५०२३ महारा, २१७७ चमार, १८५८ नापित (नाई) और बाकी में अन्य जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पंचमहाल जिले के कसबे गोधड़ा में १४६९१ और दोहद में १२९३५ मनुष्य थे।

इतिहास-पंचमहाल जिले का इतिहास चंपानेर के इतिहास में सामिल है। चंपानेर अब पुराने शहर का खंडहर है। लगभग सन् ३५० से लगभग सन् १३०० ई० तक चपानेर अनहिलवाड़ा के तोमर राजपूतों का किला था। उसके पश्चात् सन् १४८४ तक चपानेर और उसके चारो ओर का देश चौहान राजपूतों के अधिकार में था। सन् १४८४ से सन् १५३६ तक चंपानेर गुजरात की राजधानी था। सन् १५३५ में दिल्ली के हुमायू ने चंपानेर शहर को लूटा। सन् १५३६ में अहमदाबाद गुजरात की राजधानी बना। १८ वीं शदी में महाराष्ट्रों ने जिले को अपने अधिकार में कर लिया। सन् १८५३ म अंगरेजी प्रबन्ध हुआ। सन् १८६१ में सिंधिया ने अंगरेजी गवर्नमेण्ट से झासी के पास की भूमि लेकर पंचमहाल उनका दे दिया। यह देश रेवाकंठा के पोलिटिकल एजेण्ट के आधीन रक्खा गया। सन् १८७७ में पंचमहाल एक अलग जिला कायम हुआ। एक समय गोधड़ा कसबा अहमदाबाद के मुसलमान बादशाहों के राज्य के एक भाग का सदर-स्थान था।

कांबे।

आनंद जंक्शन से दक्षिण-पश्चिम १४ मील की रेलवे शाखा पेटलाद तक गई है। पेटलाद बड़ोदा के राज्य में सबडिवीजन का सदर-स्थान और एक तिजारती कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १५५२८ मनुष्य थे; अर्थात् १०९८२ हिन्दू, ४२०३ मुसलमान, ३१८ जैन, २० पारसी

और ९ कृस्तान। यहां पुलिस-स्टेशन, जेलखाना, अस्पताल, स्कूल, कष्टम हौस और मुसाफिरों के लिये सराय हैं।

पेटलाद कसबे से १९ मील दक्षिण-पश्चिम बंबई हाते के गुजरात देश में कांबे की खाड़ी के सिर के पास (२२ अंश, १८ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ४० कला पूर्व देशांतर में) माही नदी के मुहाने से उत्तर कांबे नामक देशी राज्य की राजधानी कांबे क़सबा है, जिसको खंभात भी कहते हैं। *

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कांबे कसबे में ३१३९० मनुष्य थे, अर्थात् १५२७३ पुरुष और १६११७ स्त्रियां। इनमें २०९५२ हिन्दू, ७४६६ मुसलमान, २८२५ जैन, १३५ पारसी और १२ कृस्तान थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह (बड़ोदा राज्य को छोड़ कर के) बंबई हाते के देशी राज्यों में ६ वां कसबा है।

पहिले कसबे के चारो ओर ईंटे की दीवार का ३ मील का घेरा था। अब तक किसी किसी जगह दीवार के हिस्से और उसके पास के टावर देखने में आते हैं। नवाब का महल, जिसकी बनावट अच्छी नहीं है, अच्छे प्रकार से मरम्मत है। महम्मदशाह के राज्य के समय सन् १३२५ की बनी हुई जामामसजिद है, जिसमें जैन-मन्दिर के खंभे लगे हुए हैं। बहुतेरी इमारतों के खंडहर कांबे के पूर्व के विभव को जनाते हैं। कांबे में लकड़ी और पत्थर की चीजें अच्छी तैयार होती हैं। यहां के बने हुए भूषण बहुत सुन्दर होते हैं। यहां समुद्र के साधारण ज्वार का पानी २५ फीट और बड़े ज्वार का पानी ३३ फीट ऊंचा होता है, इस कारण से यहां जहाजों के आने में बड़ा भय रहता है और माही तथा साबरमती नदी की मिट्टी आने से कांबे की खाड़ी में पानी कम होगया है, इस लिए कांबे कसबे के पास जहाज नहीं आसकते, इन्हीं कारणों से कांबे की तिजारत अब घट गई है।

कांबे का राज्य—गुजरात के पश्चिमी भाग में कांबे की खाड़ी के पास कांबे का राज्य है। इसके उत्तर खेड़ा जिला, पूर्व खेड़ा जिला और प-

* पेटलाद से कांबे तक रेलवे बनगई। पेटलाद से १८ मील कांबे का रेलवे स्टेशन है।

ड़ोदा के राज्य का पेटलाद सबडिवीजन और दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम कांवे की खाड़ी है। बड़ोदा के राज्य और अंगरेजी राज्य के कई गांव कांवे के राज्य के भीतर तथा कांवे के राज्य के चंद गांव अंगरेजी राज्य के खेड़ा जिले में हैं। देश खुला हुआ मैदान है। भूमि उपजाऊ है। गुजराती भाषा प्रचलित है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय कांवे राज्य के ३५० वर्गमील क्षेत्रफल में २ कसबे ८३ गांवों और ८६०७४ मनुष्य थे, अर्थात् ७०७०८ हिन्दू, १२४१७ मुसलमान और २९४९ अन्य। कांवे के नवाब मुगल खांदन के सीया मुसलमान हैं। उनको अंगरेजी गवर्नमेण्ट की ओर से ११ तोपों की सलामी नियत है। नवाब को लगभग ६२५००० रुपया वार्षिक मालगुजारी आती है, जिसमें से महसूल इत्यादि छोड़ करके २६००० रुपए अंगरेज महाराज को राज कर दिया जाता है। उनका सैनिक वल २०० सवार और ९०० पैदल हैं। नवाब जाफरअलीखां साहब बहादुर, जिनकी अवस्था लगभग ४२ वर्ष की है, कांवे का वर्तमान नवाब हैं।

इतिहास—एक मुसाफिर ने सन् ९१३ में कांवे को देखा था। जान पड़ता है कि ११ वीं और १२ वीं शदी में कांवे अनहिलवाड़ा राज्य के प्रधान बंदरगाहों में से एक था। सन् १२९७ में जब मुसलमानों ने अनहिलवाड़ा राज्य को जीता तब कांवे हिन्दुस्तान के सबसे बड़े धनी कसबों में से एक था। सन् १३०४ में दिल्ली के अलाउद्दीन ने कांवे कसबे को लूटा और वहां के मन्दिरों को बरबाद किया। १५ वीं शदी में गुजरात के मुसलमान बादशाहों के आधीन गुजरात की उन्नति के साथ कांवे की फिर उन्नति हुई। १६ वीं शदी के आरम्भ में वह भारतवर्ष में तिजारत का एक प्रधान केन्द्र बना था। सन् १६१३ में जब अंगरेज लोग आए, तब पोर्चुगाल औ हालेण्ड वाले अपनी अपनी कोठी वहां कायम कर चुके थे। पीछे सूरत की बढ़ती होने से कांवे की घटती आरंभ हुई। कांवे के वर्तमान नवाब का मूल पुरुष मोमिनखां गुजरात के अंतिम गवर्नर से पहिले गुजरात का गवर्नर था। उस समय मोमिनखां का दामाद निजामखां कांवे का हाकिम था। सन् १७४२

में मोमिनखां के मरने पर उसके एक मुफ्तखारखां ने दगा से निजामखां को मार कर कांबे को अपने अधिकार में कर लिया। १८ वीं शदी में महाराष्ट्रों ने कांबे को लूटा था।

नड़ियाद।

आनंद जंक्शन से ११ मील (बड़ोदा शहर के स्टेशन से ३३ मील) पश्चिमोत्तर और अहमदाबाद के रेलवे स्टेशन से २९ मील दक्षिण पूर्व नड़ियाद का रेलवे स्टेशन है। बम्बई हाते के गुजरात प्रदेश में (२२ अन्श, ४० कला, ४८ विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अन्श, ५९ कला, २० विकला पूर्व देशांतर में) खेड़ा जिले में नड़ियाद सबडिवीजन का सदर स्थान और उस जिले में सबसे बड़ा कसबा नड़ियाद है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय नड़ियाद में २९०४८ मनुष्य थे, अर्थात् १९०४२ पुरुष और १६००६ स्त्रियां। इनमें २४८४१ हिन्दू, ३८७४ मुसलमान, २३२ जैन, ५२ पारसी और ४९ कृस्तान थे।

नड़ियाद में सब जज की कचहरी, खफीफा कचहरी, एक हाईस्कूल, एक अस्पताल और एक रूई का कल कारखाना है। यहां तंबाकू और घी की बड़ी तिजारत होती है।

खेड़ा।

नड़ियाद से ११ मील (बड़ोदा शहर से ४४ मील) पश्चिमोत्तर और अहमदाबाद जंक्शन से १८ मील दक्षिण पूर्व महम्मदाबाद का रेलवे स्टेशन है। सन् १४७९ में अहमदाबाद के महम्मद बेगड़ा ने महम्मदाबाद को बसाया था। उसकी बनवाई हुई भंवरबावली महम्मदाबाद में विद्यमान है। यह बावली ७८ फीट लम्बी और २८ फीट चौड़ी है। चक्करदार सीढ़ियों से नीचे जाना होता है। नीचे ८ कमरे बने हुए हैं। बावली में पत्थर की २ मेहराविंयां हैं, जिनमें बादशाह का झूलन लगता था।

महम्मदाबाद के स्टेशन से ८ मील दक्षिण पश्चिम खेड़ा कसबे तक सुन्दर सड़क बनी है। बम्बई हाते के गुजरात प्रदेश में (२२ अन्श, ४४ कला, ३०

विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अन्श, ४४ कला, ३ विकला पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान खेड़ा कसबा है, जिसको कैरा भी कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय खेड़ा कसबे में १०१०१ मनुष्य थे; अर्थात् ६४९७ हिन्दू, २१९० जैन, १३९२ मुसलमान, १२ सिक्ख और १० कृस्तान।

खेड़ा कसबे में सरकारी कचहरियों के सुन्दर मकान बने हुए हैं। कचहरी के पास एक बड़ा जैन-मन्दिर; पूर्व वाले फाटक के बाहर जेलखाना और दक्षिण के फाटक के बाहर घड़ी का बुर्ज और लायब्रेरी है। इनके अलावे खेड़ा में १ अस्पताल और चार पांच सरकारी स्कूल हैं। खेड़ा जंगली मुहकमें के कलक्टर का सदर स्थान है। वहां उस मुहकमें के हाकिमों के मकान बने हुए हैं। खेड़ा में सारी और देशी लोगों के पहनने के कपड़े बहुत छापे जाते हैं।

खेड़ा जिला—गुजरात के उत्तरीय विभाग में खेड़ा जिला है। इसके उत्तर अहमदाबाद जिला और एक छोटा देशी राज्य; पश्चिम अहमदाबाद जिला और कांबे का राज्य और दक्षिण तथा पूर्व माही नदी और बड़ोदा का राज्य है। जिले में गुजराती भाषा प्रचलित है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय खेड़ा जिले के १६०९ वर्गमील क्षेत्रफल में ८०४८०० मनुष्य थे, अर्थात् ७२०८६६ हिन्दू, ७२९५४ मुसलमान, ९६०३ जैन, १०४१ कृस्तान, १३१ पारसी, ७ यहूदी और १९८ पहाड़ी जातियां इत्यादि। हिन्दुओं में २७१३४४ कोली (खेतिहर), १४३१५१ कुन्बी (खेतिहर), ४२८०० महारा और धेर, ४१४९९ ब्राह्मण, २८७३३ राजपूत, १०८७३ चमार, १०८५९ हजाम, ८९८२ कुंभार और बाकी में अन्य जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय खेड़ा जिले के कसबे नड़ियाद में २९०४८, आनंद में १५६३८, कपड़वंज में १४८०५, बोरसाद में १२१५९ और खेड़ा में १०१०१ मनुष्य थे। डाकोर कसबा भी इसी जिले में है।

इतिहास–खेड़ा कसबा बहुत पुराना है। लोग कहते हैं कि यह महाभारत के समय में था। तांबे के दानपत्र से निश्चय होता है कि ५ वीं शदी में खेड़ा विद्यमान था। सन् ७४६ से सन् १२९० तक खेड़ा जिला राजपूत राजाओं के अधिकार में था, जिनमें अनहिलवाड़ा के राजा अधिक प्रसिद्ध थे। १४ वीं शदी के अन्त में खेड़ा जिला अहमदाबाद के मुसल्मानों के आधीन हुआ। सन् १५७३ में अकबर ने उसको ले लिया। सन् १७२० से उस जिले में महाराष्ट्र और मुसलमान सूबेदार परस्पर झगड़ा करते रहे। सन् १७५३ में दामाजीराव गायकवाड़ ने खेड़ा कसबे और जिले को जीता; तब पेशवा तथा गायकवाड़ ने जिले को बांट लिया। अंगरेजी सरकार ने सन् १८०२ में पेशवा से खेड़ा जिले का हिस्सा, सन् १८०३ में आनन्दराव गायकवाड़ से खेड़ा कसबा और खेड़ा जिले का एक भाग और सन् १८१७ में गायकवाड़ से खेड़ा जिले का शेष भाग ले लिया। सन् १८३० तक खेड़ा कसबे की छावनी में अंगरेजी सेना रहती थी।

अहमदाबाद।

महम्मदाबाद से १८ मील (बम्बई शहर के कुलाबा के स्टेशन से ३१० मील) उत्तर अहमदाबाद का रेलवे स्टेशन है। बम्बई हाते के गुजरात प्रदेश में साबरमती नदी के बायें अर्थात् पूर्व किनारे पर (२३ अंश, १ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ३८ कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) जिले का सदर-स्थान और जिले में सबसे बड़ा शहर अहमदाबाद है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय फौजी छावनी के साथ अहमदाबाद शहर में १४८४१२ मनुष्य थे; अर्थात् ७६६३० पुरुष और ७१७८२ स्त्रियां। इनमें १०२६१९ हिन्दू, ३०९४६ मुसलमान, १२७४७ जैन, १०३१ कृस्तान, ७२३ पारसी, १५६ एनिमिष्टिक, १५३ यहूदी और ३७ अन्य थे। मनुष्य गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में १८ वां, बंबई हाते में तीसरा और गुजरात में पहला शहर है।

अहमदाबाद शहर से "बंबे बड़ोदा और सेंट्रल इण्डियन रेलवे" ३ ओर गई है, जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २ पाई लगता है,—

(१) अहमदाबाद से पश्चिम दक्षिण क वाढ़वान तक "बंबे बड़ोदा और सेंट्रल इण्डियन रेलवे" और उससे आगे काठियावाड़ के देशी राजाओं की रेलवे हैं;—

अहमदाबाद से पश्चिम ४० मील वीरमगांव जंक्शन, ५७ मील पत्री और ६२ मील खारागोडा।

वीरमगांव जंक्शन से पूर्वोत्तर ४१ मील महसाना जंक्शन और पश्चिम दक्षिण ३९ मील वाढ़वान जंक्शन।

वाढ़वान जंक्शन से दक्षिण-पश्चिम ५२ मील वंकानीर जंक्शन, ७७ मील राजकोट, १०१ मील गोंडल और १२४ मील जितलसर जंक्शन।

वंकानीर जंक्शन से उत्तर १६ मील मोरवी।

जितलसर जंक्शन से पश्चिम १० मील धोराजी, २१ मील उपलेटा और ७८ मील पोरबंदर, जितलसर से दक्षिण १७ मील जूनागढ़, २४ मील शाहपुर ३९ मील केशोद और ६८ मील विरावलबंदर और जितलसर से पूर्व ३ मील जेतपुर, ५६ मील लाठी, ८० मील धोला जंक्शन, ९३ मील सोनगढ़, ९८ मील सिहोर कसबा और ११२ मील भावनगर।

धोला जंक्शन से उत्तर ५५ मील लिंबडी, ६८ मील वाढ़वान कसबा और ७२ मील वाढ़वान जंक्शन।

(१) वाढ़वान जंक्शन से रेलवे के मख सिद्ध स्टेशनों के फासिले;—

वाढवान से दक्षिण ४ मील वाढवान शहर, १७ मील लिंबडी और ७२ मील धोला जंक्शन।

धोला जंक्शन से पूर्व १३ मील सोनगढ़, १८ मील सिहोर कसबा, २९ मील भावनगर का तिकट स्टेशन और ३२ मील भावनगर का स्टेशन और धोला जंक्शन से पश्चिम २४ मील लाठी, ७७ मील जेतपुर और ८० मील जितलसर जंक्शन।

(२) अहमदाबाद जंक्शन से उत्तर पा-

लनपुर और पालनपुर से पूर्वोत्तर अजमेर जंक्शन,—

मील-प्रसिद्ध स्टेशन।

४ साबरमती।

१६ कलोल।

४३ महसाना जंक्शन।

५६ ऊंझा कसबा।

६४ सिद्धपुर।

८३ पालनपुर जंक्शन।

११५ आबूरोड।

२१८ मारवाड़ रेलवे जंक्शन।

२५१ हरिपुर।

२७२ बियावर।

३०५ अजमेर जंक्शन।

महसाना जंक्सन से पश्चिमोत्तर २५ मील पाटन; पूर्वोत्तर १३ मील वीसनगर कसबा, २१ मील बाड़नगर कसबा और २८ मील खेरालू, और दक्षिण पश्चिम ४१ मील वीरमगांव जंक्शन।

पालनपुर जंक्शन से पश्चिमोत्तर १७ मील डीसा।

मारवाड़ रेलवे जंक्शन से जोधपुर बीकानेर रेलवे पर उत्तर कुछ पश्चिम ४४ मील लूनी जंक्शन और ६५ मील जोधपुर महलका स्टेशन।

लूनी जंक्शन से पश्चिम ६० मील पंचभद्रा।

जोधपुर से पूर्वोत्तर २८ मील पिपारारोड, ६३ मील मर्तारोड जंक्शन, १३६ मील कुचामनरोड, १५१ मील सांभर और १५५ मील फाटीकुई जंक्शन।

मर्तारोड जंक्शन से उत्तर कुछ पश्चिम १०३ मील बीकानेर।

(३) अहमदाबाद से दक्षिण,—

मील प्रसिद्ध स्टेशन।

१८ महम्मदाबाद।

२९ नडियाद।

४० आनन्द जंक्शन।

६२ बड़ोदा।

६४ विश्वामित्री जंक्शन।

८१ मियागाव जंक्शन।

१०६ भड़ौंच।

११२ अंकलेश्वर।

१४३ सूरत।

१६१ नवसारी।

१८५ बलसर।

१९५ उदवादा।
२०१ दमनरोड।
२१५ संजान।
२७७ वेसीनरोड।
२८२ भयंदर।
२८८ बोरवली।
२९२ गुरगांव।
२९९ वादरा कसवा।
३०० महीम।
३०२ दादर।
३०७ चरनी रोड।
३१० बंबई व कुलावा।

आनन्द जंक्शन से पूर्व कुछ उत्तर १४ मील अमरेठ कसवा, १९ मील डाकौर, ४९ मील गोधरा, ९४ मील दोहद कसवा और १६४ मील रतलाम जंक्शन और आनन्द जंक्शन से पश्चिम-दक्षिण १४ मील पेटलाद कसवा।

विश्वामित्री जंक्शन से पूर्व १२ मील डभोई जंक्शन और २१ मील बहादुरपुर।

मियागांव जंक्शन से पूर्वोत्तर २० मील डभोई जंक्शन; डभोई से दक्षिण १० मील चंद्रोदय और पूर्व ९ मील बहादुरपुर।

अहमदाबाद में रेलवे स्टेशन के पास धर्मशाला है। रेलवे सड़क के पश्चिम और साबरमती नदी के पूर्व १५ फीट से २० फीट तक ऊंचे शहरपनाह के भीतर २ वर्गमील के क्षेत्रफल में अहमदाबाद का खास शहर है। शहरपनाह की दीवार में प्रायः ५० गज के अन्तर पर पाया बने हुए हैं और चारो ओर १२ फाटक हैं,— पूर्व ओर सारंगपुर, कालूपुर और प्रेमभाई फाटक; उत्तर दरियापुर, दिल्ली और शाहपुर फाटक, पश्चिम खांपुर और भद्र फाटक और दक्षिण जमालपुर, स्टोरिया और राजपुर फाटक। इनके अलावे २ छोटे फाटक हैं।

शहर में अनेक चौड़ी सड़कें बनी हैं। मिउनिसपल्टी की सीमा के भीतर २८ मील से अधिक लम्बी गाड़ी चलने के लायक सड़क हैं। प्रधान सड़क शहर के आरपार उत्तर से दक्षिण को गई है। एक सड़क, जो बगलों के फुटपाथों के साथ ४० फीट चौड़ी है, पश्चिम से पूर्व को गई है। सड़कों पर

रात में लालटेनों की रोशनी होती है । सड़कों के बगलों में सुन्दर मकान और दुकानें बनी हुई हैं । शहर में १४ बाजार हैं । शहर के मध्य भाग के खुले हुए स्थान में गल्ले का बड़ा बाजार है।

शहर में लगभग १२५ जैनमन्दिर और अनेक हिंदूमन्दिर हैं । हिंदू मन्दिरों में स्वामीनारायण का मन्दिर सबसे बड़ा है । जामामसजिद, रानी सिप्री, दस्तूरखां, अहमदशाह, मुहाफिजखां, हैबतखां, सैयदआलम, मलिकआलम, सीदीसैयद, फुतबशाह,सैयदउसमानी, मियांखां चिश्ती, सीदीबसीर, अहमदखूम इत्यादि लोगों की बहुतसी मसजिदें और पहिला अहमदशाह, शाहआलम, आजिम और मवजिम, दरियाखां, असमखां मीरआबुल अजीरूद्दीन इत्यादि के मकबरे हैं । इनके अलावे २ लायब्रेरी, जिले की कचहरियां, अस्पताल, पागलखाना, कोढ़ीखाना, दवाखाना, ४ लड़कियों के स्कूल १४ लड़कों के स्कूल और लगभग १०० खानगी स्कूल हैं ।

शहर तथा उसके आस पास भी बहुत सी दर्शनीय वस्तु हैं,—माता भवानी का पुराना कूप, दादाहरि का कूप, काकरिया झील, शांतिदास का मन्दिर, अजीमखां का महल,जो अब जेलखाने के काम में आता है, इत्यादि।

शहर से ३½ मील पूर्वोत्तर फौजी छावनी है । शहर और छावनी के बीच में उत्तम सड़क बनी है । सड़क के बगलों में वटवृक्षों की मनोरम श्रेणी हैं। नित्य शाम को बहुत लोग वहां हवा खाने जाते हैं । दिल्ली फाटक से ८०० गज दक्षिण २ गिरजे और शहर से ५ मील दक्षिण पश्चिम साबरमती के दूसरे पार सरखेज.है । माधवपुर शहरतली में बहुत निजराती लोग रहते हैं । रेलवे स्टेशन से पूर्व सारसपुर नामक एक सुन्दर शहरतली है, उसके चारो ओर दीवार है । सारसपुर में चिंतामणि का उत्तम जैनमंदिर है, जिसको सन् १८६८ में शांतिदास नामक धनी सौदागर ने पुराने जैन मन्दिर के स्थान पर ९ लाख रुपये के खर्च से बनवाया । अहमदाबाद के चारो ओर १२ मील में दिलचस्प तवाड़ियां हैं।

मद्र फाटक के समीप के जेलखाने के पास एक कोठरी में कालीजी की मूर्ति है। फाटक से बाहर के साबरमती का पुल टूट गया है । नदी के तीर

पर अपने अपने कपड़े धोती हुई स्त्रियों के झुंड देख पड़ते हैं, जिनमें अनेक पुरुष भी कपड़े धोते हैं।

उसमानपुर के सामने से साबरमती नदी का पानी जल कल द्वारा शहर में आता है। प्रति वर्ष शहर में छोटे बड़े लगभग २५ मेले होते हैं। अहमदाबाद के सोनार, ठठेरे, जवाहिरी, बढ़ई, कुंभार, संगतरास, कागज बनाने वाले और हाथीदांत के काम बनाने वाले कारीगर प्रसिद्ध हैं। यहां देव मूर्तियों के भूषण बक्स, सूत के कपड़े, सुनहरी रेशमी कमख्वाब, सोना चांदी के लैस, गलीचे, चमड़े की ढाल इत्यादि वस्तु अत्युत्तम तैयार होती हैं। यद्यपि अहमदाबाद की दस्तकारियां पहिले से अब कम हैं, तथापि यहां के बहुत लोगों का निर्वाह उन्हीं से होता है। शहर में बड़े बड़े कोठीवाल रहते हैं। अनेक भांति के बहुत से कल कारखाने हैं, जिनमें १२ से अधिक केवल कपड़े बीनने के हैं।

लगभग ३५० वर्ष हुए अहमदाबाद शहर में बिनोदीराम ब्राह्मण के गृह दादूपंथी संप्रदाय के नियत करने वाले दादूजी का जन्म हुआ था। भारत-भ्रमण-पहिला खंड-चौदहवें अध्याय के निराना में दादूजी का वृत्तान्त लिखा हुआ है।

स्वामीनारायण का मंदिर–शहर के पूर्वोत्तर भाग में, शहर के उत्तर के दरियापुर नामक फाटक से दक्षिण जाने वाली चौडी सड़क के किनारे के पास सन् १८५० का बना हुआ, स्वामीनारायण का विशाल मन्दिर है। मन्दिर का गुम्बज अठपहला है। मन्दिर में भोगराग की बड़ी तैयारी रहती है; उसके खर्च के लिये भारी आमदनी का प्रबंध है। १९ वीं शदी में स्वामीनारायण की संप्रदाय चली है। इस संप्रदाय के नियत करने वाले स्वामीनारायण नामक ब्राह्मण सन् १८२५ के पीछे तक थे। गुजरात और काठियावाड़ के अनेक नगरों में स्वामीनारायण के मन्दिर बने हुए हैं। स्वामीनारायण की आज्ञानुसार उनके मन्दिर में कोई स्त्री नहीं जाने पाती है।

मन्दिर के पास पिंजरापोल नामक पशुशाला है, जिसमें धार्मिक लोगों के चंदे से लगभग १००० जानवर पाले गये हैं। एक कमरे में कीड़े भी हैं। उसके

दक्षिण ओर नवगजपीर नामक ९ कबरें हैं। प्रत्येक कबर १८ फीट लंबी है। लोग कहते हैं कि ये कबरें अहमदाबाद शहर बसने के समय से बहुत पहिले की हैं।

मोहाफिजखां की मसजिद—स्वामीनारायण के मन्दिर से पश्चिमोत्तर शहर के उत्तर के दिल्ली फाटक में दक्षिण मोहाफिजखां की मसजिद है, जिसको सन् १४६५ में महम्मदबेगडा के सूबेदार जमालुद्दीन मोहाफिजखां ने बनवाया था। उसकी मीनार सुन्दर हैं। यह मसजिद यहां की सब मसजिदों से अधिक मरम्मत है।

हाथीसिंह का जैन मंदिर—शहर के उत्तर के दिल्ली फाटक से लगभग ६०० गज उत्तर, सड़क से पूर्व, हाथीसिंह का बड़ा जैन मन्दिर है। वह मन्दिर सन् १८४८ में १० लाख रुपये के खर्च से तैयार हुआ था। लगभग १३० फीट लंबे और १०० फीट चौड़े आंगन में जैनों के १५ वां तीर्थंकर धर्मनाथजी का उत्तम मन्दिर है। मन्दिर के नीचे का भाग मार्बुल से बना हुआ है। मन्दिर में धर्मनाथजी की मार्बुल की सुन्दर प्रतिमा बैठी है, उसके सिर पर नकली हीरों से भूषित सुनहरा मुकुट है। मन्दिर के आगे के जगमोहन अर्थात् पेशगाह में उत्तम नक्काशी का काम बना है। मन्दिर और जगमोहन में श्वेत तथा नील रंग के मार्बुल के टुकड़ों से फर्श बना है और रंगदार बेश कीमती पत्थरों की पच्चीकारी से फूल बेल बनाए गए हैं।

आंगन के चारो बगलों में दीवार के स्थान पर एकही तरह के ५३ शिखरदार मंदिर हैं। प्रति मंदिर में एक, दो अथवा तीन मार्बुल की जैन मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं। उनको छाती, कंधाओ इत्यादि अंगो पर रत्न और सोने जड़े हुए हैं। सब मन्दिरों में पीतल अथवा लोहे के जालीदार छोटे किवाड लगे हैं। मन्दिरों के आगे आंगन की तरफ सुन्दर ओसारे हैं। मन्दिर के घेरे के आगे एक विश्राम गृह और एक दूसरा मकान है।

हाथीसिंह के मन्दिर से लगभग १ मील पूर्वोत्तर दादाहरि का प्रसिद्ध कुआं और उससे पूर्वोत्तर असरवागांव में माता भवानी का सुंदर कुआं है।

नया जैनमंदिर—शहर के भीतर एक सड़क के बगल में एक सुंदर

जैन मन्दिर है। एक घेरे के भीतर खास मन्दिर है। उसके आगे की दीवार में अनेक द्वार बने हुए हैं। मन्दिर में प्रति द्वार के सामने मार्बुल की एक जैन मूर्ति है, जिनमें से मध्य के द्वार के सामने की मूर्ति बड़ी है। मंदिर के आगे सुन्दर जगमोहन और बाकी तीन बगलों में परिक्रमा के मार्ग के बाद की दीवार में पंक्ति से बड़े बड़े ताक बने हुए हैं, जिनमें जैन तीर्थकरों की मार्बुल की प्रतिमा प्रतिष्ठित हैं। उनकी छाती आदि अंगों पर सोना अथवा रत्न जड़े हुए हैं। ताकों के जालीदार द्वारों से मूर्तियां देख पड़ती हैं।

अहमदशाह का मकबरा—शहर के मध्य भाग में दरियापुर फाटक और कालूपुर फाटक की सड़क के मेल के पास अहमदाबाद शहर को कायम करने वाला अहमदशाह का मकबरा है। पहिले एक पेशगाह, जिसमें १८ स्तंभ लगे हैं, मिलता है। मकबरे के मध्य का कमरा ३६ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा है। अनेक रंग के मार्बुल के टुकड़ों से फर्श बना हुआ है। मकबरे में अहमदशाह की नकली कबर है; उसके उत्तर उसके पुत्र महम्मदशाह की कबर और दक्षिण उसके पोते कुतबशाह की कबर है।

अहमदशाह के मकबरे से लगभग १५० फीट पूर्व अहमदाबाद की उत्तम इमारतों में से एक अहमदशाह की स्त्रियों का मकबरा हीन दशा में विद्यमान है। उसमें ८ बड़ी और कई एक छोटी कबरें हैं। मकबरे के आगे आंगन और अगवास की इमारत है।

जुमामसजिद—अहमदशाह के मकबरे से दक्षिण-पश्चिम प्रधान सड़क (मानिक चौक) के दक्षिण बगल में जुमामसजिद नामक एक उत्तम मसजिद है, जिसको अहमदाबाद के बसाने वाले अहमदशाह ने सन् १४२४ में बनवाया था। एक बड़े आंगन के पश्चिम बगल में खास मसजिद और तीन बगलों में मेहराबदार ओसारे और मध्य में पानी से भरा हुआ एक छोटा हौज है। संपूर्ण आंगन में पत्थर का फर्श है। पूर्व के भाग के एक घेरे में अहमदशाह की कबर है। उत्तर बगल में सड़क के दक्षिण किनारे पर सदर् दरवाजा है।

खास मसजिद में २६० जैन स्तंभ लगे हैं। उसके ऊपर मध्य में १ बड़ा

दक्षिण ओर नवगजपीर नामक ९ कबरें हैं। प्रत्येक कबर १८ फीट लंबी है। लोग कहते हैं कि ये कबरें अहमदाबाद शहर बसने के समय से बहुत पहिले की हैं।

मोहाफिजखाँ की मसजिद—स्वामीनारायण के मन्दिर से पश्चिमोत्तर शहर के उत्तर के दिल्ली फाटक से दक्षिण मोहाफिजखां की मसजिद है, जिसको सन् १४६५ में महम्मदबेगडा के सूबेदार जमालुद्दीन मोहाफिजखां ने बनवाया था। उसकी मीनार सुन्दर हैं। यह मसजिद वहां की सब मसजिदों से अधिक मरम्मत है।

हाथीसिंह का जैन मंदिर—शहर के उत्तर के दिल्ली फाटक से लगभग ६०० गज उत्तर, सड़क से पूर्व, हाथीसिंह का बड़ा जैन मन्दिर है। यह मन्दिर सन् १८४८ में १० लाख रुपये के खर्च से तैयार हुआ था। लगभग १३० फीट लंबे और १०० फीट चौड़े आंगन में जैनों के १५ वां तीर्थंकर धर्मनाथजी का उत्तम मन्दिर है। मन्दिर के नीचे का भाग मार्बुल से बना हुआ है। मन्दिर में धर्मनाथजी की मार्बुल की सुन्दर प्रतिमा बैठी है, उसके सिर पर नकली हीरा से भूषित सुनहरा मुकुट है। मन्दिर के आगे के जगमोहन अर्थात् पेशगाह में उत्तम नकाशी का काम बना है। मन्दिर और जगमोहन में श्वेत तथा नील रंग के मार्बुल के टुकड़ों से फर्श बना है और रंगदार बेश कीमती पत्थरों की पचीकारी से फूल बेल बनाए गए हैं।

आगन के चारो बगलों में दीवार के स्थान पर एकही तरह के ५३ शिखरदार मंदिर हैं। प्रति मंदिर में एक, दो अथवा तीन मार्बुल की जैन मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं। उनको छाती, कपाल इत्यादि अंगो पर रत्न और सोने जड़े हुए हैं। सब मन्दिरों में पीतल अथवा लोहे के जालीदार छोटे किवाड़ लगे हैं। मन्दिरों के आगे आंगन की तरफ सुन्दर ओसारे हैं। मन्दिर के घेरे के आगे एक विश्राम गृह और एक दूसरा मकान है।

हाथीसिंह के मन्दिर से लगभग १ मील पूर्वोत्तर दादाहरि का प्रसिद्ध कुआं और उससे पूर्वोत्तर असरवागांव में माता भवानी का सुंदर कुआं है।

नया जैनमंदिर—शहर के भीतर एक सड़क के बगल में एक सुंदर

जैन मन्दिर है। एक घेरे के भीतर खास मन्दिर है। उसके आगे की दीवार में अनेक द्वार बने हुए हैं। मन्दिर में प्रति द्वार के सामने मार्बुल की एक जैन मूर्ति है, जिनमें से मध्य के द्वार के सामने की मूर्ति बड़ी है। मंदिर के आगे सुन्दर जगमोहन और बाकी तीन बगलों में परिक्रमा के मार्ग के बाद की दीवार में पंक्ति से बड़े बड़े ताक बने हुए हैं, जिनमें जैन तीर्थंकरों की मार्बुल की प्रतिमा प्रतिष्ठित हैं। उनकी छाती आदि अंगों पर सोना अथवा रत्न जड़े हुए हैं। तांकों के जालीदार द्वारों से मूर्तियां देख पड़ती हैं।

अहमदशाह का मकबरा—शहर के मध्य भाग में दरियापुर फाटक और कालूपुर फाटक की सड़क के मेल के पास अहमदाबाद शहर को कायम करने वाला अहमदशाह का मकबरा है। पहिले एक पेशगाह, जिसमें १८ स्तंभ लगे हैं, मिलता है। मकबरे के मध्य का कमरा ३६ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा है। अनेक रंग के मार्बुल के टुकड़ों से फर्श बना हुआ है। मकबरे में अहमदशाह की नकली कबर है; उसके उत्तर उसके पुत्र महम्मदशाह की कबर और दक्षिण उसके पोते कुतबशाह की कबर है।

अहमदशाह के मकबरे से लगभग १५० फीट पूर्व अहमदाबाद की उत्तम इमारतों में से एक अहमदशाह की स्त्रियों का मकबरा हीन दशा में विद्यमान है। उसमें ८ बड़ी और कई एक छोटी कबरें हैं। मकबरे के आगे आंगन और अगवास की इमारत है।

जुमामसजिद—अहमदशाह के मकबरे से दक्षिण-पश्चिम प्रधान सड़क (मानिक चौक) के दक्षिण बगल में जुमामसजिद नामक एक उत्तम मसजिद है, जिसको अहमदाबाद के बसाने वाले अहमदशाह ने सन् १४२४ में बनवाया था। एक बड़े आंगन के पश्चिम बगल में खास मसजिद और तीन बगलों में मेहराबदार ओसारे और मध्य में पानी से भरा हुआ एक छोटा होज है। संपूर्ण आंगन में पत्थर का फर्श है। पूर्व के भाग के एक घेरे में अहमदशाह की कबर है। उत्तर बगल में सड़क के दक्षिण किनारे पर सदर दरवाजा है।

खास मसजिद में २६० जैन स्तंभ लगे हैं। उसके ऊपर मध्य में १ बड़ा

और चारो ओर १४ छोटे गुम्बज हैं। नीचे मार्बुल का फर्श है, जो पुराने होने के कारण बहुत उदास होगया है। मार्बुल के तख्ते पर अरबी अक्षर में मुसल्मानी मत की शिक्षा का शिला लेख है। सन् १८१९ के भूकंप के समय मसजिद के दोनों बड़े मीनारों के ऊपर के भाग गिर गए, अब इनकी ऊंचाई ४४ फीट से अधिक नहीं है।

जुमा मसजिद से पश्चिम ओर प्रधान सड़क पर अहमदशाह का बनवाया हुआ 'तीन दरवाजा" है। इसमें सुन्दर नक्काशी का काम बना हुआ है। दरवाजे की छत सन् १८७७ में तोड़ दी गई।

अहमदशाह को मसजिद—तीन दरवाजे से दक्षिण पश्चिम शहर के पश्चिम की दीवार के पास के मानिकबुर्ज के दक्षिण पूर्व अहमदशाह की मसजिद है। उसको अहमदशाह ने जुमामसजिद से पहिले सन् १४१४ म बनवाया था।

रानी सिप्री की मसजिद—शहर के दक्षिण के ग्रोरिया फाटक से उत्तर अहमदशाह की पतोहू रानी सिप्री की सुन्दर मसजिद है। मसजिद के पास उसका मकबरा है। दोना सन् १४३१ में बने। मसजिद के दो मीनार लगभग ५० फीट ऊंचे हैं।

रानी सिप्री की मसजिद से पश्चिम दस्तूरखां की मसजिद है, जिसको अहमदाबाद क महम्मदबेगड़ा के मंत्रिया ने बनवाया था। उसके चंद गज पूर्व आसाभील का, जिसके नाम से पहिले अहमदाबाद का नाम असावल था, घेरा है। वहां पूर्व काल में भील राजा आसा का किला था।

कांकरिया झील—शहर के दक्षिण के रायपुर फाटक से १ मील दक्षिण पूर्व ७२ एकड़ भूमि पर दर्शनीय कांकरिया झील है, जिसको लोग हौजी कुतुब भी कहते हैं। उसको अहमदाबाद के सुलतान कुतुबुद्दीन ने सन् १४५१ में बनवाया था। वह झील ३४ पहल का गोलाकार है, उसका प्रत्येक पहल ६३ गज लम्बा है; इस हिसाब से उसका घेरा २१४२ गज अर्थात् लगभग १¼ मील लंबा होता है। झील के सब पहलो में नीचे से ऊपर तक पत्थर की सीढ़ियां बनी हुई हैं, ऊपर चारो ओर सड़क है।

झील के मध्य में लगभग ७५ गज लम्बा और इतनाही चौड़ा टापू है। झील के दक्षिण किनारे से टापू तक २५० गज लंबी सड़क बनी है, जिसके किनारों पर छोटे छोटे वृक्ष लगे हैं और फूलों के गमले रक्खे हुए हैं। टापू पर नगीना नाम की छोटी फुलवाड़ी और घटामंडल नामक छोटा बंगला है। टापू के मध्य में दमकला का छोटा हौज है। अहमदाबाद के कलक्टर साहब ने सन् १८७२ में झील की मरम्मत करवाई और शहर के राजपुर नामक फाटक तक एक सड़क बनवादी।

शाहआलम—कांकरिया झील से १½ मील दक्षिण पश्चिम बतवारोड के पास शाहआलम नामक प्रसिद्ध जगह है। वहां एक बहुत बड़े आंगन के पश्चिमोत्तर के कोने में बड़ी मसजिद, दक्षिण-पूर्व के कोने में शाह आलम का मकबरा, दक्षिण पश्चिम के कोने में शाह आलम के खांदान के लोगों का मकबरा और पूर्वोत्तर के कोने में पेशगाह के साथ एक कमरा और आंगन के बीच में पानी का हौज है। आंगन में पत्थर का फर्श है। उत्तर बगल में दोहरी फाटक है।

मसजिद के भीतर ८ स्तंभों की ४ पंक्तियां और उसके आगे के दोनों कोनों के पास ९० फीट ऊंचे दो मीनार हैं। उस मसजिद को महम्मद सालेह ने बनवाया; उसके मीनारों का काम निजायतखां ने आरम्भ किया और सयफखां ने समाप्त किया।

शाहआलम का मकबरा गुम्बजदार है। उसकी दीवार दोहरी है। बाहर की चारो ओर की दीवार में २८ मेहराबियां बनी हुई हैं, जिनमें किसी किसी में किसी धातु की जालीदार टट्टियां और किसी किसी में जालीदार कपाट हैं। भीतर की दीवार में, जो कबर के चारो ओर है, २० खंभे लगे हैं और चारो ओर एक एक जालीदार दरवाजा है। मकबरे में काले और उजले मार्बुल का फर्श है। मार्बुल के चौखट लगे हैं। शाह आलम अहमदाबाद के सुलतान महम्मद बेगड़ा का उपदेशक था; वह सन् १४९५ में मर गया। महम्मद बेगड़ा की कचहरी का सरदार ताजखां नारियाली ने इस

मकबरे को बनवाया। जहांगीर की बीबी नूरजहां के भाई आसफखां ने १७ वीं सदी में मकबरे के गुम्बज को बेश कीमती पत्थर और सोना से संवारा।

शाहआलम के मकबरे के सामने पश्चिम बड़े घेरे के दक्षिण-पश्चिम के कोने में शाह आलम के मकबरे के नकशे का दूसरा मकबरा है, जिसमें शाह आलम के खांदान के लोगों की कबरें हैं।

आजिम और मवजिम का मकबरा—शहर के दक्षिण के जमालपुर फाटक से कई मील दक्षिण-पश्चिम साबरमती नदी के दूसरे पार अर्थात् उससे पश्चिम सरखेज की इमारतों के बनाने वाले प्रधान कारीगर आजिम और मवजिम दोनों भाइयों का बड़ा मकबरा है, जो सन् १४५७ में बना था। लोग कहते हैं कि वे दोनों खुरासान से आए थे।

उस मकबरे से कई सौ गज दूर सरखेज में अहमदाबाद के सुलतान महम्मद बेगड़ा आदि के मकबरे हैं। फाटक होकर आंगन में जाने पर बाईं ओर महम्मद बेगड़ा और उसके लड़कों का बड़ा मकबरा देख पड़ता है, जिसके पास तालाब के किनारे पर महम्मद बेगड़ा की स्त्री राजाबाई का एक उमदा मकबरा है। दहिनी ओर सुलतान अहमदशाह के उपदेशक शेख अहमदखट्टू गंजबखस का उत्तम मकबरा और एक मसजिद है। वह मकबरा गुजरात के उस किसिम के सब मकबरों से बड़ा है। उसके ऊपर मध्य में बड़ा गुम्बज और उसके बगलों में बहुत से छोटे गुम्बज हैं। अठपहले घेरे के भीतर, जिसमें पीतल की जालीदार खिड़कियां हैं, कबर है। मार्बुल का फर्श है। गुंबज के तल में सुन्दर मुलामा है। दरवाजे पर सन् १४७३ का पारसी लेख है। मकबरे से लगी हुई १८ खंभों पर १० गुंबज की मसजिद है। गंजबखस सन् १४४५ में अति वृद्ध होकर मरा। उसके स्मरणार्थ मकबरा और मसजिद बनाई गई। उसकी कबर के दक्षिण उसके चेले शेख सहाबुद्दीन की कबर है।

महम्मद बेगड़ा ने १७ एकड़ भूमि पर तालाब बनवाया; उसके चारो ओर सीढ़ियां बनाई और उसके दक्षिण-पश्चिम के कोने के पास एक सुन्दर महल बनाया, जो हीन दशा में विद्यमान है। तालाब में घड़ियाल रहते हैं। उससे थोड़ा दक्षिण बाबा अलीशेर का छोटा मकबरा है। १७ वीं सदी में सरखे-

स नील के लिए बहुत प्रसिद्ध था। सन् १६२० में हालैंड वालों ने वहां एक कोठी कायम की।

साबरमती नदी—अहमदाबाद शहर के पश्चिम साबरमती नदी बहती है। शहर के पास उसकी चौड़ाई लगभग ५०० गज से ६०० गज तक है। नदी सर्वदा नाव चलने के योग्य नहीं रहती। गर्मी के दिनों में उसमें केवल दो तीन फीट गहरा पानी रह जाता है। अहमदाबाद जिले में साबरमती के किनारे पर नीलकण्ठ महादेव, खड्गधारेश्वर महादेव और भीमनाथ महादेव के ३ प्रसिद्ध शिवालय हैं। उस जिले में वह सबसे बड़ी नदी है। यह नदी पूर्वोत्तर में अर्वली पहाड़ से निकल कर दक्षिण पश्चिम को बहती हुई। लगभग २०० मील बहने के उपरांत कांबे की खाड़ी में गिरती है। बहुतसी छोटी नदियां उसमें मिली हैं। उस नदी का शुद्ध नाम साभ्रमती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—पद्मपुराण—(उत्तरखंड, १३५ वां अध्याय) कश्यपजी ने अर्बुद अर्थात् अर्वली पर्वत में, जहां पवित्र सरस्वती नदी थी, अनेक वर्षों तक भारी तप किया था। मुनि गणों ने उनसे प्रार्थना की कि तुम हम लोगों के हित के लिए यहां गंगा को लाओ। कश्यपजी ने अर्बुद वन में सरस्वती नदी के तीर पर तप आरम्भ किया और अन्य ऋषि गण भी शिव की आराधना करने लगे। शिवजी प्रकट होकर बोले कि हे कश्यप! तुम इच्छित वर मांगो। कश्यपजी ने कहा कि हे भगवन्! तुम मुझको अपने सिर में स्थित पवित्र गंगा को दो। तब शिवजी ने अपनी एक जटा से गंगा को दिया। कश्यपजी गंगा को अपने आश्रम में ले गये। उस समय से कश्यपजी के आश्रम का नाम केशरध्र तीर्थ और गंगा का नाम काश्यपीगंगा हुआ। काश्यपीगंगा के दर्शन मात्र से ब्रह्महत्यादि पाप छूट जाते हैं। उसका नाम सतयुग में कृतवती, त्रेता में गिरिकर्णिका द्वापर में चंदना और कलियुग में साभ्रमती रहता है। उसके तीर पर बहुत से महर्षि निवास करते हैं। उसके जल में सम्पूर्ण तीर्थों का वास है। उसके पास श्राद्ध करने से पितरों का शीघ्रही उद्धार होजाता है। उसके तीर पर ब्रह्मचारीश और गंगाधर शिव-

लिंग और राजखड्ग नामक पवित्र तीर्थ है, जिसमें स्नान करने से ब्रह्महत्यादि पाप छूट जाते हैं।

(१३६ वां अध्याय) साभ्रमती नदी नंदीकुण्ड से निकल कर अर्बुद पर्वत को लांघ कर आगे गई है। नंदीकुण्ड के पास कपालमोचन तीर्थ और कपालेश शिवलिंग है। (१३७ वां अध्याय) साभ्रमती नदी नदी मन्दश से विकिर्ण वन में जाकर पर्वतों के किनारों को काटती हुई ७ धाराओं में विभक्त होकर दक्षिण ओर समुद्र में जामिली है। सातो धाराओ के नाम ये हैं,—१ साभ्रमती, २ सेटिका, ३ वरिकनी, ४ हिरण्या, ५ हस्तिमती, ६ वेत्रवती और ७ वीं भद्रामुखी। (१३८ वां अध्याय) मातृतीर्थ के समीप साभ्रमती में स्नान करने से मातृ मण्डल में निवास होता है। साभ्रमती और गोखुरा के सगम में स्नान करने वाले को करोड़ यज्ञ करने का फल मिलता है। (१४७ वा अध्याय) साभ्रमती के तीर पर खड्ग तीर्थ में स्नान करके खड्गधारेश्वर शिव के दर्शन करने से मनुष्य को स्वर्ग लोक मिलता है। खड्गधारेश्वर की पूजा कार्तिक में करने से मनोवाञ्छित फल मिलता है और वैशाख में करने से राज्य लाभ होता है। (१७०वा अध्याय) समुद्र और साभ्रमती के सगम में स्नान करने से महापातकों का नाश होजाता है। यहा श्राद्ध करने से मनुष्य का ब्रह्महत्या पाप छूट जाता है और पितर लोक में निवास होता है। (१७२ वां अध्याय) साभ्रमती के तीर पर नीलकण्ठ तीर्थ में नीलकण्ठ महादेव हैं। उनके दर्शन और पूजन करने से मनोवांच्छित फल लाभ होता है तथा मुक्ति मिलती है।

अहमदाबाद जिला—गुजरात देश में अहमदाबाद जिला है। इसके उत्तर बडोदा के राज्य का उत्तरी भाग, पूर्वोत्तर माहीकठा एजेंसी; पूर्व एक देशी राज्य और खेडा जिला; दक्षिण पूर्व कांबे की खाडी, दक्षिण और पश्चिम काठियावाड़ प्राय द्वीप है। जिले की सीमाओ के भीतर बडोदा और काठियावाड़ के राज्यों के अनेक गाव हैं और इस जिले के गावों के अनेक ब्रूद जिले की सीमाओ के बाहर हैं। जिले में दक्षिणी सीमा के पास और उत्तरी सीमा के बाहर कई एक चट्टानी पहाड़ियां हैं। प्रधान नदी साबरमती है। पश्चिम भाग के अलावे, जहां का पानी बहुत खारा है, जिले में सर्वत्र कूप हैं,

जिनमें से बहुतेरों में २५ फीट के नीचे पानी है। जगह जगह जलाशय भी हैं। अहमदाबाद शहर से लगभग ३७ मील दक्षिण पश्चिम वीरमगांव सबडिवीजन में ५० वर्गमील क्षेत्रफल में एक बड़ी झील है, जिसमें कई एक छोटे टापू बने हैं। जिले के पूर्वोत्तर भाग में थोड़ा जंगल है। जिले की मवेसियां बहुत उत्तम होती हैं। जिले में गुजराती भाषा प्रचलित है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय अहमदाबाद जिले के ३८२१ वर्गमील क्षेत्रफल में ८५६३२४ मनुष्य थे; अर्थात् ७२९४९३ हिंदू, ८३९४२ मुसलमान, ३८४७० जैन, १९९६ जंगली, १५३८ कृस्तान ६५२ पारसी और २३३ यहूदी। हिंदुओं में १७६२६८ कोली, १०९६९० कुन्बी, ४८६५८ राजपूत, ४३००० ब्राह्मण, ४०६२६ महारा, २०५५५ कुम्भार, १५३७७ चमार, ११६५९ लोहार और बाकी में अन्य जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय अहमदाबाद जिले के कसबे अहमदाबाद में १४८४१२, वीरमगांव में २३२०९, धोलका मे १६४९४, और धोलेरा में १००८८ मनुष्य थे। इनके अलावे धंधुक, परांतिज, गोगो, मुरासा और सानंद छोटे कसबे हैं।

इतिहास—पहिले पहल अनहिलवाड़ा के राजपूत राजाओं ने (सन् ७४६—१२९७) अहमदाबाद जिले की भूमि जोतवाने का प्रबंध किया था। वहां के राजाओं के प्रबल होने के समय भी जिले का बड़ा भाग अर्द्ध स्वाधीन भीलों के दस्तगत था।

सन् १४११ में सुलतान अहमद ने, जिसका राज्य सन् १४१३ से १४४३ तक था, हिंदुओं के पुराने नगर असावल के पास, जो शहर के दक्षिणीय भाग में विद्यमान है, अहमदाबाद के शहरपनाह का काम आरंभ किया। सन् १४८६ में महम्मदशाह बेगड़ा ने शहरपनाह को दुरस्त करवाया। सन् १५११ तक आबादी और धन में शहर बढ़ा चढ़ा था। सन् १५१२ से १५७२ तक गुजरात के मुसलमान बादशाहों के प्रताप की घटती के साथ साथ शहर की घटती हुई। सन् १५७३ में दिल्ली के अकबर ने अहमदाबाद के तीसरा

मुजफ्फरशाह के राज्य के समय गुजरात के साथ अहमदाबाद को जीत कर अपने अधिकार में कर लिया। भील लोगों ने भी उनकी आधीनता स्वीकार की। फिर शहर की उन्नति होने लगी। १६ वीं और १७ वीं शदी में अहमदाबाद पश्चिमी भारत के प्रताप शाली शहरो में से एक था। फिरिस्त में लिखा है कि अहमदाबाद में ३६० महल्ले अलग अलग दीवारो से घेरे हुए थे। लोग कहते हैं कि उस समय शहर में लगभग ९ लाख मनुष्य वसते थे। यहां १८ वीं शदी के आरंभ में दिल्ली का अधिकार नाम मात्र रह गया। बहुतेरे मुसल्मान और महाराष्ट्र प्रधान अहमदाबाद के लिये झगड़ने लगे। शहर की घटती होने लगी। सन् १७३८ में दामाजी गायकवाड और मुहिमखां मुगल ने अहमदाबाद शहर को ले लिया। उसके पश्चात् जब पेशवा ने दामाजी को कैद कर लिया, तब मुगल के कर्मचारियों ने संपूर्ण शहर पर अपना अधिकार जमाया; किंतु जब दामाजी कैद से छूट कर आए तब उन्हों-ने रघुनाथराव की फौज की सहायता लेकर सन् १७५३ में शहर को फिर ले लिया। सन् १७५७ में मुहीमखा महाराष्ट्रों से शहर को फिर पाया। सन् १८०३ में अहमदाबाद जिले में अंगरेजी अधिकार हुआ। सन् १८१७ में गायकवाड ने अंगरेजों को अहमदाबाद शहर और उस जिले के बाकी हिस्से को, जो उनके और पेशवा के हिस्से में थे, देदिया। सन् १८१८ की पहिली जनवरी को अहमदाबाद एक अलग जिला बनाया गया। उस समय से शहर की फिर बढती होने लगी। सन् १८३२ में अंगरेजी सरकार ने २५०००० रुपये के खर्च से शहर की दीवार की मरम्मत कराई। सन् १८७५ में नदी की बाढ़ से अहमदाबाद शहर के ३८८७ मकान टूट गए और लगभग ६००००० रुपये की वस्तुओं की हानि हुई।

गुजरात देश—बंबई हाते में सिंध देश से दक्षिण (काठियावाड़ प्रायद्वीप के साथ) गुजरात नामक प्रसिद्ध देश है। उसके उत्तर राजपूताना, पूर्व विन्ध्य और सतपुडा पहाडी के भाग, दक्षिण कोंकन और पश्चिम समुद्र है। उसमें सूरत, भडोच, खेडा, पंचमहाल और अहमदाबाद ये ५ अंगरेजी जिले, जिनका क्षेत्रफल १०१९८ वर्गमील है, और बड़ोदा का राज्य

गुजराती वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ अं अः

અ આ ઇ ઈ ઉ ઊ ઋ ૠ ઌ એ ઐ ઓ ઔ અં અઃ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द

ક ખ ગ ઘ ઙ ચ છ જ ઝ ઞ ટ ઠ ડ ઢ ણ ત થ દ

ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह ळ क्ष ज्ञ

ધ ન પ ફ બ ભ મ ય ર લ વ શ ષ સ હ ળ ક્ષ જ્ઞ

का कि की कु कू के कै को कौ कं कः १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

કા કિ કી કુ કૂ કે કૈ કો કૌ કં કઃ ૧ ૨ ૩ ૪ ૫ ૬ ૭ ૮ ૯

तथा बंबे गवर्नमेंट के आधीन के काठियावाड़, माहीकंठा, रेवाकंठा, कांबे, पालनपुर इत्यादि देशी राज्य हैं, जिनका क्षेत्रफल ६९८८० वर्गमील है। अंगरेजी जिले और देशी राज्यों दोनों का क्षेत्रफल ७००३८ वर्गमील है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय अंगरेजी पांचों जिलों में २८५७७३१ और बड़ोदा आदि गुजरात के देशी राज्यों में ६९२२०४९ तथा अंगरेजी जिलों और देशी राज्यों दोनों में ९७७९७८० मनुष्य थे। कभी कभी काठियावाड़ को छोड़ कर बाकी देश को, जिसका क्षेत्रफल ४१५३६ वर्गमील है, गुजरात देश कहते हैं। गुजरात देश कपास के उपज और उत्तम गवेसिगों के लिये प्रसिद्ध है (गुजरात का इतिहास बंबई के इतिहास में लिखा हुआ है)। इसी देश में सुप्रसिद्ध स्वामी दयानंद सरस्वतीजी का जन्म हुआ था।

स्वामी दयानंद सरस्वती का संक्षिप्त जीवनचरित्र–गुजरात के काठियावाड़ के मोरवी नगर में अवदीच्य ब्राह्मण के घर सन् १८२४ ई० में स्वामीदयानंद सरस्वतीजी का जन्म हुआ। उनके पिता अंबाशंकर एक प्रतिष्ठित जिमीदार थे। पिता ने उनका नाम मूलशंकर रक्खा और बाल्यावस्थाही में उनको रुद्री और शुक्ल यजुर्वेद प्रारंभ करा दिया। जब मूलशंकर की अवस्था २० वर्ष की हुई, तब उनके चचा का, जो उनसे बड़ा स्नेह रखते थे, देहांत होगया। उस समय से उनके चित में मनुष्य संबंधी अनेक प्रश्न उत्पन्न होने लगे और उनके मन में वैराग उत्पन्न हुआ। जब उनके पिता उनके विवाह का उद्योग करने लगे, तब उन्होंने प्रतिज्ञा की कि मैं कभी विवाह न करूंगा। जब व्याह का दिन एक मास रह गया, तब मूलशंकर चुपके निकल कर ईधर उधर भ्रमण करने लगे। भ्रमण करते हुए उनको साधु रूप धारी कई एक ठग मिले, जिनमें से एक ने उनकी अंगूठियां ठगली और दूसरे ने, जो एक रानी को निकाल लाया था, उनसे ठट्ठा करना आरंभ किया, इसलिये मूलशंकर किसी जगह न ठहर कर सिद्धपुर के बड़े मेले में चलेगए। उनके पिता अंबाशंकर ने उनका समाचार पाकर सिद्धपुर में जाकर एक मन्दिर में उनको पकड़ा। उन्होंने मूलशंकर की कौपीन फाड़ डाली तथा तूंबा तोड़ डाला। चौथे दिन रात्रि में मूलशंकर अर्थात् स्वामी दयानंद सरस्वती

वहांसे भाग निकले। उसके पश्चात् उन्होंने कई एक महात्माओं से मिल कर योगाभ्यास किया। उसके उपरांत वह भ्रमण करते हुए अलकनंदा नदी के निकास के स्थान में पहुंचे। उस समय उन्होंने विचार किया कि हिमालय की बर्फ में गल कर प्राण त्याग करें; किंतु फिर शोचा कि बिना ज्ञान प्राप्त किए हुए मरना पाप है, इसलिये विद्या प्राप्त करनी चाहिए। ऐसा विचार वह वहां से मथुरा में आए। उस समय मथुरा में स्वामी विरजानंद नामक ८१ वर्ष का एक महान् विद्वान, जो दोनों आंखों से अन्धे थे, रहते थे। उनको प्राचीन आर्य ग्रन्थों के अतिरिक्त नवीन ग्रन्थों पर श्रद्धा न थी। स्वामी दयानंदजी ने उनसेही विद्याभ्यास आरंभ किया। अमरलाल नामक एक धर्मात्मा पुरुष ने स्वामीजी के नित्य के भोजनादि का प्रबंध कर दिया। स्वामी दयानंदजी ने अढ़ाई वर्ष मथुरा में रह कर स्वामी विरजानंदजी से महाभाष्य, वेदांतसूत्र, अष्टाध्यायी इत्यादि ग्रन्थ समाप्त किए। जब वह भेंट के लिये कुछ लौंग के दाने लेकर अपने गुरूजी से विदा मांगने गए, तब स्वामी विरजानंदजी ने उनको आज्ञा दी कि जो वेदविद्या संसार से उठ गई है,तुम उसका प्रचार करो, मत मतांतरो को दूर कर के देश का सुधार करो और मनुष्य कृत ग्रन्थों पर, जिसमें परमेश्वर और ऋषियो की निंदा भरी है, विश्वास मत करो। स्वामी दयानंदजी गुरु की आज्ञा पालन करने की प्रतिज्ञा करके वहांसे विदा हुए और उसी दिन से उसका उद्योग करने लगे।

स्वामी दयानंदसरस्वती को स्वामी विरजानंद के मिलने से वेदों, उपनिषधो तथा अन्य प्राचीन ग्रन्थों पर श्रद्धा हुई। उन ग्रन्थों को पढ़ने से उनको असाधारण ज्ञान प्राप्त हुआ। उसके पश्चात् वह भारतवर्ष के नगरों में भ्रमण करके व्याख्यान देने और शास्त्रार्थ करने लगे। वह अपने कथन का प्रमाण वेदों और उपनिषदों से देते थे। उन्होने सत्यार्थप्रकाश आदि अनेक बड़ी पुस्तक बनाई और बहुतसी पाठशालाएं स्थापित की। वह वेद, उपनिषध आदि अति प्राचीन ग्रन्थों को मानते थे। ईश्वर को निराकार मान कर मूर्ति पूजा का निषेध करते थे। ईश्वर, जीव और प्रकृति को अनादि और नित्य मानते थे। स्त्री, शूद्र तथा हिंदू मात्र को वेद पढ़ने का अधिकारी कहते थे। विधवा विवाह के पक्षपाती थे।

स्वामीजी के अनुयायियों ने "आर्य्यसमाज" स्थापित किया, जो भारतवर्ष के प्रायः सब बड़े नगरों में विशेष करके पंजाब प्रांत में फैला हुआ है। स्वामी दयानंद सरस्वती के उद्योग से भारतवर्ष में वेद का प्रचार प्रथम के अपेक्षा अब बहुत बढ़ गया है।

स्वामीजी ने सन् १८८३ ईस्वी के ३० अकतूबर को, जब उनका वय ५९ वर्ष का था, राजपूताने के अजमेर शहर में अपने शरीर का परित्याग किया।

राधास्वामी-मत--इस उन्नीसवीं शदी में ब्रह्मसमाज, आर्य्यसमाज, स्वामीनारायण का मत, सतनामी पंथ, कुंभी पंथिया, राधास्वामीमत ये सब नये पंथ नियत हुए हैं, जिनका संक्षिप्त वृत्तांत भारत-भ्रमण में स्थान स्थान पर लिखा गया है। राधास्वामी-मत की कथा ऐसी है;-आगरा निवासी राधास्वामीजी ने राधास्वामी मत को नियत किया, जो जाति के खत्री थे। पश्चिमोत्तर देश के पोस्टमास्टर जनरल राय सालग्राम साहेब बहादुर ने राधास्वामी कृत "सारवचनराधास्वामी" नामक पुस्तक को सन् १८८५ में छपवाया था; उन्होंने उसके आरंभ में लिखा है कि आगरा शहर के पन्नीगली नामक महल्ले में संवत १८७५ (सन् १८१८ ईस्वी) के भादो वदी अष्टमी की अर्द्धरात्रि के समय राधास्वामीजी का जन्म हुआ। वह बाल अवस्थाही से खास२ लोगों को परमार्थ का उपदेश देने लगे। उन्होंने लगभग १५ वर्ष तक अपने मकान के एक कोठे में बैठ कर श्रुतशब्दयोग का अभ्यास किया और उसके पश्चात् १७ वर्ष तक अपने गृह में सतसंगियों और परमार्थीलोगों को संतमत अर्थात् राधास्वामी मत का उपदेश दिया। लगभग ३००० मनुष्यों ने उनका उपदेश ग्रहण करके उनके मत में आगए। अब बहुत से लोग उनके मत के अभ्यास में लगे हुए हैं।

आगरा में लाला शिवदयालसिंहजी, वृन्दावन और प्रतापसिंह ३ भाई थे, जिनमें से लाला शिवदयालसिंहजी पीछे राधास्वामीजी के नाम से प्रसिद्ध होगए; प्रतापसिंह अब तक विद्यमान हैं। राधास्वामीजी का संवत् १९३५ (सन् १८७८) के असाढ़ वदी १ को देहांत होगया। आगरा शहर से ३ मील दूर राधास्वामी नामक बाग में उनका सुन्दर समाधिमंदिर बना है। वहां राधास्वामी मत के बहुत साधू रहते हैं।

घरसे भाग निकले। उसके पश्चात् उन्होंने कई एक महात्माओं से मिल कर योगाभ्यास किया। उसके उपरांत वह भ्रमण करते हुए अलकनंदा नदी के निकास के स्थान में पहुंचे। उस समय उन्होंने विचार किया कि हिमालय की वर्फ में गल कर प्राण त्याग करदें; किंतु फिर शोचा कि विना ज्ञान प्राप्त किए हुए मरना पाप है, इसलिये विद्या प्राप्त करनी चाहिए। ऐसा विचार वह वहां से मथुरा में आए। उस समय मथुरा में स्वामी विरजानंद नामक ८१ वर्ष का एक महान् विद्वान, जो दोनों आंखों से अन्धे थे, रहते थे। उनको प्राचीन आर्य ग्रन्थों के अतिरिक्त नवीन ग्रन्थों पर श्रद्धा न थी। स्वामी दयानंदजी ने उनसेही विद्याभ्यास आरंभ किया। अमरलाल नामक एक धर्मात्मा पुरुष ने स्वामीजी के नित्य के भोजनादि का प्रबंध कर दिया। स्वामी दयानंदजी ने अढ़ाई वर्ष मथुरा में रह कर स्वामी विरजानंदजी से महाभाष्य, वेदांतसूत्र, अष्टाध्यायी इत्यादि ग्रन्थ समाप्त किए। जब वह भेंट के लिये कुछ लौंग के दाने लेकर अपने गुरुजी से विदा मांगने गए, तब स्वामी विरजानंदजी ने उनको आज्ञा दी कि जो वेदविद्या संसार से उठ गई है, तुम उसका प्रचार करो, मत मतांतरों को दूर कर के देश का सुधार करो और मनुष्य कृत ग्रन्थों पर, जिसमें परमेश्वर और ऋषियों की निंदा भरी है, विश्वास मत करो। स्वामी दयानंदजी गुरु की आज्ञा पालन करने की प्रतिज्ञा करके वहांस विदा हुए और उसी दिन से उसका उद्योग करने लगे।

स्वामी दयानंदसरस्वती को स्वामी विरजानंद के मिलने से वेदों, उपनिषदों तथा अन्य प्राचीन ग्रन्थों पर श्रद्धा हुई। उन ग्रन्थों को पढ़ने से उनको असाधारण ज्ञान प्राप्त हुआ। उसके पश्चात् वह भारतवर्ष के नगरों में भ्रमण करके व्याख्यान देने और शास्त्रार्थ करने लगे। वह अपने कथन का प्रमाण वेदों और उपनिषदों से देते थे। उन्होने सत्यार्थप्रकाश आदि अनेक बड़ी पुस्तक बनाई और बहुतसी पाठशालाएं स्थापित की। वह वेद, उपनिषद आदि अति प्राचीन ग्रन्थों को मानते थे। ईश्वर को निराकार मान कर मूर्ति पूजा का निषेध करते थे। ईश्वर, जीव और प्रकृति को अनादि और नित्य मानते थे। स्त्री; शूद्र तथा हिंदू मात्र को वेद पढ़ने का अधिकारी कहते थे। विधवा विवाह के पक्षपाती थे।

स्वामीजी के अनुजायियों ने "आर्य्यसमाज" स्थापित किया, जो भारतवर्ष के प्रायः सब बड़े नगरों में विशेष करके पंजाब प्रांत में फैला हुआ है। स्वामी दयानंद सरस्वती के उद्योग से भारतवर्ष में वेद का प्रचार प्रथम के अपेक्षा अब बहुत बढ़ गया है।

स्वामीजी ने सन् १८८३ ईस्वी के ३० अकतूबर को, जब उनका वय ५९ वर्ष का था, राजपूताने के अजमेर शहर में अपने शरीर का परित्याग किया।

राधास्वामी-मत–इस उन्नीसवीं शदी में ब्रह्मसमाज, आर्य्यसमाज, स्वामीनारायण का मत, सतनामी पंथ, कुंभी पंथिया, राधास्वामीमत ये सब नये पंथ नियत हुए हैं, जिनका संक्षिप्त वृत्तांत भारत-भ्रमण में स्थान स्थान पर लिखा गया है। राधास्वामी-मत की कथा ऐसी है;-आगरा निवासी राधास्वामीजी ने राधास्वामी मत को नियत किया, जो जाति के खत्री थे। पश्चिमोत्तर देश के पोस्टमास्टर जनरल राय सालग्राम साहेब बहादुर ने राधास्वामी कृत "सारबचनराधास्वामी" नामक पुस्तक को सन् १८८६ में छपवाया था; उन्होंने उसके आरंभ में लिखा है कि आगरा शहर के पन्नीगली नामक महल्ले में संवत १८७५ (सन् १८१८ ईस्वी) के भादो वदी अष्टमी की अर्द्धरात्रि के समय राधास्वामीजी का जन्म हुआ। वह बाल अवस्थाही से खासर लोगों को परमार्थ का उपदेश देने लगे। उन्होंने लगभग १५ वर्ष तक अपने मकान के एक कोठे में बैठ कर श्रुतशब्दयोग का अभ्यास किया और उसके पश्चात् १७ वर्ष तक अपने गृह में सतसंगियों और परमार्थीलोगों को संतमत अर्थात् राधास्वामी मत का उपदेश दिया। लगभग ३००० मनुष्यों ने उनका उपदेश ग्रहण करके उनके मत में आगए। अब बहुत से लोग उनके मत के अभ्यास में लगे हुए हैं।

आगरा में लाला शिवदयालसिंहजी, वृन्दावन और प्रतापसिंह ३ भाई थे, जिनमें से लाला शिवदयालसिंहजी पीछे राधास्वामीजी के नाम से प्रसिद्ध होगए; प्रतापसिंह अब तक विद्यमान हैं। राधास्वामीजी का संवत् १९३५ (सन् १८७८) के असाढ़ वदी १ को देहांत होगया। आगरा शहर से ३ मील दूर राधास्वामी नामक बाग में उनका सुन्दर समाधिमंदिर बना है। वहां राधास्वामी मत के बहुत साधू रहते हैं।

राधास्वामीजी के प्रधान शिष्य आगरा निवासी कायस्थकुलभूषण राय सालग्राम साहेब बहादुर पोस्टमास्टर जनरल ने इस मत को बहुत फैलाया है। इन्होंने इस मत के अनेक बड़े बड़े ग्रन्थ, बनाये और छपवाये हैं। उनके प्रधान शिष्य काशीनिवासी पण्डित ब्रह्मशङ्कर मिश्र जी हैं। आगरा और इलाहाबाद में राधास्वामी मत की संगत अर्थात् सभा नियत हुई है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय भारतवर्ष में इस मत के १७६४३ मनुष्य थे।

राधास्वामी संप्रदाय के ग्रन्थों में लिखा है कि जो ईश्वर सबसे परे है, उसका नाम राधास्वामी है। उस मत के लोग आगरा के लाला शिवदयालसिंहजी को उन्हींका अवतार मान कर उनको राधास्वामी कहने लगे। राधास्वामी मत श्रीकबीर साहब के मत से बहुत मिलता है। इस मत के लोग "सुरत शब्द योग" का अभ्यास करते हैं, अर्थात् जीवात्मा को नेत्रों के स्थान से ऊपर ब्रह्मांड में चढ़ाते हैं और अन्तर का शब्द सुनते हैं। इनके मत में सच्चा गुरु, सच्चा नाम और सच्चा सतसंग इन ३ बातों की आवश्यकता है। इस मत के लोग शराब आदि मादक वस्तु नहीं पीते और मांस नहीं खाते। इनके मत में तीर्थ, व्रत, मूर्ति पूजा करने और पुस्तकों के खाली पढ़नेही से अंतःकरण शुद्ध नहीं होता है।

काठियावाड़— बंबई हाते के गुजरात प्रदेश के पश्चिमी भाग में काठियावाड़ प्रायद्वीप है। इसके उत्तर कच्छ की खाड़ी और कच्छ का रन बाद कच्छ देश; पूर्व साबरमती नदी और कांबे की खाड़ी बाद गुजरात देश और दक्षिण और पश्चिम अरब का समुद्र है। इसके दक्षिण पश्चिम के भाग को, जो लग भग १०० मील लंबा होगा, सौराष्ट्र देश कहते हैं, जिसमें सोमनाथ पट्टन, विरावल इत्यादि नगर हैं। काठियावाड की सबसे अधिक लंबाई लगभग २२० मील और सब से अधिक चौड़ाई १६५ मील है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय काठियावाड़ में लगभग १३२० वर्गमील भूमि, जिसमें लगभग १४८००० मनुष्य थे, बड़ोदा के राज्य में, लगभग ११०० वर्गमील भूमि, जिसमें १६०००० मनुष्य थे, अंगरेजी राज्य के अहमदाबाद

जिले में; लगभग ७ वर्गमील भूमि, जिसमें १२६३६ मनुष्य थे, पोर्चुगीजों के राज्य डिऊ के अधिकार में और बाकी २०५५९ वर्गमील भूमि, जिसमें २३४३८९९ मनुष्य थे, काठियावाड़ के पोलिटिकल एजेंसी के आधीन थी। काठियावाड़ के राज्य से बड़ोदा के महाराज को १०९००० रुपये, अंगरेजी सरकार को अहमदाबाद जिले के भाग से २६६००० रुपये और पोर्चुगाल के गवर्नमेन्ट को लगभग ३८००२ रुपये मालगुजारी आती है।

काठियावाड़ के पोलिटिकल एजेंसी के आधीन, जो सन् १८२२ में कायम हुई, छोटे बड़े १८७ देशी राज्य हैं। इनमें से १३ अंगरेजी गवर्नमेंट को कर नहीं देते और १०५ अंगरेजी गवर्नमेंट को और ७९ बड़ोदा के महाराज को 'राज कर' देते हैं तथा १२४ जूनागढ़ के नवाब को भी खिराज देते हैं। वह एजेंसी ४ भागों में विभक्त है,--अर्थात् झालावाड़, हालार, सौराष्ट्र और गोहेलवार, जिनमें एक एक पोलिटिकेल एसिस्टेंट रहते हैं, जिनको जिला जज और मजिष्टर के समान अखतियार है। वे लोग अपने समायत से बड़े मुकदमों को राजकोट की फौजदारी कचहरी में भेजते हैं। एजेंसी के प्रधान हाकिम पोलिटिकल एजेंट का सदर स्थान राजकोट है।

काठियावाड़ में स्थान स्थान पर छोटी पहाड़ियां हैं। अनेक छोटी नदियां हैं, जिनमें भद्दर नदी प्रधान है। लगभग १५०० वर्गमील गिर के जंगल के अलावे काठियावाड़ में प्रसिद्ध जंगल हैं। जंगलों में चीता, तेंदुए, हरिन इत्यादि बनैले जंतु रहते हैं। पहिले संपूर्ण काठियावाड़ और गुजरात में बहुत सिंह होते थे; किंतु अब वे केवल गिर पहाड़ी के जंगल में मिलते हैं। जूनागढ़ के पास बहुत गुफाएं हैं। गिरनार और पालीटाणा की पहाड़ियों पर सुन्दर जैन मंदिर हैं। काठियावाड़ की एजेंसी में कपास, बाजड़ा और जवाड़ बहुत होते हैं। चंद भागों में हलदी, ऊख और नील भी होते हैं। बच्चे देने के लिये बहुत घोड़ियां पाली जाती हैं। कई एक भागों में भेड़ बहुत होती हैं। काठियावाड़ में गुजराती भाषा प्रचलित है।

सन् १८६३ में काठियावाड़ के पोलिटिकेल एजेंसी के आधीन के देशी

राज्य ७ दर्जे में विभाग किये गये। पहिले और दूसरे दर्जे के प्रधानों अर्थात् राजाओं को दीवानी और फौजदारी दोनों मुहकमें के विचार करने का अधिकार है। उनसे कम दर्जे के राजाओं के अखतियार दर्जे के अनुसार घटते गये हैं। पहले दर्जे में भावनगर, नवानगर, जूनागढ़ और ध्रांगड़ा, और दूसरे दर्जे में गोंडल, मोरवी, पोरबंदर, वाढ़वान, लिंवड़ी, झिंगवाड़ा, थंकानेर इत्यादि किये गए; किंतु अब मोरवी और गोंडल प्रथम दर्जे में और पोरबंदर तीसरे दर्जे में कर दिए गए हैं।

काठियावाड़ के बड़े देशी राज्यों का लिज;—

नं०	राज्य	क्षेत्रफल वर्गमील	मनुष्य-संख्या सन् १८८१	मालगुजारी
१	भावनगर··· ···	२८६०	४००३२३	३४००००००
२	नवानगर··· ···	३७११	३१६१४७	२४००००००
३	जूनागढ़ ··· ···	३२७१	३८७४१९	२१००००००
४	गोंडल ··· ···	१०२४	१३५६०४	१२००००००
५	मोरवी ··· ···	८२१	८११६४	१००००००
६	ध्रांगड़ा ··· ···	११५६	११६८६	७५००००
७	पोरबंदर··· ···	६३६	७१०७२	५५००००
८	वाढ़वान··· ···	२३६	४२५००	४५००००
९	लिंवड़ी ··· ···	३४४	४३०६३	२६४०००
१०	राजकोट··· ···	२८३	४६५४०	२०५०००
११	पालीटाणा ···	२८८	४१२७१	२०००००

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय काठियावाड़ के पोलिटिकल एजेंसी के देशी राज्यों के २०५५९ वर्गमील क्षेत्रफल में २३४३८९९ मनुष्य थे,

अर्थात् १९४२६५८ हिंदू, ३०३५३७ मुसलमान, ९६१४१ जैन, ६०५ कृस्तान, ४८९ पारसी, १४५ यहूदी और ३२४ अन्य । हिंदुओं में ३३०८४० कोली, ३१६८३८ कुन्बी, १४६६२९ ब्राह्मण, १२९०१८ राजपूत, १२३६६६ महारा, ८५११८ कुंभार, ५४९६८ लोहाना, २९९९१ नापित (नाई), २९३५२ दरजी, २६७३८ बढ़ई, २६१७८ लोहार, १६५०२ सोनार और बाकी में अन्य जातियों के लोग थे।

काठियावाड़ के देशी राज्यों के कसबे, जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय १० हजार से अधिक मनुष्य थे;—

नंबर	नाम कसबा	मनुष्य-संख्या	नंबर	नाम कसबा	मनुष्य-संख्या
१	भावनगर	५७६५३	१०	गोंडल	१५३४३
२	नवानगर	४८५१०	११	विरावल	१५३३९
३	जूनागढ़	३१६४०	१२	ध्रांगड्रा	१५२०९
४	राजकोट	२९२४७	१३	जेतपुर	१३६४६
५	वाढ़वान	२४६०४	१४	लिंबड़ी	१३४९७
६	धोराजी	२०४०६	१५	मंगरोल	१३००५
७	पोरबंदर	१८८०५	१६	पालीटाणा	१०४४२
८	महुआ	१६७०७	१७	सिहोर	१०००५
९	मोरवी	१६३२५			

काठियावाड़ का इतिहास—मौर्यवंशी राजा अशोक के राज्य के समय विक्रमी संवत् के आरंभ से लगभग २०० वर्ष पहिले का शिला लेख गिरनार के पास के चट्टान पर खोदे हुए हैं। कदाचित् राजा अशोक और अन्य मौर्य वंशी राजाओं के आधीन क्षत्रप वंशवालों ने सौराष्ट्र में राज्य किया था। सन् ई० के लगभग १०० वर्ष पहिले से तीसरी शदी तक लगभग ३०० वर्ष पर्यन्त उस देश के शाह वंश के राजाओं ने और उनके पश्चात् कन्नौज के गुप्त वंशी राजाओं के सेनापतियों ने सौराष्ट्र में हुकूमत किया था। गुप्त वंशी के अन्तिम सेनापति सौराष्ट्र का राजा हुआ, जिसने अपने लेफ्टिनेंट को वर्त्तमान भावनगर से १८ मील पश्चिमोत्तर वल्लभीनगर में रक्खा। जब विदेशी

आक्रमण करने वाले ने गुप्तवंशी राजा को सिंहासन से उतार दिया, तब ८ वीं शदी में वल्लभी राजा कच्छ, सूरत, भड़ोच, खेड़ा, मालवा इत्यादि देश पर अपना अधिकार फैलाया। सन् ६१३ से ६४० तक दूसरा ध्रुवसेन राजा का राज्य था। नहीं जान पड़ता है कि किस तरह से वल्लभी वंश के राज्य का विनाश हुआ। अनुमान से जान पड़ता है कि जब मुसलमानों ने सिंध से आकर उनका नाश किया, तब काठियावाड़ की सीमा के बाहर अनहिलवाड़ा राज्य का सदर स्थान बना। सन् ७४६ से १२९७ तक अनहिलवाड़ा के राज्य के समय काठियावाड में बहुत से छोटे राजा हुए थे। सन् १०२४ में गजनी के महमूद ने काठियावाड के दक्षिण भाग के सोमनाथ का मन्दिर लूटा। अनहिलवाडा के राजाओं ने काठियावाड के उत्तरी भाग में झाला राजपूतों को बसाया। १३ वीं शदी में गोहेल राजपूत, जो काठियावाड के पूर्वी भाग में हैं, उत्तर से आए। जाड़ेजा और काठी पश्चिम से कच्छ होकर काठियावाड़ में आए थे।

काठियावाड के दक्षिण पश्चिम का बड़ा भाग, जो लगभग १०० मील लंबा है, अब तक सौराष्ट्र देश कहलाता है। १३ वीं और १४ वीं शदी में काठी जाति के लोग कच्छ से आकर उस प्रायद्वीप में बसे; तब से उस के मध्य भाग से पूर्व का बड़ा भाग काठियावाड कहलाने लगा। कच्छ वालो ने १५ वीं शदी में सपूर्ण काठियों को अपने देश से निकाल दिया। महाराष्ट्रों ने सौराष्ट्र और काठियावाड दोनों का काठियावाड़ नाम प्रसिद्ध कर दिया, परन्तु बहुत लोग, खास करके देशी आदमी अब तक दक्षिण पश्चिम के भाग को सौराष्ट्र कहते हैं।

बहादुरशाह ने पोर्चुगाल वालो को काठियावाड़ के डिऊ में कोठी बनाने की इजाजत दी। सन् १५३६ में पोर्चुगाल वालो ने वहां एक किला बनाया। अब तक डिऊ टापू और यह किला पोर्चुगाल वालों के अधिकार में हैं।

सन् १५७३ में अकबर ने गुजरात को जीता। महाराष्ट्रो ने सन् १७०५ में गुजरात में प्रवेश किया। सन् १७६० में उनका राज्य दृढ़ होगया। सन १८०७—१८०८ में काठियावाड़ के सब प्रधान पूना के पेशवा और

बड़ौदा के गायकवाड़ को अंगरेजी गवर्नमेंटद्वारा राजकर देने लगे। सन् १८१८ में अंगरेजों ने काठियावाड़ के पेशवा का भाग ले लिया। सन् १८२० में गायकवाड़ ने अपना हिस्सा अंगरेजी सरकारद्वारा वसूल होना स्वीकार किया। सन् १८२२ में बंबई के गवर्नर के आधीन काठियावाड़ में पोलीटिकल एजेंसी कायम हुई। सन् १८३१ में प्रधान फौजदारी कचहरी कायम हुई। जिस अपराध के विचार करने का देशी प्रधानों का अधिकार नहीं है, उसका विचार उस कचहरी का हाकिम करता है।

पचीसवां अध्याय।

(बंबई हाते के काठियावाड़ में) वीरमगांव, वाढ़वान, ध्रागध्रा, मोरवी, राजकोट, नवानगर, (कच्छ में) मांडवी, भुज, नारायणसर, (काठियावाड़ में) गोंडल, और पोरवंदर।

वीरमगांव।

अहमदाबाद शहर से कई मील उत्तर शाही बाग के पास साबरमती नदी पर रेलवे का सुन्दर पुल है। पुल के ऊपर रेलवे लाइन के बगल में आदमी के चलने की मार्ग बना है। अहमदाबाद के रेलवे स्टेशन से ४ मील उत्तर कुछ पश्चिम साबरमती नदी के उत्तर किनारे पर साबरमती नामक रेलवे स्टेशन है, जिसके पास एक बड़ा जेलखाना बना है। उस स्टेशन से पूर्वोत्तर छोटी गाड़ी की रेलवे लाइन महसाना, अजमेर, बांदीकुई जंक्शन इत्यादि स्टेशनों होकर दिल्ली और आगरा को और पश्चिम ओर बड़ी गाड़ी की लाइन काठियावाड़ में वीरमगांव होकर वाढ़वान को गई है। वाढ़वान से आगे काठियावाड़ के देशी राजाओं की छोटी गाड़ी की लाइनें हैं।

अहमदाबाद के रेलवे स्टेशन से ४० मील (साबरमती के स्टेशन से ३६ मील) पश्चिम वीरमगाव का रेलवे स्टेशन है। बम्बई हाते के अहमदाबाद जिले मे सब डिवीजन का सदर स्थान वीरमगांव एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय वीरमगांव में २३२०९ मनुष्य थे; अर्थात् १९६४० हिन्दू, ५१८९ मुसलमान, २३२० जैन, ४० पारसी, १५ कृस्तान और ५ एनिमिष्टिक।

रेलवे स्टेशन के पास सुन्दर सरकारी धर्मशाला बनी है। मैने धर्मशाले के पास एक भिक्षुक-लड़का देखा, जिसकी आंखों का चिन्ह कुछ नहीं था, किंतु आंखो के स्थानों के ऊपर भौंहें थी। वीरमगांव कसबे के चारो ओर शहरपनाह अर्थात् पक्की दीवार है। उसमें ११ वीं शदी के अंत का बना हुआ मानसर नामक एक तालाब है, जिसके चारो बगलों पर पत्थर की सीढ़ियां और बहुतेरे छोटे मन्दिर बने हुए हैं। इनके अलावे वीरमगांव में कपड़े का मिल, सबजज की कचहरी, अस्पताल और स्कूल है। वीरमगांव से २५ मील दूर बचराजी का प्रसिद्ध मन्दिर है, जहा आश्विन में मेला होता है, जिसमें लगभग २०००० आदमी जाते हैं।

वीरमगांव से पश्चिमोत्तर एक रेलवे लाइन खारागोडा को गई है। वीरमगांव से १७ मील पश्चिम कुछ उत्तर दीवार से घेरा हुआ पत्नी नामक छोटा कसबा और २२ मील कच्छ के रन के पास खारागोडा गाव है। सूखी ऋतुओं में कच्छ के रन का कीचड़ सूख कर कड़ा होजाता है, उसमे बहुत नमक तैयार होता है। नमक बटोरने के लिए उस रन म रेल की बहुत सड़कें निकाली गई हैं। रेलवे स्टेशन के पास बहुत नमक इकट्ठा किया जाता है।

वाढ़वान।

वीरमगांव के रेलवे स्टेशन से ३९ मील दक्षिण पश्चिम (अहमदाबाद जंक्शन से ७९ मील) वाढ़वान का रेलवे जंक्शन है। वाढ़वान से मोरवी रेलवे पश्चिम ओर वंकानर को और वंकानेर से उत्तर मोरवी को तथा दक्षिण-पश्चिम राजकोट, गोंडल और जितलसर जंक्शन को, और भावनगर, गोंडल, जू-

नागढ़ और पोरबंदर रेलवे वाढ़वान जंक्शन से दक्षिण लिंबड़ी होकर धोला जंक्शन को और धोला से पूर्व भावनगर को तथा पश्चिम जितलसर जंक्शन और पोरबंदर को और जितलसर जंक्शन से दक्षिण जूनागढ़ होकर वेरावल बंदर को गई है।

रेलवे के जंक्शन से ४ मील पश्चिम वाढ़वान कसबे का रेलवे स्टेशन है। बंबई हाते के काठियावाड़ के झालावाड़ विभाग में देशी राज्य की राजधानी वाढ़वान एक पुराना कसबा है। उससे ३ मील पश्चिम वाढ़वान का सिविल स्टेशन है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सिविल स्टेशन के साथ वाढ़वान कसबे में २४६०४ मनुष्य थे; अर्थात् १५९१० हिन्दू, ५५४५ जैन, ३०१७ मुसलमान, ५६ पारसी, ५२ क्रस्तान और २४ यहूदी।

वाढ़वान कसबे के चारो ओर पत्थर की दीवार है। कसबे के दक्षिणीय भाग में वाढ़वान नरेश का चौमंजिला विशाल महल बना हुआ है। वाढ़वान में रूई की बड़ी तिजारत होती है; धनी तिजारती लोग बसते हैं और उत्तम साबुन, जीन आदि घोड़े के असबाब तथा पत्थर की चीजें बहुत तैयार होती हैं।

वाढ़वान के सिविल स्टेशन में अच्छा बाजार अनेक सरकारी आफिस, जेलखाना, अस्पताल, एक घड़ी का बुर्ज, एक अच्छी धर्मशाला, बंगला और तालुकदारों का एक स्कूल है। जो तालुकदारों के लड़के राजकोट के राजकुमार कालिज में पढ़ने का खर्च नहीं दे सकते हैं, वे वाढ़वान के स्कूल में पढ़ते हैं। एक अच्छी सड़क वाढ़वान के सिविल स्टेशन से राजकोट को गई है।

वाँढ़वान का राज्य—काठियावाड़ के झालावार विभाग में वाढ़वान का राज्य है। राज्य में कपास और मामूली अन्न उत्पन्न होते हैं। नमक और देशी साबुन तैयार होता है। वह काठियावाड में दूसरे दर्जे का राज्य है। लगभग २० स्कूलों में १३०० से अधिक विद्यार्थी पढ़ते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय वाढ़वान राज्य के २३६ वर्गमील क्षेत्रफल में १ कसबा, ३० गाव, में ९२२६ मकान और ४२५०० मनुष्य थे; अर्थात् ३४८०८ हिन्दू, २३१३ मुसलमान और ५३७९ अन्य।

वाढवान नरेश झाला राजपूत हैं। वर्तमान वाढवान नरेश ठाकुर साहब बलसिंहजी २७ वर्ष के जवान हैं। वाढवान राज्य से लगभग ४५०००० रुपये मालगुजारी आती है, जिसमें से अंगरेजी सरकार को २८६९० रुपया राजकर दिया जाता है। फौजी बल ४२८ आदमी का है।

धांगध्रा।

वाढवान के रेलवे स्टेशन से लगभग २० मील पश्चिमोत्तर और अहमदाबाद शहर से सड़क द्वारा ७५ मील पश्चिम कच्छ के छोटेरन से दक्षिण काठियावाड़ में देशी राज्य की राजधानी धांगध्रा है *।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय धांगध्रा कसबा में १५२०९ मनुष्य थे; अर्थात् ११९३६ हिंदू, २१८४ जैन, १८७९ मुसलमान, ६ पारसी और ४ कृस्तान।

राजधानी के चारो ओर पक्की दीवार है। उसमें धांगध्रानरेश का महल, कचहरियां, बाग, अस्पताल, स्कूल और कई एक देव मन्दिर हैं।

धांगध्रा का राज्य—कच्छ के छोटेरन के पास काठियावाड़ के उत्तर किनारे के समीप काठियावाड़ में प्रथम दर्जे के राज्यों में से धांगध्रा का राज्य है। राज्य में स्थान स्थान पर पहाड़ी और चट्टान है। कपास और अन्न अधिक होते हैं। नमक, पत्थर की चक्की, तांबे, पितल और मिट्टी के बर्त्तन बहुत तैयार होते हैं। बनाई हुई सड़क कोई नहीं है। लगभग ३१ स्कूलों में करीब १४०० लड़के पढ़ते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय धांगध्रा राज्य के ११५६ वर्गमील क्षेत्रफल में १२९ गांव और ९९६८६ मनुष्य थे; अर्थात् ८८६६५ हिंदू, ५६८६ मुसलमान और ५३३५ अन्य।

धांगध्रानरेश झाला राजपूत हैं। इनके पूर्व पुरुषे पूर्वकाल में काठियावाड़ के उत्तर से आकर वीरम गांव सबदीवीजन के पत्री में बसे। वहांसे वे लोग

* अब २१ मील की रेलवे लाइन वाढवान से पश्चिमोत्तर धांगध्रा को गई है।

हलावाड़ में और हलावाड से धांगध्रा में गए। ध्रांगध्रा की शाखा वाढ़वान, लिंबड़ी और काठियावाड़ के और ३ छोटे प्रधान हैं। वंकानेर वाले अपने को पत्नी की बड़ी शाखा से कहते हैं। धांगध्रा के राज्य से लगभग ७५०००० रुपये वार्षिक मालगुजारी आती है, जिसमें से अंगरेजी गवर्नमेंट और जूनागढ़ के नवाब को ४४६७५ रुपया राजकर दिया जाता है। राज्य की फौजी ताकत २१५० आदमी की है। धांगध्रा के वर्तमाननरेश राजासाहब सर मानसिंह जी रनमलसिंह जी (अर्थात् रनमलसिंहजी के पुत्र मानसिंहजी) के. सी. एस. आई ५७ वर्ष की अवस्था के हैं।

मोरवी।

वाढ़वान जंक्शन से ५२ मील पश्चिम वंकानेर जंक्शन और वंकानेर से १६ मील उत्तर (अहमदाबाद से १४७ मील) मोरवी का रेलवे स्टेशन है। बंबई हाते के काठियावाड़ देश के हालार विभाग में (२२ अंश, ४९ कला, उत्तर अक्षांश और ७० अंश, ५३ कला, पूर्व देशांतर में) एक छोटी नदी के पास देशी राज्य की राजधानी मोरवी है। मोरवी से राजकोट तक ३५ मील उत्तम सड़क बनी हुई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मोरवी कसबे में १६३२५ मनुष्य थे; अर्थात् १०७३५ हिंदू, ३५०६ मुसलमान, २०२४ जैन, ३३ कृस्तान, २१ पारसी और ६ यहूदी।

मोरवी कसबे में मोरवी नरेश ठाकुर साहब का सुन्दर महल, कचहरियां, गल्ले का बाजार, एक पाठशाला, एक अस्पताल, और कई स्कूल हैं। हाल में कसबे में जलकल बनी है।

इसी मोरवी में स्वामीदयानंद सरस्वतीजी का जन्म हुआ था। अहमदाबाद में गुजरात देश के वृत्तांत में देखिये।

मोरवी का राज्य—काठियावाड़ के हालार विभाग में कच्छ की खाड़ी के पास मोरवी का राज्य है। देश साधारण रूप से बराबर है। राज्य में अन्न, ऊख औ कपास बहुत होती है। समुद्र के रन के पास नमक बनाया

जाता है। कच्छ की खाडी पर राज्य के एक बदरगाह से सौदागरी होती है। राज्य के २६ स्कूलों में लगभग १३०० लडके पढ़ते ह।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय मोरवी राज्य का क्षेत्रफल ८२१ वर्ग-मील था, जिसके २ कसबो और १३४ गावो में १७२४२ मकान और ८९९६४ मनुष्य थ, अर्थात् ७३९२६ हिंदू, ११९४२ मुसलमान और ४०९६ अन्य।

मोरवी नरेश जाडेजा राजपूत हैं। ऐसी कहावत है कि १७ वीं शदी के पिछले भाग म जब कच्छ के राव के छोटे पुत्र ने अपने बड भाई को मार कर कच्छ का राजा बन गया, तब बडे भाई की सतान के लोगो ने मोरवी में आ कर, जो कच्छ के राज्य के अधिकार में थी, अपना अधिकार किया। मोरवी नरेश उन्हीके वशधर हैं (कच्छ के इतिहास म देखिए)।

सन् १८७० में ठाकुर रनोजी के देहात होने पर उनके पुत्र वर्त्तमान मोरवी नरेश ठाकुर साहब सर बाघजी बहादुर के सी आई ई जिनकी अवस्था लगभग ३९ वर्ष की है, उत्तराधिकारी हुए। वह राजकुमार कालिज में पढ़े हैं और एक बार यूरप की यात्रा कर आए हैं। पहिले मोरवी का राज्य काठियावाड के राज्यो में दूसरे दर्जे का था, किंतु अब प्रथम दर्जे में हुआ है। मोरवी के राज्य से लगभग १० लाख रुपये मालगुजारी आती है, जिसमें से अगरेजी गवर्नमेंट, बडोदा के गायकवाड और जूनागढ के नवाब को ६१९६० रुपया राज कर' दिया जाता है।

राजकोट।

मोरवी से १६ मील दक्षिण वकानेर जक्शन और वंकानेर से २९ मील दक्षिण कुछ पश्चिम राजकोट का रेलवे स्टेशन है। काठियावाड के हालार विभाग म देशी राज्य की राजधानी और काठियावाड के पोलिटिकल एजेंट का सदर स्थान राजकोट है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सिविल स्टेशन के साथ राजकोट कसबे म २९०४७ मनुष्य थ, अर्थात् १६०८३ पुरुष और १२९६४ स्त्रिया। इनमें २०६७२ हिन्दू, ५८१८ मुसलमान, २३९१ जैन, २०९ पारसी १२४ कृस्तान, २९ यहूदी और ४ एनिमिष्टिक थे।

राजकोट में सिविल स्टेशन, फौजी छावनी, जेलखाना, राजकुमार कालिज, धर्मशाला, बंगला, कई एक गिरजे और २ स्कूल हैं। सन् १८७५ में ७०००० रुपये के खर्च से तैयार होकर हाई स्कूल खुला, जिसका खर्च जूनागढ़ के नवाब ने दिया था। कसबे के पूर्वोत्तर के 'जुबली वाटर वर्क्स" से राजकोट में पानी आता है। कसबे में अनेक भांति के रंग तैयार होते हैं और साधारण तरह की सौदागरी होती है।

राजकुमार कालिज, जिसमें काठियावाड़ के राजा तथा ठाकुरों के लड़के पढ़ते हैं, सन् १८७० में तैयार होकर खुला। उसके एक उत्तम हाल अर्थात् बड़े कमरे से क्लासों के कमरे में जाना होता है। दोनों ओर के अगवासों में सुन्दर बरंडे बने हैं। पश्चिम ओर सदर दरवाजा है, जिसके दोनों बगलों में दो टावर बने हैं। पूर्व वाले दरवाजे के ऊपर ९९ फीट ऊंचा एक चौकोना टावर है। उत्तर और दक्षिण के बाजुओं में ३२ विद्यार्थियों के सोने, बैठने, स्नान करने इत्यादि कामों के लिये कमरे बने हुए हैं।

राजकोट का राज्य—काठियावाड़ के हाला विभाग में काठियावाड़ प्रायद्वीप के मध्य भाग में राजकोट का राज्य है। वह राज्य काठियावाड़ के राज्यों में दूसरे दर्जे का है। राज्य की भूमि ऊंची नीची तथा पत्थरीली है। ऊख, कपास और मामूली अन्न होते हैं। १४ स्कूलों में लगभग १२०० लड़के पढ़ते हैं। राजकोट में एक नदी पर कैसर हिंद नामक प्रसिद्ध पुल है, उसके बनाने में ११७५१० रुपया खर्च पड़ा था, जिसमें ११०००० रुपया भावनगर के राजा ने दिया था।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय राजकोट के राज्य का क्षेत्रफल २८३ वर्गमील था जिसमें १ कसबा ६० गांव और ४६५४० मनुष्य थे, अर्थात् ३६९२९ हिंदू, ६७७५ मुसलमान और २८३६ अन्य।

राजकोट नरेश ठाकुर साहब जाड़ेजा राजपूत हैं*। वर्तमान ठाकुर साहब रवाजी, जो राजकुमार कालिज में पढ़े थे, अपने राज्य का स्वयं प्रबंध करते हैं। राजकोट के राज्य से लगभग २०५००० रुपया वार्षिक मालगुजारी आती है, जिसमें से अंगरेजी गवर्नमेंट और जूनागढ़ के नवाब को २१३२० रुपया राजकर दिया जाता है। फौजी ताकत ३३६ आदमी की है।

सन् १५४० में जामरावल ने नवानगर को बसाया, जिसके वंशज नवा नगर के वर्तमान जामसाहब हैं। उसी की शाखा से राजकोट का राज्य नियत हुआ।

नवानगर।

राजकोट के रेलवे स्टेशन से पश्चिम कुछ उत्तर ५४ मील की कच्ची सड़क कच्छ की खाड़ी के दक्षिण किनारे पर नवानगर को, जिसको जामनगर भी कहते हैं, गई है। सड़क पर पुल नहीं बना है, इस कारण से वर्षा काल में मार्ग बंद हो जाता है *। काठियावाड़ के हालाड़ विभाग में (२२ अंश, २६ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७० अंश, १६ कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) देशी राज्य की राजधानी नवानगर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय नवानगर कसबे में ४८९३० मनुष्य थे; अर्थात् २४४६० पुरुष और २४०७० स्त्रियां। इनमें २८६०० हिन्दू, १६०४९ मुसलमान, ३७८१ जैन, ४७ कृस्तान, ४१ पारसी और १२ यहूदी थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारत वर्ष में ७८ वां, बंबई के गवर्नमेंट के आधीन के देशी राज्यों तथा काठियावाड़ के राज्यों में दूसरा शहर है।

४ मील की पक्की दीवार से घेरी हुई नवानगर राजधानी है। प्रायः सब मकान पत्थर से बने हुए हैं। राजमहल सुंदर इमारत है। राजधानी उन्नति पर है। उसमें बड़ी तिजारत होती है। रेशमी और सोने की कार-चोबी के काम तथा इतर और खुसबूदार तेल के लिये नवानगर प्रसिद्ध है। कसबे के उत्तर समुद्र में मोती वाली सीप मिलती है, पर अच्छी नहीं। उससे नवानगर के जामसाहब को लगभग ४००० रुपये वार्षिक आमदनी होती है।

नवानगर का राज्य—काठियावाड़ा के हालाड़ विभाग में नवानगर का राज्य है। राज्य का क्षेत्रफल ३७९१ वर्गमील है। इसके उत्तर कच्छ का रन और कच्छ की खाड़ी; पूर्व मोरवी, राजकोट, धोरल और गोंडल का राज्य; दक्षिण काठियावाड़ का सौराष्ट्र विभाग और पश्चिम ओखमंडल है।

* अब ५१ मील की रेलवे लाइन राजकोट से नवानगर को गई है।

यह राज्य काठियावाड़ के औवल दर्जे के राज्यों मे मे एक है । भूमि साधारण रूप से समतल है; किंतु इसकी सीमा के भीतर बरदा पहाड़ी के सिलसिले का बड़ा भाग आया है । राज्य की खानियों में अनेक प्रकार का मार्बुल, तांबा, लोहा और पत्थर है । कपास और मामूली अन्न बहुत होते हैं । खाड़ी के दक्षिण किनारे के पास कुछ मोती की सीप मिलती है । यहां का रंग बहुत अच्छा होता है राज्य के भीतर कई बंदरगाह हैं । सन् १८६० तक नवानगर राज्य की पहाड़ियों में सिंह रहते थे; किंतु अब केवल गिरि के जंगल में मिलते हैं । उस राज्य में चीता और तेंदुए हैं । राज्य के ६२ स्कूलों में लगभग ५००० लड़के पढ़ते हैं । राज्य से परमार्थ के कामो में बहुत रुपया खर्च होता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय नवानगर के राज्य में ३१६१४७ मनुष्य थे; अर्थात् २५०३८२ हिंदू, ४९२२१ मुसलमान और १६२४४ अन्य।

नवानगर का राजवंश जाड़ेजा राजपूत है । कच्छ के राव और नवानगर के जाम साहब एकही कुल के हैं । जाड़ेजा राजपूत लोग कच्छ से काठियावाड़ में आकर पुराने हुकूमत करने वाले को निकाल धुमली में बसे । उनमें से जामरावल ने सन् १५४० में नवानगर को बसाया । इसी लिये नवानगर को जामनगर तथा यहां के राजाओं को जामसाहब कहते हैं । सन् १७८८ में नवानगर के चारो ओर पक्की दीवार बनाई गई । वर्तमान शदी के आरंभ में बहुत जाड़ेजा राजपूत अपनी लड़कियों को मार डालते थे; किन्तु सन् १८१२ में उनके प्रधानों ने इस कुरीति को छोड़ाने का प्रबंध किया । इसको रोकने के लिये अंगरेजी अफसरों की निगरानी बराबर होती आई है। अब वह लोग लड़कियों को नहीं मारते हैं । जामसाहब को अंगरेजी गवर्नमेंट की ओर से ११ तोपों की सलामी मिलती है। नवानगर के राज्य से लगभग २४००००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमें से अंगरेजी गवर्नमेंट, बड़ोदा के गायकवाड़ और जूनागढ़ के नवाब को लगभग १२०००० रुपया राज कर दिया जाता है। जाम साहब का २३०० आदमी का फौजी बल है। नवानगर के वर्तमान नरेश जाम सर विभाजी रणमलजी के. सी. एस. आई ६२ वर्ष की अवस्था के हैं।

मांडवी।

नवानगर के बंदरगाह से लगभग ६० मील पश्चिमोत्तर कच्छ के टापू के दक्षिण किनारे पर, भुज राजधानी से ३६ मील दक्षिण-पश्चिम कच्छ का प्रधान बंदरगाह तथा कच्छ राज्य में सब से बड़ा कसबा मांडवी है। यह २२ अन्श, ५० कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ६९ अन्श, ३१ कला, ४५ विकला पूर्व देशांतर में स्थित है। अनेक नाव नवानगर के बंदरगाह से कच्छ की खाड़ी द्वारा मांडवी जाती हैं। आगवोट सप्ताह में दो तीन बार बंबई शहर से खुल कर विरावल, पोरबंदर, द्वारिका, मांडवी आदि बंदरगाहों से होकर करांची को और करांची से मांडवी, द्वारिका आदि बंदरगाह होकर बंबई को जाते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय मांडवी में ३८१५५ मनुष्य थे; अर्थात् १८४०७ पुरुष और १९७४८ स्त्रियां। इनमें १९१२९ हिंदू, १५४९९ मुसलमान, ३४३७ जैन, ५४ कृस्तान, ३० पारसी और ६ अन्य थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह बंबे गवर्नमेंट के आधीन के देशी राज्यों में चौथा और कच्छ के राज्य में पहला कसबा है।

मांडवी कसबा दीवार से घेरा हुआ है। दीवार के बाहर नई सराय और पुरानी सराय नामक दो शहर तलियां हैं, जिनमें सौदागर और समुद्र में काम करने वाले लोग रहते हैं। मांडवी में बड़ी सौदागरी होती है। बंदरगाह में किनारे से ५०० गज के भीतर तक ७० टन बोझ वाले जहाज आते हैं। बंदरगाह के पास लाइटहाउस बना हुआ है।

भुज।

मांडवी के बंदरगाह से ३६ मील पूर्वोत्तर (२३ अन्श, १५ कला उत्तर अक्षांश और ६९ अन्श, ४८ कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) कच्छ टापू के मध्य भाग में एक पहाड़ी के, जिसके ऊपर किला है, पादमूल के

पास कच्छ राज्य की राजधानी भुज नामक कसबा है। भुजग (सर्प) शब्द का अपभ्रंश भुज नाम है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय फौजी छावनी के साथ भुज कसबे, में २५४२१ मनुष्य थे; अर्थात् १३४२३ पुरुष और ११९९८ स्त्रियां। इनमें १४३५० हिंदू, ९३५७ मुसलमान, १२२४ जैन, १८६ एनिमिष्टिक, ११६ कृस्तान, ७३ पारसी, ४७ यहूदी और ६८ अन्य थे। मनुष्य गणना के अनुसार यह कच्छ के राज्य मे दूसरा कसबा है।

भुज कसबे में कच्छ के महाराव का सुन्दर महल बना हुआ है। लगभग १५० वर्ष हुए कि कच्छ के राव लखपतिजी ने बिल्लौरी आइने का शीश-महल बनवाया था। यह महल तस्वीर आदि मनोरम सामान से सजा हुआ है। इनके अलावे भुज में १ जेलखाना, १ हाई स्कूल, १ अन्य स्कूल, १ लायब्रेरी १ अस्पताल, १ मसजिद, कच्छ के राजाओं की अनेक छत्तरियां और कई एक देव मंदिर हैं। कसबे के बगलों में अनेक फाटक बने हुए हैं। कसबे के आस पास कई दरगाह हैं। कसबे में १६ वीं शदी के पहिले की बनी हुई कोई इमारत नहीं है।

कच्छ का राज्य—बंबई गवर्नमेंट के आधीन गुजरात में कच्छ का राज्य है। इसके बडे रन के उत्तर और पश्चिमोत्तर सिंध देश, पूर्व पालनपुर एजेंसी के देशी राज्य; दक्षिण कच्छ की खाडी के बाद काठियावाड़ प्राय द्वीप और दक्षिण पश्चिम अरब का समुद्र है। कच्छ के रन को छोड़ करके कच्छ राज्य का क्षेत्रफल ६५०० वर्गमील है। उस की लंबाई पूर्व से पश्चिम को लगभग १६० वर्गमील और चौड़ाई उत्तर से दक्षिण को ३५ मील से ७० मील तक है। उसके उत्तर कच्छ का बड़ा रन, पूर्व दक्षिण छोटा रन, दक्षिण कच्छ की खाडी और पश्चिमोत्तर सिंध नदी का पूर्वी मुहाना है। इस भांति संपूर्ण कच्छ देश प्रायः पूरे तवर मे हिंद महाद्वीप से अलग हुआ है। कच्छ राज्य में ८ सबडिवीजन है। भुज राजधानी है। कच्छ का देश ऊसर और चट्टानी है। वृक्ष प्रायः नहीं है, किंतु चरागाह अच्छे हैं। जगह जगह पहाड़ियों की श्रेणी और जगह जगह अकेली पहाड़ी है। घाटियों में कपास

और अन्न की अच्छी फसिल होती हैं। कच्छ में कोई स्थाई नदी नहीं है; परंतु वर्षा काल में बहुत सी बड़े विस्तार की नदियां पहाड़ियों के सिलसिलों से बहती हुई उत्तर ओर कच्छ के रन में और दक्षिण ओर कच्छ की खाड़ी में गिरती हैं। वर्षाकाल के अतिरिक्त अन्य ऋतुओं में नदियों के बहाव के मार्ग कुण्डों के समान देख पड़ते हैं। कच्छ की खानों में लोहा, फिटकिरी, कोयला, शोरा, मकान के काम योग्य पत्थर, एक प्रकार का मार्बुल इत्यादि खानिक वस्तु होती हैं। कोई जंगल नहीं है। बनाई हुई सड़क प्रायः नहीं हैं, इस लिये बरसात में देश प्रायः अगम हो जाता है। कच्छ में मकान अच्छे बनते हैं।

कच्छ टापू के उत्तर और पूर्व दक्षिण लगभग ९००० वर्गमील क्षेत्रफल में कच्छ का "रन" अर्थात् नमकदार मरुस्थल फैला हुआ है। उनमें से उत्तर वाला बड़ा रन पूर्व से पश्चिम तक लगभग १६० मील लंबा और उत्तर से दक्षिण ८० मील तक चौड़ा अर्थात् लगभग ७००० वर्गमील में और पूर्व दक्षिण वाला छोटा रन पूर्व से पश्चिम तक लगभग ७० मील लंबा, अनुमान से २००० वर्गमील में फैला है। कभी कभी रन का संपूर्ण सतह खास कर के छोटे रन का नमक से पूर्ण हो जाता है। रन के छोटे टापुओं में से चंद टापुओं को छोड़ कर, जिन पर जगह जगह झाड़ियां और घास जमते हैं, रन में किसी जगह वृक्षों तथा झाड़ियों का चिन्ह नहीं है। जंगली गदहे टापुओं और और किनारों के पास घूमा करते हैं और घास चरते हैं। कभी कभी बरसात में पानी की बहुत बाढ़ हो जाती है। उस समय आर पार जाना दुस्तर और भयानक हो जाता है बाढ़ का पानी सूख जाने पर जमीन नमक से पूर्ण हो जाती है। जंगली गदहों के झुण्डों और भूली हुई चिड़ियों के अतिरिक्त कोई प्राणी रन में नहीं देख पड़ते, कभी कभी ऊंटों के बनिजारे देखने में आते हैं। किनारों के पास के अपेक्षा रन का मध्य भाग बहुत ऊंचा है, इस कारण से बगलों में कीचड़ तथा पानी रहने पर भी मध्य का भाग सूख जाता है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय कच्छ में ८ कसबे, ८८९ गांव,

१०२००७ मकान और ५१२०८४ मनुष्य थे; अर्थात् ३२५४७८ हिंदू, ११८७९७ मुसलमान, ६६६६३ जैन, ९५९ जंगली जातियां, ९६ कृस्तान, ४२ पारसी, ३० सिक्ख और १९ यहूदी। इनमें सैकड़े पीछे ८ से कुछ अधिक राजपूत और ६ से अधिक ब्राह्मण थे। राजपूतों में लगभग २०००० जाड़ेजा राजपूत थे।

कच्छ में सर्व साधारण लोगों की भाषा कच्छी है। कुछ कुछ फारसी और हिंदुस्तानी भी प्रचलित है। सन् १८८२ में कच्छ के ८६ स्कूलों में लगभग ५४०० लडके पढ़ते थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कच्छ राज्य के कसबे मांडवी में ३८१५५, भुज में २५४२१, अंजर में १४४३३ और मांडवा में १०४३३ मनुष्य थे।

कच्छ की तिजारत खास करके समुद्र द्वारा होती है। रुई, फिटकिरी, काले कपड़े, चांदी के वर्त्तन, मिलेट, दलिहन अन्न इत्यादि चीजें कच्छ से अन्य देशों में जाती हैं और विविध प्रकार के अन्न, चीनी, मक्खन, किराना माल, लकड़ी, फल, कपड़ा, हाथीदांत, और लोहा, पितल तथा तांबे के वर्त्तन आदि वस्तु अन्य देशों से कच्छ में आती हैं। कच्छ के बहुत लोग ऊंटों को रखते हैं।

कच्छ में भूकंप बहुत हुआ करता है। उन्नीसवी शदी में ४ वार; अर्थात् सन् १८१९, १८४४, १८४५ और सन् १८६४ में भूकंप हुआ था; इनमें सन् १८१९ का भूकंप बड़ा भयंकर था; उस समय कच्छ के रावसाहब के महल के साथ भुज राजधानी के लगभग ७००० मकान गिर गए, ११५० मनुष्य मकानों के नीचे दब गए, कच्छ राज्य के नगरों की बड़ी हानी हुई और टेरा का किला जो कच्छ के राज्य में सब किलों से दृढ़ था, जमीन में मिल गया।

कच्छ के महाराव जाड़ेजा राजपूत हैं। वर्त्तमान कच्छ नरेश महाराव सर खेंगारजी सवाई बहादुर के. सी. आई ई, जिनका जन्म सन् १८६६ में हुआ था; अपने पिता महाराव श्री प्रागमलजी की मृत्यु होने पर सन् १८७६ में उत्तराधिकारी हुए थे। महाराव साहब और उनका भ्राता अच्छी तरह से शिक्षित हैं। कच्छ के राज्य से लगभग ३०००००० रुपया मालगुजारी आती

है। कच्छ के महाराव को अंगरेजी महाराज की ओर से १७ तोपों की सलामी मिलती है। फौजी बल २४० सवार, ४०० पैदल, ५०० अरब, और ४० गोलंदाज हैं। इनके अलावे लगभग ३००० गैर मामूली पैदर और ६०० पुलिस हैं। आवश्यक होने पर उनके आधीन के प्रधान लोग लगभग ४००० आदमी की सहायता कर सकते हैं।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि १५ वीं शदी में जाड़ा के पुत्र जामलाख के आधीन बहुत से जाड़ेजा राजपूत सिंध देश से कच्छ में आए। जाड़ा के वंशधर होने से वे जाड़ेजा कहलाते हैं। जाड़ेजा राजपूत अपनी लड़कियों को मारडालते थे। लोग कहते हैं कि इनका मूल पुरुषा जाड़ा ने इस रीति को प्रचलित किया था। उसने बिना ब्याही हुई अपनी ७ लड़कियों को मारडाला; क्योंकि लड़कियों के योग्य वर नहीं मिले थे।

सन् १५४० तक जामलाख के वंशधर ३ शाखों में बंट कर कच्छ पर हुकूमत करते थे। सन् १५४० में जामवंश के खेंगार नामक प्रतापी पुरुष अहमदाबाद के मुसलमान बादशाह की सहायता से जाड़ेजा जाति का प्रधान और संपूर्ण कच्छ का मालिक बन गया। उसने बादशाह से राव की पदवी और मोर्वी का राज्य पाया। खेंगार के चचा जामरावल, जो प्रथम कच्छ के एक बड़े भाग पर हुकूमत करते थे, काठियावाड़ में भाग गये। उन्हों ने वहां नवानगर राज्य को कायम किया। उसके वंशधर नवानगर के राजा लोग अब तक जाम कहलाते हैं। खेंगार से ६ पीढ़ियों तक बड़े पुत्र राव बनते आए; परंतु १७ वीं शदी के पिछले भाग में रायधनजी की मृत्यु होने पर उनके तीसरे पुत्र प्रागजी ने अपने बड़े भाई को मार कर कच्छ का राजसिंहासन ले लिया; किंतु उस भाई के पुत्र को जो गद्दी का अधिकारी था, मोर्वी का राज्य देदिया। मोर्वी अब तक उसी की संतान के अधिकार में है। खेंगार के वंश के राव लखपति की मृत्यु होने पर उनकी १६ स्त्रियां उनके साथ चिता पर जल गई थीं। कच्छ के अंगरेजी रेजीडेंटी के पास उनके स्मरण चिन्ह अब तक विद्यमान हैं। कच्छ के राव के मूल पुरुषा खेंगार से १४ वें पीढ़ी में महाराव श्रीप्रागमलजी थे, जिनके पुत्र वर्तमान कच्छ नरेश हैं।

नारायणसर।

भुज राजधानी से लगभग ९० मील पश्चिमोत्तर कच्छ के राज्य में सिंध नदी के पूर्वी मुहाने के पास नारायणसर नामक बस्ती और पवित्र तीर्थ स्थान है। बस्ती में एक छोटा राजा रहता है। वहां आदिनारायण का, लक्ष्मीनारायण का और गोवर्द्धननाथजी का मन्दिर है। वहां बहुतेरे यात्री अपनी छाती पर छाप लेते हैं। नारायणसर से १ मील दूर कोटेश्वर महादेव और नीलकंठ महादेव हैं। वहां बहुतेरे यात्री अपनी दहिनी बांह पर छाप लेते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—श्रीमद्भागवत (६ वां स्कंध ५ वां अध्याय) दक्षप्रजापति ने १० पुत्र उत्पन्न करके उनको सृष्टी करने की आज्ञा दी। वे सब पश्चिम दिशा के नारायणसर नामक पुण्यदायक तीर्थ में, जहां सिंधु नदी समुद्र में मिली है, जाकर सृष्टि उत्पन्न की कामना से कठोर तप करने लगे, किंतु जब नारदजी ने वहां जाकर उनको ज्ञान का उपदेश दिया तब उन लोगों ने सृष्टी के कामना की इच्छा को छोड़ कर जिस मार्ग से फिर लौटना नहीं होता उस मार्ग को ग्रहण किया। यह समाचार सुन कर दक्ष ने एक सहस्र पुत्र उत्पन्न करके उनको प्रजा उत्पन्न करने की आज्ञा दी वे लोग भी नारायणसरोवर पर गए और उसके पवित्र जल के स्पर्श से विशुद्ध चित्त होकर सृष्टि के कामना से तप करने लगे। फिर नारदजी वहां जाकर उनको ज्ञान उपदेश देकर विरक्त करदिया। वे लोग भी अपने भ्राताओं के मार्ग में चले गए।

ब्रह्मवैवर्त पुराण—(कृष्णजन्म खंड, १२२ वां अध्याय) चंद्रमा ने देव गुरु बृहस्पति की स्त्री तारा को भादो सुदी चौथ को हरण किया और भादो बदी चौथ को छोड़ दिया बृहस्पति ने तारा को ग्रहण करलिया। उस समय तारा ने चंद्रमा को शाप दिया कि जो मनुष्य तुम्हारा दर्शन करेगा वह कलंकी और पापी होगा। तब चंद्रमा ने नारायण सरोवर में जाकर नारायण की आराधना की। नारायण ने प्रकट होकर चंद्रमा से कहा कि हे चंद्र! तुम सर्वदा कलंकी नहीं रहोगे; जो मनुष्य भादो सुदी चौथ को तुमको देखेगा, वही कलंकी होगा।

गोंडल।

मैं राजकोट में लौट कर रेलगाड़ी में सवार हो गोंडल पहुंचा। राजकोट के रेलवे स्टेशन से २४ मील दक्षिण कुछ पश्चिम और जूनागढ़ से ४० मील पूर्वोत्तर गोंडल का रेलवे स्टेशन है। काठियावाड़ के हालाड़ विभाग में देशी राज्य की राजधानी गोंडल एक कसबा है। गोंडल से राजकोट, जेतपुर, जूनागढ़ धोराजी और उपलेटा को सड़क गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय गोंडल कसबे में १९३४३ मनुष्य थे; अर्थात् ९४२८ हिंदू, ३८४७ मुसलमान, २०२२ जैन, ३७ कृस्तान और ९ पारसी।

कसबे के बगलों में दीवार बनी हुई है। उसमें बहुत से सुंदर मंदिर हैं। कसबे के बाहर एक बाग में गोंडल के ठाकुर साहब के आफिस हैं। इनके अलावे गोंडल में अस्पताल, दवाखाना और छोटे बड़े कई स्कूल हैं।

गोंडल का राज्य—काठियावाड़ के हालाड़ विभाग में गोंडल का राज्य है। राज्य के एक छोटे भाग में पहाडियां हैं। कपास और अन्न खास पैदावार है। भदर इत्यादि अनेक छोटी नदियां बहती हैं। छोटे बड़े लगभग ४० स्कूल हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय गोंडल राज्य के १०२४ वर्गमील क्षेत्रफल में १७४ गांव और १३५६०४ मनुष्य थे; अर्थात् १०९३२९ हिंदू, २४६९२ मुसलमान और ९६२३ अन्य।

गोंडल नरेश जाड़ेजा राजपूत हैं। वर्तमान गोंडल नरेश ठाकुर साहब सर भगवतसिंहजी संग्रामजी के. सी, आई. ई ने, जिनकी अवस्था लगभग ३० वर्ष की है, राजकोट के राजकुमार कालिज में शिक्षा पाई और सन् १८८९ में इंगलैंड के एडिंबरा में जाकर डाक्टरी विद्या में निपुणता देखलाई। वहांकी यूनिवरसिटी ने इनको एल एल डी की पदवी दी। यह काठियावाड़ के राजाओं में दूसरे दर्जे के राजाओं में थे; किन्तु अब अंगरेज महाराज ने इनको प्रथम दर्जे के राजाओं में कर दिया है।

गोंडल के राज्य से लगभग १२००००० रुपया मालगुजारी आती है,

जिसमें से अंगरेजी गवर्नमेंट, बड़ोदा के गायकवाड़ और जूनागढ़ के नवाब को ११०७२० रुपया राजकर दिया जाता है। गोंडल नरेश का सैनिक बल २०० सवार, ६६० पैदल और पुलिस तथा १६ तोपें हैं।

पोरबंदर।

गोंडल के रेलवे स्टेशन से २३ मील दक्षिण-पश्चिम जेतलसर जंक्शन और जेतलसर से १० मील पश्चिम धोराजी का रेलवे स्टेशन है। धोराजी काठियावाड़ में एक प्रसिद्ध तिजारती कसबा दीवार से घेरा हुआ है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय २०४०६ मनुष्य थे; अर्थात् १०५६० मुसलमान, ८६१६ हिंदू, १२१३ जैन, १६ पारसी और १ कृस्तान। धोराजी में एक ठाकुर साहब हैं।

धोराजी के रेलवे स्टेशन से ११ मील पश्चिम उपलेटा का रेलवे स्टेशन है। एक नदी के किनारे पर पक्की दीवार से घेरा हुआ उपलेट एक सुन्दर गांव है, जिसमें एक ठाकुर साहब रहते हैं।

उपलेटा के रेलवे स्टेशन से ५७ मील और जेतलसर जंक्शन से ७८ मील पश्चिम (जूनागढ़ से ९५ मील) पोरबंदर का रेलवे स्टेशन है। बंबई हाते के काठियावाड़ के पश्चिम किनारे पर (२१ अन्श, २७ कला, १० विकला उत्तर अक्षांश और ६९ अंश, ४८ कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) काठियावाड़ में एक देशी राज्य की राजधानी तथा समुद्र का बंदरगाह पोरबंदर है, जिसको बहुत लोग सुदामापुरी भी कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पोरबंदर कसबे में १८८०५ मनुष्य थे; अर्थात् १३२७२ हिंदू, ४३६९ मुसलमान, १०९० जैन, ५७ पारसी और १७ कृस्तान।

पोरबंदर कसबे के बगलों में पत्थर की दीवार है। कसबे के प्रायः सब मकान पत्थर से बने हुए हैं। राणासाहब का महल तीन मंजिला है। केदारनाथ शिव का विशाल मन्दिर बना हुआ है। मन्दिर में भोगराग का सुंदर प्रबंध है। कसबे में राणासाहब की कचहरियां, स्कूल, अस्पताल, मुरारजी

कृष्णजी की धर्मशाला, दो तीन अन्य धर्मशाले, छोटे बड़े छः सात सदावर्त और अनेक देवमन्दिर हैं। पोरवंदर का पत्थर प्रसिद्ध है। मैंने वहां देखा कि कारीगर लोग मकान बनाने के काम के लिये पत्थरों को लकड़ी के समान आरा से चीरते थे।

पोरवंदर में समुद्रद्वारा सिंधु, बलोचिस्तान, पारस की खाड़ी, अरब और अफ्रिका के पश्चिम किनारे के बंदरगाहों के साथ तथा भारतवर्ष के कोंकन और मालबार किनारे के सहित सौदागरी होती है। सन् १८८२—१८८३ में लगभग १६६०००० रुपये के माल की आमदनी रफतनी हुई थी। आगबोट सप्ताह में तीन वार बंबई से मगरोल, विरावल बंदर, पोरबंदर, द्वारिका इत्यादि बंदरगाह होकर करांची को और करांची से द्वारिका, पोरबंदर, विरावल इत्यादि होकर बंबई को जाते हैं। द्वारिका के कुछ यात्री पोरबंदर में आगबोट पर चढ़ते हैं तथा पोरबंदर में आगबोट से उतरते हैं। पोरबंदर से द्वारिका का महसूल एक आदमी का दूसरे क्लास का २ रुपये और तीसरे क्लास का एक रुपया लगता है।

सुदामाजी का मन्दिर—पोरबंदर के राणासाहब की वाटिका में श्रीकृष्ण भगवान के मित्र सुदामाजी का एक बहुत छोटा मन्दिर है। मन्दिर में सुदामाजी और उनकी पत्नी की मूर्ति खड़ी है। मन्दिर में केवल एक पुजारी रहता है। वाटिका में एक छोटा बंगला और वाटिका के निकट जगन्नाथजी का एक बहुत छोटा मन्दिर है। वाटिका से बाहर सुदामा के मन्दिर से पश्चिम भूमि पर चक्रव्यूह की लकीर की तरह आधे फीट से अधिक ऊंची और इतनीही चौड़ी गच की लकीर से "भूल भूलैया" बनी है, जिसको लोग चौरासी भी कहते हैं। वह ऐसे ढब से बनी है कि आदमी उसके एक मार्ग से प्रवेश करके लकीरों से बने हुए सब घेराओं में घूम कर दूसरे मार्ग से निकल जाता है। सुदामाजी द्वारिका से आने पर अपनी मढ़ी के स्थान पर बड़ा महल देख कर भूल गए थे, उसी के स्मरणार्थ यह भूलभुलैया बनी है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—श्रीमद्भागवत—(दशम स्कंध ८० वां अध्याय) सुदामा नामक एक दरिद्र ब्राह्मण द्वारिकाधीश श्रीकृष्णचन्द्र के मित्र थे।

एक समय उनकी स्त्री ने अति दुःखित हो पति से बोली कि हे ब्राह्मण! यादवों में श्रेष्ठ साक्षात् लक्ष्मीपति कृष्णचन्द्र तुम्हारे सखा हैं, तुम्हारे जाने पर वह तुमको बहुत धन देंगे; तुम उनके पास जाओ। सुदामा की आज्ञा से उनकी स्त्री ने कृष्णचन्द्र को भेंट देने के लिए थोड़ा सा चावल एक फटा हुआ वस्त्र में बांध कर ला दिया। सुदामा उसको लेकर द्वारिका में रुक्मिणी के महल के पास पहुंचे। श्रीकृष्णचन्द्र अपने द्वारपाल के मुख से सुदामा का आगमन सुन कर रुक्मिणी की शय्या से शीघ्र उठे। उन्होंने सुदामा से मिल कर उनको अपने पलंग पर बैठाया। साक्षात् श्रीरुक्मिणीजी उस ब्राह्मण की सेवा करने लगी।

(८१ वां अध्याय) कृष्णभगवान ने सुदामा से कहा कि हे ब्राह्मण! तुम मेरे लिये क्या भेंट लाये हो?। जब सुदामा ने लज्जित हो उनको तंडुल नहीं दिया, तब कृष्णभगवान ने सुदामा के वस्त्र में से चावल लेलिया। जब उन्होंने दो मुट्ठी चावल भोजन करके तीसरी मुट्ठी भोजन करने का विचार किया, तब रुक्मिणी ने उनका हाथ पकड़ लिया। सुदामा एक रात्रि श्रीकृष्ण के भवन में सुख से निवास करके प्रातःकाल भगवान से बिदा हो अपने घर चले। वह मार्ग में बिचार करते थे कि इस कारण से कृष्ण ने मुझको कुछ नहीं दिया है कि दरिद्री सुदामा धन को पाकर मदांध हो मुझको भूल जायगा। उसके पश्चात् सुदामा ने अपने नगर म पहुंच कर देखा कि इन्द्रभवन के समान महल बन गए हैं। चारो ओर विमान सुशोभित है। चित्र विचित्र बाग लग गए हैं। अनेक सरोवर बन गए हैं। यह सब देख कर, उनका मन चकित होगया। फिर उन्हो ने बिचार किया कि यह तो मेराही स्थान है; ऐसा क्यों होगया। उस समय उनकी स्त्री पति का आगमन सुन गृह से बाहर आकर उनको अपने महल में लेगई। सुदामा ने बडा आश्चर्य माना और पीछे जान लिया कि कृष्णभगवान की कृपा से यह संपत्ति और ऐश्वर्य मुझको मिला है।

पोरबंदर का राज्य—*काठियावाड़ के सौराष्ट्र विभाग में काठिया*-वाड़ के पश्चिमी भाग में अरब के समुद्र के किनारे के पास ६३६ वर्गमील

क्षेत्रफल में पोरबंदर का राज्य है। यह राज्य समुद्र के किनारे पर दूर तक लंबा है। इसकी चौड़ाई किसी जगह २४ मील से अधिक नहीं है। राज्य में प्रायः पहाड़ी नहीं है। तीन चार छोटी नदियां बहती हैं। समुद्र के किनारे के निकट बड़े बड़े दलदल हैं। उनमें वर्षा का पानी इकट्ठा होता है। वर्षा का पानी पड़ने से नमकदार दलदलों में केवल घास और नरकट जमता हैं; किंतु मीठे पानी के दलदलों में धान, चना, अरहर इत्यादि फसिल होती है। इनमें से एक दलदल लगभग ६ मील लंबा और ४ मील चौड़ा है। पोरबंदर के राज्य में औसत सालाना २० इंच वर्षा होती है। पोरबंदर का पत्थर सुंदरता में प्रसिद्ध है। वह राज्य में सर्वत्र मिलता है; किंतु खास करके बरदा पहाड़ियों की खानों से निकाला जाता है और बंबई शहर में बहुत भेजा जाता है। पोरबंदर राज्य के उत्तम मकानों की जोड़ाई में गारा नहीं दिया जाता है। कारीगर लोग पत्थरों के टुकड़ों को, जो आरा से चीर कर और बसुलों से काट कर बनाए जाते हैं, ठीक तरह से बैठा कर दीवार बनाते हैं। वर्षा होने पर वे टुकड़े आपसे आप मिल जाते हैं। भड़ौंच, सूरत, नवसारी, करांची, बंबई और मलेबार के किनारों के बंदरगाहों से पोरबंदर की सौदागरी होती है। पोरबंदर के राज्य में पोरबंदर, माधवपुर और मियानी प्रधान बंदरगाह हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय, पोरबंदर राज्य के १ कसबे और ८४ गांवों में ७१०७२ मनुष्य थे, अर्थात् ६३४०६ हिंदू, ६७४१ मुसलमान और ९२५ दूसरे।

पोरबंदर के राणासाहब जेठवा राजपूत हैं। उनको अंगरेज महाराज की ओर से ११ तोपों की सलामी मिलती है। यह राज्य पहिले काठियावाड़ के दूसरे दर्जे के राज्यों में था; किन्तु सन् १८६९ में तीसरे दर्जे में कर दिया गया। पोरबंदर के राज्य से लगभग ५५०००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमें से अंगरेजी सरकार, बड़ोदा के गायकवाड़ और जूनागढ़ के नवाब को ४८८५० रुपया दिया जाता है। राणासाहब का लगभग ६०० आदमियों का सैनिक बल है। सन् १८८२-८३ में पोरबंदर के राज्य में १० स्कूल थे। लग-

भग १५० वर्ष से पोरबंदर कसबा राजधानी हुआ है। वर्तमान पोरबंदर नरेश राणा श्रीविक्रमादित्यजी खेमाजी ७५ वर्ष अवस्था के वृद्ध हैं। यह बड़े धर्म-निष्ठ हैं; किंतु राज्य प्रबंध के गड़बड़ होने से बंबई के गवर्नमेंट ने इनको राज्यच्युत कर दिया है।

माधवपुर—पोरबंदर कसबे से ४० मील दक्षिण-पूर्व समुद्र के पास पोरबंदर के राज्य में माधवपुर बंदरगाह है। वहां मधुमतीनदी समुद्र में मिली है और ब्रह्मकुंड तीर्थ तथा कृष्णभगवान का प्रसिद्ध मन्दिर है। कुछ लोग कहते हैं कि इसी स्थान पर रुक्मिणीजी के साथ कृष्णचंद्र का विवाह हुआ था।

छब्बीसवां अध्याय।

(काठियावाड़ में) मूलद्वारिका, द्वारिका और बेटद्वारिका।

मूलद्वारिका।

पोरबंदर से १२ मील पश्चिमोत्तर द्वारिका जाने वाली सड़क के पास मूलद्वारिका नामक गांव है। वहां बहुत से पुराने मन्दिर हैं। लोग कहते हैं कि श्रीकृष्ण भगवान् मथुरा से प्रथम इसी जगह आए थे।

मूलद्वारिका से ६ मील, (पोरबंदर से १८ मील पश्चिमोत्तर) हलमंडल सवडीवीजन में मियानी पुराना बंदरगाह है। मियानी से लगभग २२ मील (पोरबंदर से ४० मील) पश्चिमोत्तर गोलगढ़ नामक गांव के पास पिंडारक तीर्थ और दुर्वासा ऋषि का आश्रम है।

द्वारिका।

पोरबंदर से ५६ मील, विरावल बंदर से १५० मील और बंबई शहर से ३४२ मील पश्चिमोत्तर (२२ अंश, १४ कला, २० विकला उत्तर अक्षांश

और ६९ अंश, ५ कला, पूर्व देशांतर में) बंबई हाते का काठियावाड़ प्राय द्वीप के पश्चिमोत्तर के कोने में, बड़ोदा के राज्य के अमरेली विभाग के ऊख मंडल सबडिवीजन में द्वारिका एक छोटा कसबा तथा प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है, जिसको गोमतीद्वारिका भी कहते हैं । पोरबंदर, विरावलबंदर और बंबई में रेल है । आगबोट सप्ताह में ३ बार बंबई से विरावलबंदर, पोरबंदर, द्वारिका इत्यादि बंदरगाह होकर करांची को और करांची से द्वारिका, पोरबंदर, विरावलबंदर इत्यादि बंदरगाह होकर बंबई को जाते हैं । द्वारिका के यात्री बंबई, विरावलबंदर और पोरबंदर में रेलगाड़ी से उतर कर आगबोट द्वारा द्वारिका पहुंचते हैं । कुछ लोग पोरबंदर से पैदल अथवा बैलगाड़ी पर सवार हो द्वारिका जाते हैं । बैलगाड़ी की सड़क अच्छी नहीं है । आगबोट का महसूल पोरबंदर तथा विरावल बंदर से द्वारिका का दूसरे क्लास का २ रुपया और तीसरे क्लास का १ रुपया और बंबई से द्वारिका का दूसरे क्लास का ४ रुपया और तीसरे क्लास का २ रुपया लगता है। आगबोट पर चढ़ाने अथवा उतारने वाली नाव का महसूल चार आना अलग देना पड़ता है। द्वारिका में उतरने वालों से चुंगी की तलाशी ली जाती है। यद्यपि पोरबंदर से आगबोट केवल ७ घंटे में द्वारिका पहुंच जाते हैं और सड़क द्वारा पोरबदर से द्वारिका जाने में दो दिनों से अधिक समय लग जाता है तथापि बहुतेरे लोग आगबोट के क्लेश से बचने के लिये पैदल अथवा बैलगाड़ी पर वहां से द्वारिका जाते हैं । हवा तेज रहने पर जब नाव आगबोट पर चढ़ने वाले यात्रियों को लेकर उछलती कूदती ऊंची ऊंची लहरों को लांघती हुई पाल के सहारे से आगबोट की तरफ चलती है, तब कितने लोग अधीर होजाते हैं, तथा कितने लोग वमन करते हैं । इससे अधिक क्लेश आगबोट पर होता है क्योंकि उस पर पहिले के चढ़े हुए कितने लोग पांव फैला कर सोते हैं; नये चढ़ने वालों में से कितने को बैठने का स्थान नहीं मिलता तथा कितने लोग वमन करते हैं; किंतु पवन की तेजी नहीं रहने पर और बैठने सोने का स्थान मिल जाने पर आगबोट में कोई दुःख नहीं होता । मेरे जाने के समय हवा तेज थी द्वारिका भारतवर्ष के पश्चिम के किनारे पर, भारतवर्ष के ४ धामों में

से एक धाम और सप्त पुरियों में से एक पुरी है। सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय गोमतीद्वारिका में ७४३ मकान और लगभग ५००० मनुष्य थे।

द्वारिका कसबे के एक भाग के चारो ओर, जो लगभग २५० गज उत्तर से दक्षिण को लंबा और २०० गज चौड़ा अर्थात् लगभग १७ बिघे भूमि पर है, पक्की दीवार बनी हुई है, जिसके चारो बगलों में एक एक फाटक बना है। दक्षिण की दीवार में रणछोड़जी के मन्दिर के घेरे का खास फाटक है। घेरे के भीतर बस्ती, धर्मशाले और बहुत से मन्दिर और घेरे के बगलों में अर्थात् उसके बाहर बस्ती, बहुत से मन्दिर, स्थान इत्यादि हैं। द्वारिका में आठ दस धर्मशाले, बड़ोदा के महाराज की कचहरियां, पुलिस, जेलखाना, फौजी छावनी, पांच छः स्कूल और कई एक अस्पताल हैं।

सन् १८५९ के बघेरों के बगावत के समय से महाराज के खर्च से द्वारिका में देशी पैदल की एक कंपनी अंगरेजी सेना रहती है। उनके अलावे महाराज की सेना भी है। द्वारिका ऊखमंडल सबडिवीजन का सदर स्थान है। गोमतीद्वारिका और बेटद्वारिका के यात्रियों का 'कर' और चुंगी की आमदनी ४०००० रुपये पर ठीका दिया गया है। इनके अलावे लगभग ८००० रुपया घाट की आमदनी है। ऐसा नहीं जानना चाहिए कि बड़ोदा के महाराज यात्रियों से 'कर' लेकर अपने घर ले जाते हैं। ऊपर लिखी हुई आमदनी के अलावे महाराज को द्वारिका के प्रबंध के खर्च के लिये प्रति वर्ष लगभग ४०००० रुपया घर से देना पड़ता है।

समुद्र के किनारे पर नमक तैयार होता है, जो वहां बहुत सस्ता बिकता है। समुद्र का ज्वार और भाटा नित्य दो बार होता है। भाटा होने पर अर्थात् समुद्र की बाढ़ का पानी हट जाने पर बहुत से भांति भांति के गोमती चक्र, कौड़ी, दोहना इत्यादि जल उद्भिज वस्तु किनारे पर पड़ जाती हैं। यात्री लोग गोमती चक्र को पूजा करने के लिये अपने घर ले जाते हैं।

द्वारिका में बहुत पंडे हैं। वही लोग धनी यात्रियों के साथ बेटद्वारिका भी जाते हैं। वहां जाति जाति के अलग अलग पंडे हैं। किसी पंडे के हिस्से में एक जाति के यात्री और किसी के हिस्से में दो, तीन या उससे भी

अविक जाति के यात्री हैं। उन लोगों को यात्री खोज लेने के लिये कहीं जाना नहीं पड़ता; यात्री को पुरी में पहुंचने पर उस जाति का पंडा उसके साथ लग जाता है। वहां की स्त्रियां पर्दे में नहीं रहतीं। ब्राह्मण भोजन के समय ब्राह्मणों के साथ उनकी स्त्रियां भी आकर भोजन करती हैं; किंतु विधवा स्त्रियां उनके साथ पंक्ति में नहीं बैठतीं।

द्वारिका के आस पास किसी चीज की पैदावार नहीं है; सब वस्तु बाहर से आती हैं। नागफेनी और सीज जहां तहां बहुत हैं, जो जलावन के काम में आते हैं। किसी किसी जगह आम आदि के वृक्ष देखने में आते हैं; किंतु वह हरे भरे अथवा सीधा खड़े नहीं हैं। पहिले उस देश में कावाजाति के मुसलमान या अन्यलोग डांका मारते थे, इस लिये साधु लोग तथा निर्धन लोगों के अतिरिक्त धनी तथा सर्व साधारण लोग वहां प्रायः नहीं जाते थे। अब किसी जगह कोई भय नहीं है, नित्य सैकड़ों यात्री द्वारिका में पहुंचते हैं।

गोमती—द्वारिका के पश्चिम समुद्र और दक्षिण गोमती नामक लंबा खाल है, जो समुद्र के ज्वार के पानी से भरा रहता है। गोमती के होने से उस नगर को लोग गोमती द्वारिका कहते हैं। गोमती के उत्तर के किनारे पर द्वारिका की ओर पश्चिम से पूर्व तक इस क्रम से ९ पक्के घाट बने हुए हैं;—१ संगम घाट, २ नारायणघाट, ३ वासुदेवघाट, ४ गऊघाट, ५ पार्वतीघाट, ६ पांडवघाट ७ ब्रह्माघाट ८ सुरधनघाट और ९ वां सरकारीघाट। समुद्र और गोमती के मेल के पास संगमघाट पर संगमनारायण का मन्दिर, वासुदेवघाट के पास हनूमानजी का मंदिर और उससे पश्चिम नृसिंहजी का स्थान है। सरकारी घाट से पूर्व निष्पाप कुण्ड नामक छोटा पोखरा है; उसके बगलों पर पक्की सीढियां बनी हैं; उसमें गोमती का पानी रहता है। वहां की रीति के अनुसार यात्री लोग प्रथम निष्पाप कुंड में तीर्थ भेंट देकर स्नान करते हैं। जिसकी इच्छा होती है वह उस स्थान पर पिंडदान करता है। उस कुण्ड के समीप एक अन्य छोटा कुंड, मंवलियाजी का मन्दिर, गोवर्द्धननाथ का मंदिर और महाप्रभु की बैठक है। प्रति यात्री को गोमती में स्नान करने के लिये बड़ोदा के महाराज के कर्मचारी अथवा ठीकेदार को दो

गोमती द्वारिका के मंदिरों का नकशा
उत्तर
माधवजी
लक्ष्मी नारायण
देवकी माता
पुरुषोत्तमजी
कुशेश्वर शिव
राधा
फीट का स्केल
0
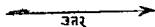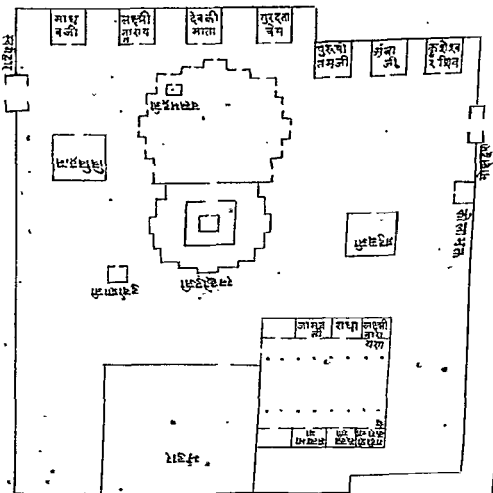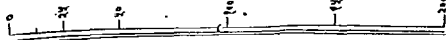
रुपया देना पड़ता है; विना नियमित दो रुपया दिए हुए कोई गोमती के किसी घाट पर स्नान नहीं कर सकता है। यात्री प्रथम दो रुपया देकर के तब निष्पाप कुण्ड में स्नान करता है। जो एक बार नियमित कर दे देता है, वह नित्य स्नान करता है। दरिद्र लोगों से "मेरे पास कुछ नहीं है" ऐसा सौगन्ध करा कर उसका 'कर' माफ कर दिया जाता है। इसी भांति बेटद्वारिका के मन्दिरों में दर्शन करने वालों से भी दो रुपया लिया जाता है। लगभग १० वर्ष पहिले ब्राह्मणों और साधुओं को छोड़ कर अन्य यात्रियों से गोमती में स्नान करने और बेटद्वारिका के मन्दिरों में दर्शन करने का महसूल प्रतियात्री का ९ रुपया लगता था, किन्तु अब नए प्रबन्ध के अनुसार सबको दो दो रुपया दोनों द्वारिका में देना होता है।

गोमती के दक्षिण किनारे पर पंचकुंआ नाम से प्रसिद्ध ५ पवित्र कूप हैं। पांचो लगभग एक एक हाथ लंबे और इतनेही चौड़े चौखूटे हैं। यात्री लोग कूपों से जल निकाल कर आचमन और मार्जन करते हैं।

मंदिर—यात्रीलोग निःपाप कुण्ड में स्नान करके रणछोड़ आदि देवताओं के मंदिर में जाकर दर्शन करते हैं। शहरपनाह के भीतर उसके पूर्व-दक्षिण के कोने के पास लगभग २४० फीट लंबे और २०० फीट चौड़े घेरे में रणछोड़ आदि देवताओं के मंदिर हैं (यहां के नकशे में देखिये)। घेरे के दक्षिण बगल में स्वर्गद्वार नामक फाटक और उत्तर बगल में मोक्षद्वार नामक फाटक है। स्नान करके मंदिर में जाने के समय मार्ग में कृष्णजी, गोमतीमाता और महालक्ष्मीजी और सीढ़ियों पर हनुमानजी, नृसिंहजी और साक्षीगोपाल का दर्शन होता है। घेरे के भीतर के मंदिरों में जाकर देवताओं के पूजन करने का 'कर' नियत है। रणछोडजी के मंदिर का ८ आना, त्रिविक्रमजी के मंदिर का ४ आना, प्रद्युम्नजी के मंदिर का ४ आना और अन्य मंदिरों का 'कर' दो दो आना या उससे भी कम है। जो यात्री एक बार पुजारियों को नियत 'कर' दे देता है, वह मंदिर के भीतर नित्य जाकर देवताओं के चरणों को स्पर्श करके चरणों पर पुष्प तथा तुलसी

पत्र चढ़ाता है। जो यात्री जिस मंदिर का नियमित कर नहीं देता, वह उस मंदिर के द्वार के बाहर से दर्शन करता है।

कृष्ण भगवान कालयवन के डर से रण अर्थात् संग्राम छोड़ कर द्वारिका में भाग गए, इसी कारण से उनका नाम रणछोड़ पड़ा है। रणछोड़जी का मंदिर द्वारिका के सब मंदिरों में प्रधान और सबसे अधिक बड़ा तथा सुंदर है। वह मंदिर, जो सात मंजिला शिखरदार है, ४० फीट लंबा और उतनाही चौड़ा तथा लगभग १४० फीट ऊंचा है। ऊपर के मंजिलों में जाने के लिये भीतर सीढ़ियां बनी हुई हैं। मंदिर की दीवार दोहरी है। दोनों दीवारों के बीच में परिक्रमा करने की जगह है। मंदिर के भीतर चांदी के पत्तरों से भूषित किए हुए सिंहासन पर रणछोड़जी की, जिनको द्वारिकाधीश भी कहते हैं; ३ फीट ऊंची श्यामल चतुर्भुज मूर्ति है। मूर्ति के अंग में बहुमूल्य वस्त्र, गले में सोने के अनेक भांति के ११ माला और सिर पर सुन्दर सुनहरा मुकुट है। मंदिर के फर्श में श्वेत तथा नील मार्बुल के टुकड़े जड़े हुए हैं, द्वार के चौखटों पर चांदी के पत्तर लगे हैं और छत से सुन्दर झाड़ लटकते हैं। यात्रीलोग रणछोड़जी के चरणों पर फूल और तुलसीपत्र तथा माला चढ़ाते हैं और सिंहासन की परिक्रमा करते हैं। मंदिर के ऊपर के एक मंजिल में अंबा देवी की मूर्ति है। मंदिर के आगे, अर्थात् पूर्व, मंदिर से अधिक लंबा चौड़ा, १०० फीट ऊंचा पंचमंजिला जगमोहन है। उसके भीतर पत्थर के ६० चौकोने स्तंभ लगे हैं। फर्श में श्वेत और नील मार्बुल के टुकड़े जड़े हुए हैं। ऊपर सुन्दर गुम्बज है। उस जगमोहन में पश्चिमदक्षिण के कोने के पास एक छोटी कोठरी में शेषरूप बलदेवजी हैं। मंदिर के समान जगमोहन भी पहलेदार है। मंदिर से दक्षिण पूर्व दुर्वासाजी का छोटा मंदिर है।

रणछोड़जी के मंदिर से दक्षिण त्रिविक्रमजी का शिखरदार मंदिर है। उसके किवाड़, चौखट और सिंहासन पर चांदी के पत्तर जड़े हुए हैं, छत में झाड़ आदि लगे हैं, फर्श में श्वेत और नील मार्बुल के टुकड़े जड़े हुए हैं। मंदिर में सिंहासन पर त्रिविक्रमजी की मनोरम मूर्ति है। रणछोड़जी के वस्त्र भूषणों के समान इनके भी वस्त्र भूषण हैं। त्रिविक्रमजी के पास राजा बलि

और ब्रह्मा के ४ पुत्र; अर्थात् सनक, सनंदन, सनातन और सनत्कुमार की छोटी छोटी मूर्ति और मंदिर के दक्षिण-पश्चिम के कोने में गरुड़ की मूर्ति है। त्रिविक्रमजी को बहुत लोग टीकमजी कहते हैं। वहां के पंडाओं का कथन है कि दुर्वासा ऋषि राजा बलि से त्रिविक्रम भगवान को मांग लाए थे।

रणछोड़जी के मंदिर से उत्तर मधुसूदनजी का शिखरदार मंदिर है। मंदिर में मार्बुल के टुकड़ों का फर्श बना है, झाड़ लटकते हैं और चांदी के सिंहासन पर श्याम रूप मधुसूदनजी विराजते हैं। उनका शृङ्गार भी प्रायः रणछोड़जी के शृङ्गार के समान है। उनके पास अनिरुद्धजी की छोटी प्रतिमा है।

घेरे के उत्तर वाले फाटक से पश्चिम कुशेश्वर महादेव का मंदिर है। मंदिर के नीचे तहखाने में कुशेश्वर शिवलिंग और पार्वतीजी की मूर्ति है। वहां बहुतेरे यात्री लड्डू तथा घी चढ़ाते हैं। पंडे लोग कहते हैं कि जब कुश नामक दैत्य द्वारिका में बड़ा उत्पात करके सब लोगों को क्लेश देने लगा, तब दुर्वासा ऋषि त्रिविक्रम भगवान को राजा बलि से मांग लाये। जब कुश दैत्य किसी भांति से नहीं मरा, तब त्रिविक्रमजी ने उसको भूमि में गाड़ कर उसके ऊपर शिवलिंग स्थापित कर दिया, जो कुशेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए। उस समय कुश ने कहा कि जो द्वारिका के यात्री कुशेश्वर की पूजा न करे, उसकी यात्रा का आधा फल मुझको मिले, तब मैं इसके भीतर स्थिर रहूंगा। त्रिविक्रमजी ने कुश को यह वर दे दिया; कुश भूमि में स्थित हो गया।

घेरे के भीतर उसके पश्चिम की दीवार के पास क्रम से उत्तर से दक्षिण कुशेश्वर महादेव, अंबाजी, पुरुषोत्तमजी, गुरु दत्तात्रेय, देवकी माता, लक्ष्मी-नारायण और माधवजी के मन्दिर; उत्तर की दीवार के पास मोक्षद्वार फाटक से पूर्व कोला भक्त का मन्दिर और पूर्व की दीवार के पास एक घेरे के पूर्व बगल में क्रम से दक्षिण से उत्तर, खाली मंदिर, सत्यभामा का मन्दिर, रुक्मिणी का मन्दिर, शंकराचार्य्य की गद्दी और पश्चिम बगल में क्रम से दक्षिण से उत्तर १ खाली मन्दिर, और जामवंती, राधा और लक्ष्मीनारायण के ३ मन्दिर हैं (नक्शे से देखिए)।

भीतर वाले घेरे से दक्षिण शारदामठ के आधीन रणछोड़जी का भंडार

घर है। उसमें भोग की सामग्री तैयार करके नियत समयो पर रणछोड़जी आदि यहां के देवताओं को भोग लगाई जाती है। धनी यात्री लोग उस भंडार में भोग की सामग्री अथवा रुपया देकर अपनी ओर से वहां के देवताओं को भोग लगवाते हैं।

भंडार से दक्षिण सुप्रसिद्ध शारदामठ है। भारतवर्ष के चारो दिशाओं की सीमाओं के पास सुप्रसिद्ध शंकराचार्यजी के ४ प्रधान मठ हैं,जो उनके ४ शिष्यो से हुए थे,—दक्षिण की सीमा की ओर मैसूर राज्य के शृंगेरी गांव में शृंगेरीमठ,पश्चिम की सीमा पर द्वारिका म शारदामठ,उत्तर की सीमा के पास गढ़वाल जिले में जोशीमठ और पूर्व की सीमा पर उड़ीसे के जगन्नाथपुरी में गोवर्द्धनमठ। इनका विशेष वृत्तान्त तथा शंकराचार्यजी का जीवन चरित्र भारत-भ्रमण के इसी खंड में शृंगेरी के वृत्तांत में है। इस समय द्वारिका के शारदामठ के स्वामी जगद्गुरु श्रीशंकराश्रम स्वामीजी हैं। उनका जन्म मदरास हाते के गोदावरी जिले के एक गांव मे हुआ था। उनका नाम जगन्नाथशास्त्री था। वह शास्त्रों में अच्छे विद्वान हैं और अंगरेजी तथा फारसी भी जानते हैं। वह इस समय देशभ्रमण के लिए निकले हैं और सनातनधर्म का व्याख्यान देते फिरते हैं।

मन्दिर के बड़े घेरे से बाहर उसके पश्चिम लक्ष्मीनारायण का एक मन्दिर है। नारायण की श्यामवर्ण की चतुर्भुज मूर्ति लगभग २ हाथ ऊंची है, जिसके वाम अंक में लक्ष्मीजी की छोटी प्रतिमा है। नारायण के अंग में बहुमूल्य वस्त्र, शिर पर सुनहरा मुकुट और गले म सोने के ७० हार हैं।

लक्ष्मीनारायण के मंदिर से दक्षिण पश्चिम वासुदेव का मन्दिर है, जिसके चौखट और सिंहासन में चांदी के पत्तर जड़े हुए हैं। मूर्ति श्याम वर्ण की चतुर्भुज है। उसके अंग में सुन्दर वस्त्र; सिर पर सुनहरा मुकुट; हाथो में सुनहरा शंख, चक्र, गदा और पद्म तथा गले म सोने की आठ दस सिकरी हैं।

नगर की परिक्रमा—रणछोड़जी के मन्दिर से नगर की परिक्रमा की यात्रा आरम्भ होती है। मन्दिर से पश्चिम गोमती के घाटों पर के देवताओं के दर्शन करते हुए समुद्र के निकट संगमघाट पर जाना चाहिए। संगम से

उत्तर के समुद्र के घाट को लोग चक्रतीर्थ कहते हैं। उससे उत्तर रत्नेश्वर महादेव का मन्दिर है। उससे उत्तर द्वारिका नगर के बाहर सिद्धनाथ महादेव का मन्दिर मिलता है, जिसका फर्श श्वेत और नील मार्बुल से बना है। उससे आगे ज्ञानकुण्ड नामक बावली; उससे आगे जूनीरामवाड़ी नामक मन्दिर में राम, लक्ष्मण और जानकी; उससे आगे नई रामवाड़ी नामक मन्दिर और सौमित्री बावली नामक कूप, उससे आगे अक्षयवट वृक्ष, अघोरकुण्ड, भद्रकाली और आशापुरी माता की मूर्ति, और उससे आगे कैलासकुण्ड नामक छोटा पोखरा मिलता है। पोखरे के चारो बगलों में पत्थर की सिढ़ियां बनी हुई हैं। उसमें गुलाबी रंग का पानी है। वहां के पंडे कहते हैं कि राजा नृग गिरगिट होकर इसी कुण्ड में रहते थे और इसी स्थान पर उनका उद्धार हुआ था। कैलासकुण्ड से आगे सूर्यनारायण और उससे आगे शहर पनाह के पूर्व के दर्वाजे के पास जय और विजय का दर्शन होता है। उसके पश्चात् निःपापकुण्ड और रणछोड़जी के मन्दिर के बीच के देवताओं के दर्शन करते हुए दक्षिण दरवाजे से रणछोड़जी के मन्दिर में जाकर परिक्रमा समाप्त करना चाहिए।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(सभापर्व, १४ वां अध्याय) मगधदेश का राजा जरासंध अपने प्रताप से सम्पूर्ण पृथ्वी को अपने अधिकार में करके पृथ्वीनाथ बन गया। पृथ्वी के बहुत से राजा उसके भय से उसके सहायक बन गए और बहुतेरे अपने देश को छोड़ कर भाग गए। (कृष्ण ने कहा था कि हम बड़े बड़े अस्त्रों से लगातार ३०० वर्ष तक जरासंध के साथ लड़ेंगे, तौभी उसको नहीं जीत सकेंगे, क्योंकि वह अमर के समान तेजस्वी और बली है)। अस्ति और प्राप्ति नामक जरासंध की दो पुत्री कंस से ब्याही गई थीं। जब कृष्ण ने कंस को मारा, तब उन्होंने अपना दुःख जरासंध से जा सुनाया। जरासंध बारबार मथुरा पर आक्रमण करने लगा। हंस और डिभक दो अति बलवान पुरुष जरासंध के सहायक थे। १७ वीं लड़ाई के समय बलरामजी ने हंस को मारा। डिभक ने हंस की ग्लानी से यमुना में डूब कर अपना प्राण छोड़ दिया। जरासंध उनकी मृत्यु का समाचार पाकर-

उदास हो अपनी राजधानी की ओर चला। उसके लौटने पर कृष्ण आदि यादव आनंदित मन से फिर मथुरा में बसने लगे, किंतु कंस की दोनो स्त्रियां कृष्ण, बलराम को मारने के लिये अपने पिता जरासंध को फिर उभाड़ने लगीं। तब कृष्ण ने उदास हो मथुरा से भागने का विचार किया। सब मथुरावासी अनंत ऐश्वर्य को आपस में बांट कर प्रत्येक आदमी स्वल्प भार लेकर पश्चिम दिशा में भाग गए। वे लोग भारतवर्ष के पश्चिमी विभाग में रैवत पर्वत की चोटियों से सुशोभित कुशस्थली (अर्थात् द्वारिका) पुरी में जा बसे। उन्हो ने अच्छे प्रकार से वहां के दुर्ग अर्थात् किले का संस्कार किया। वह दुर्ग देवताओं के भी गमन करने योग्य न रहा। उस दुर्ग से स्त्रियां भी अनायास लड़ सकती थीं। सब लोग निर्भय होकर गोमंत नामक पर्वत पर निवास करने लगे। वह पर्वत ३ योजन में फैला हुआ था। एक एक योजन पर एक एक सैन्य व्यूह बना था। प्रत्येक योजन के अंतर पर सौ सौ द्वार बने थे।

(वनपर्व, ८२ वां अध्याय) द्वारिकापुरी में जाकर पिंडारक तीर्थ में स्नान करने से बहुत सुवर्ण मिलता है। उस तीर्थ में अब भी पद्म के तुल्य एक मुद्रा, त्रिशूल और पद्म के चिन्ह देख पड़ते हैं। वहां महादेवजी सर्वदा निवास करते हैं।

(अनुशासनपर्व, ७० वां अध्याय) प्यासे हुए चंद आदमियों ने जल को ढूंढते हुए द्वारिका के एक स्थान में तृण लताओं से परिपूर्ण एक बड़ा कूप पाया। उन्होंने उसके भीतर एक बड़ा गिरगिट देखा। जब उनके बहुत यत्न करने पर गिरगिट कूप से नहीं निकला, तब उन्हो ने वहां से जाकर कृष्ण से यह वृत्तांत कह सुनाया। कृष्ण भगवान वहां जाकर कूप से गिरगिट को निकाला। उन्हो ने गिरगिट रूपी राजा नृग से पूछा कि तुम्हारा रूप ऐसा क्यों हुआ है। तब गिरगिट बोला कि अग्निहोत्री ब्राह्मण की एक गऊ भूल कर हमारे गौओं में आ मिली। मैंने एक ब्राह्मण को वह गौऊ फिर दान करदी। अग्निहोत्री ने उस गऊ को दूसरे ब्राह्मण के घर देखा। दोनों ब्राह्मण झगड़ते हुए मेरे पास आए। मैं प्रतिग्रहीता ब्राह्मण को एक गऊ के

पदले में एकसौ गऊ देता था; किन्तु वह अस्वीकार करके चला गया। तब मैं दूसरे ब्राह्मण को उस गऊ के बदले में एक सहस्र गऊ लेने को कहा; पर उसने लेने से अस्वीकार करके अपनीही गऊ को मांगा। उसके पश्चात् जब मैंने उससे सोने चांदी से खचित रथ लेने को कहा, तब वह उसको भी अस्वीकार करके क्रोध युक्त हो अपने घर चला गया। उसी समय मैं काल वश होकर यमराज के समीप उपस्थित हुआ। यमराज ने कहा कि हे महाराज नृग! तुह्मारे पुण्य की संख्या नहीं है, किन्तु तुम से कुछ पाप भी हुआ है। ब्राह्मण की गऊ खो जाने से रक्षा करने की तुह्मारी प्रतिज्ञा नष्ट हुई, इस कारण तुमको पाप हुआ और ब्राह्मणस्व ग्रहण करने से तुमको दूसरा पाप लगा। तुम पाप का फल पहिले अथवा पीछे भोगोगे। मैंने कहा कि मैं पहिलेही पाप का फल भोग करूंगा। हे प्रभो! मैं उसी समय पृथ्वी में गिरा। उस समय धर्मराज ने मुझसे कहा कि सहस्र वर्ष पूरा होने पर तुह्मारा पाप कर्म नष्ट होगा; कृष्ण भगवान तुह्मारा उद्धार करेंगे। मैं गिरगिट रूप से नीचे सिर कर के कूप में गिर गया। ऐसा कह राजा नृग गिरगिट रूप छोड़ कर दिव्य विमान में बैठ सुरलोक में चले गए (यह कथा श्रीमद्भागवत दशम स्कन्ध के ६४ वे अध्याय में है)।

(१५९ वां अध्याय) महर्षि दुर्वासा यह कहा करते थे कि मुझको, जो मैं अल्प अपराध में बड़ा क्रोध करता हूं, कौन मनुष्य सत्कार पूर्वक अपने गृह में रख सकता है। जब किसी ने उनका सत्कार नहीं किया, तब कृष्ण ने अपने निज-गृह में उनका वास कराया। वह कभी सहस्रों आदमी के भोजन का सामान अकेलेही भोजन करलेते; कभी बहुत थोड़ा भोजन करते; कभी हंसते और कभी अकस्मात् रोदन करने में प्रवृत्त होजाते थे। उस समय पृथ्वी पर दुर्वासा के समान अवस्थावाला कोई मनुष्य न था। उसने अपने वास गृह में जाकर बिछाई हुई शय्या और अलंकृत कन्यावों को जलादिया। एक दिन दुर्वासा ने कृष्ण से कहा कि मुझको भोजन के लिये शीघ्रही पायस दो। कृष्ण ने उनको उष्ण पायस दिया। दुर्वासा ने कुछ पायस भोजन करके कृष्ण से कहा कि तुम इस पायस को अपने सारे अंग में लगाओ। कृष्ण ने जूठे पायस -

को अपने शरीर और मस्तक में लगा लिया। तब दुर्वासा ने रुक्मिणी को देख कर उसके शरीर में पायस लगाया। उसके पश्चात् वह पायसलिप्तांगी रुक्मिणी को शीघ्रही रथ में जोड़कर रथ में बैठ, कृष्ण के गृह से बाहर निकले। उन्हों ने कृष्ण के सन्मुखही बालिका रुक्मिणी को कोड़े से मारा और प्रशस्त राजमार्ग से रथ को चलाया। जब रुक्मिणी थक गई, तब दुर्वासा ने क्रुध होकर रथ को वेग पूर्वक दौड़ाया। उसके पश्चात् वह अत्यन्त क्रोध युक्त हो रथ से उतर कर उत्पथ मार्ग से दक्षिण की ओर दौड़े। उस समय कृष्ण, जिनके अङ्ग में पायस लगा हुआ था, मुनि के पीछे पीछे दौड़ कर उनसे विनय करने लगे कि हे भगवन ! आप मुझ पर प्रसन्न होवें। तब महर्षि दुर्वासा प्रसन्न होकर बोले कि हे कृष्ण ! तुमने क्रोध को जीत लिया है; मैं तुम पर प्रसन्न हूँ, तुम्हारी टूटी, जली अथवा नष्ट हुई सब वस्तु जैसी की तैसी तथा उससे भी उत्कृष्ट हो जायगी। तुम्हारे शरीर के जितने भाग में पायस लगा है, वह अभेद्य हो जायगा; किंतु तुम्हारे दोनों पदतल में पायस नहीं लगा, मुझको इसी बात का संशय है। उसके पश्चात् ब्राह्मण ने रुक्मिणी से कहा कि हे सुन्दरी ! तुम्हारा यश और कीर्ति लोक की सब स्त्रियों से श्रेष्ठ होगी। कृष्ण की सोलह सहस्र स्त्रियों में तुम वरिष्ठा होगी, इत्यादि। उसी समय कृष्ण का शरीर श्रीसंपन्न होगया। दुर्वासा ने जिन जिन वस्तुओं को तोड़ फोड़ दिया था तथा जलाया था सब नई हो गई। दुर्वासा उसी स्थान में अन्तर्द्धान हो गए। (१६० वां अध्याय) रुद्र ने दुर्वासा नामक वीर्यवान ब्राह्मण बन कर कृष्ण के गृह में बहुत काल तक निवास करके दुःसह व्यवहार किया था।

(मौषल-पर्व, ७ वां अध्याय) प्रभास में द्वारिका के क्षत्रियों के विनास होने के पश्चात् द्वारिका वासियों के अर्जुन के साथ जाने के लिये नगर से बाहर होने पर समुद्र ने समस्त द्वारिका नगरी को अपने जल में डुबा दिया। (८ वां अध्याय) ९ लाख यदुवंशी वीर परस्पर लड़ कर प्रभास में मर गए थे (यदुवंशियों के विनास की कथा सोमनाथपट्टन की प्राचीन कथा में देखिए)।

आदिब्रह्मपुराण—(७ वां अध्याय) राजा आनर्त के रेवत नामक पुत्र आनर्त देश का राजा हुआ। कुशस्थली उसकी राजधानी हुई।

देवीभागवत—(७ वां स्कंध, ७ वां अध्याय) शर्याती का पुत्र आनर्त और आनर्त का पुत्र रेवत था, जिसने समुद्र के भीतर कुशस्थली नामक पुरी बसाई। वह आनर्त आदि देशों का राज्य करने लगा। उसके १०० पुत्र हुए और रेवती नाम की एक कन्या हुई। (८ वां अध्याय) राजा रेवत अपनी पुत्री के लिये वर पूछने के अर्थ पुत्री के साथ ब्रह्म लोक में गए। उस समय ब्रह्मा की सभा में गंधर्वगणों का गान हो रहा था। जब गंधर्वों का गाना समाप्त हुआ, तब रेवत ने अपना अभिप्राय ब्रह्मा से कह सुनाया। ब्रह्मा ने कहा कि हे राजेंद्र! जिन राजपुत्रों को तुम ने वर बनाने का निश्चय किया था, वे अपने पिता, पुत्र तथा बांधवों के सहित मर गए। अब सताईसवां द्वापुर बीतता है। तुम्हारे वंश के सब लोग मृतक हो गए। दैत्यों ने तुम्हारी पुरी को लूट लिया। अब वहां मथुरा पुरी के सोमवंशी राजा उग्रसेन राज्य करते हैं। श्रीकृष्ण ने सब यादवों को द्वारिका में बसाया है। वहांके वसुदेव के पुत्र बलदेवजी तुम्हारी कन्या के योग्य वर हैं। ऐसा ब्रह्मा की वचन सुन राजा रेवत द्वारिका में आए और रेवती नामक अपनी कन्या को बलदेवजी को समर्पण करके बदरिकाश्रम में चले गए।

श्रीमद्भागवत—(दशम स्कंध, ५० वां अध्याय) जब कृष्ण ने मथुरा के राजा कंस को मार डाला, तब अस्ति और प्राप्ति नामक उसकी दोनों स्त्रियों ने अपने पिता मगध देश के राजा जरासंध से अपना दुःख जा सुनाया। जरासंध ने २३ अक्षौहिणी सेना लेकर मथुरा को चारो ओर से घेर लिया (२१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोड़े और १०९३५० पैदल की एक अक्षौहिणी होती है)। बड़ी लड़ाई के अन्त में वह कृष्ण आदि यदुवंशियों से परास्त होकर मगध देश को लौट गया। इसी भांति जरासंध ने २३ अक्षौहिणी सेना लेकर १७ बार मथुरा पर आक्रमण किया; किंतु परास्त होकर सत्रहोंबार उसको लौट जाना पड़ा। अठारहवीं बार जरासंध के आक्रमण करने से पहिलेही नारद के प्रेरणा से कालयवन ने आकर मथुरा को घेर लिया। उस समय कृष्ण ने विचार किया कि महा बलवान् कालयवन मथुरा को घेर रहा है और कल अथवा परसों जरासंध भी अवश्य आवेगा, इस

लिये एक अगम किले में यादवों को रख कर कालयवन का वध करना चाहिये। ऐसा विचार कर उन्हों ने समुद्र के बीच में १२-योजन का क़िला बना कर उसमें द्वारिका नामक आश्चर्य नगर बनाया और अपने योग के प्रभाव से मथुरा वासियों को उस नगर में पहुँचा दिया। उसके पश्चात् वह द्वारिका से मथुरा में आकर कालयवन के सामने होकर मथुरा के द्वार से बाहर निकले। (५१ वां अध्याय) कालयवन श्रीकृष्ण को पकड़ने के लिये उनके पीछे दौड़ा, जो पर्वत की गुफा में जाकर राजा मुचकुन्द की दृष्टि से जल गया। (५२ वां अध्याय) कृष्ण ने मथुरा में आकर कालयवन की सेना को मार कर उसका सब धन द्वारिका में भेज दिया। उसी समय जरासंध फिर २३ अक्षौहिणी सेना लेकर मथुरा पर चढ़ आया। कृष्ण और बलदेव वहां से शीघ्र भागे। जरासंध उनके पीछे दौड़ने लगा। दोनों भाई दूर जाकर प्रवर्षण नामक पर्वत पर चढ़ गए। जरासंध उस पर्वत के चारो ओर आग लगा कर चला गया। कृष्ण और बलदेव पर्वत से कूद कर द्वारिका में चले गए (जरासंध और कालयवन के भय से कृष्ण को द्वारिका बसाने की कथा आदिब्रह्मपुराण के ८७ वें अध्याय में और विष्णुपुराण--पांचवें अंश के २३ वें अध्याय में है)।

(५४ वें अध्याय से ५८ वें अध्याय तक) कृष्ण की ८ पटरानी थीं;—(१) विदर्भ देश के कुण्डनपुर के राजा भीष्मक की पुत्री रुक्मिणी, (२) जांबवान की पुत्री जांबवती, (३) द्वारिका के सत्राजित की पुत्री सत्यभामा, (४) सूर्य की पुत्री कालिंदी, (५) उज्जैन के रहने वाली वसुदेव की बहिन राजाधिदेवी की पुत्री मित्रविंदा, (६) अयोध्या के राजा नग्नजित की कन्या सत्या, जिसको नग्नजिती भी कहते हैं, (७) कैकय देश में रहने वाली वसुदेव की बहिन श्रुतिकीर्ति की पुत्री भद्रा और (८) मद्र देश के राजा की पुत्री लक्ष्मणा (देवी भागवत—चौथे स्कंध के २४ वें अध्याय में भी यही ८ पटरानी लिखी हुई हैं)।

मत्स्यपुराण—(४७ वां अध्याय) यादवों की संख्या १ करोड़ थी; उनमें से ६० हजार देवताओं के अन्श से बड़े पलवान थे।

विष्णुपुराण—(५ वां अन्श, ३८ वां अध्याय) कृष्ण के परम धाम जाने के पीछे समुद्र ने रुक्मिणी के महल को छोड़ कर सारी द्वारिका नगरी को अपने जल में डुबा दिया। उस महल को समुद्र अब तक नहीं बोर सकता; क्यों कि वहां विहार करने के लिये कृष्ण भगवान नित्य आते हैं (यह कथा श्रीमद्भागवत—एकादश स्कंध के ३१ वें अध्याय में ब्रह्मवैवर्त्तपुराण—कृष्ण जन्म खण्ड के १२९ वें अध्याय में और आदिब्रह्मपुराण के ९९ वें अध्याय में है)।

पद्मपुराण—(पातालखंड, १७ वां अध्याय) द्वारावती के गोमती नदी का जल साक्षात् ब्रह्म रूप है। वहां के सब पाषाण और सब मनुष्य चक्रांकित हैं। वहां सब लोगों के पालक त्रिविक्रम भगवान सर्वदा निवास करते हैं। (७९ वां अध्याय) जो मनुष्य द्वारावती के गोमती चक्र से युक्त १२ शालग्राम शिला का पूजन करता है, वह वैकुंठ में जाकर पूजित होता है। जिस स्थान पर द्वारावती की शिला रहती है, वह स्थान वैकुण्ठ भवन के तुल्य है; उस स्थान में मरने वाले मनुष्य विष्णु लोक में जाते हैं। (९८ वां अध्याय) जो पुरुष ३ रात्रि द्वारिका में निवास करके गोमती के जल में स्नान करता है वह धन्य है। (स्वर्गखंड, ८७ वां अध्याय) विराट पुरुष के ७ धातु सातों पुरियां हैं।

(उत्तरखंड, २९ वां अध्याय) मनुष्य गोपीचंदन को अपने अंग में लगाने से ब्रह्महत्या पाप से विमुक्त हो जाता है। गोपीचंदन गंगाजल के समान पवित्र है, उसका तिलक लगाने से चांडाल भी शुद्ध हो जाता है। (६७ वां अध्याय) जिस घर में गोपीचंदन रहता है, वह गृह विष्णु का मंदिर है। जो मनुष्य गोपीचंदन का तिलक लगाता है, वह विष्णु लोक में निवास करता है। ब्राह्मण और गऊ को मारने वाला भी गोपीचंदन शरीर में लगाने से तत्कालही सब पापों से विमुक्त हो जाता है।

गरुड़पुराण—(पूर्वार्द्ध ६६ वां अध्याय) जिस स्थान में द्वारिका चक्र और शालग्राम शिला दोनों रहते हैं, वह स्थान भुक्ति दायक हो जाता है। द्वारिका तीर्थ संपूर्ण पापों का नाश करने वाला और भुक्ति मुक्ति का देने

वाला है। (मैतकल्प, २७ वां अध्याय) जिस स्थान में शालग्राम शिला और द्वारिका की शिला अर्थात् गोमती चक्र रहता है, वह स्थान निःसंदेह मुक्ति का देने वाला है। अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवंतिका और द्वारिका ये सातों पुरियां मोक्ष देने वाली हैं।

स्कंदपुराण—(काशीखंड, १०४ वां अध्याय) द्वारिका के चारो ओर चारो वर्णों के प्रवेश करने के लिये द्वार बने हुए हैं, इसी कारण से तत्ववेत्ताओं ने उसको द्वारावती कहा है।

वाराहपुराण— (१४३ वां अध्याय) द्वारिका में समुद्र के पास पंचसर नामक तीर्थ है, जिसमें स्नान करने से सब पाप छूट जाते हैं।

बेटद्वारिका।

गोमतीद्वारिका से लगभग २० मील पूर्वोत्तर कच्छ की खाड़ी में बड़ोदा के महाराज के आधीन बेटद्वारिका नामक छोटा टापू है। गोमतीद्वारिका से एक सड़क बड़वाला गांव और रामडा होकर और दूसरी एक राह नागेश्वर गांव और गोपीतालाव होकर बेटद्वारिका की खाड़ी के पास गई है। बहुतेरे यात्री रामड़ा होकर बेटद्वारिका जाते हैं और गोपीतालाव होकर गोमतीद्वारिका में लौट आते हैं और बहुतेरे यात्री गोपीतालाव की राह से जाकर रामड़ा की सड़क से गोमतीद्वारिका लौट आते हैं। गोमतीद्वारिका से १ मील पर रुक्मिणीजी का एक छोटा मन्दिर; ३½ मील पर टूटा हुआ शहर पनाह के भीतर बड़वाला नामक एक बड़ा गांव, जिसमें १ धर्मशाला, १ सदावर्त और अनेक धनी महाजन हैं; ५ मील पर १ बावली, ६½ मील पर १ गांव और १ पोखरा; ७½ मील पर १ पोखरा, ८½ मील पर १ गांव, ९½ मील पर एक बावली और १४ मील पर बेटद्वारिका की खाड़ी के पास टूटा हुआ शहरपनाह के भीतर रामड़ा नामक बड़ा गांव है। गोमतीद्वारिका से रामड़ा तक सड़क के बगलों में मील के पत्थर लगे हैं। सड़क के आस पास की भूमि उपजाऊ नहीं है, कांटेदार बीज और ...

वहां के लोग सुखाकरके चुल्हा में जलाते हैं। सड़क के किनारों पर जगह जगह पीपल, वट आदि के वृक्ष लगाये गए हैं; किंतु उनमें कोई हरा भरा अथवा सीधा खड़ा नहीं है। वे सब एकही दिशा में झुके हुए हैं। जाने आने के लिये किराये की बैलगाड़ी बहुत मिलती है। एक गाड़ी का एक तरफ का महसूल लगभग एक रुपया लगता है। गोपीतालाब की राह से गोमतीद्वारिका से १० मील पर नागेश्वर गांव, १३ मील पर गोपीतालाब और लगभग १८ मील पर बेटद्वारिका की खाड़ी है।

रामड़ा में शहरपनाह के बाहर सड़क के पास १ धर्मशाला और एक सदावर्त है। अनेक यात्री विशेष करके दूर के साधुलोग रामड़ा में जाकर शंख,चक्र आदि के छाप से तप्त मुद्रांकित होते हैं। वही द्वारिका का छाप कहलाता है। यात्रियों के लिये वहां छाप लेने की कोई विधि अथवा नियम नहीं है। रामड़ा से करीब ६ मील पूर्वोत्तर समुद्र के एक छोटे टापू के भीतर बेटद्वारिका नामक गांव है। खाडी में ६ मील नाव पर जाना होता है। नाव पाल के सहारे से चलती है। नाव का महसूल प्रति आदमी का आधआना लगता है, किन्तु सरकारी महसूल, जो बड़ोदा के महाराज के ठीकेदार को देना होता है,ब्राह्मण और साधुओं को प्रति आदमी आध आना और अन्य लोगों को प्रति मनुष्य दो आना देना पड़ता है। लौट ने के समयें भी इतनाही नाव का भाडा तथा सरकारी महसूल लगता है।

बेटद्वारिका का टापू दक्षिण पश्चिम से पूर्वोत्तर तक लगभग ७ मील लंबा है; किन्तु सीधी लाइन में नापने से उसकी लंबाई ५ मील से अधिक नहीं है। उसके दक्षिण पश्चिम का आधा भाग लगभग ६० फीट ऊंचा पत्थरीला है। पूर्वोत्तर के नोक को लोग हनूमान अंतरीप कहते हैं। क्योंकि उस अंतरीप के पास उस टापू में हनूमान का एक मंदिर है। उस टापू में खास करके मन्दिरों के संबंधी ब्राह्मण बसते हैं। बेटद्वारिका के टापू में किसी चीज की पैदावार नहीं है; जगह जगह सीज तथा नागफेनी बहुत लगी हैं। बेटद्वारिका श्रीकृष्ण का विहारस्थल माना जाता है। एक कहानी प्रसिद्ध है कि संवत १२७२ (सन् १२१५ ई०) में डाकोर का बुढ़ान भक्त गोमतीद्वा-

रिका के रणछोड़जी की प्रतिमा को डाकौर में लेगया। जब वहां के पुजारी डाकोर में गए, तब रणछोड़जी ने उनको स्वप्न दिया कि हम यहाही रहेंगें। गोमतीद्वारिका में गोमतीगंगा का महात्म्य होगा। लाडुआ गाव के पास पृथ्वी के भीतर मेरी एक मूर्ति है, तुम लोग उसको निकालकर बेटद्वारिका में स्थापित करो। पुजारियों ने भगवान की आज्ञानुसार लाडुआ गांव से मूर्ति को लाकर बेटद्वारिका में स्थापित किया। एक दूसरी मूर्ति गोमतीद्वारिका में स्थापित की गई (चौवीसवें अध्याय के डाकौर की कथा में देखिए)।

टापू के उत्तर के किनारे के पास बेटद्वारिका नामक एक गाव है, जिसमें यात्रियो के जरूरी काम की सब वस्तु मिलती हैं, कई एक धर्मशाले बनी हैं, कई सदाव्रत लगे हैं, और रणछोड़सागर, रत्न तालाव, कचौरी तालाव, शंख तालाव इत्यादि जलाशय और बहुत से देव मन्दिर बने हुए हैं। कृष्णभगवान के महल के मन्दिरों के अतिरिक्त, जिनका नकशा यहां बना है, उस टापू में मुरलीमनोहर का मन्दिर, हनूमानटेकरी, देवी का मन्दिर, नवग्रह का मन्दिर, नीलकंठ महादेव का मन्दिर, धिगणेश्वर, महादेव का मन्दिर, पद्मेश्वर महादेव का मन्दिर, कचौरी तालाव के पास रामचन्द्र का मन्दिर और शंख तालाव के किनारे पर शंखनारायण का मन्दिर है। जलाशयों में रणछोड़सागर, जो महल के मन्दिर और शंखोद्धार के बीच में है, प्रधान है, उसके चारो बगलों में दीवार बनी है और जगह जगह घाट बने हैं। बेटद्वारिका में हाजीपीर का एक रोजा है। बेटद्वारिका की छोटी परिक्रमा ६ मील की है। कुछ लोग जलमार्ग से नाव द्वारा टापू के चारो ओर घूम कर टापू की परिक्रमा करते हैं।

सन् १८५७ के बलवे के अंत सन् १८५९ में अंगरेजी गवर्नमेंट ने वाघेरों से बेटद्वारिका का टापू छीन लिया और उसका किला और वहा के प्रधान मंदिरो को उड़ा दिया। सन् १८६१ में बड़ोदा के महाराज ने टूटे हुए मंदिरों को बनवाकर मन्दिरों की देव मूर्तियों को जो मन्दिर उड़ाने के पहिले से निराल कर रक्खी गई थी, विधि पूर्वक संस्कार करवा करके पुनः स्थापित करवाया। तबसे धार्मिक भक्तों ने मन्दिरों की बड़ी उन्नति की है तथा उनके ऐश्वर्य को बहुत बढ़ाया है।
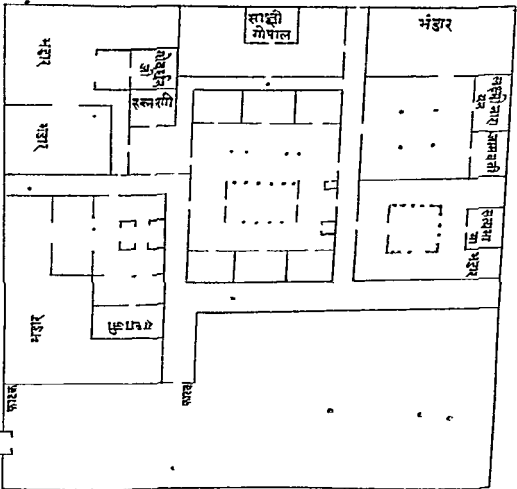
बेट द्वारिका का मंदिर
साक्षी गोपाल
भंडार
फीट का स्केल
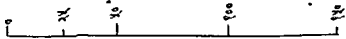
कृष्ण के महल—बेटद्वारिका में एक बड़े घेरे के भीतर दो मंजिले तीन मंजिले ९ महल बने हैं, जिनका नकशा यहां बनाया गया है। उत्तर के बड़े फाटक से होकर भीतर के पश्चिम वाले छोटे फाटक के पास जाना होता है। यहां बड़ोदा के महाराज का कर्मचारी अथवा ठीकेदार प्रति यात्री से दो रुपये 'कर' लेता है। बिना 'कर' दिए हुए कोई उस फाटक के भीतर जाने नहीं पाता है। भीतर राजाओं के महल की तरह के अलग अलग ९ महल बने हैं। गोमतीद्वारिका के समान यहां भी मन्दिरों के देवताओं के चरण छूने का 'कर' पुजारियों को देना होता है। जो यात्री नियमित कर नहीं देता वह बाहर से देवताओं का दर्शन करता है। जो यात्री अपनी ओर से यहां के देवताओं को स्नान करवाता है, उसको ७ रुपया राजा को देना पड़ता है और महापूजा का 'कर' अलग लगता है।

भीतर के फाटक से सीधे पूर्व जाने पर दहिने ओर श्रीकृष्ण भगवान के खास महल का द्वार मिलता है। उसका घेरा पूर्व से पश्चिम को लगभग ९० फीट लंबा और उत्तर से दक्षिण को लगभग ६० फीट चौड़ा है। घेरे के पूर्व बगल में उत्तर प्रद्युम्नजी का मंदिर, उससे दक्षिण रणछोड़जी का मंदिर और उससे दक्षिण टीकम अर्थात् त्रिविक्रमजी का मन्दिर है। इन मन्दिरों के आगे दोहरी दालान है। घेरे के पश्चिम बगल में उत्तर पुरुषोत्तमजी का मन्दिर उससे दक्षिण देवकी माता का मन्दिर और उससे दक्षिण माधवजी का मन्दिर है। तीनों मन्दिरों के आगे दालान है। घेरे के दक्षिण बगल में पश्चिम ओर अम्बाजी का और उससे पूर्व गरुड़ का मन्दिर और मध्य में छोटा आंगन है। प्रद्युम्नजी, रणछोड़जी, टीकमजी, और देवकी माता के मन्दिरों की कीवाड़ों और सिंहासनों में चांदी के पत्तर जड़े हुए हैं। मंदिरों की छत से झाड़ और फंदिल लटके हैं। गोमती द्वारिका के रणछोड़जी, टीकमजी, प्रद्युम्नजी, देवकी माता, माधवजी और पुरुषोत्तमजी की मूर्तियों के समान यहां की मूर्तियों की झांकी भी मनोरम है। अम्बा देवी की मार्बुल की प्रतिमा है। मन्दिरों और दालानों में श्वेत और नील मार्बुल का फर्श है। मन्दिर के भीतर से ऊपर दो मंजिले को सीढ़ियां गई हैं। यहां भगवान का सेजमहल

है, झूला लगा है, चौपड़ खेलने का स्थान बना है और कमरे के चारो ओर की दीवार में बड़े बड़े आइने लगे हुए हैं। वहाँ के मन्दिरों, कमरो तथ दालानों की सजावट देखने लायक है।

रणछोड़जी अर्थात् कृष्ण के महल के दक्षिण सत्यभामा और जामवंती का महल; पूर्व साक्षीगोपाल का मन्दिर और उत्तर रुक्मिणी तथा राधा का महल है। जामवंती के महल में जामवंती के मन्दिर के पूर्व लक्ष्मीनारायण का मन्दिर और रुक्मिणी के महल में रुक्मिणी के मन्दिर से पूर्व गोवर्द्धननाथ का मन्दिर है। सब मन्दिरों के किवाड़ों में चांदी के पत्तर लगे हैं, छतों में झाड लटके हैं, मूर्तियों की झांकी मनोरम है; मंदिरों के आगे सुन्दर जगमोहन बने हैं और मन्दिरो तथा जगमोहनों में मार्बुल का फर्श है। सत्यभामा, जामवंती, रुक्मिणी और राधा इन चारों के भंडार, कारखाने तथा भंडार के मालिक अलग अलग हैं। चारो महलों के भंडारों से भांति भांति की भोग की सामग्री नियमित समयों पर बना कर रणछोड़जी के मन्दिर में भेजी जाती हैं। वहां दिन रात में १३ बार भोग लगता है। राधाजी के महल से सत्यभामा, जामवंती और रुक्मिणी के मन्दिरों में भी भोग लगाने की सामग्री तैयार करके भेजी जाती है। बेटद्वारिका में गोमतीद्वारिका से अधिक भोग राग का प्रबंध रहता है। अनेक यात्री अपने खर्च से भोग लगवाने के लिये भंडार में रुपया देते हैं। नित्य के नियमित भोग के खर्च के लिये बड़ोदा के महाराज और काठियावाड़ के ठाकुर, शेठ इत्यादि धार्मिक लोग रुपया देते हैं। भोग लगी हुई सामग्री मोल मिल सकती है। दिन रात में ९ बार आरती लगती है। नित्य मन्दिरों के पट १२ बजे दिन में बंद हो जाते हैं और ४ बजे खुल कर फिर रात में ९ बजे के बाद बंद होते हैं।

शंखोद्धार—कृष्ण के महल से लगभग १½ मील दूर बेटद्वारिका के टापू के भीतर शंखोद्धार नामक तीर्थ में शंख तालाब नामक पोखरा और शंखनारायण का सुन्दर मन्दिर है। मार्ग में रणछोड़सागर मिलता है। मन्दिर और जगमोहन में श्वेत और नील मार्बुल का फर्श और सिंहासन तथा मंदिर के किवाड़ों में चांदी के पत्तर लगे हैं। बड़े लोग कहते हैं कि

कृष्ण भगवान ने इस स्थान पर शंखासुर का उद्धार किया था इसी लिये इसका नाम शंखोद्धार तीर्थ हुआ। यात्री लोग शंख तालाव में स्नान करके शंखनारायण का दर्शन करते हैं।

गोपीतालाव—जो यात्री रामड़ा की सड़क से बेटद्वारिका जाता है वह गोपी तालाव होकर गोमती द्वारिका लौट आता है। बेटद्वारिका में नाव पर सवार हो गोपीतालाव की ओर खाड़ी के किनारे पर नाव से उतरना होता है। खाड़ी से लगभग २ मील पश्चिम दक्षिण गोमती द्वारिका के मार्ग में, गोमती द्वारिका से १३ मील पूर्वोत्तर गोपीतालाव नामक कचा सरोवर है। मार्ग में पीली रंग की भूमि मिलती है। गोपीतालाव के भीतर की पीत रंग की मिट्टी पवित्र गोपीचंदन है। बहुतेरे यात्री गोपीतालाव से गोपीचंदन निकाल कर और बहुतेरे लोग गोपीचंदन के पांशे तथा गोले, जो वहां के लोग बना कर बेंचते हैं, मोल लेकर अपने घर ले जाते हैं। उस तालाव में स्नान करने का "कर" एक आना लगता है। गोपीतालाव के पास एक छोटी बस्ती, २ धर्मशाले, छोटे धर्मशाले के पास गोपीनाथ का मन्दिर, वल्लभ संप्रदाय वालों की एक मठ और २ सदावर्त्त हैं। वहां मयूर पक्षी बहुत रहते हैं। गोपीचंदन के माहात्म्य की कथा द्वारिका की संक्षिप्त कथा में लिखी हुई है।

नागेश्वर—गोपीतालाव से ३ मील और बेटद्वारिका की खाड़ी से ८ मील दक्षिण-पश्चिम और गोमती द्वारिका से १० मील पूर्वोत्तर नागेश्वर नामक बस्ती के पास नागेश्वर नामक शिव का छोटा मन्दिर है। मन्दिर के भीतर शिवलिंग के पास पार्वती की मूर्ति और बाहर नंदी बैल है। मन्दिर बहुत छोटा है; उसमें कोई पुजारी भी नहीं रहता। बस्ती के पास मयूर बहुत रहते हैं। अनेक लोग कहते हैं कि शिवजी के १२ ज्योतिर्लिंगों में के नागेश शिवलिंग यही है; किंतु बहुत लोग नागेश अर्थात् अवढा नागनाथ को १२ ज्योतिर्लिंगों में मानते हैं, जिनका वृत्तांत भारत-भ्रमण के चौथे खंड के तीसरे अध्याय में लिखा गया है। रास्ते में दो तीन बस्तियां मिलती हैं, जिनके चारो ओर शहरपनाह के स्थान पर कांटेदार

लकड़ी के घेरान बने हैं। नागेश्वर से दक्षिण-पश्चिम ४ मील पर एक वस्ती, ९ मील पर एक बावली और १० मील पर (खाड़ी से १५ मील) गोमती [illegible] है।

सताईसवां अध्याय।

(काठियावाड़ में) विरावल और सोमनाथपट्टन।

विरावल।

मैं द्वारिका के पास आगबोट में सवार हो विरावल बंदर में उतरा। द्वारिका से १५० मील (मंगरोल के बंदरगाह से २० मील) दक्षिण पूर्व और बंबई शहर से १९२ मील पश्चिमोत्तर अरब के समुद्र की एक खाड़ी के पश्चिमी किनारे पर विरावल बंदरगाह है। लगभग १४ घंटे में आगबोट द्वारिका से पोरबंदर और मंगरोल बंदरगाह होकर विरावल में पहुंचते हैं। एक आदमी के दूसरे दर्जे का महसूल २ रुपया और तीसरे दर्जे का १ रुपया लगता है। द्वारिका से बंबई का महसूल इससे दूना है। द्वारिका के कोई कोई यात्री पोरबंदर में; कोई कोई विरावल में और बहुत से यात्री बंबई में छोट कर आगबोट से उतरते हैं और रेलगाड़ी में सवार होते हैं। बंबई हाते के काठियावाड़ में जूनागढ़ राज्य के अंतर गत (२० अन्श, ५३ कला उत्तर अक्षांश और ७२ अन्श, २६ कला पूर्व देशांतर में) सोमनाथ के मन्दिर से २¼ मील पश्चिमोत्तर विरावल एक सुन्दर कसबा तथा प्रसिद्ध बंदरगाह है; जिसको उस देश के अधिक लोग विरोवल पट्टन कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय विरावल कसबे में १५११९ मनुष्य थे, अर्थात् ७२४५ मुसलमान, ६९४९ हिंदू, ११२४ जैन, १५ क्रस्तान और ६ पारसी।

विरावल कसबा पक्की दीवार से घेरा हुआ है । बंदरगाह के लाइट हाउस से १ मील दूर कसबे की दीवार के पासही पश्चिम रेलवे स्टेशन है। कसबे के उत्तर देवक नदी बहती है । एक धर्मशाला रेलवे स्टेशन के पास और दूसरी धर्मशाला कसबे की दीवारों के भीतर है । कसबे में दो तीन सदावर्त लगे हैं। कसबे के अधिक मकान पत्थर के मुंडेरेदार हैं। कसबे से लगभग २ मील पश्चिमोत्तर समुद्र के पास जालेश्वर महादेव का मन्दिर है। हाल में विरावल बंदरगाह की बड़ी उन्नति हुई है । मसकट, करांची और बंबई के साथ बड़ी तिजारत होती है।

विरावल से २० मील पश्चिमोत्तर मंगरोल एक कसबा तथा बंदरगाह है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १३००५ मनुष्य थे। उसमें जूनागढ़ को कर देने वाला एक नवाब रहता है और एक उत्तम मसजिद है।

सोमनाथपट्टन ।

विरावल से २½ मील दक्षिण पूर्व बंबई हाते के काठियावाड़ प्राय द्वीप के दक्षिण किनारे पर (२२ अंश, ४ कला, उत्तर अक्षांश और ७१ अंश, २६ कला पूर्व देशांतर में) खाड़ी के पूर्वी किनारे के पास जूनागढ़ के राज्य में सोमनाथपट्टन एक कसबा है; जिसको देवपट्टन, प्रभासपट्टन, और पट्टनसोमनाथ भी कहते हैं। उसका नाम महाभारत तथा पुराणों में प्रभास लिखा है। विरावल तक रेलगाड़ी और आगबोट जाते हैं (विरावल में देखिए)। विरावल में सोमनाथपट्टन जाने के लिये किराये की घोड़ा गाड़ी तथा बैलगाड़ी मिलती हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय सोमनाथपट्टन कसबे में ६६४४ मनुष्य थे । इनमें अधिक मुसलमान हैं और बहुत से ब्राह्मण पंडे रहते हैं। बहुत से धनी तिजारती लोग अब विरावल में चले गए हैं।

सोमनाथपट्टन कसबे के चारो ओर पत्थर की पुरानी दीवार है, जिनमें अनेक फाटक बने हुए हैं । पश्चिमी के जूनागढ़ नामक फाटक से कसबे में जाना होता है। पूर्ववाले नानाफाटक के बाहर मुंडेरादार एक बड़ी धर्म-

शाला है, जिसमें यात्री लोग ७ दिन तक रह सकते हैं। सोमनाथपट्टन में नित्य यात्री जाते हैं। कसबे की दुकानों पर उनकी आवश्यकीय सब वस्तु मिलती हैं। कसबे में ताला बहुत तैयार होते हैं, इस काम के लिये वह मसहूर है। सोमनाथपट्टन एक महाल का सदर स्थान है। उसमें महाल की कचहरियां, चंद कोठीवाल और तिजारती लोगों के मकान; एक अस्पताल, एक स्कूल; कई एक मसजिद, कई एक तालाब और बहुत से देवमन्दिर हैं। वहां के मुसलमान प्रबल हैं; वे बार बार वहां के ब्राह्मणों से झगड़ते हैं।

प्राचीत्रिवेंणी—"नानाफाटक" के दक्षिण के समुद्र का नाम अग्निकुंड है। यात्री लोग प्रथम अग्निकुण्ड में स्नान करके प्राचीत्रिवेणी में स्नान करते हैं। नानाफाटक से लगभग ३/४ मील पूर्व प्राचीत्रिवेणी है। अग्निकुण्ड और प्राचीत्रिवेणी के बीच में एक जगह ब्रह्मकुण्ड नामक एक छोटी बावली, जिसके पास ब्रह्मकमंडल नामक कूप और ब्रह्मेश्वर शिव लिंग हैं और दूसरी जगह आदि प्रभास और जल प्रभास नामक दो कुण्ड हैं। कसबे के पूर्व के तीन नदियों के संगम को प्राचीत्रिवेणी कहते हैं। वहां पूर्वोत्तर से हिरण्यानदी, पूर्व से सरस्वतीनदी और दक्षिण पूर्व से कपिला नदी आई है। कपिला सरस्वती में, सरस्वती हिरण्या में और हिरण्या दक्षिण जा करके समुद्र में मिल गई है। लोग कहते हैं कि इसी संगम के पास श्रीकृष्ण का शरीर जलाया गया था। प्राचीत्रिवेणी के पास त्रिवेणी माता, महाकालेश्वर आदि देवता हैं।

पूर्व के स्थान और देवता—प्राचीत्रिवेणी से पूर्वोत्तर इस क्रम से स्थान और देवता मिलते हैं,—संगम से लगभग २०० गज उत्तर सूर्यनारायण का पुराना मन्दिर है, जिसके आधे भाग को महमूद ने तोड़ दिया था। उस मन्दिर से थोड़े आगे जाने पर एक भूवेवरे में हिंगलाजमाता की मूर्ति का दर्शन होता है। उससे आगे एक मन्दिर में सिद्धनाथ महादेव (खंडित शिवलिंग) हैं, जिनके समीप बलदेवजी का मन्दिर और महाप्रभु की बैठक अर्थात् कृष्ण का मन्दिर है। उससे आगे हिरण्यानदी के दहिने किनारे पर एक पत्रहीन पत्रवृक्ष है। उस जगह पहिले एक बड़ा वटवृक्ष था, जिसको वहां के

मुसलमानों ने कई बार काट दिया; उसी से यह वृक्ष निकला है। वटवृक्ष के पास एक छोटी कबरगाह और कोठरी के समान दो छोटे मन्दिर हैं। मंदिरों में अब कोई देवता नहीं है। उस स्थान के लिये हिंदुओं और मुसलमानों में झगड़ा चला आता है। मुकद्दमा चल रहा है। अंगरेजी सरकार की ओर से इसके विचार करने के कमीशन बैठा है। वहां के लोग कहते हैं कि बलरामजी इसी स्थान से परमधाम को गए थे। उस स्थान के पास १ रामचंद्र का मन्दिर और १ कृष्ण का मन्दिर है। उस स्थान से आगे जाने पर भीमेश्वर महादेव का मन्दिर और मन्दिर से आगे हिरण्यानदी के तीर पर यादवस्थल नामक स्थान मिलता है। वहां नदी के तीर पर 'पतलो' के समान लंबे पत्ते वाला एक प्रकार का घास, जिसके पत्ते पतलो से अधिक चौड़े होते हैं, जमा हुआ है। लोग कहते हैं कि इसी का नाम महाभारत तथा पुराणों में एरका लिखा है, जिसके पत्ते यदुवंशियों के नाश के समय अमोघ शस्त्र होगए थे। लोग उस घास को पटेर तथा पान कहते हैं।

यादवस्थल से कसबे की ओर लौटने पर मार्ग में नृसिंहजी का मन्दिर और नानाफाटक के बाहर धर्मशाले से उत्तर ओर गौरीकुंड नामक सरोवर, जिसके पास बहुत से पुराने शिवलिंग हैं, मिलता है।

इनके अलावे कसबे में शहरपनाह के भीतर गणेशजी, महाकालीजी, भद्रकालीजी, दैत्यसूदन आदि देवताओं के बहुत से मन्दिर हैं। रामपुष्कर नामक एक तालाब है, जिसके लिये मुसलमान हिंदुओं से झगड़ा करते हैं।

सोमनाथ का नया मंदिर—नानाफाटक से लगभग २०० गज पश्चिमोत्तर कसबे के मध्य भाग में सोमनाथ का नया मन्दिर है, जिसको इंदौर की महारानी अहिल्याबाई ने, जिनका राज्य सन् १७६५ से सन् १७९५ ई० तक था, बनवाया था। वह मन्दिर साधारण कद का शिखरदार है। उसके आगे अर्थात् पूर्व बगल में सुन्दर जंगमोहन बना हुआ है। मन्दिर में एक शिव लिंग और उसके नीचे १३ फीट लंबे और इतनाही चौड़े तहखाने में, सोमनाथ शिव लिंग है। मन्दिर के दक्षिण बगल में तहखाने में जाने के लिये २२ सीढ़ियां बनी हुई हैं। तहखाने में १६ स्तंभ लगे हैं; उसके मध्य

में बड़े अर्घे पर बड़े आकार का सोमनाथ शिव लिंग; पश्चिम बगल में पार्वतीजी; उत्तर बगल में लक्ष्मीजी, गंगाजी, सरस्वतीजी और पूर्व बगल में नंदी हैं। वहां दिन रात दीप जलते हैं। मन्दिर के चारों बगलों में आंगन के बाद दीवार है। आंगन के पूर्वोत्तर के कोने के पास गणेशजी का छोटा मन्दिर और पूर्व तथा उत्तर बगल में दरवाजा है। उत्तर के दरवाजे के बाहर अघोरेश्वर शिवलिंग है। सोमनाथ के मन्दिर के आंगन के पूर्व एक बड़ा आंगन है। उसके चारो बगलों पर दो मंजिले मकान और दालान; पूर्व बगल में सदर फाटक और दक्षिण बगल में एक खिड़की है। बड़े आंगन के दक्षिण एक छोटा आंगन है। सोमनाथ के मन्दिर में चंद पुजारी रहते हैं। वहां नित्य यात्री जाते हैं।

सोमनाथ का पुराना मंदिर—कसबे के पश्चिम समुद्र के तीर पर सोमनाथ का पुराना मन्दिर है, जिसको सन् १०२४ में गजनी के महमूद ने लूटा था। वह मन्दिर मुसलमानों के अधिकार में हीन दशा में विद्यमान है। जूनागढ़ के नवाब के मुसलमान कर्मचारी के पास मन्दिर देखने को लिये कुंजी मिलती है तथा पेशगाह के दरवाजों के जंगलों से मन्दिर के भीतर के हिस्से देख पड़ते हैं। तबाह हालत में भी मन्दिर की बनावट देखने योग्य है। गिरनार के नेमीनाथ के मन्दिर के समान यह हाते से घेरा हुआ था; अब केवल मन्दिर, जो काले पत्थर का है, खड़ा है। उसके मार्बुल का काम अब नहीं है। मन्दिर के पेशगाह अर्थात् जगमोहन में ३ ओर ३ दरवाजे हैं। उसके मध्य के अठपहले स्थान के आठो दिशाओं में ओसारे हैं; ऊपर मध्य में एक बड़ा और उसके पास ४ छोटे गुम्बज हैं। मध्य के गुम्बज के नीचे ८ स्तंभ और ८ मेहराबी हैं। पेशगाह के पश्चिम सोमनाथ का निज मन्दिर है, जिसमें बड़े आकार का सोमनाथ शिवलिंग था। मन्दिर भीतर चौकोना है। उसके बगलों में बाहर की दीवार के भीतर विचित्र ढंग से स्तंभ लगे हैं। मन्दिर के आगे पेशगाह के पश्चिम के भाग में नन्दी के रहने का स्थान है। मन्दिर और पेशगाह की छत एकही है। उस पर चढ़ने के लिये बाहर से सीढ़ियां बनी हुई हैं। मन्दिर और उसके

सोमनाथ का मन्दिर
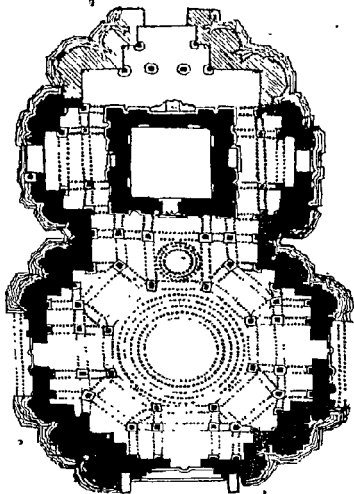
आगे का एक गुंबज गिर गया है । ऊपर से मन्दिर के भीतर का भाग देख॰ पड़ता है । मन्दिर के पीछे की टूटी हुई दीवार पत्थर के ढोकों से बना दी गई है । मन्दिर और पेशगाह की लंबाई पूर्व से पश्चिम तक १२० फीट और चौड़ाई उत्तर से दक्षिण तक ७५ फीट तथा उसका घेरा ३३० फीट है । पेशगाह के तीनों दरवाजों में काठ के जंगले लगादिए गए हैं। ताला बंद रहता है।

मन्दिर से पश्चिम उसके घेरे के पश्चिम की सीमा के पास एक पुराना ओसारा है, जिसको मुसलमानों ने निमाजगाह बनाया है । मन्दिर से पूर्व बस्ती के भीतर दो जगह हनूमानजी की बहुत पुरानी मूर्तियां हैं। पंडे कहते हैं कि जब महमूद ने मन्दिर को लूटा; उससे पहिले की ये मूर्तियां हैं।

बाणतीर्थ—सोमनाथपट्टन और विरावल कसबे के मध्य में सोमनाथपट्टन से लगभग १ मील पश्चिमोत्तर समुद्र के तीर पर बाणतीर्थ है । वहांके लोग कहते हैं कि जरा नामक व्याध ने इसी स्थान से श्रीकृष्ण को बाण मारा था, इसी कारणसे इस- स्थान का नाम बाणतीर्थ हुआ । बैशाख की अक्षय तृतीया को वहां स्नान का मेला होता है । वहां समुद्र के तीर पर शशिभूषण महादेव का पुराना विशाल मन्दिर है।

बाणतीर्थ के पश्चिम समुद्र के तीर पर चंद्रभागा तीर्थ है । वहां बालू में बिना अर्घे के कपिलेश्वर शिव लिंग हैं।

भालकतीर्थ—बाणतीर्थ से १½ मील उत्तर और भालपुर बस्ती से पश्चिम भालक तीर्थ है । वहां भालकुण्ड नामक एक पक्का तालाब है । उसके पास पद्मकुंड नामक छोटा सरोवर और एक पीपल के वृक्ष के पास भालेश्वर शिवलिंग हैं । वहां के पंडे कहते हैं कि इसी स्थान पर कृष्ण को जरा नामक व्याध का बाण लगा । उन्होंने पद्मकुंड के जल में अपने रुधिर को धोया था। इसी स्थान से वह परम धाम को गए । इस स्थान पर कृष्णभगवान को भाल अर्थात् बाण का अग्र भाग लगा, इसी लिये इस स्थान को लोग भालतीर्थ कहते हैं । यात्री लोग भालकुंड में स्नान और पद्मकुंड में मार्जन (तथा कोई कोई दोनों में मार्जन) करते हैं।

इतिहास—सन् १०२४ में गजनी के महमूद ने सोमनाथ का मन्दिर लूटा था; उससे पहिले का वहां का ठीक इतिहास मालुम नहीं होता है। कहा जाता है कि ८ वीं शदी में काठियावाड़ का वह भाग चालुक्य वंश के राजा के आधीन के राजपूतों के अधिकार में था।

सन् १०२४ में महमूद ने सोमनाथ पर आक्रमण किया। उसने तीन दिन की सख्त रोकावट के बाद शहर और मन्दिर को लेलिया। ऐसा प्रसिद्ध है कि मन्दिर के खर्च के लिये २००० गांव थे। वहां ३०० बाजा वाले नियत थे; ५०० नाचने वाली लड़कियां मुकरर थीं; हजामत बनाने के लिये ३०० नाई रहते थे। मन्दिर के ५६ खंभों में उत्तम जड़ाव का काम था। सोने की मोटी जजीर म घंटा लटकता था। महमूद मन्दिर मे करोड़ों की संपत्ति तथा सोमनाथ का प्रसिद्ध फाटक गजनी को लेगया। अंगरेज महाराज ने सन् १८४२ में काबूल के जीतने के पश्चात् सोमनाथ के फाटक को लाकर आगरे के किले में रक्खा। महमूद सोमनाथपट्टन में एक मुसलमान गवर्नर रख गया, किन्तु पीछे बाजा जाति के राजपूतों ने सोमनाथपट्टन को अपने अधिकार में कर लिया, वह तीर्थ स्थान बना। सोमनाथपट्टन के एक मन्दिर के शिलालेख से जान पड़ा है कि गार्गेय गोत्र के वाल्मीकराशि के पुत्र त्रिपुरांतक ने देवपत्तन अर्थात् सोमनाथपट्टन में आकर सोमेश्वर के मन्दिर के उत्तर ५ मन्दिर बनवाया और संवत १३४३ (सन् १२८७ ईस्वी) के माघ सुदी पंचमी को उनमें माल्हणेश्वर, गंडबृहस्पति महादेव, उमेश्वर, त्रिपुरांतक और रामेश्वर महादेव तथा भैरव, गोरख, हनुमान, सरस्वती और सिद्धिविनायक को स्थापित किया. उसने गंडबृहस्पति महादेव तथा चालुक्य वंश के राजा सारंगदेव के बनाये हुए सारंग तालाब के पास एक बावली बनवाई। लगभग सन् १३०० में अलाउद्दीन खिलजी ने फिर सोमनाथपट्टन को उजाड़ किया और समुद्र के किनारे के नागेर राज्य को जीता। उस समय सोमनाथपट्टन में मुसलमानों का अधिकार हुआ। १४ वीं शदी के आरंभ महम्मद तुगलक के राज्य के समय से वहां बराबर मुसलमान गवर्नर मुकरर होते आए। १७ वीं शदी के अन्त तक सोमनाथ के मन्दिर

में पूजा होती थी, किंतु पीछे औरंगजेब ने मन्दिर को अच्छी तरह से बरबाद कर दिया। मुगलों के राज्य निर्बल होने के समय सोमनाथपट्टन पर कभी मंगरोल के शेख और कभी पोरबंदर के राणा का अधिकार था। पीछे जूनागढ़ के नवाब ने उसको जीता; तबसे वह उन्हीके वंशजों के आधीन है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—शंखस्मृति—(१४ वां अध्याय) जो कुछ प्रभास में पितरों के निमित्त दिया जाता है, उसका फल अक्षय होता है।

महाभारत—(वनपर्व ८२ वां अध्याय)—प्रभासतीर्थ में भगवान अग्नि आपही निवास करते हैं। जो मनुष्य वहां स्नान करके ३ दिन वास करता है, वह अग्निष्टोम यज्ञ का फल पाता है। सरस्वती और समुद्र के संगम पर जाने से सहस्र गोदान का फल होता है और स्वर्ग मिलता है। वहां समुद्र में स्नान करके तीन दिन पितर और देवताओं के तर्पण करने से अश्वमेध यज्ञ का फल होता है। (८८ वां अध्याय) सुराष्ट्र देश में समुद्र के निकट देवताओं का प्रभास नामक तीर्थ है। उसीके पास पिंडारकतीर्थ में अनेक महर्षि निवास करते हैं। उसी ओर शीघ्र सिद्धि देने वाला उज्जयत पर्वत है।

(शल्यपर्व, ३५ वां अध्याय) चंद्रमा प्रभास क्षेत्र में जा करके "राज यक्ष्मा" रोग से छूट कर फिर तेज को प्राप्त हुआ। कथा ऐसी है कि दक्ष-प्रजापति ने अपनी २७ कन्याओं का ब्याह चंद्रमा के साथ कर दिया। उनमें रोहिणी अधिक रूपवती थी, इस लिये चंद्रमा उसीसे अधिक प्रेम करता था। ऐसा देखकर चद्रमा की सब स्त्रियों ने अपने पिता दक्षप्रजापति से जाकर कहा कि,चद्रमा सदा रोहिणी के गृह में रहते हैं। दक्ष ने दो बार चंद्रमा को समझा बुझा कर अपनी पुत्रियों को उनके घर भेजा; परन्तु चद्रमा फिर भी रोहिणी से वैसाही प्रेम करने लगा। जब तीसरी बार वे स्त्रियां रुष्ट होकर अपने पिता के घर गईं, तब दक्षप्रजापति ने क्रोध करके राजयक्ष्मा रोग को चंद्रमा के पास भेज दिया। उस रोग के हृदय में घुसने से चद्रमा दिन दिन क्षीण होने लगा। उन्होने इस रोग के छूटने के लिये अनेक यज्ञादि यत्न भी किये, परन्तु वह न छूटा। जब सब देवताओं ने दक्षप्रजापति के समीप जाकर चद्रमा के आरोग्य होने की प्रार्थना की, तब दक्षप्रजापति बोले कि हमारा शाप वृथा

नहीं होगा, परन्तु हम उपाय बतला देते हैं; यदि चंद्रमा सरस्वती तीर्थ में स्नान करे तो उसका तेज फिर वैसाही होजायगा; किंतु वह आधे मास तक क्षीण हुआ करेगा और आधे महीने तक बढ़ा करेगा। यह पश्चिम समुद्र के तट पर जाकर सरस्वती और समुद्र के संगम में शिव की पूजा करे, तब फिर इसका तेज बढ़ जायगा। ऋषियों की आज्ञा से चंद्रमा अमावास्या तिथि को सरस्वती तीर्थ में पहुंचा। उस समय से उसका तेज बढ़ने लगा और उसकी किरणें शीतल होगईं। उस दिन से चंद्रमा सदा आमावास्या को प्रभास तीर्थ में स्नान करता है। इसी तीर्थ में चंद्रमा की प्रभा बढ़ी, इसलिये इसको लोग प्रभास कहने लगे। (शांति पर्व के ३४२ वें अध्याय में भी यह कथा है)।

(स्त्री पर्व, २५ वां अध्याय) धृतराष्ट्र की स्त्री गांधारी ने कहा कि हे कृष्ण? तुमने सामर्थ्य रहने पर भी कौरव और पांडवों को युद्ध करने से निवारण नहीं किया, इस लिये मेरे शाप से तुम भी अपनी जाति का नाश करोगे। तुम अब से छत्तीसवें वर्ष अपने पुत्र, पौत्र, जाति और बांधवों से हीन होकर अनाथ के समान वन में बुरे उपाय से मारे जावोगे। जैसे कुरु कुल की स्त्रियां रोती फिरती हैं, ऐसही तुम्हारी स्त्रियां पुत्र और बांधवों से हीन होकर रोवेंगी।

(मौषल पर्व, प्रथम अध्याय) युधिष्ठिर के राज्य मिलने के छत्तीसवें वर्ष में वृष्णि वंशियो में बहुतही दुर्नीति उपस्थित हुई। वे लोग एरका में लगे हुए मूषल-कण के द्वारा परस्पर की मार से विनष्ट हो गए।

एक समय सारण प्रभृति वीरगण विश्वामित्र, कण्व और नारद मुनि को द्वारिका नगरी में आये हुए देख कर साम्ब को स्त्री की भांति सज्जित करके बोले कि हे महर्षिगण! यह पुत्राभिलाषिणी भार्या क्या प्रसव करेगी। ऐसा सुन के महर्षिवृन्द अत्यन्तही रुष्ट हुए। उन्होंने कहा कि यह श्रीकृष्ण का पुत्र साम्ब वृष्णि और अन्धकों के विनाश के निमित्त एक मूषल प्रसव करेगा। राम और कृष्ण को छोड़ कर सारा यदुकुल उसमें विनष्ट होगा। हलधर समुद्र में प्रवेश करके शरीर छोड़ेंगे। जरा नाम कैवर्त्त पृथ्वी पर सोए हुए कृष्ण को विद्ध करेगा। उसके दूसरे दिन साम्ब ने एक मूषल प्रसव

किया। राजा उग्रसेन ने उस मूपल का महीन चूर्ण करवा करके समुद्र में फेंकवा दिया। (दूसरा अध्याय) कृष्ण बोले कि गांधारी ने पुत्र शोक से संतापित होकर आर्त भाव से जो छत्तीसवें वर्ष में यदुवंशियों के नाश होने का शाप दिया था, यह वही छत्तीसवां वर्ष उपस्थित हुआ है। उस समय द्वारिका में भांति भांति के अशकुन होने लगे। (तीसरा अध्याय) बहुत अशकुन देख कर वृष्णि और अंधकवंशी लोग अपनी अन्तःपुरचारिणी स्त्रियों के सहित तीर्थयात्रा के अभिलाषी हुए। वे सैनिक पुरुषों के सहित घोड़े, हाथी और यानों में चढ़ के प्रभास तीर्थ में पहुंचे और वहां इच्छानुसार गृह वास के अनुरूप सुख भोगने लगे। उस समय उद्धव ने योग बल से सब भविष्य वृत्तांत जानकर वहां से प्रस्थान कर दिया।

प्रभास तीर्थ में यादवों के सैकड़ों तुर्य्य शब्द तथा नट नर्तकों के नृत्य गीतादि युक्त महापान आरम्भ हुआ। सब लोगों ने मदमत्त होकर ब्राह्मणों के भोजन के निमित्त पकाए हुए अन्न को बंदरों को खिला दिया। राम, कृतवर्म्मा, सात्यकी, गद, बभ्रु आदि वीरगण कृष्ण के सन्मुखही मद्य पीने लगे। उसी समय सात्यकी मतवाला होकर कृतवर्म्मा से बोला कि तुमने जो महाभारत की लड़ाई में सोते हुए पुरुषों का वध किया; यदुवंशी उसको कदापि नहीं सहेंगे। प्रद्युम्न ने सात्यकी के कहे हुए बचन की बहुत प्रशंसा की। तब कृतवर्म्मा क्रोध होकर बोला कि जब भुजा कट जाने पर भूरीश्रवा रण में योगयुक्त होकर बैठा था, तब तुमने वीर होकर किस प्रकार नृशंस की भांति उसका वध किया था। इतनी बात सुन कर कृष्ण बहुत क्रुद्ध होकर तिरछे नेत्र से कृतवर्मा को देखने लगे। तब सात्यकी ने क्रोध पूर्वक दौड़ कर तलवार से कृतवर्म्मा का सिर काट डाला और उसके बांधवों का वध करते हुए चारो ओर घूमने लगा। इतने ही समय में भोज और अन्धक वंशियों ने एकत्रित होकर सात्यकी को घेर लिया और सात्यकी और रुक्मिणी के पुत्र शैनेय को मार डाला। यह देख कृष्ण ने क्रोध पूर्वक एक मुट्ठी एरका घास ग्रहण किया। वह वज्र सदृश लोहमय मूपल होगया। कृष्ण ने जिसको सामने पाया, उसको उसी मूपल से नाश कर डाला। उसी

देख कर अन्धक, भोज, शैनेय और वृष्णिवंशीयगण उसही मूषल भूत एरका को लेकर उससे परस्पर में एक दूसरे का नाश करने लगे। उस समय ब्राह्मणों के शाप से समस्त एरका वज्र की भांति हो गया और समस्त तृण भी मूषल हो गए। वे इतने मतवाले हुए थे कि परस्पर युद्ध में प्रवृत्त होकर पिता पुत्र को और पुत्र पिता को मार कर गिराने लगे। कृष्ण ने सांव, चारु देष्ण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध तथा गद आदि वीरों को मरे हुए या पृथ्वी में पड़े हुए देख कर क्रुद्ध हो बचे हुए लोगों का नाश करके यदुकुल को प्रायः निःशेष कर दिया।

(चौथा अध्याय) कृष्ण, दारुक और बभ्रु ने बलराम के समीप जाकर देखा कि वह निर्जन स्थान में वृक्ष के ऊपर बैठ कर ध्यान कर रहे हैं। माधव ने अर्जुन को बुलाने के लिये दारुक को हस्तिनापुर में और बभ्रु को स्त्रियों की रक्षा के लिये द्वारिका में भेजा। उसी समय किसी व्याध ने कृष्ण के निकट हो मूषल से बभ्रु का जीवन हर लिया। तब कृष्ण ने द्वारिका में जाकर वसुदेव से कहा कि हे पिता! जब तक अर्जुन न आवें, तब तक आप यहां के नर नारियों की रक्षा कीजिये; मैं राम के सहित वनवासी होकर अपना शेष समय व्यतीत करूंगा। इसके पश्चात् कृष्ण ने वन में जाकर देखा कि बलराम निर्जन में अकेले योग युक्त होकर बैठे हैं और उनके मुख से एक श्वेत वर्ण महा नाग बाहर होता है। देखते देखते वह समुद्र में प्रवेश कर गया। श्रीकृष्ण दिव्य दृष्टि के सहारे काल की गति देख कर निर्जन वन में घूमते घूमते पृथ्वी में बैठे और गान्धारी का वचन स्मरण कर महायोग अवलम्बन करके सो गये। उस समय जरा नामक व्याध ने सोए हुए माधव को मृग जानकर बाण से विद्ध किया। जब उसने निकट जाकर योगयुक्त पीताम्बरधारी चतुर्भुज रूप कृष्ण को देखा, तब अपने को अपराधी समझ कर संकित चित से उनके दोनों चरणों को जा पकड़ा। उस समय माधव उसे आश्वासित करके निज तेज के सहारे स्वर्ग में जाकर सब देवताओं से पूजित हो अपने धाम को चले गये। दारुक अर्जुन को हस्तिनापुर से ले आया। (७ वां अध्याय) अर्जुन के द्वारिका में पहुंचने के दूसरे दिन

पसुदेव-योग अवलम्बन करके उत्तम गति को प्राप्त हुए। देवकी, भद्रा, मदिरा और रोहिणी ये चारों स्त्रियां वसुदेव के सहित चिताग्नि में जल कर पतिलोक में गईं। वज्र आदि वृष्णि कुमारों तथा यादवों की स्त्रियों ने उनका तर्पण कार्य्य पूरा किया। अर्जुन उन कार्य्यों को पूरा कर के प्रभास में गए। उन्हों ने वहां प्रधानता के अनुसार सब मृतकों का अंतेष्टि कार्य किया और बलराम तथा कृष्ण के शरीर को विधि पूर्वक जलाया। अर्जुन ने सातवें दिन प्रेतकार्य समाप्त करके हस्तिनापुर को प्रस्थान किया।

वृष्णि वंशियों की स्त्रियां रथों में चढ़ के अर्जुन के पीछे चलीं। अंधक तथा वृष्णि वंशीय रथी तथा घुड़सवार आदि सेवकगण बालक और बूढ़ों से युक्त स्त्रियों की रक्षा के लिये उनके चारो ओर चले। पदाती तथा गजारोही पुरुष आगे पीछे चलने लगे।। चारो वरण के मनुष्य और अन्धक तथा वृष्णिवंशीय बालकगण अर्जुन के अनुगामी हुए। कृष्ण की स्त्रियां उनके परपोते वज्र को आगे करके बाहर हुईं। वृष्णि और अन्धकवंशीय स्त्रियां भी उनकी अनुगामिनी हुईं। उन लोगों के बाहर होने पर समुद्र ने समग्र द्वारिका नगरी को जल में डुबा दिया। एक दिन अर्जुन के संग सब द्वारिका वासियों ने पंचनद के समीप निवास किया। वहां आभीरों ने आकर बहुत सी स्त्रियों का हरण कर लिया। अर्जुन और संपूर्ण रथी तथा गजसवारों के सब बाण और पराक्रम निष्फल हो गए। अर्जुन ने यादवों की बची हुई स्त्रियों को कुरुक्षेत्र में लाकर स्थान स्थान पर बास करवाया और कृतवर्मा और अन्य भोजवंशीय स्त्रियों को, जो आभीरों के हरण करने से बची थी, मार्तिकावत नगर में; बाकी बालक, वृद्ध और स्त्रियों को इन्द्रप्रस्थ में और वृद्ध और बालकों के सहित युयुधान के पुत्र को सरस्वती नदी के तट पर बसा दिया। उन्हों ने अनिरुद्ध के पुत्र वज्र को इन्द्रप्रस्थ का राज्य दे दिया। कृष्ण भगवान की स्त्रियों में से रुक्मिणी, गांधारी, शैव्या, हेमवती और जाम्बवती अग्नि में प्रवेश कर गईं और सत्यभामा आदि अन्य स्त्रियां तपस्या करने के अर्थ वन में चली गईं। (८ वां अध्याय)

* इस भांति ५६ लाख यदुवंशी वीर परस्पर लड़ कर प्रभास में मर गए थे।

देवी भागवत—(दूसरा स्कन्ध, ८ वां अध्याय) अर्जुन ने प्रभास में जाकर सब की क्रिया की। कृष्ण के शरीर के साथ उनकी ८ स्त्रियां और बलदेवजी के सहित रेवती सती हो गई।

लिंगपुराण—(६९ वां अध्याय) श्रीकृष्ण भगवान ने भूमि का भार उतार ब्राह्मणों के शाप के बहाने अपने कुल का संहार किया। वह आप भी १०० वर्ष पूरे होने के अनन्तर जरा नामक व्याध के बाण से मनुष्यदेह त्याग कर उस व्याध को साथ ले वैकुंठ को चले गये। बलदेवजी नागरूप धर कर गये। रुक्मिणी आदि प्रधान रानी श्रीकृष्ण के साथ सती हुई; किंतु बाकी सब अष्टावक्र मुनि के शाप से चोरों के हाथ में पड़ीं। रेवती बलदेवजी के साथ सती होगई। अर्जुन ने कृष्ण और बलदेव की और्ध्वदेहिक क्रिया की।

विष्णुपुराण—(५ वां अंश, ३७ वां अध्याय) देवताओं का पठाया हुआ दूत कृष्ण के पास आया और एकांत में उनसे बोला कि १२५ वर्ष मनुष्य लोक में रह कर पृथ्वी के भार उतारने के लिये आप आये थे; वह दिन पूरा होगया; अब आप स्वर्ग को चलिये। उसके पश्चात् सब यदुवंशी रथों पर चढ़ प्रभास में पहुंचे। वहां सब मद्य पान कर परस्पर विवाद करने लगे। जब उन लोगों के सब आयुध टूट गये, तब वे लोग शापित लोह के चूर्ण से उत्पन्न एरका घास को उखाड़ एक दूसरे को मारने लगे। क्षण मात्र में कृष्ण और दारुक सारथी को छोड़ यादवों में कोई जीता न रहा। उन्होंने देखा कि एक वृक्ष के नीचे घायल बलदेवजी बैठे हैं। उनके मुख से बड़ा भारी सर्प निकल समुद्र में चला गया। कृष्ण दारुक से द्वारिका और हस्तिनापुर में खबर भेज कर आप योग युक्त हो पलथी मार वृक्ष के नीचे बैठ गये। उसी समय जरा नामक लुब्धक, जिसने बचा हुआ लोह मय मूसल के टुकड़ों को अपने बाण के फोंकपर लगाया था, वहां आया। उसने भगवान के चरण को मृग जान कर उसको अपने बाण से विद्ध किया। भगवान ने स्वर्ग से आये हुए विमान पर लुब्धक को भेजा और आप मनुष्य शरीर त्याग किया। (३८ वां अध्याय) अर्जुन ने हस्तिनापुर से आकर कृष्ण और बलराम के मृतक शरीर को ढूंढ सब मृतक कर्म किया। कृष्ण की ८ पट रानियां हरि के

शरीर के संग सती होगई। रेवती बलदेवजी के शरीर के साथ भस्म हुई। उग्रसेन, वसुदेव, देवकी, रोहिणी अग्नि में प्रवेश करगई। अर्जुन ने कृष्ण के अवशेष स्त्रियों को और कृष्ण के परपोते वज्र को संग ले हस्तिनापुर को प्रस्थान किया। जब पंजाब में आकर एक स्थान में वह ठहरे, तब आभीर चोरों ने सब धन और स्त्रियों को छीन लिया। अष्टावक्र मुनि ने पूर्व जन्म में स्त्रियों को शाप दिया था कि तुम चोरों के हाथ में पड़ोगी।

श्रीमद्भागवत—(एकादश स्कन्ध, प्रथम अध्याय) विश्वामित्र, असित, कण्व, दुर्वासा, भृगु, अंगिरा, कश्यप, वामदेव, अत्रि, वशिष्ठ, नारद आदि ऋषि पिंडारक स्थान में वास करते थे। यदुवंश कुमारों ने साम्ब को स्त्री बना कर पूछा कि हे ऋषीश्वरों! यह स्त्री गर्भवती है, इसके पुत्र होगा की पुत्री। तब मुनियों ने कहा कि यह तुम्हारे कुलनाशक मूषल को उत्पन्न करेगी। तब सब बालकों ने साम्ब का उदर खोल लोहे का मूषल देखा। राजा उग्रसेन ने मूषल को चूर्ण करवाकर समुद्र में बहवा दिया और रेतने से जो शेष भाग बचा, उसे भी समुद्र में फेंकवा दिया। वहां कोई मत्स्य उस लोहे के टुकड़े को निगल गया। वह चूर्ण बहता हुआ समुद्र के तीर पर आ लगा; उसीसे सब एरका अर्थात् पटेर (घास) उत्पन्न हुए। मत्स्य धीवर के हाथ पकड़ा गया। मत्स्य के पेट से जो लोहा निकला; उससे धीवर ने अपने तीर की भाल बनाई। (३० वां अध्याय) मृत्यु सूचक घोर उत्पातों को देख कृष्णजी ने यादवों से कहा कि अब हम लोगों को दो घड़ी भी द्वारिका में रहना उचित नहीं है; सब स्त्री बालक और वृद्ध शंखोद्धार को चले जाओ। हम लोग प्रभास क्षेत्र में जाकर पश्चिमवाहिनी सरस्वती में स्नान करेंगे और पवित्र होकर अरिष्टों के नाश के लिये देवताओं का पूजन करके ब्राह्मणों को दान देंगे। सब यादव कृष्ण के आदेशानुसार नौकाओं द्वारा समुद्र उतर प्रभास को चले गये। उसके उपरांत दैव से हतबुद्धि यादवों ने मदिरा पान किया। मद्य पान से अतिगर्वयुक्त यादवों का बड़ा कोलाहल हुआ। उसके उपरान्त अत्यन्त क्रोधित हो प्रद्युम्न, सांब, अक्रूर, अनिरुद्ध, सात्यकी, निशठ इत्यादि दाशार्ह, वृष्णि अन्धक और भोजवंशी वीर समुद्र के तट पर

खड्ग, गदा, तोमर और रिष्टियों से युद्ध करने लगे। जाति जातिही को मारने लगे। अस्त्र शस्त्रों के चुक जाने पर वे लोग पटेर घासों को ग्रहण करने लगे, जो यादवों के हाथ में लेतेही वज्र के समान दुधारे खांडे हो जाते थे। उससे यादव लोग वैरियो को मारने लगे। जब कृष्णचन्द्र के निषेध करने पर वे लोग कृष्ण, बलदेव को मारने के लिये शस्त्र ले उनके सन्मुख आये, तब दोनों भाई खड्गरूप पटेरों को हाथों में ले सबको मारने लगे। सबके मरने पर बलदेव जी ने समुद्र के तट पर परम पुरुष के ध्यानरूप योग से आपको आपमे युक्त कर मनुष्य लोक छोड़ दिया। कृष्ण पीपल का आश्रय ले मौन होकर भूमि में बैठ गये। उसी समय जरा नामक बधिक ने, जिसने मूषल के अवशेष लोहे के खंड से बाण बनाया था, मृग के आकार वाले कृष्ण के चरण को बींध डाला; किन्तु जब उसने निकट जाकर कृष्ण का चतुर्भुज रूप देखा, तब भयभीत होकर उनके चरण पर गिर पड़ा। कृष्ण भगवान ने बधिक को अभय करके विमान में बैठा कर स्वर्ग में भेज दिया। उस समय कृष्ण का सारथी आया। कृष्ण ने सारथी से कहा कि अब समुद्र द्वारिकापुरी को जल में डुबा देगा, तुम हमारा हाल द्वारिका वासियों से कह कर हस्तिनापुर में जाकर अर्जुन को ले आवो। सारथी द्वारिका को चला गया। (३१ वां अध्याय) कृष्णजी उसी शरीर से अपने परम धामरूप वैकुंठ को चले गये। कृष्ण के सारथी ने द्वारिका में जाकर यादवों के नाश होने का वृतान्त कहा। सब लोग व्याकुल हो प्रभास में आये। देवकी, रोहिणी और वसुदेव ने अपने प्राणों को छोड़ दिये। दूसरी स्त्रियां अपने अपने पतियों से मिल कर चिता में प्रवेश कर गई। रुक्मिणी आदि कृष्ण की स्त्रियां कृष्णमय होकर अग्नि में प्रवेश कर गई। अर्जुन ने संतानहीन लोगों का पिंडदान और तर्पण किया। उस समय समुद्र ने कृष्णचन्द्र के मन्दिर को छोड़ कर सारी द्वारिकापुरी को जल में डुबा दिया। उसके पश्चात् अर्जुन ने बची हुई स्त्रियों, बालकों और वृद्धों को लेकर इन्द्रप्रस्थ में प्रवेश कराया और वहां वज्र का अभिषेक कर दिया। पांडवलोग परीक्षित को राजतिलक देकर महाप्रस्थान को चले गये।*

भविष्यपुराण (६९ वां अध्याय), मत्स्यपुराण (६९ वां अध्याय) और पद्मपुराण (सृष्टि खंड २३ वां अध्याय) में है कि साम्ब का मनोहर रूप देख कृष्ण की १६ हजार स्त्रियां कामातुर हो गईं। तब कृष्ण भगवान ने अपनी स्त्रियों को शाप दिया कि तुमको पति लोक और स्वर्ग नहीं मिलेगा; तुमलोग अन्त में चोरों के वश पड़ोगी और शाम्ब को शाप दिया कि तू कुष्ठी होगा इत्यादि। इसी कारण से आभीरलोग पंचनद के किनारे से स्त्रियों को हर लेगये थे।

वामनपुराण—(३४ वां अध्याय) सोमतीर्थ में, जहां चंद्रमा व्याधि से मुक्त हुआ था, स्नान करके सोमेश्वर, अर्थात् सोमनाथ के दर्शन करने से राजसूय यज्ञ का फल मिलता है। वहाके भूतेश्वर और भालेश्वर की पूजा करने से मनुष्य फिर जन्म नहीं लेता है। (८४ वां अध्याय) प्रह्लाद ने प्रभास तीर्थ में जाकर सरस्वती और समुद्र के संगम में स्नान करके शिव का दर्शन किया।

गरुडपुराण—(पूर्वार्द्ध, ८१ वां अध्याय) प्रभास क्षेत्र एक उत्तम स्थान है, जिसमें सोमनाथ महादेव निवास करते हैं।

कूर्मपुराण—(उपरि भाग, ३४ वां अध्याय) तीर्थों में उत्तम प्रभास तीर्थ है, जिसको सिद्धाश्रम भी कहते हैं। उस तीर्थ में भगवान शंकर के पूजन, जप, होम आदि कर्म करने से और ब्राह्मणों को दान देने से अक्षय पद मिलता है। शिवजी का सोमेश्वर तीर्थ सम्पूर्ण व्याधि का नाश करने वाला और शिवलोक देने वाला है।

शिवपुराण—(ज्ञान संहिता, ३८ वां अध्याय) शिवजी के १२ ज्योतिर्लिंग हैं;—(१) सौराष्ट्र देश में सोमनाथ (२) श्रीशैल पर मल्लिकार्जुन, (३) उज्जैन में महाकालेश्वर, (४) ओंकार में अमरेश्वर, (५) हिमालय पर केदारेश्वर, (६) डाकिनी में भीमशंकर, (७) वाराणसी में विश्वेश, (८) गोदावरी के तट पर त्र्यंबक, (९) चिताभूमि पर वैद्यनाथ, (१०) दारुका वन में नागेश, (११) सेतुबंध में रामेश्वर और (१२) शिवालय में घुस्मेश्वर। ज्योतिर्लिंगों की पूजा करने का अधिकार चारो वर्णों का है। इनके नैवेद्य भोजन करने से संपूर्ण

पापों का नाश हो जाता है। नीच जातियों में उत्पन्न मनुष्य भी ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने से दूसरे जन्म में आम्नाय ब्राह्मण होते हैं और उसके पश्चात् उनकी मुक्ति हो जाती है।

(४९ वां अध्याय) दक्षप्रजापति ने अश्विनी आदिक अपनी २७ पुत्रियों का विवाह चंद्रमा से कर दिया। जब चंद्रमा अपनी रोहिणी नामक पत्नी से अधिक स्नेह करने लगा, तब दक्ष की अन्य कन्याओं ने अपने निरादर का वृत्तांत अपने पिता से कह सुनाया। दक्ष ने चंद्रमा को बहुत समझाया कि तुमको अपनी सब स्त्रियों पर समान प्रीति रखना उचित है; किंतु भावीवश चंद्रमा ने उनका वचन न मानकर सब स्त्रियों का निरादर करके फिर रोहिणी से आसक्त हुआ। तब दक्ष ने दुःखी होकर चंद्रमा को शाप दिया कि तू क्षयी रोग से पीडित होजा। उसी क्षण चंद्रमा क्षयी रोग से युक्त होगया। चंद्रमा के क्षीण होने से जगत् में हाहाकार मच गया। देवता और ऋषिगण दुःखी हुए। चंद्रमा की प्रार्थना से इंद्रादिक देवताओं ने ब्रह्मा के पास जाकर उनसे चंद्रमा के आरोग्य होने का उपाय पूछा। ब्रह्माजी ने कहा कि चंद्रमा प्रभास तीर्थ में जाकर मृत्युंजय के मंत्र से प्रभा के सागर शिवजी की आराधना करे, तो शिवजी की प्रसन्नता से उसका रोग दूर होगा। ब्रह्मा के आदेश से इन्द्रादिक देवता और पुरातन ऋषिगण दक्ष को शांत करने के पश्चात् चंद्रमा को लेकर प्रभास तीर्थ में गए। उन्होंने वहां एक गढ़ा खोद कर उसमें तीर्थों का आवाहन किया और मृत्युंजय के विधान से पार्थिव लिंग स्थापित किया। उसके पश्चात् वे लोग चले गए। चंद्रमा जब ६ मास तक मृत्युंजय के मन्त्र से शिवजी का पूजन किया, तब शिवजी प्रसन्न होकर बोले कि हे चंद्रमा! तुम इच्छित वर मांगो। चंद्रमा ने कहा कि हे स्वामी! मैं यही चाहता हूं कि मेरा क्षयी रोग दूर होजावे। शिवजी ने कहा कि तुम्हारी कला जिस भांति क्रम क्रम से कृष्ण पक्ष में घटेगी, उसी प्रकार शुक्ल पक्ष में वृद्धि को प्राप्त होगी। उस समय समस्त देवता और ऋषिगण प्रसन्न होकर शिवजी से बोले कि हे स्वामी! आप इस स्थान में स्थित होजाइये। तब शिवजी वहां स्थित होकर "सोमेश्वर" अर्थात् सोमनाथ नाम से जगत् में प्रसिद्ध हुए। देवताओं तथा

ऋषियों का खोदा हुआ गढ़ा चंद्र कुण्ड नाम से विख्यात हुआ। उसमें स्नान करने से मनुष्य का सब पाप छूट जाता है। जो मनुष्य उसमें ६ मास तक स्नान करता है उसके कुष्ठ आदि असाध्य रोग नष्ट हो जाते हैं।

अट्ठाईसवां अध्याय।

(काठियावाड़ में) जूनागढ़, गिरनारपर्वत, जेतपुर, लाठी, पालीटाणा, शत्रुं-जय पहाड़ी, भावनगर और लिंबड़ी।

जूनागढ़।

विरावल कसबे के रेलवे स्टेशन से उत्तर २९ मील केशोद, ४४ मील शाहपुर और ५१ मील जूनागढ़ का रेलवे स्टेशन है। केशोद और शाहपुर दोनों गावों के चारो ओर पक्की दीवार बनी हुई है। केशोद से उत्तर एक नदी पर रेलवे का पुल बना है।

बंबई हाते के काठियावाड़ में (२१ अन्श, ३१ कला उत्तर अक्षांश और ७० अन्श, ३६ कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) देशी राज्य की राजधानी जूनागढ़ एक सुन्दर छोटा शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय जूनागढ़ कसबे में ३१६४० मनुष्य थे; अर्थात् १६७१० पुरुष और १४९३० स्त्रियां। इनमें १५३३१ हिंदू, १५२४० मुसलमान, १०१७ जैन, ३० कृस्तान, १३ पारसी और ९ यहूदी थे। मनुष्य गणना के अनुसार यह बंबई हाते के देशी राज्यों में पांचवां और काठियावाड़ में तीसरा कसबा है।

जूनागढ़ के बगलों में पक्की दीवार हैं। शहर से पूर्व उत्तर, गिरनार आदि पहाड़ियों और पश्चिम रेलवे लाइन है। रेलवे के पास शहर के पश्चिम का

फाटक है। शहर से दक्षिण-पूर्व गिर का मैदान है। जूनागढ शहर में कई एक मकबरे, कई मसजिदें, अनेक देवमंदिर, जिनमें स्वामीनारायण का मंदिर उत्तम है, कई एक धर्मशाले, कई सदावर्त, एक उत्तम अस्पताल, जेलखाना, नवाब की कचहरियों की इमारतें और अनेक स्कूल हैं। मेरे जाने के समय जेलखाने से दक्षिण एक घोडशाले में १०० घोडे और एक गाडीखाने में लगभग ४० बग्गी टमटम और ४० घोडे थे। हाल में शहर में अनेक सरकारी तथा कचहरी के सरदारो के उत्तम मकान बने हैं।

शहर के उत्तरीय भाग में जूनागढ के दूसरा बहादुर खां, दूसरा हमीदखां और लाडलीबू नामक एक स्त्री इन तीनो के ३ मकबरे हैं। जेलखाना से दक्षिण नवाब महब्बतखां का मकबरा है। जूनागढ के सपूर्ण मकबरे इसी सदी के बने हुए हैं। उनमें से कई एक ३० वर्ष के भीतर के हैं। शहर के उत्तर वाले फाटक से ! मील दूर वजीरसाहब का साकर बाग नामक सुन्दर स्थान है। उसमें दो मंजिले बंगले के बगल में पानी से पूर्ण एक नाला है। उससे लगभग ५० गज के अन्तर पर एक जंतुशाले में बाघ, हरिन आदि जंतु रक्खे हुए हैं। शहर से दक्षिण साकर बाग से अधिक मनोरम सरदार बाग है, जिसमें सुन्दर बगले बने हैं और गिर के जगलो से लाकर अनेक सिंह और सिंहनी रक्खी गई हैं।

जूनागढ के सिरावल फाटक के दक्षिण-पूर्व दत्तर अर्थात् जमियालशाह का मनोरम स्थान है। वहा ३० फीट ऊचा दत्तर का दरगाह, एक तालाब और वजीर साहब बाहुद्दीन का बनवाया हुआ एक कोढीखाना है, जिसकी नेव सन् १८९० में प्रिंस एलबर्ट विक्टर ने दी थी। उसमें लगभग १०० कोढी रह सकने हैं। उस स्थान से ४ मील दक्षिण पूर्व २७८० फीट ऊंची दत्तर पहाड़ी है, जिसके शृङ्ग पर एक छोटा स्थान बना है। उस पहाडी को हिंदू और मुसलमान दोनो पाक समझते हैं। लोग कहते हैं कि उसके पास रहने से कुष्ठ रोग छूटता है। बहुत से कोढ़ी उस पहाड़ी को सेवते हैं।

जूनागढ़ के नवाब का महल—शहर के मध्य भाग में एकही जगह बड़े एक किले में दो मंजिले चौमंजिले नवाब साहब के मकान बने हैं।

उनके ऊपर के भागों में बहुत से मेहराबदार द्वार हैं। मकान रंगों से चित्रित हैं। महल का एक मकान सर्व साधारण लोगों के देखने के लिये खुला रहता है। उसका दोमंजिला कुमरा बहुत से झाड़, फानूस, तस्वीरों, बड़े बड़े आइनों और सुनहरी रुपहरी कौच कुर्शियों से सजा हुआ है। उसमें जगह जगह प्रदर्शनी की वस्तु भी रक्खी हैं। महल के आगे महब्बतसर्किल नामक बाजार है।

महब्बत खां का मकबरा—शहर के जेलखाने से दक्षिण जूनागढ़ के मृत नवाब के पिता सर महब्बतखांजी के. सी. एस. आई. का बहुत सुन्दर मकबरा है। मकबरा २४ पहल का है। सब पहलों की मेहराबियों में लोहे का सुन्दर जालीदार काम है। मकबरे के भीतर उसके मध्य में ८ पहल का खास मकबरा है, जिसके ५ पहलों में लोहे की सुन्दर झंझरी और ३ पहलों में चांदी और शीशाओं के सुन्दर काम हैं। खास मकबरे के भीतर चांदनी के नीचे, जिसमें चांदी के चोब लगे हैं, सर महब्बतखां की कबर है। खास मकबरे के चारो बगलों में नील और श्वेत मार्बुल के टुकड़ों का फर्श और उत्तर बगल की भूमि पर बेश कीमती पत्थर की पच्चीकारी का काम है। छत में बड़े बड़े झाड़ लगे हैं। मकबरे के सिर पर मध्य में एक बड़ा गुंबज और उसके चारो ओर बहुत से छोटे गुंबज हैं। मकबरे के आगे पत्थर का बड़ा फर्श है।

महब्बतखां के मकबरे के उत्तर एक दूसरा उससे छोटा मकबरा बन रहा है। उसमें थोड़ा काम बाकी है।

नवाब साहब की मसजिद—महब्बतखां के मकबरे से दक्षिण ओर जूनागढ़ के नवाबसाहब की मसजिद है। वह बाहर से चौकोनी है; किंतु उसके भीतर ५८ खंभे ऐसे ढब से लगाये गये हैं कि उसमें ६ भाग हो गये हैं। प्रत्येक भाग के बगलों में ८ खंभे पड़ते हैं। प्रति भाग के ऊपर एक सुन्दर गुंबज है। मसजिद के भीतर श्वेत और नील रंग के मार्बुल का और उसके आगे के बड़े आंगन में साधारण पत्थर का फर्श है।

अपरकोट—शहर के पास अपरकोट नामक पुराना किला है, जो पूर्व समय में हिंदू राजाओं का गढ़ था। वह सन् १८५८ तक जेलखाने के काम में आता था; किंतु अब वेकार पड़ा है। वहां सन् ईस्वी के आरंभ से २७० वर्ष पहिले से राजा अशोक के सूबेदार और उनके समय के पीछे गुप्त वंश के राजाओं के सूबेदार रहते थे। अपरकोट में तथा उसके पास अनेक बौद्ध गुफा हैं। किले की पश्चिम की दीवार में आगे पीछे एक दूसरे के भीतर क्रम से ३ फाटक बने हुए हैं। किले की दीवार ६० फीट से ७० फीट तक ऊंची है। फाटक के ऊपर पांचवां मंडलीक का सन् १४५० का शिला लेख है। किले में २ पुरानी तोपें पड़ी हैं, जिनमें से एक १७ फीट और दूसरी १३ फीट लंबी हैं,महम्मद बेगड़ा की बनवाई हुई जुमामसजिद टूट फूट गई है; उसका एक मीनार खड़ा है। मसजिद के पास नूरीशाह का मकवरा है। किले में २ पुरानी वावली है, जिनमें नीचे तक चक्कर दार सीढ़ियां बनी हुई हैं। बड़ी मसजिद से लगभग ५० गज उत्तर अनेक दो मंजिले गुफामन्दिर हैं, जिनके नीचे के कमरे ११ फीट ऊंचे हैं। वागेश्वरी फाटक के भीतर बावाप्यारा की गुफा हैं। बावाप्यारा नामक एक फकीर गुफाओं में रहता था, इस कारण से उनका यह नाम पड़गया। अपरकोट के पास खपड़ाखोड़िया नामक गुफाओं का झुंड है। देखने से जान पड़ता है कि एक समय वे तीन मंजिले मठ थे।

जूनागढ़ का राज्य—काठियावाड़ के दक्षिण-पश्चिम के भाग में जूनागढ़ एक देशी राज्य है। भूमि साधारण प्रकार से समतल है। गिरनार पहाड़ियों की एक चोटी समुद्र के जल से ३६७९ फीट ऊंची है। राज्य का एक भाग गिर कहलाता है; उसमें सघन वृक्षों का जंगल और उसके चंद भागों में पहाड़ियां हैं। पहिले काठियावाड़ प्रायद्वीप और गुजरात में बहुत सिंह मिलते थे, परंतु अब वे केवल गिरि के जंगलों में पाए जाते हैं। अफ्रिका के सिंहों से मिलाने में इनका आल छोटा और रंग हलका होता है। गिर के जंगलों में १२ से अधिक सिंह हैं। जूनागढ़ के राज्य के स्थानों से मकान के काम योग्य पत्थर निकलता है। काली मिट्टी के खेत कुओं और नहरों

मे पटाए जाते हैं। कपास बहुत होती है, जो विरावल बंदर से आगबोटों द्वारा बंबई भेजी जाती है। गेहू, दलिहन, ऊख और तेलहन भी होते हैं। राज्य के ३४ स्कूलों में लगभग २००० लड़के पढ़ते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय जूनागढ़ राज्य के ३२७९ वर्गमील क्षेत्रफल में ७ कसबे, ८९० गांव, ६९७८ मकान और ३८७४९९ मनुष्य थे; अर्थात् ३०६२९९ हिंदू, ७६४०१ मुसलमान और ४८०३ अन्य।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय जूनागढ़ राज्य के जूनागढ़ कसबे में ३१६४० और विरावल में १९३३९ मनुष्य थे। उस राज्य में सोमनाथपट्टन एक प्रसिद्ध कसबा है।

जूनागढ़ का राज्य काठियावाड़ के प्रथम दर्जे के राज्यों में से एक है। यहांके नवाबों को ११ तोपों की सलामी मिलती है। जूनागढ़ के राज्य से लगभग २१००००० रुपये मालगुजारी आती है, जिसमें से अगरेजी सरकार और बड़ोदा के गायकवाड़ को ६५६०० रुपया राज्य कर दिया जाता है। इनका सैनिक बल भगलग २७०० आदमियों का है। जूनागढ़ के नवाब अंगरेजी सरकार और गायकवाड़ को 'राज्य कर' देते हैं और काठियावाड़ के बहुतेरे छोटे देशी राजाओं से जोरतलबी नामक एक प्रकार का 'कर' लेते हैं, जिसको काठियावाड़ एजेंसी के अफसर लोग तहसील करके उनको देते हैं।

इतिहास—अति पूर्व काल में जूनागढ़ बौद्धों तथा राजपूतों का राज्य था (ऊपर कोट में देखिए)। उस समय ऊपरकोट अर्थात् पुराना जूनागढ़ राजधानी था। सन् १४७२ में अहमदाबाद के सुलतान महम्मद बेगड़ा ने ऊपरकोट के राजपूत राजा को जीता। उसी ने (वर्तमान) के जूनागढ़ शहर को बसाया। सोलवीं शदी में अकबर के राज्य के समय जूनागढ़ दिल्ली के अधिकार में हुआ और गुजरात के सूबेदार के आधीन रक्खा गया। जब गुजरात से मुगलों का अधिकार उठ गया, तब लगभग सन् १७३५ में शेरखांबाबी नामक एक सिपाही ने मुगलों के गवर्नर को

निकाल कर जूनागढ़ में अपना अधिकार कर लिया। शेरखां के पुत्र सलावत खां ने अपने वारिश पुत्र को जूनागढ़ का नवाब बनाया और छोटे पुत्रों को जागीर दे दी।

शेरखांबाबी के वंशधर जूनागढ़ के ८ वें नवाब सर महव्वतखांजी के. सी. एस. आई थे, जो सन् १८८२ में मर गए; तब उनके पुत्र बहादुरखांजी उत्तराधिकारी हुए, जिनको पीछे जी. सी. एस. आई की पदवी मिली थी; किंतु सन् १८९२ में ३८ वर्ष की अवस्था में उनका देहांत हो गया।

नरसी भक्त की कथा—एक कहावत है कि जूनागढ़ में एक ब्राह्मण के गृह नरसीभक्त का जन्म हुआ। जब उनके माता पिता मर गये, तब वह अपने भाई के घर रहने लगे। उनके एक पुत्र और दो पुत्रियां हुईं। नरसीभक्त वहां आने वाले साधुओं की अच्छी भांति से सेवा किया करते थे। एक दिन अनेक साधुओं ने जूनागढ़ में आकर वहां के लोगों से पूछा कि यहां साहूकार कौन है, हम लोगों को द्वारिका की हुन्डी करानी है। नरसी के शत्रुओं ने परिहास करके कह दिया कि नरसीभक्त यहां का साहूकार है। साधुओं ने नरसीजी के पास सात सौ रुपये रक्ख कर उनसे हुन्डी लिख देने को कहा। नरसीजी के अस्वीकार करने पर जब साधुलोग हुन्डी लिख देने के लिये हाथ जोड़ कर उनकी प्रार्थना करने लगे, तब उन्हों ने जान लिया कि भगवान ने शत्रुओं के हृदय में प्रेरणा करके मुझको यह खर्च भेजवाया है। ऐसा सोच नरसीजी ने द्वारिका में सांवलशाह के ऊपर हुन्डी लिख दी। साधुलोग उस हुन्डी को लेकर द्वारिका में गए। वहां सांवलशाह अर्थात् कृष्ण भगवान ने साहूकार का रूप धर कर साधुओं को हुन्डी का रुपया चुका दिया और नरसीजी के नाम से रुक्का लिख दिया कि मैंने हुन्डी का दाम दे दिया है। नरसीजी ने सब रुपये को साधुओं की सेवा में खर्च कर दिया। लोग इस प्रकार के नरसीजी की अनेक आश्चर्य कथा कहते हैं।

गिरनार पर्वत।

जूनागढ़ शहर से पूर्व गिरनार नामक पहाड़ियां हैं, जिनमें से गिरनार पहाड़ी ३६७५ फीट, योगिनिया पहाड़ी २९२७ फीट, वॅसला पहाड़ी २२९० फीट और दत्तर पहाड़ी २७८० फीट समुद्र के जल से ऊंची है। इनके अलावे लक्ष्मण टकरी इत्यादि अनेक छोटी पहाड़िया हैं। गिरनार पहाड़ी पर हिन्दुओं और जैनों के बहुत मंदिर तथा स्थान बने हुए हैं। गिरनार को हिंदू, जैन और बौद्ध ये तीनो मत के लोग आदर करते हैं। जूनागढ़ शहर से गिरनार पहाड़ी की केवल चोटी देख पड़ती है; क्योंकि उसके आगे (जूनागढ़ को ओर) योगिनिया, लक्ष्मणटेकरी, वॅस्ला, दत्तर इत्यादि छोटी पहाड़ियां हैं। पहाड़ियों पर जाने के लिये जूनागढ़ मे किराये की डोली मिलती है।

जूनागढ़ शहर से लगभग १० मील पूर्व २१ अन्श, ३० कला उत्तर अक्षांश और ७० अन्श, ४२ कला पूर्व देशांतर में पवित्र गिरनार पहाड़ी है। यात्री लोग जूनागढ़ शहर के पास से पहाड़ियों की यात्रा आरंभ करते हैं। जूनागढ़ से १५ मील दूर गिरनार के शिखर पर दत्तात्रेयजी का स्थान है। पहाड़ियों की चढ़ाई कड़ी है। नित्य हिंदू यात्री पहाड़ियो पर चढ़ते हैं। यात्री लोग दो तीन दिन में पहाड़ी यात्रा समाप्त करते हैं। अगहन की पूर्णमासी को दत्तात्रेयजी का जन्म हुआ था, उस दिन उनका दर्शन का अधिक माहात्म्य है।

कुछ लोगों का मत है कि गिरनार पर्वत, जो गोमती द्वारिका तथा वेट द्वारिका से सीधी लकीर में लगभग १०० मील दूर है, द्वारिका के पास का रैवतगिरि है, जिस पर द्वारिका के लोग उत्सव, तथा क्रीड़ा किया करते थे। महाभारत आदि पर्व के २१९ वें अध्याय, और अश्वमेधपर्व के ५९ वें अध्याय में रैवतगिरि पर यदुवंशियों के उत्सव करने की और लिंगपुराण—उत्तरार्द्ध के तीसरे अध्याय में उस पर्वत पर कृष्ण के विहार करने की कथा लिखी हुई है।

जूनागढ़ शहर के पास जूनागढ़ की पुरानी राजधानी अपरकोट नामक

किया है। लोग उसके वागेश्वरी फाटक होकर, जिसके पास एक धर्मशाला है, गिरनार की यात्रा करते हैं। इस स्थान से लगभग २०० गज आगे मार्ग के दहिने वागेश्वरी का मंदिर है। उससे आगे नया तीन मंजिला मंदिर, मंदिर से थोड़ा आगे पत्थर का पुल और पुल से आगे चट्टानों पर पुराने शिला लेख हैं। वहां लगभग ३० फीट लंबे और २० फीट चौड़े एक चट्टान पर मौर्यवंशी राजा अशोक के लेख जो विक्रमी संवत से २०८ वर्ष पहिले के हैं, खोदे हुए हैं। दूसरे चट्टान पर शक संवत की पहली शताब्दी (सन् ईस्वी की दूसरी शदी) के क्षत्रपवंश के राजा रुद्रदामा के शिला लेख हैं (दोनों के अक्षरान्तर और अनुवाद अन्यत्र देखिए)। एक तीसरे स्थान में सन् ईस्वी की पांचवीं शदी के लेख है, जिनमें सुदर्शन तालाब के बांध के टूटने और एक पुल बनवाने का वृत्तांत खोदा हुआ है।

- राजा अशोक के लेख के पत्थर से आगे सोनारेखा नदी पर सुन्दर पुल बना है। नदी के दोनों किनारों पर अनेक मन्दिर बने हुए हैं, जिनमें दामोदरजी का मन्दिर बड़ा है। इस स्थान पर दामोदरकुण्ड और रेवतीकुण्ड में यात्री लोग स्नान करते हैं। उससे आगे जंगली घाटी होकर पहाड़ी मार्ग निकला है। एक जगह वृक्षों के पास, जहां बहुत बंदर रहते हैं, भवनाथ शिव का मन्दिर है। उससे आगे एक स्थान पर १ कूप और कई एक मंदिर हैं। नेमीनाथ के मन्दिर तक जगह जगह ६ परवा अर्थात् विश्रामगृह मिलते हैं।

मैदान से ८०० फीट ऊपर चुड़िया परवा का और १००० फीट ऊपर टोलीटेरी नामक विश्रामगृह है। वहांसे खड़ी चढ़ाई आरंभ होती है। लगभग १४०० फीट ऊपर जिससे आगे से राह दहिने घूमती है, तीसरा विश्रामगृह है। उससे आगे जाने पर दहनी ओर दत्तर पहाड़ी देख पड़ती है। लगभग २८०० फीट ऊपर एक पत्थर की धर्मशाला है, जहां से भैरवझंपा चट्टान अर्थात् भयकर कुण्ड के चट्टान का उत्तम दृश्य दृष्टि गोचर होता है। पूर्व काल में अनेक लोग उस स्थान से १००० फीट अथवा उससे अधिक नीचे कूद कर आत्मघात कर डालते थे। उनको विश्वास था कि जो आदमी इस प्रकार
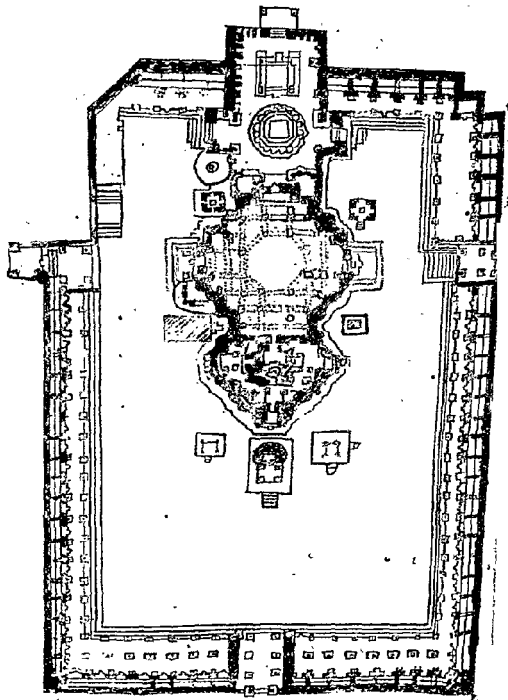
गिरनारमें नेमीनाथ का मन्दिर

से प्राण त्याग करेगा, वह दूसरे जन्म में राजा होगा। उसके पास पांडव गुफा है। एक स्थान में हनुमान धारा और एक स्थान में रामानंदस्वामी का चरण पादुका और गुफा मिलती है। एक जगह मुचकुन्द गुफा है। लोग कहते हैं कि इसी गुफा में राजा मुचकुन्द सोये थे, जिनकी दृष्टि से कालयवन भस्म हो गया। इनके अलावे मार्ग में सेवानाथ का मन्दिर, हाथीपगलाकुण्ड, सूर्यकुण्ड, मालीपर्वकुण्ड तथा अनेक दूसरे कूप, कुण्ड तथा मंदिर हैं।

जैन मन्दिर—जूनागढ़ के मैदान से २३७० फीट (समुद्र के जल से लगभग ३००० फीट) ऊपर देवकोट के घेरे का, जिसको खंगार का महल भी कहते हैं, फाटक है। फाटक से भीतर जाने पर बाईं ओर पहाड़ी के पश्चिम किनारे के पास जैन मंदिरों का बड़ा घेरा और दहिनी ओर कच्छ के राजा मानसिंह का पुराना मंदिर मिलता है। वहां पहाड़ी की चोटी से लगभग ६०० फीट नीचे उस पहाड़ी के खड़े भाग के सिर पर १६ जैन मंदिर बने हुए हैं, जिनमें सबसे बड़ा और कदाचित सब मंदिरों से पुराना जैनों के २२ वां तीर्थंकर **नेमीनाथ** का विचित्र मंदिर है। मन्दिर पर के लेख से जान पड़ता है कि सन् १२७८ में उस मन्दिर की मरम्मत की गई। गिरनार के मन्दिर बहुत पुराने हैं। ईसा से २७० वर्ष पहिले भी वह जैन यात्रा का स्थान था।

जैन लोगों के ५ पवित्र स्थानों में से सबसे अधिक पवित्र पालीटाणा के शत्रुंजय पहाड़ी और उसके पश्चात् गिरनार पहाड़ी है।

१९५ फीट लंबे और १३० फीट चौड़े चौकोने आंगन में नेमीनाथ का मंदिर है। मन्दिर के भीतर सोने के भूषणों और रत्नों की जड़ाव से भूषित नेमीनाथ की नीलरंग की प्रतिमा है। उस स्थान के चारों ओर एक राह है, जिसके बगल में सफेद मार्बुल की अनेक मूर्तियां देखने में आती हैं। मंदिर के आगे अर्थात् पश्चिम क्रम से दो कमरे और एक जगमोहन अर्थात् आगे का मंडप है। उनमें से पूर्व वाले कमरे के मध्य में एक स्थान, पश्चिम वाले कमरे में पीले रंग के पत्थर से बने हुए २ चबूतरे, जिन पर दो दो चरण चिन्ह बने हैं; और उसके पश्चिम के जगमोहन के खंभों में से २ खंभों

पर मन्दिर की मरम्मत के समय लिखे हुए हैं, जो सन् १२७५—१२७८—१२८१ के मुताबिक होते हैं। मन्दिर के आंगन के चारो बगलों में ७० कोठरियां हैं। प्रति कोठरी में नेमीनाथ की एक प्रतिमा पल्थी मार कर बैठी है। कोठरियों के आगे लगातार ओसारा है, जिसके आगे पत्थर की जालीदार टट्टियां बनी हैं।

नेमीनाथ के मन्दिर को छोड़ने पर बाईं ओर ३ मन्दिर मिलते हैं, जिनमें से दक्षिण वाले मन्दिर में प्रथम तीर्थंकर ऋषभजी अर्थात् आदिनाथ की एक बड़ी मूर्ति और चौबीसों जैन तीर्थंकरो अर्थात् जैन देवताओं की प्रतिमा हैं (चौबीसों के नाम शत्रुंजय में देखिए)। उस मन्दिर के सामने पंचभाइयों का नया मन्दिर है। उसके पश्चिम पार्श्वनाथ का बड़ा मन्दिर और बड़े मन्दिर से उत्तर पार्श्वनाथ का दूसरा मंदिर है। उत्तर बगल के पास कुमारपाल का मन्दिर है, जिसको मुसलमानों ने कुरूप किया था; किंतु सन् १८२४ में हंसराज जेठा ने उसको फिर पूर्ववत् बना दिया।

नेमीनाथ के मन्दिर के पीछे तेजपाल और वास्तुपाल दोनों भाइयों के (सन् ११७७) बनवाये हुए एकही साथ ३ विचित्र मन्दिर हैं। यहां १९ वां तीर्थंकर मालीनाथ की मूर्ति है। तेजपाल और वास्तुपाल का बनवाया हुआ एक उत्तम मन्दिर आबू पहाड़ पर भी है।

गोमुखी—ऊपर लिखे हुए जैन मंदिरों के घेरे से उत्तर ७० फीट लंबा और ५० फीट चौड़ा भीमकुण्ड नामक जलाशय है, जिसमें हिन्दू यात्री स्नान करते हैं।

जैन मंदिरों से दक्षिण उस स्थान से २०० फीट की ऊंचाई पर जूनागढ़ कसबे से लगभग १० मील दूर गोमुखी स्थान है। यहां पत्थर के गोमुखी होकर जल की धारा गिरती है, जिसको लोग गंगा कहते हैं। यहां कई एक झरने तथा ब्रह्मेश्वर और नर्मदेश्वर के २ मन्दिर हैं। गोमुखी से ऊपर दो धार की तरफ गई हैं।

अम्बा का मंदिर—गोमुखी से एक मील दूर पहाड़ी की पहिली
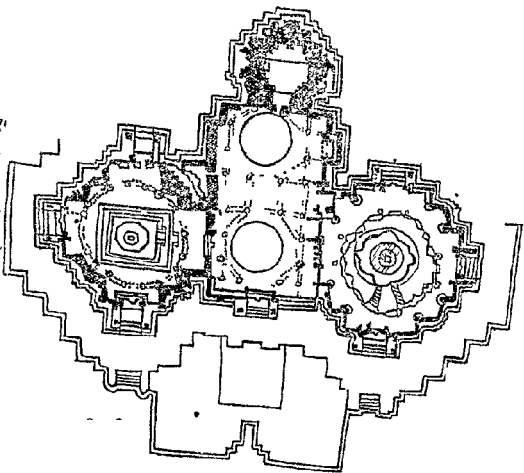
गिरनार में

तेजपाल और वस्तुपाल का मन्दिर

चोटी के सिर पर ३३३० फीट की ऊंचाई पर अंबादेवी का पुराना मन्दिर है, जो दूर से देख पड़ता है। खड़ी सीढ़ियों से मंदिर के पास पहुंचना होता है। इस प्रांत के दूर दूर के बहुत ब्राह्मण विवाह होने पर दुलहिन के सहित वहां जाते हैं और दुलहिन के साथ गँठजोड़ाव किए हुए अम्बादेवी को नारियल आदि पूजा चढ़ाते हैं। एक ब्राह्मण दुलहा ने उस मन्दिर की मरम्मत करवाई है।

गुरु दत्तात्रेय का मंदिर—अम्बा के मन्दिर से पूर्व गोरखनाथ, दत्तात्रु अर्थात् दत्तात्रेय और कालिका नाम की ३ चोटियों के ३ शृङ्ग हैं। पहिले गोरखनाथ का स्थान, जिसको गोरखटेकरी कहते हैं, मिलता है; उससे आगे गोमुखी से ४ मील और जूनागढ़ शहर से १४ मील दूर गुरु दत्तात्रेय का छोटा मन्दिर है, जिसमें उनका चरण चिन्ह बना हुआ है। श्रीमद्भागवत के लेख के अनुसार दत्तात्रेयजी विष्णु के २४ अवतारों मेंसे एक हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—श्रीमद्भागवत—(प्रथमस्कंध, तीसरा अध्याय) विष्णुभगवान के २४ अवतार हैं;—(१) सनत्कुमार, (२)वाराह, (३) यज्ञ, (४) हयग्रीव, (५) नर नारायण, (६) कपिलदेव, (७) दत्तात्रेय, (८) ऋषभ, (९) पृथु, (१०) मत्स्य, (११) कच्छ, (१२) धन्वंतर, (१३) मोहिनी, (१४) नृसिंह, (१५) वामन, (१६) परशुराम, (१७) व्यास, (१८) रामचंद्र, (१९) कृष्ण, (२०) नारद, (२१) हरि, (२२) हंस, (२३) बुद्ध और (२४) कल्की। दत्तात्रेयजी ने महर्षि अत्रि के पुत्र होकर अपनी माता अनसूया को प्रसन्न किया और राजा अलर्क और प्रह्लाद को आत्म विद्या का उपदेश दिया।

विष्णुपुराण—(प्रथम अंश, १० वां अध्याय) महर्षि अत्रि की भार्या अनसूया से चंद्रमा, दत्तात्रेय और दुर्वासा नामक ३ पुत्र हुए।

दूसरा शिवपुराण—(७ वां खंड, २९ वां अध्याय) अत्रि के ३ पुत्र हुए;—ब्रह्मा के अंश से चंद्रमा, विष्णु के अंश से दत्तात्रेय और शिवजी के अंश से दुर्वासा।

भविष्यपुराण—(उत्तरार्द्ध, ५१ वां अध्याय) महर्षि अत्रि के पुत्र योगी दत्तात्रेयजी, जो विष्णु के अवतारों में से थे, विंध्य पर्वत पर अपने आश्रम में योग साधन करते थे।

जेतपुर।

जूनागढ़ के रेलवे स्टेशन से १७ मील उत्तर जितलसर का रेलवे जंक्शन है। जितलसर से पूर्व ३ मील जेतपुर, ५६ मील लाठी, ८० मील धोला जंक्शन, ९३ मील सोनगढ़, ९८ मील सिहोर कसबा और ११२ मील भावनगर का रेलवे स्टेशन; जितलसर जंक्शन से पश्चिम १० मील धोराजी और ७८ मील पोरबंदर का रेलवे स्टेशन और जितलसर से पूर्वोत्तर ओर २३ मील गोंडल, ४७ मील राजकोट, ७२ मील वंकानेर जंक्शन और १२४ मील वाढवान जंक्शन; धोला जंक्शन से उत्तर ६१ मील लिंबड़ी, ६८ मील वाढवान शहर और ७२ मील वाढवान जंक्शन का स्टेशन; और वंकानेर जंक्शन से उत्तर १६ मील मोरवी का रेलवे स्टेशन है।

जितलसर जंक्शन से ३ मील पूर्व जेतपुर का रेलवे स्टेशन है। बंबई हाते के काठियावाड़ के सौराष्ट्र डीवीजन में एक देशी राज्य की राजधानी जेतपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय जेतपुर कसबे में १३६४६ मनुष्य थे, अर्थात् ७२६८ हिंदू, ५१३६ मुसलमान, १२४२ जैन और १ पारसी।

जेतपुर कसबे के चारो ओर पक्की दीवार है। कसबा उन्नति पर है। यहांसे राजकोट धोराजी, जूनागढ़ और मनवाड़ा को सड़क गई है। जेतपुर में धर्मशाला, बंगला, अस्पताल, कचहरियों के मकान और कई एक स्कूल हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय जेतपुर राज्य के ७३४ वर्गमील में ९२५५३ मनुष्य थे। राज्य से लगभग ८ लाख रुपया मालगुजारी आती है, जिसमें से अंगरेजी गवर्नमेंट, बड़ोदा के गायकवाड़ और जूनागढ़ के नवाब को लगभग ६० हजार राज्य कर दिया जाता है। इसमें अलग अलग कर देने वाले १७ तालुकदार हैं।

लाठी।

जेतपुर के रेलवे स्टेशन से ५३ मील और जितलसर जंक्शन से ५६ मील पूर्व लाठी का रेलवे स्टेशन है। बंबई हाते के काठियावाड़ प्रदेश के गोहेलवार प्रांत में देशी राज्य की राजधानी लाठी है।

रैलवे स्टेशन से लगभग १ मील दूर लाठी कसबा है। लाठी में ठाकुर साहब का महल, एक धर्मशाला, अस्पताल, स्कूल और पोष्ट आफिस है।

लाठी का राज्य—यह राज्य काठियावाड़ के चौथे दर्जे के राज्यो में से एक है। राज्य में ऊख और कपास अधिक होती है। सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय लाठी राज्य के ४८ वर्गमील क्षेत्रफल में ८ गाव, और ६८०४ मनुष्य थे। राज्य से लगभग ७४००० रुपये मालगुजारी आती है, जिसमें से बड़ोदा के गायकवाड़ और जूनागढ़ के नवाब को २००० रुपया राज्यकर दिया जाता है।

लाठी के ठाकुर साहब गोहेल राजपूत है। लोग कहते हैं कि लगभग सन् १२६० में गोहेल राजपूत सेजाक नामक अपने प्रधान के आधीन उस देश में बसे। सेजाक के ३ पुत्र थे, जिनमें से रानोजी के वंशधर भावनगर के ठाकुर, सारंगजी के वंशधर लाठी के ठाकुर और शाहजी के वंशधर पालीटाणा के ठाकुर हैं। वर्त्तमान लाठीनरेश का नाम ठाकुरसाहब सूरसिंहजी है।

पालीटाणा।

लाठी के रेलवे स्टेशन से २४ मील पूर्व धोला जंक्शन है, जहां से उत्तर ७२ मील की एक रेलवे लाईन वाढवान जंक्शन को गई है। धोला के स्टेशन के पास भावनगर के ठाकुर साहब की धर्मशाला है।

धोला जंक्शन से १३ मील (जितलसर जंक्शन से ९३ मील) पूर्व और सिहोर के स्टेशन से ९ मील (भावनगर से १९ मील) पश्चिम सोनगढ़ का रेलवे स्टेशन है। सोनगढ़ गोहेलवार सबडीवीजन का सदर स्थान है। सोनगढ़ से १४ मील दक्षिण एक अच्छी सड़क पालीटाणा कसबे को गई है। * बम्बई हाते के काठियावाड़ देश के गोहेलवार प्रांत में शत्रुंजय नामक प्रसिद्ध पहाड़ी की पूर्वी नेव के पास (२१ अंश, ३१ कला, १० विकला, उत्तर अक्षांश और ७१ अंश, ५३ कला, २० विकला पूर्व देशांतर में) एक देशी राज्य की

* सोनगढ़ से ५ मील पूर्व सिहोर का रेलवे स्टेशन है। यहां से रेलवे शाखा पालीटाणा को गई है।

राजधानी पालीटाणा है। पालीटाणा कसबे से ७० मील दक्षिण पश्चिम सूरत शहर; १०५ मील पूर्व कुछ उत्तर बड़ोदा शहर; १२० मील पूर्वोत्तर अहमदाबाद शहर और लगभग २०० मील दक्षिण कुछ पूर्व बंबई शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पालीटाणा कसबे में १०४४२ मनुष्य थे, अर्थात् ६५८६ हिंदू, १९९७ जैन, १८७८ मुसलमान, २० कृस्तान और १ पारसी।

पालीटाणा में वहां के ठाकुर साहब का महल बना है और स्कूल, अस्पताल, और डाकखाना है।

पालीटाणा का राज्य—पालीटाणा का राज्य काठियावाड़ के गोहेलवार प्रांत में काठियावाड़ के दूसरे दर्जे के राज्यों में से एक है। उस राज्य में ऊख कपास और गल्ले अधिक होते हैं। सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय पालीटाणा राज्य के २८८ वर्गमील क्षेत्रफल म १ कसबा, ८६ गांव, १०४८६ मकान और ४९२७१ मनुष्य थे, अर्थात् ४२९५५ हिंदू, ३५८१ मुसलमान और २७३५ दूसरे। पालीटाणा के राज्य से लगभग २००००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसम से १०३६० रुपया बड़ोदा के गायकवाड़ और जूनागढ़ के नवाब को राज्य कर दिया जाता है। ठाकुरसाहब का फौजी बल लगभग ४५० आदमी का है। पालीटाणा राज्य की शत्रुंजय पहाड़ी का वृत्तांत नीचे देखिए।

पालीटाणा के ठाकुर गोहेल राजपूत हैं। कहते हैं कि सन् १२६० में सेजाक नामक गोहेल राजपूत के आधीन उस जाति के लोग उस देश में बसे। सेजाक के ३ पुत्र थे, जिनमें से बड़े पुत्र रानोजी के वंशधर भावनगर के ठाकुर, सारंगजी के वंशधर लाठी के ठाकुर और तीसरे पुत्र शाहजी के वंशधर पालीटाणा के ठाकुर हैं। ठाकुरसाहब सूरसिंहजी के देहांत होने पर वर्तमान पालीटाणा नरेश ठाकुरसाहब मानसिंहजी, जिनकी अवस्था लगभग २७ वर्ष की है, उत्तराधिकारी हुए।

शत्रुंजय पहाड़ी।

पालीटाणा कसबे से १½ मील पश्चिम पालीटाणा के राज्य में शत्रुंजय

पहाड़ी है। कसबे से पहाड़ी के पास तक सड़क के बगलों में वृक्ष लगे हुए हैं। जैन लोगों की ५ पवित्र पहाड़ियां हैं;—काठियावाड़ में शत्रुंजय और गिरनार; राजपूताने में आबू; मध्य भारत में ग्वालियर और छोटे नागपुर प्रांत के हजारीबाग जिले में पारसनाथ। इन पांचों में शत्रुंजय, जिसका प्रधान देवता आदि नाथ हैं, सबसे अधिक पवित्र है, इस लिये भारतवर्ष के प्रायः सब शहरों के धनी जैन लोग उसके मन्दिरों को सहायता करते आते हैं। और पहाड़ी पर मन्दिरों को बनवाते हैं। शत्रुंजय माहात्म्य १४ सर्ग की पुस्तक है। प्रति वर्ष बहुत से जैन यात्री तथा देखने वाले लोग पहाड़ी पर चढ़ते हैं। यात्री लोग सवेरे पहाड़ी पर चढ़ते हैं और उसी दिन दर्शन या पूजन करके लौट आते हैं; क्योंकि उस पवित्र पहाड़ी पर रसोई बनाना और सोना जैन लोगों के मत में निषेध है। बहुतेरे जैन लोग उस पर भोजन भी नहीं करते। पहाड़ी पर चढ़ने के लिये वहां झंपान, जिसमें ४ कुली लगते हैं, बहुत मिलते हैं।

शत्रुंजय पहाड़ी समुद्र के जल से १९८० फीट ऊंची है। पहाड़ी की चढ़ाई के मार्ग में और खास करके आदिनाथ के मन्दिर के पीछे बहुत सी छोटी कोठरियों तथा ताकों में मार्बुल के तखते पर जोड़े चरणचिन्ह बने हैं, जिनको निर्धन जैनों ने बनवाया था। मार्ग में बेडौल पत्थर की सीढ़ियां हैं। किसी किसी जगह दुरुस्त सीढ़ियां बनी हुई हैं। जगह जगह विश्राम के लिये मकान बने हैं। बहुत जगह पहाड़ी का बगल बहुत खडा है। जमीन से कुछ ऊपर हनूमानजी का एक छोटा मन्दिर है। उस मन्दिर के पास से ऊपर की दो राह गई है,—एक दहिनी ओर पहाड़ी की उत्तरी चोटी को और दूसरी बाईं ओर बीच वाली घाटी से होकर दक्षिणी चोटी को। दहिने की राह से कुछ ऊपर जाने पर एक मुसलमानी पीर का दरगाह मिलता है। हनूमानजी के मंदिर होने से हिंदू लोग और उस दरगाह के होने से मुसलमान लोग उस जैन पहाड़ी को अपने अपने मत का कह कर उसका आदर करते हैं।

पहाड़ी के ऊपर दो चिपटे शिखर हैं। दोनों शिखरों के बीच में एक घाटी है। प्रत्येक शिखर लगभग ३५० गज लंबा है। घाटी और दोनों

शिखर दृढ़ दीवार से घेरे हुए हैं। दीवारों में गोली चलाने योग्य भवांरियां बनी हुई हैं। बगल में फाटक है। घेरे के भीतर अलग अलग के प्रधान मन्दिरों के घेरे के १९ फाटक हैं। उनमें एक एक प्रधान मन्दिर के साथ अनेक छोटे मन्दिर हैं। सब फाटक रात में बंद कर दिए जाते हैं। वह पहाड़ी जैन मन्दिरों का एक शहर है; क्योंकि सिवाय चंद तालावों के फाटक के भीतर मन्दिरों के अतिरिक्त कोई दूसरी मशहूर वस्तु नहीं है। उसमें सैकड़ों जगह जैन मन्दिर बने हुए हैं। शिखर की दीवार पर चढ़ने से दक्षिण ओर शत्रुंजय नदी देख पड़ती है। पहाड़ी का संपूर्ण सिर जैन मन्दिरों से परिपूर्ण है, जिनमें आदिनाथ, कुमारपाल, विमलशाह, संप्रतिराज और चौमुख मन्दिर मुख्य हैं। उनमें से चौमुख मन्दिर सब मन्दिरों से ऊंचा है; वह २८ मील दूर से पहचाना जासकता है।

एक घेरे के मध्य में चौमुख अर्थात् चार मुख वाला जैनमंदिर है। वह मन्दिर २ फीट ऊंचे चबूतरे पर लगभग ६८ फीट लंबा और ५८ फीट चौड़ा बना हुआ है; किंतु उसका अगवास कुछ दूर तक फैला है। मन्दिर के पूर्व मंडप है, जिसके पश्चिम ३१ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा अंतरालय अर्थात् एक कमरा है, जिसके दोनों बगलों में चबूतरे पर एक एक द्वार बने हुए हैं। अंतरालय में १२ स्तंभ लगे हैं। उसकी छत गुंबजदार है। अंतरालय से होकर गर्भगृह में, जो २३ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा है, जाना होता है। उसमें मूर्ति के सिंहासन के कोनों के पास ४ विचित्र खंभे लगे हैं। फर्श से ९६ फीट ऊँचा विमान अर्थात् देवता के रहने का स्थान है। चारो ओर ४ बड़े द्वार हैं; अर्थात् १ अंतरालय में और ३ देवढ़ियों में चबूतरे पर। गर्भगृह की दीवार, जो विमान को थांभती है, बहुत मोटी है; उसमें अनेक छोटी कोठरियां बनी हुई हैं। बड़े मन्दिरों के फर्श में नील, श्वेत तथा भूरा रंग के सुन्दर मार्बुल के टुकड़े जड़े हुए हैं। सिढ़ियां उत्तर बगल पर विमान के ऊपर के मंजिल को गई हैं। गर्भगृह में २ फीट ऊंचा १२ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा श्वेत मार्बुल का सिंहासन, अर्थात् चबूतरा है। सिंहासन पर श्वेत मार्बुल की बनी हुई १० फीट ऊंची *आदिनाथ की ४ मूर्तियां* पल्थी मार-

कर वैठी हैं । गर्भगृह के चारो ओर के द्वारों में से प्रति द्वार की ओर एक मूर्ति का मुख है, इस लिये वह मन्दिर चौमुख मंदिर कहलाता है । मारवाड़ से लाकर मार्बुल उस मन्दिर में लगाया गया था । लोग कहते हैं कि इस मन्दिर में १२८ मूर्तियां हैं । वहुत सी मूर्तियों के भौओं और छातियों, पर वेश कीमती रतन और बंधाओं, केहुनियों, ठेहुनों तथा सिर के मुकट पर सोने के पत्तर जड़े हुए हैं । उस घेरे में चौमुख मन्दिर के अतिरिक्त अन्य वहुत छोटे मन्दिर हैं।

ऐसा प्रसिद्ध है कि इस घेरे के भीतर के कई मन्दिर राजा विक्रम के समय में बने थे; किंतु यह नहीं निश्चय होता है कि वह उज्जैन का विक्रम अथवा लगभग सन् ५०० ईस्वी का हर्ष विक्रम या कोई अन्य विक्रम था.। लेखों से विदित होता है कि संवत् १६७८ (सन् १६१९ ई०), सुलतान नूरुद्दीन जहांगीर, प्रिंस सुलतान खुशरू और प्रिंस खुर्रम के समय में, शनिवार, वैशाख सुदी १३, को सोमजी और उसकी स्त्री रजाल देवी ने आदिनाथ के चार मुख वाले मन्दिर को वनवाया; अर्थात् अहमदाबाद के सेवा सोमजी ने मन्दिर को वर्त्तमान शकल में फिर बनवा दिया।

वैज्ञानिक लोग अनुमान करते हैं कि शत्रुंजय के मन्दिरों में से चंद मंदिर ११ वीं शदी के हैं। वाकी सब उसके पीछे से अब तक के बने हुए हैं, किन्तु उनमें से बहुत मन्दिर और प्रसिद्ध मन्दिरों में से चंद मन्दिर १०० वर्ष के इधर के बने हुए हैं।

एक स्थान में इतने मन्दिरों का जमाव हिन्दू अथवा बौद्ध लोगों के किसी तीर्थ में नहीं है। यद्यपि काशी और भुवनेश्वर में हिन्दुओं के वहुत से मन्दिर और सांची, पेशावर इत्यादि में बौद्धों के वहुत स्तूप और विहार हैं; किन्तु वे छितराए हुए हैं; अर्थात् शहर के समान इकट्ठा नहीं हैं । जैन लोग प्रायः करके अपने मन्दिरों को इकट्ठा एक झुण्ड में बनवाते हैं।

शत्रुंजय पर सन्नाटा रहता है, अर्थात् निर्जन स्थान है । वहां कभी कभी प्रातःकाल में बहुत थोड़े समय तक घंटी या नगाड़े का शब्द सुन पड़ता है और कोई विशेष दिनों में बड़े मन्दिरों से गीत का शब्द । जैन मत के चंद साधु

वहां के मन्दिरों में सोते हैं और वहां अपनी नित्यक्रिया करते हैं और चंद नोकर, जो बड़े परिश्रम और सावधानी से मन्दिरों और स्थानों को साफ करते हैं तथा वहांके कबूतरो को खिलाते हैं, वहां सर्वदा निवास करते हैं। यात्री लोग पूजा अथवा दर्शन करके उसी दिन लौट जाते हैं; क्योकि इस पवित्र पहाडी पर, जो देवताओ का शहर है, सर्व साधारण को रसोई बनाना, शयन करना तथा भोजन करना भी निषेध है, किन्तु बहुतेरे लोग अपने साथ खाने की वस्तु ऊपर ले जाते हैं। मन्दिरो पर तथा उसके आस पास बहुत से कबूतरों, पडुकों तथा रुन्खियों के झुण्ड रहते हैं। इनके अलावे मयूर इत्यादि पक्षी भी वहां हैं।

जैनधर्म–पुराणों में किसी किसी जगह जैनधर्म का वृत्तांत मिलता है। जैनी लोगों के नीचे लिखे हुए २४ तीर्थंकर अर्थात् देवता हैं,—१ ऋषभनाथजी, जिनको आदिनाथ भी कहते हे, २ अजितनाथ, ३ संभवनाथ, ४ अभिनन्दननाथ, ५ सुमतिनाथ, ६ पद्मप्रभनाथ, ७ सुपार्श्वनाथ, ८ चंद्रप्रभनाथ, ९ पुष्पदन्तनाथ, १० शीतलनाथ, ११ श्रेयांशनाथ, १२ वासुपूज्यनाथ, १३ विमलनाथ, १४ अनंतनाथ, १५ धर्मनाथ, १६ शांतिनाथ, १७ कुंथुनाथ, १८ अरनाथ, १९ मल्लीनाथ, २० सुव्रतनाथ, २१ नमिनाथ, २२ नेमीनाथ, २३ पार्श्वनाथ और २४ वां महावीर स्वामी। जैनी लोगों के मन्दिरों में इन्ही तीर्थंकरो की मूर्त्तिया रहती हैं। किसी मन्दिर म इनमें से चद की मूर्तियां और किसी में चौबीसो तीर्थंकरों की प्रतिमा हैं।

जैनियों के ग्रन्थ में लिखा है कि चौबीसवा तीर्थंकर-महावीर का देहान्त विक्रमीय संवत् से ४७० वर्ष (सन् ईस्वी से ५२७ वर्ष) पहिले हुआ था, अर्थात् गौतम बुद्ध क समय म महावीर विद्यमान थे। जैनी लोग कहते हैं कि २३ वां तीर्थंकर पार्श्वनाथ से २५० वर्ष पीछे महावीर का देहान्त हुआ था।

जैनी लोगों की पुस्तकों में लिखा है कि महावीर राजा सिद्धार्थ के पुत्र थे। राजा ने पुत्र का नाम वर्द्धमान रक्खा था और उनको महावीर की पदवी दी थी। महावीर की प्रियदर्शना नामक पुत्री का व्याह कुमार जमाली से हुआ था। महावीर ने अपने माता पिता की मृत्यु होजाने के पश्चात् अपने

ज्येष्ठ भ्राता नंदिवर्द्धन को राज्य भार देकर यतीधर्म का आश्रयण किया और १२ वर्ष इन्द्रियों का संयम करके जिनत्व को प्राप्त किया। महावीर के धर्म उपदेश से मुग्ध होकर १००००० लोग श्रावक अर्थात् गृहस्थ जैन और १४००० लोग श्रमण अर्थात् विरक्त जैन होगए। उनके ११ प्रधान शिष्य महा पंडित थे। ७२ वर्ष के वय में महावीर का देहांत हुआ। बहुत लोगों का मत है कि बौद्ध धर्म के भारतवर्ष से उठ जाने पर महावीर कृत जैनधर्म का प्रचार हुआ।

जैनियों के मत में प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शाब्द ये ४ प्रमाण हैं। उनके मत में जगत् के मूल तत्व ९ हैं—१ जीव, २ अजीव ३ पुण्य, ४ पाप, ५ आश्रव (कर्म का बंधन). ६ संवर, ७ बंध, ८ निर्जरण (कर्म का त्याग), और ९ वां मुक्ति (अष्ट कर्मों का क्षय)। कुछ लोग इनमें से ७ तत्वों को मानते हैं।

नैयायिक लोग अनुमान प्रमाण से कहते हैं कि पृथ्वी आदि सब वस्तु का कोई कर्त्ता है; क्योंकि जब पदार्थ है तब उसका कर्ता अवश्य होगा; किन्तु जैनीलोग इस रूप से अनुमान नहीं करते; उनके मत में जगत् की उत्पत्ति नहीं है; न कोई ईश्वर है। उनके मत में संसारी और मुक्त दो प्रकार के जीव हैं। वे लोग अपने तीर्थंकरों और सिद्ध देवताओं को मानते हैं।

बौद्धों के समान जैनियों में भी अहिंसा परम धर्म है। किसी प्राणी का वध नहीं करना, यही जैन धर्म की सारनीति है। जानवरों पर जैन लोगों की बड़ी दया है। उन्हीं के उद्योग से स्थान स्थान पर जानवरों के अस्पताल तथा पशुशालाएं बनी हुई हैं। बहुत बातों में बौद्धों और जैनों का मत मिलता है। बौद्धों के समान जैनी लोग भी ईश्वर की स्थिति को नहीं स्वीकार करते हैं। उनके मत में मंदिर बना कर जैन तीर्थंकर की प्रतिमा स्थापित करना उत्तम कर्म है, चाहे प्रतिमाओं की पूजा हो अथवा न हो। उन्हों ने बहुत से उत्तम मन्दिर, जिनमें मार्बुल का बहुत काम है, बनवाये हैं। बहुतेरी जैन प्रतिमाओं के भौंहो पर और छाती के बीच में चांदी अथवा सोने पर हीरे जड़े रहते हैं, और किसी किसी के कंधाओं, केहुनियों, ठेहुनों तथा सिर के मुकुट पर सोने के पत्तर जड़े रहते हैं।

जैनियों में श्वेतांबर और दिगंबर दो प्रकार होते हैं। श्रावक श्वेतां-

धरों में ओसवाल और पोरवाल जाति के वनिये और दिगंबरों में अग्रवाला और सरावगी जाति के वनिये बहुत हैं। दिगंबर जैनियों की देव मूर्तियों की देह में वस्त्र का चिन्ह नहीं रहता। श्वेतांबर लोग अपने तीर्थंकरों की पूजा करते हैं और अपने मतवालों का बड़ा सन्मान करते हैं। जैन लोग उदारता, सुशीलता, पुण्य और तप इन ४ को मुख्य धर्म मानते हैं।

जैन श्रमणों का कर्तव्य कार्य आंठवां तपस्या निचे लिखे हुये ५ कर्म हैं,—(१) चैत्य अर्थात् देवमंदिर में पाठ करना, (२) साधुओं की वंदना करना, (३) वार्षिक परिभ्रमण करना, (४) परस्पर स्वधर्म की चर्चा करना और (५) इंद्रियों का दमन करना। श्रमण लोग क्षमाशील, संग रहित, केश संस्कार से रहित और भिक्षान्न भोजी होते हैं। वे लोग इसलिये अपने मुख पर पतला कपड़ा दिए रहते हैं कि उड़ने वाला कोई कीड़ा मुख में न पड़ जाय। वे एक झाड़ू अपने हाथ में लिये रहते हैं; उसीसे जगह बहार कर जीवों को बचा कर बैठते हैं तथा भूमि को बहार कर मल मूत्र त्याग करते हैं। उनमें बहुतेरे लोग ऐसे होते हैं कि जीव हिंसा के भय से न तो रसोई बनाते हैं न किसी को अपनी रसोई बनाने की आज्ञा देते हैं, जो लोग अपने निमित्त रसोई बनाते हैं, उन्हींसे वे मांग कर उसको भोजन करते हैं। वे मांड, और चावल धोआ हुआ पानी से जल का काम निबाह लेते हैं, क्योंकि जलमें सूक्ष्म जीव रहते हैं, मांड में कोई जीव नहीं है।

जैन लोग सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १४१६६३८ थे, वे लोग राजपुताना और पश्चिमी भारत में बहुत हैं।

भावनगर।

सोनगढ़ के रेलवे स्टेशन से ९ मील पूर्व सिहोर का रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से १½ मील दक्षिण सिहोर कसबा है, जो एक समय राजधानी था। सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय सिहोर कसबे में १०००५ मनुष्य थे; अर्थात् ७६७८ हिंदू, १४१३ मुसलमान, ९१३ जैन और १ क्रस्तान। सिहोर में नई एक जैन मन्दिर बने हुए हैं।

सिहोर के रेलवे स्टेशन से १४ मील (धोला जंक्शन से ३२ मील और जितलसर जंक्शन से ११२ मील) पूर्व भावनगर का रेलवे स्टेशन है। वंबई हाते के काठियावाड़ देश में काठियावाड़ प्रायद्वीप के पूर्वी किनारे के पास (२१ अंश, ४५ कला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, १२ कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) कांवे की खाड़ी पर गुजरात के भड़ौंच शहर से लगभग ५० मील पश्चिम कुछ उत्तर एक देशी राज्य की राजधानी भावनगर है, जिसको लोग भाऊनगर भी कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय भावनगर कसबे में ५७६५३ मनुष्य थे, अर्थात् ३१११६ पुरुष और २६५३७ स्त्रियां। इनमें ४२०२१ हिंदू, १०२६७ मुसलमान, ४७६१ जैन, ३०८ क्रस्तान और २९६ पारसी थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ६४ वां और वंबई के गवर्नर के आधीन के देशी राज्यों में पहिला कसबा है।

भावनगर में कोई पुरानी वस्तु दर्शनीय नहीं है। हाल में बहुत सुन्दर इमारतें बनी हैं। यहां ठाकुर साहब का महल, कई एक सुन्दर बाग, हौज, सूत कातने और कपड़े बिनने के मिल (कल कारखाने), एंजन के छापेखाने, १ बिमारखाना, पानी का कल, अस्पताल और कई स्कूल हैं। भावनगर में बड़ी तिजारत होती है। यहां के बंदरगाह से बहुत रुई गांठें बांध कर काठियावाड़ तथा अन्य देशों में भेजी जाती है।

भावनगर का राज्य–काठियावाड़ के पूर्वी किनारे के पास भावनगर का राज्य है। राज्य में कपास, नमक और गल्ले पैदा होते हैं। तेल, कपड़े और पीतल तथा तांबे के बर्तन तैयार होते हैं। राज्य में अनेक बंदरगाह हैं, जिनमें से करोरों रुपये के माल जाते आते है। ११७ स्कूलों में लगभग ६३०० लड़के पढ़ते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय भावनगर राज्य के २८६० वर्गमील क्षेत्रफल में ६५९ गांव और ४००३२३ मनुष्य थे, अर्थात् ३४६०९४ हिंदू, ३७०४० मुसलमान और १७१८९ अन्य।

काठियावाड़ में भावनगर का राज्य प्रथम दर्जे के राज्यों में से एक तथा

सब राज्यों में से अधिक प्रसिद्ध है। वहां के ठाकुर साहब को अंगरेजी सरकार की ओर से ११ तोपों की सलामी मिलती है। राज्य का सैनिक बल ८५ पुलिस के सवार, ५०० पैदल और २७६५ अन्य मनुष्य हैं। राज्य से लगभग ३,४००००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमें से १२८०६० रुपया अंगरेजी गवर्नमेंट को और १९४४९० रुपया बड़ोदा के गायकवाड़ और जूनागढ़ के नवाब को दिया जाता है।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि लगभग सन् १२६० में गोहेल राजपूत अपने प्रधान सेजाक के आधीन उस देश में बसे। सेजाक के ३ पुत्र थे;—रानोजी, सारंगजी और शाहजी, जिनमें से रानोजी के वंशधर भावनगर के, सारंगजी के वंशधर लाठी के और शाहजी के वंशधर पालीटाणा के ठाकुर साहब हैं। सन् १७२३ में भाऊसिंह ने भाऊनगर अर्थात् भावनगर को बसाया। भाऊसिंह के पुत्र रावल अखेरजी की मृत्यु होने पर उनके पुत्र वख्तसिंह सन् १७७२ में राज्य के उत्तराधिकारी हुए। भाऊसिंह, रावल अखेरजी और वख्तसिंह ने देश की सौदागरी की उन्नति करने और समुद्र के डकैतों के विनाश करने में बड़ा परिश्रम किया। वख्तसिंह ने भावनगर राज्य को बहुत बढ़ाया।

भावनगर के वर्त्तमान नरेश ठाकुर साहब सर तख्तसिंहजी यशवंतसिंहजी जी. सी. एस. आई., जिनका जन्म सन १८५८ में हुआ था, राजकोट के राजकुमार कालिज में पढ़े हैं; उनके नाबालिग रहने के समय एक अंगरेजी अफसर और पुराना दीवान गौरीशंकर सी. एस. आई. ने राज्य का प्रबंध किया था। भावनगर के वर्त्तमान ठाकुर साहब ने राजकोट के कालिज का एक बाजू और मिसपल के मकान बनाने के लिये १००००० रुपया और खैराती फंड में ५०००० रुपया दिया था।

लिंबड़ी।

भावनगर के रेलवे स्टेशन से ३२ मील पश्चिम धोला जंक्शन और धोला जंक्शन से ५५ मील उत्तर लिंबड़ी का रेलवे स्टेशन है। काठियावाड़ के

झालावार प्रांत में एक छोटी नदी के उत्तर किनारे पर एक देशी राज्य की राजधानी लिंबड़ी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय लिंवड़ी कसबे में १३४९७ मनुष्य थे; अर्थात् ८६३१ हिंदू, ३४२७ जैन, १४२७ मुसलमान, ९ पारसी और ३ क्रस्तान।

लिंवड़ी में ठाकुर साहब का सुन्दर महल बना है और एक अस्पताल, एक स्कूल और ठाकुर साहब की कचहरियां हैं।

लिंवड़ी का राज्य—काठियावाड़ के झालावार विभाग में लिंवडी राज्य है। राज्य की भूमि समतल है। एक छोटी नदी राज्य में होकर बहती है। राज्य में कपास और गल्ले होते हैं। सन् १८८३ में राज्य के १७ स्कूलों में १३१७ लड़के पढ़ते थे।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय लिंवड़ी राज्य के ३४४ वर्गमील क्षेत्रफल में १ कसवा, ४३ गांव और ४३०३३ मनुष्य थे, अर्थात् ३३५५६ हिंदू, ४६३२ मुसलमान और ४८७५ अन्य।

लिंवड़ी का राज्य काठियावाड़ के दूसरे दर्जे के राज्यों में से एक है। वहांके ठाकुर साहब झाला राजपूत हैं। उनको ९ तोपों की सलामी मिलती है। वर्त्तमान लिंवड़ी नरेश ठाकुर साहब सर यसवंतसिंहजी फतहसिंहजी के. सी. आई. ई राजकोट के राजकुमार कालिज में पढ़े हैं। सन् १८७६ में सवालिग होने पर उनको राज्य का पूरा अधिकार मिल गया। सन् १८८७ में उनको के सी. आई ई. की पदवी मिली। लिंवड़ी के राज्य से २६४००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमें से अंगरेजी गवर्नमेंट और जूनागढ़ के नवाब को ४५५२० रुपया राज्यकर दिया जाता है। उनका सैनिक वल १६० आदमी का है।

———o———

उन्तीसवां अध्याय।

(बंबई हाते में) पाटन, राधनपुर, बीसनगर, बाड-नगर, सिद्धपुर, पालनपुर, (राजपुताने में) आबू पहाड और सिरोही।

पाटन।

लिंबडी के रेलवे स्टेशन से १७ मील उत्तर बाढ़वान जंक्शन, बाढ़वान से ३९ मील पूर्वोत्तर वीरम गांव जंक्शन और वीरमगांव से ४१ मील पूर्वोत्तर (अहमदाबाद जंक्शन से ४३ मील उत्तर) महसाना में रेलवे का जंक्शन है। महसाना से २७ मील दक्षिण और अहमदाबाद से १६ मील उत्तर कलोल का रेलवे स्टेशन है, जिससे १४ मील पश्चिम बड़ोदा राज्य में काडी कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय १६३३१ मनुष्य थे।

महसाना से रेलवे की एक लाइन पश्चिमोत्तर पाटन को, दूसरी लाइन पूर्वोत्तर बीसनगर, बाडनगर होकर खेरालू को; तीसरी लाइन उत्तर बाद पूर्वोत्तर सिद्धपुर होकर अजमेर इत्यादि को, चौथी लाइन दक्षिण पूर्व अहमदाबाद इत्यादि को और पांचवी लाइन दक्षिण पश्चिम वीरमगांव, बाढ़वान, बंकानेर, राजकोट, और जितलसर जंक्शन होकर पोरबंदर तथा विरावल बन्दर को गई है। इनमें से महसाना से पाटन, खेरालू और वीरमगांव जाने वाली ये ३ लाइनें बड़ोदा के महाराज की बनवाई हुई हैं।

महसाना जंक्शन से २५ मील पश्चिमोत्तर पाटन का रेलवे स्टेशन है। गुजरात देश के बड़ोदा राज्य के काडी विभाग में (२३ अंश, ५१ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, १० कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) सरस्वती नदी के किनारे पर सबडिवीजन का सदर स्थान पाटन कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय पाटन कसबे में ३२६४६ मनुष्य थे; अर्थात् १६७२४ पुरुष और १५९२२ स्त्रियां। इनमें २२७८६ हिंदू, ५८९९ मुसलमान, ३९२९ जैन, १६ पारसी, १० एनिमिष्टिक अर्थात् जंगली

जातियां और ६ कृस्तान थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह बड़ोदा के राज्य में दूसरा कसबा है।

कसबे के बगलों में मोटी दीवार बनी हुई है। पाटन में बड़ोदा के महाराज की कचहरी, अस्पताल, कई छोटे स्कूल, कई एक देवमंदिर, और १०८ से अधिक जैन मंदिर हैं। जैनों के पुस्तकालयों के लिये अब तक पाटन प्रसिद्ध है। कसबे में तलवार, बर्छी, छुरी, कपड़े, रेशमी वस्त्र और मिट्टी के बर्तन बहुत बनते हैं।

इतिहास—पाटन पहिले अनहिलवाड़ा करके प्रख्यात था। यह गुजरात के सबसे अधिक पुराने और सबसे अधिक प्रसिद्ध कसबों में से एक है। अनहिलवाड़ा सन ७४६ से सन् १२९४ तक तोमर राजपूतों की राजधानी था; मुसलमानों के अधिकार के समय भी यह लगातार प्रसिद्ध बना रहा; अब तक कसबे के आसपास पुरानी कारीगरी की बहुत सी निसानियां देखने में आती हैं। सन् १०२४ में गजनी के महमूद ने सोमनाथ को जाने के समय अनहिलवाड़ा को लेलिया था और १३ वीं शदी के आरंभ में दिल्ली के बादशाह कुतबुद्दीन ने अनहिलवाड़ा के राजा भीमदेव को परास्त किया; किन्तु सन् ७४६ से सन् २९७ तक अनहिलवाड़ा का राज्य राजपूत राजाओं के अधिकार में रहा। सन् १२९७ में मुसलमानों ने अनहिलवाड़ा के राज्य को लेलिया। नया पाटन कसबे का बड़ा भाग महाराष्ट्रों का बनाया हुआ है।

राधनपुर।

पाटन के रेलवे स्टेशन से लगभग ५० मील पश्चिम (खारागोड़ा के रेलवे स्टेशन से ४० मील उत्तर) २३ अन्श, ४९ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७१ अन्श, ३८ कला, ४० विकला पूर्व देशांतर में बंबई हाते के पालनपुर एजेंसी में देशी राज्य की राजधानी राधनपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय राधनपुर कसबे में १४१७५ मनुष्य थे; अर्थात् ६७२२ हिंदू, ४६६० मुसलमान और २७९२ जैन।

राधनपुर कसबे की चारो ओर १५ फीट ऊंची और ८ फीट मोटी दीवार है। दीवार में भर्वारियां बनी हुई हैं; चारो ओर ८ फाटक हैं। शहर पनाह के भीतर का किला, जिसमें राधनपुर के नवाब रहते हैं, दीवार से घेरा हुआ है। कसबे में अस्पताल और स्कूल बना है और बड़ी सौदागरी होती है। रुई, गेंहू, चना इत्यादि वस्तु राधनपुर से अन्यत्र भेजी जाती है और चीनी, चावल, तंबाकू, कपड़ा और हाथीदांत इत्यादि चीजें अन्य जगहों से वहां आती हैं।

राधनपुर का राज्य—पालनपुर एजेंसी में राधनपुर प्रथम दर्जे का राज्य है। देश समतल है। ३ छोटी नदियां, जो ग्रीष्म काल में सूख जाती हैं, राज्य में होकर बहती हैं। कूपों का पानी १० फीट से ३० फीट तक नीचे है। कच्छ के नमकदार रन के पास होने के कारण गहिड़े कूपों का पानी खारा और कम गहिड़े कूपों का पानी मीठा होता है। सन् १८८३ में राज्य के ९ स्कूलों में ५७२ विद्यार्थी पढ़ते थे।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय राधनपुर राज्य के ११५० वर्गमील क्षेत्रफल के २ कसबे और १६६ गावों में ९८१२९ मनुष्य थे; अर्थात् ८०५८८ हिंदू, ११७६७ मुसलमान और ५७८४ अन्य। राधनपुर के राज्य से लगभग ६०००० रुपया मालगुजारी आती है। वहां के नवाब को अंगरेज महाराज की ओर से ११ तोपों की सलामी मिलती है। इनका सैनिक बल लगभग २५० सवार और ३६० पैदल है।

इतिहास—राधनपुर का राज्य बाबी खांदान के पठान के अधिकार में है। वह पहिले बाघेलों के अधिकार के समय लुनवाड़ा कहलाता था, जो पीछे गुजरात के मुसलमानों के आधीन फतहखां बलूची के अधिकार में हुआ। कहा जाता है कि उसी खांदान के राधनखां के नाम से उसका राधनपुर नाम पड़ा।

पहला बाबी १६ वीं शदी में हुमायूं के साथ हिंदुस्तान में आया। १७ वीं शदी में शाहजहां के राज्य के समय बहादुरखां बाबी थारद का फौजदार बनाया गया। उसका पुत्र शेरखां बाबी, जो गुजरात देश का जानकार था,

शाहजादे मुराद वखस की सहायता देने के लिये गुजरात में भेजा गया। उ॰ सका पुत्र जाफरखां ने सन् १६९३ में राधनपुर, सामी, मुंजपुर और तेरवाड़ा की फौजदारी को प्राप्त किया। वह सन् १७०४ में बीजापुर का और सन् १७०६ में पाटन का गवर्नर बनाया गया। उसका पुत्र खांजहां राधनपुर, पाटन, वाड़नगर, बीसनगर, बीजापुर, खेराल् इत्यादि का गवर्नर हुआ। खांजहां के पुत्र कमालुद्दीनखां ने औरंगजेब के मरने के पश्चात् अहमदाबाद के सूबे को मुगलों से छीन लिया। उसी की हुकूमत के समय उस खांदान के शेरखां वाबी ने जूनागढ़ के राज्य पर अपना अधिकार कर लिया, जिसके वंशधर जूनागढ़ के वर्त्तमान नवाब हैं। सन् १७५३ में रघुनाथराव पेशवा और दामाजी गायकवाड़ ने अहमदाबाद पर आक्रमण करके कमालुद्दीन को परास्त किया। उस समय उन्होंने उसको राधनपुर, सामी, मुंजपुर, पाटन, बीसनगर, वाड़नगर, बीजापुर, थराड और खेरालू का जागीरदार बनाया। उसके पीछे दामाजी ने कमालुद्दीन के उत्तराधिकारियों से राधनपुर, सामी और मुंजपुर को छोड़ कर सब जागीरों को छीन लिया। पीछे राधनपुर अंगरेजी गवर्नमेन्ट के आधीन हुआ। सन् १८१६ और १८२० की महामारी से राधनपुर कसवे के लगभग आधे निवासी मर गए। सन् १८२२ में १७००० रुपया राधनपुर का राज्य कर मुकरर हुआ, जिसको अंगरेजी सरकार ने सन् १८२९ में माफ कर दिया। इस समय नवाब महम्मद बिसमिल्लाखां, जिनकी अवस्था ५९ वर्ष की है, राधनपुर के नवाब हैं।

बीसनगर।

महसाना जंक्शन से १३ मील पूर्वोत्तर बीसनगर का रेलवे स्टेशन है। बड़ोदा राज्य के कड़ी विभाग में सबडिवीजन का सदर-स्थान बीसनगर एक कसबा है, जिसको १२ वीं या १३ वीं सदी में विसलदेव ने बसाया था।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बीसनगर कसबे में २१३७६ मनुष्य थे; अर्थात् १८५३० हिन्दू, १६०६ मुसलमान, १२३८ जैन और २ पारसी।

बीसनगर ६ प्रकार के नागर ब्राह्मणों में से १ का प्रधान स्थान है, इसमें

में बहुत नागर ब्राह्मण स्वामीनारायण की संप्रदाय के हैं। स्वामी नारायण सन् १८२५ ई० के पीछे तक थे। गुजरात और काठियावाड़ तथा बम्बई में स्थान स्थान पर उनके मन्दिर बने हुए हैं।

वाडनगर।

वीसनगर से ८ मील (महसाना जंक्शन से २१ मील) पूर्वोत्तर वाडनगर का रेलवे स्टेशन है। बड़ोदा राज्य के काडी विभाग में वाडनगर एक पुराना कसबा है, जो एक समय बहुत प्रसिद्ध था।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय वाडनगर में १५९४१ मनुष्य थे, अर्थात् १४२७६ हिंदू, १०३५ मुसलमान, और ६३० जैन।

वाडनगर में चन्द दिलचस्प खंडहर हैं। वहां के हाटकेश्वर महादेव का मंदिर दर्शनीय है। वाडनगर नागर ब्राह्मणों का जो गुजरात और काठियावाड़ में माननीय हैं, प्रधान धर्म स्थान है।

सिद्धपुर।

महसाना जंक्शन से १३ मील उत्तर ऊंझा का रेलवे स्टेशन है। बड़ोदा राज्य के काडी विभाग में ऊंझा एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ११८८७ मनुष्य थे।

ऊंझा से ८ मील (अहमदाबाद से ६४ मील) उत्तर और अजमेर शहर से २४१ मील दक्षिण पश्चिम सिद्धपुर का रेलवे स्टेशन है। बड़ोदा के राज्य के काडी विभाग में (२३ अंश, ५५ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, २६ कला पूर्व देशांतर में) सरस्वती नामक नदी के किनारे पर सिद्धपुर एक पुराना कसबा और प्रसिद्ध तीर्थ है। इसी में कपिलदेवजी का जन्म हुआ था। उसको लोग मातृगया कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय सिद्धपुर कसबे में १६२२४ मनुष्य थे, अर्थात् १२०५३ हिंदू, ३६६० मुसलमान, ५०० जैन ६ क्रस्तान और ५ पारसी।

रेलवे स्टेशन के पास बड़ोदा के महाराज की धर्मशाला है। स्टेशन से १

मील सिद्धपुर कसबा है। कसबे के पास सरस्वतीनदी बहती है, जो राजपूताने में आबू पहाड़ी से निकल कर पालनपुर, राधनपुर के राज्य और बड़ोदा राज्य के पाटन सबडिवीजन होकर १०० मील से अधिक दक्षिण-पश्चिम बहने के पश्चात् कच्छ के रन में गिरती है। वह नदी कई मीलों तक पृथ्वी के गर्भ में बह करके राधनपुर के राज्य में प्रवेश करने के पहिले फिर प्रकट होजाती है। नदी में सब जगह हेल जाने लायक पानी है। सिद्धपुर के पास नदी के किनारे पर पक्का घाट बना है। गर्मी के दिनों में नदी में थोड़ा पानी बहता है। लोग पानी में बैठ कर स्नान करते हैं। सिद्धपुर के पास सरस्वती के किनारों पर और उसके जल में मैड़कों ढोंड़ सर्प रहते हैं। वे न किसी से डरते हैं और न किसी को काटते हैं; उनमें से कोई कोई स्नान के समय आदमी की देह में भी लग जाते हैं।

सिद्धपुर में बड़ोदा के महाराज की कचहरियां, पुलिस, स्कूल, और अस्पताल हैं। वहां सदावर्त लगा है, धर्मशाले बने हैं और हजारों घर पंडे बसते हैं। रणछोड़जी इत्यादि देवता के बहुत से मन्दिर हैं। यहां सरस्वती नदी, रुद्रमहालय, गोविन्दराव तथा माधवराव का मन्दिर और बिंदुसर ये ४ स्थान प्रधान हैं;—सरस्वती के किनारे से थोड़ही दूर पर कसबे में रुद्र-महालय का खंडहर है। यहां पश्चिमी भारत के प्रसिद्ध पुराने मंदिरों में से एक रुद्रेश्वर महादेव का मंदिर था, जिसको लगभग सन् १३०० ईस्वी में अल्लाउद्दीन ने तोड़ दिया। पंडे लोग कहते हैं कि उस समय सिरोही के राजा शिवलिंग को अपनी राजधानी में लेगए; वहां उनका नाम शरणेश्वर पड़ गया, जो वहां अब तक विद्यमान हैं। रुद्रमहालय में अब केवल उस मन्दिर का टूटा हुआ फाटक है। फाटक से बाहर मुसलमानों के अधिकार में उस समय का एक छोटा कुण्ड और कोठरी के समान दो तीन छोटे खाली मन्दिर हैं। कसबे के बाहर बिंदुसर के मार्ग में एक मन्दिर में गोविंदराव और दूसरे में माधवराव की सुन्दर मूर्ति है।

सिद्धपुर कसबे से १ मील दूर बिंदुसर है। यहां पहुंचने से पहिलेही एक स्थान पर एकही पंक्ति में शिखर दार ३ नये मन्दिर मिलते हैं [illegible]

एक में शेषशायी भगवान, दूसरे में लक्ष्मीनारायण और तीसरे में राम, लक्ष्मण और सीता हैं। दूसरे स्थान में वल्लभकुल वालों के मंदिर के निकट एक कोठरी में कर्दम ऋषि और देवहूति की छोटी मूर्ति है। तीसरे स्थान में विंदुसर के समीप ज्ञानवापी नामक छोटी बावली और छोटे मन्दिर में सिद्धेश्वर महादेव हैं। लगभग ४० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा विंदुसर नामक छोटा पोखरा है। उसके चारो बगलों पर नीचे पत्थर की सीढ़ियां और ऊपर पत्थर का फर्श है और दक्षिण के किनारे के पास ३ छोटे मंदिर हैं; जिनमें से एक में महर्षि कर्दम और देवहूति; दूसरे में कपिल मुनि और तीसरे में गया गदाधरजी हैं। विंदुसर के किनारे पर बहुतेरे यात्री, जिनकी माता मर-गई है, पिंडदान करते हैं। विंदुसर के पासही अल्पासरोवर नामक बहुत बड़ा तालाब है। उसके चारों बगलों पर पक्के घाट बने हुए हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(वनपर्व, २९८ वां अध्याय) राजा युधिष्ठिर ने कहा कि अब हमलोग मरु देश के उत्तम काम्यक वन में जा कर विंदुसर नामक तालाब के तट पर विहार करेंगे। उसके पश्चात् पांडव लोग काम्यक वन में चलेगए।

वामनपुराण—(३५ वां अध्याय) मातृ तीर्थ में जाकर स्नान करने से प्रजा की वृद्धि होती है।

श्रीमद्भागवत—(पहिला स्कंध, तीसरा अध्याय) विष्णु भगवान के २४ अवतार हैं;—(१) सनत्कुमार, (२) वाराह, (३) यज्ञ, (४) हयग्रीव, (५) नर नारायण, (६) कपिलदेव, (७) दत्तात्रेय, (८) ऋषभ, (९) पृथु, (१०) मत्स्य, (११) कच्छ, (१२) धन्वंतर, (१३) मोहिनी, (१४) नृसिंह, (१५) वामन, (१६) परशुराम, (१७) व्यास, (१८) रामचंद्र, (१९) कृष्ण, (२०) नारद, (२१) हरि, (२२) हंस, (२३) बुद्ध और (२४) कल्की।

(तीसरा स्कंध, २१ वां अध्याय) ब्रह्माजी ने कर्दम ऋषि से कहा कि तुम सृष्टि रचो। ऋषि ने सतयुग में सरस्वती नदी के किनारे पर जाकर विवाह के हेतु हजार वर्ष तक तपकिया। भगवान ने प्रकट होकर कहा कि हे महर्षि! ब्रह्मा का पुत्र मनु ब्रह्मावर्त में बस कर साती द्वीप का राज्य करता है।

वह परसों दिन यहां आकर तुमको अपनी पुत्री देजायगा। मै तुम्हारे घर जन्म लूंगा। भगवान के कहे हुए दिन में राजा मनु अपनी पत्नी तथा पुत्री के साथ रथ में बैठे हुए बिंदुसर के पास कर्दम मुनि के आश्रम में आए। भगवान ने कर्दम ऋषि के वरदान देने के समय दया करके अश्रुबिंदु गिराए थे; उसी दिन से उस स्थान का नाम बिंदुसर होगया था। (२२ वां अध्याय) राजा मनु और उनकी पत्नी शतरूपा ने अपनी पुत्री देवहूती को महर्षि कर्दम को समर्पण कर दिया। (२३ वां अध्याय) कर्दम ने अपने विहार करने के लिये योग बल से इच्छानुसार भूमंडल में भ्रमण करने वाला एक उत्तम विमान प्रकट किया। देवहूती ने पति की आज्ञा से सरस्वती के शिवसरोवर में स्नान किया। सरोवर से १००० कन्या निकल कर देवहूती की दासी बनीं। महा योगी कर्दमजी अपनी भार्या के सहित विमान में बैठ संपूर्ण भूमंडल में भ्रमण करके अपने आश्रम में आए। देवहूती को ९ कन्या उत्पन्न हुईं। (२४ वां अध्याय) कुछ दिनों के पश्चात् देवहूती के गर्भ से भगवान कपिलजी ने जन्म लिया। कर्दमजी ने ब्रह्माजी की आज्ञानुसार मरीचि आदि मुनीश्वरों को अपनी नवो कन्या देदीं। उसके पीछे वह कपिलदेवजी की प्रदक्षिणा करके वहां से चले गए। (२५ वां अध्याय) कपिलदेवजी ने बिंदुसरोवर पर बस कर अपनी माता को ज्ञान उपदेश दिया। (३३ वां अध्याय) वह देवहूती को आत्मगति दिखा कर उनसे आज्ञा ले वहां से ईशान कोण की ओर (गंगासागर) में चले गए। वहां समुद्र ने उनको रहने का स्थान दिया। अब तक कपिलदेवजी त्रिलोक की शांति के निमित्त योग धारण करके उसी स्थान पर विराजते हैं। देवहूती सरस्वती के तीर पर वास करने लगी और थोड़ेही काल में अनन्य गति को पहुंच गई। वह आश्रम सिद्धपद (सिद्धपुर) नाम से विख्यात हो गया।

पद्मपुराण—(उत्तर खंड, १४६ वां अध्याय) रुद्रमहालय तीर्थ साक्षात् महादेवजी का रचा हुआ, केदार तीर्थ के तुल्य है। वहां श्राद्ध करने से पितर गण रुद्र लोक में चले जाते हैं। वहां स्नान करने से मुक्ति हो जाती है। कार्तिक अथवा वैशाख की पूर्णमासी को उस तीर्थ में जाने से फिर संसार में जन्म नहीं होता है।

पालनपुर।

सिद्धपुर से १९ मील (अहमदाबाद से ८३ मील) उत्तर पालनपुर का रेलवे स्टेशन है। बंबई हाते के पालनपुर एजन्सी में देशी राज्य की राजधानी और पालनपुर एजेंसी का सदर स्थान पालनपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पालनपुर कसबे में २१०९२ मनुष्य थे; अर्थात् १०१२३ हिंदू, ७९९३ मुसलमान, २९३९ जैन, २९ पारसी, १२ कृस्तान और ४ यहूदी।

पालनपुर कसबा ३ मील लंबी दीवार से, जो १७ फीट से २० फीट तक ऊंची और ६ फीट मोटी है, घेरा हुआ है। जैनपुरा और ताजपुर नाम की दो शहरतलियां हैं। कसबे के मकानों में चंद मकान अच्छे हैं। प्रधान सड़क पर रात में लालटेनों की रोशनी होती है। इनके अतिरिक्त पालनपुर में पालनपुर के नवाब का महल, पोलिटिकल एजेन्ट की कोठी, बंगला, स्कूल, लायब्रेरी, अस्पताल और पोष्टआफिस है। पालनपुर कसबे से पश्चिम कुछ उत्तर १७ मील की रेलवे शाखा डीसा छावनी को गई है।

पालनपुर का राज्य—पालनपुर पोलिटिकल एजेंसी में १३ राज्य हैं, जिनमें से पालनपुर और राधनपुर पहिले दरजे के राज्य और दूसरे ११ बहुत छोटे राज्य हैं। पालनपुर सबसे बड़ा राज्य है। उसके उत्तर सिरोही का राज्य और मारवाड का सबडिवीजन; पूर्व सिरोही और एक दूसरा राज्य तथा अर्वली का सिलसिला; दक्षिण बड़ोदा का राज्य और पश्चिम पालनपुर एजेंसी के राज्य हैं।

राज्य के उत्तरी भाग में सघन वनों के साथ पहाड़ियां हैं। पूर्व और दक्षिण की नीची ऊंची कालीभूमि उपजाऊ है, उसमें वर्ष में तीन फसिल होती हैं। पश्चिमोत्तर समतल मैदान है, जिसमें साधारण तरह से साल में एक फसिल होती है। पहाड़ियों पर अच्छे चरागाह हैं। गांव, जो साधारण

प्रकार से गरीब हैं, दूर दूर पर बसे हैं। उस राज्य में बनास और सरस्वती नदी बहती है। बोखार की बिमारी बहुत होती है। ऊंख, गेहूं, धान इत्यादि फसिल होती हैं। अहमदाबाद से पालनपुर के राज्य में होकर अजमेर, दिल्ली और आगरा को सड़क गई है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय पालनपुर राज्य के ३१५० वर्ग-मील क्षेत्रफल के १ कसबे और ४५१ गावों म २३४४०२ मनुष्य थे, अर्थात् १९३३१७ हिंदू, २७२५६ मुसलमान और १३८२९ दूसरे।

पालनपुर राज्य से लगभग ५००००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमें से ४३७५० रुपया बड़ोदा के महाराज को 'कर' दिया जाता है। वहां के नवाब को अंगरेजी गवर्नमेंट की ओर से ११ तोपो की सलामी मिलती है। उनके पास लगभग ३०० सवार और ७०० पैदल सेना है।

इतिहास—पालनपुर के नवाब लोहानी अफगान हैं। कहा जाता है कि दिल्ली के हुमायू के राज्य के समय लोहानी लोग बिहार पर अधिकार रखते थे। सन् १५९७ में अकबर ने उनके प्रधान गजनीखां को दीवान की पदवी देकर लाहौर का सूबेदार बनाया। सन् १६८२ में औरंगजेब ने गज-नीखां के वंशज को पालनपुर, डीसा इत्यादि दे दिये। सन् १६९८ म मार-वाड़ के राठौर राजपूतो ने उसके उत्तराधिकारी से सब देश छीन कर उसको पालनपुर छोड़ दिया। उस समय से वे लोग पालनपुर में रहने लगे। सन् १७५० में दीवान बहादुरखां ने पालनपुर के शहर पनाह को बनवाया। सन् १८१२ में पालनपुर के फीरोजखां को उनके आधीन के एक आदमी ने मारडाला। उस समय फीरोजखां के पुत्र फतहखां ने अंगरेजी गवर्नमेंट से सहायता मांगी। सन् १८१३ में अगरेजी सरकार ने अपनी सेना भेज कर फतहखां को पालनपुर का प्रधान बना दिया। सन् १८१७ में अंगरेजों ने आक्रमण करके पालनपुर को लेलिया। उसके पश्चात् पालनपुर के प्रधान उनके आधीन हुए। इस समय दीवान सर शेरमहम्मदखां, जिनकी अवस्था लगभग ४० वर्ष की है, पालनपुर के नवाब हैं।

आबू पहाड़।

पालनपुर के रेलवे स्टेशन से १३ मील पूर्वोत्तर सरोता का रेलवे स्टेशन है, जिससे पूर्वोत्तर बंबई हाता छूट कर राजपूताना प्रदेश मिल जाता है। सरोता से १९ मील और पालनपुर के रेलवे स्टेशन से ३२ मील पूर्वोत्तर राजपूताना प्रदेश में आबूरोड का रेलवे स्टेशन है।

राजपूताने के दक्षिणी सीमा के पास राजपूताने के सिरोही के राज्य में आबू नामक प्रसिद्ध पहाड़ है। वह पहाड़ अर्बुदगिर का, जिसको अब अर्वली कहते हैं, एक भाग है; किंतु अर्वली के सिलसिले से आबू पहाड़ एक तंग घाटी द्वारा अलग होगया है। उस घाटी होकर पश्चिमी बनास नदी बहती है। आबू पहाड़ पर बहुत से जैन यात्री और हिंदू यात्री जाते हैं।

आबू का सिर लगभग १४ मील लंबा और २ मील से ४ मील तक चौड़ा है। उस पर स्थान स्थान में चोटियां हैं। उसका प्लेटू अर्थात् ऊपर का मैदान नीचे के मैदान से लगभग ३००० फीट और समुद्र के जल से ४००० फीट ऊंचा है। आबू के उत्तर भाग का शिखर, जो उसके सब शिखरों से बुलंद है, समुद्र के जल से ५६५० फीट ऊंचा है।

आबूरोड के रेलवे स्टेशन से आबू पहाड़ के पूर्व बगल के पास तक १६½ मील पर्यंत चढ़ाई की सुन्दर सड़क है। रेलवे स्टेशन से पांच छः मील तक हलकी पहिए की गाड़ी का और उससे आगे पहाड़ के सिर तक छोटे घोड़े का मार्ग है। तांगा भी पहाड़ के सिर तक जा सकता है।

आबू पहाड़ पर गर्मी के समय गवर्नर जनरल के राजपूताने के एजेंट और अन्य यूरोपियन तथा देशी अमीर लोग रहते हैं। वहां तंदुरस्ती के लिये यूरोपियन सेना रक्खी जाती है। आबू की नक्ख के पास और उसके ढालू बगलों पर मनोहर सघन जंगल हैं, जिनमें स्थान स्थान पर बांस के जंगल लगे हैं। जंगलों में भालू बहुत रहते हैं; बाघ कभी कभी देखने में आते हैं। वहां औसत में सालाना वर्षा लगभग ७० इंच होती है। वर्षा काल में नदियों और झरनों का पानी बढ़ जाने से तथा हरे भरे जंगलों से आबू की शोभा

बहुत बढ़ जाती है । प्रायः संपूर्ण घाटियों में २० या ३० फीट कूप खनने से अच्छा पानी मिल जाता है। जाड़े के समय में आबू पर बहुत कम लोग रहते हैं। सरकारी अफसरों तथा दर्शकों के लिये आबू पर लगभग ५० बंगले बने हैं। फौजी छावनी में लगभग २०० सैनिक रह सकते हैं। उस पहाड़ पर गर्मी के समय में लगभग ४५०० और दूसरे समय में लगभग ३५०० आदमी रहते हैं। आबू के कंदरों में बहुत से साधु निवास करते हैं । आबू की पीठ पर गाड़ी की सड़क बहुत कम हैं; किंतु घोड़े और पैदल के सुन्दर मार्ग हैं।

आबू के प्लेटू के दक्षिण पश्चिम के बगल के पास बारक अर्थात् सैनिक गृह, लारेंस स्कूल, अंगरेजी गिर्जा रेजीडेंसी, क्लब, बाजार, इत्यादि हैं।

लगभग ½ मील लम्बी "नखी तालाब" नामक एक सुन्दर झील है, जिसको लोग नैला तालाब भी कहते हैं। उसके चंद छोटे टापुओं पर वृक्ष लग गए हैं। उसमें सर्वदा झरनों का पानी गिरता है । झील में पानी अधिक रहने के लिये झील के पश्चिम किनारे के पास एक बाँध बनाया गया है । झील के पूर्व के किनारे के पास पानी की गहराई कम है, किंतु अन्य भागों में पानी गहरा है । उसकी औसत गहराई २० से ३० फीट तक है, किंतु बांध की ओर झील के मध्य भाग में लगभग १०० फीट गहरा पानी है । उस देश के लोग कहते हैं कि देवताओं ने महिषासुर के भय से भाग कर अपने छिपने के लिये अपने नैल अर्थात् नखों से खोद कर इस झील को बनवाया था, इसी लिये इसका नाम नैला तथा नखी तालाब पड़ा है । नखी झील के किनारे पर खानगी मकान बने हुए हैं।

झील के दक्षिण रामकुण्ड नामक चोटी ४३९४ फीट और उत्तर अंबादेवी चोटी ४७२० फीट चर्च चोटी ३८४९ फीट, रेजीडेंसी चोटी ३९३० फीट, क्रैका पहाड़ ४६०० फीट, देवली पहाड़ी ४३३५ फीट मिमली चोटी ४५४२ फीट, फिटपाप ४५७२ फीट अचलगढ़ चोटी ४६८८ फीट, नैरा चोटी ४६८८ फीट झाका चोटी ५११६ फीट और नगरातालाब चोटी ४९३३ फीट समुद्र के जल से ऊंची है।

आबू के जैन मन्दिर—आबू के सिविल स्टेशन से लगभग १ मील

'उत्तर पहाड़ के ऊपर देवलवाड़े में आबू के प्रसिद्ध जैन मंदिर हैं। मन्दिरों के चारो ओर पर्वत की चोटियां हैं। वहां ५ मन्दिर हैं, जिसमें से एक विमलशाह का और दूसरा वास्तुपाल और तेजपाल का बनवाया हुआ है। ये दोनों मन्दिर भारत-वर्ष के सब जैन मन्दिरों से अधिक सुन्दर हैं। मध्य में जैन लोगों के पहिला तीर्थंकर ऋषभनाथ अर्थात् आदिनाथ का चौमुख नामक तीन मंजिला मन्दिर है। उस मन्दिर में चारो ओर ४ दरवाजे हैं। मन्दिर के मध्य में ऋषभनाथ की चौमुख अर्थात् चार मुख वाली प्रतिमा है। मन्दिर के पश्चिम बगल में दोहरी और तीन बगलों में एकहरी मंडप अर्थात् जगमोहन है। चौमुख मन्दिर के उत्तर ओर एक ऊंचे चबूतरे पर दूसरा बड़ा मन्दिर; चौमुख से दक्षिण-पूर्व ऊंची दीवार से घेरा हुआ आदिनाथ का एक मन्दिर और चौमुख से पश्चिम विमलशाह का और वास्तुपाल तथा तेजपाल का ये दोनों मन्दिर हैं।

विमलशाह के मन्दिर में जैनों के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ और उसके उत्तर वास्तुपाल और तेजपाल नामक दोनों भाइयों के मन्दिर में जैन लोगों के २२ वां तीर्थंकर नेमीनाथ की प्रतिमा है। वहां के शिला लेखों से विदित होता है कि विमलशाह का मन्दिर संवत् १०८८ (सन् १०३१ ई०) में बना और संवत् १३७९ (सन् १३२२ ई०) में मरम्मत किया गया और वास्तुपाल, तेजपाल का मन्दिर सन् ११९७ और सन् १२४७ ईस्वी के बीच में बना था। दोनों मन्दिर सैकड़ों मील से मार्बुल अर्थात् संगमर्मर लाकर पहाड़ पर बनाए गए। उनमें बारीक नकाशी का काम है और पत्थर काट कर विचित्र फूल पत्ते निकाले गए हैं। किसी किसी का मत है कि आगरा के ताजमहल को छोड़ कर भारतवर्ष में कोई ऐसी इमारत नहीं है।

एक आंगन में, जिसकी लंबाई १४० फीट और चौड़ाई ९० फीट है, आदिनाथ का मन्दिर है। आंगन के चारो बगलों में ५५ छोटी कोठरियां हैं। प्रति कोठरी में जैन देवता की प्रतिमा पलथी मार कर बैठी हुई है। कोठरियों के आगे छोटे खंभे लगे हुए ओसारे हैं। वह मन्दिर जैन मन्दिरों के मामूली ढांचे का है, उसमें केवल एक द्वार है। मंदिर में आदिनाथ की

पीतल की प्रतिमा पलथी मार कर बैठी है। मन्दिर के आगे आंगन में ४८ स्तंभों का मंडप है, जिसके ऊपर मध्य में एक गुंबज बना हुआ है। एक मुरब्बा मंडप में, जिसका अगवास दरवाजे की ओर है, सफेद मार्बुल के लगभग ४ फीट ऊंचे ९ हाथी हैं। प्रत्येक हाथी पर हौदे में एक पुरुष और एक पीलवान की प्रतिमा बनी हुई है। उनमें से कई एक टूट गई हैं। यह ठाट बिमलशाह और उनके वंश के लोगों के मन्दिर में जाने की बनी हुई है; अर्थात् हाथियों पर विमलशाह और उनके वंश के लोगों की प्रतिमा हैं। विमलशाह की प्रतिमा को मुसलमानों ने तोड़ दिया था। उनकी वर्त्तमान प्रतिमा चिकनी मिट्टी की बनी है।

विमलशाह के मन्दिर के उत्तर बगल में जैनों के २२ वां तीर्थंकर नेमीनाथ का मन्दिर है, जिसको अनहिल पाटन के पोरवाल बनियां बास्तुपाल और तेजपाल ने, जो गुजरात के बघेला राजा के दीवान थे, बनवाया था। ऐसा प्रसिद्ध है कि इस मन्दिर बनने में १ किरोड़ ८० लाख रुपया खर्च पड़ा। उसके अलावे उस जगह के, जिस पर मन्दिर बना है, भरती करने में ९६ लाख रुपया अलग खर्च हुआ था। वह मन्दिर सुन्दरता और कारीगरी में बहुत उत्तम है। उसमें कई एक संस्कृत लेख हैं। बड़े आंगन में मन्दिर है। आंगन के चारो बगलों में बहुत सी छोटी कोठरियां बनी हुई हैं, जिनमें जैन मूर्तियां बैठी हैं। कोठरियों के दरवाजे के ऊपर उनकी बनावट के विषय में ४६ लेख हैं, जिनमें संवत् १२८७ (सन् १२३०) से संवत् १२९३ (सन् १२३६ ई०) तक देख पड़ता है। उस मन्दिर में उत्तम संगतरासी के १० हाथियों की ठाट है। हाथियों के सवारों को कोई राजा ले गया था। प्रति हाथी के पीछे एक ताक है। उन ताकों में वास्तुपाल, तेजपाल और उनके चचा तथा उन लोगों के परिवार के अन्य लोगों की प्रतिमा बनी हुई हैं।

अचलगढ़—देवलवाड़ा से ४ मील आगे उरिया गांव के पास एक बंगला है। दहिने के मार्ग से उस जगह से १ मील दूर जाने पर एक घेरे के भीतर अचलेश्वर महादेव का सुन्दर मन्दिर मिलता है। उसके दक्षिण अग्निकुण्ड नामक सरोवर है, जिसके किनारे पर एक प्रकार की मार्बुल की

सुन्दर प्रतिमा बनी हुई है, जिसके हाथ में धनुष बना है। उसके पास पत्थर के ३ भैंसे हैं। मन्दिर से दक्षिण-पूर्व एक दूसरा सुन्दर मन्दिर है। वहां के सब मन्दिर पहाड़ी पर चढ़ने के समय दूरही से देख पड़ते हैं। वहां हिंदू यात्री बहुत जाते हैं। अचलेश्वर महादेव के मन्दिर के पास एक संन्यासी के मठ में राणा समरसिंह प्रशस्ति, जिसको संवत् १३४२ (सन् १२८५ ईस्वी) में चित्तौरगढ़ के वेदशर्म्मा नामक नागर ब्राह्मण ने श्लोकबद्ध संस्कृत में बनाया था, पत्थर पर खोदी हुई है। उसमें बप्पारावल से ले करके राणा समरसिंह तक के चितौर के राजाओं का वर्णन है और लिखा है कि राणा समरसिंह ने अचलेश्वर को स्थापित किया तथा भावशंकर तपस्वी की आज्ञा से उनके पुराने मठ का जीर्णोद्धार करवा दिया (राणा समरसिंह सन् ११९३ ईस्वी में अपने शाला पृथ्वीराज के साथ महम्मदगोरी के संग्राम में मारे गए थे। प्रथम खंड के चितौर में देखिए)।

मंदिर और स्थान—आबू पहाड़ के बगलों पर तथा उसके चारो ओर के मैदानों में बहुत से मन्दिर और स्थान हैं, उनमें से चंद सुन्दर हैं। पहाड के दक्षिण-पूर्व के ढालू पर ५०० फीट नीचे अंगरेजी गिरजा से ३ मील दूर गौमुख के पास एक सुन्दर मन्दिर है। मन्दिर के आगे एक पीतल की प्रतिमा बनी हुई है।

सिविल स्टेशन से ५ मील दूर गौमुख से पश्चिम पहाड़ के दक्षिण बगल पर गौतम का मन्दिर है।

सिविल स्टेशन से १४ मील दूर पहाड के दक्षिण पूर्व के पादमूल के पास एक देव मन्दिर है। आबूरोड के रेलवे स्टेशन से सुगम से आदमी वहां जा सकते हैं।

पहाड से दक्षिण पश्चिम के मैदान में अनंदा के डाक बंगले से २ मील दक्षिण देवागना स्थान है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(वनपर्व, ८२वां अध्याय) तीर्थ के यात्रियों को उचित है कि चर्मण्वती अर्थात् चम्बल नदी में स्नान करने के उपरांत हिमाचल के पुत्र अर्बुदगिरि को जाय। वहां पूर्व समय में

पृथ्वी में छेद था। उसी जगह तीनों लोकों में विख्यात वशिष्ठ मुनि का आश्रम है; वहां एक रात निवास करने से हजार गोदान का फल और वहां के पितृतीर्थ के स्पर्श करने से सौ गोदान का फल मिलता है।

सिरोही।

आबूरोड के रेलवे स्टेशन से २८ मील उत्तर और नाना के रेलवे स्टेशन से लगभग १६ मील पश्चिम (२४ अंश, ५३ कला, १२ विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ५४ कला, २८ विकला पूर्व देशांतर में) राजपूताना के सिरोही राज्य की राजधानी सिरोही नामक छोटा कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय सिरोही कसबे में ५६९९ मनुष्य थे; अर्थात् ५१२९ हिंदू, और ५७० मुसलमान।

सिरोही में वहां के महाराव का महल, एक अस्पताल, एक जेलखाना और शरणेश्वर शिव का मन्दिर है। यहां तलवार, बर्छी, छुरी, इत्यादि हथियार सुन्दर बनते हैं।

सिरोही का राज्य—राजपुताना एजेंसी में सिरोही एक देशी राज्य है। उसके उत्तर जोधपुर का राज्य; पूर्व उदयपुर का राज्य; दक्षिण पालनपुर और माहीकंठा के इडर और दंता का राज्य और पश्चिम जोधपुर का राज्य है। उस देश में चट्टान और पहाड़ियां बहुत हैं, इस लिये वह राज्य बहुत टुकड़ों में बंट गया है। उस राज्य के आबू पहाड़ की सबसे ऊंची चोटी समुद्र के जल से ५६५० फीट ऊंची है। अर्वली पहाड़ से वह राज्य दो भागों में विभक्त हुआ है। पश्चिमी भाग दूसरे भागों से अधिक मैदान और खेती के लायक है। राज्य का प्रधान फसिल गेंहू और जव है; किंतु चना, मिलेट और तेलहन अर्थात् तेल के बीज भी होते हैं। राज्य में केवल पश्चिमी बनास नदी है, जिसकी धारा गर्मी आरंभ होने के समय बहने से बंद हो जाती है, किंतु स्थान स्थान में नदी के गहिडे स्थान में पानी रह जाता है। कूपों का पानी राज्य के पूर्वोत्तर के भाग में ५० फीट से १०० फीट तक नीचे, पश्चिमोत्तर

के भाग में ७० फीट से ९० फीट तक नीचे, पूर्वी भाग में १५ फीट से ६० फीट तक नीचे और पश्चिमी भाग में ६० फीट से ७० फीट तक नीचे है। सिरोही कसबे और उसके पड़ोस के कूओं में खारा पानी है। पहाड़ियों और वनों में बाघ बहुत हैं, जो बहुत मवसियों को मार डालते हैं। भालू, हरिन और तेंदुए भी हैं। सिरोही के राज्य में १७५००० रुपया मालगुजारी आती है। राज्य का फौजी बल २ तोपें, लगभग १०० सवार और ५८० पैदल हैं। वहां के महाराव अंगरेजी सरकार की ओर से १५ तोपों की सलामी पाते हैं। अब उस राज्य के कुछ लोग पढ़ने में मन लगाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय सिरोही के राज्य के ३०२० वर्गमील क्षेत्रफल में १ कसबा, ३६५ गांव, ३०५३२ मकान और १४२९०३ मनुष्य थे, अर्थात् १२३६३३ हिंदू, १६१३७ जैन, २९३५ मुसलमान, १७९ कृस्तान और १९ अन्य। हिंदुओं में १७३१७ बनियां, १३४६६ राजपूत, १३२८८ ब्राह्मण और बाकी में अन्य जातियों के लोग थे। राज्य के उत्तर के भाग में मीना और दक्षिण भाग में भील बहुत हैं, जिनमें से बहुत लोग चोरी का पेशा करते हैं।

इतिहास—वर्तमान सिरोही नरेश दिल्ली के महाराज पृथ्वीराज के वंशज देवराज के वंशधर चौहान राजपूत हैं। अति पूर्व समय में सिरोही में भील लोग बसते थे। वहां राजपूतों में प्रथम गिहलोट राजपूत और उसके थोड़ही दिन पीछे पमार राजपूत आए। पमारों की राजधानी चंद्रवती थी, जिसके खंडहरों को देखने से जान पड़ता है कि एक समय यह बड़ा शहर था। पमारों के उत्तराधिकारी चौहान हुए, जो लगभग ११५२ ईस्वी में उस देश में बसे थे। उन्हों ने बहुत वर्षों तक बड़ी लड़ाई करके पमारों के राज्य पर अपना अधिकार किया। अन्त में जब पमार लोग आबू पहाड़ पर भाग गए, तब देवराज चौहान ने उनके पास खबर भेजी, कि तुम लोग अपनी १२ लड़कियां चौहानों को देकर इनसे मित्रता कर लो। उसकी बात पर विश्वास करके प्राय सब पमार राजपूत १२ लड़कियों को लेकर सिरोही की दक्षिणी सीमा के पास मदेली गांव में आए। उस समय चौहानों ने उन पर आक्रमण

करके बहुतेरों को मार डाला और आबू को अपने अधिकार में कर लिया। अब तक पमारों की किलाबंदियों के खंडहर आबू पर विद्यमान हैं।

सन् १८५७ के बलवे के समय सिरोही के महाराव शिवसिंह ने अंगरेजी सरकार की सहायता की; उसकी कृतज्ञता में अंगरेज महाराज ने उनका आधा 'कर' छोड़ दिया; अब वहां के महाराव को केवल ६८८० रुपया कर देना पड़ता है। सन् १८४५ में सिरोही के महाराव ने अंगरेजी सरकार को आबू पहाड़ पर उसके चंद टुकड़े दे दिए, जिन पर अंगरेजी अफसर गर्मी के दिनों में रहते हैं। वर्त्तमान सिरोही नरेश महाराव केशरीसिंहजी बहादुर लगभग ३३ वर्ष की अवस्था के चौहान राजपूत हैं।

—o—

आबूरोड के रेलवे स्टेशन से १९० मील अजमेर, २०८ मील किसनगढ़, २३९ मील फलेरा जंक्शन, २७४ मील जयपुर, ३३० मील बादीकुई जंक्शन, ३९१ मील भरतपुर, ४२५ मील आगरा किला का स्टेशन, ४४१ मील टुंडला जंक्शन, ४९८ मील इटावा, ५८५ मील कानपुर, ७०४ मील इलाहाबाद, ७०८ मील नयनी जंक्शन, ७५५ मील विन्ध्याचल, ७६० मील मिर्जापुर, ७९९ मील मुगलसराय जंक्शन, ८५७ मील बक्सर और ८८७ मील बिहिया का रेलवे स्टेशन है। मैं बिहिया के स्टेशन पर रेलगाड़ी से उतर कर स्टेशन से १२ मील उत्तर अपने घर चरजपुरा चला आया *।

साधुचरणप्रसाद

—o—

भारत-भ्रमण चौथाखण्ड समाप्त।

---

* अब ग्रन्थकर्ता बाबू साधुचरणप्रसाद, जिनका वय (सन् १८०३ ईस्वी में) ५१ वर्ष का है, अपने घर के कामों को छोड़ कर काशी में रहते हैं।

भारत-भ्रमण प्रथम खण्ड का शुद्धि पत्र नंबर २

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	११	रामेश्वरघाट	रामरेखाघाट
१७	२१	स्वरूप	स्वरूप
१८	२१	लंबाई ३५८	लंबाई ३५८०
२०	२५	खखोलकादित्य	खगोलका-दित्य
३४	११	एक दिन	(७३ वां अध्याय)एक दिन
३५	२४	पीतलमयी	पाषाणमयी
५७	२	चौषठी देवी	चतुःषष्ठी देवी
५७	४	चौषठी देवी	चतुःषष्ठी देवी
६६	७	मंडप	फाटक
७५	१३	गणेषपुराण	गणेशपुराण
७७	६	घंटाकर्णेश्वर	कर्णघंटेश्वर
८५	२३	सर्षबाधा	सर्पबाधा
१०	१३	नरया गांव	नगवा गांव
१०४	२५	(१३ वां अध्याय)	(७३ वां अध्याय)
११५	७	अटल मसजिद	अटाले की मसजिद
१३५	१२	वरुणा	वरुण
१४२	२०	चीनी यात्री	सेल्युकस का घकोल
१५५	२४	रघुविंदुसिंह	राघवेंद्र सिंह
१५६	१	रघुविंदुसिंह	राघवेंद्रसिंह
१५६	३	रघुविंदुसिंह	राघवेंद्रसिंह
१५६	४	जदुविंदुसिंह	यादवेंद्रसिंह
१६२	८	भर्तृहरि	भरत
१६१	२०	सन् १८५०	सन् १८००
१८३	२०	उसाई	उरई
१८८	२६	११३४	११३४८
२१२	३	३०००	३००
२३५	१३	१७०	१७६०
२४१	२४	भोगघाट	योगघाट
२५२	७	दशा	दक्षा
२७७	३	११ वां अध्याय	१७ वां अध्याय
३३३	२५	१७१८५	३७१८५

भारत-भ्रमण—पांचवें खण्ड २५ वें पृष्ठ के उत्तरकाशी की संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदपुराण—(केदारखण्ड, प्रथम भाग, ९३ वां अध्याय) हिमालय के वारणावत शिखर के ऊपर उत्तर वाहनी भागीरथी गंगा के तट पर उत्तरकाशी है। वहां असी और वरुणा नाम की दो पवित्र नदियां और अनेक महर्षियों के स्थान विद्यमान हैं। उस स्थान पर परशुरामजी ने कठिन तप किया था।

पूर्वकाल में इन्द्रादिक देवता और मुनिगणों ने हिमालय पर्वत पर जाकर